



पत्र स्रोक विष	<u></u>	ų	ų, j	भाद्रपदारिपुचन महाणा		फलचार्
	ा ग्रन्था	Ą		- <b>कीकण बर्णन</b>	فر	९९ भवन्नवाह्मणा पश्चिमा
	याया विषय वर्णना	¥		मञ्जदेशप्रमाण नपस्थारेमबाह्यद्य		१ ९ ज्यूसन्दिना पितृभा
•	थ परि मापा मकरण	Q	Ę	अभक्त मैर्वप्रजनपणक		१ ३ स्पावपरसेन द्याविधवास्त्रण नामानि
	बाद्मणस्य एका साविः	¥	5,4	कर्णाटक काळण वैनाग इतिह वेशास्थित जन	•	<ul> <li>अतिमान माझणमधन्यः</li> </ul>
	प बाद्मणक्योच्द्रर शीवि बाह्म्या			स्भार क्णन	فر	<ul> <li>अवसमावियानार्यमग्रसाः</li> </ul>
•ावा	, -	¥	••	पंचकोगालक देशाचारभेद्बर्यंत	فر	१११ अय स्कनातीयान्यार्थे भग्रसाप्तवाद
•	<del>्य बाद्यकार</del>	4	ς.	केर्द्रि अर्देन मतिधान कार्यान बाह	•	१९६ संसानजाह्मण इसण
२ १६ अपर	गुरिभ आर्घणनामानि	¥	<b>L</b> o	सब बाह्मणाना सामान्यतः स्वभाव वर्णेने	<b>U</b>	१९१ संसान बाह्मण परिष्य
२ ५० चतुरक्	ोडि बाह्मण गामानि	¥	₩Ÿ	दुखनाराण निवान सामा दसाह	Ų,	१२५ स्मन फल
३ ५ साम्बन	र देशादिनामक ब्राह्मणा नामानि	4	•	<del>म</del> ेंब	b	११५ माह्मणमुगलसण
३ ५४ सम्मन	रबाद्यणा सेसे देशे पूज्य ने नान्य से	4	ō	मेर	•	१२ कुछनिधैसणमग्रसा
साइ		•	59	रराधमा धर्म विवेचना	u	१२० भक्तुमा संस्कृतीन लक्षणानि
३ ५५ उपजाह	ाण नस्मानि	٩	4	भववार्यण्यायायायायायाया		१६० पुरान्तया इंडा इंड निरास्यो धारगद
प्र ५५ द्वारमार	भविषयः			निवेष		१५५ मास्त्रणादिन्यतुर्वेण घनी
<ul><li>४ ६ सर्वेगो</li></ul>	ग्रीविन्यावसमा सर्वेश्वन्यक् अवद्याणाः	ų	43	भव भ बाह्मण सक्तण तत्त्वा याने अनिष		१९४ त्यक्तती पण्यसम्बद्धसम्बद्धकर्वति तम् मान

	<del>1</del>	. <b></b>	
्अध्य धार्यपात्यान्यमान	en mar ta umua		TOT I
अध बाह्मणोत्मत्तिमार्त	O	יואין דועיו אוי	रम्पत

\_

•

पुष्न भाक विषय	¥	५३ भानायकाविष्यम् अस्त्रणाः	फलचा ६
५ ५ मगतान्यरण	¥	५० फ्रेंक्ज बर्जन	६ ११ अयभवाद्मणा पश्चिपा
<ul> <li>५ पूर्वाप्याय विषय वर्णनः</li> </ul>	٧	५९ सभ्यदेशभगण तपस्यादेयबाह्यव्य	५ १ र सहस्त्राहिला पश्चिमा
<ul> <li>५ अथ परि भाषा मकरण</li> </ul>	ય	६४ अभक्त मेर्रयाचनवयनः	६ १३ सभावपरत्येन च्छाविभमास्त्रण नामामि
< <i>वारी माध्रणस्म एका भावि</i>	¥	६५ कर्णाटक सावण वैलगडांक वेशास्थित जन	📞 🕦 जातिमात्र मास्रण मशस्य
<ul> <li>१४ दरप्रविध बाद्मणस्योच्द्वरशीति बाह्मयाः</li> </ul>		स्वभाव यणन	६ १ ५ अपस्रवातियानार्यमशसा
<i>ना</i> चाः	¥	६५ पंचको शासक वेशाचार भेदवर्षन	६ १११ अयालजातीयाचार्य महासापनाद
२ ०५ गोभन्यसम्बद्धायाः	¥	५७ केंद्रिजेर्रेन मतिचान कार्यातवाह	<ul> <li>१९३ संसाचनात्रण इस्ल</li> </ul>
२ १६ अयरशहभा बाध्यवनामानि	¥	६० सम ग्रासणाना सामान्यत स्वभाव वर्णने	७ १२१ ससानाबाह्मण परिस्ता
२ १० च्युरशीति बाह्मणामानि	¥	<ul> <li>इसमाझण निस्न कामा इताइ</li> </ul>	७ १२५ सनफ्रह
३ ५ साम्हन्यवेशादिनामक ब्राह्मणा नामानि	બ	७ सेंब	८ १२६ माद्राण हुद स्रव्हाण
१ ५४ सामान्य बाह्मणाः सेन्ये देशे पूज्यते नान्य ने	4	८ सेर	<ul> <li>१२७ कुळनिर्धेश्लामश्रसा</li> </ul>
<b>साह</b>	•	८१ दश्भर्मा भन विवेचना	७ १२० म्कुअन सकुद्धन तक्षणानि
१ ५५ प्रवाह्मण समानि	٩	९ भगभारमणवायो त्मारनस्य निश् करणस्यच	८ १२७ पुरानया बुटा कुट निरासणे व्यवनाद
४ ५५ इत्रादिभविकाः		ाने <b>पेध</b> र	८ १४४ बाह्मणादिसहर्वर्णचमी
४ ५६ सर्वेभो बीहिन्याङसमा सर्वेशन्यक अवस्तरणः	4_	१३ भए भ ग्रह्मण सहाण तहनी धन अनिष	९ १५४ स्वस्यतीयण्यमगुरुपस्य देशकुर्वति तम् भार्न

====		नसद्यांतं भगाणं	<i>و</i> بر	<b>ગ</b> ્યુ	वाद्मणाना कमीनिचादि उत्तरीत्तरं	<b>२</b> १	३्२८	मार्जारबाह्मण हक्षण
ς	946	अय ज्ञाति भय मनभय भावनीय मित्याह			र्घं वसाह •	२५	326	क्रनममाह्मण लक्षण
ξ	१६२	भय बाह्मणाध्यस्त त्व निग तत्र कथाच	98	ત્રપદ	्कर्राविरेववर्णाविभागे प्रमाणवन्दनानिर	2 9	३३०	म्लंखबाह्मण लक्षण
90	१८२	अय जातिज्ञान परासा •	१६		भागवर्त भारत विभिन्न गीता सदमी सूत्र मतु	٦,5	335	चाडाल बाह्मण लक्षण
99	१८३	अथ ज्ञासुलित ज्ञान मवश्य कर्तेच्यं तत्राह्	95	३७६५	्बाह्मणवर्णस्यपचलक्षणानि अन्यानिच	٦٩	332	त्राह्मणस्य द्वाद्श महावतानि
99	९ए५	गोत्रादिनव पदार्थानि जेयानि	95	<b>૩</b> ફપ	कर्मिन उत्तम हीनना यानि हीन उत्तमना	33	३३३	मसुरोहित लक्षण
99	१९६	अय ज्ञानि शब्दस्यार्थ			याति नहाक्यानि	<b>૨</b> ૨	330	दर्तमानकानीन अससुरोहित हसण
92	<b>३</b> ,०८	अय गांड दविड बाह्मणाना मियो भोजन	59	313	च्तुर्वणांना केनकर्मणा ज्येष्टत्य तराइ श्रुनिश्च	२२	<b>ं</b> ३३६	प्रक्रिसहाय निवा
	•	निर्णय	98	390	ब्राह्मणस्य सत्यभाषण नेव सुरव्य धर्म इत्याह	<b>२</b> २	३५३	बाह्मण महिमा
93	<b>३</b> ३०	भयाणिक् राव्हेन भूद्रत वेश्यतं वातानि-			म्प्रीत	<i>२३</i>	<b>ર</b> ુષ્ટદ્	ब्राह्मणनाम्मि अष्टो विकत्माः
	٦	र्णय	98	390	कर्मिनव वर्ण मासी माचीन दशानानि	33	1388	जीवा बाह्मणी न भवति
93	२३६	भय विणज न्यसुरवे नेव वेषयत्व मितपाद	२५	३२२	देव ब्राह्मण रुसण	33	380	देहो बाह्मणो न भवति
	र	नितंत्र किंदोप एवंत्याह	29	३२३	मुभिबाद्मण न्ह्सण	२३	386	वर्णा बाह्मणी न भवति
3	२४३ ७	नथ विणिजा शा वाब्दस्य भयोजन	२१	308.	हिनबाह्मण लक्षण	<b>२३</b>	388	आयुष्येन ब्राह्मणोन भवति
8 :	२४५ प	गस्त्राद्गृदिर्वलीयसीत्यस्य निर्णय	39	324, -	गजा बाह्मणनस्ण	२३	<b>३५</b> ०	जात्या बाद्मणो न भवति
४ २	१४९ ह	ज़ीदत्तकेथा -	3,9	326	वेश्य बाह्मण लक्षण	<b>3</b> 3	ع د م	पाडित्येन ब्राह्मणां न भवति
<b>५</b> २	५० दे	शाचार कुछाचार ज्ञात्माचारिव चार	29	چ هوکي	भुद्र बोह्मण तस्मण	<b>ર</b> જ	342	द्या एर्स धर्मण बाह्मणी न भवति

- <del></del>	१ र ४ मीम्बर्सन	र १ १ के विवाह मध्ये कुछ दीन विधान	६७ ३ नम्बतिकुडमेद्द्यन	3
पृथ्वीर्णः -शिकस	१४ १५६ जानागरम्भामधानस्	५६ भी माति बाह्मणानी मीमावर के च	<ul> <li>प्रश्लाविकुत्तनाम पर्क</li> </ul>	ě
भिम <u>स</u> ्क	५४ ६५६ चतुरसीति बाह्मणज्ञातिनार	५४ १५० भीवसत्तासुसतिर	•१ १ अधिसाँउ माह्मणीसनि म १०	
•	१४ १५ बाह्मणहम्भा	५४ १६३ सर्णकारेज्ञासुसि	<ul> <li>नेतिपद्मोद्यमास्त्रणीसित्तः</li> </ul>	
	१५ ३५० सकर्मसायिक कर	५५ १६६ गामसणिजीसमिग्डस्टादी छीप्रक	७५ गोमार्गक सम	
	इति परिभाषा मकरण १	५५ ५७३ वशाविसा सेट कथन	७५ ४४ गोसुनच्छिजोसत्ति	
	१५ १ अयः औरियसङ्ग्रह्मजाह्मणे सन्ति १	५५ १ अधकर्णाटक ब्राह्मणोसिति म ५	७० ५५६ महतीक चणिमोसितः	
	१९ मोभावटक उक्ति इपुरसम्रापीन	५ । अयतेलग बाह्मणासनिः म ६	💌 २ ५ बादुर्वेध होत बाह्मणीस्पत्तिः	
	सीपीर समदापिना संचारक क	५९ ५३ यह भेदाकवन	दर १९० जेडिमा सोड जामणोसनि	
	२९ ५५ कीशन्त्राताशीन भेरार	६ ६६ याज्ञ बस्कीय ज्ञाति भद	<ul> <li>५५ वृत्पार्वणा स्रोध त्राह्मणोसितिः</li> </ul>	
	<ul> <li>भ अथ वक्षिपी विच्याह्मणी सिसी भ ३</li> </ul>	६ ६० निर्मानी बाह्यण भेदर	<b>४२ ५४२ धैनुज होडिं</b>	
	us च्योरगण्यकोषक	५१ १ सीमइलुभाषार्य माहुर्मार म ७	< २५५ अहारज कोडचणिजासति	
	११ ६५ इपनादर नेदक्यन	६३ २५ अपमहत्रासण भेरकवन	<ul> <li>१५३ मधुद्धः होत्र विणिजीसितः</li> </ul>	
	१ । अयभीमालिशास्त्रणोसति म ४	५४ ) अध्यविद्यासणोसिषः मार	<ul> <li>५६७ दशामिसापाचा भैक्कवनी</li> </ul>	
	» भः। अम्सिपंचकरम्ह्यापेरः	९ इभिकामा चतुर्विगिति भेदा	रर । अथसारोलाबाद्यणीसतिग्मः।	
	४५ १ ४ अयुक्कार मण्ड बाह्मणीलितः	५ । महाराष्ट्र दक्षय माझगोलित म १	८७ ५२ अवर्धतरवेधैनाम्यणीसनि	
	४७ १६ भीमाठी पोरबाट विण गुसंसिर	र्भ गीमीय मामच्या	८७ ६३ अपनेषुत्राह्मणासित	
	<u> ५ - १ ११ परसान्त्रस्</u> यात्तिः	५७ १ मार्द्यास्य सङ्गाति कथन	६४ यस्त्रीत्रेचे सहोपका	

=	<del>۷</del> ٦	४ माध्यक्तमः	44	141	चिवाह मध्ये कु छदीप विधाने	Ĭ,		मण्यति सुरु भेद्रक्यने
		६ जाह्मणस्य प्रक्षासभ्यावस्र	<b>પ</b> ્		मी मासिजाह्मणाना मोभावर्गक चर	<b>৬</b> ব্		पण्णवति कुरु नाम पर्क
		५ चतुरसीति मास्रणकातिनार	N.	9 40	भोक्सत्तासुराति ।	*1	•	्यप साड बाह्मणोसिति म १०
		्रा <b>मण्डल्य</b> ा	44	943	, सर्णकारज्ञासुसन्ति		*	निवसोदमण्डापीसति
١.	74	. सक्नें सानिन फड	44	159	ंगायचिषजोसिनि <u>"</u> इडवा <b>डी छी</b> श्रय	u q		नोमार्गक चम
		इति परिभाषा मकरण १	فإمر	163	व्याविसा सेद् कथ्व	७५	« t	गीसुन रणिजोसत्ति
Ą	5 9	भय औरित्य सङ्ख्याह्मण्डेसिनि २	44	7	अधकर्णाटक ब्राह्मणोयत्ति म ५	94	345	महतीक पणिगोसतिः
3.5		मोआवटक चक्रसिद्युरसम्रापाना	برفر	1	अयतिलग बाह्मणासन्तिः पा ५	•	3.3	नाहर्नेश स्त्रोब बाह्मण्डेसनिः
		सीपीर समदापिना गमानक चक	43	43	पर् भेदा कवन			जीवमञ्जू स्रोद जासणीसति
33	- 11	भीर्यानाहीन भेदार	٩	44	याज्ञ वस्सी य ज्ञाति भद	च २	₹₩•	रापार्षणा सोध मासणोसिनः
¥	1	अध ग्रह्मिमी स्थान्न जो सिन् मा	4	Ų	नियोगी बाह्मण भेदः	43	43	. <b>पेनुज</b> ्ह्योक
45		'न्योर्ग् <b>पर्</b> कोषक'	43	1	सीन इञ्जभाषार्थ माहुर्मावर म ७	43	3484	भराउन हार गणिनासत्ति
81	24	उपगर <del>र मेदकथन</del>	43	4	अयमहत्राह्मण भेर्कपन	<b>6</b> }	143	मभुकर सोउ विणुजीसित
8	,	अभूभीमालिशासणोसित म ४	4,8	•	अध द्विष्ट बाह्मणोत्सचिः मार			द्शानिसापाचा भेर कवन
44	111	भग विषयुक्त महाण भेदः		\$	द्रविकानी चतुर्विभाति भेदा			अथ शारोन्डाबा स्रणोसिति प्राप
84	1 8	भप्रकार्यामः बाह्मणीलितः	4	1	महाराष्ट्र द्सास्य माह्मणीयिति म १			भव अंतरवेशी श्राह्मणोसित
Po	\$\$# ·	भी गाठी पोर गाउ रिण गुलसिर	44		गौमोप मामच्छ			अथरंदु ब्राह्मधासति
44	188	परसन्भस्तिः	40	١.	सार्द्शरश सूत्रभावि कथन		•	यस्त्रजी भेगो सनोपता

\_

		जेंबुब्रास्मण अतर्वेटी बाह्मण गींध चक	993		साचाग नागर बाह्मणचर्णन	१३६	9	अथ कऱ्हाडे ब्राह्मणोत्पत्ति
60	7	अधगुरगुरीयबाह्मणोसिन मे			४ चारड नागर बाह्मण वर्णन	१३८		पद्मय ब्राह्मण भेद कथन
९५	, 9	अथनागर ब्राह्मणीसिनिः म १३	997		- ् भभोत्तरा नागर बाह्मणवर्णन	१४३	٩	अय देवरुख बाह्मणीत्मिन
., ५०२		नागर माह्मणाना गीत्र एरुप संख्या	`	४००	नागरात् खडायतोभेद	188	9	अपआभीरअभिस्त्रबाह्मणो सति.पः
•	१९७	नाह्य नारहे नागर बाह्मणोत्मित	993	٥	नागराना गोत्र भवर निर्णय नुऋ	388	9	अथशेणवीसारस्वतंबाह्मणी- भ०२
		गर्त ती धी बाह्मणी खिन	११३	9	अयखडारता विभवणिजोस ति.प्रश्र			एषा मेच विहोन दशगोत बाह्मण इतिनामान
૦૬,	२७४	अय द्वितीय नागर भेदवर्णनं	<b>গ</b> ৭৩	9	अथवायडा विमव णेजे सिनः मः १५	१४७		अथप अयम वेशीय सें दिक च्छिहात
00	<b>૩૦૬</b>	का दिशीका नागरा	१२०	9	अथउनेवालबाह्मणोसनिः प्रन् १६			रिसारस्वत बाह्मणोसनी म- २४
. ve	३०७	अर षषी कुठ देवी वर्णन	१२व्	9	अयगिर्नाराबाह्मणोसितः मः १७	380	३६	लगणा सित्रियोसित
oc 3	१२०	अष्ट कुली नागर बाह्मण भेद वर्णन	974	c	गीनीरा बाह्मणाना गोत्रावटक चक	940	7	अघद्धीच सारस्वतपरं तबाह्य प्रान्
१० ३	ह्प -	नागरवणिक भेद कथन	१२६५	٩	अयकडे लबाह्मणोत्सितः प्रः १८	१५६५	१५४	बह्म सत्रिय ज्ञात्युत्सति
9 3	(७८ र	परणी नागर विणिक मेदक धन	930	१०३	कपोस सोरव विषजा सुसनि	૧૬ <b>(</b> ૪	३७२	अन्य बह्मस्तित्रयज्ञाति भेद
9 3	المالية	मोरवीया सवा दादशायाम वासीनागरव	र्णनं १३१		कंडोल बाह्मणाना गोत्रावरंक चक	१६५	9	अयनर्मदोत्तरवासीसारस्वतबाह्म भ २६
ક વ્	co f	चेत्रोडानागर मेद वर्णन	9३२	9	अथ चेत्तपावनकोकणस्य हा म १९	१६७	٩	अयकान्यकु इ बाह्मणोस ने पर
२ ३,	११६ द	ड नगुरा बाह्मणु वर्णन	१३४		चिसावनाना सुपनामगोन मबर जान चक	१६७		अय शरयू ब्राह्मणो सित्ति
		ोसनगरा <del>बाह्मण व</del> र्णन	१३६	६५	रुकस ज्ञाति भेद	१६८		कान्यकुकाना पर्कुल वर्णन
( <b>3</b> ·	१ स	गरोबरा नागर बाह्मण वर्णन	93६	90	किंडवत बाह्मण ज्ञातिभेद	900		कान्यकुद्धानागीत्रास्यद्यामज्ञान कोष्टक
3	स	प्णारा नागर बाह्मपा वर्णन	ः १३६५	७२	स भवर बाह्मण ज्ञाति भेद.	१७३		अयआदिगींड बाह्मणीस प २८

टट १ जीवुबासण अंतर्वेदी बाह्मण गीच चक	993		साचौग नागर बाह्मण प्रपनि	<b>93</b> €	9	अय क-हाडे ब्राह्मणोत्मिन
<ul><li>९० ३ अषगुरगुर्लीयब्राह्मणोसिन म-१२</li></ul>	997	မွ	४ वारड नागर बाह्मणा वर्णन	935	44	पचय बाह्मण भेद कयन
९५ १ अयनागर त्राह्मणीसिनिः म १३	997	४०५	र प्रभोत्तरा नागरबाह्मणवर्णन	483	1	अथ देवरुख बाह्मणोत्मि
१०२ • नागर माह्मणाना गीत्र उरुप संख्या	992	४००	नागरात् खडायतोभेद	188	9	अय आभीर अभि सुबाह्मणो सति.मः
१०३ १९७ नाह्य नारडे नागर बाह्मणोद्यति	993	٥	नागराना गोत्र प्रवरनिर्णय चुक्के	388	9	अयशेणव सारस्तवाह्मणी- भ०२
१०४ २३१ गर्ततीर्धन्नाह्मणोसनि	१९३	9	अयखंडारता विमवणिजोस रि.मं१४			एपा मेच त्रिहीन दशमोत्र बाह्मण इति नामान
१०६ २७४ अयदितीय नागर भेदवर्णन	<b>39</b>	9	अथवायडा विभव पीजे स तीः भः १५	१४७	9	अथप श्रिम देशीय सें दिक च्छिहात
१०७ ३०६ का दिशीका नागरा	9२ ७	9	अथउने वाल बाह्मणी स तीः प्र-१६			रिसारस्वत बाह्मणोस ते म- २४
१०७ २०७ अस्परीकुळदेवीवर्णन	१२व्	9	अयगिर्नाराबाह्मणोसिन्तः मः १७	980	३६	लवापा सिनियोसित
००८ ३२० अष्टकुली नागरबाह्मणा भेद वर्णन	974	0	गीनीरा बाह्मणाना गोताबटक चक	940	9	अयद्धीच सारस्वतपर तमाह-प्र-
१० ३६५ नागरवणिक भेदकथन	१२६५	9	अथकडे लबाह्मणोत्सिः प्रः १८		१५६	बह्म सिनिय ज्ञात्युत्पत्ति
११ ३७८ परणी नागरविणिक मेदकथन		१०३	कपोल सोरड वणिजा मुसन्ति			अन्य ब्रह्मक्तियज्ञाति भेद
१ ३५५ मोरवीया सवा दादश याम वासीनागरवर्ण न	139	•	~	१६५		अय नर्मदोत्तरवासी सारस्वतवाह्म० म २६
१ ३८० चित्रोडानागर मेद वर्णन	9३२	9 .	~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~	१६७		अथकान्यकु कु बाह्मणोस है. प्र २०
२ ३९१६ यडनगरा बाह्मणु वर्णन	१३४		<del>^</del>	१६०		अय शरयू बाह्मणो सित्त
२ ३९२ वीसनगरा झाह्मणाव्यान	१३६ ५		<del></del>	° १६८		मन्यकुचाना पर्कुलवर्णन
२ २०१ साटोदरानागरबाह्मण वर्णीन	936	- ووا	A	900		भान्यकु सानांगीत्रास्पद्यामज्ञान कोषक
कणाग नागरबाह्मणावर्णन			u vias ara monto dos	१७३	۹ ،	अथुआदिगोड बाह्मणोस- ५ २ -

PAN	<del>ص</del>	अयभागाउँ बास्मिणोत्सेत्तः मकरणे २९	948	9	भयतेटक गास चेंडाबाळ झाह्मणील	1		जगादि मैंबाजाभेदर	अली म
994	,	तम् दूतनकम् माद्वगीपः			निमकरण ३३	•	•	-बोरासी मेनाडा भेदा	ना <b>हा छो</b> त
१७५	+5	A * * * * * * * * * * * * * * * * * * *	940	ર્ષ	बाय मौतर भेद कंपना			, ब्युक्स्माति चोनिसे प्रशिसे ब्राह्मण भैद	
•		अयमेकतवात बाह्मण भेर	1 5	44	सञ्जबणिक् भेर			-सर्पेसम् मर्सेन	
۽ به فر	Q	स्वरोक्तरवर्सीश्चामी गीव मेरी	155		संस्कानां गोमायस्य स्का	1	* * ¥	कास्तिक नाम स्मरणोन सर्प भयोजसदेनार निष्क	
106	89	हेर्रेखा भी गीवा भेर	745	1	अपरेक्यरायक शतकाह्मणी अक ३४	<b>ą</b> 1	1 33	नागरङ्गुरस्यापर्न	
7994		मीमीड शहाणाना नीमादिनक	15	1	भपरापणाज्ञाह्मणांसन्तिः त्रकरणा २५	٦,	114	मेर्पारानां विवाह विभि कथन	
444		<b>अथरा इनाह्मणो</b> सतिमक्सणं १०	11	ų,	नापळात्रास्य बोरमदाभाष्यगीसन्ति	1	<b>4.383</b>	राजसी मैकाबा ह्मण भेद	
700		अयद्यीच दायमा आस्त्रणो भ ३१	175	11	इन्सोतज्ञाह्मणोसान	1	<b>\</b>	भर मेंबाडा बाद्यणाना गांभारी दर्क	
963, 5		पराग्रस्पारी रन्त्राह्मण भेर	111	-	ररसी है वणिक नावि	Ą T	<b>t</b> 1	अथ मोतावा भोरपाखः शिरपत्तनुत्राह्मणी ।	
167	4	सारस्त शास्त्रण मेद	111	40	अवगोरबान बारीसा बाह्मणोसन्ति			'सिन म <b>करण' ३९</b>	
942 1	4	गीरमाञ्चणभेदर	111	<b>₹</b> 1	भषगठव परिया बाह्यपोत्पनि	204	, ,	अधनापितीरस्यकाष्ट्रस्वासि बाह्य	
13.1	ς.	रार्नरगीह बाह्मण मेदः	183	1	असभागैन शहरणोताति महरण ३६			णोलित प्रकरण४•	
147 1	ψ.	प्रिरवराज बाह्मण भेर्ड	385	,	भयतकात्रियामाह्मणोसिति मकरण ३०	*(**)	٠,	अय और्दुवर मास्रण,कापित्य बाह्मणा,	
187 1	η.	मम्म खेख भेर	15	,	भयमेरपाउ बाह्मणोत्पति चकरण ३८			गटमूल बाह्मण, सगालवादीय बाह्मणी	
1 1	•	रपीयाना गीन शासायक	35	ų	भट्ट मेबाबा भेद			सामा मकरण ४१	
107 9	) (	भथदर्शन पुरवासि दिसावाल बाह्मणी	355	٧j	नागह भेद	<b>1</b> (	-	मय सद्श्रामीड शहाणोसित्त नकरण १२	3
_		लिमकरण ३९	•		क्णिक शिम्मीनाभेर			माडम्बर्ग प्रेड बार नेगम सपस्यतः	`

धीर्ण'	944	ा अयभीगीड बाह्मणात्मेत्तः मकरणे २९	741	<b>,</b> )	भगसंबद्धनास स्वहानाळ्यास्मणास	٩.	-44	भवाद भवादाभदर
मस्र	994	<ul> <li>वसन्द्रतनकन मास्पीपः</li> </ul>			निमकरण २३	•	4,5	
3	944 8		44	44	_	1		६ बभुळकाति चोविसे प्रचीसे ब्राह्मण भेद
,		६ अयमेडतवातः ब्राह्मण भेर <sup>ः</sup>	9 4	- 44	सम्बन्धिक् भेर	3.5	11	सर्पसम् मर्सम्
	194 8	स्वरोद्धा रनसीबार्या गीव भेरी	783		संस्काना गोमायरक चन्न	1.1	1.2	भास्त्रिक जाम स्मरणेन्सर्प भगोनमनेत्रास्त्रिक्ट
	706 Y	९ बेरोडा धीगीब भेरा	243	,	अधरेक्यरायक बालजाह्यणी अक ३४	٦ ٩	53	नागरकञ्जरस्यापनं
	196	मीगीड श्राह्मणाता नोभादित्यक	11	١	भपरोगरा ब्राह्मणोसितिः नकरणं २५	۹ ٩	114	मेर्पाद्यना विवाइ विधि कथन
	704 1	<b>जयश्चक्रमाह्मणो</b> सत्तिमकरणं ३०	11	۹	नापस बाह्मण बोरसदा अञ्चलीसनि	1 1	143	राज्यसी मेशसामा ह्राणा भेव
	<del>19</del> 4 1	अधरपीच दायमाबाह्मणी भ ११	155	15	<b>रुगोतवाद्मणो</b> सत्ति	13		भरमेवाका आक्रमणानागानारा नकं
	1214	भाग्यशस्मारी रन् <b>त्रह्मण सेर</b> ्	111		इस्सोसे नॉण स् नगीत	<b>२</b> ३	1	अथ गोवाका भोरपाछ । शिरपत्तनका ह्मणो
	167 14	सारसन ग्रह्मण भेद	131	40	अपगोरगान वर्गासा शह्मणोसति			तिति मकरणे ३९
	10216	, 'गीडबाह्मणभेतर	113	33	भयग्रुव मस्या बाह्मप्रदेखन	ومفر	•	अधनापितीरस्यकाषधरवासि बाह्म
	1315	युर्जरगीड आह्मण मेदः	163	1	अयभागेन मास्रायोसात्त मकरण ३६			णोलित प्रकरण ४०
	162 1 6	विस्तरास माझण मेर्ड	15%	1	भयतकाजियामाह्मणोसिति मकरण ३०	٦, ٦	•	अय और्देवर बाह्मण,कापित्य बाह्मण,
	112 113	प्रस्म <del>कोष</del> भेर् <sup>भ</sup>	15	,	अयमन्पान बाह्मणोत्पत्ति मकरण ३८			बाटमूल बाह्मण, सगालबाटीय बाह्मणी
	5 %	प्रभागा गोन पासस्यक	11	Ą	भट्ट मेनावा भेद			सित मकरण ४१
	167 1	अथदर्शनपुरमासि ६साबाट बाह्मणी	32¢	¥1	नागर भेदा	٠, د	1	अयदादश्मीड बाह्मणोसिन मकरणध्य
		सनिमकरण ३९	1	γc	विशक्षिमीनाभैर			गाडवामी प्रेड बा॰ नैगम सामस्य साचि

						=====		
20	ζ	२ व्यागाड ला० यागांड कायस्याः	293	9	अथवाल्मीक श्रह्मणीसन्म - ४३			अधाउँ रवास बाह्मण निर्णेषः
306	٦ ع	५ स्री गस्तव्यकायस्या स्री गीड बाह्मण			गोमिनीय बाह्मण भेद			व्यथनारदीय बाह्मण निर्णयः
२०९	२९	हर्याणा गोंड बाह्मणा हर्याणा कायस्था	393		रत्यालय बाह्मण भेद			अयनादांयी भारतीया नद्वाणा निर्णयः
२०९	33	् वाल्मीक गींड बाह्मणा वाल्मीक कायस्या	ः २१३	રેલ	वाल्मीकीनागोत्रादि निर्णयः	२२०	39	अयमेत्रायणीय निर्णयः
२०९	31	<ul> <li>वासिष्ट गीड ब्राह्मणा वासिष्ठ कायस्या</li> </ul>	<b>૨</b> ૧ ૪	0	गोन प्रवर चक		39	अथ वग वगाठी बाह्मण निर्णय
२०९	Ą.	सीरभगीड बाह्मणा सीरभ कायस्था	<b>ર</b> ૧૪	٩	अषरक्ष पसुरेदीयपलद्गी करबाज ४४	२२१	9	अथदा त्रिंदा द्वामवा सिबाहर पर ४
२० ९	83	दालक्यनीड श्राह्मणा दालक्यकायस्था	२१५	9	अयशाक द्विगमभोजक ज्ञान्यन ४५		90	कारेऊ बाह्मणा
२०९	४७	सुरवसेन गोड ब्राह्मणा सुरवसेनकायस्था	२१६५	9	अथ अनावला भाटेला देसाई ब्राह्म	` २२९	9=	फर्कारी मामवासि बाह्मणाः
<b>390</b>	49	भहनागर गेडा भइनागरकायस्या			णेसिन भव ४६	209	98	मरण प्रामी भास्त्रण ० कानुनी बा ०
२९०	પ્	सूर्यध्वजगोडा सूर्य ध्वजकायस्था	299			२०१	२०	माडि माम्यासिद्या॰ नागवयाम् वा ०
		माथुरगोड बाह्मणा माथुरकायस्था	398		अथानक विधवाह्मणोस ते. प्रन ४८	۲- ۹	ব্ৰ	मित्र नाहु बा० निर्मार्ग बा०
र्५०	६३	चंक गोड भेद	306	9	अथ उन्कल बाह्मण निर्णयः	३२9	२२	भिमंतुर बार शिवली बार
290	६८	कायस्थाना गीहाना माह व्यापा	२१९	R	अथभियत बाह्मण निर्णयः	229	२३	अजसुर वासी बा॰
99		इति मध चित्र ग्रस कायस्य भेट	२२०	98	अथमाध्यजन सिस्ति बाह्मणा निर्णय	339	રફ	<u>क्रुट झा ०</u>
(99	७५	अथ दितीय चिवगुत कायस्योत्पत्तिः.	२२०	95	अथ गयाबाद बाह्मण निर्णयः	<b>२</b> २१	ર્પ	नी पाडि ना॰ को डिल ना॰
199	<del>८</del> ७	अथ चाद्रसेनी य कायस्थीत्पत्तिः	२२०	٦9	अथनार्मदीय बाह्मण निर्णयः	२२१		कार मुरु झा॰ उज्लय झा॰
		अथसकर कायस्थोत्म <u>ि</u>	२२०	२३	अध सोम पुरा बाह्मण निर्णय	२२१		चीकींडी मा॰
92 9	93	कायस्थवणी निऋय	२२०	२७	अथपतितपतियाणाचा स्मूणानिणीय	229	२८	चामिख्रु झा० खरमा - ७

<del></del>	९ व	२ 'श्रीगांड ज्ञा० भीगांड कायस्था-	293	9	अथवाल्मीक श्रह्मणीस-भ- ४३			अय उंटवास बाह्मण निर्णयः
		५ मी गस्तव्यकायस्या मी गीड बाह्मण			गोमिनीय बाह्मण भेद			अयनारदीय बाह्मण निर्णयः
२०९		इर्घाणा गोड बाह्मणा हर्याणा कायस्थान	२१३	99	रच्यालय बाह्मणाभेदः			अधनादोयी भारतीया नदवाणा निर्णयर
२०९		् वाल्मीक गोड बास्त्रणाः वाल्मीक कायण्या		२०	चार्टमीकीनागोत्रादि निर्णयः	२२०	39	अय मेत्रायणीय निर्णयः
२० ९	3	<ul> <li>वासिष्ट गीं ब्राह्मणा वासिष्ठ कायस्था</li> </ul>	<b>398</b>	0	गोच प्रवर चक		39	अय वग वगाली बाह्मण निर्णय
<b>२</b> ०९		• सीरभगीड बाह्मणा सीरम कायस्था.	<b>ર</b> ૧૪	٩	अष सक्र पर्हे दीयपलई करबान्य ४४	२२१	9	अथ हा नेवा द्वामवा सिबाहर म ४९
<b>३</b> ० ६	មូទ	् दालक्यगीड बाह्मणा दालक्यकायस्था	<b>ર</b> ૧૫	9	अयशाक देपीमगभोजक ज्ञान पर ४५		90	कारेऊ बाह्मणा
२०९	80	असुरवसेन गोड बाह्मणा सुखसेनकायस्था	२१६	9	अथ अनावला भाटेला देसाई ब्राह्म	२२१	9=	फर्कारी प्रामवासि बाह्मणाः
_२१०	49	भट्टनागर गेडा भट्टनागर कायस्था			णेसिन में ४६	209	99	मरण मामी भाह्मण ० कानुनी बा ०
<b>490</b>	વ	सूर्यधनगोडा ऋर्यधनकायस्था	२१९	7	अथसनाड्य बाह्मणीत्मति म ४७	333	२०	माडि माम्यासिद्राण्माग्ययाम् द्राण
		माथुरगोड ब्राह्मणा माथुरकायस्था	२१९		अथानक विध बाह्मणोस तिः पर ४८	२३ ९	२१	मित्र नाडु बा० निर्मार्ग बा०
२९०	६३	चंक गीउ भेद	२१९	9	अथ उन्कल बास्मण निर्णय	२२१		भिमंतुर बार शिवली बार
290	ध्ट	कायस्याना गीडाना माडच्य पाप	378	8	अथभयिन्य बाह्मण निर्णयः	2 2 5	२३	अजपुर वासी बा॰
299		इति प्रथ चित्र ग्रास कायस्य भेद	२२०	38	अथ माध्यजन स्विक्ति बाह्मणा निर्णयः	329	રક	<u>क्ट अ</u> र
233	७५	अधिदितीय विवगुत कायस्योसितः.	<b>२</b> २०	95	अथ गयानात बाह्मण निर्णय			नी पाडिजा ॰ की डिल जा ॰
२११	E10	अथ चाद्रसेनीय कायस्थे त्यति :	२२०	٦9	अथनार्मदीय बाह्मण निर्णाय.	<b>२</b> २१		कार मुरु बा॰ उज्लय बा॰
२१२	908	अथसकरकायस्थोति	२२०	२३	अथसोम पुराबा ह्मण निर्णय	२२१		नीकींडी मा॰
<b>393</b> 9	193	कायस्यवर्ण निञ्चय	२२०	२७	अथपतित पतियाणात्रा स्मणानिर्णय	339	२८	चामिन्नुरु बा॰ प्रयामी- बा॰

		रह्मनी बा	410	•	भयनगर्वहवाज्ञातुसात म ५४	14	<b>»</b> (	, इस्तीमलक नन्म
489	15	इनाबुबाह्मण इनुकारा	170	1	भयमादियास्त्रिपासित्र प ५५	484	¥	तौरकाची जन्म
123	1	केमिनबाद्यणः गतिज्ञाः धिरपाविज्ञाः	734		भाटिपातुस्य गोनागारवा जान-वक	334	ye	· <b>उद्<b>क</b>णम</b>
383	31	कोडिपाडि जार	111	•	भग्गरबासानैश्पोसित मा ५५	184	७९	सुरेश्वरमञ्जनम
317		अधायनित बाह्मणम्बरण ५०	M	1	भागापमादुभनिषयनम्योजनम् ५०	116	७१	भानद गिरी जन्म
339		गोसक ब्राह्मणा पंचयामवासिनः	M	9	अयजैनानार्पमातुर्भाव मक ५८	174	49	सर्वदन अन्म
445	11	च्यूनाह्य ग्राह्मणा	111		(* f			निन् सुरव जन्म
335	17	पुरुष्यक बाह्मण्याः परिक्रमा महित्रा नामकः	141	٦	· ·			अयन्बतुर्मेश मिर्णप
335		रेकेनी मिषुन रर बास्रणा केरल बास्याय ह				२२७	14	आनद गिरी सत शंकर पार्शीव
*31	17	स्वजा हैगमा कोटजा नैतृहमा स्वयवद-	११५	1	मीशकरानार्यभादुर्भाव मक ६०	27.0	104	, अयर्गक्राचार्य एक पर्परा
717		ब्रिजा निर्णया			चित्रस् स्पोक्तरमा	२३७	٩	<b>अध्यम्भातकार</b> भ
444		भपपाचालबाद्धणोसिनम ५१	सु५	٦ď	साधवकत ग्रकादियु विजयोक्ता मा			
333		* • •			सु <b>पचा ए</b> जाजना	२१८		र्तिनी ब्राह्मणांसति मातहा ध्यापे विष
111	<b>१</b> २ -	ब्रह्मणंबाड भेर	114	•	महूपार् जन्म			यानु फमणिका समाप्ता
199	₹₹ 7	उप पाचाल भेद	344	49	गमरजन			
(18 •	• -	अधकुर गोलक मा मकरणे ५२						
<b>સ્વ</b> પ	4 3	अयाद्युनाई सरीज्ञात्युसनि म ५३	111	ريون	मभाका जन्म			

								-		TIVIT M
रूसी पी	سنحو			71,6	•	अथस्याद्वबाह्यासुसार्त मा ५६	14	بالر	रस्तायतक जन्म	अध्या १६
मेगस	w	3.5	हैनहुबाह्मण इच्चका	ধ্যুত	1					श्राद्यायात
Ą.	127	3	देशिमबाह्मणः पासिन्नमः हिरपदिनाः	३३∢		भाषिपानुस् गान्यासा चान रफ	*14	Ve	<u> उद्दर्भ</u> म	
	343	31	कोडिपाकिका	116	1	भगार्वातावेष्योसित म ५५	114	4	सुरेन्दरमञ्जनमः	
	115		अय पतित बाह्मणम्बरण ५०	14	1	अन्यापमादुर्भावकथूनमयोजनम <i>५</i> ०	116	७१	भानद विरीजन्म	
	439	•	गोसक बाह्मका पंचपानवासिन	11	9	अयजेनानापेमारुमीव मक ५०	de	७९	सन्दर्भ जन्म	
	441		स्त्रवाह्य बाह्मणा	-		जैनानार्थनम् अरुवृद्धान नक				
J	141		द्धवानक बाह्मण्यः परिक्रमा भद्रिमा नामकः				•			
1	+333		रेडेनी भिष्ठन इर बाह्मणा केरल बाह्मण इ			A =	170	94	आनद गिरी छत् बाकर मादुर्भाव	
	33	3.7	स्वजा हैनमा कोटजा नैतुरुमा सपवण-	१३५	1	मीशकरानायं भादुर्भाव मक ६०	$v_{f^{\beta}}$	104	प्यचिक्रसार्य स्टब्स्परा	
1	335		दिया निर्णय	<b>11</b> 4	3	<b>ंधिनस्</b> रस्पोक्त मा	$v_{f}^{-1}$	1	भयम्यास्यास्	
	417		भषपाचारमाद्यणीसतिम ५१	११५	ţe	माथन कत शक्तदियु निजयोक्ता मा	श्र		- Carlo and a control of the control	
	433	4)	बीव प्रेंबास भेदा	२१५	u <sub>i</sub> e	मुपना प्लाजना	440		र्तिकी बाह्यणीसित मात्रकाध्याय विष	
	188	13.	जहां भवास मेर	175	•	भरू पार्जन्य			यानु फमणिका समाप्ता	
	*17	<b>??</b> -	उप भागान मेर	रद्र्	4,7	राकरजन	ı			
	4.40	٠ .	अपकुरणोलक बा॰ मकरणे ५२	२३६	4	प <b>रापर्जना</b>				
	रषपु	١.	अयरिष्ट्रमाहे स्रीतासुसन्ति म ५३	414	بالإ	<b>मभक्रजनम्</b>	ı			¥

## अर दिज्ञापन पत्रिकाः

त्यास्तर्भा मत्सकलियुलजगन्महाडम्बर विरचनत्रयास व्यासिवन्यासानुप्रासकार्यधुर्यवर्षस् साद्यमानमान ही न शास्त्रपारावार पर पारतीर तरण करणचञ्च कञ्च क्रिम्न निवर्गहत्मितमत्त निगदिनमहानु भाव त्यपरम पुरुषावधान निरतत्वप्रभृतिगुणक दंवरं वास्त्र निक्र निक्ष ञ्जामध्य जितमञ्जुर ज्जिनि हें देने व्यस्यायमान नानार सिकजन रसनारस्वरित जो हृष्यमाणापर माणकीर्ति प्रसंस्थीत हृतिस्ति वित्यस्य तापादकदी सि नेरा शिक्ष तसीर नेधिहिज्राजिनिधानीद्येष्ट समस्ति व द्यावराधितीविद हेप्त प्रस्ति स्वर्मा प्रयोष पोषपोषपोष पोषपोष पोषपोषित व कृत्वेष प्रविध्व वित्र व स्वर्माध्ययनस्य जायमानानिवार दर्पभारा हुकत तल स्वृष्ट व व स्वर्मा ध्यावराय मानानिवार व प्रवास स्वर्म स्वर्

प्रन्ते - विकरालकिकाल करवालेन तत्कृतज्ञाति मर्पादायसन्त माधवी लता चेच्छिद्यत इति समयले च्यपरमकारुणि कश्री महेद् व्यासेन समस्त पुराणेष्ट वर्ण धरे मर्यादायथायकारा मतु प्रवेशया त्रकेयतोऽ यजनो लब्ध प्रतिपत्ति पूला स्वोस्तिं स्वधमें स्वकर्तव्यं सुरवेन जानी यात्तह दृतु सरेच्य

अत्रविद्धानया भूवसा पित्रमेण ' स्यल प्रकाश १ श्री माल पुराण ( कल्याण तंड ) २ ह्रोड पुराण ( धर्मारण्य माहात्य ) ३ मेवाहपुराण (एक लि गेलेज माहात्य) १ कडो लि गेलेज माहात्य ) १ हेगोल प्रणाण हिएला द्वेर विद्या प्रणाण (नागरखंड ) ७ को व्यक्ष माहात्य व नाल वित्य खण् १ सा दिस्त १० प्रभास खंड ११ तापी खड १२ वाह प्रणाण १३ कायस्थ प्रकाश १४ प्रभृति येथान् - केदार मल यह फरी लल मि चलाग्यादिमाहात्स्या ने ,महण्यविर - पास्त नाम कत प्रते निहास यन्यां प्रस्त मालोक्य विर चित्तो द्वेयन्यः । एत हुं ध विरचन प्रयासार स्मापोजनं च - अस्मिन्स मचे ( १९०० जातके ) आर्यजनाः स्व स्व पण्य निव हे व्यय त्यापिताल ताप्रतापाच स्व हाति ग त्रविचार प्रतिपादक यन्यावलोक नम पिन् कर्वना विषुन्रच्येषा म् ॥ किं स्व हाति कुल भेदा विषय ने मनुष्य लाविक नम कल लाविक नम पन् कर्वन स्व विषय नम समाक सवश्यम पे सित मि तिषुराण वचना निषचे दर्वत यथाची कें-

## अर दिज्ञापन पत्रिका •

स्यस्तियां मत्मकलियुलजगन्महाडम्बरियचनप्रयास व्यासिवन्यासात् प्रासकार्ये धुर्यवर्यसम् साद्यमानमान है न शास्त्र पारावार पर पारतीर तरण करणचिन्ह कि भू नपित्मि तिविरहितमित्त ति गिद्तमहाटु भावत्यपर मपुरुषाव धान नेरतत्वप्रभा तिगुणक दंब है वारु निकु ज्ञान्ध्यार जोह ष्यमाणापरिमाण कीति प्रयस्थिति है तिस्ति प्रासन्तापाद कदी सि नेरा शेकतस्थर निधि है ज्राजानि धानो द्येष्टु समस्ति व धावरो धर्मो विद्येष्टु पुन्रिपसमस्तानव द्या पवेद दे धा निरंतर घोष पोष मो बित ब इ वोष यु विध्व वेद्ये हुन्ह न स्वत्माध्यय नस्य ज्ञाय मानानिवार दर्पभारात कत्र स्थय ग्वलस्व स्थापित है निक् स्थापित के स्थाप के स्थापित के स्थाप

प्रन्दु – विकरास किकाल करवालेन तत्कृतज्ञाति मर्यादा वसन्त माधवी स्न ता चेन्छियत इति सम्बर्भ च्याप्रमकारुणि कश्री महेद व्यासेन समस्त पुराणेष्टु वर्ण धर्म मर्यादायथावकात्रा मतु प्रवेदायात्र्यक्रेयतोर यजनो सच्धपतिपत्तिर्भूतास्वोष्ठतिस्व धर्मे स्वकर्तव्यं सुरवेन जानीयात्तह्न द्व सरेच्य

अत्ररवद्धनया भ्यमा पश्चिमेण 'स्यल प्रकाश १ श्री मालपुराण् ( कल्याणार्वंड) २ ह्मोडपुराण् ( धर्मारण्य माहात्म्य) ३ मेबाइपुराण् एक श्चित्रेश्चनमाहात्म्य) १ कडोलपुराण् (कण्वाश्चममाहात्म्य) ५ हेगोलपुराण् (हेगुला द्वेरवपुर) ६ नागरपुराण् (नागरखंड) ७ कोट्यक माहात्म्य न वाल खिल्यरवपुर स ह्या द्वेरवड १० प्रभासरवड ११ तापीरवड १२वाटपुराण् १३ कायरस्थमकाश १४ प्रसृतियं पान् वेदारमलयपुष्करोत्कल मिथिलागयादिमाहात्म्या न ,मन्ष्यविर चितन

पाळताप्राकत इटें तेहासयन्याश्च समालोक्य वेर चेत्तोऽयंत्रन्यः। एतद्वंध वेरचन्प्रयासारम्भप्रयोजनं च - अस्मिन्समये (१९०२ दातळे) आर्यजनाःस्व स्वपित्र्य निवहित्र्ययत्त्रयाष्ट्रीतालु तापतापाच्चस्वज्ञातिगं त्रविचार्यतिपादकयन्यावलोकनम्पिन्छ्वन्ति। किपुनरन्येषाम्। हिंचसद्ता तेकुलभेदा विषोध-निम्दृष्यवायिक्कित्रसकलजात्यतिकाताना मस्माकसवश्यमपे क्षेत्रामि तिष्टुराण वचनानि प्रचीद्यं ते यथाचीक्तं- "भागरिव्यक्तित प्रायिक्तिविश्वेषकः ॥ ज्ञासाक्तातिविवेषकृद्धिज प्रत्यसम्बति॥ इति॥ नयानसमाद्रिलके "कार्कोः स्कुलिकिमसवन्धं की द्रितेषम् ॥ स्वरूपित्वविश्वेषकः ॥ १ ॥ नारवोष्ठस्यिजायममनेत्य्विवाल्धः ॥ १ तथानपायोऽपि "दिनन्यानोभनेपुरमस्या स्वृत्तातविवनः आत्मनाज्ञातिवृत्तातयो मजा नातिसस्यमान् ॥ ज्ञातीनासमधायार्थे पृष्टं सन्भूकताभनेत् ॥ स्वजानिपूर्वजानायोनविज्ञानातिसम्बन्धः ॥ समनेसुष्यक्षिष्ठनसद्या पिक्तेषकः ॥ गोनप्रवर्शास्वादिगोन्दिवतस्यस्मु॥ स्थापनास्यानतादात्यस्यापकस्यादिकस्याम् ॥ आत्मन सर्ववृत्तातिविज्ञयमिद्माद्यत् ॥ गोनप्रास्यावरकचङ्गातिष्रक्रवामकः ॥ देवीगणपतियस्वज्ञानातिष्यकः ॥ इत्यादीनियमायानि सस्वधर्मजा

तिगोत्रकुत्मा नवस्यकर्त्यताक ज्ञानभनोदकानिजागर्काणिसन्ति।तस्मान्यत्याणात्त्रत्यातिज्ञानिकोषतः कन्यायत्रय्यवहारपुर स्रोन्यत्रा हिन्निम् त्रीह्नोकिकपारलेखिकारवण्डसुरवावासये;वर्षतपादनीय वयापयवस्यितिमित्तपानिचार्यनानाविधपरियमसदेदि निवरिन्द्रवोद्धयः ज्ञाह्मणोत्पति मार्ति वह नामायन्य सहद्यतद्वाद्धादकी मूससम्बरिनपविनकीर्ताना विद्यत्ननाना सुरतः सुष्याव्यक्तिहारिविकाणः स्वत्रेविक्तानिकानिकान्यस्त प्रदूषाधाणेन स्वत्यमोदस्तिचन्तान्याम् ॥ अन्तरिवयाम् विषयानुक्रमणिकायामद्शिताः सन्त्येवतः सुपीभिरवधेयाविधेयनतद्वस्तोदनमिति भूयो स्र्यः मार्यपानि॥ ६।

ज्योतिरिद्ध चेंकटराम तन्नजन्या हरिक्कणवान्यां

ं भागिरेव्यवहारेन मायस्मित्विशेषतः ॥ज्ञासात्तिविकेतुद्दिज प्रयसम्हिति॥, इति॥तयस्यससादिस्यदे-"काइकोऽ ह्युलिकिमसवन्धः की द्रशेमम् ॥ स्वस्यधर्मीन लुप्येतत्त्विविन्तयेद्वेषः ॥ १ ॥ नारदोष हार्याज्ञायममन्द्रस्यिवालुधः ॥ १ तयाच्याचेऽपि "दिजन्मानोभन्युस्मस्वा स्वृत्तात्वेदिनः आत्मनात्त्वित्तात्वोदना नातिसस्यमान् ॥ सात्रोनासम्बाधार्य पृष्टः सन्भूकतामजेत्॥स्वजातिपूर्वजानायोनविज्ञानातिसम्बम् ॥ सम्बेद्धस्यश्चित्रसद्यापकस्यादिलस्याम् ॥ अत्यस्य सर्ववृत्तात्विक्षयम् प्रमादिलस्यापकस्यादिलस्यापकस्यादिलस्याम् ॥ अत्यस्य सर्ववृत्तात्विक्षयमिद्यादस्य ॥ गोनश्चर्यावन्य च्यातिमस्यामकः ॥ देवीनणपतियस्वज्ञानातिष्ठावनः ॥ ॥ इत्यादीनिममाणानि स्वस्वपर्यज्ञा

तिगोत्रकुत्रमा प्रस्पकर्तव्यताकक्षानभनोदकानिजागद्दकाणिसन्ति।तस्मान्सतुष्याणास्वस्वक्षातिक्षानिकश्चित कन्यासुष्यवक्षागुर स्तरगोजवरा इदिम्सः स्वैद्देनिकक्षारकोदिकारवण्डसुरवावासये वर्षस्यादनीय ग्यापयवस्य विभिन्नभणित्वार्यनाताविध परिश्वसम्बद्धे नविरिक्षितेन्य ज्ञाह्मणोस्यत्ति मार्ते एक नामायन्य सहद्रपत्दद्वारकादकी भूकसञ्चर्तिभणितीना विद्वज्ञनाना सुरत सुष्याक्ष्याक्षिरविक्षणि स्वस्वेष्मित्वादिक्षान् प्रदूषणाञ्चालेन का वात्रमोदसविधक्षानम् ॥ अनसविषयान्य विष्युत्वक्षमणिकायामदिश्चा सन्त्येवत सुधी भिर्वधेषा विधेषवत्ववस्थोदनमिति भूषो सूपः पार्षवामि ॥ क्षु ॥

स्थोतिषदः चेंकटराम तन्नजन्या इरिक्कणावार्मा अस्तिषदे चेंकटराम तन्नजन्या इरिक्कणावार्मा





च्योर्ण

अध्याय १६ श्राद्यणीति ।

श्रीणाशायनम अयमहाराजात्मितमार्त्तं की भाषाकहतेहें अवग्यकत्तं अध्यायके भारत्तं मणकरते हे व्यकहत मूपकवाँ हे गहन जिन कु ऐमेज्ञाविमेशागणपति उनकु औरसरत्वती और बहुकनाथकों कु पितान्यकटराम उनकु नमस्कार करके १ माध्यदिनीयगीतमगोनीय एनेर महाण आहिन्य सहत्वज्ञातिषदिन न्यकटराम उनका पुच ज्योति शास्त्रवेता होरेकणाम्य स्वकत चतुर्वसात्मक बहुस्यातियार्णभ स्थके छ देगियस्कथमे सोलाचे अध्यायमे हाणोत्यनिकानिणायकरताहु १ मेरी उत्पत्तिमहाराष्ट्रशमे औरगाषादकरक बजाशहरहे बाहा भर्दे १ वस्त्रायके रोभागई उत्तमे पहिने भागमेनणसकर ना

श्रीगणेशायनम प्रवाहनिविद्यशिष्टिवाहासरस्वर्ती स्वेष्टश्रीबर्कनत्वापितर्व्यक्टतया १ श्रीगीतमकुत्वेसन्वी त्यातिविद्यक्टात्मन हारह्या करोत्पन्नश्राह्यणोत्पनिविद्यक्टात्मन हारह्या करोत्पन्नश्राह्यणोत्पनिविद्यक्टात्मन हारह्या करोत्पन्नश्राह्यणोत्पनिविद्यक्टात्मन १ अस्ययथस्यद्देशिंगणेय् ५ चत्रुशीतिविद्याणामथबस्यभनेदक पुराणेषुपसिद्द्वेचन तिविद्यक्त्यानुसारत वर्णसक्र्यातिविद्याणामथबस्यभनेदक पुराणेषुपसिद्द्वेचन तेष्ट्रवित्तर ६ तित्व द्यदिसमयनभेदमुत्यित्रपृत्वे सणद्तस्य विभविद्यत्तिभयात्तदा । तत्र्यसाराशामाद्यस्य विभविद्यत्तिभयात्त्व । तत्र्यस्यम्भवेतस्य विश्वोभयत्त्रप्रस्यम्भवेतस्य विश्वोभयत्त्रपर्याद्यस्य व्याप्तस्य व्याप्तस्य अस्य स्थान्यस्य अस्य स्थान्यस्य स्थान्यस्य स्थान्यस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्थान

निकायहोत निकारित्वायाहै वोषधरावा अध्यायहै र ५ अवयहसोतवे अध्यापमे चीन्याशिट ४ जाह्मणोक्छत्विभेद्दिवाताह पुराणोमेवहोत्सावस रहे द नीसपूर्णकथानक तिखेतो फक्तबाह्मणोकि उत्पत्तिकासवातकार्यथहोजावे बास्ते ७ उनोमेसे साराशकथानागते केचर्णनकरबाहु प्रथमस्रष्टिके आर-समेबाह्मणकाभेदएकहता ८ उसक्यमगाणकि तिस्पृतिपुराणोमेहिक स्रष्टिकर्वाजापुरुष उनके मुखसे बाह्मणोद्दा सथे बाहुसेश्चिपेदा सथे उद्ग्रेशागसेवस्य – ग श्रीणाशायनम अयम् द्वास्ति निर्मातं द्वासि भाषाक हते हैं अवग्रयक्ता अध्यापके आरमकु मगता चरणकरते हैं यूपकरते मूपकका है बाहन जिन कु ऐसे ज्ञानि प्रशास प्रति जिन स्वास्ति कि प्रति कि प्रति विष्मे कि प्रति कि प्रत

**争 100** 

तिकायहोत विस्तारित्वायाँहै तोपधरावा अध्यायहै ४ ५ अवयहसो अवे अध्यायमे ची न्याशित ४ बाह्मणोक्ताउत्पत्ति नेदिर्वाता हु पुराणोमेव होतस्तिक रहे ६ नोसपूर्ण कथानक विरवेतो फक्तवाह्मणोकि उत्पतिकासवालस्य थहो जावे वास्ते ७ उनो मेसे साराशक्याभाग के देवर्णनक रवाहु प्रथम स्वष्टिक आर-समे याह्मणका भेदएक हता = उसका प्रमाणका विस्तृतिपुराणो मेहिक स्वष्टिकवी जो पुरुष उनके सुरवसे बाह्मणपेदा सचे बाहसेश्विपेदा भये उद्गता मेरिश्य =

श्रीरपावराश्द एसंन्यारवर्णम्हे ५ १०११ १० उसा बाह्मणवर्णकाशेर् पहले एकहम बर्गान्दे में इसे एसंदोर्शमें न दे जीरहे उसदे स्पेदांसे र्भायवाद्दांकेदशनंद्भये १५ अंरिद्शानंद्नं चीऱ्यासिनेद्भरं सांयुगेट्गे नामसत्य्वताद्वापरक ते एसेचारोद्गे रे बसा देव्देवतावीने आरक्षादिशहरू क्षंगीतमकरान नात्रीक्रगासवादिवरण क्षंनि और मांपातारागचद मूलराजाजय रागमक् तेराज वीने आपने कार्पपरत्व करके स्थापना कियेहै १४औ र्-जनं कबाद्यण बटादंपके गुखसे कामानसमें पैदाना है वोगांबर हत वेदकमें भाष्ट देशांतरों मासिद्दें ४५ अबद्शमकार बाह्मणोर्जनार दर्णारंज र ते वं गंभद्र गंडभमहाराष्ट्र ४ में रूप यह पंचद्र चंड कहे जाति है चिध्याचल कर सिणतरफ रहते हैं १६ के रूप रास्त १ कान्यक अभोड ६ उत्कल ४ में रिस प्यह ध्यान्या ज्ञात्र प्रमान स्वाद दिन देव देव प्रमान के प महार् पूर्वः गुर्जा में विर्वेद में दे हैं से दे हैं वे के स्पत्त कर दुन्क में दे उत्करों है से : पत्में द दिस कर निर्देश कान्यत्किनाण अधनत्यि तिहाहणनम् नर्हं हि सिक्षाः चतुर्य तिहा ए न म निम्बद मरहे मोडद देडन निश्च णोत्य नेयेषं ६ येषतः १८ के इतं पुर्वा गणान ए देस् दुः पुरत्नः तर ही ग्रंथ कर्र् देश् ति ही दी च्य पं इकं १९ पे हरू महार हेत र तर के दिला के में ते बाह्रणास है त्या है णास में २० दे है देशे दे है में में माम स्वीक के देश मोहेरहें देश जांश देंद हरे मिसार देश पंतरं इकहेजातंह विधानएके उत्तरबाज्यहतंहै १७ अब्बोच्या शेजातिके बाह्याकि नामुकहतेहै परतुमाटणशनं जहें तथापीवोचे या शिमेद व वेडगीड मेलके हैं १८ और किने करासा ने कहते हैं कि फक्त उत्तरबाह पाओ पर कीर बचीके वीचा सिमें दहें सो सब आंग देखा यंगे उसमें मध्म यंथकरते एक के जाति सहस्कारी दिन्द बाहाण १९ रोलक आदिन्द २ दीमा विक हाण २उनोके यजमान पोरवाल बनी रे वे दर बीन

भोरपावरं भूद एसेचा प्रणामणे ९ १०११ १० उसरे बाह्यणवर्णकाभेद पहिले एकहत राद्यालके रे उसे प्रदेश देश देश के जो रहे उसके अधेदों में र्भारचार्दं केदशसेद्सये १६ भीरद्शसेद्सं चीचासिकंद्सरेसोर्गेष्णे नामसत्य्चेता इपरक ते ऐसे नारे एगे रे बहा देवत्वताने औरआदिशहरू हंदरीतमकान गत किमालगार वर किमोने और मांधातारामचंद्र मुख्याना नय रोग प्रश्न ने राज बोने आपने कार्यपरता करे रूपापना किये है १४ औ र् जिनेकबाद्यण बहादेगके एससे कारांगरमे पैदासरेहे गोगे बर हेतर दर्जम सृष्ट देशांतरोमे र सिद्दे १५ अबद्शमकारने बाह्मणोन्ने र जयारिक र देण रिक गरद विदर्भ महाराष्ट्र ४ व इस पे इस विद्याचन केद शाणतरफ रहते है वह और रारखन व कान्य कुछ र में इस उन्कल पर है कि पर ह स्त्रीक करणे द्वास में देश देश र तांद्रिक रिक्टिंग तिक है। देन हिंद कर में देन र देश देन तांद्र है तांद्र सर्थ स कादन्य बाह्र पाज त्या त्रित देश मे देखा जिस्सिय करी ने ता १ अ वस्य देश के हिणा निर्णाय कर ती में दे देखा महार पूर्त र राजर के निर्मे हम हिंद हैं से देश में १६ र स्पर्त कर कुछ में द उत्करों है छ र रेट में इ दे रिकर निर्मे - निक्षणोत्य ने पारे पेरता १८ केन्ले पुर्व पाणान के देस्या पुरत्तनः तर दे र्ये कर्ति दे पर के देने पाल पर हरू रहिए हैत देलक कुर देली दक के में लेब हाण सहित्कत दे हा णासना २० १ हिंदेशे दे हे दे रे रे मान दे हिंदेश मोहीगर के के पांचें के कि मिर्म दे पंचरं उक्हेजातं है रियान उने उत्तरबान् रहते है १७ अबचीचा शेला तेले बाह शोके नामकहते है परंतुकारण अनं कहे तथापीयं के या शामेर म नेडांगेड मेलकेंहे १८ और किने को सा कि कहे है के फल्कर मेरब ह ण और उर्जार ब नेटीके यो या से पे देहे यो सब आग देखा थेंगे उसके मर मगंधकरते एक के जाति सहस्कारी देवर बाहाण १९ डालकाओ देवर २ मी मा तक ह ण र उनोके र जमान पोरवास की रेट यह मीन

11 11

उयो प गमग

म्मणोक्तेस्यक् बनियेगाभुत्त अहाराज भयुक्र १ महत्रापुरवासी ४ ऐसेहैं १२६ ) खडायतं मध्यणविनये ११ याज्येडापास १२ मीतरखेडापास उनके यजमा मताउचिनिये १२ (१४) द्वारीलावास्मण बनिये १४ अन्तरवेदिवासण १५ (२५) नाचुवा १६ बायवाबासणबनिये १० कंडोलबास्मण १८ (२६) कपालबनिये-त्रियशानुभिराश्वमारुमोरु स्तरीक्त एकार्शाम्बापोत्त्रधेनुन्।त्वतत परश्रतवैववणिजः पोक्ताःगोत्त्रजाहारुना परे मध् करास्त्रथात्वान्येमुदरीपुरवृतिन् १२ खडायत्।रन्योस्योक्तवणिकविषीतत् पर खटकाः वात्यसङ्गाध्वतथेवात्रवासिन र २४ तनेनसाउवणिजञ्जोत्मिनिवेणितापया द्राल्योदरास्नतोविमानन्धातर्गेदिन २५ जबूबतीनदीतीरवासिनीश्रास्यणा क्ततः वायरारन्थेविणक्विपोक्षेद्रोत्स्वाह्मणास्ततः २६कपोस्तविणजन्धेवगास्तवब्रह्मणास्ततः पाग्वाइविणजन्धेवसीराष्ट्रापर नामका २० ततश्त्रबाह्मणा मोक्ताश्चोत्पतेक्षेत्रवासिन गिरिनारायणाविष्ठा गुगुलिबाह्मणास्तत २८ श्रीगोडाप्युर्जरारन्यान

मानिवेश्यआदिसानग्रन्यातिवचाग्रवासण्य सिधब्रह्मण्यः विविदिसोह ६ चातुर्वेदिसोह अमनसो इत्द्रम्यार्थणासोह ९ धेनोजासोह १ (२२) औरसाउबा

भ्वजीर्णनुतनपटन् 'नतभ्वाद्मणा प्रोक्ता'नामामेहत्वासिन् २९ औद्वयाश्वकापित्या पटमूर्रीयकारम्ता स्मातवारि यानिया तारितीरोद्भनास्ततः ३० ततत्त्रवाह्मणा मोक्ता त्यरुगक्षेत्रनासिन मोक्तिकत्राह्मणाश्चान्येशिर पत्तनपासिन ३१क र्णान्कासत पाक्तास्त्रतमाप्रियास्तत नियोगिब्राह्मण धेवनयान्यदाविद्या स्पृता १२ पहाराष्ट्रवाह्मणास्त्रतयाचि त्यावना परे काराष्ट्रबाह्मणाचिक्कोकणातरवासिनः १२ विहोन्नबाह्मणाचेवदश्यीनास्वबोह्मणे हार्विशेद्वामविषास्त्रपा कित्यमामब्राह्मणाः ३४

गलवबाह्मण भाग्याड सारह वनीये १९ (२७) उनेबाल बाह्मण २ गिर्नोरेबाह्मण गुमुलिबाह्मण २२ (२०) भी गोड बाह्मणन्ने २२ श्रीगोरवाह्मणन्ने २४ मेडतबालबाह्मण २५ (२९) औतुबरबाह्मण २६ हापित्थबाह्मण २० तरमूखबाह्मण २६ स्माखबारबाह्मण २९ (२०)

भीरपातबाह्मण २ मिनालेबाह्मण २१ शिर पत्तनमोतालाबा १२(३१) कर्णाटकबा १६ए पकारकेतेलगबाह्म २४ नियोगिबा ३५ पधरामकारकेद्विहबा ३६

अध्यायोद

मध्यणोत्सनि

मातिन्यजादिसान्छ न्यातिहचाग्रवाद्यण २ सिध्वाद्यण २१ विवेदिहोह ६ चातुर्वेदिहोह ० मसहोड ८ इम्यार्पणाहोह ९ धेनाजहोड १०(२२) औरहाउबा द्राणाकेसक विषयेगाभुन्त अहाराज रमयुकर १ महकीष्ठरवासी ४ ऐसहै २२० रवडायत्यह्यणविषये १४ पाजखेडाबास १२ भीतर खेडाबास उनक्ष प्रजमा नसाइचित्रपे १२ ८ १४ र द्रारोसावह्मण बनियं १४ अत्रवेदिबाह्मण १५ ८२५ । जायुवा १६ वायडाबाह्मणविषे १७ कंडीसबाह्मण १८ ८२६ ) क्यास्वित्रये

त्रविद्यभानुभिराभामहामोड स्त्रथेक्न एकाद्शाधापरेन्य धेनुजात्वतत पर १२ त्वैवविणजापोक्ताभोक्त्रजाहास्त्रजा परे मध् करास्त्रथान्वान्यमुंबसीपुरवासिन् १२ खंडायतार्यासंग्रीकोविणक्वियोत्त पर खंटका बाद्यस्त्राम्बतय्वात्रवासिन -२४ तमेवसाइवणिजन्योत्पितिवर्णितामया द्रात्योदरारततोविमानत्यातानेदिन २५ जदूवतीनदीतीरवासिनी्याद्राणा स्तत वायरारसीविणक्विमोक्डोत्बाह्मणस्ततः २६कपोलविणजसीवगालवबह्मणास्तत पेग्नाइविण्जसीवसीतप्रापर् नामका २० ततश्ववाह्मणा पोक्ताबोन्ततेक्षेत्रवासिन गिरिनारायणाविमा गुगुतिबाह्मणास्तत ३८ वीगीडाप्पुर्तरारन्यान भ्वजीर्णनृतन्त्रादत् नतेभ्वाद्मणा मोक्ता नामामेहत्वासिन् २९ औद्वयुश्चिकापित्या वटमूर्शयकास्मता स्रगासवारि याविया तापितीरोद्भवास्ततः ३० ततभवाह्मणाःयोक्ता त्रपुगसेनवासिनं मोकिकबाह्मणाश्वान्येशिरापत्तनपासिनः ३१क णांन्कासत् यास्त्रास्त्रत्वाप्रिधास्तत् नियोगिबाह्यणे ध्वेबतथान्येदाविडा स्मृताः ३२ यहाराष्ट्रबाह्यणाखतयाचि त्यावना परे काराधबाह्यणार्थ्विकोकणातरवासिनः १२ विहानबाह्यणार्थेवद्शगानास्वबाह्यणं होविश्ह्यमविषाध्यपा 'तित्पमामबाद्यणा' ३४

गातवबाह्मणपार्वाड सारव वनीये १९ (२०) उनेरास बाह्मण २० गिनोरेबाह्मण गुमुसिबाह्मण२२ (२०) भी गाडबाह्मणस्ने २२ श्रीगोहबाह्मणनवे २४ मेडतवालबाह्मण २५ (२९) औदुबरबाह्मण २६ काषित्यबाह्मण २० रटमूखबाह्मण २० स्वास्वाह्मण्य १९ (३०) आर्पातबाह्मण २ मानालेबाह्मण २१ शिर पचनमोतालाबा १२ (३१) कर्णाटकवा १६ छमकारकेतेलगबाह्म० २४ भियोगिबा २५ पथरापकारकेहिनहवा ३६

ूर ) महाराष्ट्रवाहरण २ जनसायनकोकणस्थवाहाण ३८ काराष्ट्रवा २९(२२) चिहोचबाह्म-४० दशगोचबा ४१ द्वानिशद्वामबाह्म ४२पा तित्ययामबा ४३ (३४) मिष्टनहर बाह्यण ४४ वेले नियामनासित्रा ४५,३५,४ गोराष्ट्रवा ४६ केरलबा ४० तुलवज्ञा ४८ नेंद्रुम्बा ४९ हेवबाह्यण ५० यवरादिबा-५१(३६) कदा ं ना ५२कोट्बा ५२शिविध्वा ५४दिशानात्वाह्मणविनये ५५८२०। भटमेवांडेबा ५६ चवा डेमेवांडेबा ५० चाराशिमेवांडेबा ५८(३८) उनीकेयेजमान-्मनाड यनियहे जोरनागर बाह्मण छ प्रकारक एडनगरमे उत्पन्न भयेहुव बडनगरेबा ५९ विसनगरेबा ६० सारोदरेबा ६१ विनोडेनागरबा ६२ भारडनागरबा ६२ भार मियनहर बाह्रणा देत ने पामद भिनः पानित्यम पित्रेन्द हणानां चतुष्यं ३५ गार प्रदाह्रणा श्वेनकेर्रातील प्रष्ट ने बुरुबाह्णा हैव : यदर दे देना स्तथा ३६ कहादर अकाट रूखा १ विद्वाहणा स्तथा तत् अवाह णाः मान्तादर न्देवव सनः ३० तना क विकायो का मद्दर सिधा करा भट्टर स्विप ठी ए। अतुर्र तिकः स्वत ३० एते पास्तकः अस्त् मेदण्यव् गेम्बर्गः न गरा प्रदेश स्मारम्क रहरीद्व : ३९ मेड श्रेह्र र्म म्ल :क्यल्यास्तावदेव हितव दे मतंबिगंडाभ्रोंडाश्चरतर्परेषे । गगतरस्थरेंडशहर्पण्येडएवंच र विस्तित्व शब्द तक्षरः सुंख्येनकः ४१ महनार्गे उद्दूर सर्फ्र द्वा म् धार्य स्थ गेंड द तर् अब द्वा स्टा ४२ वेम रक्ष संप है नगे मे िन्यास्त्यापरे दायम बहणाक्षेत्र विमासार्स्त नियाः ४ शतेषां च सेवका भोक्ताः तववंशसमुद्रवः मिन्नमेड स्वन क्ष क्रिलास्तताज्ञयामद सिन् ४४ रदेद्व न रर्द ए यह तय चंद्रसर दिज : व्यादर : गया है प्रविस्ति स्वास्त्रे त्कारत दिज : ४५ है भे भे भे भे भे १ ६६८६५ मोडबाह्मण वारामकारके है उनकेयजमानकायस्यहै उसमे मासटी मोड ६५ भी मोड ६६८४०) मं गापुन्ये उहर एक्पीणागी उद्दर वासिएगों इ६९ र् भेर पर्वाहरूचमोड व सुखसनमोड ७२ (४१) भड़नागरनोड ७२ सूर्यधनमोड ०४ मथुराकेचोचे ०५ वात्मिक बाह्यण गुर्नेरसंघदायि ७६ (४२) पायकवास हा ७७ भिर्दे के प्राप्त अप्राद्या विश्व के एक प्राप्त के से बकती वाणे सिन्य में हिमन मीडबाह ण विकास कर ते ता निये बार दे रहर प्रये दुवे बार हिमार है

 महाराष्ट्रवाह ण ६ जिसायनकोकणस्थवाहाण ६ - काराष्ट्रवा ३९(६६) विहोचवाहा-४० दशगोचबा ४१ द्वाविंशद्वामबाह्य ४२पा तित्ययामबा ४३ (३४) मिरुनहर बाह्यण ४४ वेल नियामनासित्रा १५९३५ र गोराष्ट्रवा ४६ केरलवा ४० तुन्त्वत्रा ४८ नेन्त्रवा ४९ हेवबाह्यण ५० यवस देवा-५१(३६) कदा न्या ५२ कार्या ५२ शिविध्या ५४ दिशायान्त्रवास्ण विनये ५५९ २०० मटमेवाडेबा-५६ त्रवा डेमेचाडेबा ५० चोराशिमेवाडेबा ५० (३०) उनो केयजमान-मनाडेचिन्येहे भारतागर बाह्मणा छपकारके उडनगरमेउलन्न भयेहुंच बडनगरेबा ५९ वसतगरेबा ६० सारोदरेबा ६१ चित्रांडेनागरबा ६२ सारडनागरबा ६२ पा

मियनहर बाह्णा-देल नेपामद सिनः पाहित्य गाने देन् हणानां न्तृष्टं ३५ गोर प्रदाह्मणा केविकेरलातील प्रत्य ने दुर्ग ह्मणाः हैव : यदर दे द्विमास्तया ३६ केंद्र दराक्षकार स्वा १ दिख हाहणा स्वया हत्व बाहणा स्वाक्ष्य स्वाद सिनः ३० तनास्त्र विकाधोक्त सद्य र स्विकार हहारा स्विप दीया कर्रा तिक्र स्वता ३० एते पास्तवक्र धीर्म् मेदपारव पोग्टराः न गर ए दुर्दा काःचर्क् रयुरोद्ध्दः ३९ गेंड श्रे द्र ग्रेनः क्यस्थारत वदेव हि तबादे मत्वि रे बाध भेड क्रात्र रेश रेर तहस्थर इक्ष्मण भेडिए इ र रे ए सीरा खेवद लक्ष : सुर्दे से न कर ४१ महमार्गे उद्दर्शास्ट्रिक द्वर म् श्रार्थ रेट में उन्हर्म अबाह्ण स्तर ४२ विम्रक स्वयं के वर्गे मे िनेयास्त्यापरे इपमाद हणां के देव सर्स्त भिष्य ४ रेपेच सेवज दी कारतवां समुद्रव दूषिय है उपमा क्षित स्तताज्ञयामदा सेन. ४४ रहेद्दे न रदी य स्टन्य चंद्रसार द्वेज : दतादर र य देन्य सेनाओं त्कल द्वेज १४५ हैं ेरे क्षित्र ६८८३९ भोडबाह्मण वारामकारलेहै उनकेयजमानकायस्यहै उसमेमाल**ी** भीड ६५ भीगोड ६६८४०) गंगापुत्रगेड ६० हर्पाणागोड६८ वा सिष्टगोड ६९

िक भेरिक दोल्यमोड असुस्वसेनगेड ७२ (४१) भड़नागरगेड ७२ सूर्यधनगेडि ०४ मथुराकेचोचे ०५ वात्मिक बाह्मणगुर्द रसंप्रदायि ६ ८४२) पायलवालङ्ग ७७

मिरे े राज भारतायमाबान्थः सारस्वतवा ८०८४२/उनकेसेचकुलोवाणेसिनियहैमित्रमोडबाह् णार्वक प्रस्ताचा ८२ तसानियेबार ८३८४४) **रहेदुवेबा ८४ नार ह** 

वा ८५ चडसरमा ८६ नतादामा ८० गयाना उना ८८ ओडियेमा ८९ ४५। आभीरमा ९ पित्रसम्बा ९१ तेरनासमा ९२ सन्धरणमा ९४ सन्धर्ममा ९५ सोमपुरामा ९६ स्थान १० नामेदीयमा ९४ सन्धर्ममा ९५ सोमपुरामा १६ १५६५) काबोर सिद्बा १० नामेदीयमा १८ भारतीया १९ पुष्करवा १० गरहगतियामा १० भागवमा १० नामेदीयमा १३८४५) नदनाण वा १ ४ मेथिलमा १० प्रतिप्रामा १० माध्यदिनीयामा १० पहआदिलेक दूसरे अनेक है २९ ५ ५१ ५२ ऐसेप्रधीमे अनेक प्रकार मेथिलमा १० सोआपने अपने देशमे पूज्यहाने है अन्यदेशमे विशेषकरके नहि है परत्विद्वानस्व सीनेप्रस्त्वात्वात्वारम् स्वदेशमे पूज्यहें ओस्नीस

आभिरा पित्र वासाध्यतेरवासा सनोहिया पारारारा कान्यकुत्रास्त्रथासोमपुरीद्भवा ४६ काबोदिसद्दानादोर्थाभारतीया भपुष्कराः गरुरायाभार्गवाध्यनामंदीकाः हिजानमाः ४० नद्बाण भिधाविधासस्थान्यान्यवद्गम्यह मेथिलाबाह्मणाध्ये वत्यामेनायणीयकः ४८ अभिताबाह्मणाध्येत्रथाणाध्यत्वकाः गीयचवरातेपचिवधाध्यस्यार्थाः भासाभात्ववादका अन्योन्यतेविभागिनः रोह्निकारीध्यावाद्राध्यत्याचिभांडकाः हिजाः ५० कसुकदिवखाद्यविकाबोजाकोराकास्त्रयाः भु न्याप्त्रयासिद्धाः कार्योद्धानात्वार्थाः ५१ अणप् कोशिका नवीयादक्ष्यका काञ्चपि नेगमा रवरष्ट्रधाध्यत्यापेत विकासिनः ५२ आवत्याकाचिगास्यवेवगोमाततीरवासिनः एवस्त्रयामनका व्यवह्याणाः सित्रसस्याः ५२ स्वस्वदेशे पपुन्यतेना न्यदेशिकार्थायात्व यपुनीर्थपुर्यदेवा यपुनीर्थपुर्यहिजाः ५४ पुजनीयाविश्रापेणनावमान्याकदान्वन उप वाद्यणनाम्यावेपाचालास्यतत् पर ५५ इतिज्ञातिनामानि छ छ छ छ-

नीर्थसेत्रमेजोगाद्मणम् संबिहे तथापिपूज्यहे अपमान निह्नसमा ५२ और आगे शित पाचाल ब्रह्मपाचाल अपपाचालमामक निविध पाचाल उपबाह्मणकी उत्पत्तिकहिंगे ५५

3

भ्रमापा

बाह्यणात्प।,

वा तप चद्रसरमा वहनताद्रामा वक्षमणानायमा वद ओडियमावद १४५। आभीरमा ६ पित्रमाममा १९ तेरवासमा १६ रामेवडयामा १४ कान्यकुममा १५ सामपुराजा १६(४६) काबोद् सिद्बा २० नादोषाचा २८ भारतीया १९ पुष्करचा १ ० गरुहगतियाजा १ १ भार्गवजा १ २ नामरीयजा १ १८४७) नदवाण बार १ भीधितजा १०५ मेनायणीबा १ ६ ८४८) अपितमा १ जमाध्यदिनीयाबा १ ८ यहआदितेके दूसरे अनेकहे १४ ५ ५१ ५२ रेगेसे प्रधीमे अनेकम कारके बाह्यणहें ५२ ८४८) सो अपने अपने देशमे पुन्यहोने हैं अन्यदेशमे विशेषकरके निहि हे परतावहानस्थकमान ह उद्बाह्यणसवदेशमे पुन्यहें ओस्नीस आभिरा पतिवासाध्वतंत्वासा सनोहिया पारारारा कान्यकुतास्त्रधासोमपुरीद्ववा ४६ काबोदिसदानादोषीभारतीया भपुष्करा गरुरायाभागवाध्वनामदीका दिजातमा ४० नद्वाणाभिणारमास्त्रधान्यवद्गम्यह मेथिलाबाद्गणाच्ये वत्तथामेवायणीयकाः अन्यासामाध्यद्गद्वया गायक्षकात्रप्रविवधार्थम् याभाक्षका स्वतास्त्र अन्योन्यतेविमागिनः शोल्कारीय्यावादरात्र्यत्थावेभाइकादिजाः ५० कसुकदिवराध्वेवकावीजाकारासास्वया भु न्द्राभुद्रास्तयासिद्रा कार्पोद्राभातचारणः ५१ श्रेणयं कोशिकानवीचाउकारकाकापि नेगमा रवरष्ट्रसाधतयाधित वितासिन ५२ आवत्याकानिगान्वेवगोमाततीर्वासिन एवध्यामनेकाभ्येबाह्मणा सितमसुरा ५६ स्वस्वेदेशे मपुन्यतेना न्यदेशेविशेषत येषुतीर्थेषुयेदेचा येपुतीर्थेषुयेदिजा ५४ पूजनायाविशेषणनाविमान्याकदाचन उप बाह्मणनामाविपाचाराभातत पर ५५ इतिझातिनामानि ७ ७ ७ ७-नीर्पसेवमेजोगासणमूर्संबिहे तपापिपूज्यहे अपमान नहिक्सना ५२ और आगे शित पाराल ब्रह्मपाचाल उपपाचालनामक विविध पाचाल उपचाह्मणकी त्यनिक्रहिंगे ५५

БŪ

अववनिदेवाराप्रकारलेहे गीमा लेद्शादीला ५ पोरवालद्शाविसा २ नागरद्वादीसा ३ मोहोडघोडुवामाह रियाअडाउँ नादशावीसा ४ खडायता ५ इनारें लादिसागलक हाड व नायडा व कपोल १० में बाडा ११ सार विरे १२ ऐसेहै और उनर निमें अम्मात्वाले आ देकरके बोहोत भेदहें अबबा व्हणकाथोडा नेणीय-कहते हैं उदीच्य सहस्रवास्त्रणजाहे सोसवपानीन क्षिवशीहें और सोउ नागड आ देवास्या विष्ण शेवा देकोने उसने किये हुवेहें और स्ह्यविचार से देवें हों। चोबे और गयावार बनासबी वास्त्य कान्यकुकाहें ५६ अभीरवाम्हण क्ष्यवाम्हण भवावाम्हण नाटवाम्हण सहस्रवाय व परिवास रिवे होंवे। र्वजोह्नद्र नेव तर नेविध् करि पद अस्पते हैं के दे निष्टः उक्तरे हैं से उद्देश किए। एक प्रेर के प्रेर के प्रेर के देश के उंदर स्टेर सहरे, जन्दे स्ती गें हु - क्रिंगि रेष्ट प्टेरे के का कि हिंग है सिर् एवं है निर्देश के हाणार दिशो रधः एक दितः ५९ नवेन्द्र स्कर्र मूदेर देन बन्देन तस्याणियुर्वदेशे स्कान वैदी च जा राते ६० वेद्सः श्रेष्ट्र कर्ष्ट् हिद्र रहः तस्देत्र मेह् उत्तर् क्रेश्व हर हेले क सहाश्राश्वास्ता भेडिके वह कर हिने मन सम्बन्ध के अर कर कर कर किए के वह से मा निरं जन है है - तथा पे वेवाहयज्ञशासक्र में स्व हेलेना ५० और पश्चिम समुद्रके तटतेचार से को सकाको कण देश है वाह के छे कहुर्जन स्वभा वेहें ५८ नर्स् दा हु आविवरिके बाम्हणदेवस्री रहेहे ५९ और वो नर्मदाके पूर्वपश्चिम उत्तर के सबबाम्हण देवता के एक स्वाप्त कर १९ ६९ ६३ अन्यत्र कहते दूसरे कन्छ का प्रेस के रहक विक को रोजकाम कपकार में राष्ट्रा देदेशों में लोक अभक्त निर्देयहेर ससहत्यहेर हवा म्हणों से देवप्रतिष्टा यज्ञ या तह कर हा नर है छ

अववनिरेवाराप्रकारलेहे जीमा लेद्शानीसा १ पोरवालदशा विसा २ नागरदशानीसा २ मोहोडघोडुवागंड रियाअडाउँ नादशानीसा ४ रवडायता ५ इनारे ला६ दीसागलक साड व नायडा १ कपोल १० रेवाडा १ सार विये १२ ऐसेहै और सुनर मि जागलवाले आ देकर वे बोहोत भेदहें अनवाम्हणकाथोडा नेपीय-कहते है उदीच्य सहस्रवाद्हणजोहें सोसवपानीन काषवशीहै और होड नागड आ देवा देवा विष्णु शेवा देवोने उत्पन्न किये हु है की र सहस्राविचार से दे रेवे ते चोबे औरगयानास बनासदीवाद्य कान्यकुकारे ५६ अभीरबाम्हणककनाम्हणयवनहसेनीबाम्हण त्राबाम्हण नारवाम्हण यहसवयर पे शेवसरीरवेही व र विज्ञोह दश्निव तथा तर मेलाहिए कर पद अर एहें हैं के दे ने वर्ष एं उत्तर एं तरे उद्देश क्रिया स्टिन के दिन के दे के दिन है के उत्दर्शित सहयोजन देसी गंधु - क्रहींग ते एते पूर्व के का का दे प्रें हैं से देश हैं समेदार के हाणार दिशे राधः एक कितः ५९ तके वेद कर र मूदे देव बेद बद्दित तस्याणि स्विदेशे स्वयंतविद्यान करते ए 

ज्या प नेयम्ब्य

A

मरेक् सन्पार्गकाउपदेशकरके आपकु पार्गिको नकते हैं बोचोरतुल्य देशके बाहार करदेना चाहिये ७ जानिकानिर्णय धर्मा धर्मकाविचार और यह पदार्थ रनानायानहिस्तानाइसकाविचारऔरसप्तात्रकुपात्रकादेखनायहसप् अवस्पहे ७१ नथापि अपनाअधिकार छोडके बडेहोकोने जो नियकपैकियात्रोको कर्नारानिर्देयाध्वेवकोकणाध्वेवदर्जनाः तेरुगाद्रविडाध्वेवद्यानतोजनाभुविद्यप्रच्योशेत् विविधाञाचाराध्वव्यव स्थिता भाषाम्बनिष्धात्रेयासर्वेनद्रतिवर्तते ६६ आग्नेयपुराणे प्रतिष्ठाहिद्धिन कुर्यान्यध्यदेशादिसम्बन नकन्छदेशसञ्चल कावेशकोकणोद्भवे ६० काम रूपकालिगोत्धकानिकार्मी रकोराल सत्यादिखडे त्यागिन केचित्संकर्मत्यागिन परे६० सन्मागुस्यापदेशार स्वयंसन्मागैशासिन उन्मागेमितहत्तीरोगुरवस्तेस मीरिता ६९ स्नागमुपदेखामि स्वयमुन्मा गविनेन तस्कराइपनिमात्धानियास्याविषयाद्वहिः ३० जातिनानिणे यश्चापिधर्मोधर्मविवेचन् पह्याप्तस्यविशेषञ्चपानापाननिद्शेन ७१ अधिकारमनावृत्यहतेकमेविगर्हिन् महद्भि निवरोषायतोकोषक्षतिहेत्ना ७२ अग्रिनभंद्रायामास्वातापिजनकृटक द्वाहिचानुक्रतीलोकेमासभक्षणकार णात् ७३ पयाचार् ययाकां लस्वस्वधमोनुवितने जना स्तेनावमतत्यादीषा सर्वानुवितन ७४

तमगद्रविडद्यावनहे औरपासपानको सकेउपरभानार भीरभाषास बठीकाने फिरनी है एसाजानना ६५ ६६ ६० यह प्रेनिक्देशोके नोबाम्हणहे उसमेको

इआनारभ्यष्टिकोइसत्कर्मसेश्यष्टहेद् कोइसन्मार्गकाउपदेशकरके आपिसन्मार्गसेचलते है भीरद्वमार्गक सदनकरने है सोगुरुजानने ६९ औरजो द

पकारसंगास्ते उनोकु दोपनिहिहै १२ जैसाअगसिरू पिनेवातापि दैत्यकु मक्षणिकये सोकुछ माससदाण रापनिहिस पा ७२ इसवास्त नोकालपंजीरजो दशमे अपने अपने प्रमेस तोचलने हैं उनलोकोका अपमाननिहकरना का यसे जोदोध सबीदेशमे थोडा चासरी १४ छ । अ

अध्यापन्द्र । र

ज्ञामुणीत्प-

ज्या णे भन्नस्कर्

Я

ततगद्धिहर्यायतहे औरपामपानको सकेउपराजान्यार भीरपापास विकाने फिरती है एसाजानना ६५ ६५ ६० यह प्रवेकिरेशों के जोबामहण है उसमको उजानार अप है को इसक्त में से अपह ६० को इसक्मार्ग का उपरेश कर के आप बिसन्पार्ग से चलते हैं और दुष्य मार्ग कु सहन कर ते हैं सो गुरु जानने ६९ और जातू अपना अपहें से साम का उपरेश कर के आप कु मार्ग से जोव सत ते हैं विचार नु व्यवस्था के स्वान महिये के जा कि का निर्मा था में का विचार और यह परार्थ स्वान या निर्मा का विचार और सहाय कु पान का देखना यह सब का वस्पे हैं ०१ न बाणि अपना अधिकार छोड़ के बेड तो को ने जो नियक में किया लो के समायान हिसाना इस का विचार और सहाय के पान के प्रविचार के स्वान स्व

क्रांटानिर्द्याश्चेवकोकणाधेवदुर्जना तेलगाद्विडाध्वेवद्यावनोजनाभुविद्धप्यच्योगेत विविधाआचाराभ्वव्यव स्थिता भाषाध्वविवधात्रेयासर्वेनद्रतिवस्ते ६६ आग्नेयपुराणे प्रविष्ठाहिद्दिज कुर्यान्यध्यदेशादिसम्बर्ग नकन्छदेशस्म् कार्योगेकोकणोद्धवे ६० कामरूपक्रिगोत्थकारिकार्यो रक्षोराल सत्यादिखं आचार त्यागिनकिवित्सत्कर्मत्यागिन परे ६० सत्यार्गस्योपदेशार स्वयसन्मार्गशालिन उन्मार्गपतिहत्तीगेपुरवस्ते स्वाधिता ६९ स्वागिमपदेश्यामि स्वयमुन्मार्गवितिन तस्कराद्यनिमात्यानिर्वास्याविषयाद्दि १०० जातिनानिर्ण यथापिधमोधमिविचन भक्ष्याभक्यविशेषस्वपानापानिर्दशन ७१ अधिकारमनावृत्यकृतिकमिविगहिन महद्रि भवदोषायलोकोपहितिका ७२ अगस्तिर्भक्षयामास्वातापिजनकरक द्राहिचानुक्रतालोकेमासभक्षणकार णात् ७३ यथाचारयथाकालस्वस्वधर्मानुवित्ते जनास्वनावमतत्यादाषा सर्वानुवित्ते ०४

पकारस्वास्तेउनीकुदोपनिहिहै ०२ जैसाअगस्तिरूपिनेवातापि देत्यकु भक्षणिकयेसीकुछमासभरतण रापनिहिभया ७२ इसवास्तिनीकालपऔरजी दश्म अपने अपने पर्नस्र ताचलते हैं उनलोकोका अपमाननहिकरना कायसजीदाय समीदेशमेचाडा योहा न्यासहै ७४ थ थ थ

त्वाति देनेत्व देव नेत्व नेत्व देव न्स्रव हुन स्त्य हुन स्त्य हुन त्या प्रकार का निवार के विद्या के ति एक निवार के कि हिंद के कि है कि हिंद के कि हिंद के कि है कि हिंद के कि है कि हिंद क

म दुत्रेच एरे प रन मेंद् द्रं हे सिनः दर्श १ मित्रवने है ७९ ऐसे स्ट देशों में अने कदो पहें से कहने जुसमर्थन हे हु ए ते कुँ दिमानपुरुष ने वी कृष में पुरुष के साथ से निक्ति है करना और के बोर के साथ से कि बोर के साथ से अध्यक्ति के साथ से अध्यक्ति से साम कि अध्यक्ति स्थान के अध्यक्ति प्राची कि के साथ के अध्यक्ति प्राची कि के साथ के अध्यक्ति प्राची कि के साथ के अध्यक्ति से अपने के साथ के

गुल्लेसच्चनपुरुषने देशदेशकार्णग्रहणकरनादे षकु छोड्देना अबदोषकहते है ७५ के इदेशमेना सिक हो कऐसाकहते है कि जाति वेचारच्य है स्त्रि अं रुफपगृह दोजा तेहैं गालजा ते चित्तप्त्रमन्त्राने का मूलहै और के इदेश में वेदप्रमाणन हमानते को ईशास्त्र माणन हमानते व इको इदेश में वाममार्ग में तत्पर रहते हैं को इंदेशमें अगम्यागमन बचारर हेत होक है ०० कितने कबाम्हण सब्ध के बास्ते विषदेते है के इवेबाह मि हा हुवा तुडाते है को इब निकार च्छेदकरते हैं ० च कतने कबाम्हण हो को प्वारक वास्ते सावर मन साधनमें तत्परहते हैं के तने कद्य का भके बास्ते खो टेसा सिमारते हैं और वैसे हो के स

गुणाएट हिन्द देव हैन्द देव देव देव देव स्टब्ह स्टब्ह केन्द्र है केन्द्र है अपूर्य ते पुरत हुए हैं है दि एक हैन्द्र हैन्द्र है के देव हैन्द्र ह न्सें करक रेण १७७ एरदाङ हा एके के द्वार हार करका हा कि चित्र के के स्पूर्द का वार्ष की में अंद में कर दे र्तः के देखें के एक तिहें दे छ एस है प्रत्ने एं स्रेने ह स्त हुई एन ७९ अन्ता गण शे हे ए उद हरीन चार कार तै: नहर से प्रायम वर्ग के हिन्द्र मेर मेर मेर्यों चरले कर मेरितह ने कर एक न्या पर नज नप्दान्त न्द्र निष्ट ने रेत्टा हमें दिस देह में ने हह में हें हैं है कि समस्टर्मन रेग स्वें मुन सम् स्रेल्ट र हमें में ह अन्दिश्र कुरुष्ट में ब्रेट्ब : जान केम्ल्क पुंजी में हिंदि निस्ति : दे उत्तरे में स्ट्रिक पिता के तहीं?

म नुरहेच्दर ए रनम्द द्रंत्न रिनः ८४ १मी तर्यने है०९ ऐसेस ब्देशीमे अने कदोष्ट्रेस कहने कुसमर्थन हे हु परंतु कु दिमानपुरुष्ते वे कुम्प में पुरुषके सार सग तेन हिल्रा के रउने कादोष्ट्र किरना ८० और गावगाव में दुराचा रिलोक बोहोन है सो वश्यम कु अध्मम् व के उसकात्य गर् रके अधर्मकु यम्जानके चलाते है वास्ते सामान्य धर्मआचरणसेउनमें अमेका अस्वरणकरन के एहें नर्जन माध्य केल्हे में और बगाले में मत्स्याहारिमद्यरि माम्हणहें भेमाउन रनेपाल अल्हेमेम हेषमासमझण सबकरते है ए दिसमेन में देख पान स्थिणमे मात्लकत्यां से देवाह ए श

गुरुपागबृद्धपरपराम नाकान गृहणकीयार्रे उसक्षर्यक्तदेते हे परगुर्तरलोकोकु महापातक अधमर् ५ र जो अपने अपने कर्म मे तत्पर हे सासिर्द्ध पारते है ६ . जो जन्मा सबस्य अपनिजाती में कुरुगान देखके करना अन्यजानि मनहिकरना ६० औरकि सुगमेत्राम्हण लोक स्न्यस्थे भसे बामुखाई जैसे गाभयके हिसे अध्याय १६ । नस्णोति " यद् जनगृहीतत्वाद् मीएष् न्यतं बुधे द्वरेषामधर्मा सीपावित्यात्पातकोषतः ६० स्वस्वदर्मण्य भिरता सिद्धिविद्विषा नवा समानकुरुगोत्रागाक्न्यात्वयभान्यत् ६६ विषमाणानेवकापं कुरुस्यंकरोतियः क्रोयुगेसमङ्कीधमीध्यः विषय् ६० दाक्षिण्याद्यरमसद्वासयादाण्मिविष्यति इद्रस्र्ष्टानातयस्कषारवडा इतिकानिता १८ विषामित्रगर्गेना म्बअभिरत्याइतिरिता कार्यण बाम्हणां सर्वेमानजातिविमेदका ८९ अथबाम्हणदोषोत्घाटनस्यनिदायाम्बनि ्ननिराद्माद्मणाह्मेक्कथवापिचरतिते गुरुरात्मवताशास्ताराजाशास्ताद्रशत्म्ना ९० इह्रप्रच्छन्नपापानाशा स्तावेबस्ततोरमः येलीका परदोषाञ्चव्याहरत्याव वारिण ९ मिय्याचि हिराणपापसत्य वेत्सयसागिनः अतुर्यनव क्त्युक्लोक्ने ब्लिप्यते १२ अयञ्चाम्हणलक्षणानेन्य दाने अनेए कल्याह स्कादे सध्यास्नानपरिश्वहासाल स्योभिजकर्मणि वेदाध्ययनहीनश्वद्यतकर्मरतश्चय ९३ जाहे , ओर रोगनपापक रनेकाल हे उनोक्व शीक्षाकरनार यमराजाहे वास्रो जामूर्रीपुरुष दूसरका मियापायकर्म मुख्यान करताहै नोद्गनापाप पुख्यान करनेवालेकु होताहै आर खरीबान होवेनो बोपापीक समान इसक्विपाप सगताहै दिस्ताम् अपूर्वमुख्यसंदूसरेकाणापवर्णन्निहिकर्ना किस्युगमं बत्तीपुरुष निम्मानहीताहै ९१ १२ अव अगनकालक्षण कहतेहैं जीवायणस्तानसः ध्यातरतानहिंही अपने सकर्मणे आगस्य रखवाहै वेवभ्यास करतानहि जूबाखनताहै १ १

हमी पा *19* स्क्रप

गृह्मागबृद्धपरपराम लाकान गृहणबीपाहै उसकुधर्मकदतेहै परगुब्तरलोकोक महापानकअधमहो - जोअपनअपने कम्मेनत्परहे सासिहिपानतेहैं - जो अपनअपने कम्मेनत्परहे सासिहिपानतेहैं - जो अपनअपने कम्मेनत्परहे सासिहिपानतेहैं - जो अपनअपने कम्मेनत्परहे सामिहिपानतेहैं -अभ्याया५ ग्रसपोत्पनि अपन यत्तमाना मं और राजानाम धमका विषय सहिंगे नाम देश्य दावियों कृद्ध और यूदो के ने यदा नियवण स्थापनकरिंगे ००००० की रम म्हणाकी । नदा और उनाका दाष्ट्र महक्ता वा बाम्हण कानसे विरस्त से चडा ने प्रक्रियान हार्ना हो वही उनी का शास्ता गुरु है और दुष्ट कुशास्ता गुरु

यहाजनगृहीतत्वाह्मीएषाच्यतेषुपे इतरेषामपमीसीपातित्यात्पातकोमत ८० स्वस्वदर्मण्यभारता सिर्धिवद्तिमा नवा समानकुरुगोत्राणाकृत्पात्मभपाचरत् ६ निषमाणानवकार्यकुरुक्षांयकरोतिय करीपुगेसमङ्नोधमीयम विषये ८० दासिण्याद्थेरोत्ताहासपाहाण्मिविष्यति इह्स्ष्ट्राजातयस्मपाखडाइतिकीर्स्ता ८८ विश्वामित्रणगेजा म्बअभिरत्याइतिरिता कारत्या बाम्हणां सर्वमानजातिविभेदका ८९ अथबाम्हणदायोत्पाटनस्यनिदायाम्बनि मेथ् निरोद्याद्यासीकं कथवापिचरतिते गुरु गत्मवताशास्ताराजाशास्ताद्रशत्म्ना १० इहम्च्छन्नपापानाशा स्तावैवस्तृतीयमः येलीका परदोषाञ्चव्याहरत्यविचारिण ९ मध्याद द्विराणाणाँ सत्यवेत्समसागिन अतृएयनव क्त्यू कलोक्नीविध्यते १२ अयभाष्ट्रणतक्षणतेन्य दाने अने एकलयाह स्कादे सध्यास्नानपरिभाष्टे।साल स्योभिजकमीण वेदाध्ययनहीनश्चयूनकमेरतश्चय ९३ जाहै, ओहङागनपापकरनेवासहै उनीक यीक्षाकरनार यमराजाहे बास्त

जाभूर्तपुरुष दूसरकामियापायकर्मभरम्यात करताहै ताद्गनायापपर यानकरनेवानेक हाताहै आर रवशवात होवतो वापापीक समान इसकृषि पाप सगताहै इसवास्त अपूर्व मुख्यसे दूसरेकापापवर्णन नहिकर्ना कित्युगमं बर्जापुरुष विममान होताहै ०१ १२ अव अग्रामकालक्षण कहते हैं। जोत्रायणस्नानसन

ध्यान्तरतानहिंहैं अपने स्वकर्ममेआबस्य रखबाहै ववश्यास करतानहि जूनारकलताहै ९ ६

विश्वादंसाच संगकरनाहे सटाभिध्याभाषण करताहे जोराजाका संवकहे जोक्रयविक्रयच्यापारिकिह्यकान रुगाताहे आरजोक्तातिवहिष्कत ह्वाहे जो विधु वियोगार शहीनहें को हअगहीन पतिनहें गंसे बाम्हणों कु कुपात्र कहेना इनोकु दानरेनसे नेष्फल होताहें ९४ ६५ ९६ ९५ अव अवामह दाणकहते है अव नोजातिमात्रवाम्हणहें जीसके गर्भाधानादि संस्कारसम्बक्त हुंहे उसकु अब म्हणकहेना ९० शातात पर्काने छपक रेके. वाम्हणकहे है राजसेवक हराविक्रयकनी इ. व्यक्तोभसे बोहोतयसकरने वास ६ मारे गावका आन्वाईत्वकरने वासा ४ पाचवा उनोकासेवक ५ स यं दास भयोचतालापी दृष्रः कुष्टस्युनः हीन्ंगोपितने यक्ष्मय स्ति है हिस्ताः ९४ र जारे वाररे दृष्ट स्पर्द हर हंस्या दूर् कुरानक्तोयत हर्ने विकारं भदेत् १ पद्यद रिस्ते देरे के देरे धासुमे यूने विकारं पत द नमन पचेत्रकेत्रहे. विधाः क्राइयान्तः कंत्रहित्र रातः क्राइयन्तमहिर्दे न्रकातः १० बह्य दे उसमेर को रंबर स्वार्द जैतः जित्रा के प्रिकेट के के बेद्दा महण्यति है है के बहा गारिक बंद के का शाला है पहे - देणा आरोराजभूत से बादित यो सम देक्य १९ वृत्योद्य ज्यस्व न्योद्य सम्बद्ध एन्यम्सकभूतरसे बन र रस्यनगरस्य ५०० अनीगत त्रासंख्यं सादित्यं ने ए देन् ने पासीत हुजा संख्यासू वर्षे ३ बाह्यणा स्युताः ५ असे जिस्से की वेश में ते देवर्ग का धंवकः पेन्टक के देव हैं ने सूद्र ति है वे मुनि दूँ जे र ज वेश्योस् दे विद्यालकः एक प्रतिख्य चोड लोदेशा ब्राह्म के नितः ३ यातः जोसंध्यान हिकरतासो ६ ऐसे एअ ब्राह्मणजान्ने ९९ १०० १ अवजी-शस्त्रपासरसकेनोकरीकरताहें सो १शाइंच्चनेवाला २ अष्ट द्रावणें पर्यां आचार्यत्वकरंगवाला १ देवयाज्ञलहते नीनदरसतगद्रव्यलेके देवयूजाक रनेवालाः ४ यामानरोकु समाचार पत्रादिलंबानेवालाधावक परेसाले के रसोइकरनेव ल प चक ६ रहछ भूदं सरी रे बाम्हणजानना १०२ दशाविष्ठका अर्थ स् ए है १०३

नियादेसाय संगकरनाहै सदाभियाभाषण करताहै नोरानाका संवकहै नोक्रयनिकयन्यापारिकिद्कान रुणाताहै ओर नोज्ञातिवहिष्कत हवाहै जो वेधुर वियोगान वित्र को देअगर्दान पतितहे ग्रेस बाम्हणोर् कुपात्रक हेना इनोकु दानदेनसे नेष्फल होताहे २४ ९५ ९६ ९० अव अवाम्हणकार दागळहते हैं अव तो ता निमाववाप्रणहें नासके गर्भाधानादि संस्कारसमंत्रकन हुई उसकु अबा म्हणकरेना १८ शातात पर्वाने छपक रेजे अ वाप्रणकरे हैं रातसेवक १ क्रयविक्रयकना २ द्रव्यको भर्म बोदोत यसकरने वास २ सारे गावका आन्वाईल करने वासा १ पाचवा उन कारोवक ५ स पं दासियोचतालाषी दिष्ट्रां कुष्टसंदुनः ईिम् गोपिते पश्चन्य ज्ञारित हेक्ट्रां ९४ र् जारे व एशेर भ्रस्य देश्य होनाया देजा कुराजक्ती यह हुने निष्क दंशेन्देत १५ पर १६ दे रहे दे रे दे दे प्रास्के पूर्व विषक्ष रहे दे र मन इ उसम्मार्के इसे स्तार्के हे उन हे मोडोए उन्हें के पहें दह महें परान्ति है है आ के के हूं है के शाह हिए है र रस्ट न रस्ट न १०० अना गृत हुए ने छ र दिए ने ए के हिंद ने ए होते हुए हैं से हिंद है है । १ अन् के हेम दे जो देश मले देहर जकार हिन्द कर है है पुरेश मुद्द है के हैं के हैं के देश में पूर्व के प्रदेश मू दे बेड लका एक मलेख के बोडालो देशा कि कि के ति : ३ याताओं संध्यान है करता सो दि में से अत्रामहण्यान्ने १९ १०० १ अवजो-शस्त्रपासरसकेनोकरीकरताहै सो १शाइन्चनेवाला ५ अए दशवणे पर्ण का आचार्यत्वकरनेवाला १ देवयाज्ञ कहते नीवबरस नगद्रव्य लेके देवपूजाकरने वाला-४ यामानरोकु समानार प्यादि लंजाने वालाधावक ५ पे साले के रसोइकरनेवाल पन्यक ६ र हछ भूद सरी रेज बाम्हणजानना १०२ द्याविष्ठ । अर्थ स् ए है १०३

ज्यो र्ण अवज्ञानिमात्रवाम्हणिकप्रास्ताकहतेहैं भगवानुनेक पारेकिशाम्हणस्रविद्योगान्यहित होपरतु सववर्षाकु यून्पहै प नैसिगोतमीकु बुधनहिहै तथापिषु अध्यायोध ज्यहे औरराम भीक् नोहानदुधी नथापिकपूज्यहैय नामेष्टाध्यमना प्राजगमनी यहेउनो का बननी मध्यानहिर्दे द अन् अपने ज्ञानिस्य उपाध्याय की मशासा-भिस्तप माप्रणात कत्रतेष्ठै अपनेज्ञानीका मुक्ताना पहिउसक् वाडकेंद्रसरेज्ञातिस्थप हिन माम्रणक् नुसायके कर्मकार गेनोउनीका कर्मे न्यर्थ होने गा ७ ८ ५ ११ पन्त अयज्ञातिमात्रवामरामामाह गीताया अविधोरामविद्योगायामुकोमामकीततुः वाम्हणोजन्यनत्येयान्यु ज्य सर्वे सद्वृहिष्ट्रं यथानरे कुछिनोपिद्विनपूज्य नेव्यूद्रोजितद्विय अपुग्धापिरराधेनु रास्कीनघरात्र याभ बाम्हणाजंगमतीर्थन्तहन्त्नमन्ययाह ् अथस्वज्ञातियानार्थभशंसा स्केंद्रेवालस्वल्यः स्वडेरवज्ञातिन

दिन मुरका आह्यान्यहिनोत्तमं करिष्यतिचयेम्रास्तद्भिष्यतिनिष्फल् योमोहाद्दापमादाद्वाचान्ये कमंसः माचरेत धर्मघाँतीस्वित्रेष सनर प्रकिर्षक इउन्धिष्ठोपिवरोद्रसीनकाशीनान्हवीन्द्रे स्वज्ञातीयोवरोसूर्खीन चान्योवेदेपारगः १ सोमसरकारसयथबाद्धिरातिकमेवच ज्ञानिभिन्सहकरीच्यम्ययानिप्कलेकवेतु १३० अय स्वजातीयाचार्यभरासापवादमाह् स्कादााधकमासमाहात्ये कुछपुज्योपिस्त्याज्योद्वैस्ट्यह्निप्यसेहिनपा धं लोभेनतसीदानददानिय ११ रोरवनरकयानियावदा भूतस अव महादाने विशेषेण् देयोत्पानिविचारणा १२

महबान कब्दे कि अपना क्लपूज्यनाम्बर पार्व्ययोगरो विद्यामे हीन्है परतुशातबुद्धि औरद्यकर्म रहितदे उसका त्यागकरके दूसरेकु नहिबु हाना औरजाको

भिद्रमें कर्द्विभिद्रप्रकर्म करता होवेता क्लप्रज्यहै नावित्याग करना नोकवि उसकु पौति से पाकामकर नके लोकर देवेगा तरिक में पडेगा १०

ज्या र्ण अस्कप ६

अयज्ञानिषायमाम्हणिकपशसाकहतेहे भगवानेनक पाँदेकिमाम्हणम् र्यहोगाज्ञानिषदिन द्वापरत् सवनवीतुः प्रन्यहै ४ नैशियोलमीकुदुधनिहिद्देनचापिष् ज्यहेओररासभीकुनोहातदुधदैनथापिअपूज्यहैज्बाकेष्टाधिपनाम्हणजगमनीयहैउनोकावननीपयानहिद्दे ६ व्यवज्ञपनेज्ञानस्थउपाप्यायकीमशसा-कहतेहै अपनेज्ञानीकामुम्बजानार्यहेउसकु छोडकेदूसरेज्ञानिस्थपहितन्नाम्हणकुतुतायके कर्मकारयोनोजनीका कर्मन्यर्यहोनेया ७ ८ ९ १९ परतु

अध्याय) र बाग्हणात

अयज्ञातिमानमाम्हणमरासामाह् गीताया अविधोवासविधोवामान्द्रशोमामकीतनु बाम्हणोजन्यनान्धेयानप् ज्य सर्व सद्वृहिष् चार्यात्तर कुछिलापिहिन पूज्य नेवशृद्रोजितहिय अधुग्धापिवराधेनु रास्मीनघराम याप बाम्हणाजगमतीर्थन्तहन्तमन्ययाह अयस्वज्ञातियाचार्यमशासा स्कादेवालिशिल्य त्रवृहर्वज्ञातिन हिज मुत्काआहुयान्यहिजात्तम करिष्यतिचये म्हास्त्रहिष्यतिन्यक्षेत्रणातिन कर्मसा मान्देत् धर्मधातिस्विज्ञेण सनरः पृक्तिद्भक व्यक्तिश्रेष्यतिन्यक्षेत्रणातिक्षेत्रणातिक्षेत्रच कर्मसा मान्देत् धर्मधातिस्विज्ञण सनरः पृक्तिद्भक व्यक्तिश्रेष्णिवरोद्भानकाशोजान्हवीत्रदे स्वज्ञातियोवरोप्त्रवीन चान्योवद्पार्ग १ सोमसस्कारसयथाहिर्शातिक्षेत्रच ज्ञातिभित्तस्व मन्यवानिष्क सम्वति १३० अथ स्वज्ञातीयाचार्यमरासापवादमाह स्कादाधिक सासमाहात्स्य कुरुपुज्ञ्यापसत्याज्योवद्विज्ञस्व हिज्ञप्रियमोहेनवा यसोनेनतस्त्रहात्द्रात्रिय १३ रोरवनरकपातियावदान्द्रतस्त्रव महादानेविशोषेणकुर्यात्याचित्रवारणा १

महनानकन्द्रिभपनाक्रण्यमाम्बामार्थयोगसे निद्यामे हीनहै परत्शातनुहि औरदुक्तमेरहितरै उमकात्यामकरके दूसरेकुनहिनुसान औरजोक्ते पिद्रपक्तुन्पिदुषक्तमे कानाहोनेनो क्लप्रजनहै नानित्याम करना नोकनि उसकु मौनिस्त पाकामकर नके तोश्वरो दान देनेमातो नरक मेपडेमा १० ६

Ļ

अवस्तात्रबाद्गाकातः गक्ति वाद्वरके पुरार् नाननं और स्वक्षे करने से बादणाधान दे सस्वारसमंत्रक करने में इनत्वया महोनाहे कर वेद के देव अभ्यास् करने में विष्ठोताहे वाद्वरके पुरार् नाननं और स्वक्षे करने से बादणहोताहे १२ १४ १५ अरे बाप्हणका देह के बन तुन्छ संस्तारका चिक्रे वास्ते और उड़ाइक अंचक दासने हे हैं कि नृताषकर के अंतकान कु मोस प्रार्मि होने के वास्ते के स्वान बाप्हण की वस्वान कार दान दे हो प्राप्त कर विषे और उनो का पालन करने में उनो कु दान देन से बाहो तर्ण्य होताहे १० कु पान कु देने से निष्क करा तो हो एक अपने आसार से संपन्त है अपने ब स्कर्मिन

अध्यान्य महण स्वाणं तेष्यः द न्यतं मं चह अन्या जा यते यहः संस्तारात हुन्यस्ते वेदा प्रसास न्य वेद्रा देश्वा क्रिया मान्य अन्यार्थित जितः वा महण्डाता वेद्रा विद्रा विद्रा प्रमाना विद्रा प्रमाना विद्रा प्रमान क्रिया क्रमाण क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रीय क्रिया क्रिय

उत्तरम् तेहे १९ वेदश्स्त्रसंपन्हें जिन द्यहे श्वेतस्मार्तका एक्तहे ओरदेवभक्तहे उनक्रात्यात्र बाष्हणकहेना २० औरपासरहनेसेस्वभाव मालुमपहता-है ब्वहरकरने से हुद्तापालुम हेर्नाहे १ च्या करनर दुद्भालुम होतीहे २१ वर्णमे बाम्हण श्रेष्ट हे बद्दापार्थशस्त्र अधिहे उससे का ने एक्ट प्रजानना १२२ ६० ६० ६० ६० ६० ६० ६०

अलस्यकरतान् हेहे १० विद्यालय संगन् है जिते द्यहे श्रोतस्यार्तकर उत्तहे औरदेवभक्त उनकुरात्यात्र बाष्ट्रणकहेना २० औरपासरहने से स्वभाव मालुमपहता-है व्यवहरकरने से अब्दामालुम होर्नाह १ च्या करन से इ. देमालुम होती है २१ वर्णमें बाम्हण श्रेष्ट है व्यवस्था स्त्र श्रेष्ट है उससे कान ने ए श्रेष्ट जानना १२२ ६० ६० ६० ६० ६० ६० ६०

जोरउसका क्याकारणहे सोकहो तबसु मेथाक्र धिकहते है कि अपनि अपनि जातमे सबीबाम्हणसमानहे परतु जिनोचे कुरुपे सातु सनसे विद्या और यज्ञयाग सत्क मीनितेच रेआइहे उने कुकुलवानकहना २५ ३२ २४ अनेर जनके सात पुरत से पूर्वीक गुणहीन और दृष्टक महोना आयाहे उनो कु ही नकु ही कहे ना ३५ ३६ परतु हारुके बंग्वनमती जनोकु बृद्धपरपरासे कुरुवानकहते आये है उनोकु कुरुवानजानते हैं ३० अवबृद्धपरपराके कहनेसे जोकुरुवानमान्न उसकु दूषण देतेहैं कि जो दुरु हुं निहें उसके शरजपर कुछ सिगन हहे और जो कुरुवान है उसके कपालमें इछ बद न हहे वास्ते जसाजे साइसम्दुष्पका बचन गरताहे वेसावेसा जा निक्रका-

स्तरेशाहन अनुति नाकुलेन ऋषूर्व रेट हेर् दिते सुद्देन स्ता स्तर स्तर होनेन नेतः ३१ तर इ बेट हेरे हेरे स्वार प्रकार के प्रकार के दिया के प्रकार के रन्य तेश्र रेगं छन्नात्सत्तेः जत् कतेसपिडं तम्कुत श्रत्तेस्तः १३५ इत्या प्रत्य धरे देश्र देश्र देश्र देश्र देश्र परंपराक्रमे थे द दे जो दे समसे हो हो है हो हो स्थार्य हम ने रिष्टें र यहे पर है नह तुल्ल कुल हे नह रहे है जह है ग्रेंद्रिक अध्रृद्धरोपर गतल्लाकुलाईनई स्पोध्रदादम इ. इ.स.चरे काल रेज हेस्य तस स्थाने करेड स्तिनेच भ तन्दाः एद एद एद एवं विषयाणा एत् तद कि तक्षत्र ए एं ३० सित्य द्वारें जिल्हान तहें भी नेद दूसत्हें एकः सहस्वा अधीर अनेद एवन संस्थाः ३९ ६ वृद्दे । बितु क्षेत्र किर्णाः केद्या अधि हे दे विक्त

भंदजानना ३० कुरुवानके दशमे पेदाहोंक अपनिजातसे दुएकमं करते है और मूर्खंदुए स्वभावेह तो उनाकु ही नुआ माना उनो कुकन्यादान शाद भोजन न हदना ३० इसके उपरहणातदे हैं के पनुष्यकावंशक हत वामकी छड़ी वा शुद्धे है परह निर्णोह नाम उसकु दो रे वंधन है है तो वो धनुष्य व्यर्थ है वास्ते गुण मुख्ये है १४० ५ ७ ७ ० ०

और उसका क्याकारण है सोकहे तब सुपे धाक कि हते हैं कि अप नि अप निजान में सबी बाए समानहै परतु जिनो के कहें सात पुस्त से विद्या और पत्ता पास सकते में नित्त ने अजा हो उने कु कु कवान कहना २१ २२ ३२ २४ और जिन के सात पुस्त से पूर्वी कराण ही न और प्रवृद्ध कर्ष होता आयो है उनो कु ही न कु की कहें ना अप ३६ परतु हा उके व गत में तो जिने कु उद्ध परपरा से कु कवान कहते आये है उनो कु कु कवान जानते हैं २० अव बृद्ध परपरा के कहने से जो कु कवान मानन उसक दूषण देते हैं कि ने ति कहते हैं उसके विश्व के विराज्य कु छिसा गति है और जो कु कवान है उसके कपा अपे कु छ बद पर है है वा स्ते जैसा वेसा इस यनु स्पका बचन पर नो है येसा वेसा जाति कु छ का न

स्तरेशावन अकुलन अलेन इंपूरी रहिमारे पहुन धरन मक्त सम् द्वारेन रहा: ३१ तम केरसेने रेहर ए एपन्न रहेर्न मेरेरो ने द्विय दं हेन्हरे ३२ रेड है सम्बूर मस्तर छेलाइ है पुरा कुलेन कुलक क त्तृत्वस्य नम् द्ताः व्यक्तामिहे अवस्पर्देन एक स्वेभित स्व ते करं ते सद दिए कुरु न एन रेन्युक द्वार व्य रन्यतिक्रेरेण दिलात्सतिः जत्त्तिस्पिइतम्कुतकत्तिस्तः १३५ इत्तर्गारं धरो देक्तिक्रुक्तिन एरंपर क्रमेषेट रेडे र समहोत्ते. ३६ बुद्धोत्तरा पिहिन ने रिए रेटे र एरे एरें र नद्गलल कुरुद्दे ने इ रेने देन है ग्टै:३७ करवृद्धपरेपरे रहल्याक्तिनिर्देषणे १९व दमह रोशनरे अजर्ज हस्यतात स्था कत्र स्तिन्भातस्यः रदरद्रम्भित्रं अपानस्ति । दिस्य देन् देशा देन् जात्कन्नद्रेशान्दे मूलेंदुरेगम् संदेशक अरोध अने एपरमंद्र रात् ३९ हे बुरेंद्रों हे शुद्धे पनिपूर्ण केंद्रों पर से हे देवें के को रिशस्टिमर्मकने १४०

भेदनानना ३० कुरुवानके वरामे पेदाहोके अपनि जातसे दुष्ठक के बरते हैं आँग मूर्य दुष्ट स्वाने हैं तो उनोकु हीन कुरी न अयोग्य नानना उनोक्त कन्यादान भाद भो नन न हे देना ३९ इस के उपर दृष्टा तदे ते हैं के पनुष्यकावशक देत वामकी छड़ी वा शुद्ध है परत निर्णे है नाम उस कुद्देश जे गंभन है है तो वे धनुष्यव्यर्थ हैं नास्ते रुण मुख्ये हैं १४० ध ध ध ध ध ध ध ध ध

उपो र्ण ग्रिक्तप

केवलविषावलम् सत्यानता अवत् क्र्र्कर्मकरनेसी सत्यानता नहिंदै क्रापसे नो कितनेक लोक विषाप्यासवाद्विवाद क्रन्के वास्ते करते है पाकि जात्सिक् मैत्रष्टकुकर्म करते है समत्तर कोपिरहते हैं उनोकु सत्याननहिकहे ना कर्मे करने से नो सत्यात्रकहेती धनलोक्ति कर्मकरने वाले औरद्भसे कर्म करने वाले बोहोत्है वाले गेविसतापनिक हेजाते वाले ग्रात रुदिवजीनभारमत् स्करीनि ए सानिभूकजोहै ओइसतानजान्ना २३ ू२४ पूर्वीक ए प्रकारके जोजाप्रुण्कहें उनोक्तरानदेनेसे जिनना दीयरननापुष्य होताहै नाम्हणनुषक्रदेने से द्रिणणपुष्य होताहै कर्मिनाम्हणगुरुकुर्ने से सहस्तगुणितपुण्य होताहै वे द्पारंगनुकुर्ने से अ नुज्य होताहै जिसनाम्हणके गर्नाधानारिसस्कर हुनेहे परनुक्षमे जिस सानित्तनहि है औरनेट्रणरमाध्य यन करतानहि है उसक् नाम्हणनुषक हैना २६ अनग

निवयपाकेवलयानपसावापिपात्रता यमक्तिमिचो भेति द्यानम्बद्धते २३ वृहुनारदः सन्दर्भनिरते भ्यत्रमो वियायाहिताग्नये वृत्तिहानपवेदेपद्रिद्धायकुटु बने कुलीनायविनातायवृतस्थायतयस्विन २४ मनुः समम्बाम्हणेदा निर्गुणमाम्हण्यवे सहस्त्रंगुणमाचारेलनतचेर्पारगे २५ माम्हणम्बतस्यण गर्माधानादिभिर्येक्त तथोपनंचने नचे नकमे चिन्त्रेनाथी ते समवेद्रासणह्व २६ अधसत्कुल ही नकुँ लखस्ण तिन्ग्यम्बाह तेत्रकुल निरीक्षण पशंसा ज्योतिनिवधे बीम्हण्स्यकुलयाह्यन्वेदासपर्दक्रमा कॅन्यादानेत्यात्राह्नेनिधानावकारण २० उद्वि च्यमकाशग्ये सुनयक्च जातिरेकाँदिविमाणाकियातचगरीयसी यत्रयत्रिक्राश्रेष्टात्रतसम्बद्धीनता २८ वि धावत क्रियावत सत्यवतो जितिद्देयाः पूजितामूलराजेनतथाप्यत्रमहामुने २९ हश्यतेतुद्दिना स्वामिन् सद्सत्कुलः जाश्याय एकस्मिन्वेवगोञ्चतवनः संरायीमहान् १३० त्कलऔरहीनकुलकालशणकहतेहैं कन्यादानमे और शाद्धमे कुलकीपहिना- अवस्मेह नाहाविद्दानकात्रयोजननहिंहै २० परतुपादाशकहिंक एकिनातमे पककुलवान औरएक होनकुलि केसाजानना २०

उपा पो श्रिक्तभ

केवलियाबुलसेस्ताचना अयुन केप्रूकर्गक्रनेसे सत्याबना नहिंदै क्यपसे जो कितनेक लोक विचारपा सवाद विवाद क्रनेके वास्ते करते हैं पाकि जान्सेक मंत्रप्रकृतमं करते हे समत्सर कापिरहते है उनोकु सत्याननहिकहे ना कर्मे करने से नो सत्यानकहेती पनतोधि कर्मे करने बोले और दशसे कर्मे करने बाही नहीं वासानोविसताननिकहेजाते वास्तेणात रुदिवजीनशारुमत स्वक्षेतिष्ट जानिभका जोहे ओइसतानजानना २२ २४ पूर्वीक समक्षानाम्हणकहे है उनोकुरानदेनेसे जितनारीयेजनापुच्यहोताहे बाष्ट्रामुन्कदेनेसार्गणपुच्यहोताहे क्षिताम्हणगुरुकुदेनेसे सहस्वगुणितपुच्यहोताहे वेदपारगनकुदेनेसे अन न्तुष्प होताहै जिसमाप्रणके गर्भापानादिसस्वर दुवेंहे परतुकर्ममे जिस कानिचनिह है जीरनेट्रणरमाध्य यन करतानिह है उसक बाम्हण बुनक हेना २६ अनस

नविद्ययाकेवलयातपसावापिपात्रता यनक्तिमिनेवाभेतिद्यानमन्धते २३ वृह्नारदः सत्कर्मनिरतेभ्यथमो विषायाहिताग्नये वृत्तिहानायवेदेयद्रिद्रायकुट् विने कुलीनायविनातायवृतस्थायतपस्तिने २४ मनुः समम्भाग्हण्दा निर्गुणवाम्हण्यवे सुहस्रंगुणमान्वायेलनंत वेट्पारगे रेप बाम्हण इवलसण गर्माधाना दिशिर्युक्त तथोपनेयने नव नकमिन्त्रीपित्सभवेद्वासगष्य २६ अधसन्कल ही नकुल छह्मण तनिगणेष साह तेवकल निरीक्षण पशंसा ज्योतिनिवधे मोम्हण्स्यकुस्याह्मन्बेदासपर्दक्रमा कन्यादोनेत्थायाद्धेनिवधाचावकारण २० उदि च्यमकाराय्ये सुनयक्च जातिरेकाँदिविष्राणांकियात्वगरीयसी यत्रयत्रक्रियात्रेष्टातत्रतनकुरीनता २८ वि द्यावत क्रियानं सत्यवतो जेतेद्रियाः पूजितामूरुराजेनतथाप्यत्रमहामुने २९ हर्यतेतुद्भिता स्वामिन् सद्साकुरु जाश्राये एकस्मिन्नेनगोञ्चेचत्वनः सरायीमहान् १३० त्करओरहीनकुरुकारुराणकहते हैं कन्यादानमे और श्राद्ये कुरुकीपरिक्षा-अवस्पेहें नाहानिद्यानकाश्रयोजननहिंदे २० परतुपादाराकाहिक एकिजानमे पककुरुवान और एक द्वानकुरि केसाजानना २०

२९

जोरउसका क्याकारण है सोकहो तबसुमेधाक्र धीकहते है कि अपनि अपनि जातम सबीत्राम्हणसमानहे परंतु जिनोके कुरुमे सातु स्तरे विद्या और यज्ञ पान सक मंनितेच रेआइंहे उनोकुकुलवानकहना ३५ ३२ ३२ ३४ और जेन देसात इस्त मे पूर्वीक गुणहीन और दृष्टक में होना आयोहे उनोकु ही नकु रही कहेना ३५ ३६ परत हारके वस्वतमती जनोकु इन्ह्यरपरासे इत्यानकहते आयेहे उनोकु कुरुवानजानते है ३७ अवब्द्यपरपराके कहनेसे जीकुरुवानमानन उसकु दूषण देतेहैं - . जोरुरु हैं निहें उसके भारतपर कुछ सिगन होहे और जोकु जवान है उसके कपारमें इछ चंद्र न हिहें वास्ते जैसा जैसा जेसा इस परुष्यका बचन गरतोहे वेसा वेसा जाति इसका -

रमें धाउद च अनुति नाकुले न स्टूप्टें में हे हैं में ते पुरूष धरन मन्त्र प्रस्म दूरेन च केता दे तर में बेरते ने च तहत् ध्यय्न संयुत्तः ३३ स्वामिहे ब अव्यवित् एक केर्यर सम्य ते कहे तैसद विम् कुल न पुन्य देश हत् ध्य रन्य तेश्र ऐषा छन्मात्सतीः, जत कुलेस्पिंड तम्कुल अत्रिस्तः १३५ इत्क देत धर दे देश देश देश कुले-प्रपा करे थे द दिइ से समहित्तरे ३६ वृद्धालिया पिहिना ने निवर्ग र यथे वह रे तहत्कुल कुलाई ने इ रेने हिन है ग्हेंद्रेश अधहार्राप्रात्क्राक्तिनिरीक्षा १ वहारम । अजार तस्य करा रश्मक्त स्रत्न्भ तस्द्र एद एद एक निर व्यव पत्दात्द अ निकुत्रम् पे ३० सेत्दा द्रत्रे ज न जन्न न देश निद रूलेंदुरेग्नः सहेंद्र अरोग्र अन्दापरनस्य रा ३९ हेंदुरेंद्रो रेसुद्धे पिन्धुणः कैक्यू ध्यापे रोग्रे दुर्देत्रे जने रिशस्टिस्ट्स्करः १४०

भेदजानना ३० कुरुवानके वंशमे पेदाहोंके अपनिजातसे दुएकर्म करते हैं और मूर्खंदुछ स्वभावेह तो उनो कुहीन कुर् न अयोग्य जानना उनो कुकन्यादानभाद भोजन न हदेना ३९ इसके उपरदृष्टा तदे हैं के पनुष्यकावशक हते वासकी छडी वा सुद्धे परतुनि मुंग है नाम उसकुदो रे यं धेन हिंहे तो वो धनुष्यव्यर्थ हैं वास्ते गुणमुख्येहे १४० ध ध ध ध ध

ओर उसका क्याकारण है सोकहो तब सु मेथाक टीक हते है कि अपनि अप निजात में सवीत्राम्हण समान है परंतु जिनो के कुरु में सात पुस्त से विद्याओं र्यक्षणां सत्क-मीन तेच ने आइंहे उनो कुक रानक हना २१ २२ ३२ २४ ओर जैन के सात पुस्त में पूर्वीक्त गुणहीन ओर दृष्ट कर्म होता आयो है उनो कु ही नकु की कहे ना २५ ३६ परंतु हार के वरात में तो जिनो कु बृद्ध परपरा से कुन बानक हते आये हैं उनो कुक बान जानते हैं २० अव बृद्ध पर परा के कहने से जो कुरु बान मानन उसक दूषण देते हैं कि ने दुन ही नहें उसके शिर अप कु छिसगन हो है और जो कुरु बान है उसके कपार में कुछ चंद्र नहीं वास्ते जैसा ने साइस मनुष्यका चनन गरतो है वेसा वेसा जा तकुरु का

स्तरेशाहन अनुस्ति ने स्टूप्ट्रेट हेरं दि सुद्द स्टूप्ट्रेट स्टूप्ट्रेट हेरं दि सुद्द स्टूप्ट्रेट स्टूप्ट्रेट हेरं दि सुद्द स्टूप्ट्रेट स्टूप्ट्र स्ट्र स्टूप्ट्र स्ट्र स्टूप्ट्र स्टूप्ट्र स्ट्र स्ट्र स्ट्ट्र स्टूप्ट्र स्टूप्ट्र स्टूप्ट्र स्टूप्ट्र स्ट्र स तहत् ध्ययनस्यतः वर्गामिहे ब अस्परेक् ग्रेक्केंदिर स्व तेक वेतस्य वेग कुलीन मुन्या पुना वृष्ठ हत् थ रनशिक्षरेण हिलात्सतिः जत् कलेसण्डितम्कुल इत्तेस्तः १३५ इत्क प्रेर धर्टे देश देशका कले-पूर्पर करे पेट देहें दे स्मिह ने ने ३६ बुद्धात्तया पिहें कर ने परि दे पार्थ के हैं दे तहरकुल कुल दे ने इ देने हुन दे ग्हेंद्रेश अध्राद्धारेषर गत्लातालातानिरिक्षण १ एवं देस है । ये स्रोह अस्तार स्टारता रश्रा करार स्तिन्दिभात्त्वः एद एद एक् निव्यावणात्वात्द जातिकात्रे ए वेत् सेत्या द्वारें जान जननत्ते भेनेत्र स्तिन्द प्रतिक कर्णार करणार करणार कर्णार करणार कर

भोदजानना ३० कुरुवानके वंशमे पेदाहोके अपनिजातसे दुएकमें करते है और मूर्ख दुष स्वक्ता वेह तो उनो कुही न कुही न अयोग्य जानना उनो कुकन्यादान भाद्र भोजन न हेदेना ३९ इसके उपरदृष्टा तदे ते है के पनुष्यका वंशक हत् वासकी छड़ी वो अद्वेह परतु निर्णाहे नाम उस कदोश जे येथन हेहे तो वोधनुष्य व्यर्थ है वास्ते रूण मुख्यहे १४० ध ध ध ध ध ध ध

, त्यो ण मयम्कप ट औरमातिकस्करा आदिपराय दृष्ट विकाने पैदादा ते हैं परनु अपिकान से गुणवान है नो देनता दिक उपना गर्भ आते है वास्ते अपने स्वगुणकी मुख्यता है भीरस्य निमित्वक्ता है ने दिनता दिक उपना गर्भ साम स्वाप भूगिरिय समित द्वाम सर्य तथ्येत अधागकुळ मुन्यते हित ४१ अवजो ह एके को कहे उनकी हिष्ट कन दोषके उपरहे गुण य गनिहकरने के जेरा) पानिमिक नो खंडे सोस्तन कुरु गाइतो रक्त का पानिकर गीद्ध कुन हि ४२ वास्ते हे स्वान स्वेक स्वाप के देना स्वाप के प्राप्त है प्राप्त है प्राप्त है अगरित प्राप्त के प्राप्त के

मुनाकस्करिकारीनिशनगास्त्रत्वान्यपि देवादिसर्वयोग्यानियोगर्थेवानकारण ४१ जल्कास्तनसंस्किरिकारिकापित एवनावा जना सर्वदोषमानेक रष्ट्रय ४२ किनु म कस्यवाच्च म किन्यू मोजनावयस्त्व्यास्त्रदेषका सर्वेदु स्वशास्त्रविकितः का ४२ अयमान्द्रणादीनापमा अभागवते सस्कारायनाविद्यना सिद्ध्यो ३ जोजगाद्य विश्वस्याध्ययना दीनिपडन्यस्यामितिम्हः ४४ राज्ञोवनित्म्जागास्रविश्वाद्यक्र सादिका वेश्यस्कवानां विश्वस्यान्यस्य

पोडरासस्कार जिसके बरोबर हुव हो वेश बाम्हण उसके पहाकर मान १ पक्षकर बाना २ वेदशास्ता व्ययन करना १ करवाना १ दानकर ना १ पहाक कर पहाब हमें हैं उसके तीन स्वध्म उमेर संनद का कि पाउन अध्यापन प्रतियह में दोष दे से तो अवाधित हुनि से वाप्ति दिन्यान्व पाउचार अध्यापन प्रतियह परार्थ रहित यो ग्यपदार्थ का क्या पे तिवाह कर ना अववाद स्वित पहाची स्वति का स्वति का स्वति कर ना अप शाकि कर ना स्वति कर ना स्वत

उसा ण समस्त्र जातमातिकक्की आदिषदाय दुष्ट दिनाने पैदाहोतेई परतु अपिनातसे गुणनानेई तो देनतादिकके उपमागमे आतते हैं पासे अपने स्वगुणकी मुरन्यता है जीरस्य क्रियेक्ट्रयोदे दिन्नियासुमायया भूविरिन्तिया समास्यात्य भेति अधागुरु सुन्यते दृति ४९ अवनाह उके तो क्रियेक्ट्रय के दिष्ट कर ने देश प्रवास प्रवास के तो प्रवास के सामान कर गार तो रक्त का गार प्रवास के प्रवास के सामान कर गार के स्वास कर ने देश के प्रवास कर ते हैं ४५ अवमान कर में देश के देश के देश के देश के देश के देश के प्रवास कर ते हैं ४५ अवमान कर पर्व स्वास कर प्रवास कर ते के देश के देश के देश के देश के देश के देश कर के देश के देश

युक्तपक्रकितिश्विक्षार्जन्यात्वन्यपि देवादिसर्वयोग्यानियोगर्थेवानकारण ४१ जल्कास्तनसंस्कित्कपिनित्म्त एवनावा जना सर्वदेषमानेक दृष्ट्यप् ५२ किंगुम करववाज्ञम किंग्यमाजनावयस्व्यास्व स्वदं स्वशास्त्रविदितः का ४५ अयवाद्रणादीनापमाः बीन्तागवते सस्कारायेचाविष्ठन्या सिद्ध्यो ६ जाजगाद्ये विप्रस्याध्ययना दीनियडन्यस्यामित्यहः ८५ राज्ञोवृत्विष्यजामासुरविष्ठाद्वाकरादिभि वेश्यस्कवानांप्रविष्वानस्य सहज्ञा ।

पाडरा सस्कार निसक्ते बरोबर हुब हावेश बाफ्ण उसके पह कर्ष पताकर ना । पजकर बाना २ वदशास्त्राध्ययन करना ३ करवाना ४ दान करना ५ दान केना ६ प्रवहर कर्म है उसके तीन स्व धर्म उसर्तान अपना कर्म कर्म कर्म अध्यापन धर्म महिष्ट परार्थ रहित यो ग्यपदा बका क्या निवाद करना अपना स्वाति करना अपना स्व कि करना कि क

अववेश्यने देवर् रु विष् द्वाभिक्तिस्ना धर्माण्कामकापालनकर्ना विषासहिद्धरखना निरु उद्दमकरनानी निमार्गसेन्वरुनाओर उपजी विकावासे खे निव्यापार गेरहाण व्याजबहायहनार उद्योगकरना विपनाकार मेशूद्रवृत्तिसे नवीह करना ४६ श्रद्भे बाग्हणकी सेवाकरना नम्नतार विचान मे पातर दिनहिन् रुक्ताने रेनहिकरना सत्यभाषण करना गोबा म्हणिक सेवामे सेजो मिलेउसमे निव हे कुरु बका करना श्रद्ध कमरा करो कि कर्मानु षानकर ना ऐसानार विणे का संस्थितिया ४० ४० ४० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० ५० अव अप निजात में अन्येद हम करने हैं उसवात के उपर विभिष्ण करावण-द्वित पात्र पारित स्था रिक्त कर देन्द हम् स्थान दिन हम स्थान कि करने हम सम्मान के स्थान के स्थान कि स्थान कि स

हा हि किया रिक्ष कुर देल्ट हुन्य हे श्रद्ध हुन्य अप हुन्य हु प्रसादश्च एक चर्क के तरहा थे देव गुर्व चर्क के कि वर्ष रिषे हम के कि वर के हमें नित्रं लें ए के हैं रिक्त करणे ४९ श्रांस्टरं ने ते शो करे दे कि में रे रे रे अमें रे के तह से एक तर है कि दे हैं कि हैं हैं कि एक है तर पारे रेट प्रंतरेत स्टड्रेन व पर कार्ने नम्बूबत कर चन ५१ वे एक दूर दूर करें के देन्सा है, पहि न्वरे हु हि इक्षेण नश्चारं करेंचन प्रश्नद्द ने बजे देशरः श्रदः क कलरा केरें सुक्क मुक्ते ना रहे ए व के लियान करी ण अ अ अ अ करता क्र क्र हेन हम् स्ट्र एवं र हेन हेन हे ते हिंदू हे नम्म ए मह खां दे ति ए के निर्मा के निर्मा के निर्मा के कि है पि के हिंदी है पह के रिया के कार के निर्मा के को को का स्वामा वजानता हु के नार ए से नार विके हिंदी है पह के राम पान के नार ए से नार

वजानताह के तार र ने तार वालेकुद् रहीदेखने ह हिंत होने हे ५४ और मधान अर वा नव नक सबेर धर्म जान मेज सब्ह दिस् और दु प्र तार भूरविद्वान ऐसे पुरुष के देखके अंत नरणमें दुष्टतार र ने वे एक नि आक् क्लेनेन उदोग नरते हैं ऐसातार के हो को क स्वभावहें परंतु जे सहस्प है के दूसरे कुद्रे र देतान है है और स्वरंका उपद्रवसहन करता है १५५

अववेश्यने देवगुरु विष्ण क्षाभ किकरना धम रेकामकापालनकरना विधासह दिरखना नित्यउद मकरना नी तिमार्गसेन्वलना औरउपजी वेकांवास्ते रहे भेव्यापारग रक्षण व्याजबहायहचारउद्योगकरना विपन्नोकालमेशूद्रवृत्तिसे नेवीह करना ४६ श्रदने श्राम्हणको सेवाकरना नम्नतारखनामनमे धातह दिनिहन ररनाचे रेनहिकरना सत्यभाषणकरना गेंब म्हणिक सेवामे सेजोमिलेउसमें निव हे कुटुंबका करना श्रद्ध मलाकरों कि कर्मानु हानकरना ऐसान्वार वणे का सं-क्षेपम्धान्त्रयो ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५२ अवअपनेअपनेजातमे अच्छेट्र रपकादेशकरते हे उसवानके प्राप्त वाभिषणक रावण-हा देर के क्या रहा तम देर देर है कर श्री स्था है जा है कर है है से के स्टार के से देश स्टार भी से में ते हैं। हा तम के के के देश है के से में साद्याद रक्ष चक्षेत्र तह में ४८ देव गुर्वच्युते पाने कि विष्यु के कि क्षेत्र सुद्दे में भिरतं ने प्रांत के पा ४९ श्रदेस्टरं ने देशो करे व कि के कर दें के अप कर तह की एकता के प्रतिक पा पक के दूर्न देश हैं के हैं है तर एपरे रेन एदंतीत रहें देन एदं अंतिन सहतर अठ वन प्र है अर हत्य हुए जनसे जिल्हा है। ए हैं च्हारे हुन प्रक्रिक होते कर निष्य म्या के के देश महा के का कर के के के के के के कि हो के कि हो कि की

ण्णं हो त्र त्या का मित्र लंक हो के के हिन्द के लेख स्टे के हे ते हैं है के हिनाइ स्यताही के लोकोका स्त्रा वजानताह के ताह के ताह वालेक हु कि हिन्द है है पह के स्वाह के ताह के ता के तार भ्रावद्रानगिरे एक क्रदेखके और जरण में बुष्टतार एक वे एक कि आकर लेने नाउदी गनर है ऐसाज्ञार के को को करवा नहें परंतु जो सहस्वहें हैं -दूसरे कुर्दे , रहरेतात हहें और स्वरेकाउपद्र सहन करत है १५५

 मच पाने अहकार्से नात्तिकाभ्यनिहर्यनताराोटीकुनिहिहै अवश्यरखनान्ताहिये निहर्यकेतोबहोन रूपहोवेगा अमिसेश खादिकमेथे साभयनः दिहाता उननाभयशातीके भयसे होताहे ५० और जगतमे कोर्क् वि अपनिराह्यवात नमानुम होने वी बानका पष्त्रशीय करके जातिवाने वी मनुष्यकुर् वाने-काउधागकरतहै ५८ ५९ नास्तेनातिकाभय अन्यय रखनाचाहिहे १६ जोकोन्युम्प गुणनाच्याम् रवि और द्रितिहोने परतुनातासे मिरुकर रह्यातो नोमनुष्य प्रविभोर मान्यहोताहै नासेत्रोकम नामिसय एकमुस्य मार्ग है परतु यह पात ससानिसाभिमानिकि है निरिभमानी सामिक निरिहे ६१ अनजी-

नित्ययन्योन्यस्हष्टाच्यसनेष्वाततायिन प्रच्छन्तत्दर्याघोराज्ञात्योनोभयावहा ५६ अयजातिभयमवश्यभाव नीयमुत्याह बाल्मीकृये नवागिर्नवशुरुगणिनपाशान्पर्यथा जनयनिभूपयोरप्याज्ञातिकतभय ५०यो रास्वार्धमधानाहिज्ञातयोनोभयावहा उपायमेतेवेत्स्यतियहणेनोनसंशय ५० सेवेर्भयेत्रातिभयस्याकष्टतरमहत् विश्वस्थातिकृत्तेन्त्रामाययाप्रहरंतियत् ५९ राभाव्यगोषुसपन्नसभाव्यवाम्हणेतपः सुभाव्यनापलस्थीषु-सभाव्यसातिनोभय १६ र गुणवान् निर्पुणीवापिज्ञातिन्यसनमागत पूज्योभवतिमान्य अलोके ब्वेकागति प्रशहेश अध्कीलपत्यनामबाम्हणादाध्यस्त्वनिंदा मापुणेन द्वबाम्हणानामध्यस्त्वतद्व्ययहण्यनकर्न्वययतोज-न्गानरत्वानजन्मद्रायक त्वुक्त बाल्मीकरामायण्स्योत्तरकाडे सर्वीर्यं सि छ्विप्रकथापंसमे दृष्टाद्रारिस्थितत्वानरा-मोऽप्रच्छत्कथास्पित ्तदाश्वानस्कनम्बेणरामवचनमबवीत् ६२ इदत्विज्ञाप्यस्तश्रस्तामंमराघव भिक्षु सर्वी र्थसिद्धस्तमाम्हणावसयेऽवसन् ६३ देवगो बाम्यणकेउपर अपनाअधिकाररखताहेउसम्बेह्मरोपहे सोकहतेहे शुनैर्आपामे पटलकहते

है चोधरीवासेटेमहाराष्ट्रादिकमेधमाँ धिकारि महाजननगरनाधिक हिंदुस्थानिमेपंचसरदारनोक्दतेहै आवडा भविष्यसानजन्मे काअधिकारहे उसकेड पर कथा एक समयमे अयोध्याम सान राजदारमेजांक नेठा तनरामनाकमधे ने ठाहे पूछा तथभानक हताहै कि ६२ हेराम सर्पि सिद्धनामक बाम्हणने मेरे कुनि

नाकारणद्रुप्रहारिक्या ६३

् जिस्का जिस्का

५६ प्रयञ्जानअहकारसे जातीकाभयनहिरावतारारोठीकनहित्तै अवस्परावनान्वाहिये नहिरावेनकोनकपरीवेगा अम्मिस्य स्प्रादिकमधे सामयन-हिहाताउननाभयसातीकेभयसेहोताहे ५० धीर मगतमे कोर्क्कार अपनिख्छावात नमाछुमहोवे वोवातका प्रधाराय करके ज्ञातिवाने वोम्नुष्यकुडुचाने-बाउद्यागकरतेहैं ५८ ५१ जालगातिकाभय अवस्य रावनान्वाहिहे १६० जोकोइपुरुष गुणवानयाम् र्याचीर दिहिवे परतुजातीसोमिसकर रह्याती वोम्नुष्य पून्यआर मान्यहोताहैवासेस्रोठको जातिभय एकमुख्य मार्ग है परतु यहपात सत्तारिसाभिमानिकिष्ठे निर्दाशमानीकानिकु नहिस्रे ६१ अवजो-

नित्ययन्योन्यसहराष्यसनेभाततायिन अन्छन्तहद्याघोराज्ञानयोनोभयावहा ५६ अयजातिभयमवश्यभाव नीयमित्याहः बाल्मीकीये नचानिर्नचशुरुवाणिनपाशान्परस्थाः जनयनिभुत्ययोर्पयाज्ञातिस्तभय ५०यो गुस्वार्धमधानाहिजातयोनोभयावहा उपायमेतेवेत्स्यतियहणेनोनसंशय ५८ सर्वेर्भयेर्सातिभयसदाकष्टतरमहत विसस्यातिकृत्तां त्यामायया पहरतियत् ५१ राभाव्य गोषुसपन्न सभाव्यवाप्हणेतपः सभाव्य वापलस्यीपः सभाव्यसातितोभय १६ • गुणवान् निर्मुणविषिज्ञातिचीसनैमागतः पूज्योभवतिमान्यश्वलोकेष्वेकागति ग्परार्दे १ अथकीलपत्यनामबाम्हणाद्यध्यसत्वनिदा आपूरणेन द्वबाम्हणानामध्यस्त्वतद्वय्यहण्चनकन्वय्यतीज-न्मानरेश्वानजन्मद्रायक तदुक्तवाल्मीकरामायण्स्योत्तरकाडे सर्वीर्य सि छ्विप्रकेथापंसमे रृष्ट्वाह्यारिस्थितंश्वानरा-मोऽपन्छत्कथस्पित ्तराधानस्कनम्बणरामवचनम्बवीत् ६२ इद्तुविज्ञाप्यस्तश्रस्ताममसाघव भिक्षु सर्वा

र्थिसिद्धस्तिमा म्हणावसये ऽवसन् ६३ द्वगो बाम्यणकेउपर अपना अधिकार्ररवता है उसम के हम्दो पहें सो कहते है राजेर भाषामे पटल कहते है चाधरी वासेटे महाराष्ट्रादिक ये पर्मो धिकारि महाजन नगरना थिक हिंदुस्था निर्माण चसरदार ना कहत है माथ उपिकार के मान्य का अधिकार महाजन नगरना थिक हिंदुस्था निर्माण चसरदार ना कहत है माथ उप कि प्यान का अधिकार महण ने मरे कुनि ना का राजदार में जा के बा महण ने मरे कुनि ना का राजदार किया ६३

तेनदत्तः प्रहारे में निष्ठ रणमान गरः एत छुतात्म हुए रामे वन्तन मह वित् ६४ त्वयादनः प्रहारे स्ट स्टें एस्ट स्टें हेज वित्रहर हारे स्ट क्रें हेन विश्वने तर कि री रो नेन अं ले हे ते कि हम के द्राप्त स्टित्सर रे हो न्छा न्छे ते भे हतः से देण गन्छत श्च स्टर्थंत देवने सितः ६७ को देनिहें हस्य देष्टे दत्त्व न सिर द्वा दे हरेर जर जेद्रश हिस महर देन ६० उन्धेक मूर्ण उदंडर इतिशास्त्र दिहे देहें इति में प्रत्य तिस् वैद्यन मक दित हिए दिन् शिमिर मर दिहे-रेटरेममें इपन्छंडाम्हणस्यास्यके लेप्स्टेन्सिधि - कुलनेड म्हण देकलेन ते ते कुलपि : इत्रप्ते भी रक्तिलारं ७० का लिंतरित्र में पाकी लार्ट के विकतः प्रयं के महणे तह खे गान संबंधित मी दिनः १७९ हत्र म्हादिवः सम्य मानवन्दे बुद्न तरे यदन एतस्यन येश पे महत्मनः ७२ एवम् कः स्टम केवेः रहेः टचनम्बदीत् नयूद्रमित्त्वमः १६ देणेन तकारां ७३

हेरामच -- यह छुच्छ दं उन् हिद्य भ्या नत तह है की तुमकारण जनते नहि हो १७२ छ छ छ छ

क्यों पी भित्रसम्प १० श्वानकर्ता है हेराम पूर्वजन्ममे मय्कुलपतिषा देवबाम्हणपूजाका दासी रासके धनका निप्तागी यादेवद्रव्यभुक्तमानकरता था सोमयवो दो पसे य-द्र प्रथमश्वानयो निकु प्रामप्तया वास्ते पहुंबाम्हण बराका थि बिद्ताका जिन्नामी अधिम अपनि एक इस पेडिकु इबाता है उपवास्ते बाम्हणादिकके उ रूप किपिकाशिपना नहिक्ता और निसकु सकु हुष नस्कर्मजाना हो वे उसने गीदेवबाम्हणका आधिकार पना और उनोका कर क्रिय पन छेना ७९ देवबाम्ह णरपीबालक द्नोकु दिया हुबाधन किरहरणकर गातो नष्ट हो वेगा १८ एसा शास्त्र मे बाम्हणा ध्यस्त कादो पहिष्तु वश्वरण सासे आया हो वे तो करना

जभपूरस्करामेणसारमेयोववादिद् आसीद्हक्तपित्रामिशाशनभोजन ७४ देविद्वज्ञानिप्नान्दारितासेषु
राघव सिवभागीसभारित्रविद्वयस्यभिता ७५ विनीत रीलिसपन्न सर्पसत्यहितरत सोह्यासइमाधारामक
स्थामधमागित् ७६ एषक्रोधानितोविपस्यक धूर्माऽहितरत क्रिरोन्सस पुरुषोविह्नमानीनधार्मिक ७७
कुलानिपातयत्येवसससस्वराघव तरमास्य स्ववस्थासु केलप्र्यनकारयेत ७० यहच्छेन्नरकगतु सप्
त्रप्रापायव देवेष्यधिक्त सस्याद्रोपुच्याम्हणेपुच ७९ वम्हस्वद्वताद्रध्यस्त्रीणाबालप्नतथा दसंहरित
योभूय दृष्टे सहविनर्पति १०० हिरिहणा इत्यवनिदितशास्य विप्राध्यक्षत्वमेवहि वशपर्पराप्पास्क
निव्यनीतिमार्गत १०० अथज्ञातिज्ञानपशसा आचारव्यवद्वार्चप्राप्यित्विषरोषत ज्ञात्वाज्ञातिविव कंचिह्रज पूज्यत्वमहिति १०० सोकेवलनीतिसेकरना केसा सवज्ञातिवातोने तो ऐसानाननाकि सवोकेआर एअपने अधिका-

रहि इनके कहनेमें चलना बोअधिकारीने अहकार नलायके सबोका जिसमें कल्याण होवे ऐसा विचारकरके सबोक्त आजवता करके काम चलाना अपने अधिकारसे अहकारसे दढ या जातिबहिष्कारादिक नहिकरना सबके आधीन रहनेसे माम्हणाध्यक्षत दोषनहि होनेका ८१ अबजातिकउत्पत्तिः नमना अवस्पेहैं सोकहतेहैं धर्मशारुपके आचार व्यवहार पायिक्त इनकेनिष्णैयोकेवास्ते आतिविवेक नानना अवस्पेहे और वोबाम्हणपूज्यहोताहै १८२ स्याणी मेश्रसम् १० ष्पानकर्ताहै देशम पूर्वजन्ममेमयकुत्तपतिषा देवबाम्हणयूजाका दासीदासके धनकानिमागीधादेवद्रव्यभुक्तमानव रताया सामयवी दोपसे य-द्रअधमयानयानिकु प्राप्तभ्रया वास्तेयहब्राम्हण वरावाधि विद्त्ताकाञ्जभिमानी अधिम अपनि एक दसपि कुरुवाताहै उसवास्ते शाम्हणादिकते अ पर किषिकाशिपनानहिक्ता और निसंकु सकुरुवनस्व भजानाहो वेउसने गौदेवबाम्हणका अधिकारपना और उनीका करक्षि धनछेना ७९ देवबाम्ह णस्त्रीवातक दनाकु दियाहुवाधनिकरहरणव रंगातीन एहावेगा १८ एसा शास्त्र मेबाम्हणाध्यस्त कादाधि परतुवश्यर परासे आयाहो वताकरना

अभ्यूष्टस्करामेणसारमेयोन्वादिद् आसीद्हकुलपित्रामिशाश्मभोज्न ७४ देयद्विजातिपूजाचदारीतासेषु
राप्य सिवभागीस्मारतिदेयद्व्यस्यभिक्षता ७५ विनीत शीलसपन सर्वसत्यहितरता सोह पासदमायीरामक
स्थामधमागित् ७६ एयक्ष्रोधानितोविप्रस्त्यक्त धर्माऽदितरता क्रोन्टससा पुरुषोविह्नमानीनधार्मिक ७७
कुलानिपात्यत्येवस्यस्यस्य त्राच्य तर्मास्य स्वयस्थास् क्रोलप्रयनकारयत् ७० यद्व्येन्तरकात् समु
व्ययशायवा देवव्यधिकता सस्याद्रोप्चमाम्हणेपुच ७९ मम्हस्वदेवताद्व्यस्यीणायालप्नतया द्वतहर्गत
योक्त्य दृष्टे सहविनर्यति १०० हिरहणा इत्यवनिदितशास्य विप्राध्यक्षत्वमेवहि वशापर्य सम्मान्व
र्वव्यनीतिमार्गत १०० अथज्ञातिज्ञानप्रसा आचारव्यवहारचप्रायश्चित्तेविशेषत् ज्ञाताज्ञातिविवे
केवद्विज पूज्यत्यमहीत १०० भोतेव्यविद्यस्य हैमामक्ष्याव्यवहारेच प्रोत्यवव्यक्ति स्वरोत्र स्वरास्त्र स्वरास्त्य

सोकेवस नीतिसेकरना कैसा सबसातिबाहोने तो ऐसानाननाकि सबोके अपर प्रथम अधिका-रीहे इनके कहने में चटना बोअधिकारीने अहकार न लायके सबोका जिसमें कल्याण होवे ऐसा बिबार करके सबोकि आर्जवता करके काम चलाना अपने अधिकारसे अहकारसे दृढ या ज्ञातिबहिष्कारादिक नहिकरना सबके आधीन रहने से माम्हणाध्यक्षत दोषनहि होनेका ०१ अब ज्ञातिकि उत्पत्तिः नामना अवस्पद्दे सोकद् वेहें धर्मशास्त्रके आचार व्यवहार पायिक्त इनके निष्यों के बासे आति विवेक नामना अवस्पद्दे और वीमान्हण प्रव्यद्देश तो है १०२ और मयकाहाकाहु कीनजा तकाहु मंरालु के साहे और सबध के साहे यह सब प उतने अवश्य बिचार करनाचा हिए ८६ ८४ आग्हणने अप-निर्द्धिसे वा द्र्यों के कहुने में वा पत्यक्ष अलुभव देखके वा अनुमानसे शास्त्रक्ष पस्पनकरके पूर्व पर बिचार करके अपनावृत्तांन अवश्य जान-नाचाहिये ८५ ६६ ओरजो अपना ग्रेमिन वृत्तांनर्ग ह जानता सो ता कि प्रमामकास मुकलदशाकुषा पताहे और जा रिणेषु प्रकियोग्यता उसकु हो न

अध्य त्या नित्त नाद्यां वर्त्यां त्या है ति देशहें काहं के हें के हें के हैं के हैं के हिंदी के हिंदी के कि हो के हिंदी के कि हो के हिंदी के कि हो कि कि हो है के कि हो है कि हिंदी है कि है कि हो है कि है कि हो है कि है कि है कि है कि हो है कि मः अन्तिम् दिन्त येजन दिस्तुम् न दश्चनिसम्बर्धेष्ठारस्त्र करे दिस्ति हे करकतिहेट द अत्मनः सर्व ने देवेट मेद्र द्र त स्ट्रिंग ने हैं न तिस्पूर्ण दर्स हेतुंद्रली दुवनहर देवहंदुक्तः दिस नक्क न न स्तीएनम्स मेन १९० अत्रेप न देश न विद्यालया दे एरंस्ट्रेड्स्ट्रेट्र १२ छत्र में रदन्से ए म्स्रेप उत्ति जनः गेना र एक पर देगे इदे र ते स्मेर १३ मेर एन स्थ 

ज्ञात्संबंध जानंने से बडेपना होरेगा इस हेनु के लिये अवस्प यह उत्पाति भसग देखना ८० +०० अपना सुक्षन होने के चारने गात्र १ मवर २ शाखा ५ अव

और मयकाहाकाह कीनज्ञा तकाह मेराकुन के साहै और संबंध के साहै यहसब पर्वतन अवश्य विचार करनाचा हिये ८३ ८४ बाम्हणने अप-निरुद्धिमे वा द्यों के कहने में वा नत्यक्ष अनुभवदेखके वा अनुमानसे शास्त्रक्ष प्रमुदका पथनकरके पूर्व पर विचार करके अपनावृत्तांन अवस्य जान-नाचाहिये न्य च्य औरजो अपना उत्पन्ति वृत्तानन ह जानता मोत्ता ति के प्रमुमभाम कुकलदशाकुषावताहै और जा रेजिए त्रिकियोग्यता उसकु होन

सिन देशस्य दुन्म नृतः इष्ट्रित्ते या नंद्र हुए इक्टेरिक्स त्रिक्स ने प्वेश्नेस स्वास हसी सह हैन कः अत्मने के निर्देशने रेकेन निर्देशन विकेश ने समय के प्रश्निस कर के ते त्या सम्बद्धि ने हेत्रेक्स एक महत्र देहहेदकः रिह्मान कर्तन न स्ती एक मिनेन वेशव अहार है हे के कि सामा स्वासाय स्था दे द्विनित्त देत देव देव निर्दे देव निर्दे देव ने देव ने मृत्या निरंप के महत्व ह न् एतं पद स्पास वा देवने एरेस्ट्रेन्संप्टेन १२ झते प्रकेट इन्स्टेण मुन्रेण होने जनः यो अपत्रक्ष पत दियो व देवत् संयुक्त देव प्रकार स्था 

ना त्सिबंध जानने सेवडेपनाह रेगाइस हेनुके किरे अवस्य यह उत्प ने भसग देखना = 12 + 12 अपनास्तु क्षन होने के वास्ते गान १ मवर २ शास्त्रा २ अव

ज्यो र्ण ।त्रक्रफ १९

ना पर जानने से बाम्हण जानना • १ ९४ ९ मन साबिशद्का अर्थ कहते हैं धर्म सार्थ ने तानि राष्ट्र सामात्र सामात्र सामा आरोत् निनकारोनार जिनकादाय विभाग है एकवरास्य है उनोका यह ण करते है १० और सामान्यमत दूसरा यह है कि बाम्हणबाद णकी जाति सिक् अयतातिराद्वस्थार्य प्रतिपाद्यते पादोएक् लिगिमहात्म्ये स्वउवान् सुनीराजातप् श्रोक्तर्थर्गर्भेषुसर्वतः सणिडागोत्रसंबंधपवरस्थानदायिन' १६ येपाजनमविस्मादिस्तकाशोन्वकृत्तय दायित्वेनभवेयुस्तेतात्यस्वेक-चराना • ७ बाम्हणोबाम्हणस्यस्यातदात्रसत्रस्यसर्वदा र्पेरयोवेश्यस्यविज्ञे ये। ज्ञाति सूदस्यसूद्रके १० सामान्यः नप्रिजेय सदानुना देतस्थे प्रजानिरनाचारिस्वशानिरप्रस्वैया १९ अनेकपराजाताना शानित्वमतम् न्यते-स्पिद्रसभवस्यादेगादित्वासर्गोत्रज्ञ २०० समुवाय परिक्षेपोज्ञानिधमीणयम्सदा धर्मासमान ब्रिन्गिज्ञाकी नानुकदाचन २०१ तुत्राः समानधर्मेषु यूनपिडोनिशिभ्यते युनपिडात्सपिडस्योपादानस्यानुसभनात् २ सम यमें पुतस्मानुयून पिड़ो विधीयते स्यारक स्थल इसी नां ता ते मेंदर करें। यूगे ३ सकरत निवेधाय वनेति शिष्ट सग्रहें त अशातीत्मिनभावानास्युस्वेस्ति सान्वयः ४ साकरव्यवहारित्रमास्तृतस्मात्स्थिति सता स्थानः स्पूर्णितभदेनस्यानस्यापकनामाभिः ५ सम्बूर्ण्भवेज्ञ्याति सङ्गाति स्याकुरीयुगे अतिविधिविधानार्यः

रक्ष मुक्तद्वी प्राणपति धार्थाव भीरवर शर्म र स्पापनाकाकारण र स्यानकामाहात्म ११ स्यापनकरनेवालेकासहण १२ दरणादि सम् अवस्य देख

धर्म जिल्लास्यास्त्य ६ उद्ग्रह न्यवहारार्यंनातिभेदोनिरुप्यते अत प्रमुवस्यामिभोजनस्यविनिर्णेय ७ भाभि विरेष्यिक भूद्रपूद्द ज्ञाविनानना ९० ००० १ ० परतु कितयुगमेवर्ष सकरदोषहोषेगा सोनदाना उसमयके किये १ १ शिष्ट समदायसे स्या और स्थापना करनेवालके भेदमे नाति शह च्यवहार स्यापन कियाँदे साविनाह मे ग्रहणकरना १ ४ ५ ६ १ ० १ ५

13

अधाय ग

ब्राम्हणोत्य

ं झ्या णे ।यरहपः १९

टक् ४ कुलद्वी ५ गणपीत ६ १शव ॰ भीरवर शर्म ९ स्थापनाकाकारण १ स्थापनकामाहात्म ११ स्थापनकरने बाले का सहाण १२दृत्यादि सब अवस्य देख ना वह जानने से बाम्हण जानना ९२ ९४ ९० अब साबिराइका अर्थ कहते हैं धर्मशास्त्र में साबिराह्स साविह सगान सब थ जिनका पक है ९६ स्यूनक आरोध्य जिनकारोगों दे जिनकादाय विभाग है एकवरास्य है उनोका यह णक रते हैं ९० और सामान्यमत दूसरा यह है कि बाम्हण बाम्हणकी साबि स्विन

अयतातिरादस्यार्थं प्रतिपाद्यते पादोएक् लिगिमहात्स्ये स्वउवान् सुनीराजात्यः भोक्ता्धर्मराान्येपुसर्वतः सिषडागोत्रसम्यानदायिन १६ पेपान मिर्गुमादिस्तकारान्विवस्य दायिलेन भवेषुस्तेनात्यस्य द चराता • ७ माम्हणोज्ञाम्हणस्यस्यातदात्रस्यसर्वेदा पुरेयविश्यस्यविज्ञाया ज्ञाति सूदस्यसूद्रकः ९८ सामान्यः नपरिजेय सदाचारा देतस्यो पर्तानिरगचारिस्वज्ञानरिषम्वया रे९ प्रनेकपराजानीनाज्ञानित्वमन्स्यते-सपिहसभवस्यादेरादिलासरगोत्रज्ञ २०० सुमुवाय परिशेषोज्ञातिथमेषायर्सदा धर्मासमानवस्तिनाजाही नानकदाचन २०१ तृत्रां असमानधर्मे र्यनपिडो निशिध्यते युनिपड्तिएउस्यो पादानस्यानुसभनात् ३ सम धर्मेषुतस्मानुयूनिष्ठोषिधीयते स्यापेकस्पलवृत्तीनांना तिमेदे कले।युगे ३ सकरलनिष्धाय वन्तिशिष्ट सग्हें त अज्ञातीत्मित्रभावानाम् युस्तिमित सान्वयः १ साक्रव्यवहारित्रमास्कृतस्मात्रियित सता स्यानः स्यापितमेरेनस्यानस्यापकनामितः ५ सम्बा्याभवेज्ञाति सज्ज्ञातिस्याक्तेश्वा अताबादावधानायः धम जिज्ञासयास्वय ६ उद्वाह व्यवहारार्यनानिभेदोनिस्च्यते अत प्रमवस्यामिमोजनस्यविनिणेय ७ शवि

अन्गे उद्भार जोबाम्हणहे प्योकापरस्पर भोजनका निर्णय कहते है वर्तमान का लमे कितने क लोक जोहे सोशास्त्रमतका नेचारनकरके केवल अप ने हु द किचातुर तास इसजानिके सात जिमिंगे बेजातिक सायनहि जमने के ऐसा निर्णय करते है परंतु र निर्णय बरोकर निर्हे आगे स्वस्तरकहते है २०८ अप नेजाति के मर्यादा रक्षण करने के वास्ते परत्ता निके घरल जे बाम्हण भोजनकरेगा ते बोदं उयोग्य है ९ वास्ते पुरन्य रा स्वार्य यह है के जाहा कन्यादेना बाहा भोजन करना अन्यत्रन है १० प्रश्तीन रुगमे दशाहाम्हणो का परस्पर भोजनका स्वत् हारया परंतु क लेस गोन

मे भोजनकरना १२ के साबाम्हणने चारोवण के कन्यां साथ पाणियहणकरना ऐसा मन्वा देकोने कत्दाहि परंतुक लियु गरेन हे १३ वेसा भोजन कान्यवहार जानना तत्रा पक्निटिक नैलंग द वेड महाराष्ट्र एक र इनोका परस्पर पंकि भोजन हुवातो दोष नाहि है फक्त आन्वार शक्षि देखना २१४

अबगे उद्भित्त नावाम्हणहें ह्योंका परस्पर भोजनका निर्णय कहते है वर्तमान का लमे कितने क लोक जोहें सोशास्त्रमतका बेचारनकरके केवल अप ने हुं दे किचातुर्य नास इसजानिके सात अभिंगे बेजानिके सायन है जमने जे ऐसा निर्णय करते है परंदु वे निर्णय बरोवर नाई है आगे स्वस्तरकहते हैं २०८ अप ने जा निके मर्यादा रक्षण करने के वास्ते परता निके घर छ जो बाम्हण भोजनकरेगा ने बोदं उयो ग्ये है ९ वास्ते हु स्वयरा स्वार्थ यह है के जाहा कत्यादेना वाहा भेजन करना अन्यत्रन है १० प्रवित्य गमे दशा हाम्हणो का परस्तर भोजनका व्यवहार या परंदु के लेख गमेन

प्रत्र न एक सिर्देश पर प्र पर प्र धर्म शास्त्र में बाम्हणने बाम्हणने बास्तु मोजनकरने से दोषन हे कत्वा नथा प्रस्माई में भोजनकरना १२ के साबाम्हणने चारे वर्ण के कंन्यां साथ पाणि हणकरना ऐसा मन्वा देकोंने कत्वाहे परंतु काल पुण में न हे १२ वेसा भोजन कान्यवहार जानना तत्रा पेकनिक ने लंग दे वेड महाराष्ट्र एक र इनोका परस्पर पंकि भोजन हुवातो दे बनाहि है फक्त आन्वार श्राह्म देवना २१४

ाउपार्ण मेशस्क्प १२ और वैसासारस्वत मैथित कानकृत्व गोह उत्कलका दिगोडोका परस्पर भोजनका दोपनहिंदी परतु उनोका किन्न पिक्का त्यवहार वो होतन्य पत्कारिक है जैसेसारस्वत अन्यवाप्तणक हानका कि दान नहिलेनेके और यनमान तो वाणे जो है उनोके हानका सिद्धान सब छेड़ गे वे से पुष्कर माग्हणका विप किकान्यवहार है और सनाउया दिकाका विविधन मार्गहै यदने रोटिका आदि तयार करके न्यू ते पर रखदे ना आपने अपने हानसेउतार हे नाए से अनेकमार्गहै यथविस्तार भगसेन हिकि रस्ता उसवास्त गोंडद विडका परस्यर भोजनन्य बहार नहि है किये तो दोष है काय से जो पक उननाना र दूस ए

हिर्हणा त्विहिष्यगोडानामियोभोजनभिष्यते तथापितत्रवैचित्रदश्यतेबहुभाषुवि२१५ गोडानाद्दिशाना चनामयोभोजनस्मृत्कतचेहोष्णपात्रतेषाणातत्त्वदर्शनात् १६ अनाचारपसगेन माडव्यस्यचशापतः तथा चोक्तः यायेकायस्योत्पत्तिपसगे कतीशाणा म यादत्त सर्वषां सभिष्यति १०माधुराणाधिरोषेणतेषाधम् प्र णस्यति एवमेवहिगोडानाकायज्ञानाचशीनक १० मम्हरायाभिभुतानापातित्यचकतेष्यगे इतित्रज्ञचस्वस्वः पत्तनेकेचनाधिद्वपः यामसिद्धाः स्वार्थतोष्तेनपचद्वविडमध्यापकिश्वित्ताहभोजनक्वति किष्वत्सहभोजनेन् मत्सरा दङ्कवितन् तत्वविद्यते १९ सापतं व्यवहारस्यद्शेनात्प्रविच्यते यथागुर्जरदेशेमहाराष्ट्रहस्तेन गत्तरा प्रजन्ति विद्यते १९ सापतं व्यवहारस्यद्शेनात्प्रविच्यते पर्यागुर्जरदेशेमहाराष्ट्रहस्तेन गत्तरा प्रजन्ति विव्यवते १९ सापतं व्यवहारस्यद्शेगुर्जरहस्तेन महाराष्ट्राभोजनक्वितिनगुर्जरा २२९ क्वकर्नाटकद्विहाधदेशेषुकर्नाटकद्विहते लगगुर्जराणां सर्वेषाभाजनव्यवहारोहरयते २२२ माउव्यवभाकशापसे-

कर्मभृष्टपातित्यता पेसे कारणसे भोजन व्यवहार निहकरना १६ १० १० और सामत कालमे अपने अपने पावो में पित तर माम सिह पुरुष जो है सो पनके लोग से और अन्य भोजनके खोम से पचद विरु में विकितने के साथ भोजन करता है और श्रेष्टता मानते हैं कि तने कके साथ भोजन करने स देउकरते हैं वे तन्ववेचानहिं जानने १९ हाल में को व्यवहार चलर स्वाई सो ग्यप स्थेक से स्पष्टा में हैं १२० २२० १२२ ७ ६ ६ आर वैसासारस्वत मैथित कान्कृत गोड उत्कलका दिगोडोका परस्पर भोजनका दोपनाई है परतु उनेका किया फिका न्यनहार वो होत चमत्कारिक है जैसेसारस्वत अन्यनाम्हणक हो तका सि दान निहले के भीर यनमान लोगाण जो है उनो के हातका सिद्राभ साप छेड़ गे वैसे पुष्कर माग्हणका विप किकान्यवहार है और सनाउया दिकाका विदिश्य मार्ग है बदन रोटिका आदि तयार करके चूलेपर रव देना आपने अपने हात सेउतार छेनाए से अनकमार्ग है मथविस्तार भयसेन हितिरस्तों उस्वास्ते गोड द्रिका परस्यर भोजनन्य नहार निह है किये तो दोष है कायसे जो पक उन जना सहस्तर

हरिसूणा एष्टिस्चगोडानामियोभोजनिष्यते तथापित्ववैचिनदश्यते चहुपामुवि२१५ गोडानाद्द्विष्ठाना चनामयोभोजनस्मृत कत्वेद्दोषण्याभतेषापातत्यदर्शनात् १६ अनाचारपसगेन माडय्यस्य चशापत् तथा चाक्तः पायेकायस्योद्धित्रमेसगे करीशापा म याद्वः सर्वेषासमिविष्यति १० माधुराणाविरोषेणतेषापम् प्रणस्यति एक्मेषित्रगोडानाकायजानाचशोनक १८ माद्दशापामि द्वानापातित्यचकरत्युगे इतित प्रचस्वस्व पत्तनेकचनाविद्धः यामसिद्दाः स्वार्यकोमन् पद्दिष्ठमध्यापके भ्वत्सद्दभोजनक्वेति किष्वत्सद्दभोजनेन् मत्सरा दृद्धक्वे तन् तत्वविद्धते १९ सापत्यवद्दारस्यद्शेनात्मम् वाम्यद्दर्शमाजनेक् गत्सर्थक्वेति किष्वत्सद्दश्चित्रम् रश्यापक्ति भिजनक्वेतिनम् स्वाराष्ट्रस्ते न रश्यापक्ति प्रचानाच्याक्षत्र पद्दर्शमाजनेक् वित्तम् प्रचानाच्याक्षत्र पद्दर्शमाजनेक् वित्तम् स्वर्थका १९ सापत्यवद्दर्शे गुर्जग्रह्मतेन महाराष्ट्राभोजनं कुर्वतिनगुर्जग्रह्मते स्वर्थकर्भावस्य पद्दर्शे गुर्जग्रह्मते भावस्य पद्दर्शे महाराष्ट्रस्ते स्वर्थकर्भावस्य स्वर्यस्य स्वर्यस्य स्वर्यस्य स्वर्यस्य स्वर्थकर्यस्य स्वर्यस्य स्वर्यस्यस्य स्वर्यस्य स्वर्यस्य स्वर्यस्य स्वर्यस्य

कर्मभ्यष्टपातित्यता पेसेकारणसे भोजन व्यवहार नहिकरना १६ १० १० और सापत कालमे अपने अपने आपने पिडते तर मामसिंह पुरुषजो है सोपनके लाएमे जीर अन्न भोजनके छो भसे प्यद्रविह मेनि कितनेक ज्ञातिक साय भोजन करतहे और श्रेष्टता मानते हैं कितनेक के साथ भोजन करने सक दंदकरतहे ने तन्त्रे नानिक १० हालमे जो व्यवहार चतर रखाई सोन सपदा प्रेक्षक से स्पष्टा ये हैं १२० १२१ १०२ ५० १००

रु जिन्देशो नेस्त हो जन व्यवह ए एक खेळ कि ना देवें कुर्वि १३ और किनः कि कि है है है है है कि स्व स्व स्व स्व है है है है है है के स्व के कि है कि स्व के कि से कि जानं करिते वेश द्रार होने का दिए दे हैं रूर रूप भादिकां नल करमाणाम स्ति वंद्र अन्तित्तर रे हैं प्रवस्य मे सूर्य करत् दे हैं देन रिडेबेंच में डेमें डेए देवहि २७ म्हास्ट्रम् रिस्टे ए स्वर्षकारि हितार कर रात्र कर स्तिन के रे ज्यस्वैद्यास्माद्यसे भिनः रणक्षे ब्देनदेश्रतं रणेजंस्य एरं तिहै २३० केरित्स् बंध्रद्देनत्र ए दूरस्प र एरं त्या इसीपूरिक तिल्या संत्या प्रत्या स्वार प्रत्या स्वार के मुन्ने प्रत्य के दार्थ में भूद्र में प्रत्या कार मिया है

ब्राह्य वांन्स्त्राची के निर्देश विद्याची जीके मागरयसे इनतीन का कुछ यो डाधर्म न्यताहै अबि जि अपनावण के में करने कि इन्छा होते व हुन्यारद पुराणी के निर्देश के कि कि अपनावण के में करने कि इन्छा होते व हुन्यारद पुराणी के निर्देश के कि अपनावण के में करने कि इन्छा होते हैं व हुन्यारद पुराणी के निर्देश के कि अपनावण के कि कि अपनावण के क

' प्रतिसारिधानकरने हे अधिकार होवेगा २३१ वर्षिक शब्दका वशेष शब्दार्थ मूलकं सप्पर्हे २३२ २३२ छ छ छ छ

रु पदेशो रेस्ट्र के कर रह पुर सार के का ति . दें इंतर्ट ते १३ के मा कि ना कि है है है एक पर कर सर सहस हरे ते छेता सार अन्यक्ष तेन सहभो जाने न दें दुंहें ते १४ में बाद रहणार पन ने गाँव दें पान पर देंग्र में सार तर है से स्मू उन्नंदि विषुद्रहारे के दिर दे हैं सर स्वाहिता नत्क म्हाणम स्ति वेद अन्तर हरे हैं ह वसर मे शृण् करत ह हे हैं है-िडेकेंवग हो दें हैं है हि २७ तथास्टर निमधे रिस्कर्क में दित तथान रूपत्तं चत्य स्तेन च्योजने २० क्रोन के रे येक्ट्रीके केरिके में देवतंन्य तक हे दे एक के शहर स्मार १९ अप में प्रति है । ड्रेस्ट्रें क्षणाद्वसो भिनः रमिका बेन्टेश्रेस्टं पेज स्थापंति है २३० केरित्र चंद्राद्व तर्वेत्रे पहुरस्य निर् र संप्रदेश ने पूर्व के नहर तर रेशे विषय बोन्वेश्यते किए पे कि ते स्थिते प्रेशे तर पक्ते के दिन् वस्ते मिस्पात देन सत्त रेशे के बहुत कर में रापेन सक डेटप एस्टेन्श्रन्य फलक्षर मुप्ता हे शहर के जा एसन् देने व गुण्य नहर्म र एके त्स् इसीक्षिपतित्म एत् ए प्रिक्त नः पादपलल की साज्ञ कर पुने ए महत्त एत् १ १ विर वेशण्यात् उनीका सकरहे गयहे

बाद के शंकराचार्य डॉरको में स्वामिक वतनावार्य जीके पागटय हे इनतीन का लुख यो डाधर्म चता है भटि कि जे अपनावर्य धर्म करने के इच्छ होते व इन्या रह दुनायों के ' पंतत सारि चक्ता देवानकरने रे आधिकार होतेगा २२१ च शिक शब्दर्ता वशेष शब्दार्थ मूल रे सप्ताहें २२२

२२४ २२५ २२६ २२७ २२८ अवजायणअपने सक्षणेत्रणहुन्हें और बनियेशुन होते वेरप बनके वेटे हैं सौउनोदा दोप नहिंहें किन सित समस्य हैं है २२१ शामण और बनिये अपना मुस्यउत्प्रीत खानकु छोड़के पनलो प्रकेशिये देखों देशों नापके स्वधर्य तत्त होने में वेरप मिन्य कथानक करवा है २४० २४१ २४० अव गुनगति आदिवानयोपे था किसनदास शा रणछो दवास ऐसाओं कहते हैं उसमेशा कहने का क्या बारण है सो कहते हैं २४५ सा कहते सा दुकार पनवानकु पनका न्यातार करता है उसके कहते हैं तब जा मो अगो सा हुकार यह चार असरका हिस्तनेका आलस्य अवता है वास्ते सचार असरवे सा मस्तर्य हिस्त सिया कहते हैं

अभापाः ।पृच्येसि

स्कादोपपुराणे क्ल्याणस्वहे पोरवालश्मालिव्णिजो वेल्ल्यम्त्यक्षत्यामितपादितवर्तते २२४ वणिकराच्देनसच्छू हाः बप्दनेक्तेबप्दसंहे, गोपनापित्रभिद्धान्त्रतयामोइककूवरी २३५ ताबुक्तिस्वर्णकार्ञ्जूतधावाणक् जात्य इत्रवृमायानिपेद्सन्धूद्रा परिकोनिता ११६ तयानुसूबुकम लाकरे सून्स्पाईज्युसूषोनपाजीनुन्वणिक्स्यून स्कादोक्तनारुसिल्पाद् सर्देश्वन परी निंत २३७ नाम सिल्पाद् सर्देशु झारोतादिशानातादिनपिजी सन्युद्ध इत्वेमितपादित मनीन केवरु निषकशन्देनेवृत्तेरपुत्व इद्तुना उत्पनिर्मेषु पविज्ञाय कल्यायप्यति ते गत्पिक्षितेतरशिरोम्पापुद्रपद्धमतिविस्तरेण २३० क्रिवंबाह्यणाः स्वयंमैत्याणिनः विणिजञ्जस्वपुस्तैनैववैषयत्वं प्रतिपाद्यति तत्रन्तवेषादौष किंतुकि छोष् एष २३९ तदुक्तपादीः अन परमाविष्यूयत् रूपवनुमन्य कत्ये बाप्हणावेदरहिता शिखाचार्विवर्जिता २४० शुक्राचार्यातो मधुक्रपर्स्परियोन धिन मासणाहित्रीनान्वभूम्सेवापरायणाः २४१ विधिजोदेशेदेशेचगपित्यानेधनार्थिन वेश्यृष्टनियुत् स्पवैद्विजसेवनवर्धि ता २५२ अयगुर्ने सिद्विणि सुशारा ब्रूपमयोजनमाह इतिहला सुर्ने सिद्विसाराद, किम से पोच्यते सुधै तस्याहकारण वस्य श्रुलातांकमुस्तादिद २४३ २४२ इसक्छियुगके अदर राजनगरमे एकपादशाहाह्ना उसने शा ईन्यरदास ऐसामनियेका नामसुनके मनमे निवार कि

या जो पवर्ती पार्शाह कहते चतुर्थीरा शाकत्वा जाताहु और यह बनिये पूरेशाकहे जावेही वास्ते इनोस्य राष्ट्रपना युडावेना पेसानिनार करके समयनियोक्त पुजापने

93

लिकितुकान हे हासाधिरमा स बनिये के थि गोर हासाने उने का बिचार हुनके पूच्छा के भाइ मेरेल गो कही हुम छोक सबक्य विचार करते हो तब वे लोक हसने लोक - निसक दुकानी हुदभरतेल ती है न्ह और अपना विचार एचछता है वासे इसके क्या कहेगा फिरओ तेली और एचछन समा तब वो सोको सब बनात करवा सो सुनर्क त हासा कहने उगाकि हुम सब पहिले मेरेघरक जिमनेक आर बाद हुम्स काम मय करुंगा वे बात ए नके सब आश्वर्य करने उने कतनेक कहने उने के देखातो साहि क्याहोताहै सब का एक बचार होके उहासाके एका उसवर क गरे छो हासाका घर गावके बाहार एकातम् था संसव विचे छ बिछ में छे गया वाहा देखेतो छाखे मन ब्याबेटे ए में बाडे संन कलेश्वीरजनगरेप देव हस्ट रेग्ट. में लक्ष कर मन सूर्य वह स्थित रेप १४४ उटा के हु देर लेट स्ट स्ट में परमाह ह रहेण? देव हटा वेट देवा सुक्र महण देर: इका गेर रेर उट करिए एए १४५ वर्ष वर्ष वर्ष है हैं है प्रश्ने के के देवत् र र हिन्द कर सहित्त एपर हेट् द्वेंदें २४६ दरजगाहै सं देखते सब आश्वर्य करने लगे बाद दूसरे देन सारे शहेरके बनिये जेपनेतु आये अपन स रेखे प्दारी प्रिमे लोहासाकु महालह्यी परास्त्री के अपने स्व हसारे महालह्यी सब कु भीज्य पदार्थ परास्त्री के के बाद सब ने मार्थना किये तब लेहासाके घरमे राजदरबार तम गाडे लगा देशे और एक शिक्के छपन क रेउक्तपय देने कत्या न के रद्वसरा के नसा शका च्हेरे तब पादशाहाने वो कोरे शिक्षे के रूपय देखने हात जे उक्ते करहा के तुम पूरेशाह हो रेरेक पान्य हे ऐसा एजरा ने आदिवनियो गाकहनेकाजी कारण से कत्या जिसकोइकारण के लिये महालस्ट का केप भया सी यह धरिब नेयो ए छोड के शाव के बनिये के घरमे हि राज मान समे ह २४४ अवज्ञाम्हणादिक लेको में विवाह मत् वधा देक का होते हैं उसमें शास्त्र संगत एण्याकारक कर कु छोड़के असमें द्वारवर्च बोहोत होने एण्य घोडा होने के रक्षे श्रष्टता होने ऐसेकाममें जो लेक महत्त होते हैं २४५ और पूछतो स्पत्तान विवाह योग प्रमाण में तेश्व ते: शास्त्रा दूरि वेले यशीत स्पृति :ऐसापमाण चे उने हे के र

कत्या के मयपादशा और तम भार दे इस वास्ते मयजे कह वे शिक्षेत्र छपन्यकर ड रूपय सायके देव ते हुमेरा शापना रवरा है न हेती शाकहेना छोड देव ये हुनके अच्छ कहके सबब नये एक्टि पिछके बढा क्विर करने का का नसा शिका मगेंगे और अपन का हार का यह देने में ऐसा जागे जागे विचारकरने छो तो बाहा एक ने

\_

महत्त्वन से शास्त्र विकार मार्ग वरवान है परत जोरू दिशास में विरू न होने अधर्म न होने जिस रूटिने उपयक्षे कि वृद्धि होने बोर्फ्स मार्ग क सन्तर साही ने मान न्यहरमा बादि निष रुधि पुष्प सीण होके पापवृद्धियद होने गहा शास्तात् रुधिनैशीयसी यह नचन मनर्चक करना नहि और ऐसे प्रकाने नो नो नचनिक प्रवृत्ति करेंगे ती न दिस पदमका मूल इनोने दरहेनिह ऐसामानतारु शालातकार नैलीवसी प्र वननका हा मवर्नक होताहै उसके ऊपर एक र शान कहतारु कि पेकल राज्यका आर्थ रााल्यसे ' -देक्षेत्रो रक्त्म्पर्यातनातपक्तनीन्यस्त्रवेषाद्रव्यस्त्रपक्तकत्वानवभित्रदेशेभाद् सहत्ववि आरचि क्यम शासी धान्य दृत्यादि पदार्थ होताहै परतु सनोक्त परत्नन ्रिकृतो क्य कमनक प्रकासहते हैं और इस्तारशत विकास नयाणाकताना सभाहार निषक इसका अर्थ यह है कि तीनफर एक दिखने जाहा होने उसक विफास हैना पृश्तु बहा नहिंदे फक स्टामें विकास रोहते हैंडे नेहडे आवने होना पैसे शास्त्रपे अने कपद है तो शास्त्रते अर्थ होता होने पर्तु न्ये स्ट्रिने पहल होने ने हिना जैन

कुर्वेतुसज्जनास्सेर्वेयेनसोरन्यम्बाभुयात् इतिमेपार्थनाऽभीस्णायसार्यकरसपुटी२४० रूटिमार्गस्यस्मत्वमिनार्याः उत्तरपाजनाः कर्मकुर्वेतितेषारेषेफल्यभवतियातः २४८ ज्ञानदेवस्यविषयस्यदुर्गादेविषमादतः पुत्रेजाते सूपणचदूषणवाः सा परूज कहने कमल तेना शास धान्यनहि तेना बास्ते कत्याहै कि शास्त्रात्सुरी वैदीयसी वह बचन पमाणहे परतु वर्तमा

नातमे जो खेकहैं से अपने रनार्थके वास्ते शास्त्रादृष्टिर्वतीय्सी यहपद भिन्नविषय प्रतिपादक है तथापिस्नायीमें ग्रहणकर के अच्छेशास्त्र सुरू पकु दूपणादे तेहैं २४६ वाले ओ सन्तन भोको कु हान नोडके मेरी पार्यना है कि जिस करिसे इह ठोक परलोक में सुरव होते वो करो और जैसा पूर्वदेशिया पहण मतस्या हारक रवेहैं गुजरमें नमेंदिकपान करते हैं पहुपरप्रागन मार्गहें पर्तु इसके त्यागकरनेसे पापनहि होने कापुण्य होनेगा २५७ औरिकतनेक पित्रतेनर शिरोमाणानी है गों अपनी वशाकि स्वरिका स्थ्मा विचारन करके छिर मार्च करेजाते है उसमें पान हो नाई २४० उसपरएक कथा कहता हु एक सानदेव आप्नाव उसकु सल्दन निह हो हो वासी रिस्त होके मनके बाहर एक दुर्मार्नीका मरिर या और उसके सामने दसहात चाहि पानिक बाबिह भी बाहास्तानकर के नित्म देविका पूजन करता या स्ते एक दीन है वीकि मार्पना किया है मरेक पुनजो हो देना तो उसका दिनाइ कवक रगा कि पहिले आप कि प्रनाकरके यह नान हिके ऊपर से कुरातुमा ऐसिमानता लेके परकु गया नहीं

अप्युप1६

नाप्रकोतानि

## देश चर् कुल चरः न त्र चरे देशे बतः करिसे देवुष तकस्य समर्थे चरिस् १५०

4141414

₹ <u>y</u>e,

उद्भा क्षेयहुम्होर्कण्न तो अनानार है तबरेगानार कर्नाउनोक्तनायम् नार्वहै कृतानारमे मोद्रयस्त्रात्मकासस्यमती सानदेवका वालाँमे पूर्व कन्या पसामान्तर्भ माम्बोसी अ नाचार सोहमें हेशाहीक विवाहमें नवहंशितानमाना और अवनरवी दूसरेकमें उसमें इन्यस्वर्त शोहोंन करना परनुविवाहका वे रोक्त विधिक्योंहे और उसमें स्थाचिह एअपनी शासाक्षीनभी है क्यास्त्र है । सक्षाविचारन प्राणान करताहै भीर उपाप्याय करताहै वैकायरमवे एकारणाक्षादितानदीनीमे व तु भोग्रतमाणिके महतातासपट माद्यमामाम हुने यानहि वसकान्निर नहिकरते नवनिवाह यत्तोपश्रत मरणारिक कर्ममे छविके विचेवव्य बोहीत खगतहि भीरकर्ममें दीवनाहोनीई पीरक्ज करके बोनाको करिसंपादन किये भादवों कर्न फेटनेंक फिर अपना बाहकर्म छोड़ के बचके वाले पानपाना दिव करनाहै उसमें विजायन हो मनानी ऋणपे रहताहै वाले लानि पुरुषने अपनि लानिकार बसेबरनहुर्ती दूपवानहि है परंतु अपनामम्हर्म बरोक सस्कारारिक अमेमेरूपवानहि छेना नमशानिवासे नाव रारिव गे-

तस्माद्रुडिपरित्यज्यद् ख्योकादिरायिनी इहाएयच्मोविप्रवक्षम्णिस्थिनोभ्य २०१ कर्मणैवहिसासिध्मास्थिताजनकाद्य इस्तातीत्मदानिमें कर्तव्यस्तरकोच १५२ श्रीमागवते कर्मनिष्टा ह्जिकिनिन्योनिष्टान्यापरेखायाये उन्ये पक्यनेये के चितानयोगयो २५३ मामणेषापिवेद्जोतार्थनोस्यधिकस्ततः अर्थजात्मशय्चोतातत श्रेयान्सकमेष्ठत् २५४ हिरिक्षणा कर्मणोत्तमतायातिकमेरीनो पतत्यथः अत्राणिष्ठकाक्यानिस अरवामग्रणुष्वतत् २५५

नी रो जो ने के मूसँ समञ्चाक्तवमे नो नीमारकपुरमक इच्छनाकि अपनी साविषे रिविस सबहे राषे हैं जी सबहेरा में वो तारिनिक रिविष पक होने तो नो पे विकरना अवस्प हैं और , जानिएक औरपत्येक गानमे अपनि तुनि योक्तरित्त सह है वो अन्यत्म मक्तम और ओ तानिक्तहार करके बडा अहं तर मनता है जबकात आईकार वार्य है बायसे जो पेरण जगवमें के नहीं कि फल अपनि संबुर्ध जानिका मूल्य करेता और भोजन हुगा ४५० इसवासे बहुतो के परिश्व को जोड़ पर गोक हैने वाचिक्तरिक्त स्वानकरके अवने प्रकर्ण मैतिए होकरही ३०० हर्पमार्ग से जनकारिक सिद्धिक पाये है देना कत्याई नास्ते हेमान्वही तुमने अपना संस्कृत करना २०० १०० भीमानवहारे कत्या कि सकर्म करने प्रांत संवेश से पेट है रू कर्मभेपावत्यवावेशनि वादिक बाद्यक्यवाकु वान है और कर्म सामकर्नेसे बाद्यादिक वर्ष साथि वादि वितवर्षकु पाने हैं इसके कपर मूल क्यनाथ आगेठि खना हु १५९ 🐯 🕫 अव कर्मसेवर्शकानिश्वयकहतेहैं ॥ पहिले सल्लोक एकही जातीके हते उनोकु हम कहतेहते परतृ फिरकर्मके भेटसे चारवर्श भये २५६ जातिकावस्कग भेद निहंदे यह सब जगत् श्राह्महै कायसे नो प्रह्महारा प्रथम उत्पन्न मया कर्महारा जातिमेद भयाहै ५० जिसमनुष्यमे जिसप्रकारके गुए। होवे उनोका नक्षण धर्म जाल्यमेसे तिरवते है योग तप इद्रियदमन दान सत्य शीच दया बहुश्रवण विद्या विज्ञान आस्तिक्य यह सब ब्राह्मणके ठक्षण है ५८
जाम दम तप शीच क्षमा सरतता झानविज्ञान और आस्तिक्य यह ब्राह्मणके स्वामाधिक कर्महै ५९ आचार्य अध्यापक याजक सार्मुन ब्राह्मण कहेजाते
है ६० विषयमोगमे अस्तिक उम्र और कोपनस्वभाव साहसप्रिय स्वधर्मच्युत रजोगुणविशिष्ट ब्राह्मणो क्षत्रियभये ६० श्रूरता तेज धेर्य पद्रता दुन्हमें सैन-

अधकर भेरेव वर्ण देभागे प्रमारामाह श्रीभागवत आदी कतरुगे वर्ण हुए। हंस इति रेतः कतकत्या प्रजाजान त्या तस्मात्कत्वगंविद्वः २५६ भारतेशां तेपदाशि न विशेषे स्ति वर्णानां सर्वे ब्राह्म मेदं जगूत् इह्नणा दूर्वसृष्टं है कर्म भेर्दातांगत ५७ व सष्टरमु- योगस्तपोदमोदानं सत्य शोचं दयाश्रतं देदा है इन मा स्तक्य मेतद् श्राह ए छक्षएं। ५८ भगवदीता अमोदमस्तपः इ चं क्षा त्रिजवमेदच ज्ञानं विज्ञान मा स्तब्दं बहू कर्मस्टभाद् जं ५९ स्द्र्य सूट ३।४३ आचार्य अध्यापकायाचकाः साधवो मुनयश्वश्राह्मणाः ६० भारते मोक्षपर्दे कामभेग प्रयास्त्रोक्षाको धनाः े भेयसाहसाः त्यक्त स्वधमिरकांगास्ते दिजाः क्षत्रतांगताः ६१ भगवद्गता शोखं तेजे वृति देखं युद्धेचाछ पलच्य नं दानमी धरभावक क्षात्रं कर्म रूभावजं ६२ सदम्मिन्डे राजाने राजकर्मना रेएो। रक्षक क्षा के विवाह ६६ भारः तेमोक्ष्में गोभ्यावृत्तंसमास्थाय पता कृष्प जी वनः स्वधर्मा नान्ते हं ते देज वेदर तांगतः ६४

हिभागना दान और प्रभुना यह क्षात्रियके स्वाभाधिक फर्महें ६२ राजा राजकर्म करऐवाले और रक्षक क्षत्रिय कहेजातेहें ६३ जे सर्व दिजा रजोगुए। और तमोगुए। मित्रित प्रभुपालन वैसी कुर्ण जिनोक्त उपजीविका और स्वधर्मका अनुष्ठान कन्नेनहीं वे ब्राह्मए। वैद्यमये ६४ ॥ ६९ ६९

गार पनापुषा नात्रत पश्चापन पसा कुण (जनाका उपजायिका अन्स स्यथमका अनुष्ठान कन्तनहा व ब्राह्मण विदेशमये ६५ ॥ ६९ छ

्तर्गा रात्। गोवु पादना और व्यावरकरता यह वैदयक्ष न्यामाधिक कर्महै ६५ अन्यादिककू उत्पन्नकरनेपाल खदूत विक्रिय पणिकावि वेदय कडे भागडे ७५५ र ओ र्ग के सर्वीद्वादिसाजार मिट्या कममे सुभ्य त्रीविष्किकवास्त सर्व पर्य करते हैं। और नमागुणविधिष्ट पेसे शीवाचार भष्ठ है। य श्राह्मण युद्रमय ६५ सवास्त्र **मिमर्स्स** कर्म बुद्रव्य सामार्थिक कर्म है १८ जारीरिक संयोक्त बाक बुद्रको जाते है ६९ गुणकर्मक विभाग से चार पर्णका धर्म स्यने किया ७ 14 ऐसे अपर किर्पेहु ने प्रमाणासे स्पष्ट मासुम होताश कि अपीशमा अपरे जातिभेव भयाहि मुखन्तिपन प्रथम एसा फाया कि ब्रह्मदेवस चारज भगवद्गीता रुपिगोरक्ष वािफन्य वेभ्यकर्म स्वभावज ५५ सहर्मसूत्रे वित्तोपार्जकाः रुपक शिल्प विशिकादया वेश्या ५५ भारत माक्षधर्म दिसानृत क्रियालुधा सर्व कर्माप जीवितः रुष्णा शीचपरिश्वष्टा स्तिहिजाः श्रद्धतागः ता ६० भगवद्गीता परिचर्यात्मक कर्म शहस्यापिस्वभावज ६८ सदर्म्मसूत्र ६। ४६ संचका शद्रा ६९ भगव-द्रीता नातृत्र्णमयासृष्ट गुणकर्माविभागदा ७० महाभारत द्यातिपर्याए अध्याये १८८ भारदाजवयाच चातु वर्णस्यवर्णेन् यदिवर्णाविभिद्यते सर्वपाखल वर्णाना दृश्यतं वर्णसकर ७१ काम कोधोभय छोभ द्योकित्र ताक्षु-धाश्रमः सर्वपाच प्रभवति कस्माद्वर्णा विभज्यते ७२ जगमानामसस्वयाः स्थावराष्ट्राच जातय तेनाह विधिवर्णी-ना कुनापर्णविनिश्वय ७६ भृगुरुपाच नविश्वापोस्तिवर्णाना सर्वत्रात्ममिद्जगत् ब्रह्मणा पूर्वसृष्टि कर्म भिर्वर्णाना-गत् ७ र नि पैदामि उसके पार्ग भिन्न मिन्न इत तप भरद्दाजन प्रश्निकाफि चार पार्गीका भेद को रगऊपर साहोपती सबजाती पर्णमकर रंगकी निस्त्रता दिखतीहै पेसी कामबासना ऋषित्रपताम शांक भिता क्षुधा अम पह सवाकु समानहै तय जाति केसि पिछाननी प्रापक्षी पृक्षपापाणादिक अनक गातिमें तव वर्ण निश्चय फैसा हाताहै सो कहा ७३ तब भूग कहते हैं जातिभेद मुखसे निहिंहे सब अगत बहाई कायसआ महाराय उपमा मयाहे कर्मक यागस पर्णभेद भयाहे ७ ए ॥ 🕹

**37 1**4

भारा

पूर्व कर्म और विश्व गुण्न ब्राह्मण् शुद्र हातंहै शूद्र ब्राह्मण् होते हैं उस प्रार मनुसंहिता प्रमाण् स्पष्टहें ७५ शांति इत्यादि गुण्ने युक्त दंद और आ-मियभातन तिसने याग किया कोई जीवकी हिंसा करतानहीं यह ब्राह्मणका प्रथम लक्षण है ७६ औरजा दूसरेके द्रव्यकु रस्तेम होवे पा घरमे होवे पर ह दियेविना लेते निह यह ब्राह्मणका दूसरा लक्ष्मणहे ७७ क्रस्यभावक त्यागकरके ममता और परिश्रह रहित होयके मुक्त बंधन होयंक चलताहै यह ब्राह्म-एकातीसगलक्षणहे ७८ जिसने सदामेशून त्यान कियाहे औ ब्राह्मणका नोधा लक्षणहे ७९ सत्य शीच र इंदिय जिनना सी शीच र सर्द नी वो के

मनुसंहिता द्वामेअध्यादेश्वद्रोत्राह्मणतामे ते ब्राह्मण्ये तेश्वद्रतं क्ष त्रयाज्ञात मेरं हे ह ह द्वात्रयोवच ७५ इ छ छरंप ते हेषांपायनत चनंक्षात्या दिभिर्र्शेष्ट्रक स्यक्तदंडो निरा भिषः न हं निर्द्धतानि प्रथमं इह सक्षणं ७६० दासंचेपरद्रव्यंप्रवेदेया देवागृह अदत्तं नैयगृह्ण ते दिर्त यंत्र्हणके एां ७७ त्यत्काकृर स्वभावंदु निम्मिने निः परेग्रहः मु कश्चर तयो नत्यंतृतायंत्रहालकाएं देवमान्यनारी एगं तियग्यानि गत्याधि मथुनहिमदात्यक्त श्चनुर्धे हस्त्रकाएं ७९ स् त्यं रोचंदया रोचं शोच मिं देयनिग्रहः सर्वभृतदयाशोचं तयः शोचंच प्रचमं ४० पंचलका एमं पन्न ईहशायाभव देवः तमहंत्रास्रणंह्यांशेषाश्द्रादु १र ६१ नकुलननजात्याया किया भिन्निस्रणोभ्देत् चंडाला हि वृत्तस्थो ब्राह्मणः स्यु-्धार्षर ६३ एक वर्ष मिद्रे पूर्ण विश्वमासी त्यु ध्रेषर कर्म् अया विद्रोहे ए चान्न एटं प्रति छनं ६३ संवेह को नेजामत्यः स वैम्निपुरी पिए। एके द्वियों द्वेयोर्थाश्चतस्मा छील गुण द्वेतः ६४ ऊपर दयाशीच ४ और स्वधर्मानुष्ठान तपशोच ५ ८० ऐसा पांच ग्रीचलक्ष

ए। सपन्न नोहिन है उसकू शहनए। कहता हुवाकी के शूट जानना ५१ कुल और जाती ओर अयाने ब्राह्मए। होतानहीं चंडाक वी जो उत्तम गुण दुक्त होवेती वा वाह्मए दर् हटधि हिर एकवर्ण से यह विश्व पहिले भगहुवाथा कर्म और किया के विद्रोपतासे बारवर्णका धर्मस्थापितभया ८३ सर्व पनुष्य योनिसे पैदाभये

हैं और सब मूत्रपुरीप करनेवाले हैं और एक हि प्रकारका मबकी इंद्रियाँहें और विषयनी सबके एक हितरें के हैं वास्ते इतिओर गुणसे ब्राम्हण होता है ८४

र ज्या नेमम् 110

गीनपान भार गुणवान शुद्रपाद्मेय नथापिश्राम्हणदाताहः भारत्राम्हणहोक क्रियादीन हापेना शुद्रसंधिकमहानाहे ८५ पचित्रयन्त्री घोरसमुद्रक् जा इदि शुरु तीर ताचना ह पृथिधिर उसकू रान दय ९६ जानिवरवनम आनिमाँ६ पुणानाहै बार्ड कल्याणकारक है जिसका नीना धर्म क वास्ता नीसका नीना परा कार क वास्त राष्ट्रदिन्ता अन्यकाम का नाँह उसक देवना मध्या मानताही < । घरकानियामधारके मुम्श्नाम मरामाश हाच एसी आशा रूपक माचउँही का मनुष्णामा न आनंक नहिंदा हे गता ने ब्राम्हणहें । त हिमाओर ममना भान्याग आरममान भावमें स्थिति वृष्टकर्मका त्याग राग देवकी निवृत्ति यह ब्राम्हा

श्रुद्रापि शी रसपुना गुण्यान्श्राम्हणाभवत् बाम्हणोपिक्याई।न श्रुद्रात्यत्यवद्रोभवेत ६० पचेरियार्णव घोर विदेशद्वोपितीर्णवान तस्मेबान प्रदातेच्य मप्रमेययुधिष्ठर ६६ नजानिईस्यत्र राजन्युगाः कन्याणकारका जीवितयस्य धमार्थ पंगर्य युन्य नीवित ६ > अहारात्र चरत्काति त द्वा शाम्ह एएथिद् परिन्य न्यू ग्रहाणस यम्यितामाक्षकाक्षिण ०० कामचसकाकोतेय बान्हणान्तेयुधिष्ठिर अहिसानिर्ममत्ववासत क्रम्यस्यवर्कान ० रा ोद्रेपनिवृत्तम्य एत ह्राष्ट्रण सक्षण क्षमादया दमो दान सत्य बान स्मृतिर्धाणा १० विद्याविद्यान मास्तिक्य मेत ह्राम्ह्रण रू क्षण यदान कुरुने पाप सर्वभूनपुदारुण कायेन मनसाबाचा अस्मसपद्यतेनदा १९ महाभारने बनपर्वाए। आजारीपारेक्याने शहेतुयद्भवलं स्माद्दिजे तत्र्यनिविद्यतं नवेशद्द्रोभवेन्छद्रा ब्राह्मणाननभाह्मणं 🖘 श्रीभागपतसम्मरके ये यस्य यहास ए। मोक्त पुसा वर्णाभिष्यजक यदन्यनापि हुईयत तत्तेनेवविनिर्दिशत ९६

एकि सक्षराई ८९ क्षमादिक म्यारापदाय मधनकरना य ह विज्ञाम्हणके रक्षणहि ९ जिसावस्वत जीवमाधकविको अपने देहन मनसे वाणीसाधापकरतानही नवज्ञसागनिक प्राप्तहानाहै ५१ पूर्वीक व्हाराश्वदमे

हाय भार शासल्य न होवेतो वो खुद्र खुद्र महिंदे और वासल अ कालानहि है १२ जिसपुरुपका जीवरा खोतक सक्षण कहनमे आयाहे वालक्षण जोकवि अ -यमदिखनेमें आपेतो उसका वो लक्षणानुसार ज निर्देश करना ९३ ॥

94

37 9 L

गरा

णकामनुष्यनीचवर्णमे जाताहै औरपमके आपरणकरणेस नीच जातीका मनुष्य उच्चवर्णम आपताहै ४ मनुष्यामे जिस जातीमे जन्म हा ताहै जो जातीसे उ त्तमगरुनिष्ठ एसी जा नाती उसमे मनुष्य अपनत्त और बीजक सामर्थ्य प्रमाणसे पाताहै ५ और आगे उसति प्रकरणम कहि गे जो क्षत्रिय जाति सो अपने कर्म लोपसे और ब्राह्मणोके समागम न होनेसे भूद्रलकु पाये हे ६ ब्राह्मण अनक्ष्यणसमन्त्रहो परंतु उसकु मिकन होने तो उससे अतिश्व एतत्त गुह्ममारव्यात यथाग्रदाभवेदिज बाह्मणोयाच्युताधर्मात् यथाग्रद्धमापुते १ आपस्तवधर्मसूत्रे अधर्म वर्षया पूर्वीज्ञचन्य तप्नमापद्यत् जातिपरिवृत्तो धर्मवर्षया जवन्यावरः पूर्वपूर्ववर्णमापद्यते जातिपरिवृ तो ४ मनुसहिताया तपोषीजमभाषेस्तु तेगच्छतियुगेयुग उन्फर्पचापकर्पच मनुष्येषिहे जन्मत । शनकेस्तु क्रियां क्षेपादिमा क्षेत्रयजातय् वृपलक्षणतालोके ग्राह्मणादर्शनन् ५ श्रीभागवते विमाहिपर्गुणयुतादर्शिदनाभूपा दारविद्विमुखान्द्रपन्वतिष्ट ७ एव पदापुराणेप्युक्त महोभारते वनपर्वाणि श्रूद्रयानी हिजातस्य सदुणानुपतिष्ठत से स्यन् लभत बहान् क्षेत्रियत्वत्रयेवच आर्जवेवर्तमानस्य ब्राह्मण्यमभिजायत् ८ तस्यापरीनीलफठीटीका गुणकृत

भूद्र जिसप्रकारसे ब्राम्सणहाताहै और ब्राह्मण स्वधर्म श्रष्टनासे जैसाश्चद्रहोताहै यह गुप्तवात मधने तेरेकू कही ६ अधर्मके आपरणस अध्याप

ग

द श्रेष्ठसम्जना ॰ न्यूड्रनातीमे जन्महोवे उसकु पैरयल शाभियत श्राह्मणस सत्कर्मसे आताहै ॰ गुणसे वर्णप्राप्त होताहै मातापितासे वर्णमिलता नहि ९ सृष्टिनियमानुसार माबापसे यह मानवदेह मे जो जन्महोताहै सो यह प्राणि उत्यन्तभया इतनान समजनेकाहै परंतु उसकी जाति कोनसि क हे नोदेहोतादकि जोजातिसस्कार करनेवाले उपदेशगुरुकीनो जाति यथाशास्त्र वेदादिक अध्ययनमे निष्टासे पूर्वीक प्रस्नकशणधर्मनिष्ठतासे जो जाति

एष वर्णविभागो नजाति रुत इति १ कामान्मातापिताचेन यदुत्पाद्यतामिथ सभूति तस्यताविद्या धरोनावभिजा

यते १॰ आचार्यस्वस्ववाजाति विधिवदेदपारगः उत्पादयतिसाविश्या सासत्योसा जरामरा ११

ओई उसकी खरी स्थाइक जाित होवे ११ बोहेत वय होतेसे वाल सफेद होतेसे अथवा द्रव्यके घेभवसे अथवा बडे जुड़ंब परिवारसे कुलवानके बडे-पनेसे महत्व आवतान है तब ऋ धयोने ऐसा सिद्धांत कियाहे कि जो अध्ययन सपना ओ इह मेरा महान् है २१२ ब्राह्मणोकाबडेपना ज्ञानऊपरहे क्ष त्रियोका वडेपना अवस्थाऊपर से है १२ जिस के- त्रियोका वडेपना अवस्थाऊपर से है १२ जिस के- विश्वे वाल सपेद होवे उससे वो वृद्ध होतान है परंत तरुणहों जो ज्ञानसपत्न होवे उसकु देवता वृद्ध कहते है १४ जैसा लक्डेका ह ते सूकेचर्म मेघासभराहुवाचर्मकाहरण असमेहरण परा वैसा विद्याहीन ब्राह्मण यह तीनो नामधारक है १५ एक समयमे सरस्वती नदीके कि नारेद्रपर सत्रनामक य-

नहायनैन्प लेटैर्न हत्तेन नवंधु भेः ऋषयाः श्रा क्रिरेश्में शे हुन नः सन् महन् १२ हेमाएं इन्तो उरेष्ठं क्ष के याएं तु है रीन तः देवयानां धान्यधनतः श्रुद्र एँ मेवजन्मतः ३१६ नतेन धुद्धै भवति देन स्टप् केतंदिरः योदियुव प्यधीयान स्तं देव स्थिधे रं देवः १४ यथाकाष्ट्रमयोहास्तियथाचर् मयोम्गः एवं देमें उनधीय न रुवयस्तेनामधारकः १५ ऐतरेयङ हणा २।१९ अर वयोदीसरस्वत्यं स्वम सतः तेळवद में खुषं सोमादनयन् द स्यः पुत्रः केत्वे उह हणाः कथने मध्ये दी क्षिपेत ते बहे धन्दे दबहर् तन्नेनं पेपासाहंतु सरस्वत्या उदकं मापादि तिस्वाहिर्धन्दो दुलहः पिपास्या वेत्त एतदपे सक्की यम पश्चन् प्रदे-द्राइहरेगादुरेरे बित तैनाप प्रयं धामोप गच्छन म पे उन्दं यसं से रस्तीर मंतं पर्य धावन सम्बद्ध ति है ए रसा-रक मित्याचक्षते यदेनं सर्स्दरे समंतं परिसारतेव अत्रवये हुवने देदव इमदेवा उपमंद्धयामह इते रथे ते तमुपावहरं स्वयं म्ह्यू तद्ये न द्वा क्रिकेट प्रदेव अद्भागीत मेरे हिते ते नापा प्रयं धामे प गच्छ न्द्रप्रेव हुए प प्रदेव के क्रिकेट के क्रिकेट के क्रिकेट धामे प गच्छ न्द्रप्रेव हुए प प्रदेव न क्रिकेट के क्रिकेट के

सा नीच हासीएय इसका ऋषमंडलमे अवेदाभया तब उसके ऊपर सबोने को ध किया और उसके दूर नेकाल देया किरउसनेतप केया और प्राह्मणभया

इसरधातका मुख यह है कि ब्राह्मणका ब्रह्मल तयादिक से हैं गास्ते स्व धर्म अपश्य करना १६ जानाल नामका एक छोकरा था सो गुरु के पास विद्याशि कने कुणया गुरु ने बसकु पूछा मेरीजात कोनहें सो तेरी माकु पूछके भा तब यो माकेपास जायके पूच्छा सो माने कहा। कि मय म्यामिथिना इछाप्र माणसे किरतीहती उससे सुमेरेकु पैदामया पास्ते तेरपापकानाम कहसकति नहि यो उत्तर छोकरेने जैसाका वैसा गुरु कु कह्या तब गुरुन कथा कि है छो-करे तु सत्यिष्य है उसपास्ते तेरी जात में समजा तु प्राह्मणहै इसवास्ते तेरानाम आजसे सत्यकाम जानास ऐसा उराया है तु बाह्मणमे अध्ययन कर-

खादोम्यापपनिषद् सत्यकामोह् जाषाको जाषाका मासरमामत्रय चक्र श्रह्मचर्यभवित विवत्स्यामि कि गोभाह् मर्स्मिति साहिन सुषाच नाहमेन देवतात यद्वोभरचमासि यच्ह्रचरिष्रिचारिणी योवने लामालम साहमेन न्वेद यद्वात्रस्य मिस स्त्यकाम एवजाबालो शवीया इति २ सह हारिहुमत गोनम मेच्योवाच श्रह्मचर्यभगवित व्रत्यामुपयाभगवतिम ति २ ते होषाच कि गोनानुसोम्यासीति सहोषाच नाहमेन देवभायद्वोचो इस्म्मा प्रच्छमानर ४ स्तामाप्रत्य प्र शिव्ह ह चर्रित परिचारिणी योवने लामालम साहमतन्त्वद यद्वोत्रस्त्वमित जायालानुनामाः हमस्मि सत्यकामोवामलम सी ति साउद्दे सत्यकामो जाषालोस्मि भात्र ४ होषाचने तद्वाम्हणाविचे कु मईति इति ४। २१० इति गुणकर्मिभरेष जातिवि मागे प्रमालानिस्त्रामात्रीत्र अय तम् कानिबिद्दां तान्याह् भारते अनुपासनपर्यणि तत्तो श्राह्मणतायातो विश्वामिन् भोमहातपा क्षियक्षोप्यवच्या श्रह्मवंशस्य कारक १० विष्णकप्रताण चनुर्यशे करुपात्रकारपा महावलाक्षा नियासभू व नाभागोविष्णुत्रस्त वेश्यतामगमत् पृष्य अस्तु गुरुगोयधात सुद्रल्यमगमत

ता जा ११० ऐसा गुणकर्मसे जातिभेद जानने फेजो म्-माण वचन सा पुरे दुवे भव उसके अपर चोडेफ दहातची फिरपताहू यो बडे तपस्यी धिशामिन क्षांभियथे पीछ ब्राह्मण दुवे उनसे ब्राह्मणका वहा होता भया १८ वैवस्पत मनुके पुषीनेक्यक रूप जो था उससे यस बान्कारूप हाजी पैदाभय और दिष्टकायुननाआग फम से वैदयभया और युपध्र गुतके गायकायधकरणे के

11

HW

बार

1

र्ण तो शुद्रा दिक बोतो किया उनके अंत करणमे ईर्ण न होवे ८ नामये ऐसाहयतो मैची इसके सरिखा दिख् ) और मत्सर न होवे ८ नाम ब्राम्हणके जग हं-यादिक गुणदेरांक महनन होने उसकू मत्नर कहते हैं वो नहोंवे ) और दहके ऊपर मान अहंकार नहोंने (नाम इसका लामे ब्राह्मण गुणहीन कर्मभ्रष्ट हागरेहे श्रीरमयती सब निर्णय अच्छाजाननाहु में ए ब्राम्हण कोकासे उत्तम हुऐसा देहमे अहंकार नहीवे तो वो शुद्र अपने गुणकर्मक प्रतापस हरिदंशे एतेलं रसप्त्राः जातादंदे २ भागवे ब्राह्मणा क्षत्रियावे श्याः श्रद्धात्र भरतर्थभ एवसन्यानि वचन प्रसाणानि शोभगरता दे पुरणे ए रहूरि संति प्रंथ रेस्तरभय की खंते एवं पूर्वीक्त बन्ते रूतमोही नता द्रा देखे हाम में ते ही नस्तु यदा ईर्पा मत्तर माना देर हैत श्रे द्रुण कमी की कारेणोत्तम तां या ते रिश्वा मिक दिवत् अन्य था ने ति निश्व यह अत पूर्व रिच्छित्त संस्करर स्कृतो स्थ कमें कृदेव इह् ए द्रि ४२० कालांतरमे ब्राह्मण्यताङ्गपाताहै विश्वामित्रा देकसरिखा इस वेना कोईश्रुद्र जानेकी मय विद्यार एक्ति ब्राह्मण होतु सा होनेका नहि कारए। रामायणा देकमे प्रसिद्धकथा है के विश्वामित्र बडे गुणि चामे संपन्धे तब एक समयमे व सष्टकेपास गये वंदन के या तब व सष्टने आ व्राजिषि ऐसा कह्या

सो सन्दे अंतः करणमे ईपी उत्पन्नभरीके अब अपने तपोबल से वसिष्टका जिनके ब्रह्म धेपना पे दाकरना ऐसा संकल्पकरके जगतमे जिननी

शस्त्रास्त्रविद्याथी उसमे व सिएकं साथ युद्धकरने अगे परंतु निर्विकार व शष्टने एक गायत्री श्रह्मदंड से जब शस्त्रारत्र कुजीति के ये फिर विश्वापि

रूने बहोतनपिंदे जिनोने दूसरीश िष निर्माणिवये ऐसे पता पिथे परंतु वस्थिने उनकु ब्रह् भीन हे कहे फिर विश्वामित्र एक बरवत विर

वीयमेश्द्रत्यक् पाया १९ भृगुवशीय अगिराकेपुत्र ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य श्द्रभये हे क्षत्रियजो ऋषभदेव उनके पुत्रभः थे उसमे नऊं महायोगी भये ८१

ब्राह्मणानमभयं १ खडपति क्षत्रियभये १ मुख्य भगवद्गक्त भरतराजाभया ऐसे दूसरे अनेक बचनश्री भागवत आदिश्रंथों में है श्रंथ विस्तारभयसे यहान-

हिलिखता ऐसा इस्प्रथमें इवीक्त जो बचन कहेंहें वो प्रमाणसे उत्तमवर्णजो ब्राह्मणादिक बोहीनकम्से तत्काल हीनत्वदशाकु प्राप्त होताहें और हीनव

अ १५ औ यह कियाहु और हालक यजमान पुराहित के सेहें ( तिष्टन्युत्रो यजमान धावन्यूत्रो पुराहित दित ) ऐसे हैं परत् यजमान को कोने एक बात पुरच्य धानमें रखना चाहिये के जो पुराहित यजमान का हितक वान्ते यह वेद प्रणीत सत्यक में करावे उसकु तनमन धनसे सदा प्रसन्त रखनाचा हैये अध्यान अन्वस्त्रा देक से उसका वरावर प्रतिपालन करना चटताहै वेसा पुराहित ये जमानके कन्याणार्थ सत्यक में करावनेका बोध करना यह हुन ख्य धर्म है हदके वाहर को भकरना उनकु घटता नहि है ( अमंत्रकम्य यागस्य महिपी शतदिक्ष एत तथा प्रचिम मार्थिय में ने स्वर्थ साथनं ऐसा करना नहि ) अथं न यजमान पुरोहित दोनोंने परस्पर हितसाधक होना प्रत्येककार में छेने देनेका सदा निभे वेसा नियम रखना चास्ते यजमानके घोडश सस्कार यथा परना और जिसके स्वस्कार वगेवर हुवे होवे पीई बाह्मण जानना १२० अब प्रत्येक ज्ञातीके जो ब्राह्मण है उस एक ज्ञातीमें शहरा सकार है सो कहते हैं

अध्मत्येक इन्हण इन्ति मध्ये द्वा विध्त माह्य हिंग्ल द्विरं हे देवे मुनि हिंजोराजा वेश्ये श्रुद्रे विद्यालकः कृत दो म्लेंच्छ चांद ले विष्ट दव विध् समृत १३२१ अध्येषं लक्षणा नि भिक्षाव नोऽध्य पळश्य संदुष्टे वेनकेन विह्य देवशा-रत्नार्थतिलाको विष्ट देवः प्रकीर्तितः २२ अक्षष्टफलमूलाकीवनवास रतः सद्य सुक्तते रहहः कर्मसविष्टे पुनि रूक्य ते २३ तपः सत्यम हेंसाच पदकर्मणि देने देने नभवेत्काल लोपश्च सर्वे द्विज इहोक्य ते २४

ेदेवनामकरके त्राह्मण १ मुनित्राह्मण २ हेज त्राह्मण १ सत्रियत्राह्मण ४ वेष्यत्राह्मण ५ सूद्रत्राह्मण ६ मार्जारत्राह्मण ७ हन हम् ह्मा ह्मा ए ने ने ने स्वाम करता हो वे वेद पडता हो वे जो मिले अत्र में संनो प रखता हो वे वेद पडता हो वे जो मिले अत्र में संनो प रखता हो वे वेद शास्त्रण कहें १ त्राह्मण कहें ने स्वाम में तिसर ह वेद शाह्मण कहें ने १ जो त्राह्मण कहें से वेन रवेडा हुवा अन्त भक्षण करते है वान प्रस्थ आत्र ममेतसर ह ता है प्रतिदिन सुक्षत कम करता है उसक मुनित्राह्मण कहें ना १२ जो त्राह्मण करता है सत्य भाषण करता है जी वमात्र के दिसा करता न हि है नित्य अप ने ना पट्कर्म साधन करता है त्रिकाड संध्या देक में काढ लोग करता न हि है उसक हिज ब्राह्मण कहें ना २५ ८९ ६९ ६९ ६९

मर्च जा आसण थोड़ा हाती त्य वगेरेके कपर वाइनकरनेकु बढ़ा कृषास और उड़ाइकरनेकु मो सदा निर्भय रहनाहै राजनीति विद्यामे जो कुराल है उसकु क्षिय आसाण कहना १५ जो ब्राह्मण दस्य करताहै सवाइका यापार करनाहै गाय वैस घोड़ाका पासन करताहै स्वेति और व्यापारिक दुकान स मताहै उसकु विद्या ब्राह्मण कहना ११६ जो ब्राह्मण तेल कारन तिल नीस क्षारद्भ दि घृत मधुर उक्त सता है इति आदि अनकर के स्वनेक औषधि यह सम् व प्रार्थिक स्वगर इसमेसे काई एकवि प्रार्थका विक्रम करताहै उसकु ब्रुह्म ब्राह्मण कहना ११ जो ब्राह्मण वौरीकरनेम मीति रखताहै अनकरणमद्या

अभादि बाह्न दक्ष सम्मिनिर्मय सदा राजिया सुनिर्भाता सराजा ब्राह्मण २५ कुसीदको वार्भिषक पश्नापरियालक काषेवाणि ज्यकर्तान सिवमा वेश्यउच्यत २५ रनेह्लाक्षातिला नीलिक्षार क्षीर चृतमध् निशादि विऋषे कर्ता शुद्र इत्युच्यततदा २७ रत्तपत्रियोः द्याल्थ्यशिकालोक वचकः कन्याधिक्रयकारीन विमो मार्जे र उन्यते २८ भक्ष्या
मक्ष्यसमो पत्त परदार रतोषिन कृत्याकृत्यन जानाति कृत्यो प्राह्मण पृत्र २९ वाषीकृष तहागाना क्षेत्रा एगान्य वि
नाशक रमानसञ्चाभिद्रीनश्च सिवमो स्वन्य उन्यते ३० करो छन्य प्रहर्ताच परद्रस्या पहारक निर्द्य स्वर्य भृत पुषि प्र
भागाल उन्यत ११ श्वभ्रशास्त्र स्वरं महा अतान्याह स्वरं मक्ष्य च्यारत्याया झानच सत्य च दमः श्वतच स्व मात्सर्य
इशिस्तितिक्षा उनस्या यद्दा पदानन भृतिशामभामदा अताहादश ब्राह्मणस्य ३२

निहीं और रम दिखाताहै नाफोड़ रगार ताहै कन्याका धन केनाबे उसकु मार्जार श्राह्मण कहना २८ जो श्राह्मण निद्यानियासन पदाध मक्षणफरताहै पर रचीसे समकरताहै करनानकरना उसकावियार फरता निहाहे और उपकार मानतानहिंहे उसकु पशु क्रवध श्राह्मण कदना २१ जाश्राह्मणयाय हा कुषात नाय घाट नीर्थ सेन उनोष्ट्रानाश फरताहै रनानसञ्चा कर्मसे हीनहैं उसकु म्लेन्ड श्राह्मण कहना २० जो श्राह्मण स्वभावसे पडाकूररहताहै आर केमी दूसरे कुमारनवाका परद्रम्मकुत्वारन नाहे सर्वमाणियोक कपरनिर्द्यरहताहै उसकुत्वाहान श्राह्मणकात २१ अब श्राह्मणके वाराय है अन कहनहें हानाभ्यास १ म प

म १६

ग्रम

3.1

भाषण १ इंद्रियम्माधानस्यना ३ शास्त्राभ्यासकरना ४ दुसरेके उन्कर्षदेखके ह र्वतहोना ५ तज्जास्यना ६ स्रवदु त्यसहनकरना १ इंबिकर न नहीं = यह करनाकराना १ सनदेनालेना १० इंबिस्स ना १० मनजीतना १० एंस बारावत ब्राह्मण के जानना ३३० त्र्यव उन्म हरे हैतका लक्षण कहते है त्र्याना इसे हिन देशा च हेये भूतभ विष्य पदार्थ कूं जानता है वे श्रीरशाप देने कु त्र्या हार्याद देने कु समर्थ हो दे उसे है ते कहने ३३ एसी हत ज्ञानार्य देश कहते है और कोई आचार शब्द से यजमानका यहण करते है ३४ परंतु इस कालमें जो दुसे हैत है उनो का लक्षण कहते है । अस्त मन के किन्न करने कि

अह सहरे हिनलसाणह के हिंगुला देखंडे एरे हिन्द हों व्यो हे कि स्तंभ बेष्ट कर शाण्ड एहक रक्ष सहरे हैं तहता है तहता है साए के चार्ट इस के प्रदेश कार्य कार्य है है स्वया क्या के कि है है स्वया कार्य कार्य है के प्रदेश के

तानोबह देर उनोरे जे पुरे हितन मस्थापन केपाहे सोचारण्दार्थ के प्रथमचार अक्ष्यते के पुरे हित शब्द निर्मण केपाहें सोचारण्दार्थ जे नरे सोकहते हैं पुरे व पदार्थ मध्याह रष्ट्र तथा बाद दुसर अक्षर रोषकहते हैं को धका नामहे उसपदार्थ का प्रथम हर रो के य अव नी साम सह हो से साम सह हो के प्रथम कर ने हैं चे रकानाम है उसपदार्थ मध्यम हर के प्रथम हर है जो जो बचातकर ने का नाम है उसपदार्थ मध्यम हर है को में उपर किरो है चे रकानाम है उसपदार्थ मध्यम हर के प्रथम हर है को में उपर किरो हुने चरे पदार्थ का है उसपदार्थ मध्यम हर ते है तो में उपर किरो हुने चरे पदार्थ का है उसपदार्थ मध्यम हर के प्रथम हर है को में उपर किरो हुने चरे पदार्थ का

गुणाउनोमेंहें परतु सबी वेंमे नहिंहे ६५ अव मूर्य बाह्मणकी निदाक हतेहें बदवेना प्रक्ष ऐसा कहतेहें कि मूर्य प्रवीव उससेता अपु त्रह्मा अच्छोहें उसमें ब्राह्मण जाती पूर्य होवे तो सर्वकाल सबोक निचाहे ६६ वो मूर्य ब्राह्मण पशु सरिखा शहसरिखा सबक में असे म्यहें नैसागृह वेसामूर्य ब्राह्मण जातना ३७ बाब्राह्मण पूजाकरने में और दान देने में योग्य नहिंहे को ई अव चरण व्यवतम स्वेत करने बाह्मण करते आद् ह्मण करतेना परतु वेदमत्र सहस ब्राह्मणकान्यागकरना ३० पिताका आद्द दर्भका चटरख के ब्राह्मण बिनाकरना योग्यहें परंतु मूर्य ब्राह्मण करके आद्

अग्रम्त्वाह्मणानं हिएलाद्वरारे मूर्नप्रादपुत्रन परवेदिवदोवित तथापित्राह्मणोमूर्ग सर्वेषानिद्यग्रित ३६६ परावच्च् द्वचेवनयोग्य सर्वकर्यस प्याराद्वस्त्रयाम्र्वित्राह्मणोनात्रसराय ३० नचपुत्र्योनदानाहे निराय सर्वकर्यस क्षिक्त कर्षकस्तुद्दिज कार्योनविष्गेवेदवर्जिन ६० विनाविषणकर्तन्यश्राद्धित्रोश्रवेनचे नतुमुर्स्वणविष्णश्रा द्वार्येकदाचन १० आहारादधिकंचान्य नदातव्यमपदित दातानरकमामानिग्द्रीतानुविशेषन ४० सुमूर्ग्वरयपित्रम पर्यान्तमुद्देगन पर्यान्तम् वेत्रस्यपूर्वजा ४० धिग्राज्यतस्यवेराज्ञापस्यदेशेत्द्यपदिना पूज्यतेन्नाह्मणामू स्व दान्यानादिकेरिप ४२ ब्राह्मणम्हमा पृथिव्यायानित्रार्योनिनानित्रार्थितस्य प्रजनास्तेनीयनिपदिनिम-स्यद्देशेर्यः भागरेस्वनीयनिपदिनिम-स्यद्देशेर्यः वेत्रमाहान्येनीयनिद्दिभणगदेवदास्तन्यस्वमाश्रिता सर्वागेषाश्रितादेवा पृजितास्तेनदर्वया ४०

कविकानानिह २० सूर्वबाह्मणकु जादानदेना सा आहार परिमित्र जनगानदानदेना दुसरेदान कुच्छदेनानिह दनेसे नर्कपाप्त होवेगा १४० और जोश्राह्मा अन्तमूर्खबाह्मणके उद्रमेगया ता व पित्रगण नर्कमे पडतेहे ४९ वाम्त प्रां राजाकु राज्यकु धिकारहे कि जिसके देशके पूर्व अपदित्रब्रह्म णदानमानादिकास पञ्च होतह ४२ अ र उत्तमबाह्मणाका महिमाकहतहे पृथीिम जितने तीर्घहे रे सवतीर्घ समुद्रमे मिलतेहे समुद्रमेजितने तीर्घहे व सबतीर्घ ब्रह्मणके दक्षिणपादमद्री ४२ और नारावेद उनोक पुरुषमहै आर अगम सबदेवना आश्रयकरके रहतेहे वास्ते ब्राह्मणकी एजा करनेसे सब देव म १५ बाह्य

રર

निका यूजा होता है ३४४ एको में ब्राह्मण जोहें थे विष्णुस्त है वास्ते जिसकु कत्याणकी इच्छा होवे उसने वे ब्राह्मण का अपमान न हें करना देवन हैं करना ४५ अपने प्रति वे ब्राह्मण कहना १ यादेह के प्रति है करना १ यादेह के प्रति है अवबाह्मण नामकर के क्या निव के ब्राह्मण कहना १ यादेह के प्रति है के स्वाधिक करना १ यादि है के प्रति है विकास के प्रति विकास के प्र

अच्यक्तस्त्रणो विष्णोः स्वस्त्रं ह्मणाभुनि गरमान्याने विरोध्या करा विच्छुभामिच्छता अ४५ इन्ह्रणोनामा किंत्रणा ह एकसूच्यां इन्ह्रणा हिस्स्रियां शहर ऋतारे वर्णास्त्रेयं वर्णानां इन्हरणा गुरु रित्यन महिस्स्रियां स्वीति स्वार्थ तक्रंहर कितं राह ह णोन र दें करा १ दंहा १ दंहें हा १ दंहें जा दें १ दंजा दि १ ५ दें पं दे रेस इन किर्म ! ७ दिंहा रिस्टर् इत्य है बिज्र : प्रश्मं जी वे इह ए इनिने त हिर देखा किन्स जी दरें करूप के क्या जिने है व हिणो नमदर्रे १॥ ४६ अन्यू हे हे इस्पर्ने देन हैच इ लपयेत नं यन्धाणां देहर ज्यामण दर्शनान्स हे हेत्रहणेन्भरतेर पुनरेहेड हेणाइन चेन हि दिमात्य रीपदहन युत्राणाड ह्यहत्य दिव्यम्भरः तस्य देहोड हू णास केरत्येत राष्ट्र एनरिणे कि हाण इति के ही ब्राह्म णोष्टेत्वर्णः स्त्रियोरत्त्वर्णः वेष्ये पीतर्णः प्रद्रेक का वर्णी: इनियमेश्रानें द्वाह्मण टर्ण दर्शन भावात् संकरदर्शन तार्मा हर्णोद्वाह्मणी नभावते व ॥४८

बारतपद्माद्दिक्यकार्वाहे और बाह्मण रूचणादिकवर्णहें नास्त्रवर्णस्वाह्मण निह्नाताहै १४८ अवकर्मस जाब्राह्मण फहना तोब्राह्मण शतक्षापुष्ठिकारका सवर्ष वैभवनापक्षीत्रभावना महस्य सम्बद्धि वास्त्र आपुष्य ह्या कर्मस ब्राह्मण निह्न होताहै ५० अवज्ञातिसे जोब्राह्मण रूप तो अन्य आतीय उत्तर प्रति के विद्यास के बेहीन अन्य स्टिश्न क्रिया होता स्टिश्न प्रति क्रिया स्टिश्न क्रिया क्

की बाह्मण जानीमें उसनि निहंहें ने पापिउनमझानके लिये और कर्म भावन्य से अत्यनब्राह्मण्याकु पायहे वास्ते कवल जाती से प्राह्मण होना निहंहें ५ अवपदिन नासे जो बाह्म नहीं ने ने ने सम्माद्रीय प्रद्वादिक पद पदार्घ वात्यप्रमाण के जानने वा उ बाह्मे नहीं वास्ते पिंडन पने साब्धाण निहं होना है ५१ अवधर्म बाह्म वाह्मे वे तो स्विप पे पर्य प्रद्वादिक पद्म पाग वापी कृप नहा गारामादिक धर्म वो हो नकरवाने हैं वास्त धर्म से बाह्म पर्य पर कार्य पर कार्य के पर पर पर कार्य के पर कार्य के पर कार्य के पर कार्य के पर कार्य कार्य के पर कार्य के पर कार्य कार्य के पर कार्य के पर कार्य कार कार्य कार कार्य का

AL

गरा

43

अन्यह शार्रिके इहू ए इन्हिल हिंस किर वेशर शहर दये है कन्य दानगक द नगे दान हिरण्यदान में हर दानपृष्ट द ना देदातार रहर: संति तस्य द्वारिक इहू णोनभर रोग राव के बहु करत्लामलक के राष्ट्र पर से इहू कार प्रीर्थ काररा हेष देर हेत: शमदम दिसंते वम द्र रहिषा संग्रेह देवुष्ट विष्ट: सगवब हू. ए इत्सुच्यते नतु वेष धरः त्य है जनमान यतेषाद्धः बत्दं ए देने त्माः वेद सासी सब देवे बहु के हु ए स्वेद के तए एवं ह विदेव हु ए ने न्योस निम्हरा ५४ छंत्र देवी हासी मूलकं तहर ध्या देदाः शास्त धर्मा जम् पिएडं तस स्मूलं रहितोस्हरण रंडि ने मूलेनेट एवं निशारत ५५ अय रहर सिर्ज़ा रिग्य नेजर दिल हं च्यं तब एं स्वाइदेर तित डांत एकंसह देरे त्या लायांत ऋ लांत् ऋन्देव ढांतकां नद्वयंगं गर्गंचवं ते अद् णांतक्यंत् तरुगंतमे से बुवच्यांत ऋतुर शिरेपः विशवस्यां च्रिष्टेटरंख की मालिक् इ उपदिति जा: ५७ विभागांच गैज दे मं भेदाः सं तिरह ने क्य : ते व निस्तरते दक्ते म हत्यंच उन हर ५० केतेतु इस्ण : प्रेक्ताः के केंद्र हम कह्यां एन देखा रिटेन हुंन के जरस्कान ५९

कारक्षणकरना मूलनाश्यापा तोशाखापत्रफल सबोकी पाही कहां से होते हिस्य से ब्राह्मणने त्रिकाल संध्या अवश्य करना ५५ यह है नश्ले तमें बाह्मण भीरव नियोक नामहेंसी चक्रमें स्पष्ट लखेही चक्रमें छने अंतकुलिस्टीहें ५६।५०।५० को नकोन ब्राह्मणकी स्वयास्य लक्षण सोकही. उत्तरएक सत्यब्द्धाएक तपब्रद्धाएक रद्भियजयब्द्धा एक सर्वभूतद्या बद्धा यह चार परार्थित भन भारति य चात्राह्मण का कसण पूर्ण जाननार भार हो है जी न पुक्ष सप्तन हो बेता बाह्मण के बोधान्यों है और बाह्म बाह्मण स्थान स्

सत्यवद्यन्योवस्य ब्रह्मदेद्रियनिग्रह सर्वभूनद्यावद्मागतद्वास्यणलक्षणम् ६० श्रह्मेपिशीलस्यन्योगणवान् ब्राह्मणोमत ब्राह्मणोपिक्रपाहान श्रद्धाद्यधमोभवत् ६० सर्वनातिषुचांद्वाला सर्वजातिषुवाह्मणान्त्राह्मणेषियचांद्वालोचांद्वालेषपित्रा ह्मण ६२ ब्राह्मणोब्रह्मधर्मण्यधाशिल्पेनशिल्पकः अन्यधानाममात्रस्यादिद्वगोपककीरवत् ६२ अवनाश्चवुगचारा प वभाक्षाचरापत्र ६५ विष्णातिकुलाभावयोगानिस्त्राचमाः तस्याद्वोब्राह्मणा सर्वश्यवनुवचनंमम् ६६ यूयनुब्रह्मजानिस्यास्यभाष्ट्रियास्य परिपालकाः भवेषुर्यदिनभवेचोन्नमोत्तम्यास्य १५ श्रीभाष्ट्रप्य शास्त्राह्मज्ञाविनस्य व्यवस्य स्थान्य स्थान्य भाष्ट्रप्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थानिस्त्र स्थान्य स्थानिस्य स्थानिस्य

समारक्षित्रयान दरनेनो बाह्यणज्ञानिनिनादिनवर्ण पशुपस्यादिक यानिसेंद्री परंतु (तपसाबाह्यणाज्ञानातस्याज्ञानिरकारण) यह शास्त्रशतिसेत पोवल सेवाह्यणकुलम नहिये तथापिप्राह्मणानम होगये ५५ रमवाल हे प्राह्मणहोनुम मेरासयवचन अवणकरो ६५ तुमतो ब्राह्मणज्ञानीमे पेराभयेही औरजो स्वधर्मस्य परिपालन करागे नो उत्तरा मानावर्ण क्ष्मपर्या पर्वाह्म अपनीहुन्छ। प्रमाण अन्यवर्णका व्यापारकरके समार्गनर्थाह करेगा नोपहिले नाथकिरवादिक्यण परवृक्षणे इसमे ५नभाभिक्षोर सुरवमासि होनेकानहि सार्याहम्यानिक स्वाह्म स्वाहम स

भ १५ बाग्र

28

अय भीदित्य सहस्त बाह्मण को उत्पत्ति कहते हैं शिष्य पुछते हैं कि हे गुरु सिद्ध्य सेवका माहात्म्य हमने सुने परंनु विति निह भद्द १ नास्ते वो सेवमे सत्पात्र बाम्हणों की स्था पना किनोने किये और काहासे आये सोकहों २ तब गुरु सुमेधान्तपी कहते हैं कि केवल बाम्हण की भिक्ति कहता हु सो सूनो एजसान देशमें सरस्व ते नदी के किनारे पर पाट पा करके बढ़ा नगर हैं ४ वो पाटण शहेर विक्रम सवत् २०२ के मान्तमें चावड़ा वनराजने वसाया बाद उसके वशमें आठिय सोलकी दिश्वय वशे चाहुं राजा राज्य करता-भगा संवत् १०५३ के सालमें इमका ग्रमण जैनमतके प्रविद्यामणि में कत्या है अब एकदिन सरस्वती के किनारे उपर सुनी का वेष पारण करके ५ पूर्वदेश के राजा के

अथजीदिन्यसङ्ख्याद्वणोत्मीमाह उक्तं प्रणमारसंग्रहे स्थलप्रवाग्ये शिष्य ज्हः त्वा मिन्यन न्वय दिव्य -दिस्य नंदिका रेणी नव्यत्व मिमाप्नात्त्वापिन्य महाहुने १ इत्याय्य न संपन्ना देन व्याः हुम् हे सः क्ष्य प्रमान ने तः कुतः -केन्चने तद् १ श्विमे अवस्य नन्याद समान न ममाय व्या हुम् दनः केत्व दव कि निर्मा वैद्या सम्बूच दत् पुर्ने रे-विष्योचा सिए ग्रेस्त्मानीहरं पत्तना रूपं हे सुन्य स्थल ने निर्देश राम स्तिन वैद्या स्था विद्या स्था विद्या स्था निर्देश स्थल के स्था विद्या स्था विद्या स्था निर्देश स्थल के स्था के स्था निर्देश स्थल के स्था निर्देश स्थल के स्थल के स्थल के स्था निर्देश स्थल के स्थल कि स्थल के स्थल कि स्थल के स्थल कि स्थल कि स्थल कि स्थल के स्थल के स्थल के स्थल के स्थल कि स्थल कि स्थल कि स्थल कि स्थल के स्थल के

ष्वत्र राज् और कोन ऐसे नामके व गगाजलकी काव ए ते के प्राप्त भये क इतने में नाम्ड राजा कि घोड़ो गर्म वित हती सो जलपान करने कु भाद कर पाके काव हुन हुने एके निम्म के कि तुने न्यर्थ घोडिकु ताइण काया (नरे क इसिंद) कु भिमे नोगर्भ है प्रस्कु निम्म अपकी मार्ग कर के बावान एन है राजा है राजाने आध्य के कर के कारण पूछे १० छ छ छ छ छ

तब वी रामबीन कहने हुने कि अबीता सोमनाय स्पेधितिगढ़ दर्शन कु माते हैं ११ शिसरे महिनेक बाहा भायके पीठके बातककु नमहीन विखाइने १२ ऐसा फ वक्त पानाकु मये नार् बाह दिनोमें किर चामुद्रशालके पास भाये राजाने वी चमतार देसके उनोका जाति कुछ वर्णका भेर प्रथके १४ उनोका विवाह करवायक अ पने प्रसार से १५ पीछे कहिक दिन करे बाद बाज नामका नो राजपुष्पा सो युद्ध में यूत्र पाया १६ तद उसकी स्वी मर्भवनीयी सो पुरी से अपना पेट चीर के गर्भक बाह्यर निकानके पूर नशनमें उसका जन्म कुना नासी पूछराजा उसका नाम रावके १७ वधुनर्गक सुमत करके पनिका परम केके देह त्याग किया सती सई आगे पूछरा ततस्त्रीनम्याक्येनराजानसम्यगाहतुः सीराष्ट्रसामनाथारन्योमहेशवापिकामदः ११ हत्वाबादर्यनतस्यवतीयेमासिर्वेन् पर्शः विष्याव्यागत्यनेनदीनहयात्मज् १२ इत्युक्तायग्नीतवयावासत्वास्मागृती १३ कात्रेनास्भीयसाम्यस्योक्रस्यास्राह्मतः आ ो शहसतोराजापृष्टजात्यादिकतयो १४ पत्युकेभूभिपाताभ्याकुतवर्णादिकेस्वके ततस्ताराज्युनीद्वीशात्वातेनविवाहिती १५ अ

् नयुद्धेशस्मिन्किनस्त्रोपृतस्त्यो तस्यभायोगर्भयुक्ताऋत्वापिवप्रनिगत ६ असियुज्योदरभित्वातयागर्भ प्रकाशित प्र लर्रीजन्मपोगत्नान्युल्यमाभिषंस्त १७ दत्वातभातृकोभ्य गृहित्वापतिवस्यक पतिलोकगता्साधि मूलराजोत्ववर्देत १८ अध्ये वराष्ट्राजाचामुंडारेन्योयनिगतं चामुडस्यमुता दुष्टा देषादकारसयुता १९ कलिक्यामहारीद्वा मुसेराजनयोयतः साधव के मितानित्यस्ट्रेकां खुरिता स्प्रिय २० त्यापिते सर्वेराज्यने खंधपापसंयुते अधतस्वत्यकालेनपीवनोहामगर्वित २१ मुखराजपर टक्सनना सरे महर्षिता एनसिनन रेखेकान् वागुवाचा शारिणी २२

ाउँ वाद भारत्थ यागरे वो नामुड राजा मृत्य पाया पाछे नामुड राजादे पुत्र जोये सो वहे तुम्र देशके दिये १९ और राज्यपद्के सीप । उचीग् करते भये और साधुक् वु स्व देने तमे स्वियोक्त भए करने समे २० परनु वो पापि सोकोक्त राज्यनिह विस्त किर्धोहेक दिनोवे ् ना देखके रोक इंग्रिन हुने १९ उत्तरेग आकाश वाणि सङ्ख्य २२

3%

अप्पापः बासन)

हे नोको पूलराजान राज्य गादीके ऊपर जर्द पट्टा भिषेक करो २३ बोबात सुनते सबलाकोने तत्काल पट्टाभिशेक किया २४ तब उसके राज्य में लोक बोहोत सुन रंगे भरे एक देन मूल राजाने वो मातृवर्ग दृष्ट भाइ जो कोकोल दुः खंदतेरे उनोकु मारक २५ निष्कंटक राज्य करने लगा २६ फिर बहोत दिन गये बाद र जा बिर क्त होने चितन करने तमा कि मधने अपने संबर्धाये क माम्हे राज्यर मुक्तमान किया मा मेरि युद्धि केसी होटे में २७ वास्ते पायश्चित्त करंगा ऐसा निश्च स करके -सरखतिके तट अपर आयके अन्यजदी महवर्तमान २८ अपने गुरू जोचे उनील नमस्कारकरके मीन रखके देश २९ तब एक दुखते हैं के हराजा आज मीन उदा सि-शृष्टं तभोजना र्यं दूसर जाभिधे तृप. रूप देशाधिपः रेटें कर्न को ने बेल कित २२ त्यु त कजन सर्वे च्लुः पृह भि के कत् प्रत प्रत्यां जेंद्रेर जासे के नते तद २४ तस्य राज्येस् रवस्य द्रामराज्ये यथाएं र अरे तद सुपोद्ग न्मादृष्ट्राभव न् मेरि २५ से कक ष्टलरे न्मल संज्ञ हानता स्टर र उट नेष्करकक्षलान ते हैर रेट मणता नहिंद एकद ने शिर जेंद्र कित्ये म स्टल्स ने भूकार उटे देश न्हल करं हु भेरेन्यम २७ प्रायिश्वनमताहवेच रिख मित्नि केत गलास एस्तति इस्त लाए रेट हु दिस्न् २० सगला दुरत. सिलानमस्तरे सकर होनेमस्थर सं विशेतदार्य व स्रोग्तः २९ के इवत्सद्रेत सुर विश्क्तदेव हुल् के तस्त म नरें द्व-रमान्द्राथ चरोब हित् ३ ० म्यासंसा रेणास्न मन् १ जर सुरं महत् र जरांतेन रक्षे वे सङ् ते पूर्व मर छत् ३१ नरकाण स्वस् ण च ल्तः स्वेक्षतम् हतक्ष्वहवेद्वष्टरूमम् क्लंवदाष्ट्रमे ३२ । एक्सवन् नाशादालक्षेत्रमे म्बंक्ष्यस्य सर्ग मश्रासेतु प्रभास रेका देक देवें कंमे बंद हो तुमंग मगका युग्द कही तब राजाकहतेहैं २० हे गुरु मगने गताका करत बोहोत भक्तमान करे परंतु राज्यके अंतल नरक वास होता है ऐसा युने हे २१ वास्ते पुक्तिका भागी भरेक कहा २० एह कहते है र गजा! का शि आ दे करक जो न्डे सेच है उना के तीर्थ याचा करने-से मह्प्य मनपापसे हक्त होता है ३३

ण्षातीर्थारमञ्जूषां द्वासित्समिनित् समूनमुन्यतेणण दाजनमर्णातिकात् ३४ राजोवाच स्वामिन्कसीनरारोगयस्मान्या स्मायुषाः तस्यानेपादिनार्यायतीर्थमेकप्रचरमे ३५ राज्ञत्वच श्रीस्थलसर्वतीर्थानापुरायान्तमहर्षिणि स्नानवानजण होम श्रीस्थलेचवयत्वत्र ३६ सर्वेकोरिगुणतत्वयत्वप्राचीसरस्वती पिडपदाजात् स्वणीदिरानात् स्वणीपही द्येते ३७ तर्मात्वचनर व्याप्रश्रीस्थलेचवमारमे वेदशास्प्रपुराण्यानादिनामीन्दिजोनमान् ३० मुनिपुवान्समाह्रयनानागो प्रान्तमुवर्चस यदीन्छितिय स्थित्व स्थापने सिक्षप्रकृतदानमहोत्तम् ३६ राजोवाच किदानतप्रदातव्यक्षणम् स्थापने देशेदशेत्वसर्व्याताविष्णा सित्महोत्तमा ५० केथ्यस्त्रपदेयतद्दस्वदिजोनम गुरुरुवाच आचाग्रसभनेधर्मम् नारासभनेधन ४१ सदाचारणदेवत्वपृषित्व धरापने नजाविनंकुलराजन्तस्वाध्याय भननच ४२ कारणानिहिजत्वस्यवृत्तमविहिकारण स्मष्टाः स्रजन्तपरत्वविधान्तिममगुप्त ये ४२ उदीन्यास्थाप्यामासनेसुगाननुपानुपा उदीन्यास्थप्य सर्वेसद्रास्वाचारविने ४४ अतिस्पृतिपुराणेपुप्रोक्तमस्तिधरापते राज्ञ पतिपह्योरसुरीन्यास्थिपपे ४५ तथापितान्समाह्यकुरुदानमयोदित भाजनानिशिचिपाणिजत्तपानान्यनेकश ४६-

तपाक्कमें वेदाक्षण करनेके बाम्ने बाह्यणोकु उत्पनकरके ४३ उत्तरिशाम स्थापनिक्रमहें स्थासवमनुष्य नहिंदे औ मधिकें देवसमानहै ४४ और हसना राजपितग्रहरू नोकुषग्र विषतुस्यहें ४५ तथापि तुम उनोकु वृज्ञायक नगर्गाम वस्तालकार पानाका ग्रीका राज विधिसे देव ४६ ६४ ६४ नस्र

अध्यायाः

४० सुमेधा कहतेहैं कि ये एस राजाने गुरुके बचन रूनने घरन आयने अपने दूतोन कत्यांना ४० तम जरदीसे उत्तर खड़ेंगे जायके चेवाह करे हुवे श्रेष्ट कर पर्त्रोन समान करके ताव ४९ ऐसा राजाका बचन रुनने वो द्ता गये ५० बाद मूल राजा स्त्री एव सह वर्तमान भारण से से दूए रेमें आयके दाननी शामिकि तेया रे करते भये ५१ ५२ अव वो राज दूत उत्तर खड़में जायके काषियों के आध्यमों का शोध करते करते करिए त्रोंकु देखके ५३ नमस्कार करके कहने तमें के हे महाराज गुजराथ देशमें सिद्ध ए स्वेत्र वाह का राजा सुरुराना है उनोने आपके दर्शन तामके वास्ते इसाये हैं और हमनुष्ठेजे हैं सो आपचलों ५४ ५५ ऐसा दूतका बचन रूनके तीर्यके दर्शन नो लालसारे विमानों में बैं-

घृतक् रिस्टप त्राणिपेटस्ट हे देहस्य च ग्राम अनगर न्हेन दें हेस्स्ट विधान नः ४७ स्मेहाउँ च एवं एस् एवं हु त्र स् ल्याने प्रणास्थतं गृहमागत्य चोल्ह्र त्राणान्स देनवोचा ४० भ मोग्य त्यु के देउद्कर बेल होता है विवास है। नोहाह: देरे हैण: ४९ तन स्टान्स्ट्रिस नेएं जन्म वर्षमः इत्र देष्ट गतः स्वेसम ने हु के नगणः प्वगतेषया पे हिए सूल, जीनपत्तमः कुषाकुष हत्रे दर १६ इदे रस्म सेतः ५१ आम स्कृष्टितं हे उत्तर दन दे ते सम्म कर्र मर भूतिः प्र अथ्रमूपगण स्टेन्सं करण रोतः अएश्यः ह हेपुने श्रत्व रेस्स्रेटकः प्र न्यस्य मे दिन्देशाःशुण्यहः पार्शनाहिनः एक रें देवरेन से ते रेंड स्टलसंत्र जे ५४ वर्ष हे दिना से कम्लर जेन के हुत एक हुद ने लिए र नामें वर सन हिन्द्रेष सम्हेल्ल नेव देव होन :अल त्रिद्वन सर्म निव ने दुस्मारुद्द प्रसे स्थलंगी पहारंग रहनरोः सगदगरेने नरेहते चर्टन सर रेणर च्छतं देरे मेर देने ५७ सम्ब है हेर्टर प्रेनेंस दूररे पने देव है. रत्ने दल न्य कुका च्छतहर पट दिगर श्रेट में दहत्कां के वेट में क्षिके के ह हुन्य महिल सहस्म ते: 49

वके सिद्ध्र श्वेगो आये ५६ मयाग होत्रमें १०५ व्यवन ऋषिने आश्रमसे १०० सरद नदीके रिसे १०० कान्य तुन्ज देशसे २०० कांशिसे १०० कुह सेन्न से ७९ (५९

गणाद्वारो । निष्णार्थ्यमे । जीर कुम्झनसं १६२ एसं एक हजार याना जानाय अपय ६१ उनाक रेखके एक सह बनेमान प्रसाना सन्प्रकारके ६२ सब बाह्य प्रकृत भागउपम् नायक व्याप करक अर्थमध्यमक पूजावरक मुवर्णक आलनाके उपर विकायके ६ । इसा जोडक मूलराला पुन्यते हैं ६४ हे मुनियुचही अपके दर्शनसे मय संसा र मधुक्र से पुन्ह हुवा अव इसतार्थये छन्य तपन्यों करुम्य ६९ वासे आपकु भुवर्ग ताति चीडे वा मध्या ग्रन्य वैताह को आपकि जो इच्छाइले खो सब ६६ तब मुनि पुन कहा

वेंद्रे एकन् इंपनीययानाक निषनमे यहा आये हे इपकु राज्यादिक है क्या पर्योजनींद्र ६० जाना हारानन तुमनाव और स्वधर्मने राज्यका पालन करे हैमा कहके से सनीय से-

समीयुष्ट्रेनीपुनाभ्यगगदातान्छतिहार नैमिपान्यसभीयुर्वेशतन्यसनुवेदिना ६० तथानैपक् स्ट्रानाद्विशद्विधकशतः द्रायसमागतापि मा सहस्माधिकषोडश६१ अधनानाम्मा न्युतागणभ्योत्यतिस्तदायुराधसासभागुन्तः प्रयूपीसमुग्वदिनान्द्रसन्नामकपमासाय प्रणम्युरिधिनत्दिनान् दत्वार्यम्पुपक्वत्तयाहिमासनानिन्द६५ स्वागतनान्द्वतयोत्सात्वाप्रवेश्यद्विनान् अणानिष्टेपुविभयुस नाजीनाच दशनेनिहयुपाकसुन्त्रेहभवसागरात् अनम्बाधीनित्यहिकरिष्यामिमहत्तप ६५ सुवर्णना ता अधिरवाच तान ६४ गजाश्वगराज्यसकत्मेवन भन्द्रः समृदास्यामियदुनिस्तत्पप्तराता ६६ मुनिपुत्राद्धः तिर्थयात्रायसगनवयमनसमागताः-सद्यः प्रक्षात्रकानुक्रिनाराज्येनिषमवेनिक ६७ तस्मानगन्द्धराज्यस्त्रम्वप्रमणप्रातस्य एवमुत्काचनभ्वतप्रभक्तुमनिस्तराः ६८ तीर्थयात्रायसगनवयमनसमागताः-तनसुत्र्भूमिपोभित्रीनिषद्भुस्यवृत्त्ययो चकारपूर्ववद्रान्याचनयश्चित्वानिगादश्क्यतपाहिजद्राणामुपकारोत्तिविष्यति अर्येकदाद्भिन् जा सर्वदिधन्याथमसनियो ७ रसातुगतुकतिथय सियोवचनमञ्चवन् पनराजनुबत्त्यामोवयतत्रसमाहिता ७ १ तस्याद्दन्दिपुर्वे नार्येरिशाकार्यात्रपरनतः एवतेसमयहैत्वागनायावदृहिजीन्तमाः ७२ त्तपश्चया कस्तनगढ- नदननग्रनीस्त्राआद्रणोमे तिरम्हार्पायान्यपूर्व

THE UTY मरमानः

इतनेमें मूलराजाने हुनेकि क्षेत्रमें ऋषिकोइ निह है फक्त सिया है ऐसा हुनके अपनि ख़ाकु कहने लगाकि हे स्की सरस्त के तरके अपर जायने ७२ जीनोने पहिले मेरा प भिग्रहन है किया वोक्तिषयोकि सिया ए केली है ७४ उनोकु लोभायमान करके वस्त्रालकार देव ७५ तब उपकारका पारभ होवेगा तबराणीने अन्छा कत्द्यके वे प्रान्वी सर-स्तरीहै केनारे जायके अलकारका बड़ा पर्वत करके ७७ स्नान करने लगी इतनेमें बोतपस्वियोकिस्थिया आयके राजपरनीका रूप और वेशव देखके पशसा करने लगे ७८ -नव राणि संबोकु पाव पड़के हात जोड़के कहने लगीकि यह वस्त्रालकारका पर्वत विष्यु के प्रत्यर्थ स्थापन कियाहे सी ७९ आप सब लेव ऐसा राणिका बचन रूनके वी ऋ-

त वद्भपत्नाज्ञातंन्कि श्रितः तेष्ठिति द्रिते देन देन प्रति कि प्रति के स्वर्ण स्वर्यं स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण सरस्त्यास्तरेष्ट्रचणव्दतं ७७ सत् स्म नंदद चेनेत एस्ट गतास्तद् धन्देरं नृष्टे भरिष्ट सर स्तर मूटमं ७८ अयर में नमस्त त्र छतं के हिएरोडि हैत मम रंभू वण स्तो मण देशम एड छनं ७९ छा लि तेर देने तस्य न एस्ट हि हे गृत्ह ते पूर्व दन न म जार्थन एसरे भूषणानेच देव दक्त परंगेष्ट्र में हे रे तहे छ दूर से दाशिकं कात हमर सरे देह चेर अम सदा देश रातंक रा सिरे हिसू अपवरे 

िपितियोंने वस्नालंकार मनेप्सित धारण करके ८० पसन्न होयके आशिर्वाद दिसे इतने में दशीची के आयम से बो ऋषि आयके ८० घरमे खर्ख ये हु सालकार देखके युख नेलगे हे श्रिया यह वस्नालकार कहारे मिले ८२ तबाश्चियोंने सब बनांत कत्या सो सुनते ८२ को धाय मान होके मूलराजाकानाशकरने के बास्तो हातोंमें जल खेया ८४ .

त्व मविषया काथाय नाम हायके कहन कर्णाह राजाकू शाप मतद्व मनुष्याज्ञमम आयके नुमरं परभागद्रस्या श्रमका सुन्त भुक्तमान नहि क्या वास्ते राजाके पामसे इन्छि त पहार्थ पृद्धकरा अनिह नो द्वप पाष त्याम करियो गमा स्थियोका क्वन सुन्छ कोथ त्यागकरके राजा प्रति ग्रहकि उच्छा करना लगे च ७ यह वृत्तान पूल राजाने सुनते सु नियोकेपास अव्यक्त नमस्कार करके हान जोड़ के कहत ह चटा हे मृता खरो आपके अनुग्रह से आज जन्म मफल हुवा यह राज्य न रावहनादिक ओ चहिये सौ लव च ९ नवा अहमण कहते है हराजन ने ति हान करने की यहा होने नो मिह्यू रहोचका दान कर जिसमे मुख्य पास होन ९१ की स्वण रत्नादि सहित दूसरे विया यामोका बान कर ऐसा क्वन

तावद्व सियोर्हाशापोदेयोनभूपतं वयदारिद्दाषेणसदासुष्यद्गृहेस्थिता - ४ नसुरवमर्च्याभुक्यद्रस्थाश्रमसभव त समाद्रुष्ट्रतृभुपालात्भूतिकृतिचवान्धिता - ६ नाचेत्याणपरित्याग्करियामोनस्यागं तन्युत्वाबाह्यणाः सर्वगतकोपादभुमित टण गात्में स्थेक्मीणतदापूल संजोपिनागत । नतः प्रणम्यतान् सर्वोन् हताजिक्वान्वह ८८ युष्मदीय प्रसादेन स्पापजन्मनः फल एतदाज्यन्वदेशश्वहस्त्यमादिनयापर ८९ यासिनिद्रोन्ततेमत्तरतद्वपद्वतृद्विजीतमा बाह्मणहत्तु विद्यतेदानसम्मवा ९० श्रीस्थलारच्यमतोदेहियेनसोरच्य प्रजायते सुवर्ण्यणिमुन्ब्यदिपदार्थेरपरेरपि ९० पूरितान्देहिराजेद्रचा-न्यान्मामाश्वरगोपनान् सुमेधाउवाच ेतच्छुलापाधिव सर्वान्मेडपेसमर्रेशयत् १२ सर्वोन्मणम्यसोष्टोगमधुपेको घीमाद दत् अथहैमामनेष्वेषुचोपविष्टेषुस्पति १३ ध्याँत्वामन्ने समाह्यशिवसपूज्यचानवीत् गजीवान् अरोपसुवनाधार्स र्वज्ञाननिकेतन ९४ एतेषुसिनिविष्टेषुंकथकर्मपदीयते रुद्रउवान्व उपहोरें दिंजान् पूर्वे सपूज्यिधिवन्तन १५ दानकुरुषे

स्काथमद्रीस्त्मवपुर्दर वारिधान्यमपोमत्यामिववेशयथार्यित् १६ मुनत मुक्पे सक्वायकोकु मुक्पे क भासनो परिवेशपके साद्य ग नमस्कार करके मधुक्कार्यपान रातमे सक्त १३ मेडक जाबाहन करके उनकि प्रना करके प्रचन काणिक रात्र केसा कसा १५ तथ मदने कत्याकि परिसे बाह्यणोकि पर्पातिष प्रना करके पास रात्र है । मध्याप%. ग्रास उ

र्⊏

तृब राजारू। सह पर्नेमान दे दिकामे आयके हातमे कुश नक सेके व्यक्तिका नदावयुक्त कालिक पोर्णिमाके दिन एक इस बासणोकु सर्व पदार्थ सिंहत सिंहपरका दान किया तदन तर द्शावास्णोक सिहार याम जो कारियाचाडमे है उसकादान किया १०१ फिर सिद्ध्यके अए दिशाम जो अनेक याम है उसमे १०१ एकमो एका तेर याम का टान ४०९ वाह्मणो-कु किया गेंसे यह पाचती बाम्हण सिद्वपूर सपरापिसहस्न भीरिन्य भरे फिर सियोरके आठ दिशाम जो अनग्याम एक्यासि ये सो ४९० ब्राह्मणोकु दान दिये पर पाचका बा-। सण सियोर् मंत्रदा येक ह जाते हैं ५०३ ऐसा वो दजार बासणोकु औरिव भनेक दान देक पसन किये १ वे सहस्र आदिन्य बासण मये ५ और सोना बासण औरई सी राज्य प्रीत ; अथ चप सियासांधीन देष्टे देकां नारे सुमुहुर्ने भुके लावे का निवयं चारित्रोस के २० देव दंद पर ने दुः एक चु धरमू द्विनः अयह दिमहाराजाकुशानादार हरिया १८ सहीपरकर मं सुकंड स्वत रवर एरं महत् एक हेंत्र कि बेडे परोददी सह के य ते हती है १ तति कि हप्रनामपदारि रे वेधे हतं ददे र दनवरे भये दशान्ये दस्णान्यतं १०० र निरुतादरक ए स्र म श्वीरि दास्तर चंद्र से व्र रंखगाकात् इह णेष्टे देदीवृष् १०१ इत्यं एचशतेष्य दाना रेष्टुन्करतः अर्थिहपुर देश त शास्स्णि संयुत्त स्१०२ एन न पित्यान प्रमान के हणे भरे देवातेन इत्रेणं यह ते प्रमास से भेषी सुषे त्राः १०० दाना निधि वेथ ने हदते हु के एसं हु क गजाप्दा देदाने व्यास्त्र विनार्शहरा १०४ ततेजाता देवेंद्र से ए इस्नारव्या महर्षे उद्यास्त्र च न्येयेषुरेनेपुंदारस्युद्ध यः १०५ एक भूता स्थिता सर्वेत्स्माले हो सकता सहता यो चादिन व मेद इंद च को स्पष्ट में सिता १०६ गो छशारवा उ वहें स्वते हो दे हे-र्व गणाधियो विहिभेरवर में तनवजना तिराइव १०७ इत्थं सम् अंक रेतं देवे द्वा अंध्य ते से विम्सहस्य अस्य सास्ताति वेष्णयन्तं-नार्धेद स दे देछ प दे प्रत्ममाद त १०० यह निहक्ता ऐसि इन्छासे अपनि टारी वाधके वर मो रोजर और च्यावाहाज अय गावादिनवभेट पीछे नक्तमे म्यट निमें हे मोदेख नेना ६ अपना गोव परक अभिना च्या अदेरदा ३ घद १ कुळदेति ए गणपति धरितव ० भेरत = भर्म ६ यद नव पदार्थ जा जानताइ उसकु बासण कहेना ८ यद महस्र जो दिच्य बाह्मणकाचरित्रजी अवस्थित । भेरते कुळदे

1.	भरक	गोन	प्रवर स स्ना	नेद	े भारती	कुर्ददीवं 🤻	ँ गुंजाप <b>तो</b>	यस-चराप	<b>भे</b> रम	। धम	भागापै उ
1 *	दवे	भागीब	€.	<del>≉त्य</del> चेद	भाषवापनी	आसापुरी	<b>रफतुर</b>	<b>बी</b> रेपर	भाउद	स्त्रन	
વ	म <b>क्</b> मपद	पुत्रायस्य दित	यि विवेद्यं अत	इयो पर्यी गोर	गारक एउमेरानि		_	_	<b>#</b> 0		
3	<b>पडमा</b>	सेगिक	3	स्गनर्	आयनायना	ायपुरा	मकोद्र	स्पिन्दर	कानभूरर	तिस्प	
¥	नुसाँड	यसम	ų	साम ४२	<b>सेवमा</b>	महागीरी	<b>निप्पविनायक</b>	रेनेपर	स्तरभेरन	र्च	
•	सर्वे	गीनम	à	<b>भग्</b> ग्र	आपनायनी	रिगवान	म <b>रोर</b> र	सोगेषर	<b>अ</b> सित्रा	सोम	
, į	<u>संस्त्</u>	<del>र च</del> ात	ڔ۬	वनुर्गेद्	माध्यार्रेनी	भद्रसती	विष्यविनायक	गरेभर	<del>কার</del>	প্ৰ	
ું	दर्भे	पाग्रधर	3	यन् रनेद	मा <b>ध्वरि</b> नी	उमा	बहुस्प	पारसर	कास	सोम	
~	<b>म्पाध्या</b> य	<del>क</del> ्रध्यप	3	पनुस्तर्	<b>वाभ्यत्</b> री	उमा	महादर	<b>₹</b> ₹	न्दूर	ਭਾਸ਼	
•	दर्वे	भारहाम	٦	यमुरुगद	माध्यान् नी	∹गमुडा	म सार्	<b>बारपर</b>	अमिताग	रोम	
1	र्न	गाहिस	•	पनुसर	माध्यदिनी	म हाउस्मा	मन्दर्भ	सोमेचर	<del>न र</del> ुक	सर्भ	
11	पडवा	शीनक	3	पतुर्भर्	माप्यित्नी	महोगीरी	विपारिनायद	सोपयर	मन्	द्या <u>प्रि</u>	
14	भनादिः	वंशिष	•	सामनेद्	दीयमी	नुभा	<del>र म</del> तुः ।	सामग्रह	र्भाषम	भव 💆	
13	सकर	मीनस	3	पनुरुषेद	माध्यदिनी	<b>धार्</b> षी <b>य</b>	यहीदर	पीर्षा	यहाकान	(नेपर्) 🔁	
18	गानि	गर्गे	*	यनुरुषेद्	माध्यरिनी	भग	रफ्तु इ	<u>नागेष्यम्</u>	₹इक	म् मिनियः मिनियः	
94	द्वे	कुच्छस	3	यमुरनेद्	मध्यदिनी	उसा	मझेद्र मझेद्र	स्प्रेमे भर	<b>ब्रुक</b>	ग्यम 🔭	
15	र्ग	उद्यासीक	3	<del>पनु</del> र्नेद	माध्यारिनी	उम	मद्भेदर	<b>क्रोम</b> श्वर	बदुक	सोम	
13	र्न	≰क्द्राची	3	पजुर <b>रद्</b>	माध्यादना	শ্রদা	<b>बहरू</b> प	नारचर	भसिताग	स्म	
	(वं	र्नेहिन्य	•	यज्ञरनेद	माध्यदिनी		<b>बहुर्</b> ष तसीदर	<b>कारेज्यर</b>	भानद	द्न	
	उपा	मान्य	જ્	पजुर्वेद	माध्यदिनी	मदानाची पद्माग्रेरी	<b>मसन्बद्</b> न	<b>वारेश्वर</b>	<b>बद्द</b> े	देभ	70
	पाण्याच	उपग्न	3	<b>क्लाद</b> े	अभ्यत्वयनि षच्यारिन	वर्रसमग	<i>विप्नविनायक</i>	सोमेन्बर	<b>भानर्</b>	भर	
₹1 ₹	(ब	শ্বরি	3	यज्ञ वेद	षच्यादिन	उमेपा	ए≢दन	समिश्वर	**	र्न	

J .

1 7	1		,مــ	•			<u> </u>	••			<u> </u>					
	Ţ	य मार्	±4.4 ±±	Ŧ	हू इ यामनाम	भरक	'संद्र्पुराद्- गाव	निर् <b>१७१</b> पवरमस्या	ग्रामा णट् बंद	तानितेषाँ शासा	<b>हाएक</b> कुन देश	गणपती	यस गागिन	भैरक	शर्म	
	イングナ	درائ	HAY!	न्। म	क्र भागगाम ————	- મ લ્લા 	111 <b>4</b>	4417771	14.	411.41	3112 4, 41	1•14()	पदा सारान	71 Y Y	•17	
_	9	3	3	¥	4	દ્ય	હ	۲	7	90	99	35	4.3	9 %	943	
	111	<u>ज</u> -	(वान इ	3	पुष्प दन्द न पामागे ३	२ परमा स		1	यजुरवेद	माध्यदिनी	शकटाबिका	मदोदर	वीरेश्वर	काल	द्न	
•	YIII	<b>प</b> की	- रहं	વ	कुरगवडा ने भाग	३ राज उ १ याम जािप बाजा द्रियात २ जारी	<sup>द</sup> भौगिक	3,	भगनेद	भा³चडापनी	विप्नेश्वरी	महोदग	सोमेश्वर	असितांग	विष्यः सरम्बतान्यः	
•	8	ने आ	ोडक	3	<b>बनार्</b> य्वेउप	। ध्या २०पदेजानि	उपमन्य	3	ऋगनेद	आयसायनी	वहस्मणी	विष्नविनासक	मांपेश्वर	आनद	भव	
3	11	₹ ·	`	4	योकद्रवाना	गवल	गोनम	3,	पनुर्वेद	माध्यदिनी	नेवश्वा	वहुधा	11	असिताग	इत	
٧	٠ '	ने चड		4	नद्रभागु	न्याम	गीनम	3	17	11	गीरी	बहुम्द्प	दुग्पेश्वर	महाकास	विष	,
ક	•	न पणि	स्र-	قي '	मणियारी	मेंद्रेता-,	<b>गीनम</b>	3	**	* *	क्षेमपदा	एकद्त	दुग्पेश्वर	भोष	अग्नि	
111			<b>ार</b> ः	•	वडवाडु	दवे ।	भागदान	3	17	*1	नामुंहा	महोदर	वी रेन्दर	असिनाग	काल सोम'	
ય	÷	, ,	4	-	कृषां माग्य	१पंत्रया भ्या ,	,	`	**	•	उमा	विनायक विनायक	शकर	आसता ग् असिनांग	साम अग्नि	
٦		, ,,			३ भागे 🥫	स ३ जोगी	भारदान	3	**	**		1 11 7 7	41.7	आ क्षा या गाँची	<u> ज्या</u> ग्न	
111	4		*	-	मणुद्र्	गवस	शाहिल	3	44	~~	स्पभगदा	एकदंत	11	कारमी	सोमशर्मा	
*	न	माउर	g 42	-	माइन्ड	रायस	<del>ज</del> न्छम	ર	~ ~	• •	चाम्डा	विष्यराज	22		1	
ક	न	•	99		रोदा	नवाडी	गोनम		शाम-	भैथमी	गारा	निध्नरूप	31	44	<del>रून</del>	
70	न	3	92	á	<u>ोरमगाम</u>	दवे	गर			माध्यदिनी	उमा	_		भीपण	मीव	
u,	7	•	13	₹	<b>ब्यांड</b>	आचार्य	गीनम	<u>ع</u>	.a.	17		महोदर	11	बर्क	इद्	
ŧ,	पथक:	तुं ही (कण	स्मग्	म		** *	**	•	•	• •	अनप्रणी	विष्ववीनाय	"	भीपण	सोम	
		-														

19	-				Va.,4						
1	अटक	गांच	मनर मरम्पा	<b>बद</b>	शासी	उचेदाव "	भुवासता	यक्ष गराव	भे र <b>व</b>	∖ খণ	मास्य उ
•	दवे	भामैव	ધ્	<b>क्त्</b> ग्वेद	आचलापनी	आशापुरी	<b>रकतुर</b>	<b>श</b> रित्पर	<b>अ</b> सनद	। साम	
٦	मसमपद	पुनायर्ष दिनीय	विवेदन मत	र्यो पर्यो गोन	गदिक ग्यमेगानि						
3	<b>पड</b> मा	<b>गे</b> पिक	*	क्रम्बद	अस्पनापनी	निषेपर्श	मक्षेष्र	<b>सामैन्य</b> र	कानभैर्व	नि <b>रा</b>	
¥	<b>चना</b> डि	यसम	ų	साम पेद	<b>भीषमी</b>	<b>महागी</b> री	<b>निप्पतिनापक</b>	रवेषर	सक्रभारव	द्न	
•	स्रे	गानम	3	<b>मरग्</b> षर्	आपसायनी	क्रियकान	म <b>होद</b> र	सौमेश्वर	असितम्म	सोम	
Ę	धकर	बन्धस	e,	यनुरदेद	माध्यस्भि	भर्मकी	निप्ननिगयक	<b>शरम्पर</b>	स्मच	भग	
ું	दर्ने	पागगर	*	यत्त्रवेद	मा <b>प्त</b> िनी	उँमा	बहु रूप	<b>रारम्पर</b>	∙त्रस	सोम	
<	उपाध्याय	<del>क</del> रपप	3	पमुस्तर्	<b>पाभ्यार्</b> मी	उषा	महादर	<b>इद</b> र	बर्क	भोष	
•	<b>र</b> ने	भारहान	3	<b>मगुर्नर</b> ्	माध्यन्ति	चामुद्य	महादर	<b>धारेषर</b>	भिनाग	<b>रतेम</b>	
1	रने	<b>रम</b> िस	3	यनुरतेर	माध्वदिनी	महाउश्मी	गनकर्पी	सोपेश्वर्	434	भर क्ष	
11	परवा	शीनक	•	पसुरदेर्	माम्यार्नी	महागीरी	विष्यविनागुद्	सोपयर	भर	ਚਰ ਮਿੰ	
11	नवादि	<b>ब</b> शिष्ठ	3	स्मयनेद	<b>र्वेप</b> पी	<b>3</b> चा	<b>ग</b> कतुर	स्पम्यर	र्भाषम	भर 🏗	
13	<i>रा</i> कर्	<b>रो</b> नस	à	पनुरवेद	माध्यदिनी	<b>भार्</b> पीठ	महोदर	वीर्य्य	महाकान	भिणा 🛱	
18	ग्रानि	मर्वे	<b>3</b>	यन् र रेर्	माप्यरिनी	भग	नम्बद	नागेश्वर	बहुक	धोन 🖺	
94	<b>स</b> च	<del>कु</del> च्छस	3	यनुग्रेद	पाध्यदिनी	उमा	मस्दर	सोमे भर	ब्रुक	रूपम	
15	<b>₹</b> \$	उद्यस्थिक	3	पनुस्र	माध्यस्ति	<u>उम</u> ्ह	म <b>रो</b> ट्र	स्रोम <b>स्</b> वर्	ग् <i>उ</i> । गटुक	फोप -	
19	र्व	≰स्युर्मा	<b>3</b>	पजुरसद	माप्य दिनो	গুলা		गारेन्द्रर -	भसिताम्		
7	दरे	<b>भें</b> डिन्य	1	यतस्वेद	माध्यदिनी	महांगाडी:	बहुक्प संख्येदर	गरे पर गरे यह	भानद	<del>रन</del>	
78	<b>पुरुषा</b>	मदस्य	3	<b>फारें</b> र	माध्यदिनी	मह्मानरी	मस-नबद्दन	<b>गारेचर</b>	•	दन	35
	<b>प्राम्या</b> च	उपमन्य	ર્	ऋगरेद	आश्वसमि	वहुस्मग् <u>य</u>	विष्यविवासक -	साम्यर	<b>बहुद्ध</b> क्सन <b>ब्</b>	दन भर	7)
3 9	रक	শ্বনি	3	सन्रवेद	बर्धा(नि	<b>उपया</b>	<b>एकद</b> न	स्प्रमे <del>ख</del> र	\$ <del>\$</del>	₹ <del>1</del>	
			•	. 4 ( )		- विश्वविषयती -	***		* *	٦,٠	
					•	· -					

المستعدد ومستحد سيد

.'	41-51- 153 Hear	11 11 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	40.00	्ट्र इ.स. यामनाम	भटक 	रिद्धएराद गात्र	नेतरं १७१ प्रवरसंख्या	ग्रामा पार वद	दत्ता ने ते मां शाख	<b>के छठं</b> कुन देवा	गणपती	यक्त गागिन	क्षेत्रक	शर्म
	1 2	, 3 <sub>1</sub>	¥	4	દ્ય	ن	¢	7	9 0	99	१२	9.3	98	943
₹ <u>†</u>	4	पशुवास इ 	3	पुष्पद्तः श्र णभागे ३	१ आचार्य २ पडमा <del>१</del> ३ स <b>न</b> ल	गोतम	3	यजुरवेद	माध्यदिनी	शकटाबिका	महोदर '	वीरेश्वर	काल	द्त
911	pr 1	कारडं	વ	कुररावृहावे भाग	१व्यास ीजाप बाला प्रधान २ जो भी		<b>વ</b>	अरगरेद	भाश्वन्त्रायनी	विष्नेश्वरी	महोदग	सोयं?बर्	असितींग	विष्य सर्म्यगान्यू
૪	मे	कापोडक	3,	कनारु पूर्वे उप	। ध्या २२पदेजानि	उपमन्य	3	ऋगनेद	आयसायनी	बहुस्मणी	विष्नविनासक	सामेश्वर	आनद	भव
રા	<u>द</u>	55	ß	योक उवाना		गीतम	3	घनुर्वेद	माध्य दिनी	नेब स्वरा	बहुधा	33	असिताग	दत्त
۲	नै	चद्रभाण	4	नद्भागु	न्यास	गीनम	3	37	17	गोरी	बहुरूप	दुग्धेश्वर	महाकास	विष्
, s	न	मणिहार्य	Ę	मणियारी	मेद्देता-,	गीनम	3	**	* *	क्षेमप्रदा	एकदन	दुग्पेश्वर	कोध	अग्नि
III.	द्	बडबाड '	•	<b>ब</b> डवाडु	दर्वे,	भागदान	3	*7	**	चामुहा	महोदर	गीरं अस	भ. असिनाग	सोम'
સ	ने	, ,	~	क्यां मागाः	१पेरया भ्या	,		**	**	उमा	निनायक	शकर	असिनांग असिनांग	<del>अ</del> ग्नि
a	~	75	•	३ भागे र	ग ३ जोगी	भारहाज	3	*1	"			4. (	20/0/11/1	<b>3</b> , 1
111	द	, 6		मणुद्र	रावस	गांडिस	3	33	33	स्थभगदा	एकदत	11	कारमी	सोमशर्मा
5		माउनी १०	•	माहत	राचल	<del>कु</del> न्छस	ર	~ ~	33	•	विष्यराज	22		
8	न	0 99	ì	शदा :	<b>नग</b> डी	गीतम		शाम-	भीथमी	चाम्डा गीरी	विध्यक्तप	33	44.	र्न
90	ने	° १२	. 4	<b>ीरमगाम</b>	दवे	गर्			माध्यदिनी		_		भीषग	मीत्र
4	}	• 93		•.	_	गीनम	غ ب	131	11041411	उपा	महोदर	* * *	बहुक	इझ
+ ग्रह	कर्त्त है।	(कणस्यग्रे			,	*	`	, ,	. ,	असप्रणी	विष्ववीनाय	))	भीषण	सोम

114	। प	17	र केमतीशा २ सामे	मु १ एसस्य २ प्रक्रित ५ ह		3	पजुरीर 	<b>न्यप्यदिनी</b>	स्मयप	एकदत	शकर	<b>भ</b> त	स्मेम् सरस्यनीमरी	भण्डमध् महाग्रेग
						_				<u> </u>	.5			
M	3	3,	र अवगु	ा नेस्र प्र		3		`	<b>भनपूष्</b>	विभक्त	स्रोमंचर	कींपण"	र <b>न</b>	
Ę	7	16	. भपाषु २	<b>१८वेशपर्रेट</b>	- मेहनप	•	•	•	निषर्ग	<b>पक्तुंड</b>	सपेप्तर	भानत	भ <b>र्<sub>मण्य</sub>म्</b>	
¥	ने	10		न्यास	<b>ग्रे</b> शिन्य	3	*7		नमुक	रिपंद्र	म्सुनग	ग्रस	दच े ने	
11	ξ	<b>)</b> c	उंझा २	<b>२सम्म</b> श्मेदे	भाराम	•	11	17	उमा	नं बादर	हरप्रभान	٦	रिष्मु	1
ď	ने	ንተ	अनाम्पु	जन	भाग्यन	7	**	**	<del>এনপূৰ্</del>	परोद्धर	٦	मग्रसन	भव	- (
t	Ŧ	7	भापक	दरे	उपनाह	•	1		<b>पट्ट</b> भा	<b>चक्</b> रदेत	٦	असीनाय	रन	1
4	স	39	पपनदूर	१ परिन २ र	१पारार				<b>जामुटा</b>	महोदर		भीवग	न्देम	r
			<b>३ इस</b> र्व	यत १ नहरी	थश्चमद्भाव	3	•	•		•	77		*	
4	नै	**	नमपुरा	सक्र	<b>सैशिक</b>	3	33		नसम्बर्ध	नि <b>मह</b> र	53	<b>कास</b>	भर	
4	শ্	2.3	दारियाध्य	र्षे	भार्षेत्	£	11	11	सेमप्रस्	<del>र</del> पनुद	17	<sup>६</sup> तिसम	ग्पम	
•	नै	देहराष्ट्रभ	रेरामु ५	१ नोधि म	भागीन भार				दुर्गी	, रवोदर		भनद्	विष्पु	
301	Ŧ	<b>' &gt;</b>		-द्वेरा	राज	# 3.5-			वशेश्वर	• - `			4	
Jan	Ţ	**	पन्दकराङ्	भगाउन	मेशिम,	}			क्षमस्य	मगोदर		असि ।	₹च	
			२ भाने	९ दवे	पागगर	3	5		•				1	
				६ नायि	अर्थ	٦			समङ्गी	महोदर		असिताम	दन ।	•
١٢٢	रा	عرفر	खेटपूर	वरवादी	<b>4344</b>	1	सामवेद	<b>र्के १पी</b>	उमा	भिष्मभिक्कप	**	# T***		3,4
	ने	सार्दिन ६७		भ्यान भ्येषी	र्थेगाँड । चया	212	•			•		महाकात	साम नारता साम	
	•			· Returned .	सम्बद्ध	٠, ٠	क्ष बरु	अस्य माध्य	समपरा	मक्रीपर	λ,	A. A.a.	साम	

91 18	बा अ प	· र्नन्वणी वडासिनी -चदसर पूर्णासन	30 36	् ग्वणासु वडासण चहासण वहासण वनासण १	ग्रवस उपाध्याय	भर्ग उदासक कस्यप करास	ر عر ور عر	साम यनु यनुनेद	कीयग्री। माध्य माध्यदि ११	भेरी अनपूर्ण	वकत्र बहुन्द्प महोदर	3) 1)	कानंद असिनाग भीषण	विष्णु अगुमूची सोम सोममस्तानहः इद	
91 3 311	ा दा- द	`	<b>3</b> 3	वर्सीलु २ जगाणा	२ व्यास १ पडित २ जोशि रावल	भारद्दाज की धिक भरद्दाज वत्सस	عر عر ۱ عر	11 11	)\ )\ ))	गोश चासुपा महागोश महाजनकश	विष्यविनाश वक्तरु एकदेन एकदेन	17 17 17	कास वरुक असीताग	आपर्रकानरी निष्ण - स्तोम अयस्यतामरी	
ب اا مو	प वा भे	वाडारूप नावडिया		गुजर ना इ ना डीस् २ भागे बजाणा झिङ्चाडा	दवे १ पहित २ त्रवाडी न्यास व्यास	कुत्सस वशिष भारहाज भारहाज भारहाज	م مع مع	गरुर्वेद सामयेद यनुर यनुर	माध्यदिनी केश्थिमी माध्यदिनी माध्यदिनी	धारदेनी उमा महागीरी	बहुम्द्प विश्वस्त्प बहुम्द्रप	्` भूषमध्यजस्द	फीपण पड्सकाल भीपण	विष्णुआमंति मोप इस	
•	A A	•	<b>3</b> €	खोलवारु २ भागे	१न्यास २ उपाध्याय	कश्यप	٦	यजुर्	माध्यदिनी	उमा	निष्म बनायक	11	जानद	दत	
4	ने	मात्मार	<b>३</b> ९	मानगोर भागे २	२ महेता १ पचाती २ महेता	गर्ग गीतम	قر عر	अधर्व यजुर यजुर	षिषातायनी माध्यदिनी माध्यदिनी	गीश बहुधा	विश्वक्ष विष्यमिनाय	17	कान , अमिनाग	तिणा इंद्र	١
<b>3</b> ,	म		89	मपराख २ भागे सेहाटी	१ जीशि २ मेहेना महेना	अत्रीम गर्ग वशिष्ट	عر مر		3	महागी री	न्डेबॉदर	3%	्वडुफ '	<b>न</b> स्ची	i

ነ													1	4
٩	<b>प</b>	कहाण ४२	•	१ भानार्य २ परमा	ধীমিক দায়ম্য	3	पर्गुर्पर्	माध्यविनी	इस्वाचि	संबोदर	11	<i>₹</i> *	भप	अध्यव १६ नासची ऱ
			३ भाग	२ <del>१ वर्</del> गार्ड	ग्रहस	٩								
à	7	~ TL	स्मन्ती	राषस	भारद्व	•			उमा विष्यमाता	प् <b>कर्</b> त महोदर	•	अत्नर् <del>द</del> ्यस	मीय वर	
`	प स्र	भिषस् ११	पीपरापा भारोडु	पबीन श्वास	म्बेतम सम्पर	٦ م	~	*	सि <b>दे</b> ष्ण	नहा <u>य</u> नहस्य	₹.	দীৰ্গ	र्प स्पे <u>य</u>	
ú	म ने	कातग्रह	भेर्नरा ९	<b>१ रने श्या</b> म		•	*	•	इनेंचरी	विश्वद्रप	71	भसिताग		
•	र्न	मस्य ५०	स्रसः । १ सरे	१ प्रतिन २ स <del>ुर</del> स	मीतम भार <b>ा</b> ज	<b>3</b>	₹.	મ	<del>कुभय</del> शे	बद्रस्य	*	सीवज	भारतेका दुना	
11	9	ું ૧૯	रेपस	स्रे	पासगुर	•			इमा	नियपद	स्टब्स	नदुक	दूद परस्ती	
An	争	नाम्बर्दि ४५	त्रों भियु	- <del>यार</del> <del></del> -	<del>1-01</del>	8	**		उमा बीरी	प <b>कद्</b> क	<b>~</b>	कार भीषक	सम्म	
9	ने ग	नाममा ५१	निसप <u>त्र</u> नोपपुर	पश्चिम १५क्षिम अने	इश्वप कस्तप	۶ 3	*	11	मारा वर्षोवहीत्वरी	बहुरूप मर्भेट्र	~	असि <b>वा</b> म	र्व भिष्ण	
<b>(</b> 1)	<b>Ÿ</b>	44	पंगाद्र	उपाज्या	कर्पप	3	स्रम	क्रीयमा	नेमानिस	सनुसं	₩.	स्रावद	द्च	
٣	Ŧ	43	सासग्री९ भागे	९ घरस ९ पदिन	पागगर	•	पशुर	माध्यरिनी	सर्व सिन्दिरा	विष्यस्मियक	~	असिवान	दन	
۳,	प	प्रकट ५४	भूसभी	राकर	मीनम	3	पशुर	ग्रध	和分	मन्मुस	*	भीषण	भग <sub>रस्यक्र</sub>	
<b>3</b> .	र्	14	<u> भैरता</u>	-	तिपना <b>र</b>	3	म्राम	कीषमा 	सर्वसिद	मसोदर			द्च	31
10	₹	مرقر	मोग्र	पडिन	स्चाम	قر	पनुर	पाप्परिना	सर्व संपतिकार	गगाध्यस्	न्देश्वर	स्रत	स्रोम	

<b>\</b>	<b>?</b> 3	ा दत्योदर <b>५</b> ७	» दहियादेर ३ भागे	१ व्यास २ मेहेना २ जोशी	भारदाज	વ	<b>यज्</b> चेद	माध्योदिनी	सर्व सिद्धिकरी	महोदर	वटेप्पर	यक्	भव '
૪	F	माडि ५८	11-1	जोशी	सांहत्य	3		11	मीरी-	गजकर्पा	असिताग	असिताग	भव
Å	<u>4</u>	. 46	मलाणा ३		गोतम	3્	11	**	<b>हिंगला</b> ज	विनायक	* *	भीषण	পাৰ
६॥	अ	् ६०	मोटी	महेता	पाराश्रर	3	37	ጎን ,	बहुधा	धूमकेनु	*1	असिनांग	
11	इ	मडाणा ६१	मुहाणु २	१ ओशी २ द्वे	भारद्वाज	3	17	**	गेरिश	गंगाध्यक्ष	**	कार	दत्त् गाम्समता दत्ते सरस्वती
211	भ	६२	रुपाल्प ३	१ व्यास	`			1					मरस्तरी
			भागे	२ आचार्य	33								4
	भे	•		३ पडया	गीनम	3	11	**	सुमा	भारत्यु	33	भीवण	主
Æ	ર્ન	सुआखा ६३	सुबाला	<b>अ</b> बाडि	हीरण्यगर्भ	3	साम्बेद	कीथमी	समश्रा	महोदर	, 17	नहाकाल	भूते उपान निय
_	₹.	<b>-1</b> ,	२ भाग		वत्सस	فر	यजुर्वेच्	माध्यरिनी	सुभा	भारतंद्	1 17	भीवण	विधा
c	·	- 58	•	स ३ शकर त	क्रथ्यप्रगी क्रियम्	عرا <i>قر</i>	यजुर्द	माध्यदिनी	सुभा	भालचद	~1	भीषण	विष्णु
فر	अ	गलधरा ६५ ग	गलप्र २	9 मेहेता ३ <b>प</b>									•
			_	र्डिन	करयप	<b>ર્</b>	11	**	सर्वसिद्धि	महोदर	~~	असिनाग	क्ष
111	इ	ं ६६ नी	ानाषण २		गातम	3	37	**	उमा	11	١ ,,,	<i>स</i> स	कार्न्स्तान्स विष्य
		युधरा ६७ इ	उधरा २ १		वशीष्ट	٦	"	*		छंबोद्र	~	भीषण	अस्ति
7 ( )	3		र्मबाडु २ १		interest responsible							111 7.7	अग्रिः साममतान्य
			भागे ३	्जोशी "	नग् <b>द्रा</b> अ	<b>A</b>	17	55	त्रिपुरा	भासन्तर्	<b>3</b> 1	कारर	सोप आगर्की तरी
										<b>&gt;</b>			-11.1. Jul 131

- - -

ě

	. ;	τ		< शामे	) १ ज्याध्याय २ पडिन	<b>ৰ</b> খিষ	ż.		•	भिषु <b>गम्</b> या	लकोदर	`	भीवण	तिचा	अध्याय <b>ाः</b> बाष्ट्रणोस
~	- 4	न मसा	<b>T</b> •		<b>) उपाध्याय</b>		•			·^		,	*******		
	-0			नामे	र्पिधन _	भारराज	3			भिपुरा	एकदन	٠,	महाकास	<u> </u>	
1	Ŧ	िविठस	पुर ७१		। <u>३पाभ्या</u> क	नशिष्ट	3	पमुरेद	माध्यदिनी	उर्गा	मन्द्रण"	बटेन्पर	भीषण	विष्णु	
				३ सागे	२ मे <b>हे</b> बा										
	_				२ ग्राही	***	**			e%			^		
11	ने		**	असावाः	१ नगुरी ५रवे	भेंि।उन्प	٦	यसुर्देद	माध्यदिनी	पुष्पमाता	गमपनी बहुन्म	र्गस्पर	असिताय	र्न	
1	7	सिहर	*3	<b>ीर</b> र	१६दे					त <b>धे प</b> री	सन्मु <b>च</b>	*	कीवण	र्न	
		ŕ		२ भागे	२ मेता	भारदान									
					२ नोसी	<del>६३प</del> म	3	35		उमा	प्रदत	**	कारकी	असि	
Àn.	ना	1	44	भातसीणी	<b>१</b> . १ अपाध्याय										
3	•		·	<b>्</b> भागे	्नोग्री	नारहान	3	**		सिद्धेश्वरी	एकदन	*1	भीषण	<del>इन</del>	
v	ने	ननसस	7 194	नमसासण		₹ -	·							•	
	Ī			२ भावे	२ -पास	गीनम	3			शुभा	उदोदर्	₩.	<del>रु</del> रु	<u> শিশ্</u> য	
4	<del>न</del> ै		nt.	<b>ग्देंग</b>	१ महेता								. 0	_	
•	-1			र शामे	२ पश्चिम २ पश्चिम	सारधन	3	**		मागैस्रा	<b>एक द</b> व	**	भीषण	<b>বি</b> ण्यु	
>	tor.		44		२ गल्य १मेद्रेस२ओ	andan-					~_~			5	
`	\$		••	#1441alt	1 महुल रुवा 	स्थीष्ट	₹			<b>चर्मपनिक्</b> ध	भ <del>पान्।यक</del>	20	नास	मीत्र	
٦	3	नामासग	95	ननासर्	भास अमेगी	भारहान	<b>3</b>	₩.	~	<b>उर्वेसिद्दिश</b>	नसक्पे	1	<del>कीपण</del>	सोम	43
¥	न		44	गोदनु	भौगी	<del>५२</del> पप	٦.	*	₹.	सेममध	बहुरूप	*	शीवण	द्व	•

.

۹	द भे		=॰ ' अरार -९ - आदिअ	-	परागर चंद्राची	عر عر	यजुर्नेव	माभ्यादिनी	उमा गरेन्द्री	एक देन महोद्र	बटेश्वर `	महाका र रुक	मीत्र भर
9 °	भ		२ कलाडाः भागे	د	भागंय	5,	23	33	निषुरा	<b>यहरूप</b>	*1	बहुक	भय ,
10	ने-	इंगोर =	३ वसजणु		गीनम	٦	• (	n	નેવેશ્વ(1	विष्वविनायक	11	महाकार	इद
ى ئ	ने.	मेरगाउ 😅	२ भागे ४ परवाडु	२ जोशि मेहेना	ान्छम	٤,	17	33	भिषुरा	गगोदर	**	असिनाग	ीय
v	अ			संवल १ २ जोशी	गाडिन्य	<b>ર</b>	*	4)	गशि	महोद्र	>>	भीषण	दन
4	प्	मात्ररोडा ८६	भात्त्रवाड	५ १६४ श्लोशी	शार्जन्य	غ	*	*1	गारेग्री	गनकर्र	5.	महाकान	भीन सरलकान्दी
3111	ना	- c:		१ रंपाध्याय २ जोशी	पारागर	٦	•	"	अन्तपूर्णा	एकदत	~1	नीपण	द्त
५	प	c~	भडपंडा २ भागे	१ आचार्य २ मोशी	भारदाज	3	<b>+</b>	•	दुर्गाः	पहाँदर	`	महाकाल महक	इस् <sub>वागग</sub> न भव
·s	द	۶ و	पीहोज २	<u> १रावस्य जोर्याः</u>	भारराज	3	**	•	गमेश्वरी	बहन्त्य	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	<b>महाका</b> उ	इद
. و،	<del>'</del>			<b>१</b> नाकर्रजागी		٦,	<b>™</b> .	**	उपा	एकदन	**	बदुक	भन
٩	ने	٥٩	मीमाण २	१ रावसभ्जो ०	गर्भ भारद्य-	६१३	यजुर्वन्	माध्यदिनी	असपूर्य	गुकदन	नस्यग	अभिताग	मीन
•	ने- ^	" ~ 63	दानकोडी २	1 जोशी २ जो <b>॰</b>	भागंव भार हाज	٠ ٢		मास्परिना	संगमना गोरी	भिष्नसन पम्दन	<b>ग्ट</b> श्चर	सहार	भात्र । दन
, ,					d'int				• '	11: 11:	, . ,	16.48.	* '

* * * * * * * *	प ने रूउ र ने	•१ ९४ शित्रोम १५ १६ १७	इनुभारी उसोमु उस्तारा	र्न ठाकर ओशी	में तम इन्दर चित्रम भारदान नाराहर पन्छस	* * *	<b>पज्ञ</b> ेंद	माप्य <b>रि</b> नी	दाममरा निपुरा निपुरा महागरी परागरी तमायिका	महोद्य विष्यक्ष विष्यक्ष पहोद्र क्कदन महाद्र	बटेन् <u>पर</u> 	बहुक भहाकाल भीषण महाकाल बहुक असिमाग	मिया प्रस्तीम ध्न स्न स्न स्नाम अनस्यामक सिक्या	अध्याप <b>।</b> बाह्मणोरम
us.	₹		_	१ उपाध्याप २ अकर	क्षंभिक	<b>3</b>			माहश्वी	यकद्रम		<b>ब</b> दुक	मीन	
€	द्	नाहांची 🦫	गर्गास २	१ रावस २ महता	भाषाज	1	*	-	महाविधा	सुन्पुरा		काउ	दन	
<b>3</b> 311	प नै	<b>ት</b> ሳ 1 ጓ	गरही छमीछु २	म्ह्ना १ग्रांच	गाडिस्य	3	•	77	गीभ	एकदन	*	अतिवग	विष्यु	
`			_	२ मेहेना १ जोसी	<b>भरदान</b>	3	**	~	क्वंपरी	विष्निवित्तपक्	4ر	<b>प्राध्य</b> स	मिप	
11	नै	143	सहोर३	१ दवे २ सङ्	<del>ाम्य</del> स	દ્ય	*	**	1শানিকা	<b>िप्पिशिनायक</b>	*	भीव्य	ৰ্মৰ	
١	ने	1 4	<b>ग</b> न्म <b>अ</b> ३	< नौगाः	भाउन्य	٦	*	-	मीरा	महाद्र	•	भानद्	<b>र्</b> म	
<b>E</b> 4	₹ ਜੋ		वणसम् अगस्त्रिय	पंडित <b>र</b> वे	भार <b>ए</b> ज रशिष	3	*	*	वहात्स्थ बहास्थ	गकद्त सन्तुस	•	रुक काल	स्त्रम मित्र	<i>33</i>

	भा द	'पाउडी १०० वार १०० शाप	ाडी २ १ जो शी वाडु १ महेना	२५ाव भारदान	3	यनुर्वेद	माध्यदिनी	तत्राविका	विष्नहर	ग्रेश्वर	<b>रु</b> रु	सोम सरम्यता
		,	रगाउँ । रहम गि २ रावन्ड	भारराज	3	•	~	उमा	एकद्न	17	सहार	सोम
11		१०२ काम	ही रावउ	भारदाज	વ	~	**	क्षेपन <b>दा</b>	एकदंन	31	पहाकास	भित्र
-	- नेः	११० सनस्	न्तपूर पहिन	भारद्राज	3	**	**	दुर्गा बहीस		13	भानेद	
ų	प्र-	१११ महाव	ह्यां पंडिन	भारद्रान	ત્રું	24	•	3	2)		<b>महाका</b> स	द्त भित्र
<b>ર</b>	र	• <b>१</b> ९२ রবর্ণ ২ পা	गे २ ओशी	भारद्राज	ર્	यनुर्वेद	माध्यदिनी	शाकवरी	एकदत	बरेखर	आनंद	चिष
70	T	११३ अवर् २भाग		वन्छस	દ્ય	यज्वेद	माध्येहिनी	गोरा	गकतंत	बटेश्वर	o <del>uis</del>	बाणगंगानदी
91	प्र	११४ गोरतोः	श व्यास	भारदाज	3	35	13	पुष्पा	एकद्त विघ्न वनायः	79 91	आनंद आनंद	दत्त . भित्र
v	पू इ.	११५ सोमाप		शाडित्य	લે	**	*1	अवा	वक्रत्उ	**	कास कास	
દ્ય	अभू	11६ सीनुं	पंडिन	गर	فر	n	**	निपुरानका	वऋतुः महोद्र	22	महाका <u>छ</u>	दन मित्र
9	Ħ	११७ मालींसा	ज् १ थ्यास						. /		य हो कारक	भ्यत
3	द	२ तार्ग ११८ नेहेरय	२ भीर १ पंडिन	भारद्राज	3	W	11	नत्राचिका	बहस्प	37	रुक	द्स
દ્	द	२ भागे ११९ खेरपूर	२ जीशि १ मेहेता	भारद्राज	3,	11	*	अन्नपूर्णा	वहुस्य	**	भीपण	भर
`	•	२ भाग	र जीर	भारहाज	3	17	*	नंदेयरी				
<b>ق</b> ر	द अमर		१ व्यासरजो	भारहान	ર	**	*	नद्वरा हुर्गो	एकदेन चकतुंड	*1	आनंद् अ सेतांग	पित्र स्त्र-
1) 1)												_

٠,	<del>न</del>	भा विख्य	ि आस	भारदान	3	पगुर्पर	माध्यदिन	ो <b>द</b> ुर्गोब्ही	ती अस्म	<i>परेष</i> र	<b>37</b> 7)	€	
c	भ	१६२ बुद्रमा		भाराज	3	4		, व गुन्दा नमेन्द्रनी		77.75	<b>₹</b> 1₩	मिच —े -	अभ्यामः
81.	। न	म्यू गाष्ट्र	रागत महेना न्यास महेना	कस्पप	3	*	•	वस्य । दक्षश्चि	गमकणे विधाइर	*	<b>बर्क</b> सम्ब	सोम सोम	अप्रणोर
પ	<u>पू</u>	१२५ रगपूर	न्यस	गरी ।	6,	•	1	वकारम गौरी	पुरुद्देन पुरुद्देन	<i>n</i>	भरूक भारत	स्थान कोना	
4		१२५ ज्या	र्मे देना	<b>इ</b> स्पप	3	*	*	समप्रदा समप्रदा	भूनायक भूनायक	•	भानद	चो <i>म</i>	
v	भ	१थ रेग्रेस	१ स्वास २ नोसा	स्टाउस				<b>₹177</b> ₹1	1771744		भानर्	स्रोम् साभ्यमना	
•	ने	२ भागे १२७ भा <b>र</b> ्की	२ जोगा १ परित	गर्मे	<b>E</b> 4 1 E4		•	बहिषरी	बिनायक	*	भामद्	<del>रा</del> न-ज	
•	मे	• भागे • भः तोसतु	९ प्रति ९ महेना १ प्रमु	भारद्रान कर्यप	3	`	*	उमा	पुरुद्त	<b>~</b> /	भानर	सोप	
٩	प	२ भगें " १२९ नग्रह	९ नोशी १ मेर्नेस	भारेदाव	3			दुर्गो	पद्धन	*	₹ <b>\$</b>	र्द	
•	नै	२भार्गे १३० साद्स	् नार्।। १ रपाध्याय	परागर	1	~	*	स्थिपश	रिपर्स	**	सहार	'ৰিচ্ছা	
1	ने	२ भागे १३१ स्वगाम	९ सम्मुरू ९ पेरिस	भारदाज	Ź	*	*	थिना	एस्द्र	*	शीषण	भर	
¥¥	प	२ सम्ब	२ में इंग मेहन	रुपन्पन होशिह	3	_	"	ननारिका गीरी	बहुरूप	•	सीषण	भक्	
94	4	१३६ मशास	१ सन्छ	भारद्रान	٦,	•		गारी	<b>४६६</b> न	44	<b>ब</b> रुक	रन	
		र भागे	५ गंबर	भाररान	<b>1</b>	म <b>त्रवं</b> द ।	माभ्यदिनी	गीरा	एकदन	नरेपर	भानर	मिच	<b>3</b> ¥

			ı											
91	, <del>प</del> ्		, १३४	उपेसा २	( '१रावल२में	हे भारद्वाज	3	पजुरीद	माध्यदिनी	' पुष्पमासा	भारत्वंद	बटेश्वर	महाकास	मीत्र
<i>'</i>	नें	•		, धारावार् २ भागे		भारद्वाज	3	पसुदेद	माध्यदिनी	नसे वरी	गहांद्य	27	रुस्	चिया.
911	4		१३६	मगरबाडु	२ गवस	भारद्राज	• •	47	33	अनपूर्णा	धूमकेटु	*	<i>स</i> म	इंद
3	₹-	•	130	घोडिजार	२ महेता स्टब्यास	भारद्वान	<b>ર</b>	"	"	'विश्वरह्मा	भारुचर	**	संहार	सोम हरण्यनरी
c ·	रंग्रीन		33्ट	रीवडी :	२ १ पड़ित २ महता	भारद्राज	ર	•	~^	बहुधा	विद्य चेनाय	**	भीषण	भव
-113	नै.		134	उभड़ा २	् १ ठाकर २ महेता	भारद्वाज	3	"	~~	उमा	एकदंत	**	कर	स्तीम
3	升.		140	नोस्ता	पडित	भारहाज	ર્	*	n	नंदी	-वेष-वेनाय	*	आनंद	
4	A		989	<u> भोदा</u>	१ पडिन	कीशिक	_			विष्महरी	भारत्वद्र	77	आनम्	द्न मीत्र
				४ भागे	२ रावल ३ मेता	भारद्वाज	3	**		चाएँउा	पहोद्र	•	आनर	पीन
					४ जोसी	भारदाज	.:3		**		,			
**	*	~  }	185 I	गरक्य १५	<b>०१ पर्यतया</b> र	ग्राक्षार्जे० अं	र विमुभ्योददी	नेपागांत्रप	गरहाज यज्	पेंद्र अपूरक	<u>पुरावस मेह ता उ</u>	गायोतिनेवं	इसिंदा-॥	
		11	भयान्	स्वस्थानं त	न् <del>का</del> मार	गाउदशगत	न्तनास्नाचार	भरा जाता '	सामतमार्व	ाडी आदीचडा	तिनामवर्नते ॥ उ	र्यणचराते	त्यम्य-॥	
`	. ^ ^			~		व पाच्या हा र	वधानत यामान	दत्वा पू ७५।	ના <b>રાનાય</b> ૯ન	रुद्यत् ।			22	
7	इ ते संख	रुप्स	मदाय'	_		स्पह	रसगदायानां	च १ यामा	णद्सानितः	ग ना एक		अय	सहरसमद	ाय

'n	सीयह इप्र	देशसि र	3	सिहोर १ भागे	१।२ स्वे २।४ स्वे ६।६ मृत्	रूणाची गर्गे	4 9 8	म्स्मेर पन्नेद	आपतापन शप्यदिनी	~	वस्तर	सङ्क	्रे सोम	नीसक्र	अध्यत्यक्ष भूज्यस्य
					ार गोरी ११९ जोसी	भारराज साहत्य	<b>?</b>	`		अपपूर्ण	<b>रक्तुड</b>		11ख	<b>ई</b> श्वर	
	#			ब्रवाण	१ पदमा	<b>गुशिष</b>	•		*1	दुर्गी	रिभइर	सहर	נייי		
•	4		`	० सामे	< <b>पर</b> पा	भेवम	7	•	`	क्षिपरी	*	•	<b>→</b>		
	<b>*</b>	•		- 1H 4	२ दर्व	*	3	*		*1	•	*	•		
•				*	४ नोगी	•	3	**			٠,	•^	**		
					५ जानी	शारहान	3	•	**	`	<del>- '</del>	•	•4		
		*	~	•	६ राक्त	न्यस	۹	•			·	•	**		
		*	*	•	० दर्व	सेदिय	3	`						`	
dl	प	*	ર	गुर्	१ प्रसा	ৰ্যিত	3	17	11	महाकासी	<del>।</del> कर्तुंड	भीषण	भर	`	
\. <b>!</b>	-		•	२ सुने	२ मेहेल	बच्छम	8	<del></del> _	***************************************	विग्राब	-	सदार	र्च	~	
ul	ξ	•	1	नारकी	न्यास	उपमन्य	3	भरगवद	आयुत्पर्य	∳IZDI⊒	एकद्त	/, 4r./			
٦.	3	•	Y	गोधनगरू २ <b>स</b> गे	१ प्रमा १ महता	धारित्य	٦	यतुर्देद	माध्यद्िंग	उमा	एकदन	कानर	चीच		
٠.	प	•	ų	विष्युती	१ आनार्य	मेनप	٩	₹.	•	गिप	•	*	•	*	4.6
<	,		•	२ भागे	९ पानक	भाराज	1	₹/	*			٠	िकार	ਸਲਵਾਹਰੀ	34
(	गु	*	Ł	भिमस्यण	_	रक्षप	7	*	•^	म इस्पेरी	पुक्रवत	शीपण	विष्	मुम्शन्	

	, ,	₹	मगता	णा 'ः	३ जा • देगमा	३ उपाध	गाय गीनम गे	فرع	*/	महागोर	ि एकदन	<u> भीपवा</u>	विष्ण	सुम्रान	
3)	311	T	•	۳	र भा बसमी ६ माग	गे २ पडेन पर १ भवाडी १ २ व्यास ३ रावस	भागायन कृत्ध्यम् न्द्राची सार्वित्य	معر معر معر معر	भ मामेवेद यज्देद यज्देद	ू भोयः माध्यंदिना माध्यंदिना	नमे चरा उपमाला ~	महोद्र विद्यहर	्र आनंद *	दम दम -	
1{	Ę	₹	•	۴	कानड़ा २भागे	४ नवाडी ५ पडिन ६ दवे १ अक्तर २ दवे	ः भारह्यज्ञः शाहिन्यः गीतमः पराशर गैतम	مر مد مد مه ما	मामवेदं यमुद्देद यमुद्देद यमुद्देद	को च- माध्यंदिनी माध्यंदिनी माध्यंदिनी माध्यंदिनी	ूँ भस्काठी	ू भहोदर	ू भूडक	" " सोम	
)ii '\	उ प-	-	पनाध	۱۹ ۲	पाघर्त् २ भाग पाटण्	२ ज़ोसी १ पंडेन २ मेहेता १ पंडेन	भारद्वाज भारद्वाज काशिक ग्रीष	مرصر عبر هم هر	n 11 11	אן אן אן	े. उमा गहेंच्सी	" संबोदर एकस्य	" अ	" " विष्ण	1
1})	प	स्रोन	पुर १२		अभाग iनइर्	२ अपाध्याय २ महेना ४ व्यास ठाकर	माड्य शांडिन्य रुगिम्ही गर्ग	م مر مر ي	יו יו יו	יו יו אר	मीठी इ.	एक दत `` ``	**************************************	सोम " "	

٩	Ŧ	१२ मताणा १द्वे २ सागे २ नीसी	भारदाज १	<b>~</b>	ध्यहिनी शास्त्रारी १९ १९	पद्भद्रन असिनाम १	स् <del>वे</del> म '	अध्याय १६ भाषकोसः
ح	नै	१ वर्षापा १४ वरेषे १ महेवा १ मार्ग २ नोशी	रीनिक २ माउन्य २	2 4		~ अन्द	<u>मृ</u> ज	
<b>3</b> <b>1</b>	<b>1</b>	१५ रामासी पहित १६ फरिआदा १रावस २ भागे २ पंस्या	मित्म १ भागीन ६	al y	माउ <b>ै</b> परी गीरी	समुख ~ एकदेव पराद्यत	मिन सम्	न
٩ 	ष 	१७ सेवडरा १ परमा १ भागे २ मेर्न	म्बम रे	सामनेद से	-	महोदर भीषण	भर	
¥ }	र ग	१० हामशीण १ पडवा २ भाग २ उपाध्य १९ वगस्पन १६वे	पराभर रे इंग्रिक रे	<i>n n</i>		सन्मुख भानद	मी <b>म</b>	
ì	4	९० नतान्ड १पेडित ४प्तामे २.ट्ने	गोनम २ भारदाम २	क्लूबेर आध्य बजुबेर माध्य		विष्णग्र प्रीपण् किनुर महाकास	सोम इद्	
3	¥	२ मेहेना ४ न्यस २९ घोरपूर १पदण	इरमप २ सम्द्राम २	a) a/	_	7/2-1-1-1	**	
	٦ ,	रभागे र महता	शादित्य २	* **	, नम <u>्</u> रेपश	धुन्तकतु भीका	भुर	26

ىد	इ	मुरका	í 2/	र प्रशाम्स् ३ मा रे	् १जोशी २ मेहेना २ ठाकर	गर्ग भारद्राज	E 3	मूहा- वेष	माध्य देनी १०	उमा - ``	'रुकदत -्रे महोदर	काल ्रे आनंद	मि <b>ञ</b> २१ १२ ११	सामगरी
ç	इ	•	२३	्वारसाग २ शागे	१ न्यास २ उपाय्याय	क्रथप भारद्वान	ત્ર ત્ર	1)	17	चमुडा	**	**	4 Harton 4 /	
9	**	बरोडा	२४	माचनाडु	द्वे १	चंद्रादी कश्यप	ત્રે ક	"	1) 1)	उमा दुर्गा	एकंदन महोदर	भीषण भीषण	मित्र दत्त	1 1
9		n	२५	न्बडीसर २ मागे	१ उपाध्याय २ प्रोत	~	"	*1	"	्र. नसे चरी	ू. सन्मुख	"	1 20	
95	र्	~~	२६	गभीदा ४भागे	१ मेहेता २ पंडया	वच्छस शाडील्प	<u>ئ</u> ھ	"	11	47	17	47 47	* *\ *\	
					२ उपाध्याय ४ त्रवाडी	भारदाज भारदाज	ع ع	ू सामवेद यजुटेद	 की थुमी माध्यंदिनी	उमा विन्धेश्वरी	एक द्रेत वऋटे उ	काल महाकाल	विष्णु भित्र	,
a)	इ		२७	झापोद्धर २ भागे	१ द्वे २ ओशे	भागीं	E,	47	*	**	महोदर	भूग । कास	इंद	· (
90	* * *	l l	२८	देलगुडु	पाठक • जास्य	गातम	3	<i>31</i>	~1 9.J	सिद्धे धरी जाशापूरी	नहादर वऋटुंड	आनंद	रू दे हेंद्र	साभ्नमले
12	<b>ξ</b> ·		36	शाउसी २भागे	१ त्यास २ रावल	भारद्वाज बच्छस	દુ	11	45	າງ `	17	<b>11</b>	भन	,
ç	<del>*</del>	, 1	30	शाणावाडा	१ मेहता	गर्ग भ	فر فخر	11	*1	सिद्धेश्वरी	महदर	***	47	ı
10	7.	,		२ भागे छाडुबा २ भागे	२ रावल १ महेता २ दव	कींडिन्य	<u>م</u> م	<sup>५५</sup> यजुर्देद	ग्र <u>ू</u> माध्यरिना	क्षेमकरा	, विष्न् विनायक	सहार	द्त	

٦	3	13	मताणा २ सागे	े १ दुवे २ नोशी	भारर्ज	م	पनुनैद	-माध्य(र्नी *१	रगक्त्ररी **	पद्दन	असिवाग १	स्मेम भ		अध्यायभः मारुष्योसः
	3			२ उपाध्याय १ म्हेता	*	1	•	**	*		~	**		
4	न	4.4	गरेभ्	१ महिता	यीनक	*	*	3/	उमा	*	अनर्	भिष्ण		
			९ भाग	२ नीर्म	माउन्प	•	<b>-70</b>	**			₹\	_		
ર	4	14	गुमारश		किनुम्	•		1)	माते परी	समुख	*	मिम		
7	4	98	फरिआदा २ भागे	१ ग्रान्स २ पं <b>र</b> या	<del>प्रार्गेष</del> "र	Ę	ጓ	*4	ग्री	एकदेव	महाकाल	<b>स्त्</b>	गासेन्बरीन री	
٦	<b>T</b>	13	<b>मेच्ड</b> र्1	१ परमा	<del>न्द्रः</del> स	3	सामवेद	स्रेव	ग्रासस्या	महोदर	भीषण	भर	·	
¥	ह	75	्रभाग इापशीण	२ मेर्ट्स १ प् <b>टब्स</b>	पराश्	1	भनु <b>र्वे</b>	माध्यदिनी		सनुस	अस्तद्	" र मौन		
	`	•	२भामे	२ उपा <b>ध्या</b> त		3	1314	** ***		,,3,,,	41.14	יין יין		
1	ना	15	नगस्पत्त	<b>१</b> दवे 🕺	<b>कें</b> शिक	ો	अस्पेर	अर्थ	<b>र्गार्कस्य</b> री	विष्युव	भीपण	सोम		
i	4	₹•	नसान्ड	१ पश्चित	गीनम	3	वजुर्वद		<u> এনবুদা</u>	<del>१कतुर</del>	महाकास	<b>3</b> 5		
			५ प्तार्ग	२दुवे	भारद्रान	3	₩.	•	<b>n</b> ,	~~	₩.	"		
				२ मेक्ता	क्रपप	3		•	41	•	77	*1		
			_	४ न्यास	भराज	3	•	•	7	*	~			
3	र्यू	31	पोगपूर	१ प्रया	_				नमेप्रा	धुमक्तु	कीवम	প্ৰ		
	`		₹भाग	२ महता	शादिस्य	3	•	•	44	4 .13	***	**		3,6,

	<b>U</b>	र्दिः '	सुरन	ภ ฉ	" ३४॥५ 3 त्री .		गगे भारद्राज	قر عر	भूज क्र	माध्यंदि • ``	नी उमा	<b>'क्कदेत</b>	कान भ	मित्र ११	साममती
	_	Ŧ		• • •	ar <del>val</del> e	३ वकर	1)	11			<b>^^</b>	~~	53	17	
`	•	4		२३	् नारसाः २ भागे		करपप	3	11	3)	न्सा	महोदर	आनंद	n	
9	3	۸ ,	वजीरा	ં ૨૪			प भारहाज चंदार्थ	٦	11	11	רר	17	2)	21	
a		•			^ `			્ર	17	11	उमा्	एक्दन	<u> </u>	मित्र	
,			33	२५	_	,	कर्यप	4	n	17	दुर्गो	महोदर	नीपण	दत्त	,
9=	ים י		~		२ भागे	२ प्रोन	*/	**	2)	**	"	27	*	, 33	)
1.0	₹		•	२६५	गभीदा	१ मेहेता	<del>गच्छम</del>	દ્ય	11	17	नमेन्दरा	सन्मुख	11	, 11	
					५भागे	२ प उथा	शाडील्प	3	"	11	**	17	*7	1)	
						३ उपाध्याय	भारहाज	3	"	**	11	14	43	*1	
	-					४ त्रवाडी	भारद्वाज	3	सामवेद	की भूमी	उमा	पकद्त	काल	विष्णु	
<b>v</b>	इ			२७	झापाद्र	१ द्व	भागंच	દ્ય	यमुटेंद	माध्यंदिनो	विस्वरी	वऋतेंड	महाकास	भिन्न	
	•.*.			;	भागे	२ जोशी	11	દ્ય	27	**	"	**			
10	नं		2	<b>,</b> = '	देलवाडु	पाठक	गोतम	વં	11	וי	सिद्धिश्वरी	महोदर	1)	- <del></del>	
12	इ		3	4 8	गाउसी ।	1 त्यास	भारद्वाज	3	٨	~1	आशावरी		कास	इंद	
				1	,भागे	२ रावल	बच्छस	દ્યે	11	31	314113/4	<b>नऋ</b> हंड	आनंद	इंद	साभ्यमती
c	$\ddot{x}$	,	3,1	9	ाणाचाडा	१ मेहता	गर्ग	E.	33	۹ <b>١</b>			11	11	
			•		. 1	२ रावल	11	Ē	11	45	सिद्धेश्वरी	मइदिर	11	अव	
70	4.	,	<b>3</b> (		डुर्	। मेहेता	कीं डेन्य	3	17		2	44	مام	47	
	1		,			, प्राप्त १ दर्वे	મામ જન્ય •૧	3		مهـــردند ممتد //	क्षेमकरा	विच्नविनायक	सहार	दत्त	
				`	•••	144 ,		•	थजुन्द	माध्यादेनी	44	- \	27	11	

12	#	33	नमर्	<b>नग</b> ाउ	मोभीस १	4	साम	कैपमी	अन्त्रपूर्णी	पकर्न	₹ <b>₹</b>	सोम
10	<b>₹</b>	23	रेपुरुष	१ मेहेवा	<b>बर्शीष</b>	٦	पन्नेर	माध्यदिनी	<b>ग्रा</b> सस्यी	विष्यद्र्य	भानेर	भिष
	•	•	१ मागे	२ दुवे	ተስ	3	11	^`	'n	•	+,`	1
				२ प्रदेत	**	2	*	*		•	*	7
		34	<b>मुपराधी</b>	गुक्र	<b>नन्छ</b> स	5	*	*	नुसा	प्रकृदत	परुक	स
		24	पचोतीर	१पाउड १ तीः	<b>क</b> र्यप	•	77	**	भिद्रेष्री	*	भानर	भिन
<b>1</b> 111	₹	34	उरा मार्	१ में हेता	<i>सीनार्</i> ध	3	*	*	प्रामीध	पश्कान	ग्राक्रात	अमि
	•	• •	५ भामे	<b>२ दर्वे</b>	भारहान	3	*	*1	₹1	<del>*</del>		
				१ जोस्री	N	٩	*	*1	4,7	*		
14	4	3/3	<b>पारु</b>	१ पं द्विन	रापित्य	1	*	•	उमा	संहार	सदार	निप्प
		•	২্পাৰ	२ जोशी	*	₹.	•	•	**	•	` •	•
¥	₹	10	शेसाम्	१ प्रित	पागरार्	1	*	3	भिष्यसी	सन्युस	4र्क	<b>পৰ</b>
	•		<b>० भाने</b>	१प्रिव २ मेर्द्रता	n	3	•	**	•	**	44	79
				३ जोशी	Λ.	1	*	*	•^	*	•	~
₹	H.	15	करस्मण	१ ग्रस्ड	गीवम	ì	**	*	मीशः	प्रदेश	भिर्मान	रि <b>ण्</b>
	-,		<b>५ भागे</b>	२ नोसी	**	2	'n	•	₹\	•		•
•	ጃ	¥•	गुरस्	१ मेहेब	<del>र</del> न्छम्	Ł,	समपेद	भेीप	भष	वकतुउ	युद्	भष
•	•		• भागे	रभग्री	₹\	Ľ,	w .	**	**	4,	**	₩.
¥	₹	11	रानगुर	१ में हेना	गीनम	3	पजुरैर	माध्य	भिद्रेची	महोदर	ञानर	भर
	•			र जोगा	भार <b>्</b> ज	3	ž,	*	**	**	* `	n

अध्याम १६ मासमोसनि

													77
په او	३ <del>ब</del>		۰	१२ सर्वेहि अस्तराज्य	स स्री १ मेना ५जे		ر عر	यज्भेद	माध्यदि	•	एकद्त	आनंद्	मित्र
11	7		4		<b>\</b>	•	4	24	17	शमपटा	*1	भीपण	सोमन
				३ भाग	३ अकर	"	313	**	41	**	**	**	• •
B	प		88		१ माउक	भारद्वान	3્	17	*1	भीरी	<b>)</b> \	असिनांग	विष्णु
				२ भाग	रे मेहता	23	ર	*>	**	١	+	3)	73
٩	3	•	४५		१ प्डित	चशिष	3	17	7	संस्त्री 🗆	वकत्र	संहार	साम
				२ शाग	२ मेहेता	11	3	<i>&gt;&gt;</i>	'n	•	~~~	**	•
92	<b>₹</b>		_	मगोडी	मेहता	भारहाज	3	77	•	सिद्धमी	<sup>1</sup> रुद्रन	प्रानद	भवः
ર	अ	नलोड	1 80	नीध्या	<b>१रावलरपंडि</b>	भ अयप	3	31	*1	सर्वसपर्ना	η	भीपपा े	<b>N</b> 3
				३ भाग	त ३ परानः	2)	313	1)	*1	करी	•	1017	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •
Å	प	**	5 5	वीग्रो	१ पेडिन	भारदाज	3	11	1)	क्षेमप्रदा	<b>~</b>	आनंद	मित्र-
				्२भागे	२ जोशी	2)	3	11	15	21	<b>)</b> \	-11,1,4	, d
٦	इ		78	बोदाडी	१ व्यास	कश्यग	<b>3</b> )	וי	**	उमा		<b>मराका</b> स	निया
				३ भागे	रमेइता		3,	17	"	13	•	1)	13
					२ जोशी		31	17	*1	33	3	_	"
90	4		40 5	गछकपूर	रावन	भारद्वाज	3	11	15	सर्वेभिद्रिक्शे		- <b>^</b>	**
•		, (			१ठाकर-	गीनम-	٦.			~	महादर	भाषण	दत्त-
			11	1 4	र पडिता १ पडिता		4	ار	n	क्षेत्रमदा	गकद्रन	सदार	स्रोम
93 9	33	ाद्स्य ।			> ^	11	3	"	<i>p</i>	**	77	11	•3
17 /	•	त्र ल		٦.	१ जो भी	भारद्वान '	n Ž	17	•	मर्बयम् -	_	'n	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
		<b>~</b> 7	,	२ भागे ।	भावस		3	*	*3	करी	महादर		रिमेन्त्र
										41.11	•	$\boldsymbol{\omega}$	~

•	P	५३ सीबोस	र सबल	कामी	Ł	पमुवेद	माध्यदि	चमा	पुकद्त	स्दार	भित्र		अध्यायाध
3	1,	५४ सिन्मी		ागी ।	Ę	Ŋ	~	म् श्रीपानकरी	सन्स्र	र्भापण	म्ब		बासपोस
•	प	५५ बाक्या		ग्रादित्य	•	13	<b>&gt;</b> 2	उया	पकर्व	काल	सोम		•
	,	२ भाग	र महता	<i>™</i> .	•	15	1	*	١	₹/	**		
•	<b>ፕ</b>	५६ ककारी	रीसी व	पात्रास	•	11	•	गीरा	1/	भानद	⊤पिन		
11	3	५७ आसरानु	_	शाहित्य	ર્	33	33	(नेप पदा	-विष्महर्	भीवण	भव	साभमनी	
`	7		र नोशी	₩.	ો	'n	**	70	*	*	$\mathcal{L}$		
90	ने	५৮ कोटडी	१र्वें	कस्रप	1	7	٦	शीग	पकद्त	महासत	সন্দি		
•		र भागे	< में <b>डे</b> ता	<b>30</b>	1	*	1	7	77	n			
18	भ	५९ पणसोड	<b>१</b> दिसीन	भारहाज	3	11	٦	नामुखा	सन्मुख	धानद	'रिभ		
. 7	•	२भागे	९ दर्भे	**	٦ ُ	~	**	•	~~	~ ^	*		
*	ना	६ देनगाम	१ ठाउँ र	कर्यप	1	<b>1</b> /	*	उपा	प्रवत	कार	सोम		
		રે મામે	्पं इचा	•	•	~	•	7	*	~	•		
æ	<b>₹</b> 1	६१ ब्राह्मप्रमम		कश्यम	3	<b>n</b>	₹\	भुम्बा	निध्नराज	महासाद	-साम		
		ननीपासेदे	९ गकर		•	*	•	*	~	7	संपप		
MI	<b>T</b>	६५ टक्बा	रोक्र,	क्र्यप	3	70	₹,	शुक्ता	रिप्नग्रन	महाकार	सोग		
N.	3	६३ नगरी	न्यास	पागरार	3	**	*	नभेयरी	महोदर	आनद	-मिम		
12	Ì	६४ असलानी	1 पदपा	भारदान	3	3	ì	<b>मुफ्</b> रा		भीपण	भर	राधमनिव	
. 1	`	र सागे	२ नोशी	47	•	7	₩.	41	*	<i>al</i> 11. 1al	"1 "		3=
14	H	४१ सोसदुर	_	पराशर	313	*/	77	उमा	<u> </u>	भानद	- <b>मित्र</b>		

										_	_	•	
31	५ अ		દ્દ્	६ भालज	न व्यास	भारद्राज	ગ્	1)	11	महासर्मी	विष्नुराज	भीपण	भन
ع بار	् अ		E.	·	रा पंडित	शांडिल्य	વ	11	۲٦.	विद्यहरी	एकद्त	आनद	'मित्रः
r	7		ક્ <sup>ર</sup>		र मेहेता	भारदाज	3	यज्देद	माध्यदिनी	स्नेमपदा	1)	भीपण	सोम-
<b>ર</b>	प		६९		र मेहेता महेता	भारद्रान	3	11	11	त्रमेसरी	2	महाकार	द्त- सोम
91	प्र		90	, 2, 0.	१ मेइना	भारहांज	3	1)	<i>n</i>	अंबा	विभाग	नोंचपा	साम
•••	7			२ भागे		• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	3	2)	*1	**	"	"	27
311	3		७१	सीगरी	जोगी	<b>भारद्वा</b> ज	3	11	"	सीद्रेषरी	भालचद	आनंद्	मित्र
98	अः		৩২	रेवनपूर	' जोगी'	पाराशर	3	η	71	<b>77</b>	15	53	"
, a	प	•	<b>ં</b> ૪૪	सोनाउ	पंड्या	कश्यप	3	'n	**	उमा	प्रदत	वदुक	अग्नि
ર	उ	•	<b>ં</b> જ	पाकला	द्वर	भारहाज	રું	*1	17	'सिद्वेश्वी	गजकुर्ण	आनद	अगि-
31	₹-	•	७५	<u>जुकडु</u>	मेहता	າາ	m	17	<b>4</b> 0	विष्यहरी	एकदन-	1	यित्रर
94	₹,		्र इंट	सिंह्यूर	रावंस	भारद्वाज	3	**	00	स्मपंदा	विष्महर	वहुक्	सोम-
ષ	पे			उपसीर	गुन्स नोरी	भारद्वाज	3	<i>M</i>	33	उमा	एकद्त	आनेद	-मित्रः
12	वा		<b>5</b>	दहेगाम	म्हेना	भारद्राज	વે	71	ار.	निष्महरी"	गालचंद	भिपग	भूबन
92	या-		७१	जोहवा	नोंगी	भारहाज	3	1/	**	सुभा	महोदर	आनंद	मित्र-
11]	द	•	c	रीरोंड़ी	१ स्वल	भारद्वाज	3	**	*	उमा	गुकेद्त	सहार्	साम
	•			२भागे	२ जोशी	"	3,	**	~	<i>L</i> 2	~) '	<b>-</b> ▲	~ `
	•	•	८१ र	उडाडाय	1जोशी				•1	जमा	एकद्व	आनद	द्न
			•	^ 1	२रावल	भारद्राज	3	•1	• )	उमा	एउद्देन	आनंद	दन
					३ पेड्ता	• •	`	`	*1	उमा	एकदन	आनद	₹-
					•						7		•

1.1

# एवंपकारेणमूलराज्ञा५०० ब्राह्मणेभ्याभिहोरदानान तरस्ववामाणिद्तानि इतिसिहोरसंप्रदाय

यह मीनोबाह्मणका परस्पर भोजन और निवाद सबबित्यातो दृष्टसे और सम्भिक्ष निवाद में की अपित के ब्रांच की बादक के ब्रांच तो हाल के बरवत में एनरात मह तमें और ज्या शास्त्र के कार्य के कार्य के कार्य के कार्य गये हैं ९ और ओदिन्य जो पहिले १ व्य आवे उनोकु दान पुण्य दियं बाद धोद के दिन्य में पीछे भोर उनोक सबधि इस पिन लोक आये बोदीन जातीका आचार्यत्व करने छगे उसके छिये पूर्वोक्त तीन और ज्या के साथ भोजना दिक्या सबध निह रह्या जेस कमयी गोर गोन्य गार काछियागार गंभप मोर दरती मेर कोली गोर मोनिगार प्रसास भी और किन्छ बागाईया प्रसास सबस सबस निह रह्या अपदाशिद सबा पर्स जोकर रहे और आनार सबोका प्रकादि पिना उसके छिये सबा कहते समूह जूदा प्रया और

स्वमनमाह हरिक्षण उद्च्यानात्रवाणान्यकन्यासवध्भोजने कर्नव्यो नैवबाधोत्रसाप्रतमार्गद्शानात् १०९ अन्ये मेदाश्चत्य भवन्नोदिन्यानाविशोषत आनार्यत्वस्ययागेनस्वानारादेशभेदत ११० एषापूर्वत्रयाणान्यसमूहानापरस्पर भोजनादिकस् बधाकनेच्योनेतिमेम्ति १११ एतेषासर्वविपाणासुपनामानिकस्यते पदवीगोत्रप्रवरा सर्वेषान्यप्रकृष्ट्यक् ११२ आन्वाय उपाध्याय त्र्ययाज्ञिकोज्योतिष स्तया उक्तरस्विपाठीन्वदिवेदीदीसितस्तया ११३ इशिंसके भयसे जास्वस्थान षोढके पारनाहमे गमे सो

मारवारी औहिन्य भये और जो रानैर देशमें रहे उनाकु छोटि सवाकहते हैं और नामारवार अतरवेदी मध्यदेश गालव यह देशमें तो रहे उनो कुवाउस वाकहते हैं भा आय आगे यक्तमें जो शहिनरवे हैं उसका अर्थ कहते हैं राजाने जो दिया हु हा सो उपनाम उसकु पद्वि अयवा अवरक कहते हैं भगेंप देश जो करने वाले आवार्य उनाकु आत्यसन कहते हैं अध्याय समीय बैंद के जो पढ़ाने वाले उनोंकु उपाध्याय कहते हैं गोयकहते महिषक कुल मदर कहते एक गायमें जो किप हो गये हैं उनोंकि सस्या ११२ \* शगर वारकर यह सेनो परमणेक्ट पराय उपाध्याय कहते हैं गोयकहते महिषक कुल मदर कहते एक गायमें जो किप हो गये हैं उनोंकि सस्या ११२

15

यज्ञकर्ना करवाना उनोकु यासिक जानि कहते हैं ज्योभि शास्त्रका जो साता उसकु जोशी कहते हैं यामका जो मुख्यराजा अधिकार उसकु उन्हर बाकर कहते हैं तीन बेदका जो पाठ करनार उसन्ह त्रिपाटि तरवाडि कहते हैं दोबेदने जो पाठकरनार है उनोन्न दिवेद देवे कहते हैं दी झा देनेवालेकु दी शित कहते हैं १०३ शास्त्र प दे हुवे और पराने बालेकु पंडित पडया कहते हैं गावका जो गुरु उसकु ए से हित परोत्त कहते हैं वेद शास्त्रका जो पारायण करने बाला उसकु पाठक कहते हैं सरकारका जो-

### पुरे हेतः पं देतक पाठलक महत्त्वः पंचलक भट्टरं जोत्यारः शुक्कक पाउत्रः ११४

काम करने वाला उसकु महत्यदा महेना कहते हैं पंच कुछ में जो दुरुय उसकु पंचो की कहते हैं यडे हुनियाहबाहादूर मन्ष्यकु भठकहत है न्राणवाचने वालेकु पु राणिक व्यास कहते हैं यह उपजी विका करने से युक्क न्कल कहते हैं राजाके एककु राजकुल्य रावल कहते हैं द्वान औ देन्य ब्राह्म णकी उसकि समास भइ मकरण २ -इति है रहा कि कि ने कि हु उन्हें कि कि कि कि कि कि कि को तिम ने मार्न डार्क्ट के उहा कि को देन्य ब्राह्म णकी दन यवर्ण ने के कि कि कि

# उरहे सब रुदे दिच्छ इस्टेस रेन ह

क्षी पूछते हैं के हेस्बामिन् अव देच्य सहस्र बाद्यणो के उत्पत्ति वनणा कि परत तृति ने भइ वासे १ और ओ रोठक बाद्यण जो है को का महात्त्र कहो ९ वव की देच्य प्रकार है के हेस्बामिन् अव देच्य सहस्र बाद्यणों के उत्पत्ति वनणा कि परत तृति सहस्र एवं देच्य प्रकार के के स्वार के सहस्र है के हैं सहस्र है के हैं के देव के तितः सुष्य प्रकार के के हैं के सहस्र है के सहस्र बाद्या का प्रकार के कि की का का का का का का का के कि है व

हे राम कितनेक सिन पुष नो है सा रान पित ग्रह के भयसे एकात बेंचे हैं उनोड़ ४ नमस्कार करके मंदप में कायके पुजाकरों ५ तब राजाने तथारक कर्क ६ हाणों के महपमें जायके सुवर्ष के आसन अपर विश्वयंके हात नो दक्षे कहते हैं ७ हे स्पिष्यों आपके अ तथा ह राग सफल हुना ० यह राज्य और देश याणा-दिक जो पहियों सो महणाकरों ९ १ वेसा एकाका बचन सुनके उसके नम नायबसे मसन्य अपे सो मनमें यज्ञ करने कि इच्छा रखके राजाकु कहने राग ११ हे राजाहर

तो मसमेनकी बर्दिश्री वष्णासे पहा बैठे हैं परंतु तो एवन करने कि इच्छा है १२ तो हेराना सोकपे आस्तु रागात कहते हैं वे स्तम तारी सहक्ते पान अच्छे यापो सादान देन १२ तब राजा वो बचन सुनके सबोकि प्रकारके १४ छ ब्राह्मणोड़ साद पीठे सह बते पान स्तम ती पैका अच्छी तन्हों से रानकिया १५

.

अभागाः मस्योतः

## टेलकारन्य विप्राणां १३ पदके ए कं

कुलदेवी भेरव वेद शास्ता गोन्न गणपतो शर्म नदीशीव भवा दि-अरक ग्रामनाम महीसागर संगम् । सोम कष्णात्रीर्शा कर्यप कास १ परया १ पर यु भ्या वका ड खनात मित्र बासणोदी आनद पद्या उमा एकदत वानकनीह शारवानान्यास मिन हरियाती अगनद उमा एकदत परचा करपप बान खंडी संगमे सहार दत्त をきまり श्मिमदा विध्नराज क्रायप ग्नेहा परवा महीनदी भद्रकाली दन विशिष्ट करु चक्रह सिंध्ना १ पडया 37 मित्र ५ पंड्या उमा एकदत आनद बच्छस २ भागे मार्मानामान दिनी पीतस्य गीरी भीषण माहेखरीनदी क्नीन वास एकदन भव देश्री मेर विष्णु शाडित्य जानी शुभा गजकर्ण पहाकार वानफनदी मात्र मित्र खेडी वा'सलीनदी पद्मा म्हणाना महोब्र <u> ग्</u>याध्याय भारद्राज नाम्डा भानद उ माण अगिरस क्षेमकरी **ब्यास** विध्याज सदार भर्नड दन वात्रकनदो मित्र अन्नपूर्णा मनोहरानदा व्याम मह'दर मह्भा क रथप आनद महानस्पी र्भाषण जोशी 7 गजकण भव महीनदी साम्रत्य ₹ \*\* ऋगुण द्रीराज शीवा मित्र द <u>३</u> इ.स. मान्त्र कश्यप कर्यप आनंद संरोनद: हम्म गोरी सुरोहित करवप-इक्षेगन र्युसाहित भीपण भव 11 सामृगती कोचरप न्यास व-च्छरा उमा एकदत 11 12 उत्तर सडा सरम्बेज २ अक्डान ३ यह ीन जपपा दरहे 7 15

फिर वो स्वशतक अष्टिशामे ब्रह्मणोठि आहिकरके चौदा गामका राज क्या १६ ऐसा मृत राजाने वा सोत्य ब्राह्मणोकु दान दिया चोबडे पसन अग्रे १० सवएरका होके चैंडेपे रास्त्रे से रेवेपे रास्त्रे के से रेवेपे रास्त्रे के से रेवेपे रास्त्रे मारे रेवेपे रास्त्रे से रेवेपे रेवेपेपे रेवेपेपे रेवेपे रेवेपे रेवेपे रेवेपेपे रेवेपेपे रेवेपेपे रेवेपेपेपेपे रेवेपेपेपे रेवेपेपे रेवेप

राज्य मुमन बरके मानी सरस्तती किनारे बबातप करके में पृष्यसे मुठ सनाविष्ण ठाकमें गये एसाजान्यों का निर्णय वर्षण किया २४ यह रोहाँ किये आन्हण्यमें नकमें नेरावाम नो जिसे हैं बंगोक तेरा पादर कहते हैं और तीन उपपादर कहें जाते हैं एक सरवेज दूसराउनर सहा तीस राजकतान ऐस है परंजु प्रवासने उत्तर सहाक उपाध्याय करपाति ऐसा जिस्स है बाकि दो अवनर भेद हैं २५ और दावमे एडा कर्मान पामके नाम जा है सां अपना सस्यान छोड़के अमदा बादका पाये आयके रहसे बासने वीपर

.

अध्याप् १६ भाग्रवीतः

पोलमी कहे जाते हे वैसे उसमेके मेहेमदाबाद अलिदा वामणा नायका मारवाड चीरमगाम हाटकी रडु पोचकाके गागा इत्यादिस्य लोमे जायके जो रहे सो वो स्थलो-केनाम महेन पोलास्त कहे जाते हैं पातरके जानि केचार भेद भये १ जानि २ भट ३ शुक्क ४ अकची आ ऐसे पिच्छाने जाते हैं २६ हमाण यामके उपाध्याय पदिक बदली होयके १ भट २ पहचा २ शुक्क ऐसे कहे जाते हैं खेडाके पडयाके पद बदल होके व्यास भये हैं और यन्वेंद छोडके ऋग्वेदी भये हैं उसका कारण गालुम न हिपडा २० खवानके हणा-उपाध्यारेत्ररोषेद पट्टपं उत्युक्तकः खेटएं उत्तरिस्र ब्यार त्वा फाल्कर १७ तन्न जानेवर शाखः संभएं उत्वर्णनः अन्य सर कुरही नत्व कुरामेनासरो गतः १० एषांग छं देनी शाखर उत्तरिक एवन अन्यशाखर उत्तरिक जाने रात्स्य सरंपर १९ । ॥ इति व व हुत्ररोतिक पटे व के विक्र सक्षेत्र के पहेणोतः से मानं डाखरे शोडके छत्र रे रोसक का स्पोति कि वर्ण ने का र करण १ निपउपाकि तोन भारतो भर् है १ पान्या रदसा १ तरा पेति है बाम्हणो लापडम जो है सो पूर्वा उत्तमये परत अधि इता कुत्राम वासके लिये हीन खकुछ कु पाये हैं २० इस दोन्छ बादे सब बाम्हणों कि पर्तिदेश मध्य देनी शारता है और जो किंग्र स्थान भारता दिखा पड़े तो वे सिद्ध पूर समदाय मेसे आये जानना २९ इति हो सक बाम्हणों के उत्पत्ति मुकरण संत्र

अध्याम तिक महण, व गुड्रहण्महणानी उत्यानिक हते हैं अब स्कादोप प्रराणके शकर साहितारुय तृतीय परिच्छेद के कल्याण खड़ने शीमालि बाम्हण और विनियोकि अप ने स्विस्तर कही है उसका सार निकासके यहाँ देखाता हुं

के गणेशायनमः अयस्त्रांदेएएराणे कल्य परंदे श्रीमास्त्र म्हण श्रीमास्त्रिणिक एं रत्स देव कि वेश्यन एत्य क्रिये ए त्यते स्कद्यव चेत्देवपुन बूहेकू भागे के चित्रक यक्ष्य देव देव गेविद्य श्रीयासह १

स्कद शिवल प्रच्छते है के मब देवता और विष्ण सहयों सह वर्त मान कीन से भूमिरे की हा करते हैं वो स्विका वर्णन करो १ छ

या ६ ७ इतने में बोहा नाररने आयके कत्वाकि मीनम ऋषिके आभममें नखे जहा पानकोसके प्रमाणसे श्रीमाल सेनहें ना ९ ऐसानारदका बचन सुनके बडहपैसे कीड्रिसर्वदेवाश्वशैलपुत्र्यासमभवान् श्रीईंत्यरक्ताच साधुप्रत्वयावत्सभागत्रेयस्करमुदि २ प्रवस्यामियथातत्वशृष्यगदतीम् म यीवनात्वसुतोराजामाथातेतिकृतोभुवि ६ तस्मिन्शासिवयमज्ञेद्रमु कामोसुनिययी नशिशोभाययासाधैतदाराजातिहर्षित ४ मा धान्।मणिपत्याहरवायतस्रकृत्वचमे जातिनस्नियाहेलकिमा्गमनकारण ५ ्चिशिष्ठउनाच स्थानादागमनयस्मादस्मीकतस्र्धुः ष्ट्रमो अनुदारण्यमतुन्तरीर्यकारिसमन्तित ६ अस्तितमात्रमोरमाकतत्रसप्तर्पयोऽमला पातालार्यावगाहायत तसीम्धिकगिरि उँअ याजगामदैवर्षिरस्मान् सर्वान्ववीदिव आगच्छतमुनि सेषामच्छामोगीतमाश्रम् ८ य प्रसादेनप्याया प्रविश्वेराप्रमाणतः श्रीमास स्त्रमित्यासी दिक्षतो स्मिग्रहे ते त्यंतीर्यानि भूयो सित्यागच्छतपरयतः वशिष्ठावाचः द्रत्येर्यवेचनकस्वावयसस पेयोस प १० स दिताच्याममार्गणंगीत्माभममागता विभात्यसुविरकालसात्वापीत्वान्वसर्वत ११ यथास्यानययु सर्वेसुनयोदार्घदर्शि न निरात्वहरीनाकाक्षीहर्षादिहसमागतः १२ तृहीतमतपस्तोमनिर्धतक्षुवपुरा व्रदाने भिय प्रमात्सेत्रेशीमालमुच्यते १३ भयम माघाताउवाच कथतदाभवत्सेत्रकरात्रामालसत्त्रया कथतेत्रागतालक्ष्मीद्वीतुष्टाव्यद्दी १४

तबधिव कहते हैं इंग्रन व्यवण कर मय कहता हु २ एक समयमे विशिष्ट पुनि स्थी सह वर्त मान गाधाता एजाक परक आये उस वरत राजाने २ ४ वह सन्मान करके आनका कारण पूछे ५ तम वशिष्टक इते हैं हिराजा। मेरा आश्रम अर्पुरारण्यमें हैं बहा समरुषि आये फिरउन्में के साथ सी गिथिक पर्वत के आर मय अर

वाहा स्नानिकपं जनपानिकपे पाहोत दिन रहते बाद १० ११ वो सप्तानितो अपने अपने आध्यमपे गये और हे माधाता बोहोत दिन सपे वास्ते तेरेक द्रवनेकु जायाहु १२ वो आध्यम गोतमार्क तपन्त्रपासे बढा पार्वन है और तक्षाके वरहानसे भी मास होत्र उसका नाम स्वाहि १२ तब माधाता उद्धते हैं है विशेष वो होनेकी श्रीमान सज्ञा कायस सर्ह और गोतमने नपन्त्रयों कैसी किये मो कही १४ छ छ छ छ छ

43

पशिष्टकहते हैं होराजा! पूर्वि गीतम ऋषिने हिमालयके नजीक भाराहुग होत्रमें आशिविक आराधनाकिये १६ तब बहोत बरस गयेबाद शवने दर्वीन 'देये १७ तब गोतमने स्कतिकरके मगाकि जाहा निर्भयहों ने तपश्चर्यों करु वैसा होत्रतीर्य वा पर्वत दिखाब और मेरिस्त्रीका विशापोद्धार का समय आया है १० १९ तब शिव कहते हैं 'हे गीतम तेरेकु स्थान बनाताहु २० जाहा मयने तपकियाहै वो सी गधिक पर्वत के उत्तर बाजु २० और अर्बुदारण्ये जे नायन्यके तरफ न्यवक सरोवर है वाहाजाब

करंत्र्यतपस्तेषेगे तमोतद्वदस्वनः विश्वक्षत्वनः शृणुकाव हेतोराजन्तु वेस्त द्वतमानसः १५ पुरासगीतमः शिष्टे हैमालय समे पतः भरतंत्रं ज्ञास देवक रहमहत्तपः १६ एवं रेवह देवे वेशह देवे वये सहस्र एके देवे तुष्ट गीतमस्तद् १७ वस्ते उम तांनायनम् सम्माधा ६ पत्तद्वित् वर्षे लेके देव से उम्हमं १० एवं स्थते मह देवको मिनक स्वयः केनुषाप व देः कालः दे यार हर्ने केल १९ के रोहरे हैं के देर रेन अहसरों सेच शिवकवर सार्ध्य हम दे पर का अर राम्य हं सर में ते कर दिवा -मेदेव नाम ऐद्वर्त मं २० ए अम् यातए स्नार दिए रूक्ष यका क्षिणा असिरी में धेकाद देर तरस्या देशि के २१ व्यव्य महिदार्णय त्रे द्वां दर्द हेतं स्रास्त्र संवक्त मत्त्रतं में होते में १२ इत्युत्का तर्द देशें होते ति सक्त चयों समारे कर गणे केंट चीके हैं ईस रैत-एं २३ उनंब १ घेणसहन रे भारि १ हर च अंदव ख्यास रोभ्यासेन हुत्र स्टलम्पर पे २४ आगते गेतिमः पश्च क्या रहस्ये न एदेशतः एंच्य स् रेम बंतत् र मरंग्रे केण करने १५ तब इतां स् नेमीय सच्छे एक रेतपः दत्य मानाक्ष्तर सा के इ विध्या दे देवर ताः १६८ देवाऊ दुः वरंग्य देवे वर्षे यने मन के वर्षते असमाव तपसोधोरात् सम् वरम गीतम् २७ गीतम् जव च यद्गत्य हेश नममदेव : सकेर व : हाणों मेवरमे ने त भी पवत देवत : २ प

२२ इतना कहते शिव अंतर्ध्योन भये चाद गीतम चेत्र्यवक सरोवरके पास आये वाहा स्थलका संकांच देरवके २४ उसके नजीक दस क सके उत्पर् वरुणकाचन या बाहा आयके २५ वहानपकिये व तर्प व नरो बहााविए कहा दे रेवता गमन हो चरु वस्तान मणे एमा महने उमे २५ ८७ तद भीन भने च जाकि २० छ-

यह आयम मेरे नामसे रिख्यात हो और यहा सब देवता ानिवास करें २९ तब देवता कहत है कि शानि हनसे यह सेव गौन मा व्यव नामसे विस्यात होवे गा ३० कीरमया होम तुन्य होनेगा १२ ऐसा कर्क देव अतर्थान हुने बाद गीतम अपनि स्थी सह वर्तमान बाहा वास करते वासे १५ १४ १५ सिहस्य गुरुपे नाहा-स्तान करनेम गोदावर्र स्तानका पुष्प होताहै १६ १७ मानधाता पूराते हैं हे वशिष्ठ वो मीतमाश्रमका श्रीमाल क्षेत्र नामका पसे भयासी कही तब १० वीरिन आश्रमीयममेवास्कनाम्नार्ज्यातोजगवये बम्हविष्यादिदेवानास्थितिरत्रास्कशान्वती २९ बम्हेशकेशवाऊच्य अरामध तिविषयेगोवमाश्रमसञ्चयाविरन्यानमिहसुन्धेश्चतीर्थलोकेशविष्यति ३०माधेमासिस्तिपक्षेत्रदेशसाहयेनरा स्नानेनत्राद्ध-दानैश्वमुक्रियनसभाय ३१ पचगच्युर्विमानीयंमुक्षिष्ठत्वाग्रमः गगाशार्थसमोत्तोकेभविष्यतिनुसशाय ३१ वशिष्ठउन्त इत्युक्कानदेंथेदेवागीतमाभार्ययासह न्यव्यत्सीनन्नहर्षेणस्यात्रयोगीतमाभिधे ३२ एकतर्न्यवक सरस्यक्रतोगीतमाभ्यमः अनातरे तंनुत्यागात्नभ्योजायतेनर १४ चतुर्ये अत्राभ्ययमभूत्यवेमात्रमेनसूर्युम्बहं युन्नशातस्यविषस्यभक्तिभावेनगीतमी ५५-स्नानकारमितुयत्रेचागतासिहगेगुरी प्रस्तानकारम्यतिसिंहर्भ्येगुरमित्रिष् १६ तेषागोदान्रिस्नानफलपूर्णसिविम्यति श्रीमाल वासिनीयन्या्येवसतिवराञ्चमे ३७ पचम माधानाऊबान्च तथायीमा बतायासीदवरेगीतमा यमः तिन्ववेद्यमेस्विनिन् त्राणीहभाषसे १८ वशिष्ठा बाच पुराभ्रागे समुत्मनात्रीरन्याताक्तिभूपते अस्तिनस्पिणीकन्यानासितंतत्सहशास्त्रि २९ नित्यविचित्रयामास्त करमेदेयेतिसोश्युं एकस्पिन्दिवसेतत्रशासीचेनारदोस्ति ४० भूगोर्मानसिकक्रलाक्विरतद्नैनर् श्रियाविवाहयरितुगतोवैकुठमदिर ४१ मुनिर्विज्ञापयामासवासदेवजगदुरी भ्रागोदेसमुसन्नाप्रयशास्मरसेनिक ४ २ एकदते हैं प्रतिभाग्रहणीक अद्देन रूपिणी शीनामकी कन्या मइ सोकन्याक्सिक देना ऐसी चिंता करने तमे २९ ४० इतनेथे नारर आयके यह कन्यांवि प्युकु देना ऐसा भगुका विचार मनका आनके बैकुठम नायक ४१ विश्वकु हत्तात करवा ४२

अप्याव १६

**बाह्मणेस**ित

तब विष्णु नारदका चवन सुनके बझादिक देवता बोकु छेके माघ शुक्रणकादशीके दिन भ्रमुके आध्रममे आयके बोकन्याका म विधि पाणि यहण किया ४० आरं कर्यों कु अपने उसमके उपर विगयके बाद ो उसमें जानेका विचार किया ४० इतनेमे नारद कहने हैं कि हो विष्णा यहदेवीने अपनास्य स्वरूप पिछाना न है है इस न्यावक स रोवर्मे स्नान करवाय उसमें मनुष्य भाव दूर होयके आत्मज्ञान होवेगा ५० ऐसा नारदका बचन सुनक वो सरोवरमें ५१ छहफी सह वर्त्तमान विष्णुने रनान किया तब-

तामुद्रहार स्मितिकाभ्यद्यारिणों श्रीमण्यान्य मंन्यो रहिद्रादेवे धमन्दिते ४३ तत्न रिकेट ए तस् मम्मान्यारतं हिनः माहस्य वम्लेट्सेट्परेचेक दर्शदिने ४४ नस्केमे मदेवत्य उद्वेत सिम्धा रस्तं त लेशस्य नेविन्दं भूगोरि न्यवेद्यत् ४५ ब्हा दिदेशन् में व व व होत्सर ने ऋशं तद ते देवतः स्टेम ह स्व अमहेत्स दे ४६ अन्य कर स्वरंपन इन्स्रोत् ज्वलिं हात्रानीर नातनं देवः भूरदुहित्या णिएडरी जरहम् नर यही तव नीयः ४७ घद हिंगी छत्र सरे देम धरेहताशनंदे राजाःस्ट्यंसूः उत्संगमारेणभूगे संनूजा जगरिति दिरेषरजन्थन सन्देश इत्येवक्रमतस्र स्टब्स ना हुन रद हेमभी र रेर देवे नात्म नवारिस नता ४९ करेतृत देह सन नच्य बक्त स्यान्त १ दे हैत्व म दु एउ च बन मत्रक नम्पेरं के ५० वशास्त्रक न सदस्य वन करता विदे विदित्त र कि न वृद नु र त. प्र म स्य संव कर संपत्र ह रिस्टो देहते देन गहसहिता तद्येको देशोदेवास ष्ट्रहार महदे दा ५२ अ व वस्तानम के पातस्याम नुब्द वे प्रते अ ए गरम हिपान्वदेवत्व चापंचवन्ते तूर् देव अत्ः भारति देव है एक हित्य कर हित्य कर देना शिव वरंद चर्छ तदेव श्रम्बंच हरेण्य स्देमेंदेव हराहे स्दिवायह न दिदेश यह देवारहर न स्केमेंह प्र

करें डो देवता और काषि रनवन करने लगे ५२ वो स्नानसे मनुष्य भाव जायके देवत्व पास भया ५२ तचराव देवता कहने लगे के हे देवी जगत्त कल्याणाधी भ्रामुक्त को आप पकर भये हो सो सब देवता प्रदान देते हैं सीमगो ५४ तचशी अहमी कहते हैं कि हैदेवता हो जोक विजाप वरदान देते हो तो ने सिद्व ता के विमानों से यह प्राथ्य भाग मान है विस्थित शोधाय मानकरने कि दच्छा है ५५ ५० और नाना गोनके सम्भावर अपने अपने स्वावसाध्योक साव है अस उनोकु र्सप्रधीका रान करतीह ५० और यहा मेगाबि अश्वसानिवास रहणा ७ ५० तब बिष्णुबि कहत है कि हेदेबि तुपरम शक्ति है तीर रच्छामे आवे वैसाकर ऐसा कहके अनन द्लोकु क चाकि ५० तुम सबरिशाम से मुनी भरोड़ साक ऐसी आसी देके अने ५ वार विषक्षी कुनुवाय के करवाकि बड़े बड़े बरसह बनैयान एक नमर्बनाब ६१ ६० तब विश्व कर्मीने शणमानमे इस्परी समान

निमाने भूर्वतायद् त्र्य भूमिविभूमितासीये पिरवृतातद् त्कर्षिष्णमिसाप्रत ५६ अभर्पयोगहार्मानोनानागो नास्तपसिन सहपितायानुपुरे शिम्ये स्माइता ५० र्गाम्याप्रदास्यापिबाह्मणेष्य समाहिता अनारोनममेबास्कानुवास शास्त्री समा ५० विष्णुरुवाच तदेविपरमाशिक्येंदिछसितयाकुर इत्योख्यायचतुन्नीद्वरकोचनिषयेषिण ५१ भोभोभयातत्वरितिद क्षुसुर्वास्ततदिताः येके निन्युनयः संवितानानयतमादरात् ५० उत्यादिष्ठागताः सर्वे समान्तिद्वान्गणाः गते ख्थगणेत्रेषु निष्युनीना प शिक्षिन ६१ अत्रसीपानि रिन्यानिकुरुशिपमति (तः अष्ठम् वशिष्ठ उनाच अधस्यानि दिजेद्राणापुरदर्पुरोपम ६२ पुर्निमेषमा नेणिनप्रमानिनि मेंने दृष्ट्यानगर्गम्यानिष्ण सुद्तार्गी ६५ अयन्सापुरदृष्ट्यानत्वोचान्यम्यप्रति । ब्रह्मानान् श्यिमहिन् स्पर्माक्षाभिराव्यास्रिय्सुरे ६४ तत्र श्रीमालनान्नातुर्वोचग्यातमिद्पुरं द्वावद्त्वावरदेचीतस्थ्वद्यादिदेवता ६५ ऋषिपुनागमी 

नगर नमने उसके देसके नहीं। विष्णु पश्चन नारे ६६ बहारी नोनगर कु देसके उहमीकु कहते हैं है उहमी श्रीका उद्देश करके देसाओं के विमानमाखासे यह प्रश्चिक्य पाइ है स स्वे ६४ भीमान नामसे पहनगर सोकने परित्र होने मा परा वररान इसे बहा और सबदेव सहे रहे हैं उतने में विष्णु गण जो गयने छोसुनी परो कु से के असने ६५ ६६ स्वे सब वेर बतने निषुण और सपितक शान इति दवक मव कु कुक है ६७ अब कोन कोन से सबसेसे आबे हैं खेक हते हैं की शिक्षानरी आगीर थी। बबा सेय आदि से के अबि पर्यन बब का सुस

44

मध्यप्राध्

ब्रायम्बेसि

रयार होत्र पंतरात देळतिशा लेनं रेरे:क लेंजरात्सह शता नगत पापन ६९ विश्वतं हो दे इस इस् मलया चलात् शता ने पंचचेषायाः शर्ने रात्तरा निनाः ७० वे देसूर्य रकादक्षीशत न्यश ६का नेच के गोकण दुद्क्ष्येष्टात् सहरत्ना हितात्मना ७१ राज्न्गेद दर्तीरात्म मण्छे नरेइ तं प्रभास द यह देय हा देश दि कशन ७२ उजायन दये शेलादागत ने सर्भ ता न इति कर्तन्यायः शतमेलंदशे नरे ७३ गोमत्याषु छेन त्ह्राभ्यामे है सम्मन्तः समीयुः सोमप ऋषु सहरूने देवसेनात् ७४ शत सी महिल द्देर नग महिनम न एक राख्य कर देश द है कर स्ट्रिंग रे पर देहे शह तर होतर देश नर वर स्यां अम स् ण तन्द्रिक्षिक एक कर इसत्ति है के देव निर्देश देव के पर है के के देव कर के अवस्पति है के के गास निशान्दर केत्येन के तर है दिजान मामस्द ७० सहकंत् करहे व त्यू दूक ने हे रेग के जमदान्ट एंच परे न देवरे हो न रेर्न ७९ रत्रच देहीमत्र रस्तः भ मंशतंत्ररं भे पर्वतात्महरू में निगादिश्व करें क्षे देवमहरू तुं क प्राय देवमं निस्माद् के णिसहसा के ते वृत्ये तर कर महार ११ मेर दिन न्वेष है बहात ने वर है दिना: स्रत्य से स्वयं स्रह्म रे केव ने देव सीम क्ष्माल्य इजन्म हरू से म्य जीना नदीर तेष्यातं चक्योगंगाम गर्मग्रे दे महरू द्वेत्र पर्य ते दे द्वितान प्रे कस्य राम् भीर त्या एक दे विष्य दे के दे ते के दे ते के दे ते के रिक्य इत के रिक्य दे के रिक्य दे के रिक्य है के दे ते के त्रत्वरं अन्ते त्वरत्र च्यत्ने न्हर देन देन देन

आगतान्तान् मृनीन्द द्वातस्मीं प्रोतान्त वेहरि समनेतान्द्विजान् पश्यनाना गोन्नान् मनापिण १० विशिष्ठवाच तद्वा।
न्वाराणान् मेशान्य लोक्यहरिमिमा स्वागत्वोस्तित्व पात्र प्राप्त प

सारस्तत आम्रण और अगिरस माम्रण ९७ कहने संगेकि अम्पूजाकु गीनम योग्बाई यह बात सनके सब दब मधी गीतमाहि रकति करने सग ९८ वृतने मेसिय देशके रहने गांचे कितने काम्रण थे सो बडे समस्तर हर्षायुक्त होके कहने तमकि हे गानम तुम येष्ट होनसे गुणसे मये सोकहो ९९ ऐसा अह बारसुक्त उनाका बचन सजके ) आगर

अध्याय १५ भूगुणुरुपि

٧ч

म्बासण कहते है कि हे सिध बाम्हण हो जो अपने गुणसे सन्मान पारे ऐसेजो गोतम ऋषे १ उनोका तम देश करते हो बास्ते वेदतमेरा आध्य करनेका न है ऐसे-कारणके विदे अगिरस बासणोने वो सिप बासणोन्न वेद वात्य किरे १०२ सो बाम्हण अपने सिंधदेश में बसे गये उनो कु सिध ए प्करणे बाम्हण कहते है उनो का उसनिष संग आगे सिवस्तर किहने बोह्माह्मणोके गरेबाद गीतमक्तिका अध्येपाद्य पूजा प्रथम करके १०२ वाद सपितक सबवाम्हणोकि वस्तानंकार छत्रवाहना दिकसे पू-जाकरके पहातमे कुरा जल ले के विष् गीतम ऋषिकु कहते है कि हे गीतम यह सर्व पदार्थ सहित यहो कादान ५ सव बाम्हणोकु देता हु ऐसाकह के गीतम के हातने ज-

तम् हें देवते हुक्यान्नदेदः संयपिध्य ते द्रुष्टमा १२२ हें प्रेटेंदब तह : छत् नृष्ट १ हिं देशत्दाज्ञ सः सेंध्व रण्यना सनः मन्द्रुष्ट प्राप्त कर्षे कार्य करें ने स्वार्थ छत्। ते प्राप्त कर्षे कार्य करें ने स्वार्थ करें ने स मिश्रेर हेर दुर्द र्चु हिंदी निमस्य तप सिन ह पाणीजलपं च्सेपत्य तहा कि चत्र विष्ट हि ए सरेण प्नारि जगति मेगां ७ यू जैते ह देने देह यू जैतन्स जन देन: अनेनंबह नगरेद नेन स्तासदाह रे: च मे ते पहलास देन मो चुस्ते तुत् यून सित् त्र देवा देने दाश्च देन मूच्यम हैता ९ देन ऊत्तर अंशायेन वर देवम तस्य स्टाम हेन सं श्री मार्त व वरे में ने श्री मरे तन्देषा दे १० अवर्षे मा लेनो देर ने पूजिर वरंतिम नंद :ते हार पितान् नामान् साध दे वरं महेवर ११ श्रीरस्यजगते पूर संदेवान् चिहिने हेणी तस्रास् रे हेज में न्यातेषयो नास्त्य पेका दुरिश्व दिश्वानते तस्यो हेजानाह रामें गरं देन्यु व च दर्र

हैं देन अप वरंत्र एतमाविरं 1३ वदेने भये ६ तव वस्पी वाम्हणादि हो कु कहते हैं कि दे दिनारे गान् हो नाम किन्यानिया पृथिक पवित्र करते हैं । मा

सणीकि प्लाकरने रे विष् पू जेन होते हैं वासी रस बाद नगरी के दानसे पिणु महा गरे कु परान हो । तन तथा एक होने भाग है है न बाद दे । इन क्यी हम सच्हें नाबि हमेरी पीतिके विये यह से अमे वास करिगे १० और जो यह पीमाति नाम् जो के प्रवासी के काम ॥ द्रम पूर्ण हिरो १ ए जानमाना होके ही समस्यणिक उनोक् देसके निष्णु नस्पीकु कहते हैं कि रेदेवि अनक गोनके ब्राह्मण भाग है सो देखर नवतस्मीने उनेका बहुत मन्मान किये ११ बाद की सब क्षा याने साम् जनक निष्णु नस्पीकु कहते हैं कि रेदेवि अनक गोनके ब्राह्मण कार्या के साम के साम बढ़ १ नव तस्पी विष्णुक पूछने हैं अप्यापाद बारमणत्यनि म्प्रताकिये प्रता चेते दुसरे नहि है १२ ऐसा देवोका बचन युनक नक्सी बाष्यणां कहते हैं है आपरण हा तुम इन्छित परवान मगी १२ नक्साम्यण कहते हैं है~ माना नुपकित के रून पुरीका त्यांग करना निक भीर तुमन पुन्ती रान कियांडे १४ परत पूर्विपालन करने के बाम्बण समर्थ ना है वाम्बणका परमधन मी है १५ वा स्त गायोकादान करो नव विष्णुने चार व दा गायोका दान किया १६ सबर्ण रत्नका सन किया और उसरोममे १० सबा करोड नीर्स है पेना सीस इन्यरनासनोकेनडा यगोबहै अदरा कुछदेश है १९ ऐसी इतारबाद शाला है आर इतार नजार किशाना है २ एक इजार दर्य कि शान्य है भनवान के पर एक छाउन जा सहस्राह है

दिजाऊचु द्यन्नम् पुरीमातस्त्यात्याज्यानां स्किन् द्यचप्यितीयतस्त्याद्नाद्रिजन्यना १४ नहिपालयित्राकानाम्हणादे विमेदिनी गाव शेष्ठहर्मसूनाहिदिजानापर्यधन १५ तस्माद्राव पदेया व पृथिन्यादेविनिष्क्रति विशिष्ठकेवान्य तदादान्य धराते भ्योग्नासस्यत्वय १६ कोरिकोरिसुवर्णस्य स्त्तसर्व्यानविद्यते अयक्रमेणन्यासुन्देवासिष्यानिभूरिश १० सामा कोरिज्यनीन योनान्त्रज्ञत्यतिस्रपः प्योनारवतुपंचारान्सहन्नाणिद्विजन्मना १८ अष्टाद्रात्ये रासन्गावाणानवसूपते अष्टाद्रान्यादुर्गान व बाहेनवानरे १ बहाशात्म सहस्राणिनलार्भान् दियामता पण्यविक पशालानाम एसाहसिक नृप २० आसन्तरपायं साहर्म समा नामुपव्भित् सम्भोतिकसोधानातस्मेक मुहीजसा ११ तपापिकसहस्माणिचतुःप्छ्यधिकानिच त्राम्बर्यम्भूद्र्यस्वास्मन् स वनमंडपे २२ आसानेषुद्वित्रेषुतस्यीलर्मीम्बतत्तुर् अहोत्तरसहम्भस्यपुद्यानाहेममानिना २२ दुनाजसाधिपनिवेमासावस्त्रीत भिष्मती विशालेपुदर्शिषेपुरेपतीप्रतिविति २४ दवर्राजगतामाताम् हुर्भु रवेशत एकै कस्मिन्सु उरीकेद्तान्यधीतदतरा २५

भिरमास सस्यामयानगढि व इते हैं।वस्तार योजन १६ हैं उपायमानयोजन ९ हें दार १ हे उसमें तलाव १ . है कुन १० है जावाड ५० है देवे १०९ एने अहि आश्वर्यं सुक्त मो भूवन परवम २२ सम वैनातिस हुनार माएक वैन हैरनाके सामने उदगान होहे २० उम बस्तत नहण देवताने पुरु हमार आउरहनमें समनदीमाना हि ये खे कस्मी नीने अपने वहास्य उमे भारण किये दतने म वी कमला के विशास पत्रा पुरुषोक मिति विदाद सके लगे । भारपद

ाभाषाद

**बाह्यच्यान** 

YE.

सीजगन्माना वारवार वो प्रि वियोज् देखते हैं इतने में वो कम ठोके सब पनोमें से २५ स्वीपुरुष बाहेर प्रकट होके हात ज डेके वे देन क पार्टन करने कर २० कि हेदे वी हमने क्या करना हमेरा नामक्या और कहारहना २० और हम भिर्मा मगने के निह वास्ते हमेरे जीवका के किर को इकठा विद्याल हो देवी क हिन्दे की हमने करना हमेरा नामक्या और कहारहना २० और एक जीवका उपाय कहते हु सो हुनी ३० हम यह अपार हमें है है पिन विवासन बाए ए हो मेरा बचन हम हुनो २० हमने नित्य सामगन करना २० और एक जीवका उपाय कहते हु सो हुनी ३० हम यह अपार हमें के कराद नाम से (प्रकृत जिने कहते हैं) विज्ञात होंगे और बाह्मणों के सेवाकरन सरार निर्वाह के यह अरह का हमें कराद नाम से (प्रकृत जिने कहते हैं) विज्ञात होंगे और बाह्मणों के सेवाकरन सरार निर्वाह के कर कर के का कि करा होंगे के सेवाकरन सरार निर्वाह के कर कर के का कि करा होंगे के सेवाकरन सरार निर्वाह के कर कर के का कि करा होंगे के करा हम कर हम के करा हमें करा हम के कर कर कर कर कर के कर कर कर कर हम के कर हम कर हम के कर हम के कर हम कर हम कर हम के कर हम कर हम के कर हम कर हम के कर हम कर हम कर हम के कर हम कर हम कर हम के कर हम हम कर हम कर हम कर हम हम कर हम हम कर हम हम कर हम हम कर हम कर हम कर हम कर हम हम कर हम कर हम कर हम हम कर हम कर हम कर हम कर हम हम कर हम

मित्र हिम्द है! स्टिए पद है! ३१ के मिलिट हि सुर कार्य दे सा टेक्ट के से से मांच है के में में है के हैं है ए कि बार्निक हे में से से बार्कि स्माः ३२ रत्न के हैं जोंद्र णांप्रे स्वार हरते हैं ये के प्रें के प्रें के प्रें के वे वे प्रें के हैं वे वे प्रें के वे प्रें के प्रें के वे प्रें के वे प्रें के हैं वे वे प्रें के मो भून देवसे ल्हारत १५ उलंक स्तर के स्ताध्य के सम्माद के लताद रुद्ध गड स्मृतः स्त प्रति देहटक एक प्रति प्रति के विकास के समान के प्रति के विकास के समान के प्रति के समान के प्रति के समान के के समान के प्रति के प्रति के प्रति के प्रति के समान के प्रति बनाके देना रलको परिशाकरना उसमेजीविका करना ३२ वशिष्ट मांधाता राजाकु कहते हैं के बो कई एरुषम-

तिथिंबोत्पन्न भरे सो ८०६४ आउ हजार्चोसट कठा द्वागड बाम्हण मरे उसमेसे वेश्यधर्भ सोनिभये से पटनी सुरित अमदावादी खेबाति एसे अनेक भेदसे बिख्यान भरेजीसवादणके णस रहेओइ गोत्र कठा द्वागड बाम्हणका भया इने का गोत्र पवर और जल देनी आणे को मालिक गोत्र मेजान ने ३५

यह पागर बाम्योने नेदाय्ययन करना आमि होचारिक करना श्री सक्मीके बचनसे सुवर्ण रत्न पंडना सोनियना अधियेयना करना १६ ऐसे पर्करात र्जाप्या अपनी सीया सह बच्यान यथा कपसे जाम्हणोदि सेवाकरने छगे २० और पिर श्री छर्मीनी विताबरने समे कि यह बाम्या सब तपन्या को अधायभ में उसब्रावमें उमोक्स धन पान्य से पानन कोन करेगा १८ ऐसी तस्मीमीकी पनका इच्छा जानके विशाने सेवक उत्पन्न करने के बारते अपने दोनो अक्कु देन सं १९ तम बोउरु भागवेरी पत्तोपवित और गुसरके दृह धारण किये हुने और शुद्ध वस्त पैने हुने वैश्य नाति पैदा सथे ४० पाद वो सन विष्णुकी मार्यना-

तेकलात्। समदारेपीयात्मागयस् दिनान् पुनिधात्परादेवी बसूबनुपसन्म २०भीमालेदेविषयेकी धन्यान्यानि स्रिरिशाणा लियमात्विषेषुतुपस्युनि रतेष्युप् ३० तत्तामनोगतमास्यादेव्यादे वीजनादनः उद्ग्वितोकयामास्त्रग्रेकत्येहतादुर् ३९-पद्मीप्नीतिन संर्वेविक्रिनोधिपिनियुप् दहमीद्वयर्गानन् विभाणायुक्तवाससः ४० तेपणम्यचतुर्गोहिनिदम्खुरतिहता क्ष स्मानादिशगोविद्कर्मकाडेमयोचिते ४१ वशिष्ठकाच तुम्नतामण्यान्विष्णुविणिम माहतानिद् विमाणाम् सियानित्यः वर्तितन्यपरोपतं ५२ पासपात्पहिपर्वात्वाणिज्यचेतिन क्रियाः अध्येष्यतिहिजाहेदान् पेजिष्यवितरामरिन ५३ एहमा रसमारोष्ययुष्मासुप्रणतेषुच तथेत्युकायवणिजोययाभाग्हिजोत्तमे ५४ आहुता रिनिशुम्स्वेविष्वकम् हूतान्यहान् दः शानरसम्बद्धिम् पारेवणिजामसूत् ५५ यस्यम्तियहे पोस्तद्भोत्रसोन्वपद्यतं प्राग्वाद्यदिभीपूर्वस्थादिस्वार्यसेणस्यापनो त्वदाः ४५ तयोशीमारिनोयाम्यामुत्तरस्यायेचोविद्याः पीतिमानाज्ञांन्यां नु विज्ञानाम्यगहिते ४७ करने लगे कि हमेरे योग्य कर्म काइस

उपदशक्ते ४१ ऐसानो निप्पक् वैस्पोक्त वनन मृनके विष्पुकहने तमे कि है वैस्प हो तुम सबीने महजाएणोकि आतामे रहना ४९ गयोका शतन करना स्विति कर्ना व्या-परकरना गर्तु मेरा कमें है और तुमेरेक परोक्त कार सार सुमत करके यह जाण्डण यहा याग कि रिगे ४२ तब बनियो ने तयासक कह के प्रकेष शहाणकु रोदा बनिये पेरी क्रम से ४४ विषक में के विये दुवे प्रमेन के हजार १००० विनये रहते स्वये ५ पजिस जाण्डण कि सेनाये जो बनियो गोज विनये के नारवर्ण बने ये उसमे

आम्योस

वे जाहेरके पूर्व देशाने जोरहे उने न मार्वाख़ोरवाल कहते हैं और दक्षिणने परो क्ष्या पश्चिममें शोम कि उत्तरमें उत्का ऐसे रहते माने ४७ फिर उने के एन पेत्रा वृक्तरे बेन यश राह्मित भया ४० ऐसे बोजाम्हण कु स्थापन पूजा करके उनोकु वस्पदानिक चिताकरने छरे तबविष्णु कहते है किहेलहरो ४९ तुम मनसे क्या विचार करते हो तबछहर्य र कहते हैं कि हे विष्णो यह बाम्हणोर् स्देर पहुवस्य देनेवाला यहा केन होवेगा? ५० तब विष्णु देनेका मनोगत जानने ५१ अपने उक्कल दे खेते उसमें से शिखा सूरु देउ भार ण क्यें हुटे स्विस हेन एरपंजलन होने ५२ विष्य ए कहरे तो कि हमकीन हा ते औरक्याआज्ञा है विष् कहते है तु मदीर है की रे यवस्त्र पहकूळ वरूर करना यहर बाह्मणों कि सेवारे रहेना ५३ रोसेवें हजारसे इन्छ अधिक देश्य वीस्तेत्ररे ५४ जोजो बाम्हणके विभागरे रहे वे गोत्र उनोका भया ऐसि यह पट दे एजरा तिक ता ति भई-

तेरं एक प्रापेक रेरोब सुद्राहिश्याः स्था देतानं द्वितानं दूर्णतानं राष्ट्र देशिया तेरं दूर्वतानं रेदे वी देरे पर कदा के नितान देशी के रेपेचे तरा किता है कि एक पहला कि -देक विदित्य नेम पूर्वन ५० एने प्ये देव विद्याहर को दान कम वेख के नामिन गर्य तह देव देवे जन देनर ५९ एके देव है मनेण रद्वमून नेशारें शिरतस्व धर नाज न्दंड देवरह रेणः अश्रद्ध त्न मज्यून विस्केदेवम ६० विष्कु सवन् वे श्र ह्यू में हे ने न दूर के रहे के रियं के रेक के किया किया है के नियं के मारे के पियं करे पर मन्त्राम फल्ट देश ले कंड गरह तराम् दे दूर खरूर तर महस्वर ५०

५५ सो द्रीमाठ सेत्रमे रूर सह वर्तमान ब्राष्ट्रण-को संवारे रहे फरवो पेताकीस हजार बाम्हण सब महातस्रों के रक्त तकरते भरे अपने उपने घरों रे नते गये ५६ बह्मा देव देवता स्व स्वतोक मेचले गये महातस्रोजी एक-अंशरे के माल स्वारे नेवास करके अन्य अंशर ५० विष् के उत्संगापर बैठके वैकुठ चले गरे उसदिन से वोस्ते ब्रामाल नापरे प्रस्वात भया ५० छ छ ।

अध्याय १६ नासम्मेलिन

विशिष्ठज्वान्य भूयताराजशाह्रिकीर्यानुक्रममादित चेयवकेसर् श्रेष्ठेकर्नव्यस्तानमादित ५९ हताविश्वपुरदेत्यशिवेनैवस्तसर् चैयवकेत्रदेषुज्यादेवीयोगस्वरीतयादः यामसन्तासुनी्थायपुत्रभादात्सुत्रस्णततोगच्छेन्महाराज्ञ स्थानामा कित्रसर् ६१ अन द्यापिकीर्त्यते मेर्त्ये काकनाराहस्युन्या ततोब्रह्म सरीयन्छे द्वहाणानिर्मित्पुरा ६२ न् तक्येनक सरिक्णाविसमर्चयेत् ततोगन्छे-न्वृषयेष्ठसर् केरातमुन्तम ६३ तृतोगन्छे चपन्रोष्ठयन्। स्तवटयक्षीणी नदयेचमहन्। यैयस्कूपमितिस्फेट ६४ वक्सवर्तीततोगन्छेत् क्षिनानाकुरुद्देवता तत् सपूज्यद्वी बहस्य्विसरस्तरे ६५ दानानाम्नाचिनिरम्याता्देत्यानादम्नायन्त् "प्चिपिणिध्याय" ३५. ततो गन्छेन्महादेषभूर्भुवस्तिविकतं ५६ ततोभेष्युदेवीन्वभरद्राजायमेस्थिता ततोगन्छेन्छपर्यष्ठनागिनीरलेकमातर ६७ ततोगन च्छेन्युश्रेष्ठदेवीं मुंकु विनी नर् यापु गुश्रीपुरेराजन्य कुलेनापितोषिता सुकुलोक्स्युद्धणिज ६८ ततीजये परगुच्छे छ्वत्याउ चरेकुले नुतागच्छेन्यहाराजप्तिच्यादिशियान्व ६९ यत्रक्षेपकरीदेवी गिरिष्टगृष्ट्यस्थिता ततोगच्छेन्यप्रतेषद्धरेष्यर्भुत्तम्-७० मत्रपूर्वेनपस्तेपेगधर्वोद्धरेरपुरा नतोगच्छेन्द्रपश्चेषु खरकूपमतुत्तम ७० देशेखराननायभूनाम्नार्व्यातास्वराशनी तत्ते गच्छेन्यश्रीष्ठ देवसिद्धविनायक्ववेरततोगुच्छेन्द्रपश्रीहनदूरेगीतभाष्त्रमात् ॥ यत्रास्तेन्द्रमुद्धार्यातास्यायाराधितापुरा७३ आर्याक्षपस्त त्समीपेतनी चढी खर्कनेत् यत्रमो स्गतारा,जाधी पुजो दिजकारणात् ७४ तती गच्छे न्तृपश्रेष्ठती पेच प्यति सं र चुर्रारोस्योत्तरभागेतिगस्त गापवर्गद् पुष्रेनतोगस्छेन्गपुश्रोष्ठकार्यपेष्यरपतत्यस्यान्वत्रेननद्यतिर्विषरोगा राशिर्णाउध यभवद्भाद्शादित्यातपस्त्रस्वादिवगताः तन्नेवचनगत्सामीसोमायन्यवसुन्तृप ७७

वरमे स्नान करने से देश कि प्नाकरने से प्रमासि हो तो है फिरवा हासे सामा सरोवरमे जाना ६१ १ ७७

8=

उन उर न परे हम्मा सरोवरादि कमलात्यः पर्यंत और कमला देवी पर्यंत शितालीम तथा अपेर देवता ओहे उने पे स्नान और देवताके दर्शन करना च्य अक्रमला देर ने श्रीमाति बाम्हणोहु वेवाहमे कु**तदीपके पूजा** करना ऐसा बरदान देया उस देन हे विवाहके पहिले देन न्यू ना दे श्राद्ध करके बाहणों के भीजन नसे दमकरके इन्हेक्य करण कहते होकरे जो करेवाकहते हैं मों करना उसका विरोध वरकी माताने अन्य सीक्षाग्य वर विषये कु साथ छेके वसन छेजावे पात्र में शर्द रक्त स्त्र मिन्नो लाल पेताबर नदाम वस्त्र की रोय जलहुम्ध पात्र कुम पुष्प इत्या दे पदार्थ लेके केन्यांके वर्ल आ वे ममलीक पायसदीत गार्ने बनाके हुने -विरात् केएपम लेत्हत्य यात्हदेशको ततो म्छोन्स प्रेष्ट्रेंच रहत्त पणं क्रिस्ट्रेंच रते लिंगं चल्म के स्टर्म्स निक्ष को है -का देत्य लेंड जामें वे काम क्षा कर तो म्चडेन हार जादेश चर्म में मारा ता रे के त्या छेद च इंद्र च तता एवं दे क सुद्धि स्म् के देवम देन चम्हे महरे कर्म चंद्र व लागे हैं ग्रेट त्यल हैन एक मिन्द्र में झच मुंड हुए में रूप में दे ए एसर हे स्टर्स क्रमेलान र्धम्मा दर्देन मं कमलादेर ललद पंचरंदरे तताप्रमात देव हत्य हरे देने दर् देव ने देम रव कर पोण ये हे म्य जरी: वर्षे यहालं पर तमाप हालक मिर ८४ इंस्के द रणि देन हां कुमें दर्जे हैंत गृही तह स्मार एक सम हा म रिगृहंक ने त्युका रें राजसूके एक कर दे दिर दि सिक्त रहे दे अने हम है रिंगू जलक के बंद दे पहेंक है ने दे रहे र इस है र स्पृष्टिय प वेत क्षेष्टें प नको ने ने में निरत्त सूर्व कित ने न दे अपनित तर प्रमाण एक नः प्रमाणिको स्टेने अ "कि पोर्निय परित्र प्राणी निर्देश तर है सत्त ए हो कु में हस्ते न रिकेश चम्री कि कर संबंधिन या निर्देश ने मू दिन दि आयके - ५ वो इंइ पशंखोदनरे कत्याक उपररे चनकरके वस्त्र देवे कत्यान तिलककरना वे रक्तसूत्र कत्यान वेषन करके कत्याकु गुरू रहन वाहा नग ि वै नहेवा न हेहुवे नयतगरे नहेवाका शाएकम्यान कानपेन है पड ना ८६ ऐसे कर्नेसे वो देत्य किस्ती जे उटा राखा सिसो कत्याकु हरणकरने कुसमर्य न हेहे

ति ए ऐसा कन्याने प्रमाण करने कु आरे से करने वर किमाता मणिश्वार अपने एर्कुन तं जाने ए एति, कर्ना के पाता अपनि सव धनी स्त्रियो कुसायते .

के बस्तालकार पेहेन के पाममें कुकुम पुष्पके मोहाउ १ नारियर १ सारसादि २ पानसीपारि पुष्पनावल गुड करी हि मेजानन मशी यह पदार्थ से के पर के यर कु आवे सो पहिला फेरा फिरदूसरे फेरेंबेसिट्फि गढ़ तिसरे में घलपाभ नौये में राडपान पाचवे में मिलकापान ना हे में व डिवापह सातमे मैसे व ऐसे सान्चक . सद पतार्थं दरके बर्द ताबके वरिक माताक नितक करके से पदार्थ देके अपने बरक नती नावे १ नाद वो कन्याकि माता अपने घरमें मधमरानिक सद सूपी में करन दीपका स्थापन पविशा करके ताल सुपन्ने विव करना उसमें छन पूर्ण करना ९३ घरमें जो अभि होत्र होने तो वो अभि से कुछ दीप अबट कर के यथानि पि पूजा करना वेसेकरने से सब पिभिचेशत वसहोते हैं १४ और वें सब स्थीया पीन मगत गाती हुयी बैठे शत शह बेद पत्र बाठ होता रहे इतने मे बर अपने पहले क्रमस बार्ट

मागन्यमतुलमातिम्तिविभ्वतपेवृत् भि द्विगतिनादाम्यापूज्यतेमोज्यते पिसा ९० अथकन्याग्रह्याति राजनुकन्याकु-लागना निशाया प्रयमेषामे मोगयेनोपले पर्येत् ११ तनम्त्रे प्रतिषाण्कलदी पनिवेशयेत् एकस्त्रमयीवृक्ति कार्यासिक्त्युः तेनवै १२ समिद्रेगार्ह पत्यमीकर्तव्य कुछदिपक महलेन् मतिष्ठा प्युष्युर्गेषानु लेपन् १२ पूजेये हिपिवत्यी तो द्याद्घे चको भिद्र एक्कतेमहाराजेशितरस्तत्रदेवता १४ आयातिमृदिता सर्वेकिक्दीपशिरवात्तरे तत्ते स्तरपायत कार्यास्पानिमेगल गीतय ९५ शर्तेष्विनश्वसुमहान्यपृष्ठिक ततीं निशीयराजेद्र प्राप्तात्वासुनि सती ९६, वरस्य जननीदीप गृण्हात्याभरणान्तिना तत कन्यागृह गत्वागायतो मगलानिवे ९०

े दातमे शरावेके चोर संगरता बन्याके परक जायके गोपूम पिछाकि निपहर्गीरिक तेके अपने घरक आने फिर पर घोढ़े कि बरवत बोगीरि और नारियः के शादिक जावे परतु गौरिनके पर्कु आवे इतने में माता परक बाहार कछेवेके वास्ते निकस जावे उसकावपान अर्द्ध राजके समयमे दर्कि मान

ा बीरियी । अपने परमेगन शक्य प्रार्थिये स्नानकरके नो पही छे दियी हुइ हो साढि जो है सो पेहेन के पनित्रतासे कुकुम अहरतासे साछ सुशाधित चित्र करके । ालिके हातमे जलपान झारि औरनारियल बूसरी रुपियान में रीपपान हे के गाते हुने कन्याके धरकु आने इतने में कन्या सविध स्पीया रीप औरनारीवह अधाषाद

नम्स्योत्पि

्र जरपात्र रहेके आदेरसोरे उनोके सामने आयके वरिक मानाका हानधरके अपने धरके जायके चेदिकि जगामे खडे रग्वके परम्पर्तिस कर्के प्रस्पर नारियस-आंर सोड औरसुपाधिआधिवाणीकी अदलाबद्गीकरे नामपरस्पर्देव जलपात्रों में परम्पर् अपना जल डारे परस्पर् दीपक में धत डारे प्लाकरे परम्पर्द सिकावे फिरवर-कत्याकि माता दीपक हातमे नेकं परस्पर हात यरके त्वार परिशाणि परस्पर कठिमले आहिशन करे बाद पान्वी प्रदक्षिणाकि वसत् बढे परिश्वमसे परस्पर हात छु अयके व र सर्वाधिन स्थिया अपने घर नहीं जावे २०० ऐसा यह परकत्याकि माताने अपना ऐक्यकरके दीप और जलगाब लेके अपने परक्क बाव २०१ एसे वो दुर्जीक्य करणकहरें करेंबेकि रे देमें मबापेटी सब देवता मबमातृगण उह्मी विणु यह सब अहर्य रूपसे देखते हैं ऐसा इत्वेक्य करण इत देपों नार करके जाते हैं में सका नेद्यन का पोय करणा कंट पितृग्रंस् भिःसंगच्छेरन्सर्गाः अष्टचि धेवन्द्र परेन्त्यातादिसिणं १० स्द्रिकः परिकाण्ने दिमध्येकुतं गनः द्रीपाद्रीपे वत्से स्तोद्रतं न्यानाद्रीय प्राचीता वितन्ततः अपस्य रंग्यमाणास्त्यावके गुउच्च एक राम्र्णे वस्ते स्तोद्रूतं स्वानाद्रीय २०० व्यक्तरान जनन्याने विधायेक्यतथात्मन ए रेष्वान्य सुदोहुक्ते सोगृहाय गाउन २०१ व द्यायोतदाराजन्तु नेककरणोत्य दे आयोति पेतरस वैशानसदेवमान्यः १०२ आर्थान्दायोहेर्वायावृत्सातृभिः सहयोद्धदेवे नगर्नमिष्टे प्रिन्येच्ये ३ अद्ध्या र् नगर्दिक्ते सानि २०५ कुहर परिमन्दीतार सिन्गेमर मंडले एवसतेस्तिमी निद्रादर्तरमा २०६ न्नागर करना मगल गायन करना २०५ किर विवाहके दिन चारघडि पहिले कन्या के माताने कन्याकु मगलीक स्नान करना यके सी पा गायनकार दश्या दिकस 'अलंकत क-

नागर करना मगल गायन करना २०५ कर विवाहकार्त चारघाड पाहल करना के मातान करना के मगलाक रना पक रहा पाक कार कार देश र रिके क्लिको नेन वधन करके गोध्मणिष्टके एकसो उगाउ दींग मंगलस्नान के जगासे कुछ देश नगर रखके शिप रुगायके किरको हलावो रूप के किर पाक किर पाक के कि किर पाक किर पाक के किर पाक के किर पाक के किर पाक के कि

नद्तिपितर सर्वेमारातिस्र्यातर पायतेसाचमोरिद्मेयसीसपरिछदा २०० महरोगाच्यन्र्यतिकुछदीपोत्सवेचणा कुर्छेर नयदरणरास्त्रित्युक्त्मम्बाद्पि च म्थमेन्द्रिमकचेन्योनिधि श्रीमातवासिभि कुत्रदीपोच्यतेयनतप्रनास्तिपराजप २०९० यभतस्वानपस्तीववरूणोबद्ववार्षिकं वरसंभोदेगीशत्वजनाध्यक्तत्वमेवच २१० तेनत्त्रसमाख्यानवरूणतिथेशुच्म उनाच महातस्मीवतराज्न्रशुबद्धासमन्वित ११ मासिभाद्रपदेवजोनाष्ट्रामधराभके तस्मीसपूजर्यस्ययोऽश्रेरपनारके १२ अधावरणदेन्यश्चपूजनीयाप्रयत्नतः अष्ठावपं प्ररातुन्यानैवेषणायस्भवतः १५ निशीयेणापसमाह्यरानीजागरणतयाः भा त् सार्वन्त्रयान् देवस्योत्तरप्रजन १४ रुत्वाविसङ्गदायमवषाडपवार्षिकं वतक्यततः तस्यवारियनवेजायते १५ ततस्यीमाछि-नानिमानिया के को युग द्वनपुरुषपाणकारयपेयिक्नोत्तमात् १६ यावद्वेनी महासर्मी पूजापाप्सति स्तरं तावद्व महीपा-रुस्पायिपारिस्तितकः १७ इतितेक्षितराजन्त्रीमासंब्रितमयो। सहस्तयंत्रमणोप्रस्तेत्रपातासतुर्गुणाः १८ व्हीनाचतुर्रणीते सहस्राणिसरासिच एकाद्शसहस्राणिरिंगानासितनवै २१९

भीपनार करना १६ आर आवर्ष रेनिकि पूजाकरना आर अर्थ देना रुपाकका नेव्येश करना १२ वा पसार भाराप करना स्वीकृता गरणकरना नवमीके दिन मान कालकु कत्तर प्रजाकरके १४ विसर्वेन करना एसा खोलावरस तम ज्येवन करेगाता उसकु इतिहानिका १५ १६ १० कृता वसायह भीमाडिकाम्योका निवक्ता १८ ०१९

अध्याद १६ बाम् पोतसि

40

अव प्र माति नाम्हणेका और कलाद त्रागड नाम्हणोका गोत्रपवर इलदेशकानिणीयकहते हैं। उसमे वर्तमान कानमें श्रीमा लि नाम्हणोके चीदा गोत्रहै ५२९ पर्ह प्लब्स प्रवेश परहा दिद्दिरहर भिम्म सतः २२१ प्रशंक इर रोजं हेर्टर ग्रेस्ट कि प्रतस्य समस्य आश्र हेर्टर में केरी २२२ असिन न्गे बेच्छेज ने सम्मनप्रायाः यङ् ध्यन्द नेष्ठ मे छेन धरेनत्यः १०९ ए रष्ट्रं द्वेन यन् रूप्य पूर्वे प्रति ने शिषः प्रत्र

उमें किए रमार न देन ४ त्रणाख्यात जुल उमें दे रक्षणात्तर सम्बारस ते हैं बह दे को र सिर्दे के से देवें २२५ तते र सन-क्रमोन्द्रमाल मेन द्विहर रहे कर्ब स्टन के ग्रह्म दे तेन ११६ दे पर है पर हो पर है पर सामत कर बार द देतरे ने के के हे से मार्स हिन १७ चतु है ने के के के कर कर पूर्व के के देवर माओद समाइ है रेहें। १२० देख र पेंचे हो के भिन्तारं नार निरम्ण देर वकारले किन्द्र च एंड इद वेल तथा ११९ अ र वर्ष हे र र स्वर्ण के रेख्य पूर्ण ने र दर्शन एपांगीनं एत्स्वर द्रिते १३० अं १रं १ रसे त्थर दे हे सुप्रकृत आरह जो ह ए के छे न एक कि कि १३१ अं प्रिसे मंदिश्यत्योभ रह जे स्वतिरेकः बंध्देव तेने हे सिन्बालामार्थे तिक रेणे २३२ और मन्यत संगोबसार में रेकी में ते अ ं। भिष्णिष्य हरेदेन दे ति के रेश अधार हिलं के प्रत्य है के देनल के माइस देन के प्रति नि १४ क भागारिक्षिक दिन देव नित अने परिषद्य हमा विरक्ष समा १३५ विक्त में दिन देश के विक्त में तिन पुर्वन 

ा अप का अप के प्रति के उनकी लखदेवी योगेस्री है अर ऐसा आगे सबगंत्र भवर देवीका अर्थ अवटक उपनामके को एक में स्पष्ट है २२२ २४ २०५ + २३८

अभ्यप्रधः अमृज्यसन

माडन्यच्तियद्वोन्युमद्द्राम्युतः पन्राणित्य्वेययपुजातिवदाम्यहः ३३९ च्यवनोभार्गयोनिस्यत्यानिमानीर्वयक्यमासि निष्त्यादेवी स्वर्णमग्नकारेणी १४० लोगासीमोमसभूता प्वरचयसयुता व्यवप्यवशिष्ठ अवत्तेतिमव्राज्यय १४१-एवसीमासिमोत्नुन्गोर्शममुच्यते वतालस्यन्वगोवस्यप्रवराणिवराम्यहे २४२ प्राग्वश्ववन्यवसम्बन्धामुवानीर्न्एवन पन माजगद्गिभ्य पंचेते प्रवरास्मृताः २४ २ चतुर्शमगो अस्य पवरा पचकानिताः आत्मदेतिन्व समोकादुग्विकुरुदेवता ३४४ ग्तमपचद्रामपवर्भ्यस्षितं गीतपागिरसी त्य्यदेवीतस्मी रुवात्हता २४% वशिषार्व्यत्य द्रीतिषोड्रगपरिकार्तितं म वरशात्र्वक्षयरख्योविमाविशारदा २४६ वशिष्ठीयभरद्राजस्त्रधात्रीमद्पवन् वातागीरीतिविर्न्यातादेवी त्यद्भतस्त्रिणी २४७ वित्रावेद्विद्रोगाताञायुर्वेद्विगारदाः शीनुकारन्यंससद्शगोन्तर्निभूगरानित २४० भागीव सानहीत्रश्रेवशीएस मद्रपवच् हुगरिवीतिविख्याताकुं उदु स्वीवनाशिनी २ ४९ मुद्दां छकनामगो भद्शाएपरिकी तित मुद्दसंगिर्म स्वेवना 'रहाज्यतित्रयः २५॰ गोन्देबीत्वासुँगमहाचहपराक्रमा इत्यंशद्शगोत्राणित्रवरे सहितानिच ३५१ कथितानिगो भागा है श्रीमालेश्रीपियकरे गाँभत्युपिष्न्श्रुष्यवर्तमान दिनन्मन्। २५२ पारदानसनकसंपाश्य्यंवकीशिकं व छ मो पमन्यवेच् कम्यपर्गातमत्रया २५३ शोंडिल्यमेडिलसारम्यचाद्रास्त्रीद्रस्तनत्रया कपिजस्सहारितीगोत्राण्येतानिस्रतिहि २५४ आगिसी गागायन हणा नेय चमारच्य ही गासी प्रविश्व विदेशाने क्षेत्र भीनक मेवच २५५ एन हो बाएक स्थेवका वे सिन्नों स्तिसति अवटकाश्वरयेतेपाच्तुरसीतिस्र्यया २५६ गोवस नामस्यापन प्रयादे २५२ थामानिकंची गुणानकेनाम स्पष्टि १५३ २५४ नाहिके

ζĮ,

~		। मेरी गार	गेशास्त्रम	: अस्य	मासिक	म्हणानांगी	न्नरसभाग	र ठेरुभूवर	क्तरें नि	रेणेंट की एव	कर ह-			ļ
मं अवर	टक उपनाम		मनर	नेद-	शाग्ना	ा फुलद्दी	ं भारतिक	: उपनाम		ं प्रवर	नेद-	शासम	' क्नदेवी	
१ । उझा	दोकर	सनकस १	। श्रृच्छमद्	साम्बेद्	केंग्यमी	वरयक्षिणी	२० दव	नवनखा	*	"	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	••	• >	1
२ त्रवादि	ये वर्	*1	",	सामंदि	•	र्वाजधिस्पी		न्वनस्ता	*1	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •		•	•1	
३ त्रवाडि	- बालासरा	**	3	*		भूताना	२२ उझा	नवस्ता	W	*1	~)	•	· •	`
४ नेाशी	चीपि	**	'n	"	**	79	२३ द्री	<u> भादिया</u>	•		**	,	• 1	
প স্বাত্তি	वानुसिया	• ~	**	"	•1	•	2४ द्वे	नरेचा	1	d	*	ų	• 1	'
६ यास	वाकुनिया	~	•	~	•	"	२५ परया	न्रेवा	1	•	١	`	11	1
, ७ उद्ग	वाकुविया		~	`	~	11	२६ उद्गा	नरेना	ч	*	*	•	11	
५ व्यास	इचितया"	*	**	•	•	•	२० उद्ग	गाःवा	1		•	•	11	
९ स्	मटकड्	37	>	•	**	~	२८ बोहोरा	पुष	9 5		`	1	4	
१ १० द्वी	ऊझामणा	"	•	~	•	٩	२९ चवाडि	गाप्या	पानसर ३	३ विशिष्ट शनि	साम	न्तेगभी	वरुगा	
११ त्रुवाडि	सागडा	~	4	₩,	~	•	२० च्यास	गापेचा	" , ,	भागाम्	1	1 1/1	4/1	
' १२ त्रवाहि	न्ग्निया	* *		**	~	•	श जवाडि	कोटिपा	' "	**	`	, ,,	1	
13 उसी	भोपल	भारद्राज्य	प्राणिसम्बाह्य	सामगग्र		<b>चपुर</b> ी	३२ भनारि	चाँउसा	`		•	•	•	
१८ चबाडि-	भोपल	**	त्य भारदाने	١	नापाध्य	*	३१ त्रवाडि	नाउआ	**	`		•	**	
1 <sup>4</sup> त्यास	भीग्स	40,		•	`		२४ नगाउ	नरेवा	•	•	**	••		١
, १८ जोशि	भोपुर	**)	-	*	"		१५ नवाडि	ऊपतिया	•	1	<b>∽</b> .	•	•	
१७ मोहिन	<b>उपिया</b>	44	7	٦	*		३६ उद्गा		क्तांगिक ४	विश्वामिमदे			सिद्रा	
१६ चाम	चोरराचरणीर	*	*4	2)	•	3	१२ चेत्राहि	क्राणोद्स-	N1	र्गनभारी				r
· १२, चवािं	, क्रोनिया जा	भारदाज व	अगिर्वारम्	पायम्	11	•	३० अविल	गला	`	विक्	•	1	बामुरा व्यवका	

न्याः जन्म जन्म	चत्यू	सैपिक	<b>प्</b> रर १	साम	भैपध	प्रमेपर	६९ चोहोस	<b>उ</b> त्तर	नीशिक	मन् ५	सम	वीववा	रेशाप	अध्याप
-	<u>क्नस्स्</u> रम्	*	4	•	•	**		गरक्य	11/4-	44	**	**	`••	_
<b>1</b>	कारामार राज्यान मेन्द्रिया राज्या वस्त्रीया वस्त्रीया वस्त्रीया	'n	3	1	₩.	7)	६५ महिन ६४ मेरिन	इस्त		•	~			कार्य
नेप पन	17.	**	•	Τ,	~	V	६५ महिस	,	*	<b>H</b>	*		*	
पस्	THE	<b>-</b>	-	**	•		41	<b>बन्दर</b>	*	*1		**	•	
) 	वस्त्राम्	*	*	~	**	₩.	(1 134	भेडिया	**	<u>.</u>	ጥ	•4	~	
दरे	12.445.0	ممر		*	₩		एक नेत्रचा	अररिपा	71			_	_	
<u>स्रो</u>	<b>,</b> देखे	••	••	**	~	*	६० पश्याः	भार्दिया		₩.	<b>4</b> 3	•	7	
दरे	चहारहुउ	`	**		*	4	६५ पराडि	गिरपुरिक	` `	•	٦	A	<b>-1</b> 1	
(1			**	44	•		🍑 बनाउ	द्रामिस	प्रकास ५	<u> ५६५च्या</u> न	स्यप	नीयमा	अस्पर्	
•	<i>रदरसस्दरभा</i>	*	•	•	•		भ असिहोपी	रशोचरा	47	भीरामभ		ጥ	र्वानरी	
वे~	केशिनिकर		~	*	₹.	*	७२ अवस्ति	र्भोनग		गुननपर्धि	4		रोनागंभी	
(क	<del>स</del> े	*	~	*	~	~	•२ हरे	भोडिपा		4	-		4 11 - 11	
(के-	श्रापुर्भाव	**	*	~	4	•	24.44	द्गोनर्णंध			,			
<u>ब</u> े	गिरस्दिश		4	*	•	•	• नेप				,		-	
4	पुष्टिक	44	4	`	•	4		पर्देश	1		'		- -	
बे	प्रकारिका		•	•		4	७६ हर्न	पृत्रेषा					٦	
<del>4</del>	<b>ानामक</b>	~	*	*		•	३३ मसाँड	मामत्य-				<b>.</b>	٦.	
<b>4</b> ₹	<b>बमुराबा</b>	•			.,	4	•॰ नराष्ट्र	मेंद्रेर -	उपयन्यन ५	<u> १</u> अस्तराज्ञ	साम	रीयभा	नरे <b>ब</b> नाङ्ग	
(रव	रोगमिया				7	4	३१ त्रवाद	जाभरमा	į	१ अस्यास्त्र हैं अस्यान हैं समार			41	
160	ये <i>य</i> निम्		4	4	<b>~</b>	<b>b</b> 4	<b>४० मग</b> ाउ	आरुपा-	<b>कर्</b> षप	<b>स्ता</b> नत्त्वन			सेगेन्परी	
( <b>4</b> ~		<u>.</u>					<b>यो अवा</b> डि	राजरा-	: 111	<b>FI</b>			DALLA	५२
मे <b>र्</b> स	पयारिया 🕯	रिक	मन्दर्	'सब	सेवप	देश	प्र भवादि	दरसाउँया		•				

पोध दबदिबा १०२ बोहोरा सामवेद को धर्मा योगधरी धोपनगरिय पवर् ३ १०५ पडवा **२३** चवाडि गडस्हाकि कस्यप आशोत्पा \*\* देशचारुंडा १०४ द्वे पाउड़ी दर अवाहि चेलाइया मोइसम् भ्याइस ~ मन ३ 104 4 चंड \* टप, जोशि चापानेरिय अगीरस नारण 41 पचपीडिया 10 4 १०६ द्वे गोधा महात्र्भी ~ १०७ द्वे वर्जेद पुरेन्या पाध्य चांदासार् १नउपगर्भायय च्यास हाउिया नुरेना क मोहों गारिष्टपूर्णति 1 अरणा 'वोरता 708 1469 सट केलगाडिया , 990 त्मेह र्॰ अवसि 47 चानडीया ९३ वीहीरा 'नावडिया 111 महातस्मी माध्य गोनिषया गोनम < यज्. भारीपा रू जीशी - 193 वाष्परिषद्भ गेनेपा गिर्स आत 193 भिष्जा ९२ दरे ९५ दवे ११४ जोशी नात्ड उनणसार 1नग्यना र ,कोचर नगाउभा ११५ द्वे वानामुडा चानोद्रसन उतियञ्जागिरस वागोदस साग्रह्माहर 11६ यास खोडवान पुछत्रोड पारिक '१९७ द्दे - 96 चएडा णध्य कपिन १५ २विशतभारहा **पनोतिया** रअपसा मध्यदि संगंकरी Mc ९७ सहस २भानयभा यन्नेद् चनरेष्ट्रोता जरुद्रपमद लस पीडिगा शाउित्य दत्वस ५८, बोहास ११९ द्वे १२० पेहता र्पणना पंसा गुजारोत्म 11 वा के उपा पुराणना १०८द भार् १२१ दर्व देनस भूतिहर्तीत देनसाधनपारत्याः पोपतवा उगा

**अस्त्राय**१६ मीसकेक सर्पेत्रस्य प्रवर्श प्रसुर्वेष् पार्थ्वेष चपुत्रा *नाम्ह्रमोत्प्र*ि अयुत्रीमा लेबाम्हणके नादा छका इके नामका न्यान स्रक्षिक 143 79 १९४ र्प गामच 147 540 AAPA 拟付 गरिय भक परे सागवंद छक्छे ई रेरिया भर हो उपम 1मय्≰या 134(3# १ गोधाः १ परेना १स्पेद्रा १ नामुब भर हो 1 भोपर THE **१** उनमणिपा र्गम्बर **रहेक्र** ९ सेपर **रपइनर** श्मद्रीय ११ सरे 1766 बर्गस्टर ५ सन्धेवा १सेरम भा जोरी १सहीसर सरोग १ मनाभाग १ एस २ मन्प्रयेष १ सप्त ५ गेरमुरा ४ वेडॅगगा रपैय ४ रकसारी ४ गापेन भ**चपरा**म ५ सरिश ११२ व्यस सबस ५स्सुग्धिय ५मथस्यभ्रप **५३७वे**र ५सतेना ५ करपुढा कार वनिरु 11/1 22 ५ साम्या अस्ति इरेन गम्ग 4 कागर रक्पस ५ सध ५ इस्मीय ६ पाइपहर धमेहर भ४ से ६ स्वरंगणा ६ स्वेन्स ५साग 1146 m 3 पन्य ११५ स्वे **) भ**रिश १रें रास्य १ ब्राह्मि । रवानसिक १ मानवेश्व सन्देश **१स्त्रकृष्**य १ छ।गमा केल **र मणिया** ११७ प्रो **रयविश्व** रमलेग श्रदशस्या १मरपक्रेच प्रना श्रीस कृते व अस्य प्र १जाररोचा १ चीपोडा १६नेचा १ पसक्य । नरेना रनखद्य विजेषा भर परे ४ रवकाण ४ कपिंग्रम १ अनुस्पृत ४मनिसान ४ चडा ४मक्रा र सपारक्या क्तातव शिरोबुरि संस्तृतिक प्रमुखिक नारेल भ होक ५ बोसना भवाक्यामा भवस्यादिवा भुग्रासियाँ ५ भीतम ५ आपुक्त उपा 43 रम्भार् ः पत्तरहुक्षा ध्रापसा ५ सम **भ्यानणचार** ५उगस्य ५सतसा सम

चत्रं च देव निष्या के किया किया किया किया है है है है है जिस्त न्यागताः ५७ तेष संख्य सहस्राणि चत्र दिय किया पान के दिया के किया है किया है के किया है किया है के किया है किया

उसमें बोनेदें तो सेंपनारक्य बास बादका आयेषे जीतमके अवमानकरनेसे अन्यमादकोने उनाक बेद बारण होनान ऐसाशापदियेसी किर बाहासे वोबान्हण नहें भये सी-सिम्मेनमकेरहे सो उत्तम मये भीर मन्य रेग्रये नोरहे सो प्रोकसे यथ्यम मने परत यह बाद लेकिकहे बाम्हण कर्षसे सेस होताहै रहिसे नहि ६ अयक्षत क मनिविचसो अध्याय १५ नाम्ह्योत्पि जी पैदा भवे वे कहा इनामह जाएण मार्ग ६१ अनविभोक्त भर कहते हैं शामाल सनमें बहिले विष्कुके उरु भागमें ने नु हजार विनये पैदा भर्ग मो सब वेश्यय ६१ परंतु कि पुगमें जैनमतकि पबल नामें अमर सिंह जैनने अपने धर्ममें से किये उसादिन से सच्छा द कहें जाते हैं वेश्यकर्म त्याग करन से ही नवर्ण भरो है परंतु अबि विवो सबजातिस्य खेकोका क्विए होने कि अपनीने अपनी स्वर्ण धर्म पासन करना ऐशी इच्छा होनेतो सबीने एकमत करके भीज ह न्नार्दीय पुराणी क पित साविभिका अत् परमवस्यामिवणिनाभोदमुत्तम् उक्तस्तवके द्शोनस्यमेकतुत्रीमासेवणिजामभूत् ६२ नतेषाविद्यते सख्यापुत्रपी त्रवताम् विजनेनामरसिद्देनस्वमाग्विभिवेशिता ६३ भिलादादशपाजातास्वस्वरुच्यनुसारतः त्राणिगोनाणिश्रष्ठानिग्रहः कन्याम तेम् हात् ६४ चलार्येतानिमोत्राणिभाषानीतिवदुर्वया हतान्यम् सिहेन तस्माच्यू इत्वमागता ६५ शुद्रात्राद्धा-दिकार्येपु सूत्रधारणि प्यते स्विगोरस्वाणिज्य सर्णकार किया समाया ६६ तेपाच्या झेन्त्र रिवी योगक्षे मस्यकारिणी तेपा गोंत्रविधानचेस्वसीज्याध्यायसगता ६७ विधान करनेसे दसपुस्त होजावेगे बन अपने वैश्य कर्मकियोग्यता आवेगी वर्णका उसनी सपना कमें हो हो वह निर्णंग मयने प्रथम मकरण में विस्ताहै बाहा दे स्वतेना ६२ फिर अपनि अपनि मनकि पाति से वोवनियों के वारा को दक्त सोनिका भेदक हते हैं पहिने जो भागर बाम्बणके अठरा गोत्रक है उसमे के भयम तीन बाबबातोंने यू हफि कत्वाके साथ बिवाह किया और अति म चार गोन अमरसि हने अहि ये उसके है येद्दत वर्णकृताये ६५ भादमे खन भारणकरना स्वेतिच्यापार स्वेनियना करना ६६ उनोकि कुछरेती आमेन्दरी है जो माम्हणका गीय और गोन उनोका जानना ६७ 48

ऐसे सोनिद्सा विसाने मेदसे परणी सुरित अमदावादि खवाति ऐसे अनेक है श्रीमाति बनिये दो मकारके द्शाविसाने भेदसे है उसमें है सा श्रीमालि भावक ये मैं है द सांद्रीमा समें कितनेक भाननों हैं कितनेक मैसि हैं पाम्बार कहते पोरवाल वो विद्रासारी साके भेदसे रोमकार है वो पोरवाल मेरे गुजर पेसाएक सा तिका भेद पेदा भयहें परवा ज्ञाति ए मालि बाम्हणोड़ वस्त्रदेनेके वास्ते जे विष्णुने उक्तमे पैदासिये सो पड़वा ज्ञाति वेश्य है परत हालमे कर्म क्षणतासे सूद हे गरे है वो ज्ञाति महाराष्ट्रदे गमे जान के पुरमे वालापूर आ देमें भीर मुरत पाटण आहि शहेरों में निरन्यान है अपरे कहते दूसरे गाठा और हलवाड़ ऐसे भेदहें ६० सां कहते हैं गाठेव नेये पहें

लेकीमिलि बनियेथे परत् सुद्रूकों साथ विवाह करने से जो बरा दक्षिणत हुवा एक पर्य मालि की सूद्रिण बोगारे बनियेकि जात भद्र उनो के ऊपर जो की मालिया म्हणोका कर है सो की मालि पोरवाडों से आदा है और यह गारे में से कि जे बहे ते श्रष्ट होगयों सो हलवाइ और छीपे ऐसि ता ते पेदां भाइ से आधि साति के ने जा-

ग्रह्में स्वर्णका नाम माहित प्रान्तिक माहित मुक्ति महिता महिता महिता है देव महिता के कि स्वर्ण के महिता है के कि कि महिता है के कि है के कि है के कि है कि महिता ह किहै ऐसि शीम हि बाम्हणे के साढे छन्यात कि वृत्तिक हेजाति है ६९ अध के माठ देशका भिलमान नाम हवा उसका कारण और विवाह श्राद्ध में कंके छ नाग के जो धुनाकरते हैं उसका कारण कहते हैं। एक कुडपानामका द्रोपालि वाम्हण गुजरात देशमें अहपर्वतके नजीक से गधिक पर्वत मेसे इहुम ते नाग के कन्याके साथ-<sup>४ दिवाह करके लाया और कत्या के यह पूर्वत के एक एकामें से मयुपाताल में जायके बाहा कं के लामका एक नाग है उसकी कन्याल पाणि यहण करके लाया हु यह बात सन</sup> - हे सब श्रीमा के आध्यर करने तर और इंडपाल सावा से देये फिर एक सारिका नाम के राक्षांस श्रीमातिय की कंन्या वोकु हरण करके वे कंकी ह नाम के ज्योगारे छे ; डके आतिथी बाद्यह कुड्याने पुत्र वे कंके सनागरेनास नायके पार्थना किये के हु मेरी कंन्या बोका आपने रहाया नियाहे वास्ते विवाहा देकमे श्री पाछि पाठ आपका एजन

र्वे रेगे ऐसाकहवे वो कन्या गोल तरे उस दिनसे आजतग धाद्धे विवाहरे ककोल नागका रित्र वेगेरे करके पूजा करते है ७० फी छे कहिक दिन गये बाद वोशी माल नगर-फ्लाडपडा बाद शोएंज नामका आरुका रा**लानें बसाया और** राजामोजकी बूरवत्ते महाकट्ट माधनामका प्रया जीसने माधनामक एक कान्यका यथ बनाया है वे सीमाले

मुम्रणमा ऐसामनोध्नितामभिने विसाई बोबीपात नमरमे ख्लावा उसक्षेपेशससे सर्व मासा कर्नेका स्वतावचा भोजराजाने उसक साख स्वये विसादियेथे और पीबाकाशियन बोहोताचा परतु धनकि अहत्वासी मरण पाया यह बात भीन कमाने सुनाने भी गाल नगरक विद्यार देके शिक्ष गाल को ग्रेहेरका नाम स्वापन किया सी हार में भिन्नमार वा भिन्नमार कहे जाताहै। अणहरुवार पाटण बसेवाद भिन्नमार तूरनेसे कितनेक त्येक पाटणामें उत्तमके बसे तब भी मारि नाम्हणोकि कु उदेवी जो पहा उस्मी उनिह मूर्व जो भिन्न मातमे यूननेचे सोमूर्विक देवे बाम्हण पारणमे आये वो मूर्ति अपन दिन तम पूजी जाति है ७१ अवसीमानि पोरनाह बनियोमे रशानियो-का भेर केंगा हुनाहै सो कहते हैं सोर्वदे धननान भीमानि पनिवेकि कन्या दिनाह भये नाद योठेक दिनमे विभन्न भार तब पिताने र देयान्य विवाहिना विच वकाया निद्

त्रीमात्रनगरस्यापिभिक्षमात्रेतिनापपत् स्यापितभोजराजेनकविमाध्यसगतः ०१ द्रमाविसायभेद्वयुनर्भुकर्मयोगतः ज त कारमतरेपूर्वयनिकस्यचगीर्वात् ०२ एवन्द्रीमातिविपाणाचागद्वानात्रयेवन् साध्यद्वणिज्यचेवनिर्णयभ्वधितोपः पा २०५ इतिन्नीहरिस्रणाविनिर्मिते बृहज्योविषार्णचेषष्ठे विश्वस्कर्धे योदशे आम्हणोत्पत्तिमार्चेद्राध्यायेन्द्री मारित्राद्रणभागद्व बाद्रणश्रीमाति पोर्वास पदुवागादागुजर आदिज्ञातिवर्णननाममकरण ४

सीनिन्नेत) प्रायान्यमन देखके अपने देशमे बोकन्याक कोइनेबियहणनिक्षिणे तब देशानर्थे आयके बाहा कन्याका विवाह करके किर अपने मानमे आया तब गानके अन्य वेश्यये उनीने किंगुममे गहनात निशिद् है रेखनिष्यय करके नौधनिक के साथ मोजन न्यरहार निहर्से तबकितनेक छोक नोधनिक के पहाणे रहेरते तो दसा भी माछि पोर

बाउभवे भीर निनोने यह पुनर्निवाह अयोग्यहे ऐसाइत्या उसके पहाके ये ने विसामीमारि पोरवात प्रये वो सब नैन पार्गरत हो गये ये किरकहित वर्ष गये वाद श्री मदल प्र नाय नी के माकरय होने से श्री वेष्णकी समग्रायमे आयहे उसमेबिजो बाकि रहे हैसो अयाविशावक वोरवात नामसेवनिये विस्थात है २०२ येसाश्रीमारि बाम्हण और नायह

नाम्हण औरसारे छन्यानि बनियो किउसनिका निर्णय मयने वर्णन क्यार्गोक्षणच दनिहमे ए र्नर समराय है। इनिश्रीमानिज्ञाम्हणारिककारमिन मेद्प्रगरुवामकरणा ४

अध्यायी५

स्राचीतःन

## अध्यनीतन बाम्हणोर निम्ह

अब कर्णाटक बाम्हणोिक उत्ति कहते हें हण्णानदीं के दक्षिण तरफ सत्या दे पर्वतसे पूर्वमें हिमगोपान्स रे अस्में द्वा देशसे पश्चिममें १ कर्नाटक देशहें वाहाक राजानेप हाराष्ट्रदेशमें में बाम्हणों कु बुतायक अपने देशमें रखें १ और उनोके निर्वाह होने के वास्त पृथ्वी और प्राम अने कदान देस और कार्य १ तुगभदा किएता आदि नो महान दिसाहें उ नोके तरो के कपर नो अने क देवता वो के पादरस्थान कहें वो बिदिसे १ और बो बाम्हणों के समृह कु अपने देशके नामने प्रत्यात किये मा वक्षणों टक बाम्हण भय १ उनामें कितने क शिवंत उपासक है और कितने क मध्यराण सु जी समदािय आदि वेष्णाव हे बो कर्णात्क बाम्हण के खत्र से देशे प्रामें कहते हे सवासे नामक बाम्हण १ पिछ कर बाम्हण १ व्यास

उरकणंटल महणंत्पनेमाह हाणार दक्षणेषारे पूर्वे सत्दर्धन न उत्तरिमार लाह ने उद्देश प्रिक्ष विकास स्मार प्रमूच के स्वीत स्मार के स्मार के स्थार के स्वीत स्मार के स्थार के स्वीत स्मार के स्थार के स्था के स्थार के स्थार के स्थार के स्थार के स्थार के स्थार के स्थार

रनेत्रं ९ स्विम्परमेवक बाद्यण १ राधवेद स्वाविमरमेवक बाद्यण १ उत्ताद स्वाविमरा के बाद्यण ९ उत्तरादि परमेवक बाद्यण ६ वो सवीरे उत्तमहें ७ अब इनोका भीजन व्यवहार वेष्णान वेष्णाविमें शव शवकि पक्ति हें आर कदाचित्तेलग दिन्द महाराष्ट्रक साथ विकास भीजन व्यवहार हाताहे = अब इनाका विवाह से विध कहते हैं उदिष्ट उत्तर परम्वाधिमेवक जो है उनाका विवाह सन्ध अपनेवर महोताहे । १० १० १० १० १० १०

अन्यवर्गमे नहिन्तने १० मनासे कर्णाटक और पाटकुर क्याटक इनहोनोका परस्पर निवाह सन्ध होताहं अपर उनगार भठ रायक व्यास स्वामिनठ सेवक राधवंद्रमठ सन 'क इनतीनोपे परस्पर विवाह सन्ध होताहै ११ और इस कर्णाटक ज्ञातीये कर्ण के मा गोन्ड कुछ व्यापारि आदिकरक अनक भद् है १२ सा नाक व्यवहारसं जानना ऐसा यह स

अस्मिनासम्

क्रविकित्यासवधनान्येस्सहकदावन १० सवासेपिषकुत्यास्विभोवेषाणिषीहन उत्तरादित्रयोविमा सवधवपरस्पर ११ द्वै तिकन्यकायावेसर्वदानिर्भयेनत्व कर्णकमागोत्ककडच्यापायादिमसेदतः १२ सतिसकतनामानस्तेसेयात्रोकमार्गनः इतिसं होपत मोक्त कर्णाटकविनिर्णयः १३ इतिमाहरिक्षणिविनिर्मितेबुहज्योतिषार्णवेषधे मित्रस्कधेज्ञाम्हणोत्पत्तिमार्नद्धाः ध्यायेषोडशेकर्णाटकज्ञाम्हणज्ञातिवर्णननाममकरण ५

अब आय नैतम बाम्हणोकि उत्पत्ति कहते हैं। इष्टरेवकु पिताकु नमस्कार करके महातमा पुरुषक मुस्तसे हनात थवण करके वय हरिक्षणा तेलम माह्मणका कथानक कर ताइ १ जैशिन देशमें कोड् भर्मवत राजाथा उसकु ईच्यरके अनुबह्म सेन्छा गमन सिद्धिय १ सो राजा जहा जहा पुण्यसम्म जी रनीर्य होवे नाहा जाना नीर्यविधि रनानसन पुण्यकर

अभ्यामित्याबाम्हणोत्पनिमाहः स्वेष्टदेवगुरुन्ताकृताशिष्ठमुखारिद् हरिह्णा पतुः स्तेचाम्बिपक्षानक १देरोचनैपुनिसन्ने राजाधर्मवतो महान् सिद्धिर्वर्नतनस्यमनोगमनसज्ञका २ तयाभूगीसराजावेषुष्यक्षत्राणियानिच दुषुपरिभामन्गेहस्वकीयपुनरागमत् २

फिर नुस्त अपने पर्कु भागक राज्यकरताचा १ ७ छ छ छ छ छ छ छ छ

464

४ ओर वो एजा का ऐसाने प्याकि नित्य अरुणोद्युक अपनि मनो गमन शिद्धिसे का श स्नेनमे जायके उत्तर वाहिनो गंगामे स्नान करके आना ऐसा रोज करता या ५ सो एक दि न उसकि स्पीने उठनेकि बखत पतिकु नहि देखा ६ तब बिचार करने लगोकि मेरेकु त्यागकरके मेरापति रोजकाहा जाताहै इतने मे पति आया उसल पूच्छने लगीकी अमहा-राम नित्य मेरेन छोडके आप कहा जाते हो राजाने कत्या काशिक जाताहु = राणिकहमें सगी मेरेकु छोडके तम केमे जाने तमें अब कर से मयान ऑरंगी ९ राजाने अच्छिन वात है ऐसा कहके दूसरे दिनमें अपनि स्वीसह वर्नमान रोज काशिकु जायके तीर्थ रमान विश्वेश्वरकी पूजा दर्शन करके फिर अपने घरकु आना ऐसा नित्य कमया १० सो एक स्मानंद नार्ण च एजात् वरो तेच् वर्ष न्द वार्मेण राज्यामें ण चेव हे ४ एवंर जासने गाम पत्र हेच राण देखें वर ए सर समय तिर्नान थें नेजामंदिर त् ५ एनः स्टर्ष वर तिरदेश स्मिन् दिन्स ते उपस्थाना स्ट्रिच ते सम्मिन द में कि हरक्ते गरिन्स मगच्छत तिच विशंकान भेत्र मात्तमपुच्छत ७ क्यारिन स्पोर्स में भीते पृष्टेस्च व वे त्ल के भिष्य दित मुक्तेर पुनर्बार त च कहे नित्यं मा दिहाय का या भिष्यां भिष्यां भिष्यां भिष्यां में स्टेंट ने श्वित हत्ये तुर्क्त र तुर्केर पुनर्बार ता स्वार्थ में तत्य स्वार्थ संत्र स्वार्थ वा विष्यां स्वार्थ के स्वार्थ के स् एत स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ हो १९ १६ त्यार्थ स्वार्थ के स्वर्ध के स्वार्थ त्र स्ट सिंद्रों ने रंतर म् स्टें में रंजों र देगच्छ मेर जरें ३ में हैस्ट ने १३ त्र है। च्छा मेर में १ के हेसूब पर ने से १५ वर्ष के देस पर में १५ वर्ष के देस पर में १५ वर्ष के देस पर में १५ वर्ष के देश के देस पर में १५ वर्ष के देश के देश के देश पर में १५ वर्ष के देश पर में १५ वर्ष के देश पर में १५ वर्ष के देश पर में १० वर्ष के देश पर १० वर्ष के देश प दिन स्नाग पूजाकरके काशिमरो निकलनी बखत राजा के रू रजखलाभाई और बोइ दिन राजाकानगर शत्रुने घेर 'लेया ११ १९ सो राजानु कैसा मालुम पडा ऐसाकहोंगे ते वोराजानु मन गमन दूरदर्शन दूरअवणा दे राद्धिश राजाने शह वेषित नगरक देखके चिताकरने तगा ितीन देन यहा रहके फिर स्वयामक गयाते तीन देनमे तोशह राज्य ते ते हु गे १३ और जो क वे रू नयहा छोड़के मय एकोला गयाते अ ब बोह ते अयोग्य है कायसे जोरू रजस्वलाहोबेतो प तेने देशांतर गमनन हिन्सना ऐसाशास्त्रार्थ है १४ वास्ते के साकरना ऐसा बेचारकरने छ गा और वाहाके पंडितोल हुरायके सबहत्तात कत्या १५

तन परिनोन राजाका भिन सकट देसके धर्मशास्त्र त्रफ्त आपार उके सनाक क साकि १६ नेरी स्थी तर्नस्य आनेक साम पर्हें अस वास्यांका सननमुनक पसन्त होके १० स्थित स्पर्न सपने साम सके असने देशमे आनेक्य उसवस्ता ने त्राप्त्य पार्यना करने त्यों है करा। कराचित् हमर्क दु सहितेश रहापकरना १० वर्गजाने कर्यान मेरे के तुम्क दु सानिह होनेका १९ वर्षाप होनेता परप्त आना एसा कहके नमस्वार वरके स्थीक सक । अपने नमस्क आपक शत्रक जीनक धर्म सान्य करने नमा अधिक स्थान स्थ

तदातेसर्विद्योक्षित्वेवयन्यसकट शास्ताथारेणस्वन पोचुन्यस्मीपन १६ पृष्पन्नाधात्योग्धासीद्गमनन्वत्यासह दिनिह् नवंश्वलान्योद्द्यित्वानसः १० भार्योग्यहीत्वानिर्गालदाराजानस्वनन् राजन्तयारिक्षितव्यावयं सर्वन् व स्वतः १० सर्वाचे तदाकपर्ववाहोद्देश्ववयंका मिपिस्थितेन्युष्पाककाविपानिर्भाशव्यकि १९ तथापियुष्पाकदुः स्वभवेचे निकटेषम् आगतव्यपि विमोत्तव । त्वाधार्योप्पर्यच २० आगत्यनगरस्वविर्मून्तिर्जित्वचेकराट्यमणस्यात्ततः काठातरेणन्व २१ वार्यास्या मनावृष्टियेषे णसर्वजनव दु स्वितात्यभवस्तव सुसेन्यपुण्यकम् व २२ सभावत्वाहिना सर्विन्यपन्वनुरादरात् पूर्वधर्मविन नास्मानुकिकिमितिश्वयात् १२ विपिन्तित्वेषुष्पान्वेरस्थित्वानिष्ठित अतीव्यत्तिकरेगिषयामोमिशिष्यका २४ इतिनिश्चित्यित्वरम् स्यामानगरप्रति धर्मजनस्यानिकरेशिष्य सप्रेषितस्य ए आन्तरेयावयुष्पामानयायोन्यति जरुपूर्णे नदीयस्मानस्माद्वेषसस्यता २६ तन्धुत्वाव्यितस्मणमुख्यायन्यवाधव नोकायारत्यतेषाविनकरसंजगामह २७

अपनेक कत्याता कि २३ विपनि कालमे रहाषकरूम केमाक इय नामें बराजाहे पास चनो २४ तथ नामाहणान वृक्तिश्वय करके अपन शिष्या सह कर्तियान पम जत राजाके नम रसमीप आये २५ और गानमें मवेश करने कमें तबमाक्क नजीक पक्तिही होने तट जल पूर्ण बहतीयि तब हम उन्तर्भार कपर काशिन्य औतरेप जाम्हण आये हैं वसी राजाक सबर करना इ २६ राजान अवणकरते स्वी पुन मणान सह क्लेमान नोकामें बैठक नरी के उन्तरत पेउनायके २०

40

अध्याय १६ ब्राप्नोत्स्ति औत्तरेय बाम्हणोका राजाने बडा सन्मान करके साष्टांग नगस्कार करके अर्ध पाद्य पूजा करके जुशाल आगमन कारण पुच्छते भये २० तब बाम्हण कहने लगे हेराजा। हमेरे देश में दुर्भिस् बोहोत है उस दु खकेलिये तेरेपास आये हें हमेरा रक्षण कर २९ तब राजाने करवा तुम कुछ वे फिकर मतक से ऐसा कहने एक अयहार बनायने वाहा खानपानका ब दोवस्त करके औत्तरेयो हु रहें और उने का सन्मान करते रहे २० फिरबोहोत दिन गये बाद नदीं के दिशाण तरफ रहने वाले जैम् नि मतके अनुसारसे चलने वाले बाम्हण वो देशने जो धे- ३१ सो यह औत्तरेय बाम्हणोका बोहोत उत्कर्ष म तिष्टामा हात्म्य देखके मनमें दुःखी होने लगे तब अपने आपसमें कहने लगे जि अही देखों यह बाम्हण अबी आरे २२ और राजाके

स्मानंद व द व द द्वान एरः सरं प्राप्त रं पुन्त तनः एप च्छा गन्त रणं रतः अने रहे छन्तः अस देशे प्रति द दि दि दे प्राप्त स्मानं स् र राज रे देश देश हिले हैं हैं : ३२ असं ता हात्मं सार देश हिले किस अत्मान हे के ब्रा में देश है. द्रेन किए ३२ इति सम्बद्धात सम्बद्धाति द्वेजा गृहित चताते जम्हेर द्वेजान्य ते ३४ तदान्य मेथ स्रेष्ट इत्या च्छ इम्स्रिम् संरेष्ट पन्ति समार नेपृष्ट न्स्पति हिन् ३०

सामने अपना महात्य दुवा दिया वास्ते विद्याका वादकरके जीते गे ३३ ऐसास्बी ने निश्चय करके राजा और गणि यह दोनों साथते के ओत्तरेय बाम्हणों के अयहारमें गये ३४ वाहा वे दोनों बाम्हणों का शास्त्र वादका बड़ा को काहत शब्द भया से यवण करके राजा गए योनों मसन्त्रभये ३५ फिर साणिन कत्वा यह दोनों में ओत्तरेय बाम्हण बड़े प उत्त है राजाने कत्वा जैम्नीय बाम्हण बड़े हैं ३६ ऐसा स्त्री एकषका परस्पर वाद चता नव के नव बड़े हैं उस के परिसा करने के नास्ते दोनों ने एक बिचार करके कार्य खड़ा किया ३० सो ऐसा के एकपायमें सर्पर खते उसपात्रका मुख्य आन्छादनकर के सक्षा में रखके दोनों बाम्हणों हु बुहाय के क

त्री देव

भध्याय १५ इंबाइणहा दुमपान्द अटर जागरार्ध हैं सा जिनान स्पष्ट कत्या वोबड़े बिहान ब्रानिगं आरउनाका ग्राण करुगा जा हाट पहिंग उनाक रूड देवुगा १९ तब जमुनी बाह शक्षांत्र[व पौने रूरमें गोगन इं रसके कत्याकि रूसमें सर्प है ४० किर ओ औसरेय बाम्हण परम्पर मुख देखने तने और अन अपनाने क्या कहना एसि निना करने तमे ४१ तन बम्हण्य देख श्रीविष्यने वस्त्रारीका रूपरेके वो बाद्बोकु प्षा ४२ किनुम विनायक्त कायसहा नवता करने तमेकि त्वानक है नाजा सपक्षणताहै ४२ उसमेएक सात्विके सवहतात क त्यानववोबातक भोरतेला किन्द्रीक्षिनो दिवेशमे रत्यन प्रयादे कुनानता हु वास्ते तुम एकाम जिसमे होवेगा ४५ वो मवक्कण परतुमरे वशस्यका तुमने मान्यकसा ४६ रेखा

एततानेचयर्स्कर्नतेभोरिजोत्तमाः येरुक स्पष्टरीत्यातेष्ठ्यमान्या ध्नान्यपा ११ तदातेजेमुनीयावेषात्रदृष्ट्वान्वद्रत ए तन्मध्येचसपीस्तित्येवमोचुचपमित ४० मुखातलोकनन्वज्ञरोत्तरेया परस्पर अस्पाभि किमुवक्तव्यमितितेव्यधिताः भवन्-४१ बम्हण्योक्तग्वान्विण्रस्थणायेदिजन्मना बम्हचारिस्वरूपेणागृत्यतान्वविदिद् ४२ ओत्तरेया किमयेक्तोन्वतायस्वास्त दुन्यता तदोनुस्त्वालको सेक्ष्पन्छामिकारण ४३ तन्मध्येकेनियेणसातिकेनचत्रमति कथितसबैदनातृतदा्मीबान्बबार कं ४४ विमर्विनीरिनीवश्रेजातोहं ब्रह्मवालक ग्रार्थं सानवान सिनस्यात्कार्यभवेषया ४५ श्रीमताचनया मवेसमी कुर्योनसंग य महुराजाना युष्पाभिर्मान्य नार्य सदैनिह ४६ इत्युत्कान प्रतेरमे गता राजन मझ वीत् शिष्पोह मोत्तरेयाणात व भन्नो जित तुर्छ के ४० नझ मह विद्यान नासित स्माह स्यामिनो नर् पान मध्ये सुवर्ण स्य कणामू विहि वर्तते ४० इत्युक्तान्य स्तारस्य ने रिवर्तते मुनमा ५० कर्के समाके पास ज्ह्रपके क्लाकि महाराज मर को जीति एये वाज्यों का शिष्य हु उन्नप्त नो प्रमानिया सो कुछ बडा नहिंहे ४० वा प्रमान उन र कहें - इन्यम

मर्बेंद्रु ऐसाकहके द्वातमें अ राता तके समाके विवये रोपानके उपरठाउके करवाकि देशजा। इस पानमें मुवर्ण हिं भी खाया पूर्ति है " नव सब जीनर य नाम्यण तयाम्क बढ़

नेतमे ४९ फिर् एमाने स्वीके सामने इसके हास्यकरके प्रमक्षा मुम्य सोचके देखेता वत्यस्य स्वर्णेमधी क्रणा मूर्नि इसके प

स्त्रीपुरुष आश्चर करनेलगे तब ने मुन्टि झ हम्ए नेसे नहीं ने चलेगरे ५१ व दर ज ने वे के तरेर प्रते न इ हम् एगेन ए महन्द्र के पने देश रेरिरंपरादिनसेवो तैलग्राबाह्मण्यत्तरादिनामसेन्रियातामरे ५२ अन्वोतेलग्रबाह्मणेकान्यत्र कर्कामस्कहतेहै तैलंगदेशीमन्ड देदशास्त्रसंपक ५३ राज्यस श्रोपाध्यायकरके हासाण्याउसकी एक कन्याक्तपला व एव युक्त थी ५४ एक समय्कल्याएप तानामक सोजीबाल्य अवस्याह ए से खरोपाध्याय देव र जाये के कह प्पतिमय ब्राह्मणका वालक हु मेरेकु वेहाभासकराव तबगुरू नेकहा अच्छा बाह्दो कत्याणपत गुरुके घरमरहके सांगदरका अभ्यासिक्या पर तह गुरुष्ठ सक दंपति दिसर दिश्व हो नेरेर : उहाँ केतः तस त्या ना नेर्गमन् जो नृति : एर जितः ५१ अथर ज उत्ते संतुष्ट से प्रेर प्र न्रदत्त न्रेभे नरेर त्र भन्नेतेला इत्साहते ५२ अथते व इत्स्यामे १ देव दक्तर तहाँ आं प्रेसे द्वारिक नेरेरदं र एर

ए: ५३ एलेक्रे एछ रे तिनमा स्था तेष्ण सुरितस्रे न क्रेंच न स् दूरला व्यसंद्त ५४ एक्ट्र स्एन रेश्च नार् कत्य गोर नकः एँलेश्र्यारं गलानलासंघ रेट चेतं ५५ विदार दिता महोत्रा महोत्रा महोत्रा प्रकेश तकः गुरीतर सित्रे के संघेक् मधीतन म्यहालेश्राहरू के भूत्तरी बंक्ट प्रत्य क् जाम तरं करेंगे हेस एक मार हेमतः यथ है कि हिन है हुन प्रजातस्ताःपरंतस्रेटेट हेनेक रेसमारके टेरेटतः ५८ मंगल फ्रिक्सणेह तेज्ञ भूतर जामतन्त्रिको रं जेंक्तिक करा प्रशास्त्र के रेप धरः नित्र न्यु द्विष्ठ च्छह तहते द्वा हा ए दे चु द्वा कर दे रे हे है है । एलेश्रेपधरपट ॥

हे के अपनिकंन्योकसार निवाह कर नाया और वो कल्याणपत्तकागा दर क्षिणमहूर्था नारे अपने घरमे जामात् क्रस्वा ५० फिर कई हेन्य रे बहु ने फ्रिक्स गार ानकर्जभराउसकेरोलटेटरस्क्र टेटाहकार्यकाआरंभभयोहे ५८ वाहामगलसूत्रकरने के बस्टस्सुटर्गा कर रेक्षा के तरे हे कत्य गारस जामाट किर्रिक्षा भइकद्म के सारिस्ण नर्नेहें तहम्मी वहार रेद्दिन् रेने लगे परंदुस्स में हो हित देन नाहोगर तब नेस नामात है हे न दनति ने न एक न्यां के प्तकारमा कर मकर ने एक के इस के शिक्षि में करने से कहा तव वे सव ब्राह गायह वे समें प्रभापपूज्य हे व से इस के शिक्ष के पर काणने कर ना हु

तब्एछे भरोपाध्यायक्र्रोहे कियोदि निकाससर्गहोप्कावता साल्ये अपियात्र स्वाति चारात्र चाराव्य चारात्र चा

श्रित्तिविदिजा अताजातिविभागवैकरिष्णामिनसशय ६२इत्युत्कापुनरे गह एखभरगुरः स्वयं वेलनाडु अवे ह्याटिवेगीनाडुद्वितीयक ६३ मुर्किनाडु कर्णकर्मातिलघाएणितथेवच कारालना द्वीतिभरावे भवताषट्मवित्हि ६४ स्वस्वर्भेत्रकर्तव्योकन्यासव्धएक्न धर्मसरहाणाधीयनियमायमपारुतः ६५ ॥ भ्रम्हिकेनासोतजो युह्ना आयकेरहसोम् र्कि नारुनाम की नाति प्रसिन्ह्से मुर्किकहते मरण नाउँ कहते ने राज्याधियक मरण दु खसे जोर्यात्यागकर के यहार है उनो कु मुर्किना रुजान ना अ फिरती नहेश मेस जो आये का बूह पाउक ब्राया कु उनो कु इस्त के कत्या कि तुत्यारिक णिक मी नाम कि साति प्रसिन्ह न कर्ण के मी का अथे कहते है कर्ण कहते कुरालकर्मप्रसिद्देश कर्म मेज्ञाकुराल उन्। कुर्गोंकर्गा जानना ४ और जा अपने ससर्गि है उन्। कि तिल गार्ग ना मक्तातिप्रसिद्देश ५ विसि । सल्नारुनामक साति छोट्ट भूसिद् हो दे ग्रेसाएन रेपरापायायन् मुभाम् जोत्राद्धाणिनये उनाक् करे के छत्रकारका साति भर्स्यापन् किया रसजा नीमेक्नेन्द्रिकार आपस्तवीबहोतीह श्रीयासवल्कीयवा नसनयीथोडेहे ६४ आरउपाध्यायन हत्याकि विवाह सबध्यपने अपने वर्ग मेकरना अन्यत्रनिह धर्मरश्लाहो नेके नास्तेयहमर्यादामयनस्थापनकरी ध्यूष

'असे (। लेश्वरोपाध्य यने छभेदस्थापनिवरे' ब र्छोर जोफेदमरे है सो नहते है यहते लगब्र साणोमे जोयाज्ञ ब्कीर है उने फेदे है ६६ एक अनु मुंडुंड ल द्सराकोत्तलंबर यहकोत्तलंबर ब्राह्मणेकाअखरोस बिकहते है दुबल अर्युल ऐसरे भेरहे और आये काउप दुर बार ऐस व्यवहार बीहे काल लिया टेबार बंडमाह ऐसे १ देहे ६७ अ रयह तेलंगांतर्गत नेया रेड हुए लिबार्भे रहे ६८ आरु बेल नेये रे १ पाकना टे नेये रे २ पेस लंबारी 'नयोगी श्नर्द्ध नेयोगी ४ ऐसे चारभेदहैं ६९ उसमें दिवाहसंबंध दोहोतकरके रूखन ग्रीने करते हैं कदा चित् पाकना दे निये गी आफ्नेल नेये ग्रहाः दुवहर्र्द्धश्रेदरेव मण्यन मञ्हण तर का मान्य रहे ने रे कि त्या मान्य स्तर है व न मान्य मान्य द्वारिह ने दे में हुए हैं अप तरेल ने रे भीन्य कर है दिर कः पेस्त्र है के भीन्य ने स्टिंड हुई के हिए हैं। स्टोरिहं ते दहरे : क्र चेहेकत स्टेंक रजम नक्ष के देर श्रूर्ण तर : ७० वे रेट रे न रउन्दर् स्ट्लिर तिरीर कः चतुर्किम् देशेरे केवलं मध्यकः ७९ एवं इति मरे सम्बद्धारे होत्यत्ते नेएरिः ऋत्व मह्य म्रिक्षेन्धेम् एवर् निक्ष हे ने में ते बहु का ति शिद्ध हे के दे हे के स्पर्ट के कि एक के परि के महिन के अपने वाहि

क्षण्य तरे हैं भेर ह ते लंगब्राह्मणों ने उपाद का देन र्ष इजा ते नाय उपाद मुस्लार श्रूद्र को रहे चर न मधार के मिट ऐसे हैं ७० ऐस ने लं महर लोक उस ने भेरमयने न्यान किया तथा दिशे रक्ष न कि रहे छे उद्देश ते लंग के हाला ने योग आहिबाह एक उस निषे स्पुराहुव उन्याहरू

किन्द्री अध्योत्ति विद्या चर्णां इदुर्ण देव हे गेर में च हड़ करण जा किन्द्री

अवश्रीपोत्पामिश्रीमद्भुमानार्यकी ज्ञाति जिनकुमरु कर्ते हैं उमोक्ताविनार ओत्श्रीनद्धभानार्यकी कार्यक्रिय कर्ते श्रीपद्भुमानार्यका मान्यक्ष करके श्रीपद्भुमानार्यका मान्यक्ष मा

अथतेत्मा ब्राह्मणातर्गतयीगोस्नामिश्रीवद्धभावार्यज्ञात्तुत्पत्तिप्रसगमाह् हरिक्षण गोलोकेवानमस्कृत्यश्रीक्षण्यक श्रोत्तर प्रदूष्णम् प्रवृद्ध्यामिश्रीवद्धभमहाप्रभो १ गोलोकभगवान् कल्लेष्यक्रावितवृद्धिर ममस्तात्मानुभावाय युद्धा हेत्रद्रित १ सम्त्रलसाप्रतिहमायावादात्तिरोहित तप्रवृत्तियितुष्ठिष्ठभक्तियोगविवृद्धय १ प्रष्टिमार्गलसानेन श्रीहरिरायजीकृतकारिका नवेरलोकसापेक्षासर्वयायज्ञवर्तते सापेक्षतास्वामिसुरवेपुष्टिमार्ग सक्ष्यते १ सोक्षेत्रभू भावोपत्रभावातिरेकतः सर्ववृधिकतारकृति पुष्टिमार्गः सक्ष्यत् इति १ देवजीवीन्द्रार्णार्थसभवामिश्रमेकुत्व इति विभिन्न त्यभगवान्द्रातसामकतेकले ४ १ १ वर्षास्त्र विभिन्न

त्यभगवान्शतसीमक्तेकुले ४ तेरिताकोऽत्तर्रामास्त्राचार्यकोमति। शिष्टाहितहै सोहेतमे पर्यवसान हो यहै ताते मायावाद्यदनयब स्वित्तभयोनिह और माध्वमतेहै तस्पुटहे सोवेदसमतनिह तातेषु ष्टिमार्गमे स्वेहासिकाभिक्तभपानेहे इत्रमार्गमेभगवान्महासप्तपानिह तबसासात् श्रीक्षभणाहि श्रीवञ्चमार्वाप्तस्त्रपप्रायदेशके बन्सदिनकेभावतमजनमार्गभगटिकपे। आपहुंभ बनताहि अनुसारिकपे और अपनेवंशहाराजानपर्वतः श्रीक्षभणाहि श्रीवञ्चमार्थको से प्रायतिक्षभणावि श्रीवञ्चमार्थको से स्वासीमयागनहादेशयतोकद्यस्त्रप्ति अवनेवासिक्षभणावि भन्नवासिकार्थको से स्वासीमयागिकेवराम ४

तेलगब्राह्मणविद्धारि ज्ञा तेसम् हूमेश्रीलक्ष्मणभव्दभयेसोइननेतथाइनेक पेतागणपितभव्दने तथापितामह गगाधरभवृत्ने एक कुंड मेशतसीमयद किरेहि सोटें दवान्य र त्यकरवेकेलियेश्रीकस्मवह्याचार सक्तपते भूतल विषेत्रगटेहै ५ अबर शिएरेवामेकाकरसंब ग्रामके विषेशीलस्मए।भर्ड जिरहतेर्निकपर्ही को नामरस्रमागार्कह तोउनके गर्भोग्श्रीत्रभुअपने आहे वाको प्रवेश कियो ६ सोतन्ते प्रति देन इत्मागारूके स्वरूपमे ते नप्रकाश बुद्धिचातुर्धन्द रे अयो गर्भ रत्न जव अष्टममासके भरे तन्द्र पताकेषातः करणमेद्रेरणकरि तन्त्रव्हम्मणभद्गनिने चिचारकिरे सोमयागकेषांगके सपादलक्षबाद्मणभोजनकरावनेहे सोकाग्निक्षेत्रमेभरेन्याहियेसोपानात 'ने संगतिसातिके बोष्टलोगनते करके और यथो चितना तेवर्गतथा बेष्यसमाजलेके काबीयात्राकर सोषोरे देनमेकार्ब आयके काशी मेहनुम नधार अपरज हासजार सन्बसते हते तहासुदर इरले के सुखतें जेनासिकये केर शुभदिन बेचारके ब्रासणभोजनके सत्रको आरंभ केयो इतने मेको इय्वना है पति रेखे छनकी सेना आं इ हे हा देन दिस् भरहाज कुले न्हें आए सं ह र जुहें दर्श लक्ष्म ए हिन रहे ५ इहामा गारू एहरे हे के कर र म के पुर देशस्प इदेशंदै चकर इत्तः प्रभुः ६ ७ चे कं चाफि पुराणेभ देखे तर्दं डे अ के रूपे देजा चारोभ देखे में हमूत्रे द इभोल रेक्तएस देवलः पुरुषे नाइते १अष्टमार नंतं हेन देर न ने मेनतः नंद त्परेजन लेके गेरके द्रा च र्णात् ७ तेकेकारीमेबी आवेहे यह खबर सुनतेबोभय के लिये भगव हेच्छा जानके काशीते फेर्अपनेदेशको चलेसी जब मक्तल १८ केऊप्रगयेतहा चपारएपनामकरके बनके देषे इल्प्रागाकर्ज को गर्भस्रावभयोसो भगव दिच्छा मानके आम गर्भजानके एकांतस्थलके विपे सुंदर एक बृक्षके नी दे आम गर्भको धरिरो

कच्छुसेर बिभयोफेरतहातेसमीप ने रानामकरके एकनगरहते।सोतहाजायेद एकरात्रि निवास कियो श्रातःकालका शिते पत्र छेकेमनुष्य आयो तामेरववरखाई जो कार्रामिकञ्चभयनहीहे भेरचन आवेगोन हे सोसुनतेब इहर्षितहो जे अब ब्राह्मणभोजनको सत्रपूरो हो ने गो यह इच्छा से सकळ समाजर ही तकाशी के तरफ चले सो जहागरिसावग्रयोहतेतिहाजबकाएतवमाताइल्मागारूजी स्त्रीस्वभावकेन्सहीयंक नहागर्भथञ्रीहतोत होह्खनगरसोतहाअनिन्ननि र समस्कारशोमाद्रवीजी द्वार्वाहायके विकारमे अपिकी न्यान्यको मंउलहे ताके मध्यमेबालकअपने नरण अंगुप्रलेके मुरनमेन्वीषणकरेहें देवतालंढ का तिकरहे तासमयमाताके सानमेते दुःधकीधा रासानहोनेलगीरेनतासन तेरोहितभरे अग्निनेमार्ग देये तन्त्रलागारूर्जासम्। प नायंक अपनीसुत्तजानदे गोर्मे छेयेसोकाल ७

विक्रमसवृते १५३५ वैशालक अचारमानसे चे प्रकल्प भरविवारके दिन भवश्रीवद्धभानार्य जनागिनक ॥ ॥ माताने बासके में प्रिमेरे सान अध्यास १६ र साम यानकराववीभर् अपने देरानमे आयके पतिलक्षाणभर्जीकोर्द्रानकराये तासमयनारोदिशामे आनद्भयो ८१६११० लक्ष्माणभरजी 🎠 न्यापताचे ' **मिमस्स्य** नेतेत्तरिवास्य अपस्तवस्पानुसारसे जातकर्मसस्तारिकेपी ऐसोमहाप्राष्ट्रने महास्मशानकारिकोउके चेपार्यपमित्राकरपिकेपीसो र् चपार्षिक्षेत्रनागपुरके आग्रागपुरनामभारी यामहै तहातेकोस उपूर्वई ताकोनामचपासर करके स्फुट्हें तहा अयापितवितार है रेत्रामगर्भनती स्मीके गर्भमाव कीरपात हो पहेंसी अयापिर्सि (परेशमे याबातको लोक जाने माने हैं गर्भवती स्मीको लेके तामागी वे अविनायन पनापिपनम्हाकितिकमारने अमेरिने वैशासक होकारुखारवी वासवम्तरा ८ वृश्विकागृसुरवेके तु कक्षक्रवा सु तेनुप बहेरके सम्मेमद् नवमेगुरुभूमिजो रद्यामेरे हिक्येतुजात भीवलम प्रमु अधिजालीमध्यभागा त रान्दमयनगर् १ पिताविकारवामासे जातकर्भयया विधि पुन समाजसग्रत्य गत्वावाराणसी शुमा भू ब्राह्मण् न्भाजगामास स्पत्नापूर्वस्थले युने तराश्री बल्लभाचार्य बार्निहज्युंगवान् १२ नित्नावस्थापयामासभिक्तिमाग मनुत्तम् ततोहिज्ञत्वस्त्राप्यसभायाक्षरासकं १३ कत्वास्वसेवकं पत्रान्माध्वानरगुरः प्रति गत्वाचकाराध्ययन शास्त्राणाचिवविषत १४ हि अवस्त्राणामवृजी जन्मु उत्सव चपारण्यमे करके सकलसमाज लेकहर्ष पूर्वक काविको चलसोकाशीमे आ ये ग पूर्वस्थलमेनिवास्करके अविशिष्टत्रास्मणभोजनस्त्रसपूर्णक्योसोनित्यजोविद्दानलेक अविशनके सायश्रीमहाप्रमुजीविवादकरके १२ भ कि मार्गिरपापनकर ऐसे श्रीप्रभु जबसातवर्षके भये तबल सम्णे भरू जीने यसी पबीतसरकारिक यो बोस्त्रभाने एक प्रदेशी करन्दास मेध मध्यि आपोउसकी मनोगतवार्ताकहर्ते १३ अपनो सेवकियो खबासी मेरखो केरचारमहिने मे बारवेद षद् शास्त्र माध्वानद तीर्ध केपास पढे जीर मायावारीक्रपरास्त्रकिये १४॥ \_ NU 11. 東北 H CQ II 1161

£1

फेरकाणीमेपनावल वनसेविस्तप देतीक्परास केथे फेरशीलस्मणमह्जीश्रीमहाश्रमुहिनकुलेकेकाशीतेपधारेसीलस्मणबालामेश्रायके १५ अपने नेजस रूपमेशातर्धानमये नंतरश्री महापभूजीनेउत्तर केयाकरके १६ हिजयनगरमेस्तवप देतान्दुपरास्तकरके क्रालेद्वराजानुष्पपनीसेवककरके माताजीइल्मागा रूजीकुलाश्रममेस्ताक १० पृष्टिपरिक्रमाकु नेकसेसोश्रीपंदरपुरमेश्रीविदल नाथसुराभाषणकरके फेर अनेकदेशाटनकरते श्रीजगन्नायजीमेबाहिनकुजी तके प्रसादमहालवर्णनकरकेफेर चिद्रकाश्रममेश्री वेदच्यारार्ज सुसभाषणकरके तीस्तर्र प'रेक्रमापृष्टि किकर तेब्रह्न श्रीज्ञासेश्री निस्त माप्ति के प्रागटाकिट जोरशीदाकुरजी केश्रवासि स्रिपरिक्रमापूर्ण किये ऐसी वर्ष १२ मेश्रपरिक्रमातीनपूरिकरके काशिमेश्रायके १८ समावह नकरकेशीहिनक नायर्ज किश्रावासुमधुमगलनामक तेल्याबाह्मणिककन्याश्रीमहालस्भीतिनसे विवाहकरके त्रीवेणिसंगमकेपार्श्वरेलकरके प्राममेश्रायके घर धकेरहे व दीन कलहे तर है के केपन वलाद ने तत है है के स्थान कि कि है है है के कि कार के देन के कि कार के है है है के कि

व हीनं बलहेतरं ते न के पत्र न्लावनं ततः चित स्त पुत्र है गृही त्वा कं कारे पत्रे भिर्म ति कि जिल्हा कि है है के मूलहरू एक व में स्था यं तहार हु प्रक्रिक के दिन है के प्रक्रिक के प्रिक के प्रक्रिक क

१९ फिरसंबत्भाष्ट नेभाद्रपदक्षभः के दिनान्येष्टपुत्रश्रीबत्मम्जीकोअवतारश्रीगोपीनायजी प्रगटभयेसीयोरिकालभूतलपरिवराजे अवश्रीमहात्स्भी विशेषान्त्रभावत्रादुर्भान्हे यो श्री वेष्टलनायजीनेआज्ञाकरीहम् प्रगाटें गेताते । सनकोषाम् स्थापात्र प्राप्तिकोप्तर्भा दिक्षेत्र विशेषान्त्र स्थापात्र स्थापा

मृज्या सम्मेष् तिनकेपुन् भयेतामे ज्येष्ठपुन्भीतिरिधरजीष्पित्तिप्राप्तत १५९० केन्यचिक्षुद्र १६कोप्रकृष्ट सौष्पित्तिक्ष होताते आचार्यगारी और श्रीगार्वर्तन नायजीकी मुस्यसेनाश्री एसाई जीनेरीनी और रायभागमे भीनपुरेश जीको स्वक्र परिवृद्धि किरिह तीय पुनश्री गोविन्सराय जी समत् १६ केमार्गिर्दिक ही दे केरिनेए परिशुणको प्राक्त व्यभगोर्शन के साम परिवृद्धि होता प्राप्ति परिश्व के स्वाप्ति के स्वत्य के स्वाप्ति के स्वत्य के स्वाप्ति के स्वत्य के स्वाप्ति के स्वत्य के स्व

उक्कन्षितिसहिताया धनुर्मासस्यक्तितुनवम्यां मुनिसत्तम गाणावतारक्तारस्य हिज्यतेष्णभूतेल १भविष्यति महा प्राह्मोदेनानुद्रराणयनवद्धभस्य ग्रहेन्द्रनगिरिराजधराहरि १सनत्तु मारसहिताया विप्रविवनदेवाना मुद्धारार्यभविष्यति विद्वतेशासुतंना मतापत्रयनिनातार्व १ गोरीतत्रेषोषकत्त्रमन्याचिवहुले श्रीतस्यक् द्विजालेष महादेविकाश्याः सा निहित्तेहरि १ गुसवृंदावनयूजनाना पक्षिसमाकुल गिरिराजकनिष्टस्य चराणे द्रश्र्यग्वरे ५ भविष्यति कले मध्येष्रयमे नदनरनहति अयश्रीविद्रलेशस्य पुत्रा समाभवन् विभो भक्तिमार्गप्रणेतारवश्विष्यातकीर्तयः २२ स्वहारावभागम् श्रीवास

स्ति प्रसार जान नार पुरुरार चुना सामान्य मा नास मागन्न प्राति स्वाति स्

٧ ... **ح**ر

नासणात्पति

\_

EX.

पेत्र वल्लमानार्रज नेश्नमान्दास सेश्र सुबे धर्म आदिअने कग्रं बनार के अपने हित यपुत्रजे श्रीगोस्ता मेश्रीर हुल नायर्ज के विषस्या पत क्यों फिर आपको र युक्ति कर के अपनियर्क्ट जी ते गृहत्याग की आताले के अतात एका किश्री बे एगर्ज के तरऊ पर आयके नारायरो दित घर्ष के विषम त्राज्यारण कर के संन्यसामरे शोका प्रसारक जन के की का समाधानकर के और र हाजन ता कर के चित्र विसेष होयांगे और का शिवा से संन्य सिन के संन्य स्मार्ग दिखाव ने बिहे ऐसे विचार के २० आपए का के काशी आरे सो अर्थ संगर गंगातर के ऊपर हनुमान धार पर वे राजे और दिन ४० पर्य तए क आसन अन्तरान इत्थान मुद्राते रहे चा लिस वे देन मध्यान्ह के समय आप के गंगा अवाह के ऊपर मध्य अवाह पर्य त जाके अवाह ते स्वर्म उत्था पर्य है विस्था विस्था के स्वाह के समय आप के नियं के किया से किया के अप पर स्वाह के स्वाह के स्वाह के स्वाह के किया से किया के स्वाह के स्वा

रिक्रों है कि भाचार्य जी नेहि कियों इते अलं २४ ऐसोश्री महस्र प्रामुको और श्री गुसाइर्ज के मनसे कृ स् एा निक्रों अन्य के साथ का शिजाने कि वरवत्य के के मनसे कृ स् एा निक्रों सोख के पात के पात

- -मिश्नरकंप **६**७

t ¥F

ओसमाजमेभारद्वाजगोत्री — श्रीगोसामिश्रीदिवृत्वनायजीमुरन्यमयउनेकसातपुत्रआहिनभगवान्श्रीक्तकानिकवामिकीद्वादरेत भयेउनेकत्यश्रम्याकाप्तलकागार्वाक्रियाक्त्रम्याक्ति निवास्त्रम्याक्ति निवास्त्रम्यपुत्रम्याक्षित्रम्यान्त्रम्याक्षित्रम्यान्त्रम्यविक्तं वर्षास्यपुत्रम्याम्याम्यान्त्रम्यान्यान्यान्त्रम्यस्यान्त्रम्यस्यान्त्रम्यस्यम्यस्यान्त्रम्यस्यम्यस्य

बारणप्रस्थपरास्थितासममनन् भावित्वसग्राण पुत्रास्तरम् चसन्तर्वस्थानिकाउक्ताण्यम् गिक्रम्सत्यसाम व्यानिकावस्थासिविद्याश्वीकामेणियतस्य पुत्रस्थान्यसम्भाव्यतसङ्क्ष्ये २० तद्दर्यात्र्यसिहारनामनगरी रारणानरद्रस्थले सबधाश्रियणोपितज्ञवस्ति कुर्वतितिष्टतिच्यारहिपचनरालस्वसिहारिकाव्यविद्यार्थित श्रीम च्वक्तविनिश्चारस्याक्षेतिभिधीरिन्डी २० त्यामप्रवरासरस्वर्थिया दिल्लिद्रसमानिता गिट्टालबुकजोगिया वितिधराषर्भातरावेबुधा १८अन्यवेनगरारितेनदिवृद्यास्यात्यस्याता सबधा सहत्रजेतस्य बहुधानान्यज्ञ कृत्रापिच २९ केचित्रवच्योकुलेपिमशुरार्थरावनश्रीवृद्यकामामिरिम त्यवबुदिरतलामाउन्त्यपुर्यास्याता कार्याती स्वेतप्रयागनगरीविवीपुरासागराभद्रावर्यबुदेलस्वरविष्यविभृत्सभामवने ३० नगरमनाकरहे वीनामसेविरमात्रभयेशीरकर्णा

नगरमनाक्षरह वानामसन्दियात्रम्थार्कन्याः नगरमनाक्षरह वानामसन्दियात्रम्थार्कन्याः नगरमनाक्षरह वानामसन्दियात्रम्थार्कन्याः नगरमनाक्षरह वानामसन्दियात्रम्थार्कन्याः नगरमनाक्षरह वानामसन्दियात्रम्थार्कन्याः क्षिप्रामेवृंदाकन्मिश्रीवृजमकामवनमे अगरिममालन्मे बुदीमेगत नामम्भन्यप्राहरमेकारीमि प्रयागमेविवीपुरामेबुरलस्वहेमऐस्येआदिजानो

६१

रमेरहे बोबोनामसे बिख्यातप्रये >•

ऐसि निमानाम्मणातर्गतभद्दन्नास्मणोकि निर्णयवर्णनिक्य ३९ इतिर्श्र गोस्वा मेवलभाचार को प्रागटर औरभद्दन्नारू एक उत्पत्ति इसर ए। ० सपूर्णभया- ॥६॥ गध्या 118211

यक्त रेमहन्दरणाखे सक्षादे मन्त्रोसूद्वेसिन्॥इतेमहन्द्रस्यन्पिःक्रेरेतेमर अद्तिश्रहरे ग्रस्त्रहर्णने ने इदर्णं ७ संपूर्णम्

अटर्रे उन्नासणोक्तानिर्णयकहतेहैं पूरिविध्याचलके उत्तरभागमेनर्मरानई के तटअप्रहरे वाले जो इसण्ये १ उसम्सेकितने क इसण्यह केनि भेन से एहंद्र देउदेवार आरे २ वाहापां इर द्रिरंवाक राजाश उसने यह क हर एगेन दिस ते जनतापरे एक वे हो हो तसन सकरते उनो कुख

पनिदेशमेराने और उनोट्यामरान दिशे ४ ६

11

उपजीतिकातानरोजस्तकरियाश्रयहारजाभेकेरानिकयेकितनेकक्षेत्रवीर्यीमेमुक्तियारकरिये ५ ऐसेवोब्राक्षाण्डतरारवडेकर्पादेभाषाकरनेवाले र जो ने **अध्याय**भ् थेप्रंतुद्रिनिउद्शमेजायकरहेवास्त्रवोदशभाषांका अनुसारिहवं औरबेरिशानारपालनकरनलेग् सेविज्ञासार ६ न्यकरान्यक कान्सिमडकप िमस्यः न्नास्प्रणेत्पत्त भृतिकविरीक्तिमालावाश्रपर्णिकुमारिटोक्रपर्यवदशकु न्यासकरके ७ जारहेह चोद्रविउल्लासुए कहे जातेहैं उसमेचिकितनेकरी ववैद्यक्यान्यार £Ÿ भेरसे भीरकितनेकमामभरसे बाद्रियोमजातिभेर हुँबाहै = उसमेथेडिक प्रियक्तिनामिक्स नामिक्स बताबु पुरू र प्रविद्या १ सुमगुठ द्राविद्या २ नोलंदाञ्चानिजः ५०९८ तुर्पुनारिद्राविज्ञ । कोनसीमद्राविबा ५७४४साहस्तद्राविज्ञ ६ त्रिसाहस्तद्राविज्ञ ७ साहस्तद्राविज्ञ ८ कजुमाणिकाका ९ (१०) ब्रह्चरणा १० जीत्तरयाः ११ दासिएणत्याद्राविद्याः १२ माध्यमद्राविद्यारत्रकारके १० मुक्काएणद्राविद्या १४ रोगिनयाद्राविद्यार्प्रकारके १५ व ्भपहारान् मनोत्तां श्वयोगसीमसमनितान् तीर्थसेत्रे खाधिपत्य रहोते भ्योमहातपाः ५ प्रत्वव्धवृत्ते योविप्रास्त हेर्गाचारर्युता तहेराभाषासयुक्तान्यवसस्तत्रतत्रच६ व्यंकराचलमारभ्यकुमारिकन्यकावधिद्राविडारवाम इरिंश सर्प कारणसिंपत 🎐 तत्रस्थिताश्मयेवित्रा द्राविठास्तेत्रकीर्त्तिता द्राविडेघपिवित्रेषु ग्रामान्वारप्रभेर्ति ८ भराश्चबृहवीज्ञातासान्वस्यामिसमासत् पुद्गातुंमगुंराश्चवीलदेवीयकाद्विजा १ तुर्पुनाटिकोनसीमाश्चाष्ट सारलद्राविद्याः त्रिसाह्साश्र्वसाहसा केंद्रमाणिकपैकाँ सहता १९ ब्रह्चरणकावित्रात्योत्त्रर्याश्रद्धाः मुका (पामाध्यमान्त्रीय बागिसान्ववत्विधा ११ वंडहलातिगलान्ववेरग्नापाचरात्रका आदिवेगवान्वविधा वड माश्वनतुर्विधा १२काणयातीनदिविधीतयातनार्वारका तिस्तमुवाद्रदितनतुर्विशतिद्राविद्याः १३

उर्खाद्राविया १६ तिगलग्रविया १० नेसानसाद्राविया १८ पाचरात्राद्राविया १९ आदित्रीवद्राविय २० नोतीनप्रकारके काचिक्रारणयपश्चितीर्थ निवासमेदकरके वयमाद्रावियचारप्रकारके २९ रोष्ठकारके काणियाल द्राविय २२ तन्नार्यरद्राविद्या २७ तील्लुमुवाय्रद्राविय २४ ॥१७

EA

. क्या **६**८म **६८**म

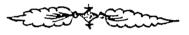
ऐसेनोविसप्रकारकेद्रविडब्राह्मणेहे वोद्रविडदेशमे प्रसिद्धे उनोकार्कन्यासब्धसस्वर्गमेहोताहे औरभो ननसंबध केलनेकद्रविडकास्वर्गमेहे भोर केतनेकद्रविडो-का अन्यन्गमेविहे एसासंक्षेपमद्रविडब्राह्मणेकाउत्पत्तिमेद्संग्रह्मयनेवर्णनिक्या १ रिद्रविडब्राह्मणकाउत्पत्तिमेदपुराहुवाद्रकार्ण ८ ५ ५ ५

एतेषांस्ट्रोटिकंत संबंध एवंच नच नको भविभो जने का चेद्न था १४ एवं संदेप ता हो तो दि ए निसंग्रह हू रिंस होने चेदुर सारी नो सन्हेर ने १५ दि श्री हिर्स हो ने ने ते बुरु रहे पे स्टर्स के का है पि ता निमार के आहे हैं द्रोड के देव हमा मेदवर्ग ने महत्रागं द संदूर्ण थ



गस्ते उत्तरिशा में संज्ञासणां कु नुत्यारे तब वे ब्रासणों ने यथि दियनकर्वां र . . . . .

## अधमहर्ष्ट्रस्थ हरू मित नेम ह ९



अबमहाराष्ट्र त्राह्माताणोक्ताउत्पत्तिम् दिवाप्रतापिप्रतिष्ठाननापुत्त्रत्वाराजाके वंद्यामेमहाराष्ट्र नामकाराज्यात्रात्यात्रात्यात्र उसकिनि मित्त से वोदराकानाममहाराष्ट्रदेदारोसापृथी मेप्रगटभया उसदेदा किस्पापूर्व मे विदर्भकहते बराड जिल्हाहै २पश्चिममेरीत्या द्रिपर्वतना वीक्तज्यं बक्त द्रगत पुरी रहेडा खासताराहै उत्तरमेता पेनई दक्षणमे हुवसी हार दब उयह गावहै ३ रोसायहमहाराष्ट्रदेशवाहाके राजाने यज्ञकरनेका संजल्म जिया है स्टिश कोर इत्तरस्तिके

अध्महा ष्ट्रेस सद करणात निम्ह सरोन आहे करो हता। पुरुष ने निकार स्वाहित के दिल्याते एस र जो महत्र र ते ने रेम ने देखा ते निक्षेत्र प्रमुश्च का महत्त्व प्रपृत्य करण पूर्व विद्याल के हिंदी हिंदी है के ते के ति प्रमुश्च करी है के ति है है के ति है है के ति ह

मोर<del>ाजाने बत्तरा</del>मारभरेनके नुडाप्रसाण हुना ब्राह्मलोकुगोर नपृथीशनसुनर्णसन्थनसम्बद्धोतिर्या ५ फिरयत्त्रमेखायहुनेकोब्राह्मलेकुअपनरसम्बद्धातिर्व प्रामेकारानकरके अपनेनामसेनोब्राह्मलेकीस्थाप सिन्धे ॥००५सरिनसेनोम्बरसङ्गामक ब्राह्मएकने ८ रक्षिणीब्राह्मलेकारमलेकारमण्डनकुर्वकहतेरैकोरसिलीब्रा क्याग्रह **ज्ञास्मिक्षात्पनि** अस्मिन्द्रारहोत्मलेखितातातिप्रेर्निहें फक्तरम्यातेदे विकिवेशिक्तमेरी पापसनीएसेभरह ८ ओरबोह्राह्मएकन्यासवध्यप्रपनिशासामिकर तंहै अन्यशासामनहिक्तिभोनानसम्बन्धसम्भारतसिर । दि नोमहाराष्ट्रनाहारोक्ता योजमहास गणरग्डमे । याई सोकहताह ११ ग्रनसर्तरमामे बडनगर तेनेरानात्रसन्नाम्हदेशसनान्यनेकस भोत्रिरम्यवरनार्णाण्यास्थनियोग्य धरदेशे मसमामारातान्दिजान्यनग गतान् सनाम्नास्मापयामात्रस्तायामान्सद्क्षिणान् अतपतिपर्वरागीद्यभीमाकस्थात हि ।तान वेनजानाम्हाराष्ट्रना स्राण्यांमितव्रता ८ राशिणात्याश्वतेत्रोक्तादेशस्यापरनामका त्याज्ञातिसम्हेतुज्ञारनामेक्षेनन्यातर ५ कुर्वेतिकेन्योस्त धारामासेनेकेवल तेपामी जनसबधोसर्वशारमसुनर्राते १ कि चिनमहात्य वर्णामितप् वैवृद्धिजनुमन्। पर्कु नागरसह निरहारात्रदृश्यते ११ उक्तनतस्यैनोत्तरिय्भागेरु द्रकेरिटिईजोत्तमा अस्तिसपूजितावित्रेदासिएँदिर्महासाँभि १२ महा योगिसक्षेपेणरासिणत्याहिजोत्तमा चमकारपुरेक्षेत्रेऋत्यास्यमुमापति १२ तत कोत्हलाविष्टा अन्द्यापर्यायुताः के्टिसरमाद्भुतं जग्मुस्तर्यद्रान्वालया १४ पहपूर्वमहपूर्वविक्षिषिणामितहर रतिश्रद्धासमीपेताश्र्वक सेन्रापयतरा ५ एतेषामध्यतीयस्क महायोगीनमीत्पर् नरमं रेनमी से तेमविष्यतिसपापभाक् १६ ततस्त्रेषामित्राय शौला रेवोमहेष्पर भूकित्री तोहिनार्यायके हिक्तपोव्यवस्थित १० हेल्याद्रशेन प्राप्त सर्वेषाहिजेस तमा तत प्रभृतितत्स्यान सद्कोटी तिविक्रता / जयतेषां प्रवस्यामिकुलगानादिनिर्णय उपनामादिक चैवयशाद छयराक्रता १९ करके गावेहे वाहार द्रकोटिपीटेहे १२ नारद्रेक्ट्र्रानिकेनस्त्रेट्रास्मिएणत्यन्नास्मणप्रकत्रोगस्नाभः अपनेदेशरानिकले तबरस्तेमसबीकाएक राप्यभयाकि १५ रुद्रकुजीसबीसेप्पतभागुमेदेरनगावीपापि ज्ञानिबिष्कतहोवेगा १६ ऐसाउनीकाविचारमानकेउनाकि भक्तिनियेत्रियनेकरोडक्तपधारएकरके १७ सबाक् र्यानिद्यैवोदिनसे ४, दक्षीटवोस्थानकानामम

فولع

अध्याहराष्ट्राणां उपनाम् कुलगोक देव रचक्र-॥क॥ उपनाम गोत्र प्र वेर शाखा स प्रमनाम गोत्र न्न बेर शाखा शारवा ४१ छेक्त्रवा बत्सायन ५ यः माध्य

कुलदेवी हुरोत आपसा तुलजापु पिगसे य माध्य मातापुरी कींडिन्य ऋ साकल रासीन २२ भालेरान ~> वन्छस ५ य माध्य मातापुरी 3

गार्ग्स २० वैद्य य आपसा भातापुर मोनभार्ग 🤊 🛪 शाहल बोधन २४ हेशाइ

भारहाज ३ ऋ शाकत बोधन २५ कानगी २६ रेहकोले भारदान > य आपस मातापुर २७ सामगान्त धनजय ७ ऋ शाकस मातापुर

२८ कुछकारी नमर्थिनतः ५ अ साकल सप्तश्यी

विश्वामित्र ३ ऋ शाकल मातापु २९ पाटिल **ब**रीष्ट ऋ शाकल मातापुरी जाशी बत्बस ५ य कएव मातापुः

३२ मूखे श्रीचत्स ३ य आपसा कुद्नेषु कार्यप ३ ऋ अधना बोधन

३६ भगवन् सोहिन <sup>७</sup> य माध्य कीव्हापुर

३३ हउंगे अत्रि ३ य आपलं कुर्नपु अ मर्न मीनभाग ५ ऋ शाकल उमावनी ३५ वागे

३५ जोसी भारद्वान ? ऋ शासल योगेश्वरी अ जोन्नी <sup>39</sup> पन्नावर शांडील्य ? ऋ शाकल कील्हास

पर विंचीर भारद्वाः ३ ध्भ समुद्र अत्रि ध्ध रागा ५७ कावले बच्छ माताहर ५४ सप्तक्त व उपमन्य ३ ८९ आवारे काश्यप ३ ७ आच्वले सुद्रल कोडिन्य 🤊 🛪 शाकल रासीन हे ५५ रह्माल गाग्धे ५ काश्यप 3 3

पट देंच **ज जुराफ्र** भारहाः ५७ भोकरे <sup>७२</sup> अंदनने के बाक व ५ भोजे

४२ पच्भेया उपमन्यन 🤊 यः माध्य

भारद्वाज 3

गोत्तम ?

काश्यप ३

काश्यप ७

काश्यप ७

काश्यप ३

3

४४ भर्माधिक उपम

४० रबंडे

४९ गोज

५१ केरर

५० देवहास

४५ रनभोर काश्यप उ

४६ कर्टर दिशारे उ

मुहत्त ण्य केत् भग्रहे भारद्वा- ७ कोशिक 3 काश्यप ७ ७५ गाल्हे

संख्य उपनाम

जोशी

गीते

बिउवाद

कायर

मूले वेस् गोहू

जोशि

पारक

१० देशपाउँ

१९ मुक् १२ चउव

१३ पुउ

१५ गुरूजी

२० मूले

उपमन्य

हा रेतस

काश्यप

गार्ग्य

पाराशर 3

'क्रामात्रि' ३

हारितस ७

सारगाग

क्राधात्र 🤊

माध्य मातापुरी

य

3 शाकल बालाजी य•

3

न्दहरि स्

माध्य

3 4

य-

माध्य- गणपति

केरावगोविर य माध्य

य

मस्रारि माध्य

माध्य गणपति वच्छस > यः

व्यक्टेश माध्यं

य

承 शाकल महालक्षी

काश्यप ७ ऋ बाकल महासरस्वति कोशिक ३ य

अपस्त्रम् तुलनापुर नामस्य ५ ऋ शाकल

3

१४ धर्माधिकारि मातापुरी गाग्ये ५ य-कर्व

१६ माहाजन-मातापुरी बत्स ५ यः कराव

1º कुलकार्शि अति 3 य गेपाउसम कएव

१८ रात्रेगएकर मीनभणे ३ ऱ्याकल ¦तुलनापुरी 来 १९ अभिहोत्रे 3 काइयप

य- आपुरत तुल को योग

प माधंहि सप्तश्ंगी

४४ सामक हरितस ? सा राणायण मातापु

**५९**१ सीसे

भारद्वा-

कुलरेवि माहिनीराज

मोहनी स्नात

मोहीनीरा-

साकात

माध्य

माध्य

६० साहणे संवित्न ३

६१ चादुपाने पारापार ३

ध्र लघुँ वसिष्ठ ३

ध्व साबले काश्यप व

ध्य खाहार काश्यप ३

ध्य कायदे की बीक अ

मोनस

६६ सोगरे धनंजर

य

य-

**बु**-स्थाम्प

<u>विवस्कृष</u>

ĘŪ

एतेषामुपनामानिकानिवित्यवदाम्यह्ः सेलकावोडका काला लाडसिधपपार्काः २७ गाडजाध्यवकाश्वेतितपा न्येपियस्तिहि एषाभोजनसम्बोसाईद्वादशकेषुच ३८ विवाहोस्यस्यवर्गेषैनान्यनेतिथिनिश्यय अत परप्रक स्यामिषिशपंपूर्वमायित् २९ एपाज्ञातिसमूहेतुकुठानिषण्णपत्यपि वशाश्वतारएवात्रस्र्येवयदशेपका यरोपमाणसर्गोक्तं भिष्योत्तरकपुरा बद्धाणोविस्ततः सोमः सीम्यस्तस्मात्युद्धरवाः ३१ पुद्धरेव सपुत्रीवेदक्षनामाः महोत्नतः तत्कन्याचादिनिर्मान्नाकरपपेनपिवाहिता ३२ तस्यात्सूर्यः समभवत् मनुरिल्वाद्यः पूरं मितिनारा ५ युगाचेन महाभोमी व्यन्तित ३३ अकोषोऽ जमस पुत्रोश्रावणी ऽ ह्यजपानक मयुरध्वजभीजी वहरिश्वद्वे सुधन्तक १४ भद्रसेनोर्सिहकेतुः तथाइसध्युजोनुष् ततागध्वंसेनभ्यस्यंवशसमुद्भवा १५ सूर्यवशोद्भवारा राजाश्रावणोनामय पुरा उक्तस्तरमे स्व केन्यावेसूर्यो सोमप्रभाभिधा ३६

न्मन उनीके पोडे असाम मो है सो कहताहु सेनके १ पाडेकर १ अने १ त्यहाणा । सिंधे ५ पणर ६ गाडे ५ जादम ८ चुन्यादि अनेकहैं द्नोका भी नन सहध

सावेषास शामिने होताई १८ और विवाह सर्पंध अपने अपने वर्गने होता है दूसरे पर्गमे नहि स्वत इस उपरान को मानिम अधने पान देखी है सो कहता हु १९

इस शामिमें कुल छत्न ६६ है उसमें को चार भ है उसमा बयान करने हैं सूर्यकरा १ सोमवरा १ यदुवरा १ रोवनागवरा १ ऐसे है १० इस नार पराकु मना

ग देरबनेकि इस्म हावेतो त्रणायति कुछनामक प्राष्ट्रत संघमे भाषकोत्तर पुराणका मगाण पतायाहै सद्यदेवसे अधिकापि पेदाभये अधीका पुत्र सोम सोम-सेवुभ अपसे पुरुर वा ११ पुरुर वका पुन बढामनापि अफर दीपने रहेनेवात्य दसनाम करके भया दसकि कन्या आविति नाम करके भइ उसक साथ क

रपप मापिने निमाह किया ३२ कर्पपते स् र्यभिषे सूर्यका मनु उनसे दलादिक राजाभय और मितनार अपूतायेन महाभीम 'अक्रांश' अनमन आयण' अनपाल' ययूर्यन' मोन हरिम्बद्र' सुधन्या भद्रसे न सिंहकेता इसध्वज्ञ'गभवेंसेन' इत्यादि स्वियतम बाहोत राज्य भये हैं १५ अम सोमका यश कहते हैं सूर्य बशी जो बादक राजा मकापराकामी उक्तने कोई निर्

60

अध्यायनः

बाह्मणोत्पन्ति

त्तसे सूर्यके साय वडायुद्ध किया उसके लिये सूर्य प्रसन्न होयके व्यपिन सोमप्ता नामिक जो कन्याथियो श्रावण राजाकु दियि ३६ रिछे योकन्यासे जो प्रशन्दें त्रायों मोमयरा प्रसिद्ध स्वा अव वा सोमवरामें जो प्रसिद्ध राजा भयेहें उनोंके नाम क्षित्रवते हैं पाधाता वर्ष्ट्र सेन मणिभद्र ३७ भद्रपाणि भद्र सेन वंद्र सेन इन्त्यादि राजा बोहोन भये हें परतु यहा जो कहे है वे सब कुल के प्रय्यात करने वाले हैं अब आगे शेषका वश कहता हु ३८ सोमवंशी माधाता राजा कि स्विन्ध भानुमित नामकरके हिते वो स्वीविध पतिव्रतायि परनु राजाने कोड कारण के लिये समागम छोड़ दिया बाद एक देन वो भानुमित गणास्नान करने कु जानो है वो पार्गि विश्वा मेव व्यपीने वो राणीका म्लान बदन देखके कारण पूछा तव राणिने कत्या कि मेराप ते एकवर्ष भया मेरे से बोलता न हे है वास्ते कुछ उपाय ब ताब व तब विश्वामित्रने एक कुष्पीमें जल अभिमवण करके दिया और कत्या कि यह जल तेर पती के मस्तक के उपर सेचन करे गि नो पतिवश्य होटे गा ऐसा

ध्वीऊपर पडा सा पृथ्विक भेदके शेषके मस्तककु स्पर्णकरते तत्काल मत्र मभावसे भानुमतीके पास आयके गर्भ स्यापनकरके चलेगये बाद भानुमित बंडे लक्जोत भइ विताकरने लगा उनने में राजाकु वर्तमान मालुम भयाकि राणीकु गर्भरत्या है सो सुनते वडाकोधायमान भया तब विस्वामित्र कर के वाहा आयके सम बुत्तात कत्या कि हे राजा अपे नेरे घरमें साक्षात् विष्णु अर्श शेषका गर्भ रत्या है सो तरा एवं भडामतापि होवेगा ऐसा कहके चलेगये बाद राजा प्रसन्त-भया नगमास पूर्ण भये तव शोधर करके पुत्र भया ४० वाद यहवरामे जोवडेराजा भये कुलस्यापना करने वाले उनके नाम गुगाधर' महेपाल' पुरंदर' नागोदर' वे-

र्ग मुज्यो र्च पिमस्क्रथ ६८

नेणुधर योनतारीर्ध महीषय ही सदर दामोदर नागानन कार्वशीर्थ विजयानि नदम ४२ यह सब हो प्रवास सिय हुए जानने अब यद्वश्वकहता हु चह क भी राजा ना भगारि करके विख्यात है ४३ उनका पुष्प यदुनाम करके भया उसके वहाने जो अबे हजो कु जाध्य कहते हैं या बारामकार है है सो पहिछे पर्णम किये भीर पेइप्रामें ओ दूसरे राजा अब हैं उनों के नाम कणध्यन 'जमुमित' वसुमित। गोपित। ऐसे अनेक राजा यदुवर्शी नानने ४४ एस सूर्यवशा सोमवश रोप्यशा यदुव शामह नार पशक राजा भिठक भरत खड़के छपन वेशमें आराज्य करने भय किसेषुगमें स्थापमें उनों के सबोक मिनके छन्तुक स्थापन किये हैं ॥ ॥ ॥ उ समें सूर्य सोम बहु दोष्या सुख्य हैं बाकि सबाका अनर भाष जानना अबगोन कमेंदेवीका निर्णय कहते हैं सूर्य वशी सिनय राजा के गोस १२ बारा है नद्रवर्श

एतेवैशेषवशीया यतुषशवदाम्यह सोमवशाद्भवो राजाययानिर्नामिथिकतः ८३ यदुनामान्तसुत्रस्तद्शोऽकिषि ध स्मृतः कर्णध्वजाजसुमित गोपनिर्वसुमानतया ४४ एववशचनुष्टयोद्भवनृषे संबेऽजनाभेपुरादेशेषद्शारसमि तृक्षिनितस्त्रसम्यक् तथापालितः तेषापण्णवतीकुरुानिविषुधे सस्यापितानिकमातः गात्रकर्मन्यापिदेवतगणकः स्थेऽजनिद्धस्तरात् ४५ सूर्यवशोद्भवान्तुगोत्राणिद्द्शिवाहः पचिशितिसोमानागोत्राणिसुनिर्ववीत् ४६ प्रम्भवितिकालिकान्वदुर्गायोगयशितया महास्मित्रयेद्राणिविङ्कात्वरितातया ४७ माहेश्वशीतिविस्यातादेष्यः श्वोभयतोङ्गाः अथेषाकर्मवस्यामिययोक्तपूर्यथयके ४८ राजाक गोत्र १५ है ऐसा भिष्योत्तर प्रतणसैद्याद्र सदम व्यासम्भवन

कत्याहै सो गीलके नाम कहत है भारद्वान १ पूर्तिमास २ विसष्ट १ कश्यम ६ इरित ५ विष्णु ६ महा ० शीनक ८ की दिन्य ९ की विक १ विश्वामिन १० माइच्य १२ यह बारा सूर्य नशिक नानना प्रभाषती कालिका महालक्ष्मी पोर्गश्य ह्राणी दुर्गी मह कुल देवता जाननी प्रय १। ५। जानने सो मबदी के गोम २५ प्रवाद १ कामि २ विश्वामि १० पारा ६ विश्वामि १० भारहान ८ कि एउ गोनक १० पारा वस्य १२ जमदिम १२ गोन १३ मुद्द १४ व्यास १५ छोमहा १६ अगिन १० की शिक १८ वत्स १९ पुरुषि २ मक्न २१ दुर्वासा १२ नारद १२ कश्येप २४ वकदालय १५ यह गोमजानन प्रवर १। ५। ७ शानने मोर्गश्यो जोगे १ जमदिम १ सनक्ष्मार ५ सी नस्य भार काम्य भारवाद द साहित्य

अध्यायनद्

बाद्यणासचि

६८

पुरणशास्त्रश्रवणमुण्ने तस्य धारणं नवेदा श्रवणं कार्यं करों धर्म विवर्जन त् ४९ विव दे भक्तिकरणं इहेदेव ईनं सद स्नानसंध्यात धाद नं कर्याद्वाह णभे जनं ५० जप्प श्रव्रहेशाद्व नं तूप सन दिख्य सूर्य थे । ५२ १ वर्षो द्वा नं चण् वं होनं ५१ रजस्त लावत है हिसुद्ध भव ते भामिने सूर्य शोद्ध नं तूप सन दिख्य सूर्य थे । ५२ १ वर्षो द्वा नं चण्य णे प्रत्र हुप सना १ क्ष्रणा एक नवेद वेजाय दश्य दिने ५३ कुरु पे धो गे कं देश ने कं वहस्य मित न्द्रुय ग्रं दिस्में मे चण्तिः सूर्य वंशो द्वा स्कृष्टः ५४ तस्य वह प्रत्र सत्य भत् हुरे में हुन् तत्क ने छो देशा में प्रत्य ने विकेष्ट रे ५५ वंग ते भत् हरे र ज सी हिल्ह स्तरः भी जर जस्य त्र स्तर स्व तेन से खुल सुन में ५६ येन मण्ड रेना मना प्रे भिनित पुर्व श्रेष्ट हुन् । ५७ लाके तीनदिन अस्पर्श धर्म पाठन करना सूर्य वशी राजाने विष्णु सूर्य कि उपासना-

करना ५२ शेषवशके राजाने गणपिनम्बकी उपासना करना आश्विनभुद्ध दशिम जिसकु दसरा कहते है उस्तिदिन सबोने शस्त्र पूजा करना ५२ अब यह-छन्दुकुलके अनर्गत एककुलका उत्मिन्न कारण कहनाहू सो हुनो सूर्य वंशोराजाजो गंधविसेन पिहले कत्या है ५४ उसके छपुत्र भये उसमे सबसे बढ़ा रा-जा भर्त्त्विर भया उससे छोटा विक्रम करके भया राजाभर्त्त्विर खरूनि काव्याभिचार देखके विरक्त होयके वनमे चलेगये बाद् विक्रमराजा राज्यगादी पर बै ते सोगा दे उज्जयन नगरिमेटी राजा विक्रमका भोजराज नामकरके पुत्रभया भोजराजके वंशमें भोसले ऐसाकुल पैदासया ५६ जीनोने विदर्भ देशमें नागपूर

**अध्याय १६** बाह्य पोत्सि

प्रतिष्टानपुरेरम्येतस्यपुत्र कुमारक सीकरोविकम पुत्र हावेतीहासिणाधिणे ५८ गोमानिकदेवासन्द भतिष्टानपुरेरम्येतस्यपुत्र कुमारक सीकरोविकम पुत्र हावेतीहासिणाधिणे ५८ गोमानिकदेवासन्द कतु परमाज्वली सूर्वप्वारदेशेन्प्रतिष्टानेन्बोरण ५९ शिदंग्वाल्हरदेशेन्साकुकेदिहिदेशके सिसोद्नामका राजाविल्यातोतुत्रजापुरे ६० मदोस्रेमोहित्रश्र्वच्हाणोपन्वदेशके गुर्जरार्व्येमहादेशेनाम्नागाईकपाह क ६१ सायतोनामनुपति गोवादेशेव्यवस्थित, बागलकोटारव्यकेमामेनाम्नासाहिकएवन् ६२ इदोरे तावहानामदाभाहोद्वारकापुरे धुलपोनासिकक्षेत्रसारकोन्वोतरेत्या ६३ कर्णाटकेतोवरश्र्यभारोकाश्रमीर कृत्या पादनोमसुरादेशेमुख्यस्थानमिदस्युत ६४ अथवण्णवितिकुलनामानि सुर्वेकुलभयमकपन्वमे देशसमन्वित सिनोलग्वसेनादकषाहराउनकेरिति ६५ हितीयन्वपवारारव्यवट्भोदेश्वसमान्वित पालवेधा ररायभ्यदलवीकदमस्तव्या ६६

कुछदेवी महातहमी खेवरी युद्रा नारक मभ बिनपा द्शामीकु खाहायू जना उपकार्यमें देवक क्ष्यवर्क अथवा सूर्य फुल तक्त गादि अयोध्या पर्मि लेकादि पीलानिशाण काठघोडा उनके कुछ ध्रितोहे र गवसे प्राइक र घाड़ ४ राजस ५ भीरसूर्य ६ यह रा भिसके सूर्य कुछ स्वियधर्मजानना ६५(कुळी प्रवासकी) ममुर्थन राना सूर्यम्यो उसके प्रामे जो सथे उनो का अपनाम प्रार भारद्राम गोन्न कुछदेवता संवेशाव व्यवक्ष युद्रा योजम्य

85

विजयादशामीकु शस्त्र तरवार पूजना पीलिगादि पीलानिशान जरदघोडा तक्तगादी पायगढ लग्नकार्यमे देवक कलवका और तरवार धारक फुल इनके ल त्र ज्यालव् धारराव २ दलवी २ कदम ४ विचारे ५ मालव ६ और पवार ७ यह ७ मिलके पवार कुल जानना ६६ (ज़ळी भासले) भोजराजा सूर्यवंशी उन् सके वरामें जो भये उनोका उपनाम भोसले शोनक उर्फ शालंकायन गोत्र कुल देवत जगदवा भूचरी मुद्रा तारक मंत्र विजयादशमीकु शस्त्र विख्वा पूजना लग्नकार्यमें देवक शरव पूजना भगवी गादी भगवा निसान नीलघोडा तक्तगादि नागपुर इनके कुल ४ सकपाल १ नकासे २ राव ३ और भोसले ४ यह ४ मिलके भोसले कुल जानना ६७ (कुळी घोरपडे) हरिश्र्यद्र राजा सूर्यवंशी उसके वश्रमें जोभये उनोका उपनाम घोरपडे व सिष्टगोत्र कुल देवता खंडेराव-दिन रेस लवद ते भे सले ते तृति देल सक्त्र लग्न के स्वर्ण हर्न हर्ने देन संदुर्ग ६७ कुलंह रेए ड रखंडेन्द्र में दस

दिन रेस लवड़ ते भे सले ते तृति र कं सकप लन्क सम्यं र र मे देन संदुर्ग ६७ कुलंह रेप इ रखंबे चतु भें दस मन्वतं मालपे पारशे चे र हे रपड़न लार हो ६८ राणा कुलं एं च मे दे ए मे दस मन्दित सी गरन मुखी के चर णेदुर दोच प टकः ६९ शिंदे कुलंच र छेटे भें दे ह दश भे दुतं कुर्वच शेशु ए लक्ष्म हल्क लक्ष्म ने कुलः ७० सकता लोन जरके र रेज चो हुर्द र स्तरा से तज्या दे हा दशे र शेद न सम्बद्ध से ति ; ७१

अगोचरी मुद्रा पचा सरी मन वेजया दशमों कु शस्त्र कटयार पूजना लग्नकार्य में देवक रुईका तक्तगादी मुगीप इण सुभगादी दुम्निनशान लालचें डा इनों जे जलचार ४ मालप १ पार हे २ नलावडे ३ और घर पडे ४ यह ४ मेलके घोरपडे जलजानना क्ष त्रेय धर्म चलाना ६८ (कुळी राणे) सुधन्याना मक राजा सुर्यवंशो उसके वशमें जो भये उनों का उपनाम राणे जमदिगिगोत्र जल हे है माहे स्वरी चाचरी मुद्रा पडा सरी मंत्र विजया दशमी कु शस्त्र तर वार पूजना तक्त गादी उदेपुर लालगादी लाल निशान लालघोडा लग्नकार्य में देवक सूर्यकांत अथवा बडका इनों के कुल ५ दुधे १ सीगवन २ मुली क ३ पाटक ४ और राणे ५ यह ५ कुल मिलके राणे कुल जानना सत्रेय धर्म चलाना ६९ (जुळी बोदे) भद्र सेन राजा सूर्य वंशो उसके वंशमें जो भये उनने नोका उपनाम अदे के डिन्य गोत्र जलदेवता जोतिया अलक्ष मुद्रा तारक मन्न तक्त गा दे खाल्हेर पालिगादी पोला मिसान पेला घेडा लग्नकार्यमें यो र्ण स्कथ देपक फलक्का अवशा छईका भिन्नभा द्रामीके दिन शत्म नरवार पूजना वह भिर्दे वारातरहके हैं तथापि उपनाम एक हि जानना कुर्वाशिदा भिल्नपछ शिदा महत्काल शिदा में कुर्वाशिदा भारते छ ते वह बोजिदा भारते छ ते वह बोजिदा मारते छ ते वह बोजिदा कर वक है देवक में किया भिन्न भिन्न भी किया भी जो निर्माण सामुके विश्वामित्र गांव कुरूदेवता हिगलका अभोन्त्री सुद्धा बीजम्म अमकार्यमें देवक कमल नाल सहीत अथवा सामुकि विश्व तक गादी दिखिश हर विलिगादी पी लानिशान नरद पोड़ा बिजपा द्रामीके दिन शुक्त साम्राह्म कुल ५ है सामुके १ नायमारे २ घाट गे १ घाष ४ पाता है किया प्रवेश भ यह पान भ

साकुके सज्ञक्येहेकुछप्यविष्टुत्व् सासुके वाघमारेच घाटणेषाघपमहे ७२ अष्टमचसिसोदारव्यकुछप्यवि धवुत्त् सिसोदेषापराधेय जारा भावरसास्या ॥७२॥ कुल्यनगतापारव्ययतुर्भेदसमन्वित नगताप्रश्वसेसार् -सितोतेत्यात्रण्यय ७४ मोरेकुल्यदशम्यतुर्भेदसमन्वितं मोरेतथाकेशकर कल्यातेदरवारके ७५

सामुके कुछजानना ॥७२॥ (कुदी विसोदे) सिक्षेक्सना सूर्यपशीउसके वशमे नोक्षये उनोका कुळ उपनाम सिसोदे गीतम गोत्र कुछद्वता अविका

भूवरीमुद्रा प्यासरीयय विजया दशमीकु शत्म क्रयार पूजना सम्कर्षमें देवक इंडदीका और क्रयाक तक्तगादी पुठनापूर इसमे कुल ५ है सिसादे १ आपराधे १ भोवर १ जोशी ४ साउप ५ यह पाप सीसो देकुल न नना ७३ (क्रुटीनगताप) बस्तसेन यजा सोमवशी उसके अग्रमे नो भये उनो का कुछ उपनाम जगताप बक्दाल्भ्य गोत्र कुल देवता स्वहेराव स्वेचित्र द्रा वहासरी मम तक्तगादि भस्तपुर सुपेदगादि सुपेद भिसान सुपेद घोडा उनकार्यमे देवक कल्याका और पिय्यलके पान विनयादशमीकु शस्त्रतरवा रयूजमा इसमे कुल ४ है जगताप मिलार १ सामे १ सिनोले ४ यह नारक छमिलके जगताप कहते हैं ७४ (कुळ मोरे) माधाना राजा सोमयशी उस के पश्ये जोका कुल उपनास मोरे अस्मोत्र कुल देवना स्वहेराय अगा गरी मुद्रा पृत्य जयमञ्च तक्तगादी काश्मीर अग्री गारी भगवा निसान भग अभाष १६ ब्राह्मणोसनि

. .

वा घोडा बिजया दशमों के दिन शस्त्र कटयार पूजना लग्नकार्यमें देवक मोरके पिच्छका और ोनसे साठ दीप इसमें कुछ ४ है मोरे १ केशकर २ कत्याते ३ दरबारे ४ यहचार कुछ मिछके मोरे कुछजानगळ, छुछी मोहिते व सुमने नामकराजा सोमवंशी उसके वंशमें जो भये उनोका उपनाम मोहिते गार्यगो व कुछदेवत खंडेराव अलझहुद्रा बीजमंत्र तक्तगादी मदोसर सुपेतगादी सुपेत निशान हु ते घोडा लग्नकार्यमें देवक कलंबका बिजया दशमों के देन शा स्त्रा पूजना इसमें कुछ ५ है मोहिते १ माने २ कामरे ३ कांटे ४ काठवडे ५ ऐसे मोहिते जागने क्षत्रिय धर्मचलाना ७६ (कुछी चवाण ) मणि भद्रराजा सोमवंशी उसके वशमें जो भये उनोका उपनाम नवाण किएलगे श्र कुछदेवत जो तिवा और खडेराव चानरी मुद्रा मुर्सिंह मन्न नक्तगादी पंजाब-पे किलानिशान पेला घोडा लग्नकार्यमें देवक वाहुंदी वेल विजयादशमों के देन शस्त्र खांडा पूजना इसमें कुछ ४ है चवाण १ घडप २ वारंगे ३ -

एक द्शांमो हितारळं कुलं पंचिधंस्मुनं मो हिनेकामरेमाने कं देषाठष देन आ ७६ चतु धें धच वाणारळं कुलं ह्या देशमंस्मुनं च्वाणोध डम्भ्रेयव रंगोदल प्तस्या ७७ इयो दशंच दा भाइंच तुर्भे दस्म नेवनं दा भाडे ने वलकरः रा वेरणादेवे नेकः ७८ कुलंग बक्त डारव्यं भेद्र यसमान्ति ने गांव कवाडः प्रथमः प्रतम्बर्भ नकः ७९.

द्रमि ४ ऐसे नार चवाण जानना ७० (लुळी दाभाडे) भद्रपाणि राजा सोमवरी उसके कुछमे जो भये उनोका उपनाम दाभाडे शा डिल्य गांत्र कुछ-देवन जोतिबा अगोबरी मुद्रा तारक पत्र तक्त गादि हारका उनकार्यमे देवक कछबके भगदोगादी भगवानिसान जरद घोडा विजया द्रामीके दिन श्र्में कट्यार पूजना इसमें कुछ ४ है दाभाडे १ निवळकर २ राव ३ रणिदि निकम ४ ऐसे दाभाडे जानना ७८ (कुळी गायकवाड) चद्रेसेन श्रमा सोमवंशी उसके कुछमे जोभदे उनोका उपनाम गायकवाड सनत्कुमार क्रियां त्र कुछदेवन खडेराव भूचरी मुद्रा मृत्यु जयमन तक्तगा दे गुनरातदेश भगवी गादी भगवानिसान भगवा किंवालाल घोडा लग्नकार्यमे देवक उंवरेका उर्फ गुहरका विजयादश मीके दिन शस्त्र तेगापूजना इसमें कुछ ३ है गायकवाड १ पाटनकर २ भाते ३ ऐसे तेन गायकवाड जानने क्षत्रियधर्म चलाना ७९ थ ध ध ध िज्यो प्र अस्कृष अर्

हि मोबाउर्फ सामवनाठी । भगपी गादि भगवानिसान जरी पटका लोहबादि घोडा तम्मकार्यमे देवक फल बका और इस्विदत विजया दशमिके दिन शरूक तर बार पूनना इसमे कुरु ४ है सापन १ कपले २ इनसूर कर १ भारत ४ यह बार मिलके सावन जानना ८० (कुनी साडिक ) कार्नधीर्य राजा शेषनशी उसने वरामें नोपाये आका उपनाम प्राठीक माध्यवत अप्रियात्र इखदेवताकात्यायनी रचेचरी मुद्रा पचादारी मान तक्तगादी बागलकोट निर्द्धागादी निर्द्धानिसा निरुपोडा सन्नकार्यमे देवक करवका अथवा पीपलका विजयाद्शमीके दिन शस्त्रकटयार किया नरवार पूजना इसमे कुछ ५ है हाशिक १ गयली ९ प्रागट १ भाइर४ वाकुर ५ पह मिलके ह्यारीक नानना ५९ (कुबीनायह) नागाननरामा शेषवशी उसके वशामे जो भये उनोका उपनाम तावहे विस्वायस्त उर्फ कुलसायतकप्तदशमन्त्वतुर्विध सायतोष्ठपछेकारव्य इनस्तक्ररघाडगे ८० कुलसाडीककतत्तुषोडशप्तधाः स्मृत साढीकागवली भोर्ठाकुर्कस्तया ८१ तोवडारव्यकुलससदशमत्वप्रचया तावडोसागलो नामजादोजावलिकिके ८२ धुलपास्यकुलपत्रिधमणादशस्मृत धुलप्धुमालधूराश्चकासल् लेडपवारको ८३ बागवारव्यकुलयबीकानिधशत्त्वतुर्विध बागवोपरबन्धीवमोकासीदिवटस्तया ८४ विस्तिम गात्रक्रव्येयता जोग

(कुडी साबत् ) अदसेन्सजा सोमवशी उसके पशामे जो अये उनाका उपनाम सायस दुर्वासा नःवि गोन कुछस्यामी जोतिया जापरी मुद्रा नृसिद्रमञ् तन्कत

भगोषरी मुद्दा पडाहारी मत्र तक्तगादि इदोर सुपेतगादि सुपेत निशान सुपेत योडा लग्नकार्यमे देवक कल्पका किवा इन्हें का पानका किवा सुनेकेपान विज-या दशमीके दिन शत्म कट्यार पूजना इसमे कुल है तावडे १ सागल शामजादे १ आवले ४ विरक्ति ५ ऐसे तावडे जानना ८२ (कुळी पुलप-पुले) महीपाल राजा शोपवशी उसके वश्मे जो भये उनोका उपनाम भुलप गोत्र कुलदेषत सब्देश भूनरी मूद्दा मृत्युजय मत्र तक्तगादि नाशिक त्यवक वि जयदुर्गभगवी गादि भग्नानिशान भगवा घोडा नरीपटका लग्नकार्यमेदेनक कल्पका और लेंडपवार इनोका केंड सुनेका इल्टीका फिला केतकीके भेतरभाग मेका किवा दशमीके दिन शत्म साडा पूनना इसमे कुल ४ है किवा ६ है पुरुप १ समल २ सरे १ वस्त से ४ हेडपवार फरेसे जानना ८२ (कुळी बागके) गोला क

अध्यायगः

वासणांसि

W1

ययािकयाभिनंदन राजाशेषवशी उसके वशमे जो भये उनोका उपनाम गागवे शोनल्य उर्फशोनक गोत्रकु छदेवता महाकाली भूचरी मूद्रा नरसिंह मन तक्तरान्ध्री कीटनुधी भग्दीगादी भग्वािमसान नगवा पंडा लग्नकार्ट में देवककलवका विजया दशमीके दिन शस्त्र तरवार पूजना इसमे जुख ४ है बागवे १ परवर मोका सी ३ दिवरे ४ है ऐसे बागवे जानना ८४ (कुळी शिरके) कर्णध्वज राजायदुवशी उसके वशमे जो भये उनोका उपनाम शिरके शोनल्य उर्फ शोनक गोत्र कुछदेव तगहाकाली तक्तगादी अभवाबाद अभगादी अभिनेशान अभवाों हा तरीपटका चाचरी मुद्रा बीजमत्र लग्नकार्ट में देवक कलबका विजया दशमीके दिन श स्त्र खाडा पूजना इसमे जुल ६ है। शिरके शकाकडे २ शेलके २ बागवान ४ गावल ५ मोकल ६ यह ६ शिरके जानना ८५ (कुळी तोवर) जसुमितराजा य दुवशी उसके वशमे जोभरे उनोका उपनाम तोवर गर्गायन गोत्र कुलदेवत जोगेन्धरी तक्तगादी कर्णीटक (सावनूर बकापूर) हरी गादी हरानिशान पीला घोड

- जिएक एवं कुलं ने शंपड हिंद तर स्मित दिर को फाकड़ के दिशे हैं विश्व के पर स्मित हैं प्रेंच किल के किल हैं कि दि के दि के प्रेंच के प्र

अथवा कांदेकि गाला विजया दशायीके दिन शस्त्र नेगायूजना इसमें कुल ५ है तोवर १ तामटे २ हुलके ३ धावडे ४ मालपवार ५ यह सब तेवर जानना ८६ (कुळी नाधवर्ष यादव) यदुराजा यदुवरी उसमें जो भये उनोका उपनाम नाधव ऊर्ज यादव को डिन्य गोत्र कुलेंद्वत जोगेम्बरी जोतिया और खंडेराव तक्त-गादी महरापूरी पीलगादी पोला निशान पीलाघोडा आलक्ष्म द्वा पंचा स्परी मत्र लगकार्यमें देवक कलवका आंवेका और उंबरेका विजया दशमों दिन शक्त तरवार यूजना इसमें कुल १२ है परत एक है जानना जाधव ९ जालिधरे २ जसवत ३ जगपाल ४ जागले ५ जारे ६ यादव ७ पाटेल ८ ६ मक ९ घोगले २० सीरगोरे ११ परत १२ यह सब जाधव जानना पूर्व के सुर्वेसे लेके जाधवतग सबोने क्ष त्रेय धर्म पालना पवित्रता रखना नित्य धोतवस्त्र मेहेनना यहोपित धारणकरना गोमास देना अभिय पूजना पूराणशास्त्र अवण करणा ऐसे यह पणावर्ग कुल समास मये ८० छ ७९ ७९

अयमहाराद्र शूद्र शिनिपाणा पण्णवास्कित उपनाम कोडकम् किरम वे रूप मुखीक ४ सूर्वे । विमेले ९ ४५ क्यदे ४ नाबर्स ४ उसरकेप यम निरम्बे प गोद १ ५६ च्याण र ve younger नार्दक ४ रामुक्ते १ ५६ भडमर भुभाउर गप्यार ५१ बारमे ३ प्रा सान ६ प्रदर्ग ५५ रहवरी ४ 36 1 **५५ झुंस**चे ४ पुर्वार १ पाग ZIA18 संदूषकार ५ प्रवाहे ५ **५६ निवन्नर** ९ गास्य सिमोदे ' पागपे १ भारतप ६ र्ड्य ४ भट रणायिषे ध अपराध । रू पोसाहि ३ भोदर मायक प्राप्त -दिवटे थे विश्वे-१ निचर त्रोगी ५ गरमाक्य ४ सम तानव सम्बद्ध भाने ६४ त्यवार स्पन्तर मुक्ते । शस्त्रे ३ **इंड**से १ मुखाः अस्ति ३ इन्सुनकर ५ पादरी ४ नुकाती ३ चामबान र **ंशिसरेडे ४** ५१ व्यक्तिम परिपद्ध १ संबंधि र मोक्स ५ नाधप १ केशकर १ **ਾਵਿਲੀ** ' सोवर् • नारपे ३ क्न्याने १ ५८ भारते १ तामरे १ 65 American A दरपारे । भ्राप् ४ नुस् भाषर मीकि रको १ राष्ट्र ५ माने १ रप सावह १ मासपनार् 🔨 A Section 1 **बंद कामरे** १ **७२ सागछ १** ९६ सध्य ६

ऐसे मयने यह महाराष्ट्र देशत्य काम्हणोकि उत्पत्ति कुछ गोमाभिचार मीर्भुद्र सकि वमरेठे जो है उनां कि उसनि कुछनाम भद मय इरिक्चामे कातिभेदकासान

एवप्रोक्तमियासम्यक् महाराष्ट्र समुद्भक्ः हरिकृष्णेन (बृत्कुत्अवनसर्ह्रिष्कुष्णविनिमिने बृहज्योतिषाणी नेष र विश्वरकधं अनेकविधवाह्यणोत्पनि मार्नेडाभ्यायेष इतिपूर्वभाग u U

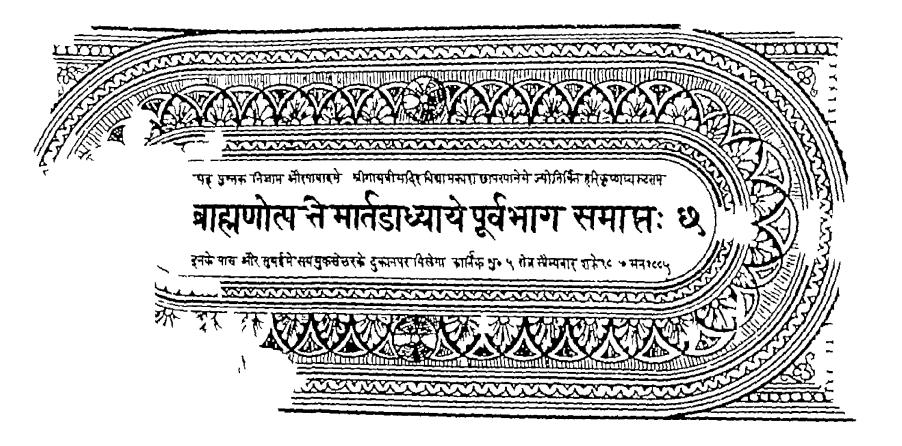
हाना इसहेनूके सिये उसिभेद वर्णन किमा ८८ इतिबाद्मणासनि मयमे महास इके भेदचपूर्णभये मकरण ९

भागेभविष्यति

माकीक ऋनेक भेदनों है वो उत्तर भागमें पगट करा

अमाधि भ मध्यपोश्यति

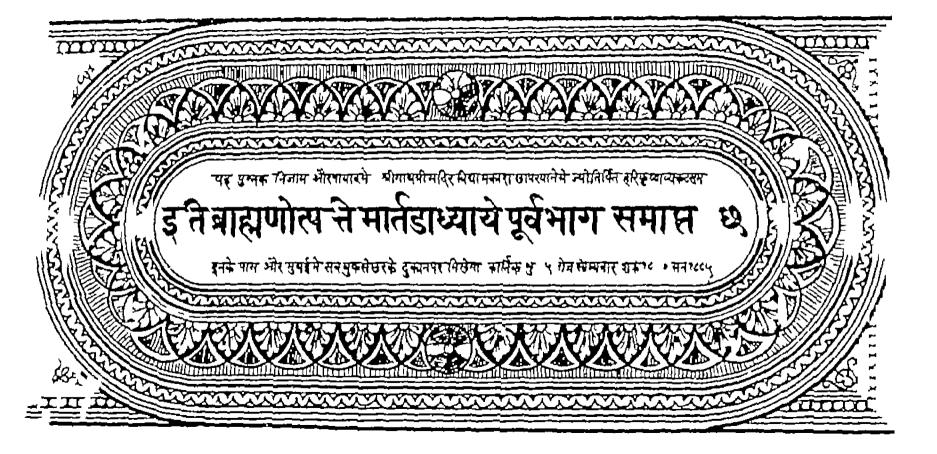
**⊸**3



॥ अय हमोड ब्राह्मणोस ति प्रकरणाम्॥ अय छ प्रकार के स्रोड ब्राह्मण और ग्रिये उनाका उसनि प्रसमक हतो हुँ शीनक असी प्रस्तक रते हैं हे सूत भौराणिक सबती यीमे उत्तम जो नीर्य होवे सोक हो तब सूत कहते हैं ह अस्वी यर हो नार्च गनकी कथामें कबनाह तुम कनो १ पूर्वी युधिविर राजारु वनमें जो धीन्य ऋषीने कही है एकसमयमें दुर्यीधनने यून की डासे पाड़ में ने तव पाड़व बनमें आपे अ र्तृन स्पाकी रचना देखनेकु गर्ये तब एक दिन वधु सह वर्तमान राजा युधिखिर उदास होके बेठिहै ३ इतनेमें धोम्य ऋषी आये राजाने पूजा किये ऋषीने राजाकुं दु खिन देखके पूछ ने लगे ४ धीम्य प्रखत है हे राजा। वुम दु खित कायस हो पूर्वी नलराजा और रामचंद्र यह एकि ले बडे दु खायसे हैं। और नुमनो स्त्री बधु मह वर्तमान हो। वास्ते वुम नीर्च यात्रा करो

॥ उक्तं पद्मपुराणे पाताल खंडे ॥ ॥ इनिक उवाच ॥ ॥ बद्सूत महाभागतीय ना सुत्तमचयत् ॥ ॥ सूत उवाच ॥ ॥ शुणु ध्वसुनय सर्वे तीरराज क्यानक ॥१ ॥ हिधिष्राययसूर्वधी स्थेनकथितवर्ते॥ दुर्यधिनेन धूतेनजितास्तेषां डेवायदा ॥ २ ॥ आगतावन मध्येत् चार्जने स्वरी मास्थितं ॥ एकदादु त्विनाराजास्थितं बहुजने सह ॥ ३ ॥ धोम्य सुमागनस्तेत्रराजापूजिनवास्तदा ॥ दु खिनव्पति दृष्ट्वा धर्मे प्रोवाच त त्त्वित् ॥ ४॥ ॥ भूभोम्यउवाच ॥ ॥ किंदु खितो,सिरा,जेद्रययावैपाकतोनरः ॥ अद्भूतमहद्भुरवंरामेणचनलेनच ॥ ५ ॥ एका किनारह नात्तत्रतातृभातृभिर्भार्ययाद् तः ॥ इरुतीर्यान्यनेकानितेनसीरव्यं भविष्यते॥ ६॥ ॥ इधिषिरउवाच् ॥ ॥स्वामिस्तीर्यान्तमंब्रुहियेनसीरव्य लमाम्यह ॥ ॥ धीम्युवाच ॥ ॥ शृष् पार्थ प्रवस्या मिधर्मारण्यंसु दुण्यद ॥ ७ ॥ से वत्धर्मराजेन सूर्येणे द्रादिभिस्तया ॥ प्रजेशी सेवित पूर्व मुनिभि सिद्ध-वारणे ॥ ८ ॥ गर्गादिसर्वतीर्थानिसिहराशिस्थितेर्रे ॥ धर्मारण्ये समाया तिगोदोवर्यतेन-परम् ॥ ९ ॥ ॥ इधि श्वर्उवा च॥ ॥कयतीर समुसन्नकस्मिन्कालेन्यतद्द॥ ॥ धेम्यउधान्॥ ॥माप्तेकत्मेऽधराज्ये द्रश्चेषशच्या गतेहरी। १०॥ उस नीर्थ यात्रासे बुमकुं कत्यहोवे-

गा ६ यपिचिर प्रखतेहें हे स्वामिन्। उत्तमतीर्थ कही जिससे फरव होवे धीम्यक्रिषीकहते हे हेराजा। श्रवणकर एक धर्मारण्य नामक वडा तीर्थ क्षेत्र राजरात देशमे सिद्धपूर् के नजीक हैं ७ पूर्वि जिस क्षेत्रका से बन धर्म, खूर्य, इंद्र, ब्रह्मा, विष्यु, शिव, सिव्ह, तरण छोकोंने किया है ८ गगादिक जितने तीर्घ है सो सिह्के वृहस्प्रती से पहिन्नु धर्मारण्य क्षेत्र में आयक पी छे गोदावरी कु जाते हैं ९ राजा युधिशिर-इंख्ट हैं है धीस्य वो तीर्थ कीनसे काल में क्रेसा भयाहें, सो कहीं ऋषि कहने हैं हे राजा। यदा कत्ममें विष्णुने अब बाव्याः जाय के ज्ञायन किया १०



॥ उन्य हो द ब्राह्मणोस ते प्रकरणाह ॥ अय छ मकार के ह्योद बाह्मण और बनिये उनाका उसित प्रसमकहता दु शीनक ऋषी प्रसकरते हैं हे सून पीराणिक सबती यों मे उनम जो नीर्घ होवे सोक हो नव सून कहते हैं ह ऋषी युर दी नार्च गनकी कथामें कहता हु तुम कनो १ द्वर्ग युधिष्ठिर राजा कु बनमें जो धीन्य ऋषीने कही है एक समयमें दुर्योधनने चून की डासे पाड़ में कु जीने व तम पाड़व बनमें आपे अ र्मुन स्वर्गकी रचना वेखनेकु गर्य तब एक दिन बंधु सह वर्तमान राजा युपिछिर उदास होके बैठि है 3 इननेमें धीम्य ऋषी आये राजाने प्रजा किये ऋषीने राजा के दुर्णिन देखके पूछ ने लगे । धीम्य प्लिते है है राजा। तुम दु स्थित कायम है। पूर्वी नलगजा और गमचड़ यह एकिये बड़े दु रय पाये हैं। और नुमनो स्थीबधु मह पर्न मान हो। पास्ने हम नीर्य यापा करे।

॥ उक्त पद्मपुराणे पाताल खंडे ॥ ।। बरेन कउवान्व ॥ ।। गद्सूत महाभागतीर्थाना स्त्तम नयत् ॥ ।। सूतउवान्व ॥ ॥ ऋणुध्य सुनय सर्वे तीरीज क्यानक ॥१ ॥रुधिविराययत्र्वधी म्येनकथितवरी ॥दुयीधनेनधूतेनजितासीपांडवायदा ॥ २ ॥ आगतावनमध्येत् चार्ड्न स्वर्ग मास्थितं ॥ एकदादु खितौराजास्थितं बंधुजनी सह ॥ ३ ॥ धोम्याँ समागतस्तेत्रराजापूजितवांस्तदा ॥ दुाखितदपति दृष्टा धर्मे प्रौवाच त त्विवत् ॥ ४ ॥ भू पोम्यउवाच ॥ ॥ किंदु खितो,सिराजेंद्रयथावैपारुतोनरः ॥ अर्दुभूतमहद्वरवंरामेणचनलेनच ॥ ५ ॥ एकाकिनाः हु नात्नतुष्त्रातृभिर्भार्ययास्तरः॥ कुरुतीर्थान्यरेकानितेनसीरव्यं भिष्यति॥ ६॥ ॥ इधिष्ठिरउवाच ॥ ॥स्वामिन्तार्थान्तमंब्रुहियेनसीरव्य लमाम्यह ॥ ॥ धीम्यु वाच ॥ ॥ शृषु पार्ध प्रवस्या मिधर्मारण्यं सु पुण्युद ॥ ७ ॥ सेवित धर्मराजेन सूर्येण द्रादि भिन्तया ॥ प्रजेशी सेवित पूर्व मुनिकि सिद्ध-बारणे । ॥ व ॥ गगादिसर्वतार्था निसिद्धराशि स्थिते गुरी ॥ धर्मारण्ये समायां निग दोवयं तुन परम् ॥ १ ॥ ॥ सुधि शिर्उवा च॥ ॥कयतीर्यसम् सन्नांकस्मिन्कालेन्यतद्द॥ ॥ धेम्यउधान्य॥ ॥माप्तेकत्मेऽधराजेंद्रशेषशय्या गतेहरें ॥ १०॥ उस वार्य यात्रामे वुमकुं सत्यहोवे-

गा ६ युधि छिर प्रखते है हे स्वामिन्। उत्तमतीर्य कही जिससे फरव होवे धीम्यऋषीकहने हे हेराजा। अवणकर एक धर्मार्ण्य नामक वडा तीर्य क्षेत्र राजरात रेशमे सिद्धपूर के नजीक हैं ७ पूर्वि जिस क्षेत्रका सेवन धर्म, सूर्य, इंद्र, ब्रह्मा, विष्यु, ब्रिव, सिंद्रजारण छोकोंने किया हैं ८ गंगा दिक जितने नीर्य हैं सो सिंद्र के वृहस्त्रनी से पहित्र धर्मा रण्य होत्र में आयक पी छे गोदा नरी कु जाते हैं ९ राजा युधि हिस्पु छुते हैं है धीस्य बो ती वे कोनसे काल में क्रेमा भया है, मो कही अपि कहते हैं है राजा। पद्म कत्यमें विष्णुते अप शास्त्री जाय के किया १०

नगरकी ताशीने कमल पैदा भवा कमसमे इद्या भये और ईपरी नेजामे ११ विष्णुको बोनोकानके मैनसे मधुकैटम नमके वा बेस उसनाभये और बद्या कु भारनेकु आये तब ब्रह्मने पिणुकीप्पृती करते हैं। विष्णुने वो बोनो देखोंकुं भारके १२ ब्रह्माकु एक्सा कि तुम सबस्तृष्टि पैदाकरो नगब्रह्माने सब स्विपित करके १ अस गढ़न जग्माम नाप केदनबके सोनरस तक तप किया तब भगवान् समस्भाय १४ और कद्या कि वर वान मगोन ब्रह्मा कहते हैं। विष्णा १ आ तुम समस्त्र अप ही। नी वस नग्मामे ब्रह्मादक प्रवास करते हैं। विष्णा १ आ तुम समस्त्र अप ही। नी वस नग्मामे ब्रह्मादक प्रवास करते हैं। विष्णा १ अप क्रिका करता १० और यहा में तुम इन्होंगत विनासकरें। और आपकी आदासे गगाविक सबनीर्थ यहा वासकरों और एक नगर निमाण करता बढ़ा ब्रह्माणों कि स्थापना करता १० और यहा में तुम

नामी कमत मुसन् तस्माइ साम्मवसुर ॥ नर्देव बी ह पी सनी ही वैत्यी मधुके ह भी ॥ ११ ॥ विष्णु कर्ण मलो इती हतु ब्रह्माण सु स्ती ॥ तया जैन सुनोविष्णु मी इत्ता मधुकें ह भी ॥ १२ ॥ अस्पन् कुरु अगरिद मर्वस्थायर जगमम् ॥ अयब ह्यान्व निर्माय स्थिति स्व तिवाम् ॥ १२ ॥ अस्पनिते स्पन्न मान्य तपसे पेक खरुणम् ॥ दिन्य वर्ष इत्तातम असन्ती स्व न्या वर्ष ॥ १४ ॥ उपात्रा तीव तस्तव वर्ष पसु व त ॥ ॥ अस्पीवाच ॥ ॥ पितृ हो । सिमेवेवस्थाने । स्मिन्सु मनो इरे ॥ १५ ॥ मिनास कुरु सन्त मिन्न स्वादि मिन्न ॥ गणेयस वर्ष विश्व अत्र तवा ॥ ॥ भ ॥ तीर्थाना मुन्म तीर्य भ वस्त्र विश्व प्रत्य अपकर्त स्थाय प्राप्त स्था ॥ ॥ १० ॥ मपात्वया तिष्ठ वन वा ॥ ॥ १६ ॥ तीर्थाना मुन्म तीर्य भ मनी येथेनारस्थात भ वेत्सदा ॥ १८ ॥ ॥ भ भेम्य उपात्र ॥ ॥ इत्युक्तोत्र स्थापिषणु त्रेरपामास शक्र म् ॥ विभित्ती ध्यानमास्थाप ध्याता सेवस्यी सुमाम्॥ १५७० सिकाले अस्ति स्थाणाः प्रकटी कृता ॥ अस्य द शास इत्याणि ने विश्व स्वति हिजोत्तमा ॥ १० ॥ नेपा सुमूषणार्था स्व स्वादि सुणाक्तता ॥ पुर चर्च त्यु स्व विस्ति विश्व कर्मणा॥ २५ ॥ आर्था वर्त महासेत्रे सुक्ति मुक्ति प्रदायक म् ॥ मिकिताये प्रि भिदी पे स्थापितास रवस स्व ॥ ॥ २० ॥ और विव तीनो जनान अपनी कहात व

आर शिव ताना जनान अपनी कराने या मकरना सब नीपीमेंपेंडचम तीमी विस्पान होने ऐसा करों १८ ब्रह्माफा बबन सनने विष्णुने शिवकु चुलाये फिर नीनो देवतान बेट भपाका ध्यान करके तीना गुणस अटारा इनार बाह्मण पैदा किये सोभी विष्ण बाह्मण निनोकु वर्तमान कानमे भिनेश होड़ ब्राह्मण कहने हैं जो मयं फिर वो ब्राह्मणोवी सुन्यूण करने हैं वास्त सन्द्रूब वनिये पैदा कियं वि पकर्मा कु बुलापके सुबरपुर निर्माण करवाया कर यह नगर आर्थाकों क्षेत्रमें हैं नीनो देवनाने मिलके बिनो कु पैदा किये वास्त मैंविध्य ब्राह्मण करवारा बनार समें उसमें छहा नार विष्णुने पैदा किये वो सानिकी समें प्रयास ग्रहनार परा भये सो रनीगृणी भयः आर अहनार जिपन पदा किये पी तमा पृणी नयः २० ये उत्तम नथ्यम रिनिष्ठ गुणस जानना यह अदारा ४ जार प्राय्यणी में गाय-गामिक प्रयर हुउदेवना प्रामसय मुरी मुद्रे दे २५ ऐस प्रायासणा कु प्रास्कणना करके प्ररोक्ता दान दिया। अवयाह ब्राह्मणीका गांव प्रयर कु ठ देवी वेद गारवा का

अशादवा सहस्त्राणि है विद्यास्ते नतेस्मताः ॥ तत्र रस सहस्त्राणि सान्विका विणु निर्मिता ॥ २३ ॥ नाय है यसहस्त्राणि राजसा ब्रह्म निर्मिता ॥ पडेयचसहस्त्राणिराजसाब्रह्मनिर्मिता ॥ २४ ॥ चहु विवाति गोत्राणि उत्तमा मध्यमा धमा ॥ त्रवरा गोत्रदेव्यश्चत्रामाः णिभूमयः युना ॥२५॥ याम् प्रजा छनातत्र दनानि सदनानिचँ॥ भ्रुपगार्यान संगीत्र प्रथम परिकीर्तितम् ॥२६॥ प्रवगस्तत्रप चैव शृणुनामानि नत्त्वतः ॥ भार्गवश्चवनश्चेव त्यापृथाने वि एवडि ॥ २७ ॥ पंचमी जमदिमस्य एते पुरव्यर्पेय स्मृताः ॥ गोत्रदेन व्यत्र गाँतारव्या सर्व गाति करा सदा॥ १८ ॥ अस्मिन् गोत्रेचये विषा सामवेद परायणाः ॥ गास्यद्वाः साख्ययोगज्ञा उद्गातारो मर्ग्यच्च ॥२९॥ अन्यवा जलदा सीम्या सत्यराच द्यापरा ॥ गागानसद्वितियनुत्रत्रासन्यवरास्त्रय ॥३०॥ विश्वामित्रीथ विख श्यकात्यायनस्तृतीयक ॥ गोत्रदेवीस्त विख्याता करवदा कामदासदा ॥ ३१ ॥ तत्रये ब्राह्मणाः सर्वेपद्गर्मीनरता सटा ॥ सत्यशेच रता सर्वेवितन कलइ प्रिया ॥ ३२॥ कृष्णात्रेय तृतीयतु प्रवरेस्ताव तेर्द्धतम्॥ आत्रेय श्रीवं वो श्रीव शावाश्वस्त तृतीयक ॥ ३३॥ र्गात्रदेवी तथा भट्टा योगिनी तिकरव प्रदा ॥ अस्मिन्गोर्व भवाविमा कु विला हैपका रेणा ॥ ३४ ॥ धनिनो धर्मवीला स्व वेदपाठपरा यणा ॥ माडवं विषुलगोत्रप्रवगस्तत्रपन्वन ॥ ३५ ॥ भार्गवस्थावन ज्ञात श्वास्वान पूर्वस्क ब्रतः ॥ जमद्मिस्क होत्रसाः पंचे ते मुख्ययाज्या ॥ ३६ ॥ धारमहारिकाषीन्कागीत्रदेवीयदास्विनी ॥ अस्मिन्गतिन्ये विषा पदुर्म वेदतस्य ॥ ३७ ॥ अहंकाराष्ट्र तास्रारंप लं भएता हुमा ॥वैद्यापायनगं त्रेच प्रवगस्त्रय एव हि॥ ३८ ॥आ गिरसो : वगिष्य दें वनाश्व स्तृतीयक : ११ गीत्रदेव्यत्र व रयाता ठिवजारयामनोहरा ॥ ३९ ॥ गोत्रेः स्मिन् ब्राह्मणा स्निस्णा पराच्छिद्राभिलापिण ॥ ज्ञान्त्रदर्शन वादज्ञा याज्ञिका वेदपा वका ॥ ४० ॥ वत्स गे त्रत् वैषषंपंचप्रवरभूषितम् ॥ भार्गवश्यवनश्याद्वाश्यवत्सपुरोधसी ॥ ४१ ॥

गोन्नदेव्यत्र विस्त्याता ज्ञानजारम्या चनुर्युजाः ॥ द्याता वाताः सुद्रीत्राञ्चश्रास्यणावेदपारगाः ॥ ४६ ॥ सममक्वयपनामप्रवरत्र यभूषितम् ॥ गोत्रडेनिगोत्रदेवीकवपपीवत्सनैभूत्वी ॥ ४६ ॥ चनुर्श्वनावरारोहाशुमदान्दिवाहिनी ॥ माण्ययरोग विवेषिपाः पूद वैद्यागियारंगा ॥ ४४ ॥ क्रेजिनस्तामसा फूरा त्रियवाक्यामहावेळा ॥ अष्टमधारणस् गोत्र प्रवगक्तत्रया स्पृता ॥ ४५॥ अगिक्त र्वानुव्यसीववेध्माषाइस्तृतीयक ॥गोप्रवेबीम्मृतानेपाछभनेतिचित्रम्ता॥ ४६॥ ब्राह्मणा वद्धमंद्वादैवद्याधनिनः सुभा ॥सी गास्त्रमम्गोभ्राभिक्तिप्रवर्षेत्रम्॥ ४७ ॥ काइमपन्नेन्वत्सारद्यारं स्तवस्तयोत्तमः ॥याभद्रायागिनीदेवीतेषासागोभवेचता ॥ ६८ ॥ कुटिलार कोधिनो विमार परकर्मनिरतारसदा ॥ कीशिक दशयगोत्र प्रवरत्रयसञ्जतम् ॥ ५९ ॥ विस्वासिनोदेवरातोतृतीः योद्दालकं स्मृत ॥यिक्षणी गोमदेम्यमद्भिजानियानिवसणा ॥ ५० ॥ सेर्थ्याभिमानिनोलुच्धा द्रपिण सर्वजत्य ॥ उपम न्युरितिरम्यातंगोनचैकादवानुप॥ ५१॥ बितिषः भमद भैवभरदाजन्त्नीयक ॥ गोत्रोद्दे तिसमारन्याता गोभ देवी द्विजास्त या।। ५२ ॥ भामिकावेदविहासीयक्रविद्याभिजारदाः ॥ साक्षिमानाहेपिणस्य लोक्सयक्तात्पसूययः ॥ ५५ ॥ पात्यायनहा दबाचपचिमा मवरेर्युतम् ॥ मार्गपञ्चावनोदातआधुवान्यूर्वसङ्गकः ॥ ५४ ॥ भारद्वाजेनि विज्ञेषादवीभद्वारिकास्मृता ॥ य द्वेदागशास्त्रज्ञा सामिनाना अभिक्तका ॥ ५५ ॥ अयोदेश वसागोत्र भवरे पन्तिप्रदेतम् ॥ पूर्वेन्तिनामिनिदेवी होयाश्रविका ॥ ५६ ॥दिनाधर्मपुरानित्यसीचस्मानद्यापराम असोतुपासुस्वरूपा आक्तिभक्तिसा सदा ॥ ५०॥ भारद्याज्यतः र्दशमवरमयभूभितम् ॥ आगिरसवाईस्पत्यभारद्वाजस्तृतीयकः ॥ ५८॥ त्रीमाते तिसमारय्यानागोत्रदेवीद्विज्ञाम्तया ॥ श्रोभिया सा गुर्वेदज्ञाः शांतावाताषश्चमुता ॥ "९ ॥ पचदशचगारायभवरवयभूषितम् ॥ गारोयभ्यायगारीयश्चापणि प्रयराभ्यते ॥ ६० ॥ सिहा रोहा गोअदेगी विभागे देविदस्तया ॥ आसुर्वेदंज्योतिषेन पर्म शास्त्रेस्त्रत्रेमाः ॥ ६९ ॥ पोडवाद्यीनकारसन्य प्रवरे स्मिपिरन्वित ॥ मा रद्वाजो एलमद् शौनकक्षेतिपार्मिका ॥ ६२ ॥ वित्रावेदार्यतत्वक्षद्वशियाग्यधनवुद्धः ॥ शब्दशास्त्रेमत्रवास्त्रे छताभ्यासास्त्रमा निता ॥ ६६॥ गोत्रदेवीसमारव्यातामहाकासीशिवप्रिया॥ कुशिकसत्तद्वामंगीत्रभिष्वरान्वितः॥ ६२॥ माचा छर। छर। छर। छर। छर। छर। छर। छर। प्रायका का प्रायक्षी मान्या कर। मान्या छर। छर। छर। छर। छर। छर।

६५।६५।६७।६८।६९।७०।७१।७२।७२।७४।७५।७५।७५।७८।७९।७९।८९।८९।६९।देशे गोत्र मवर कुल देवी सहीत त्रिवंदी ब्राह्मण ब्रह्म विष्णु महेन्पर ने प्रवी-स्थापन किये, तब धरके कारभारसे दुर्गी होने लगेन तब वो ब्राह्मण तीनो देयतार्कु कहने लगे ८२ कि जो धरके काममें लब्ध हुया उसकु विद्या प्राप्ति निष्ट होनेकी १ और जोन

भिन्यामित्रे देवराज उदाल क इति त्रयः ॥ गोत्रदेदी समाख्याता तारणार्व्यामहाबला ॥ ६५ ॥ ब्राह्मणाः कुटिला कूरा हे पिणो मर्मवा दका ॥कालज्ञामदमतय परस्पराधिरोधिन ॥६६॥भार्गवमष्टादशमंपंचपवरसंस्त ॥भार्गवस्यावनश्रीवजीमिनिस्वाह् वांस्तथा॥ ६७॥मधिरू पचम प्रोक्तो हे ताम धेरुदाहतः ॥ गेत्रदेशी वेशालाक्षीचाहं है तिस्तिविक्षता॥६८॥ब्राह्मणाः क्रूरकर्मीणोप्रमदावा दरी लिन ॥ गोत्रमे के निवशचपैंग्यंत्रिप्रवरान्वित ॥ ६९ ॥आत्रिरिचेश्वशावाशहीताकण्य स् समतः ॥ गोत्रदेवीसमारव्यातानाम्नावेद्वारवा सिनी ॥ ७ ०॥ मरवजास्ट महाभागा देदवेदागपारगा ।॥ धर्म चाररता । शाताः सर्वा गमविशारदा ।॥ ७१ ॥ गोत्र मागिरस चाथतस्मिस्ट प्रवरास्त्रयः॥ आ गरसें तथे चाथ गीतमस्तु वृतीयकः॥ ७२ ॥ गोत्रदेवीच मातंगी ब्राह्मणा वेदपार गा ॥ यज्ञकर्मरता सवैधर्मद्रीला महात पा ॥७३॥ एक विद्यातिमर्गे त्रमत्रिरित्यामिधीयते ॥आवेयभीवीवां ऋवायाया प्रवरास्त्रय ॥७४॥ चेद्रिका कुल देव्यत्रबाह्मणा धर्म तसुराः ॥ श्रु तिशास्त्रार्थतत्वज्ञायोगगारुत्र विचक्षणाः ॥ ७५ ॥ अघमर्षणनामे तिद्राधिशागोत्र मुच्यते ॥ प्रवरास्त्रयस्त त्रासन् भारद्वाजीः थर्गे तमः॥ ७६॥ अघमर्षण इत्येतेदुर्गादेवी प्रकीर्तिता ॥ भूदेवावंदशास्त्रज्ञासात्विकाः सत्यसंदुताः ॥ ७७ ॥ जैमि निश्चत्रये विदांप्रवर अयभूषित ॥ विश्वामित्रोदेवरात उद्दालक इतित्रयः ॥ ७८ ॥गोत्रदेवी विशालाष्ट्री गोक्तरावेदपाउकाः ॥ इरापे वि तेहासेव निष्ट्रणा-वांत वृत्तयः॥ ७९ ॥ गार्ग्यचैव चतु र्दिरांगे त्रंत्रिप्रवरा न्वतं ॥ भार्गवश्च्यवनश्चेवआहुवानितितेत्रयः॥ ८० ॥ ब्राह्मणाधर्मदीत्राश्चसत्यद्यो चदयान्विता ।।गोत्रदेव्यत्र नंदारच्या सर्व सीरव्यत्रदायिका ॥८१ ॥ एवं वित्रास्त्र है विद्याः काजे हो स्थापि तापुरा ॥ द्वारिवता गृह कार्येण शोह का जैशदेवतान् ॥ ८२ ॥ यहदडी छतो विद्याविद्याहीने छतः करवं ॥ तस्मात्छुरें हुनोदेवाः करवंस्याद्येन कर्मणा ॥ ८३ ॥ ॥ धौम्यउवाच ॥ ॥ अ बातेषां वनस्तथ्यं बहा विष्णु हरा स्तथा ॥ मनसा चितयामारः :कामधेनं दु धि छिर ॥ ८४ ॥ विद्या हीनहें उसकु सत्त्वका हासे होचेगा-वासी ऐसाकरी जिससे

क्तरव होने ८३ तब तीनी देवताने बोह बचन क्तनते हि काम धेनुका स्मरण किया ८४

<del>_</del>	गोपनाम	मक्ता.	गोनदेवी	₹	इ कासी गुण			<u>म</u>	भाषनाम	मगरा	गानदेशी	नेव	शास्त्र	। गुण	
Ť		भागवक्षरमञामुबानीर्वजनदार	र वयना	भा	म ⊀ा	मार्ग	ग कलम	77	वस्स	भर्णव भयन राजामुक्तभारहा	শাবিদ্যা	4	मा	778	उनग
		विन्तामिम विस्त कासापमा	<b>सस्त्रहा</b>	पम्	ना	. सुरे	मध्यम			<b>₽</b> ∏•					
ì	क्षणानेप	अप्रेच भीर्वकृत्यसम्ब	भद्रापोगिना	फ	मा	ता	अपम्	18	मारद्वाज्ञ	आनिर्स बार्ब स्पन्य भारद्वाजा	भीमना			मा	उनम
y	माइस	बार्यप-चरनमान् सापुकान्	भारमगुरिका	प	सा	नम्	भपम	<del>&gt;-</del>	بأهزايان	नार्गेष गागीय संदर्णि 🤧	<b>मिहारी</b> क			J.	मध्यम
		<b>अवस्</b> त्रिपः						14	सोन≰	भाराद्यान एन्समाहानीनका 🤧	'महाफानी'	•	मा	बा	<b>দুনিয়</b>
	वैराशायन	आगिरस् अवर्गपः पीपनान्य	<b>बिवजा</b>	प		ता		•	कृतिक	विकासिय देशान प्रदासका 🔨	नारणा			न्त	क्रीनव
	<b>क</b> त्म	भागीर प्रापन अप्रमुखन् अस्म इसे	<b>शेत्रा</b>	म	मा	सा		4	भार्गम	भार्यक व्यवन बीमान भागुवान् म	-तम्डा			न⊤	क्रीवदा
		<b>पसम</b>								<b>पि रिन</b>	-				
	<b>क्रमप</b>	करप यस नैकवा	गोनडा			ता		35	चैम्प⁻	मिम अर्वि कृष्य २	ग्रस्थासिनी			मा	उत्तम
	<b>धारण</b> स्	भगक्ति सत्त्वरूपम्पनाहाः १	उपना	<b>प</b>	भा	मा		•	भागिरस	भागिरम भीतथ्य गेतमा ५	मानगी			₹	मध्यक
			भट्टाकोरिकी	प	मा	ता⁻		3.1	अफ्रि	भाभेष आर्ववान् शाबाञ्चा 🤏	चंत्रिका			सा	इनय-
4	वैशिक वि	क्यामित्र देवसन उद्गतका ३	महिल्मे	4	मा	ग		*	भचमपंच	भारदाज गोतम अधमपणाः 🐧	<b>€</b> #1			सा	उन्द
			गोम <b>य</b>	प	मा	ग्र		•			- विद्यासा <u>र्</u> ग			मा	- •
भा		^	•	ਧ :	मा	रा		י ע	-	भाविष्यवन प्राप्तान	नदा -			•	मध्यम
		<del>क</del> ी	•	·				•	., ,	and any suffers	73)			रा	मध्यम

ण्भक्ति परायणान् ॥८७॥ ॥ धेम्यउवाच ॥ ॥ इतिष्टत्वाकाम्धेन्द्वनवेधसः शुभम् ॥ अछिलेखायपादस्यरद्रायेणमहीतल ॥ टंट ॥ तत्रभूविवरात्तावत्मभूतादेवस्क्रिण ॥ षट्त्रिशचँसहस्त्राणिवणिजास्तेह्यये निजा ॥ ८९ ॥ हुकाराच सम्त्यन्माःशिरवासूत्रध-रानराः ॥सटेंपितामहं में इ कथम्त्पादितावय ॥ ९०॥ किकम्बी हर्म चुत्ति सस्काराबी हरास्त्रया ॥ गेत्राणि गेत्रदेव्य ऋकोवर्णा चारिनण्य ।। ११ ॥ स्थिति क्त्रचकत्व्याकिनामानोवरं दिभो ॥ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ॥ यस्माद्रोक्ष्जसंसूता गे फु जाइ तेनामतः १२ ॥ त्रधीमूर्टेचनतस्त्रीविद्यद्विजसेवकाः॥ ॥ धीम्यउवाच ॥ ॥ तेषादार क्रियार्ट्ट विस्थावस्त्रमनितयत्॥ ९३॥ आगतीवचन-मुलागधेविधिपति प्रष्टु ॥ सनिर्ममेद्धताः कन्यादिव्यरूप मन इरा ॥ ९४ ॥ वणिभ्यस्ताददुः कन्यागईस्थ्या श्रम सिद्धये ॥ उवाच गोः भुजान्त्रह्माधमे हु कथयाम्यहम् ॥ ९५ ॥ नेहें, सो वो गायके सुजासे तुम पे

मुजान्त्रहार्थम् हु अथयाम्बहन् ॥ ६५ ॥ दा भटेन वास्ते तुमेरा नाम गो भुज बनिये ऐसा जानो ९२ और तीन देवता वोकि बचनसे त्रेविद्य ब्राह्मणके सेवक होन धोम्प ऋषी राजाकु कहते हैन कि किर ब्रह्मा ने उनोका विवाहकरने के वास्ते विश्वावक्त गृथर्वकु बुलाया ९२ तवगथर्व ने ब्रह्मा के वचनसे दिव्य अद्भुत कत्या प्रकटिक रे ९४ किर ब्रह्माने उनोके यहस्यात्रमके वास्ते कत्या

के साथ विवाह करवायके गोशुज विनयोक कहते हैं ९५

11 11

है इजि हरी। तुमेरा पर्म इन्द्राह सो मुनो क्लियाना काम मध्यानकात इस्तानकरना किरोबा तर्पणकरना नगरकार ममसे प्रभव यत्तकरना (इस्ति व नगरकार हाइमण प्रभव के प्रविद्ध स्टून के साम के प्रभव के साम के प्रभव के साम के प्रभव के साम के प्रभव करना १७ गान करना के नाम के प्रभव करना १० गान करना को सम्बद्ध के प्रभव करना १० गान करना भोगी करने करना उनी के परका रक्षण करना ऐसा कहके बाह्मणों के परके पर १० बनो के रवने के असी बनीय इनार देव सवले प्रविद्ध के किर योग बनियाका पो रोहित्स कर्म बंद मंद्र ग्रहन सर्व मन्कार और प्रविद्ध बाह्मण करने असे १ जिन के प्रमे पर पेदा म पे उस सेवका प्रविद्ध का प्रमान का स्वीत मान के भी प्रकार करने हैं १ है पुधिविद्ध के बाह्मण का प्रविद्ध का स्वात प्रविद्ध का प्रमान का सेवका का स्वीत के प्रविद्ध का स्वात करने के भी स्वात करने हैं १ है पुधिविद्ध के बाह्मण का प्रविद्ध का स्वात करने के १ वाह्मण अपने प्रविद्ध के प्रविद्ध का स्वात करने के १ वाह्मण अपने प्रविद्ध के प्रविद्ध का स्वात करने के १ वाह्मण अपने प्रविद्ध के प्रविद्ध का स्वात करने का सेवका का सेवका का सेवका करने विद्ध का स्वात करने विद्ध का सेवका करने विद्ध का स्वात करने विद्ध का स्वात करने विद्ध का सेवका सेवका सेवका करने विद्ध का सेवका सेवका

प्रातमिश्वाद पोस्नान पितृणा नर्पणतथा ॥ नमस्कारेणमभेणपचयक्ता सदैनहि॥ १६॥ जानकर्मा दिसस्कारात्राक्षण प्रत्नस्त ॥ एतंश एह छसानि कर्नथानि भिर्मपनः॥ १७॥ भामस्ने गृह्दिनिगाच्या प्रदोपतः ॥ इत्याक्षाप्यप्रयोदेया आस्पास्य पर्मन ॥ १०॥ आस्मे मुहूर्ते म्हत्येष्मपेददुर्वासो गृह्वाणिच ॥ पट्षिराचसहर्माणि देवस धासमानिच ॥ १९॥ पोरोधस्य सदा नेपादिना कुर्वितिने कि स ॥ मञ्चलपीचसस्कारा पत्रयक्तास्त्यपेत्रच ॥ १ ॥ ॥ भोम्यउवाच ॥ ॥ स्वेत्रस्यचमाह्यस्यवेश्वणुराजन्समासतः ॥ एकदा धर्मराजस्कृत्वाक्षेषमानुक्तमम् ॥ १ ॥ तनागत्यनपर्त्तपेपप्रवर्षसहर्मकम् ॥ उर्वश्या नि । तायोतुष्माविरासी खिष्य स्वयः॥ २ ॥ य र तृणु महाराजेतुक्तेतमो क्तवान्यमः ॥ यदिनुष्टोष्ट्रपदेवेशकीतिरेशमवेन्ममः ॥ ३ ॥ अर्ण्यममनानिव भवत्वेतस्वर्षस्तरम् ॥ मन्ताना विवित्रतुष्मकस्त्रपुर्वे गुर्वे ॥ १॥ ॥ शिव्य वाश्वः ॥ ॥ धर्मराजधान्यस्त्रप्रदेवे प्रमित्रपति ॥ धर्मे श्वरः शिवश्वानिव्यक्ति ॥ धर्मे श्वरः शिवश्वानिव्यक्ति ॥ धर्मे श्वरः शिवश्वानिव्यक्ति ॥ धर्मराजस्य प्रतो य प्रतो य वाश्वरपति ॥ भा नत्ति वाश्वरान्य प्रतो य वाश्वरपति ॥ भा नत्ति वाश्वरान्यस्त प्रतो य वाश्वराक्षित्रच ॥ मनस्वत्त्वान्यस्त प्रतो य त्राम् भा नत्ति वाश्वरान्यस्त । वाश्वरान्यस्त भा नत्ति स्तान स्तानिव्यक्ति । धर्मा श्वरान्यस्त प्रतो स्वर्तान स्तान स्तान

भग करने वाली उन्हों आई कोह हारके क्ली गई पीछे प्रिक आपके २ वरवान मगा ऐसा कहा। तब यम कहते हैं है जिन! तुम जो पसन्त भये हो। ती सूमीमे भरी कीर्ति रहना ३ यह अरण्यमेरे नामसे विरम्पात हो और आपका किय भी पुग पुग में मेरे भी नामसे पहा विस्थान होना ४ शिव कहते हैं है धमेरान पृथ्वीमे धमीरण्य क्षप्र औ र धमेर्यक महादेव नीन लोफ में विस्थान होनेगा ५ ऐसा उसदिनसे धर्मारण्य धर्मिकर धर्मकाण भये हैं ६ धमेरान के सामने जिस बरवत शिव मकट मये उसव

रान प्रमाह गाने गमाकु स्मरण हिये । नवगमा प्रकट मथे यम गमाने प्रमा किये बाद मान्द्री गमा माने रंग नव यमगमने वार्षना किये कि द हे गमे। इस हुपके बी नमें तुम ग्राम हमें प्रमा धर्म प्रपा धर्म गर्पा या गमाकूप ऐसे नामके विख्यात हो ९ और धर्म स्वर महादेवके पिछामके तरफ सबसे उनम ऐसा देव मनेवर तीर्थ है जहा हय पीव प्रकर भये हैं ११० उनके ग्राम्ने बद्यादिक देवना आये १९ जहा नहा बैठे वो ग्रे विकाने पर अपने नामसे तीर्थ बनाया येसे विष्णु नीर्थ बद्यानिय कद्रनीर्थ पर्णानी थे १० नोम नीर्थ भातृ नीर्थ स्पर्य कुरादिक ऐस अनेक तीर्थ भये है १२ सम्ब हुरका कारण कहते हैं सूर्य की सज्ञा नामकी स्त्री थी उसके सूर्य का तेन सहन निह भया

नव बीर्शका रूप धारण करके धर्मारण्य में तप करने लगी १४ तब सर्यने वो वृत्तात जानके घोडेका रूप छेके वाहा आयके समा गम किया नब दोपुत्र अन्विनी कुमार नामक उसन्तभय १५ सर्यका दक्षिण नरण इच्छीमें धर्षित भया उससे गड़ा पड़ा वहा गमा काजल पूर्ण हुवा १६ वो सूर्य कुड भया उन्यमें अडसर नीर्य है फिर सर्य और सज्ञाने अपना त्वत्वरूप धारण करिलया १७ पीछे देवतावाहा भायके बकुलार्ककी स्थापना किये अन्विनी कुमार छाया सज्ञा इनके त्वरूप स्थापन किये १० बोहोत बुक्तकं वनमे निवास किया वास्ते बकुल स्वामीनाम बिख्यात किये धर्मिन्वर महादेवके पश्चिम बाजूहे २० कानदा देवीका भागा पूर्णके समीप स्थापन किया २६ और वे स्थानके नैर्फत्य कोणमेजस्त्रणोके रक्षण करने के पान्ने असा विष्णु महेश्वरन औ माना देवीका स्थापन किया हैं २७ एकदिन फर्णटदेसको गाहित भये। सब बाह्मण देशकी मार्चना करने तमे। सब देशी उनाका दुःख देखके कोपाय मान हुने। २८ नव उनके तेजसे। सिक्याहिनी अधा सज्ञासह विवाहस्तुकतस्त्रभुन करें ॥ अधापिवेदिकातश्ररिकातश्रप्तिनाच पुरावनी ॥ १२१ ॥ अधापिवर्तनेस्थानेसवानारस्यपालनाः त्॥ बकुलारस्यकुलस्वामीश्रीविधाना परावले ॥ २२ ॥ वैषे सम्मापितस्त्रश्रपेगोहरकततः ॥ हारपालोगणपनीरसार्यच हिजन्मना ॥ २३॥ अचापि दक्षिणद्वार सत्य प्रीटगणाधिष ॥ मूह्मणास्पापितानभदेवीभद्वारिकाशिषा ॥ २४ ॥ च्तुर्घुजाभर्ससस्पास्तवणी-रव्यो तटेः वरे ॥ स्थानाञ्चपूर्वदिग्नागनदादेधीन्वतुर्भुजा ॥ २५ ॥ रक्षणार्थन लोकानास्पापितात्र हुमणापुर्गे । आदाापूर्णासमीपेसा सर्वदु रविनाशिनी ॥ २६॥ स्थानान्त्रीर्धतदिग्मारोशानाशाविष्ठदावरा॥ श्रीमातास्थापिनापूर्य काजेशे द्विजरसपो ॥ २७ ॥ दे त्यारिना स्तृतिन्त्रुस्तमागत्यहिजा किल् ॥ हिजद् खसमालोक्यश्रीमाताकोपद्रस्ति ॥२८ ॥ तेजसम्नुसमुसन्पामानंगीसि हवाहिनी ॥ रक्तावर्धरादेवी भूजेर शददोर्धता ॥ २९ ॥ तासुयाचन्यीमाताजि द्वित्यमहावलम् ॥ फर्णटारन्य तदासाँ त्युद्धे तिवन्यपा तेयत् ॥१३ ॥इतेदैत्येतुनियाशीमातातुषुद्कतदा॥ ॥ श्रीमातोवाच॥ ॥ अधमभृति विमेद्रामाधरूणो महोत्तय ॥१३१॥क र्तन्यस्तृतीपार्णाषारुणोषतिपूर्वक ॥मतिवरततस्यैवविवाहेत्रतस्यके॥३२॥सीमतेन्वेवकमतिकर्तव्यपूजनसदा॥मातग्याःकृतः

देन्यात्र्यसत्यमेतद्वयीम्यह॥ ३३॥ ॥ दवा भूजा तास बरूप धारण किया है ऐसी मा र्वगिदेवी मकर मई २९ उसकु भी माला कहते हैं। इ मालगी शुमकर्णट देत्य कुमारो ऐसी आजा होने ही युद्धमें। मालगीने को हैत्य कुमारा १६ देत्यका नाहा हुने बादबा क्षण भी मानाकी स्तृति करने संगे नव भी माना कहते हैं, हे बाह्मण हो ! भागसे बाध छणाकु वनीयाके दिन प्रतिवर्ष मेरा उत्सव करना १० और पिनाह यहाँ पनीत सी मन य

इ कर्मके अनुकु मातगी कुछ देनीका फूनक करना 🤏

अब मोहेरक पुरके अदर बाहेर जो देवताहें सो कहते हैं, पश्चिम में हारवासिनी देवी हैं, तलावके द्वर्व दिशामें तारिणी, और महाबला ऐसी वां देवीहें, उनोके पास गुफामें सप्त-मान्नका देवताहें ३५ वहा भराडी देवताहें, पुरसे दक्षिण तरफ सातकोस के ऊपर विध्य वासिनी देवी हैं ३६ पश्चिम में उत्तने ही दूर दिव ना देवीहें, वायव्य कोण में कोस के ऊपर छत्र धरादेवीहें ३७ उत्तर दिशामें कोस के ऊपर किर्णाका देवी हैं ३८ नेर्कत्य कोण में स्वर्ण नदीं के तट ऊपर जल मात्रका देवी हैं, और उत्कट तलाव के ऊपर ४० नाग कूप हैं, सामे स्वर महादेव हैं, पुरसे उत्तर दिशामें खेंड कोस के ऊपर जहां इदने अहल्या सग दोषसे मुक्त होने के वास्ते तप किया और शिवके अनु यह से जयते श्वर महादेव का ४२

द्वार गर्रे महामाचा थारुणी दिशमाश्रिता ॥ तारणीत महामाचात डागे पूर्व भागत ॥ ३४॥ तयामहाबलादेवी पूजनीयावरपदा ॥ तयो रेव समोपेतु विवरेसप्तमातर ॥ ३५ ॥ भरांडीचमहाशाक्ति अनुस्तर्वेच तिष्ठ तो॥ स्थानाहु सप्तमेकोश दक्षिणे विध्यवा सिनी ॥ ३६ ॥ पश्चिन में लेंबजादेवीनावसूमिसमाश्रिना ॥ स्थानाद्वायव्यकोणं चक्रोदामात्रप्रतिष्ठिता ॥ ५०॥ छत्रधरा महादेवीसमयेखागधारिणी ॥ एराद सरिय भागे के श्रमेष्ट्रेत कणिका ॥ ३० ॥ सर्वीपकार निरतास्थाने पद्रवनाशिनी ॥स्थानान्तेर्ऋतदिग्भागे कवणीरव्यात टें वरे ॥ ३९ नानारूपधरादेव्ये वर्ततेज्ञसातर ॥ उत्कवरव्यतडागस्यपार्श्वेतीर्थसारुण्यदम् ॥ ४० ॥ नागकूपमि तरव्यानं सोम लिगचतत्रवे ॥ स्थानादुत्तर देग्नागेसा ६ कोदागतेस्थले ॥ ४१ ॥ यत्रे द्रेणात्पस्त्तम महत्यां संग्दं पत ॥ ततः शिव्यसादेन जयतेश्वरक शिवम् ॥ ४२ ॥गगाळुँ बकतवान्मपवा श्रुं द्भानसः॥ स्यानाञ्चदिनिण भागे धाराहे अनुपोत्तमः॥ ४३ ॥ यत्रदेवास्तरसु द्भगवा हरणस्भवम् ॥दे वमज्जनकनामर् धे सिद्धिपदायकम् ॥ ४४ ॥ धर्मस्थानादुदरभागे स्ववर्णारच्यानदीवरा ॥ स्ववर्णरेखा सहित सिछल निर्मलयत । १४५ ॥ धारानं योद्दारिणतो रूप्यारम्यानदि स्मृता ॥ ववाहस्लिछरे प्यतस्माद्री प्याद्दातस्मृता ॥ ४६ ॥ धर्मारण्ये महत्से त्रव्रह्मावर्तगत्तः वि ॥ राजनंतत्तरस्वत्याः क्रुलेटे दिक्षणेवरे ॥ ४७ ॥ स्यानाट्यूटेसप्तकोदे गंभीरार्ष्यंसरीवरम्॥ सेमलाभासुभादेवीजंद्दकेश्वरस्थानकम् ॥ 8= 11 गंगा कुडका स्थापनिकया और क्रान्त हुवा स्थानसे दक्षिण दिशामे पारानी ए है ४२ जहा देवदेत्यका युद्ध भया है और देवमञ्जन ती

मता परिवाद के प्रतिस्थान के प

मो देवीने मर्कट हैं बढ़ माराके बढ़ सेम चतुर्वर्गकान देनेकामाई ४९ इस प्रतके आरपुरामे जारनाम सुदे सुदे हैं सो ऐसे सत्य पुरामे धर्मारणपसीम, नेतापुरामे सत्यमादिर व क्षापर पुगमे वेद भुवन,कतियुगमे मोहेरपुर नामहैं द्वी मेनायुगमे गमनहने इस क्षेत्रका जीणी दार किया ५५ ब्राह्मणोड्ड स्थापन किया औ अनेफ पछ किये निमायखन सम बहरू बहानिपेक हुना उस बरवत बति बहुद सुभू खते हैं। र है बति ब जाहा अर्थ प्रामी हाने ऐसा सेम कहें। विशेष कहते हैं है यम मारगढ देशमें प्रमीरण्य नामक सेन व का उत्तम है ५३ भीम्य कहते हैं हे पुथितिर वसिएका बचन सुनके राजवह बाह्मणाटिक अनेक नोकाक औं भाइपोक्त भी हतुमान आदि सेवकमक्त साथ के के सीनास

यया इतोमहादैत्यो मर्फटारन्यो दिजातिकत् ॥ धर्मार्यकाममीशाणा साधक स्त्रमुक्तमम् ॥ ४९ ॥ युगेषुगैन्वनामानिकस्पनिमानि भूतते ॥ कतेयुगेषमारण्यत्रेतायासत्यमदिरम् ॥ १५ ॥ द्वापरेगेदभुगनकलोमाहेरकस्पतम् ॥ जीणीदारस्तुरामेणकृतस्त्रनापुगेपुरा ॥ १५१ ॥ ब्राह्मणाह्मपापिताञ्चपोपद्माम्बिषिकारुताः ॥ यदाजिपिकोरामस्त्रुपसिखगुरुमब्रवीत् ॥ ५२ ॥वेद्युण्यमहृद्धीनपम्बार्थेलमा म्पहम् ॥ ॥ गरीखड्यान् ॥ ॥ उत्तमं वर्ततेनामधमरिण्यकपावनम् ॥ ५६ ॥ मरुधन्वसमीपनुपावनपरमस्यृतम् ॥ ॥ भीम्यड्यान्यभ वशिष्ठयत्त्वनसुलारामः सन्ययसक्रमः ॥५६॥ब्राह्मणादिसतुर्वर्णेर्भानृभिर्भार्ययासद्दशः भाजनैयादिप्तिम्येवयाभार्यनिजीगामद्दशः ५५॥ एवमार्गेप्रजन् रामः समात्तोम्हर्कापुरे । वदौषाचबिक्षास्त्ररामेवमङ्कीपुरम्॥ ५६ ॥ पुण्यापापीसरोमध्येसरस्वत्यापपूरिता ॥ पुरारा ममहातेजा मुनिसरमधार्मिक ॥ ५०॥ अणिमाडव्यनामायस्तस्यायमायम् शुभ ॥ नच्छुत्वारामचद्रोपिउषासम्हतीपुरे॥ ५०॥ स्माताचप्रजयामासमाडव्येशमहेन्वरम् ॥ वणिजी महत्री स्वयेतमत्या सर्य एवते ॥ ५९ ॥ गत्वारामपदामोजप्रणेमु भीतिपूर्यक म् ॥ तन भात समुस्माय बलितौरघुनदेनः ॥ १६०॥ मामीत्युक्तदरमोन धर्मारण्यक्तपुण्यदम् ॥ क्तवणरिन्यौत्तरेकुलेसीन्यमुक्तायीराघव ॥१६९॥ इपर्व मान अयोध्यामी अर्मारण्यकी यात्रा करनेके शक्तो निकले ५० मो भाते आते रत्नेमे महत्वी पुरमे राम आये तन बशिष कहते है हे राम यह महती पुरहेज्य

वहा चरसताके बैतने पुष्प रूप एक गायकाई ५० और यहा अणि साइय नतीका भाषामही ऐसा कनते यसवहन बोह महता पुग्ने मुकाम किया ५० तीरी मेरवान करके माउ भीग महादेवकी चुना करी। तर महती पुरमे जो बनिये रहने पे सो १९ समजद्र के पास आयके भीति पूर्वक नमस्कार किया। पीछी भान। बाल कु समजद्र वहासे आगं पछे १६

मो धर्मारण्य सेममे माथे तबस्तवणी नदीके उत्तर बाजू सेनाकु सबके १६१

क्षेत्र देखने कु नागेतरफ फिरने लगे वहें हर्षितकारे पीछे तिश्वके कहे मुनवर्तार्थ विभि किया ८२ सायकालकु मध्या करके समामे बेठे इतनेमें रात्रिकु एक म्यी ने तह हैं तो गल्द सुना और नगर सूनापडाहें सो देखके प्रच्छने लगे कि ए पुर सूना कायमें भया श्राह्मण काहा गये पीछे थे इगित्रिकु ही व ह स्त्रीके पास नायके प्रकृति है ६३ हे स्त्रीवनमें स्त्रिकु तु कायके थास्ते रोती है सो कहे तब श्री माता कहते हैं हे राम! बहादेवने पूर्वी यह पुर्की अधिदेवता करके स्थापना करीथी ७० श्री माता मैरानाम है मेग दु खश्चणकरों तुमेरे सगन्वे पृथ्वीपती हो के मग पुर सूना पड़ाहें ६५ एई दु ग्य है सो द्रकों ब्राह्मण सबपरस्पर देव के छियं ६५

दूरस्तनोथवस्त्राम हर ह्यानि हर्पितः ॥ ततऋषुक्तमार्गेणचकैनीर्यविधिन्पः ॥६२॥ दिनातै कृतसध्यस्तुसमाविष्यः सभासुभाम् ॥ अ डोधी दुदतो नारी प्रदक्षाति यून्य्कम् ॥ ६३ ॥ शून्यंकस्मादिदजान ब्राह्मणा कगताइति ॥ विचार्यरामस्तदारी गत्वानारी पपञ्छह ॥ ६४ ॥ किमर्थरीटिपियनैरात्रीतेन्सेयदस्य ह ॥ अीमातीयाच ॥ ॥ ब्रह्मणा स्यापिताः पूर्वपुरस्यास्याधिदेवताः ॥ ६५ ॥ अमातानामतः मीनामृण्दु रवंग्घ्दह् ॥ श्र्यजातपुरमेदान्व चितिषातिभ्यती ॥ ६६ ॥ तदेवदु रवंमेराम दूरकुरु रूपानिधे ॥ सामते पीडिता विप्राः पर स्पर विरोधिन, ॥६० ॥ गतास्ते याम मुत्य ज्ययरे ए गुरुएगवा ॥ ॥ रामउवाच ॥ ॥ श्रीमातनी ह जानामि ब्राह्मणास्ते छतीगता ॥ ६८॥ गंत्राणिज्ञातिसख्याचस्यानंवागोत्रदेवताम् ॥ अवटकान्विजानामिस्क वेटानयामितान् ॥ ६९ ॥ ॥ श्रीमानं वाच ॥ ॥ असा दरासदस्राणि देविद्यार्से दिजीत्तमा । दिचत्वारिंगावटंकाश्वत् विंशतिगीत्रजा ॥७०॥गोलत्रश्चात्रपा त्रश्वददात्रत्रारामत्रन्य ॥ भ दृद्धत्रच्य म हात्र गागालत्रस्तर्थेवच ॥ १७१ ॥ छाडोत्रककणत्रच्यनीवार्नेकादश स्मृता ॥ सीवात्र चाहुसे हात्रकालात्र कयितो इधे १७२॥ नागात्रपं वियात्रऋहडकात्रप्डकात्रच ॥ विडालात्रहरीलात्र भादेलात्रऋ कीतिताः ॥ ७३॥ बाल्वात्रली कैयात्रऋ कम-लात्रमं दकात्रके ॥ धनवंदात्रकीलात्रमाबोर्ल यात्रसंज्ञिक । ॥७४ ॥पघावडपात्रमूदात्रपीलुआत्राधिगोत्रकी ॥ मोचात्रस्याहु सू तात्रपदवा उत्रना मलः॥१७५॥

तात्रपद्या अना मतः ॥ ५७५ ॥ श्रीर दु खिके लिये पुरक् छोडके मनमे आरे वहा चलगये ही राम कहते है हे श्रीमात !ब्राह्मण कहा गयहे सो में जानता निह हु ६७ मानी गोत्र ज्ञानि सख्या अवरक आदि कहो गे तो में जानके छातुगा ६८ ॥ श्रीमाता कहते हैं हे राम। यो नेविद्य विवेदि ह्मोड ब्राह्मण अवरा हजार है वे चाकीस अ प्रदेश है, गोत्र चौवीस है, ६९ अब अवरकके नाम चक्रमें स्पष्ट है १७०। १७०। १७२। १७२। १७३। १७३। १७४। करोते पर देनायाम अववक होह शहरणक है उन और जनाम हनार ने पनि श्रीय नामसे दिस्मान है यो नामके बचनमे गमन हमें को दिशा ने मेसे से प्रोह बाधणोड़ी दूनान के ने होट सेनका जीणींदारकरके उनोका स्थापन किया भोखे में श्रुवधीनयांक पुकायके रामनहते कहार कि एक तुमने बाहरणोकि मेरा करनी स्थिएक नरवार और कर्षद नमर हो दो विभीक देके कहारिक व भिषादादिक कर्षमें बर समाने स्वदृष्ट मगळ पावडी रूपेट के हातमं उक सुसरेके परकु भागा परके आगे नमर परवा करता एमेग विन्तु महापरपण भागे करते रहता कापसे जी सलपुत्र बहार विद्यु महे खान किये हुने बाहरण और बनियेको खोण हुने और बोन उनाव भया। तथ सम

दोक्षेयानयोगायित्रवयारवप्रकारितः ॥ साधकायरवद्षभीयाप्रतिश्वानस्तयापरः ॥ ७६ ॥ खुसानियात्रव्यते द्विचत्या ६२ रि दाखकीतिनः ॥ अयदकाव्यविसेया सोहानाश्वद्विनन्तर्नाम् ॥ ७७ ॥ दिगुणास्त तथानृत्यास्तिष् सोहाप्रकार्तिनाः ॥ मीमाता ववर्तश्व सादिजानानाष्यराप्य ॥ ७० ॥ जीणीद्वार तत्र कत्वास्थापयामासत्त्रवे ॥ आनिनाययणिक् श्रंखानुगोसुनान् रघुनदेन ॥ ७९ ॥ ता नुवावनदारामः सेवाकाषीदिजन्मनाम् ॥ स्बद्धनदोक्तवदन्तन्याश्वेतेत्वचामरे ॥ ५० ॥ निपादाद्वीवरेणादी पायिनिन्दस्तवेषि ॥ चामरत्यज न कार्यवरस्यापेवणिष्यरा ॥ ५० १ अप्रवृत्ति पामना १ श्रद्धाः पेरामेणसङ्गाताः ॥ समादकसास्तेदनाः सुद्धायदिजन्मना ॥ १० १॥ मंदनीः काश्वदेसोदाः सेवारामस्परासनात् ॥ यद्धसत्तव्यानित्यनेकानिद्दीनृषः ॥ ० ॥ नाम्नप्रश्चासन्वितित्वक्षक्रनकासरे ॥ द्वीपिति य सोवे स्थोरसणार्थिदिजन्मनाम् ॥ ० १ ॥ मयायत्राह्मणेभ्योवेदकामामास्तदिसणाः ॥ यदायेषाभवेद्विनिस्तविति दिजद्यासनम् ॥ ८५ पालनीयमयन्तेन पुण्यनेषाभविति ॥ रक्षणार्यपुरस्वास्यथायुद्धमोनिद्वितः ॥ ० ६ ॥ गतोरामस्ततः प्रवानद्वापः रात्रयुगेनया॥ ध्वामानामनृषः किन्तिस्ति पोषीद्वपर्तमः ॥ ८० ॥ कान्यकुद्वेवसन्राजाप्रजावीद्वेद्ववित् ॥ तस्यकन्यारलगगारिषाहसमय त द्या ॥ १८० ॥

 त्य कुझ देशमे शनपूर में राज्य करताया उस की कत्या रन्नगानामकी थी उसके विश्वहमें दृद्ध आमराज्ञाने मीहेरपुर दानदिया तब रन्न गंगा मोहेर पुरमें आयके स र ब्राह्मणों कु निकाल के दृश् बोद्धधर्मी स्वकीय कोकीकु रखे उसबरान सब विवेदि स्रोड ब्राह्मण आमराजा के पास जायके सार्थना करने लगे १० है यजानायाहमें र रहेना मोहेर पुरमें है तो मोहेरपुर पूर्वी काल थोगसे उजाड भयाया १०१ तब गमचह बाहा आपके तो पुरका जीणों हार किया और प्राह्मणों कु याम दान किया १२ और ताबे के पत्रे में सुन णि करने लेख करके दिवा है मोलेख आजनग सब गजाने मान्य किया है ९२ पर न अर्था नुमारी कन्या रन्नगंगाने हमें री प्रनिहे शाम गजा कहता है हे ब्राह्मण हो आजनो सब प्रथी मेरीही और रामचह तो मरण पाये वास्ते कुछ इसरा चमत्कार दिखाव जिससे हमेरा मोह दू होवे रूप

मोहेरकं प्रतस्येपारिवाहीं दरी तृष ॥ ततः कन्या द्विजान्सर्वान निकास्यन्य प्रयत्नन ॥ ४९ ॥ स्विजायान् स्थापयामास सर्वे विप्रगणास्तदा ॥ आमिवं जापयामास गिन्यातस्यसमीपतः ॥ ९० ॥ ॥ विप्राफ्र इः ॥ ॥ वासोऽ स्माकप्रजानायधमरिण्ये स्तपुण्यदे ॥ कालयोगात्य भमत्वपुरमं हेरकाभि धम् ॥ १९० ॥ तदागत्य चराने णजीणो द्वारः कृतस्तया ॥ दनानि द्विजन्य स्थेभ्योत्रामाणिवधनानि ॥ १९२ ॥ अस्तित्वाशासनद्त्ततास्रप्रदेशमद्वारं ॥ एतावत्कालपर्यतसंवे मत्यिति तहितः ॥ १२ ॥ अस्तात्वपुत्र्याच गृत्तिवे लो पिता किल ॥ तस्मात्रालयर्गतं इरामचद्रस्यशासनम् ॥ ९४ ॥ ॥ आम राजौवाच ॥ ॥ अद्योने देने सर्वा मृत्रोसीर इनदनः ॥ विद्रोपेणविनातस्य शासन पाल्यते कथम् ॥ ९५ ॥ दर्शयद्वाने द्वार पुत्रमहाचलम् ॥ अयवान्य भन्यव भे यन्कि विन्मो हनागनम् ॥ १६ ॥ करोति- शासनं त्ररामस्याक्ति एकर्मणः ॥ इर् काम्ने द्विजास्यवैगत्वामो हेरकपुरम् ॥ ९० ॥ मत्रचङ्गमहास्तानो मिलितास्र्यपरस्परम् ॥ प्रत्यवे वेकथराजोदितित्वो द्विजीन्तमा ॥ १८ ॥ अस्माकमाजने यस्यदर्वान वैभवेन्कथ ॥ विद्राणामद्वतसार्द्वन स्वत्वास्तदाभवन् ॥ १९ ॥ ॥ धौम्यउवाच ॥ ॥ देवपराणिवाक्यानिकृत्वात्पादिजन्मनाम् ॥ सहस्त त्रयमुरव्याचेत्त्वस्त्रानिच ॥ २०० ॥

ती रामका नेर्य मान्य करेगे ऐमा कह्या सोवचन खुनके सब बाह्यण मोहंर पुरमे आयके १७ विचार करनळ गे कि राजा कु चमत्कार अपनीने क्या दिग्याना ९० और हनुमानका दबीन अपने कु कैसा होवेगा तब प अगहजारबाह्यणाका एक चिन हमाकि ९९ मारव्य कर्म बलवान् हैं। इस झंबर्म अपना मजोग अब नहिं है ऐसानि ख्यय करके नेते। तब के बल के बल मारव्य कर्म कु बलवान मानने। बाने। बाह्यणोके वचन मुनके तीन हमार पुरस्थ बाह्यण कहते हैं। २०० है आह्मण सप्हारी तुम शास्त्रमें पारगत हो और शास्त्रमें मारथा पुरस करके बनन कहे मां शैक है। जो प्रस्तुत नीन बिनार है उसके छोड़के तुमने बीधा मारथ कर्मका निजय किया बाम्ने तुम पथरों बजार-बातुर्वेदि द्योह नामसे विरसात हो। १ और नगतके बीचम उद्योग करे बिना क्षण मरकि कोई रहता बहिड़ी पास्ते मयल करना अवद्याह नेसा ए क बामसे रम बढ़ता नहिड़ी। भैंसा प्रयलकरे बिना मारथाफलक्ष्म होना नहीं है या स्ते हम नामहा हुनुमान औह याहा जा बेगे राजाह बमत्कार दिखाना और बढ़िन समुख्यों भी विकासदीय रहाण करना के बाह्मण हो बीक्षण मोमके बहांत्तर वर्ग है और स्कागोध धवटक एक पाम में रहने वाले १ वो सब बाह्मण के अपने व्यवने बगै में एके क बाह्मण ने

भिसहरूपीविध्राह्मणाक्त ॥ ॥ धुक्तमुक्तिविध्याव्यमपि ॥ याह्रविधामवती हिचाहुर्धस्ये इवेदनात् ॥ २००॥ उद्यमेन विनाकीपिनिविद्यतिस्णाधकम् ॥ सेपक् ॥ यद्यस्ये केन वक्षेण रपस्यनगित मेवेत् ॥ तह्रस्रुरुपकारेणविनादेवनस्थ्य ति ॥ १ ॥ अनीययगित्रपामोयमास्तेपनास्य ॥ मस्यार्धि इनमेषा इतिरस्तासदाषु मे ॥ १ ॥ चतु पश्चिम्यगोत्राणापरिप द्य हिससित ॥ स्वस्यगोत्रस्पावर्षका । मस्यविप्रस्पयो वर्गे नेमयास्यितित्रचेत् ॥ १ ॥ सच्यपि परिताज्यः स्थानधर्मान्तसदायः ॥ वणिग्वृत्तेनस्यभोनिवाहस्यतेस्सह् ॥ ९ ॥ तन्त्र्यु त्यास्यप्ततात्रचेत् ॥ १ ॥ सच्यपि परिताज्यः स्थानधर्मान्तसदायः ॥ वणिग्वृत्तेनस्यभोनिवाहस्यतेस्सह् ॥ ९ ॥ तन्त्र्यु त्यास्यप्ततार्थि ॥ ६ ॥ भिसहस्याभ्यभिविधास्त्रपोग्रसीत्रवेद्यनेन् ॥ चातुर्विधिह्यानातु मतेविद्यातिमाह्मणा ॥ ७ ॥ निर्गताभयनातेविद्यात्वारस्य ॥ न्याविधिह्यानातु नत्रेकाद्यास्य राष्ट्रपा ॥ ० ॥ निर्गताभाह्मणास्त्रपोरकाम्यमस्य पित्र ॥ एकिव्यातिविप्रास्तिनिनानगरान्ततः ॥ १ ॥ पाथेयमुदित तेषा मागे गच्छन्निरतरम् ॥ गसानिगताहिकारसर्वेपार्थपायेययिविता ॥ २०० ॥

साय का । शिला गणा आहाण नहि आने सा के । ह भी स्पान धर्मने नष्ट होनेगा और बिंगोकि वृत्तिका भाग मिलनेका नहि और उनोके भाष हमेरा विवाह सबध रहनेका नहि अब पान फनते पथरा हजार पानु वै हि बह्मणनों येथी हहुमानके दर्शनार्थ भानेकु निकसे ६ तीन हजार भिषे कि बाह्मणपी तथार भागे तब चातुर्व दि ह्यों ह बाह्मणों के वर्ग मेसे बीस बाह्मण बद्धान्कार से परमें भे बाहर निकडे ७ और भिषे दि ह्यों ह आह्मणों मेसे त्यारा बाह्मण भाकि से घरमेसे बाहर निकले ४ ऐसे दोनों मिळके एक तीस बाह्मण मोहेर पुरसे निकले ४ नव निरवर दरमन स जाने आने स्वरी स्वूर गई और धकराये स्वान पाये ६०

चात विद्यास्तय प्रें हु न स्माकंकार्यम स्ति वे ॥ दु खिता ऊलमारे स्मिन् सृत इट परेणे दिताः॥ २११॥ भे कारस्ते भ विष्यं ते ग्रामाणां गृहसंस्थिता ॥ परार्थेश्वमसाध्य देसे दिग्धे क प्रवत्ते ॥ १२॥ इत्सुत्कापादपच्छायामा श्रीत्यश्वम क विता ॥ भग्नोद मामंद्रभावाः संस्थिता विंशति देजाः ॥ १३ ॥ एकाद्शाजितात्माने जर्म से विद्यवाडवाः ॥ पूर्णेजाते यषण्मासे पाप्तास्ते ल्वणीदिधम्॥१४ ॥ अन्मेदकपरेत्यज्यस्तिबधे जिनवताः ॥ दिनयते जनी दुनरामराजीवलं चनम् ॥१५ ॥ तेषांत निश्चयद्या हेनूमान् गे प्रदेष भूत् ॥आगत्ये वाच हे विप्राः क्रिमर्थ मन् सस्यिताः ॥ १६ ॥ दिजे रुक्ते स्टेह्ताते क पे. प्रों-वाच्त न भ ते ॥ गं पालउँ वोच ॥ ॥ तूनं सटे पेमूर्वाः स्ट बाह्मणा ट दपाठ्ठाः ॥ १७ ॥ हासी कपिटरः प्र प्र दव ने जी दवां कले ॥ गन्छं त्रस्य हाना हु ने हे त्लां तर्द के करे ।॥ १८ ॥ तते दिन वरं स्थिता वृद्ध ब्रह्मण स्थ क क् ॥ पप्रन्छन् इन्स्तान् है के सूच के महारता ॥ १९ ॥ तदार्भ इ स्वृत्तां तंत न्छुत्वा ब्रह्मणो ब्वीन् ॥ प्रतारता दिजानूनं केन दें इंच केने हे। १२०॥ ह्याकि हे ब्राह्मण हो यहां कायके वास्ती बेठे हे १६ तब ब्राह्मणीनं ऋपना

वृत्तान कहा सी सनके ग पहापी हिन्मानजी कहते हैं अरे बाह्मण हो तम निक्टे करके स्पर्व ही केवल देव पर जाना है। १७ अरे हिन्मान कहा है अगेरिक ियुगो सीनकायका है ताहै वाह्म अपने घरल जाव ऐसा कहे के हिन्मान जि अंत हैं त होगये १८ पीछे और तीन दिन गर बाद यह बाह्मणका रूप के के हिनुमानजी एखने को कि हे पुरुष हो तमकेन हो काहारे आये ही १९ तब बाह्मणोंने अपना वृत्तांत कत्यासो सुनके हतुमानने कह्या के अरे बाह्मण हो तुमक कोई वगल बाज आदमीन देगा किया है निश्चे करके २२०

यानी इस कालम इनुमान ध्रिके सामने होने नहिंही चीथा पह चावपुग है वास्ते हुमेरा यम अधीहें २० तव बाह्मण बीन हापके कहने खगे कि इम कूर देश आये भीर अनक कर किया वाली इनुमाननी के दर्शन करे दिना चरकु कैसे जाना ९९ थीम्य मनी मुधिविरक कहते हैं है येगा इनु मानने उनी का रीनयपन चनके कहने अगेकि है आध्यणही तुम करो तुमारा कार्य सिष्ट भया में इतुमान हु २५ ऐसा के इके अपना क्य दिखायके फिर दोनो शुजा के दोरों मले के १८ भोज पम में उनकि सुदि अदी पुढ़ी बायके बाम्नणों के दानमें देके कह्या कि २४ अव काम राजा दूमक को भाग मान होय के पूछे कि क्या चिन्ह लाये हा नव द्रमने यह

नाधवासु स्कतन्त्रीमान्रस्थिगोचरगोक्तवेत् ॥ तुर्योपापसुगेविषा युषायक्षयतासम् ॥२२१ ॥ ॥ दिजाऊचु ॥ ॥ दूरदेश सुपायातांक एच विविधं कत ॥ कथमध्यामिष्यामोत्य हेषु पयनात्मलम् ॥ २२ ॥ ॥ धीम्य उवाच ॥ ॥ मुत्वानद्वचन् तेपीधना न्वीस्यसभाह्मणान् ॥ उत्तिधतुद्धिना कामनुष्टोहपवनात्मनः ॥ २३॥ द्वीपित्वास्वकरूपहृत्मान् मीतमानसः ॥ पृथम्रोमाणिस मृह्यभुजयोक्तमयोरिम ॥ २४ ॥ भूजीपमेणसर्वेष्य चकारपुटिकाह्यम् ॥द्दीतेष्यस्तानुचाच पंषासी पृथिनीपति ॥ २५ ॥ चिन्ह मदीचतामह्यमितिश्रुतेतिकोपित<sup>्</sup> ॥ तदारोमाणिवेयानियामकसोज्ञवानित्व ॥ २६ ॥ रष्ट्रारोमाणि सन्द्रपोदुवीच जल्पतेयदा ॥ भस्मीभवतुनेराज्यमित्युन्कागम्यतानन् ॥ २७ ॥ प्रज्यतिष्यतिनद्राज्यनदाराजानि विव्हतः ॥ सैन्यप्रज्यतिन रष्ट्रापादपोर्वः पातिष्यति ॥२८ ॥ तदादेवादितीपाचपुष्टिका दक्षिणो द्वा ॥ रोमनिष्टीपमात्रेणजीवन्त्रेवसविष्यति ॥ २६ ॥ इति दत्वाकपि-स्थिन्ह तत्रीरातरपीयतः ॥ ब्राह्मणासुदिताः सर्वेताप्यापिन्ह-यदर्शनम् ॥ ३० ॥ आजनेय मसारेणपासामो हेरकपुर ॥ क्षणा मात्रेण वे यिमाभिस्मयपरमगताः ॥ ३१ ॥ बार्च अगके रोमकी पुत्री देना १६ वो रोम देखके राजा तमन

इ बोहोत दुर्शीपण करेगा वबद्वमने कहना कि वेस राज्य भस्म हो आय ऐसा कहके गावके बाहार आना २७ वस सारा नगर जरूने संगमा सो देखके राजा पंचयको हुनेरे रारणागत होयेगा २८ तम दूसरी प्रती देना उसमेके रोम कारी दिशामे हाकनेसे आन्त्रशाल होजावेगा १९ ऐसा इसमान जीने कहा दोसुबी के देके अवर्धीन असे बाह्मणकनके दर्शनसे और विन्द्की मामिसे बढे हर्षित असे पीछे अपने देशकु आनेके आसी विचार करने असे कि दूर है के सा जाना होवेगा रतने में इनुमान नि

ने सण एक के बीचमें मोहेरपुरमें के प्यास बाह्मणोकु रत्यदिये। तन ब्राह्मण बड़े आधर्म पाये प्र

फिर नगरके वाहर सय शासण परस्पर मिले कृताल इस्ने रस्तेका धृतान सब कह्या ३२ फिर सब ब्राह्मण मिलके आम राजाके पासजायके जैसा हतुमान जीने क त्याया वैमा किये तव राजाने वो चमत्कार देखके ब्राह्मणलोकोट कहने लगा ३३ हे ब्राह्मणहो । मेरा अपराध समा करो मय तुमेरा दासह पाखड मतका त्याग करके तु माराशासन पालन करुगा ३४ और मेरे तरफसे सुखवास नामक पुर तुमकु देनाहु और धर्मारण्य नुमेरा तुमकु रहो तब ब्रिवेदी ह्मोड ये सोतो धर्मारण्य मेरहे ३५ और नातुर्वेदी ह्मोड ब्राह्मण सुखवास पुरमे रहें कितनेक सीता पुरमे कितनेक श्री क्षेत्रमे जायके वास करते भये ३६ और जो चातुर्वेदी ब्राह्मण के तरफसे बीस ब्राह्म

आगत्यनगरहारि मिलितास्तेपरस्पर ॥ चेकु ङुशलप्रभाश्र्यमार्गवृत्तदिजान्दिजाः॥ ३२॥ ततस्तेआमराजानं गत्याचकुर्यन्थितम्॥ हतुमता तदाचामो विस्मितो ब्राह्मणान् बवीत्॥ ३५ ॥ क्षमध्वं भूमिदेवावोदासो ह सर्वदािकलः ॥ शासनवः करि प्यामित्यं न्कापारव उमद्धतम् ॥ ३४ ॥ सुरववासं एररम्यंददािम द्विजसत्तमाः ॥ वर्षो विद्यास्थिताः सर्वे धर्मारण्ये दिजोत्त मा ॥ ३५ ॥ चात्रविद्या महाराजसास्थिताः करववासकः ॥ केचित्सीता एरेवासश्री सोवे चापरेवसन् ॥ ३५ ॥ चेत्रविद्या तिस रव्याका रामशासन लिप्सया ॥ हन्मतप्रतिंग ताव्या वृत्यपुनरागताः ॥ ३० ॥ किन्याचाराश्र्य पिततावेषसश्यमागताः ॥ केचि न्महाश्र्य सजाता केचित्वश्रीं दिकयाजका ॥ ३० ॥ महाना लिबजाशाक्ति ङुलदेवीप्रकीर्तिता ॥ स्थानाच्चपश्चिमे भागे स्था पिन्तासा मनोहरा ॥ ३९ ॥ एकादशशतारव्याये मिनाजाता दिजोत्तमाः ॥ त्पित्रविद्या स्थानाचेवपृथक् स्थिता ॥ २४०॥ साभ्र मत्यान्तवेवपृथक् स्थिता ॥ २४०॥

ण हतुमान के शोध करनेकु ग ये थे मो अर्थ मार्ग से पीछे फिरे ३७ त्व अपने दोनो वर्ग से फिन्न हो गये आचारकाष्ट हुये वेष बदल गया उसमेसे तीसरी जाती जेश मह ह्मोड ब्राह्मण नामसे-विख्यात भई कितनेक नीच जाती के खरीहित भये ३८ अबजो मह ह्मोड ब्राह्मण है उनके गोत्र तो पहिले कहें है कुल देवि लिबजा शक्ति हो वोह देवीका स्थान ध-मिन्यर महा देवसे पश्चिम भागमे है ३९ अब ग्यारा ब्राह्मण जोये सो इग्यार्वणा ह्मोड ब्राह्मण ऐसे नामसे विख्यात भये स्थान वृत्तीसे दूर भये १४० सा कमिती न दी के किनारे उपर और जहा नहावासकर तं भये अथ ब्रुजा ह्मोड ब्राह्मण की उसत्ती कहते है अब जी त्रिवेदि ह्मोड ब्राह्मण वे अभि होत्र मे नत्यर रह तेथे और पेद पारायण नित्य करते हे ४९ उनोके परमेणाण मैदोत भी तबउनकुन रानेकेशको जोस्रर्व ब्राह्मण के बढके थे जीनकुं विधानको आविधी। उनोक्त क्यामे ४२ तब गोसब ब्राह्मणपुन गुभीर ज्या रीनरके सभीप गायोकु जराने व्योग और बोहोत करके रात दिन शहा ही गास करने करो कि रानके भागने अपने अपने घरोके अन्य अच्छानमार करके पाल विभाग जा ब्राह्मणनकि उडकी पायि ये तित्यक्षाने व्याभया नय गोह सब शहा खाना और गायोकु चढना ऐसा करते करते बहा उनका निभास स्थम मया ४४ सब मो तरुण बाह्मणके प्रमीने स्मान सच्यानाहा की करना कत्यानोका और विभव योका नामा हुना अन्य स्थाना पीछे नित्य उनोके साम हास्य विभोवके भाषण करते करते का

भगी विच दिजानाच गोधनबहुल भवेत् ॥ वारणार्थकुमाणस्व मूर्या सकत्यता किल ॥ २४२ ॥ गभीरस्यसमीपेते चारपति विचा निराम् ॥ मांगनायनु तेपार्य कुमार्था विध्यास्त्या ॥ ४३ ॥ अन्यानादिक काले प्रापयति स्वस्त मानानातेपाताभि परस्परम् ॥ ४५॥ अपीयो महानभूत् ॥ ४४ ॥ स्नानसभ्यापिक कलाष्ट्रयानस्तेदिजाला ॥ एयसवर्तमानानातेपाताभि परस्परम् ॥ ४५॥ हास्यवस्तेकि करणा चिक्रीहु काममोहिता ॥ नविद्वु पितरस्तासानेपांचेविद्वजन्मनाम् ॥ ४६॥ गर्भवत्यस्मसजाता कुमार्थी विध्वास्त्रया ॥ भागत्वपितृ सिर्य सभातव्यकृतासुभा ॥ ४७ ॥ ऊचुस्ते ब्राह्मणा सवि विमुद्रय चपरस्परम् ॥ पद्मपाती नक विध्वास्त्रया ॥ भागत्वपितृ ॥ ४८ ॥ धर्मसंरक्षणीयोच मथान सक्ष्रो भवत् ॥ कन्याःसद्विता कामिविध्वास्वपद्विता ॥ ४९ ॥ कानीनागोल कास्विच्यानका सत्यनेकदा ॥ तेपिसरक्षणीयाधिमातृ भि पालितास्त्रया ॥ ५० ॥ द्रामामभितिर्विमा पस्तु स्तेसुमोहिता ॥ तेप्य कृत्यास्वरहास्व दीपतामितिनिस्यया ॥ ५९ ॥ गरहस्थास्तेभवत्वय् कुमारा धर्मविद्वया ॥ धेतुजारस्यागमिष्यतिलोकेविमाधमाक्षपि॥ १५३॥

म मोहित होयके कीहा करने लगे बीपात उनके माता पिता की कू मानूम नहीं भई एक जह नोह विभवा क्रमा वो कु गर्भरह्मा लो देखके इनके पिता बोने सभा मिलायके परस्पर विचार करके कहने छ मेकि देखी भाई क्रिसीन अपने अपने सब भीका पहानहीं ले ना पहापात करनेस भागे कु सब होनेगा ए० और वर्ण सकर होनेगा बाल्स भर्मका रक्षण करना कन्याद्वित भई और विभया भी द्वित मई ४९ और विभवासे पैदा मई जाछिके गोलक नामके अनेक बालक कुमारियोसेकानीनबालक भये हैं उनोका रक्षण करना अववय है २५ ऐसा बचन क्रमने सभासस्य बाह्मण कहने हैं कि बोधा हमण प्रमोक्त बाब विभवा कन्या दे देवो ५९ बोह कन्या वासे उनोका प्रहस्थानम सिद्ध है भीर धर्म अस्य बाह्मणायम है तथापि ५२

'लोकमें धेतुन ह्योंड ऐसे नामसे विख्यानहीं और आजसे इनकि ज्ञानि मिन्न हैं इनके साथ विवाहादिक सबध निह रखना ५३ ऐसा कहके मोहेर पुरके पूर्व दिशामे मान कोसके अपर उनोकु रहनेके वास्ते धेनु अनगर बनाय दिया फिरवो सबधेनु ज स्रोड ब्राह्मण वेदपारायण करणे छगे और बाहार है ऐसा धनु न स्रोड ब्राह्मण ।काभेद्रुचा५४ ऋव अडाड जा ह्मोड बनिये जो भयं है उनोका कारण कहते हैं ०५ एक दिन गो सुज वनियेके घरकु एक जैन मार्गिमुंडिया आया उसने नित्य गत्री कु अपना धर्म अपदेश करना ऐसा करते करते बोहीन बनिये औन मार्गमे निख होने ली। सोदेखके और वेदनिया सुनके श्रिवेदी हमोड बाह्मणोने। यो सुडिये कुमारके भिना जातिस्तर्थे तेपासंवध्रे ने वह सह।। धेनुजा स्रोडसं जाये लोके विख्यात् कार्तयः ॥ ५३ ॥ धेनुजारव्यं पुरं तत्र स्थापितं वा सहैतवे ॥ नेपिधमरेना जातारे द्पाउपगयणा ॥ ५४ ॥ एतनेकथिनसर्वज्ञा निभेदंयथानयम् ॥ यज्जातं क लिसंप्राप्तमिशितक थयामिव ॥ ५५ ॥एकदाथ विणिगि हे मुंख कश्चित्समागत ॥ जैनमार्गरतस्ते नविण जीवचितास्तदा॥ ५६ ॥ गोभुजानाचत-न्मागैनिषां दृष्ट्वा दिनास्तदा ॥ श्रुत्वाचवेदनिदांवैताडियित्वाचतक्रथा ॥ ५७ ॥ यामा द्रहिष्यतेकत्वा जम् विवारहान् प्रति ॥ मिलि तावणिजश्वकु हैंदुवादंपरूस्पर॥ ५०॥देविद्वजभाक्तिमंतागोक जा रेचत त्र वे ॥ निवासचिद्विज साक चकुमें हिरकेपुरे ॥ ५९ ॥ ये भिनाहदयाजाता स्रेययुर्व णिजस्तदा ॥ म्डेनसहक्रोधार्ता पुरुमद्दारजनयुभम् ॥ २६०॥ तत्रच्हि नैवासन पुरे सर्वेथगो भूजाः ॥ पुरनाम्नाभवस्ते हु स्रोके अद्दारुजाम्बृत् ॥१६२ ॥ भिन्नाजाता तनस्तेषा ज्ञाति वैवृ शिजाएन ॥ अद्दारुजे ति विख्याता-चाँतु विद्या श्रिताश्वरे॥ २६२॥ गोभुजानां तथाके विन्नावारोद्वणकारका ॥ जातामधुकरास्तेवेसिं हुकूले स्थिताश्वते ॥ २६३ ॥ हर निकाल देके अपने घरक चले गये फिर सब बी बनियोने अपनेमे विचारकरने रग ५८ तब जी बेद रेग द्विनके भिक्तमान ये वो गो भूत बनियं मोहेर पुरमे ब्राह्मण के साथ नास करने भये ५९ और क्रिनैकि बुद्धि भंगहूर्ड बोह वनिये कोधायमान होयकं मृंडिये जैनके साय अहाल पुरर्म चले तये-२६८ और वाहा निपास करते भये तब प हिले में गोमुज विनयेथे परत् अहाल पुरमे आयकेरहें वास्ते अहालज ८ अहाह जा ह्योंड ) नाममें लोकमें विख्यात भये ६१ उनींके उपान्यान गुरु नातुर्वेदि ह्योड ब्राह्म ण होने भर्य ६२ अव गामुज बनियों मेसे विनने कवित्य नीका व्यवहार करने लगे और पश्चिमदिशाम कावियावाड देशमे दीय उना देलवाडा आदि गायो में जाय के रहे यो मनुकर स्रोड वनिये भये ०३। ०४

ऐसी परमेन्द्रयो मापासे कानानरीम शाविका मेट होता भया नो है राजा नरे मामने कहा। ६० चक धर्माण्य कथा समणकरनेसे पापका नाहा होनेगा। और समार सुक भूक मानकरके अनकु मांस होनेगा ६६ अधारनियां में अवार्धान जो इजापिसापात्रका भेट्हें। सोकहता हु। काइक समय गुजरानसे एक गाविस देश धनवान गा भूज विनया नेज यांक का पुत्र विजेशाल नाम करके था इसकी की कासीमन्त्रया उसकरकत गोसूज माइकिये। अबाह जसक पनिये जिनने कु आये सब नमा विके हैं। उससे एक पिथना स्थोद न्योका पुत्र आयक कहने संगादित ६९ मेरी मान कथाहि कि मय पिथना हु। मेरे कु एक पति करके देव नवना बचन सकते सब बनिये आसर्थ कर

भामद्वीपपुरेरम्येकाराचिवेषितेसुम्।। यस्तितत्रचकुक्तेयेषेमधुकरास्तया ॥ ६४ ॥ एषकालकलायोगाञ्जाति मेद स सद्भव ।। स्वेदाणान्व हेजानान्वश्रधातं स्थेनपार्थिव ।। २६० । अवणात्सर्वपापानिनादामापातिनिश्चित्म् ॥ कामद् मोस्तवनित्य भगरिण्यक्यानक् ॥ ६६ ॥ भेदमाञ्चनिकवस्यवणिजाना विचित्रक् ॥ कदाचि हु अरेदेशकश्विद्वामेगहाध्ना ॥ ६७ ॥ तेज-पालस्य अत्रीवै किनेपाल इतिस्मृत ग्रेगोक्षजा स्तस्यगे हेर्वे मोजनार्य सुमाराता । १६८ ॥ गोभूजां धा अते सर्वे तन्मध्ये विधवा स्त ॥ आगत्यचसभामध्येवचनचेद्मष्यवीत् ॥ ६९ ॥ मन्मात्राकि थितमृद्यपति निर्मायदीयंता ॥ तच्छुत्यासर्वेषणिजो वि-स्मय परमगता ॥ २७ • ॥ मिथो विचार्यपपञ्छ स्तमे वृथि धवास्तत ॥ ॥ वैधवेय उवाच ॥ ॥ यत्राच भोजन सेवि किसते तत्र की दशम् ॥ २७१ ॥ ततस्तस्यविचारेच किते झातविचेषितं ॥ विजेपालस्तु विधया विवाह कतवानिति ॥ २७२ ॥ तस्या सीम तसमयेज्ञात सर्विञ्यगोभुजे ॥ युद्ध छत्वागनायत्रते विज्ञातिसमाख्यया॥ ७३॥ विजेपालस्यपद्मीयास्ते भोडा पचसज्ञया ॥ मिथा समान भाषेन स्थितास्ते द्वासद्या॥ २७४ ॥ अन्येष्यवातरा भेदा दिजानामभवन् किल ॥ यामदेशादिभेदेन तयाचा

॥ मिथा समान भाषे निर्मित स्ति देश सद्दाया॥ २७४॥ अन्येष्य बातरा भेदा दिजानामभावन् किल ॥ प्रामदेशादिभेदेन तथाचा रप्रभेदत ॥ २७५॥ ने तमे ३७ और परस्पर विचार करक ध्यानमें निह आया तब आही छोकरेकु पूछने लगे तब आह पिधवाडुमने कथा कि मा अ तुम सब नाहा माजन करते हैं यहा देशा है ७१ वब सबाने उसका शोध निकाछनेस माल्लम पड़ा कि किजेपाल मेटने विधवास्त्रीक साथ विचाह फियाहे ७२ बोह विधवाके सीमत मेसब मोभुजा दिस्तेषु मालूम भाषा तब बहा बढ़ी लढ़ाई मई और जो अभेपायमान होयके चल गये ससम मुलाह जानहि रखा ने बीसे विचा का जयाक खामपा ७३ और जो किनेपाल सेटके साथि हो के रहे ने पाना हमेड असे और जो बीनेतरक समान हिंदसे रहे बेदसा साथ विजय पन २०४ और कोड बाह्मणीं का

पानर भेटभये हे ज्या ऐसे विपाला क्योड श्राह्मण १ ज्या निविधा सवाके क्योड १ नां निविध क्योड ३ क्योर करनी कपड देती सर खर्का किन्छि हालारि चो पार्श-आदि देश श्राम मेदसे अने क मवाके भेद भये ही २७५ इस ब्योड शानी में सरसे ज अमदा बादके पास गावहें याहा शिवगम नाम करके ब्योड श्राह्मण साम देश अच्छा पडित सुमारें २०० दोमी वरसके अपर होगया है जिसने साम देदके कर्म कोड के प्रेय गाफिल एट्टा स्ट्रास अनुसार से सुवीधिनी शांति चिंता मणि कर्म चिंतामणि शाद चिंतामणि कह चिंतामणि आदि बनाये हैं २७६ इस श्राह्मणों के साम बोर्चास वर्गनान काल में हुये है उसके नाम दिव १ कोडि नार भूनागड १ कृतियाणु १ पोरचंदर अझालावाड ५ हत्ववद ७ धागद्द ९ मोरवि १ वीकानंर १० गणपुर ११ सियोर १२ मावनगर १३ अमदावाद १८ करन १५ योल का १५ भठन १७ अकल स्वरूप १० विगया १५

यस्त्रज्ञा तिमस्हस्योत्रामेथे सररवेजके ॥ शिवरामोमहानासी स्मामवेदकतश्रमः ॥२७६ ॥ चट्ट विगतियामाणिनेपांसत्य हुना-द्विज ॥ तत्रवासप्रद्धे तिययालच्योपणीयिन ॥ १७७ ॥ मोहेरकस्यमंगी अद्याल त्रास्य दिने ॥ मलस्नान तावर्ज्य विधे सीडि श्राह्मणे ॥ ७८ ॥ मातंत्र्याश्च्यकर्तच्यं वर्षे वर्षे तुष्जनम् ॥ माधे सिते तृतीयायां मक्ष्यभोज्यादि भि. सदा ॥ ७९ ॥ एकावन्त्रां नाम विधे विवाहेन्द्र्यप्रदः ॥ पंचाशत्केषकानी इतंदु तरक्त वर्णके ॥ २८० ॥ तस्मि न्स्याने महाप्रज्ञाकर्तव्या सूत्र जा ति भि ॥ विवाह न स्वयं स्वर्णदं पत्नी नां दिन्नोत्तमः ॥ २८० ॥ अजनं नयने कुर्यान्त्र नीयवचनान्ममः ॥ भ्रमध्येत्र प्रकर्तव्यसर्वा वयवसर्व तम् ॥ २८२ ॥ विविधार्थेत् कर्त्रव्यं दिजरे वक्षयं स्सदा ॥ मातरी प्रजनकार्यभह्यभोज्यादिना किल ॥ २८३ ॥ ॥ इतिश्री हर्ष्ट प्रण निवंधिते वृहज्यो तिपार्णवांतरीत्र यथे मिश्रस्कं धेत्राह्मणोसिनमार्ते डाध्याये मं हेरक बाह्मण विज्ञास्य केवर्णन नामप्रकरणंद्वा मम्

॥ १०॥ संपूर्ण ॥ पंचद्रिविड मध्येरुर्जरसपदाय ॥ काझी २० जामनगर २१ माउ मी २२ भूज २२ नार २४ यह गायों में अपनी जीविका के लिये रहते हैं मो हेर संज्ञेम रहते निह्न हैं कोइ कहते हैं कि एक दिन में भी मण अवाजका व्यजनादिक करके ब्रह्म भी ज्य करेगा तवश्री माताकुल देवी क्र्ेमें मोहेर निक्केशि अन्यया कुल देवी और धि हो यके क्र्ें पत्री हैं परते यह वात गलन दिखती है। अपमाण है ७७ मो हेर यामका मेंग काल्युन मिहने के प्रतिपदा के दिन भया है वास्ती वो दिन विवेदि ब्राह्मणोनें मकस्तान निह्न करने अपना विश्वास दिन विवाह हुचे बाद एकाय जावावला नाम करके प्रजा करने हैं। उसका विधि वाजट के ऊपर ठान नदुक कपना सा के प्रक करके उसमे सुपारी ५० रगरेक ५० पान के वीडे ५०

पर्म ५९ यह सय रखक श्रीमाताकी प्रताकरक नैबेच त्याजा लडुवाका करता पीछे अत जमर हातम को उपध्याच मध् तीन वस्वत्यवन करके देवीकु पमर उदावे मम गुजराता भाषाम और के मास्तान मास्तान खेतचोड़ों खेत जामर क्यउपडतुरवाडु पर्चाल बिड्ड पर्मा यहा भगमहा ऐसा परक नमर उवायके पाद पडता यह विधि खानदेश कीपेतीकोमेश्वस्त हैं शीर एकाक्जादि पिहुचे बाद सर्वोनेनेनमें कनकर के पीछे तिसरा अजन का दिए का भवर के बीचने करता और मान गा देवीका यह देवायसे वर्जी पूजा क राम २०३ इति शाक्षणोसनि भाषामे खतर ह स्तोड शाह्मण खोवनियों के भेद सद्दण असे मकर्णम् ॥ १ ॥

## श्रथ झारोला बाह्मणोत्पत्ति पकरण ११

न्त्रय स्काद वाल खिल्य रग्दातर्गत झारोला ब्राह्मणोत्पत्तिसारसग्रहोलिख्यते ॥ ॥ सूत्रवाच ॥ ॥ वहास्यदुहि ता ध्रवेंसतीनाम्नाति विष्टुता ॥ सादत्ताशभवेकन्याद्ह्मेण द्विजसत्तमा ॥ १ ॥ सर्वल्ह्मणस्युक्तापतिभक्तामनस्विनी ॥ नामित्रतायदायत्तेस तो पित्रासमर्द्वका ॥ २ ॥ ॥

अर्थ- अव शारोळ ब्राह्मण सीर बनिये जो है उनोकि उसति कहते हैं स्त कहते हैं है शीनक! दश अजापतिकी कत्या परम पतिवता सतीनाम करके जोशा बोकत्या रहाने विवक्त दिये १ पीछे कहा येक दिन गय बाद रहाने अपने अरमे यक्तियाउस पत्तमे हेपक हिये विवक्त स्तीकु नहि बुताया र नाम सती विन बुलाये अपने वापके घरकु गड् वार्बा अपमान होनेसे सतीने देह त्याम करके हिमाचलके घरकु जन्म लिया २ तब भियने मतीका देहत्याम भया सुनके बडे कोधसे वीरभद्रा दिक गणोकु साधनेके दसद यहाँमें आये ४ बाहा बडा सुद्र करके दसप्रजायिका मस्तक अग्निमें होमा ५ तब अग्निभयाश्रीत होयके मुगकारूप धारण करके दीड़ने ल गा शिव विद्यातमें धनुष्य कुठेके पीछे दीड़के ६ बाण माग परनु अिन्कु बाणलग तेहि केवल मृत्यु पाता ७ कारण अग्निकु बाह्मणीने वरवान दियाहे उससे अग्निअन्तरामरण हैं देश वाण साग परनु अिन्कु बाणलग तेहि केवल मृत्यु पाता ७ कारण अग्निकु बाह्मणीने वरवान दियाहे उससे अग्निअन्तरामरण हैं देश वाण सहित नव आक्तावामें गणा सी अद्यापि नक्षत्र महल में वापा सहित मृग दिख पड़ताहे ९ ऐसा दक्ष प्रजापतिका यह जब शिवने भंग किया, तब ब्रह्मादिक देवता

अपमानान् दसस्ययन्तेसातृ मृत्यजत् ॥ हिमाचलस्ताभृत्वाशंकरपुनरभ्यगात् ॥ ३ ॥ हृत्वासत्यास्तृत्वाग शिव कोयसमिन् त ॥ वीरभद्रादिस्वगणे सिवतं यज्ञ मायये ॥ ४ ॥ कृत्वाहुद्ध महाघोराचिन्छेद समृशं शिर ॥ दसस्याधेवचिशर सिन्हा वयथाह वे ॥ ५ ॥ ततं मृगवहु कृत्वात्र्वासाग्निस्तवं हरः ॥ पृष्ठ तोधनु साद्याचिन्जीगाम्पिनाकधृक् ॥ ६ ॥ हुमेच सभृशदेव स्तह देश्यशर स्न पा ॥ सतेन्विद्धो वाणेनपंच वमगमन्त्रहु ॥ ७ ॥ यतः एरावरोद त्तस्त्रस्य वैपरम् छिना ॥ देवानावदन ज्ञात्वास भवचा जरामर ॥ ८ ॥ शारे पाष्ट्र छन् तत्वाकाशहपाद्रवत् ॥ अद्या पि हत्र यतं तस्मिन् मृगं हरशर एउ ॥ ९ ॥ एविष्यसिते यज्ञेत्र ह्याद्याः क्तरस्त्रमा ॥ स्ति व चकुस्तदाशस्त्रात्वो मृत्यावरान् ददी ॥ १० ॥ तत् सतीवयो नपरित्यज्यस्वकान् गणान् ॥ एकाकीन मंदारीरेतपस्तह् व्यवस्थितः ॥ १० ॥ तत्वः कितपरं काले ह्यान्वानदीतवे ॥ कृत्वाकापालिकं क्र्यं क्र्यं ज्ञानाम्यमान् वहून् ॥ १२ ॥ कृत्वाडमरु निर्धेपं वक्ताम मे हयन् स्थियः एवं म्यातस्य विष्ठ देवनं गत् ॥ १३ ॥ ताव दिप्यजना सर्वेष्णाच्याच वनं गताः ॥ गते हुते हुतस्त्य द ह स्तापसं हरम् ॥ १४ ॥ अतीक् स्तं कृते कृते । विष्य स्तिकरने लगे विष्य स्वित्र स्तिवरने लगे विष्य स्वतिकरने लगे विष्य स्तिकरने लगे विष्य स्तिकरने लगे विष्य स्वतिकरने स्वतिकरने लगे विष्य स्वतिकरने लगे विष्य स्वतिकरने स्वतिकरने लगे विष्य स्वतिकरने स्वतिकर्य स्वतिकर्य स्वतिकरने स्वतिकरने स्वतिकर्य स्वतिकर्य स्वतिकर्य स्वतिकर

प्रसन्त होयं सबो कु वरदान दिया १० पीछे शिवजी सती के वियोग दुरवसे अपने गणोका त्याग कर के नर्मदानदी के तट ऊपर नप करने बेठे ११ नप करते करते बोहोत दिन गर्म बाद अर्ण नागानदी के तट ऊपर अने क अर्म के नो आश्रम है वाहा शिव कनप हो का रूप ले के १२ इमरूका शब्द करने जाने हैं और फिरने लगे सो स्त्रियो कु मोहित कर है हुने शन काल कु दारु वनमें आये इनने में वाहा के तो अपी ये वे सब प्रण समिधा ले ने कु वनमें गर्य अपीके गये वाद उन कि स्त्रियोंने अनि सहर स्त्रपान शिवकु देखके काम मोहि त हो यके शिवक साथ दूसरे वनमें नली गई १५

स्त्रियों के गये बाद मध्यान्ह के समयमें सब सभी समिया कुछ पुष्प के के अपने अपने आयम में आये ती स्थिमा नहीं है १६ तब विचार करने रूपे भीर यह क्या मया पे सा आव्यर्थ करते एक पतिवाता स्त्रीने सब इसान कहा। १० तब सभीपान समाधि बहायके देखें ने जिनकुन पिच्छान के कोई कमफहा जीगी अपने स्त्रियों कु के गया है ऐ सा जान है बड़ की धर्म शाप देते हैं १८ है ईवर इसने जो कवि जप किया हो देगा और यह गुरुकि सेपा कियी हो देगी तो उससम्बद्ध मनापसे को तापस पुरुष का किय सूमी में पतन हो १९ ऐसा तीन बण्वत ब्राह्मणोंने कहते शिव जीका किय देह से सिम्प हो पढ़े प्रथमि पड़ा २ शिव का किया पतन होते अने क बजात होने तमें स्वी का मतय होने सगमा

अभातरेतुसुनय परिगृह्य समित्कृत्वान् ॥ मध्यान्हे स्वासमाजामु श्रून्य दृष्वा गतागनम् ॥ १६ ॥ विचारयता कि मिति नदा चैका पतिवता ॥ उगाच पूर्व वृत्वातवधूगमनकारणम् ॥ १७ ॥ तता समाधियोगेन ज्ञा ततस्य विचेषितं ॥ महत्को धेनत हो पुर्नजान तां म हे त्यरम् ॥ १८ ॥ यदि जस हुत कि चिद्रश्व स्वाधिता हिन ॥ तत्तसत्येनचेतस्य तिगपततु सूत्र ॥ १९ ॥ एव सत्य प्रभावेन भिक्त के गर्दे स्वन्य । ॥ देवस्योगपने लिंगपपात धरणीत ले ॥ १ ॥ देवस्य लिंगपति ते सुसात्त वह वो अकाल मलय सत्त्वादेवा सह्माद यो ६२ म् ॥ १९ ॥ स्वाधित्वापयाच कु कृतपा जलयोद्वि ॥ सधारयपुन लिंगस्य की यक्तरसत्त म ॥ २१ ॥ नोचे ज्ञुनगत्र यदेव तून ना श्रुपेष्य नि ॥ इ विदेव च सुत्वापोवाच शक्तर स्वयम्॥ ११ ॥ एपको घो मयात्यको सुष्याक यचनात्सुरा ॥ मेसतीना श्रामपनात हियोगेन दु त्या विदेव च सुत्वापोवाच शक्तर स्वयम्॥ ११ ॥ एपको घो मयात्यको सुष्यान स्वयक्त स्वादिक कृतम् ॥ २५ ॥ अतः प्रभृति लिंग नुयदि देवादि जाक्तमे ॥ प्रजयति प्रयन्ते नत्त दियारयाम्य हुम् ॥ २६ ॥ सिगविद्वाय मेस्ति प्रवाद स्वयक्त स्वयक्त

देरवर्के ब्रह्मादिक देवता १ हान जांडके शिवकी प्रार्थना करने हैं है शिव क्षिम अपना किन पननहुवा हैंसी पुन धारण करा २२ न कियेनो निनी जोक नाग पार्वणे ऐसा देणोका वचन करने शिव कहने हैं २३ है देवहों तुमेरे वचनसे यह कोध मयन त्याण किया परतु सम क्यों के विचाण होनेसे दु रवी स

याहुँ १४ उसके विषे ग्रापके निमित्तमे किंग नाम कियाह भीर बसमनापती के यहामे हमने मेग भाग नोप किया सनीका देह त्यामकरवाया १५ शाना आनस जो सब वम्त्यीक्षहरूम मेरेकिम नीडकेके पक्ष मूर्तिकी पूका करेनेती अनकाव को पहुँ होने मा साम नोप किया सनीका देह त्यामकरवाया १५ शाना आनसी जो सब वम्त्यीकहरूम मेरेकिम नीडकेके पक्ष मूर्तिकी पूका करेनेती अनकाव को पहुँ होनेगा यह बात सकते सब देवता १७ उसी वरवन सिष्ट्रनाथ नामक विचालिंग की पूजा करते भये ऐसी

ित पातकी कथा कही वास्ते सब अग त्याग करके शिवका ितगधूजा जाता है इसउपरात शिवकु नमस्कार करके ब्रह्मादिक देवता कहते है २० हे शिव !आपकी सती-नाम करके जो स्पीची सो पुन हिमालयके घरकु पकट भयीहें वास्ते हमसब हिमालय के वाहा जायके पार्चना करे गे ३०आ प केलास ऊपर गमन करो जिव कहते है देवहो। स्नी रहित मय केलासकु जाता निह ३१ उसकु साथ लेके केलासकु जावुगा नहीं तो यहा ही मेराधरहे स्तकहते है शिवका बचन कनते सब देवता पार्वती सहवर्तमा निहमालयक १२ अर्णनाज्ञानवीके तटऊपर लायके ब्रह्माने जिवपार्वतीका विवाह कर बाया १२ जिसवरवत पार्वतीका पाणियहण किया उस बखत ब्रह्माने पार्वतीकी

सर्वण्यगा निसत्यज्यतस्मा हिंगप्रपूज्यते॥ अथनत्वा शिवंप्रदुर्बह्म विष्णवादयः स्रा ॥ २९ ॥ याप्रादसादु हिनाह सन्नासा हिमाचले॥ गत्वासर्वेवयतत्रप्राष्ट्रयामी हिमाचलम् ॥ २० ॥ त्वंदेवगच्छकेलास मिस्क शंकरे ब्रूबोत् ॥ नाहद्रष्टु मिहेच्छा मिप्रियाशून्यनगोत्तूमम् ॥ ३१ ॥ तयात्र जेयदेलासून चेदेत हहममं ॥ ॥ स्त्र वाच ॥ ॥ तन्त्रुत्वावि इधा सर्देस्मान् यहिमाचल म् ॥ ३२ ॥ कन्य्या भार्ययो साकमणीनाज्ञातरेशुभी ।। विवाहकारयामारु गैरीजाकरयो र सम् ॥ ३३ ॥ यहामाण करेतस्या जाकरेण महात्मना ॥ गीयोक तेस-माले क्यब्रह्मामे हर्मपागतः ॥ ३४ ॥ अनयाँच्छा दितवऋर त्तरीयेनलञ्जया ॥ पश्यास्यस्या कथरूपर रवंत परिवे शितं ॥ ३५ ॥ एवं सर्नितयन्वेधा सामिलाषो वलं कने ॥ करुपायक रेष्या मिरुखद्रष्टु मृते र्मम् ॥ ३६ ॥ यदादेदी घणेष्या मिदंपती वान्हिसं निधी ॥ वकं विर्ह कियिष्येस्या स्तदेखिनिमयान्यत् ॥ ३७ ॥ बाहुकाकोमलार्थेच हे देकायां तथान्यत् ॥ दंपतीह पवेदयायते जनीयकटेवे हि ॥ ३८ ॥कामतस्ह कतोधूमश्र्वह देक्षुत्रदाभवत् ॥ तदोच्छिते बृहद्भमेदपत् व्याकुलेक्षणी ॥ ३९ ॥ तदा निमोस्नितने बेधूमेन सह वाभुना ॥ एकतीयस्त्रमासन्यो स्रवंदर्धि रिचिना ॥ ४०॥

आरुति वेरवके मोहित होयके ३४ अत करण मे बिचार करनेल गेकि इसका मुख केसा दिखेगा इसने लज्जासे वस्त्रसे मुख आच्छादित कियाहे ३५ मुख देखनेके वास्ते कोनसा उपाय करना ३६ एक हेकि जिसवरवत होमशालामे

रूरी पुरुष आवेगे उस बखन मुख देखुगा ऐसा निश्चय करके ब्रह्मानें अग्नि मंगवाया २७ और कोमलताके वास्ते विवाह वेदीके उसर रेती विच्छायके स्त्री पुरुषकुं विवास के २८ मुख देखनेके वास्ते बुद्धि पूर्वक ब्रह्माने अभि प्रकट करके धूम्न किया सो धूम्न सारे मडपमें भरगया शिवपार्वतीके नेत्र व्याकुल भये २९ तब शिवने धूमके लिट नेत्र मी चलिये इतनेमे ब्रह्माने एक तरफसे पार्वतीका वस्त्र खेनके मुखबेरवछिया ४०

सोपूर्ण बहुमतरमा मुरव देरवर्त बद्धाका वीर्ष पत भयाग सबद्धा अपने पीर्यकु बारवार रेतीचे खुपाने अगे ४१ तथ हाव एक नेमसे ब्रह्मका सब इचात देखके हास्य करके दहने सनेकि येववा १ ५१ तबक्षा सिक्ति होसके शिवकु कहने सनेकि इभगवन्। इच्छा क्लि रेवयोगस पार्वतीका मुख्य नोदेखा ४६ उसके दिय वीर्ष पत भ याहे यह सत्य बात है शिव कहने सगे हे ब्रह्मन् तुमने मेरे सस्पुरव मत्यवयन कहा। १५ वा सत्यक्ष से प्रमुख्य भगाई वासी तुमत इच्छित कहा ता हू हे ब्रह्मन् तुमरे वीर्ष से रेतीके कण जीतने भी मेहें उतने करोग्निके नेनसे मकट हो। पार्वतीके विवाहम ब्रह्मद्दा क्योंनि समब बाक्षिक्य नामसे तीन कोक में विरम्पात हो। अयुवेके पर्व

पूर्णेविवदन रष्ट्वावीर्यन्यु निरजायतः॥ तद्रेत श्वाद्यामाससिकताभि सुन सुन ॥ ४१ ॥ विसोक्य न्छादितरेत एक्ने त्रेणशफर ॥ प्रहस्योवासभगयिदिक कप्रमासन ॥ ४२ ॥ एवसुक्तस्तरात्र ह्यास ज्ञ्ञपाशिवमभयीत् ॥ अभि न्छ्यावक मस्या र पदेवानमपा मन्यो ॥ ४३ ॥ स्रवस्तरतेनमेजातमितिसत्यवचोमम ॥ ॥ वाकरज्ञाच ॥ ॥ यस्मात्सत्यस्यामोक्तममामेपिपिताम इ ॥ ४४ ॥ तेन सत्येन वृष्टो इकरियामिययेप्सितम् ॥ यावत्यः सिकतारेतसायु ताम्बद्धरानन् ॥ ४५ ॥ तावत एवसुनयो भवतु तवतेजसा ॥ गौरीकरम् हे जातेब ह्यापीर्योगिता ॥ ४६ ॥ वालास्वित्याताभावेतिस्याताभुवन्यये ॥ अगुष्ठपष्ठामान्यव्यात्र स्वत्यात्र ॥ ४७॥ ॥ स्वत्याच ॥ ॥ अप्रावीतिस इस्ताणित्य पाविश्वाच्छाताधिका ॥ ००११० ॥ वेदार्थशास्य तत्र इत्तर ॥ ४० ॥ ततः कर्म समाप्तिच वकार चतुष्तान ॥ वदाकर्मस इस्त्याविश्वाचनमञ्ज्ञतीत् ॥ ४९ ॥ याचस्वविद्यान ह्यापीर्योगित्र स्वत्यात्र स्वत्य स्वत्यात्र स्वत्यात्र स्वत्यात्र स्वत्य स्वत

माभ निनकी कामा दाप्पातुम इ करनेकु समर्थ हो ४० छत कहते हैं हो गोनकाएंसे जिन की हमासे भीर महामके भीर भतापसे ०० १२० अववासी इजार एक सी भहा मैस रेंद शास्त्रक जानने गाने मन्सानी पढ़ें करी होते भये ४० पीछे महामेषिशह का ओ नाकी कर्म रहा था सो समाभ किया तथ कर्म कि फल प्राप्त होनेके गास्ते शिवनी ब्रह्म कु करते हैं ४१ हे बायन तुम इन्छित भागार्थ दक्षिण प्रंमी ब्रह्म कहते हैं हे महाराज महाजो गज़स्वित्य महिष्ठ सम्बन्ध होने ५ प्रमोक्त हुण शुम में ज्ञान नपचेद शास्त्रों का प्रमान कीर तीम नोकर मान्यता होना ५० कि सुमने विज्ञोंका पर्य नाहा निह होना एवं दक्षिणा मेर्क साम दने हु भोग्य होने ५०

दिए कहते हैं हे बहा अन्यायवी हनार एकसी अद्वारीम ८८१२८ ऋषी वालुकासे पैदा मधे वास्ते अयोनी सभववाल खिल्यऋषी यह मेरे आसममे अर्ण नावा नदीके त व ऊपर आश्रम करके रही और कलियुगमे विष्पपि मर्यादा न्याग करनेके निह यह दिसणा तेरेक़ मयने दियी ५६ और जो कोई लोक वाल खिल्य ब्राह्मणों के साथ भेद गिनेगे नो उनी का नवा सीण होनेगा ५७ और माहा यानखिल्यंपैदाभये हैं जो बालखिल्या अम पाचकोश विस्तीर्ण बढा तीर्थ होनेगा ५८ स्त कहते हैं हे शीनक। शिव ब्रह्मा कु ऐसे वचन क हके पार्वतीकु लेके कैलासकु जाते भये ५९ बिवके गर बाद ब्रह्मा वाहा रहके प्रभोके यथा विधि संस्कार करके उनीकु उत्तम ज्ञान दिया ६० अच ८८ १२८ ऋषी जो है, उत्पमेसे-असादो तिसहस्वाणि वातमेक मत-परं ॥ असाधिवात्तपैवात्रवालासिल्यापृतीन्वराः ॥ ५५ ॥ बालुकान्यः सहस्यनावालापिल्या अ यो निजा ॥ अस्मिन्म माश्रुमेर्म्ये त्यर्णना शानदीतरे ॥ ५४ ॥ आश्रमं रुतवंतस्तेत्वद्दीरेन्द्र तिसंभवाः ॥ ब्रह्मन् दत्तामयात्येषा दिसाणा यात्वयोदिता ॥ ५५ ॥ कलोट्ट गेसमाया ने चहु रे दुगपरीये ॥ मर्यादां न विमंत्र्यीत सरीपर क्रितेरता ॥ ५६ ॥ वाल खिल्य द्वेजानान्य मे द इंटीतरजना ॥ भविष्यत्विरानेपांसर्ववंदापरिस्तय ॥ ५७ ॥ इदंत्वनामयंस्थानबालखित्यसमुन्दवम् ॥ पचकोदा द्विजशेष तीरंटी ब्रह्मपुरः सरम् ॥ ५० ॥ ॥ स्तुतवाच ॥ ॥ एवहत्कावचं विमाब्रह्माणं राद्वीशं खरः ॥ में रीमादायसंद्वश्वः केलासंत्रतिज भिवान ॥ ५९ ॥ अयम् ह्मा स्वयंत्रवास स्वियंत्रयात्रामे स्थितः ॥ सस्कोरेये जिथित्यातान्ददो ज्ञानमनी द्रियम् ॥ ६० ॥ महर्षये व्रह्म वेदो विधेः सु ता गैरि विवाहे भवतां मयोक्तार ॥ मारीनीयाः पि सहस्य ६०००० संख्यारवेस्ट्रस्ताकरणायज्ञेस्हः ॥ ६१ ॥ तैषांपीचहातान्येव ४९५ पचन्द्र्नानिवैदिजाः ॥ गंगायम् नयोम्ध्येतंदु स्तेपरमंतपः ॥ ६२ ॥ परेनवसहस्त्रा णिजंडु वत्या स्तटेगताः ॥ उद्दु रवा स्तपस्ते हु । कद्य-पाचामहर्ष्यः ॥ ६३ ॥ रक्षितागरुडे नैवपतमाना द्वेजोत्तमाः ॥ ततः पचदातान्येव पचहुक्ता ने ५०५वे द्विजार ॥ ६४ ॥ द्वारकायांग-ना र रे रक्षार्थं स्था पेताहरेः ॥ अषादरासहस्रा पात्यषा विंशाच्छताधिकाः ॥ ६५ ॥ तेंसर्थेमु निशार्द्वलाश्वस्तुः स्वास्थमस्त्तमम् ॥ सीन क्र उवाच ॥ ॥ नामा नेवाल स्विल्यानां सर्देषांच द्विजन्मनाम् ॥ ६६॥ साव इजार ६००० वल सिल्य सूर्यकी उपासना करनेकु सूर्य लेक मे गये६१ कीरपाचक

साव इजार ६००० वाल सिन्य सूर्यकी उपासना करनेकु सूर्य लेक मे गये६१ कीरपानक गणे निष्यों ४९५ गणा यगुनां भीनिमे तपकरनेकु गर्य वे अतर्वेदी बाह्मण मये६२ और नवह नार जबुनदीके तर ऊपर नप करते रेंठे वे जंबु ब्राह्मण भये६२ औरपान सो पांच ब्राह्मण ह में गणे वे सम्पाली भाषाण मये६४ और अन्य हजार एकसो अद्वावीस वाहा आश्रम करके रहे वे झारोले ब्राह्मण मये६५ ब्रोनक मन्स करते हैं हे स्त्रां वो वाल्य स्वित्यों के नामादिक रि लारमे कही ६६ सत कहते हैं है अर्थ मधों के नाम मेरेसे कहे नहि जाने के ६० फक्त बहास तो नाम विभाग किया है सो कहता हु आरीजे आव्यापी के गोम गढ़ मी भ सनीस है ना की १५५ गोनोका निभाग असेक पेहने किया है। सो पाकाशिक्स भर्यों मी ६ १ हमार है उसमे १२ अर्में के नीम १२ हाला १२ है समुर्ने हैं गोम १३ हाला

अय बाह्मणाना समुद्रसंख्याचक नियसंस्था नेश्रां नामानि स्यानानि बान विस्था भाषपर चर्म समाये र्भवर्वश्रीशास्त्रणा मना बचुना मध्ये 814 नंत्रमधीलदे नेड शहरणा ए पुन्ते जासणाः शरफार्ग स्मन्मोदग्रापरे १५८ झारोका शसणा 44934

कतानित्रह्मणानेपा नानिनोयदिक्तारात्॥ ॥सूनउपान ॥ ॥तेपासप्रणनामानिय पायसुनराप्यते ॥ ६० ॥तेपागोनाणिकतवा नद्याविद्यापिकदातम् ॥ मेपाणिप प्रयादात् कियतानिदातापिकम्॥ ६० ॥ विभक्तानिन्योभाणिवेदमतिस्यमुद्या॥ भर्यदेताप्रयात्पादात् १२ गोमाणिकियतानिष्य॥ ६९ ॥ कान्यायणमाम पणोष्यपा पायणसिक् ॥ योगायणो वृहद्यमञ्चानते वक्तहारुणि ॥ ३० ॥ सत्ययनेष्यम् म्वउदानकदृद्वनरः ॥ धूमायणो वृहद्वमृगादिकाष्टायनस्त्रणा ॥ ५० ॥ साम्ययम् म्वउदानकदृद्वनरः ॥ धूमायणो वृहद्वमृगादिकाष्ट्रायमस्त्रणा ॥ ५० ॥ साम्ययम् म्वउदानकदृद्वनरः ॥ धूमायणो वृहद्वमृगादिकाषायनस्त्रणा ॥ ५० ॥ साम्ययम् म्वउदानकदृद्वनरः ॥ धूमायणो वृहद्वमृगादिकाषायनस्त्रणा ॥ ५० ॥ साम्ययम् म्वउदानकदृद्वनरः ॥ धूमायणो वृहद्वमृगादिकाषायम् स्वयाप्याद्वम् परिकीरि पायस्त्रणा ॥ ५० ॥ पोलक्त्योविद्यस्त्रोचानानुनीक्षपत्रस्या ॥ पायमानोष्य भादिनसन्त्रमा ॥ ५० ॥ पोलक्त्योविद्यस्त्रको चानानुनीक्षपत्रस्त्रया ॥ पायमानोष्य

मांडयोगीतमीगार्गरेषन् ॥ ७५॥ कात्यायनोभरदाज पारावार्षाविमान्तनः ॥ अञ्चनोम्यश्वदाष्ठित्य पीतिहा युवासत्तया ॥ ७६॥ नादमान्तर्वा ।। ७६॥ नामद्रमिवीसच्यत्यादाकि पत्तजि ।। वादमान्तर्वा ।। ७७॥ नामद्रमिवीसच्यत्यादाकि पत्तजि ।। अग्रालिही रुणिसीवमार्गपपि पींद्रकायणः ॥ ७८॥ मायकायणिरेतानिगोभानिकिकितानिवै॥ द्वाभिदाचलुपाविमायात्वरिक्षिद्वमानाः म् ॥ ७९॥ यहवीतिन्दिसमा शारवा पत्रवैद्वरदादताः॥ द्वाभिदाद्वीय जाताय्यसामवेद कृतयमाः॥ ८०॥ ५६ सामवेदवेगोम १२ गारवा ५ है स्वयं वेद

के भीत १० शारवा १ है ऐसे साव हजार बाजासिस्य कापियों में बेद बार है शारवा १६९ एकसी एकमीयाँहै। गोप १९८ एकसो आहारीस है परंतु गोय ७ वसीवस्वत वास स्वित्यमें नहीं नहें ना स्ते वास स्वित्यों के गोय १९ है क्योर कारो से के १९८ गोयहैं सो नामना ८

यज्ञकर्म समृद्ध र्थ सरहस्यायथाभवन् ॥ विश्वा मित्रोदेवराज श्रि तेदो गालवस्तया ॥ ५१ ॥ छु हिक को शिकश्रा पेट्ट इत सां तमस्तया ॥ उद्धि खलवाने श्रोजाबालिय इन्वल्क्यकः ॥ ८२ ॥ आहुल् साहुल श्रोवतथावेसे ध्वायून ॥ गो कीलायन श्रो रिको लां गृति ज्यमस्मृतः ॥ ८३ ॥ ओद्दलः सरलद्दीपां ह्यशपश्चावपायनः ॥ ६ दवृद्धववेशारवीभालुकिलीम गायनः ॥ ८४ ॥ लेशिगासिः पु पाति जुषमस्मृतः ॥ ८३ ॥ ओद्दलः सरलद्दीपां ह्यशपश्चावपायनः ॥ ६ दवृद्धववेशारवीभालुकिलीम गायनः ॥ ८४ ॥ लेशिगासिः पु पातित्वपुरत्तथाराणायुणायनः ॥ द्दात्रिशं के जजातानांशारवाश्चेव्त्रयोद्शः॥ ८५ ॥ गेत्राण्यथवेवेदीनामे कत्रिशं हेजोत्तमाः ॥ औ तथ्योगीतमोवात्स्य :सीदेवीवर्चसस्तथा ॥ ८६॥ शांडिल्य क पेकीडिन्योमांड्यस्त्रय्यारुणि :समृत ॥ केनकोनील कश्र्वेव छीदवाही बृहद्रयः॥८७॥वो ल्काय्नस्कसं विद्योसोमदिन स्करार्मकः॥सावणि पिप्पलादस्क ह्यस्तिनः शांवापायनः॥८८॥जांजलिर्द जर्कवास्तुः अंगिरास्त्विन्वर्वस ॥ कुमुदा देर्टह · पष्योरोहिणोरीहिणायन : ॥ ८९ ॥ एकत्रिश्च गोत्राणिनवद्गारवा : मकी तिता ॥ एक दिशास्त्र हुक्तंशत्मेकमत्ः परम् ॥ ९०॥ पष्टिः सहस्त्रसंख्यानाहु न नांगो त्रमी १तम् ॥ तपस्तहु गतायेचजं दुवत्यास्तदे हुजा ॥ ९१ ॥ गोत्राण्युसादत्रीवस्यु स्तेषांता नेवकास्यहर् ॥ हैगायनोबातिहयाः पीलक्षीवानुसातिकः ॥ ९२ ॥ त्रीनका्यन्जीवतीकावेदीः पार्ष तस्त्रया ॥ वेहेति ने विद्यासीत्या दित्यायिनरेवेच ॥ ९३ ॥ मृतमारश्च पंगा सिर्जे हेनोवीतिनस्तया ॥ स्यूलश्चेविशिखापूर्ण : जा र्वस्मारीयन्॥९४॥गंगायम्नयोर्मध्येपंचांकाव्हि४९५मिता द्विजाः॥एकाददीवगोत्राणितेषांता नवदाम्यहम्॥९५॥व्याघ पादोपर्वास्थिलवःकारलायुनः ॥ ल मायनःस्वस्तिकार स्वांद्रालिगा व नेस्तथा ॥ ९६ ॥ बोलेयुन्या पिस्तमनास्तथा वैधातिरेवच ॥ अतः परंप्रवस्या मेळणाए यं चये हिलाः ॥१७॥पंचैवतेषांगोत्राणिक थिता निस्वयं हुवा ॥ की हिल्यः बोनिको वात्त्य के त्तः बांडा यन)यकः॥१८॥एवं त्र्य छा झिर८३गोत्राणिक थिता निमया हिलाः॥अथब्रह्मास्वयंतत्रभगवान् ह निसत्तमः॥१९॥ नक,वात्त्य,की

त्स, शाडायनीयक एस है १८ एसे दोसो त्यासी गोत्र मयन कहैं अब झारोले ब्राह्मण और बनिये उनोका विशेष वर्णन करते हैं ब्रह्मा गोता की योजना करे बाद-

यज्ञकर्म समृद्ध र्थ-सरहस्याययाभवन् ॥ थिया मित्रोदेवराज श्रितदो गालवस्तया ॥ ५१॥ छत्रीक के शिकश्रा पेट्ड इंत सां तमस्तया ॥ उद्धि खलवाने लोजाबा लियों ज्ञावल्यकः ॥ ८२ ॥ आहुल् साहुल श्रेवत्थावेसे ध्वायून ॥ गो भिलायन हो रिको लां ग्राति कुष्यमस्मृतः ॥ देश औद्तः सरत्द्वापां ह्यशपश्चावपायनः ॥ वेदगृद्धविवाग्योभातुकिर्ताम् गायनः ॥ दृष्ट्र ॥ लीगा सि . पु या जित्कं दुस्तथाराणायणायनः ॥ हात्रिदाक्रेत्रजातानां शारवाश्रीवत्रयोदमः ॥ ८५ ॥ गंत्राण्यधर्ववेदीना मे कत्रिदादि जोत्तमाः ॥औ तथ्योगीतमोवात्य रसीदेवीयर्चसस्तथा ॥ ८६ ॥ बांडिल्यर क पकींडिन्योमां इचस्त्रय्यारुणि स्मृतः ॥ कीनकोनील कन्त्र्येव अंदवाही बुहुबुयः ॥८७॥बो ल्कायनस्कसविद्योसोमुवति स्कदार्मकः ॥सावर्णि पिप्पलादस्क ह्यस्तिनः गांदापायनः ॥८८ ॥जांजितिर्द्र जर्के शस्त्र अंगिरास्त्व निवर्तसः ॥ कुमुदादिर्गृहः पथ्योरोहिणोरीहिणायनः ॥ ८९ ॥ एकत्रिराञ्च गोत्राणिनवद्गारवाः पकी तिता ॥ एक है बार्सम हुक्तं बात्मेकमत् परम् ॥ ९०॥ पष्टि. सहस्रसंख्याना हुनीनां गोत्रमोरितम् ॥ तपस्तह गतायेचजंह बत्यास्तहे द्विजा ॥ ९१ ॥ गोत्राण्यसाद्दीयस्पुरूतेषांतानिवकाम्यहम् ॥ वैगायनोबातिहयः पौलक्षीयानुसातिकः ॥ ९२ ॥ जीनकायन जीवतीकावेदी पार्प तिस्तया ॥ वैहे ते र्रे विद्यास द्या दित्याय निरेवेच ॥ ९६ ॥ मृतभारऋ पेना क्षिज्य हिनोदी तिनस्तया ॥ स्यूलञ्चेविशियापूर्ण जा र्वरासम्बरीयन्॥ ९४ ॥ गंगायम् नयोर्मध्येपंचांका कि ४९५ मिता क्रिजाः ॥ एका द्वीय गोत्राणितेपाता नियदाम्यहम् ॥ ९५ ॥ व्याघा पादौपरीरश्वरेलवःकारनायुनः ॥ लोमायनःस्वल्लिकार श्वांद्रालिर्गा व नेस्तथा ॥ ९६ ॥ बोनेयस्वापिक्तमनास्तयायैधातिरे वच ॥ अतः परंप्रवस्या मेक्षणापुर्यं चर्ये देजाः ॥९७ ॥पंचैवतंषांगोत्राणिक थिता निस्वयं मुवा ॥ की उत्यः जीनकोवात्स्योर्कं त्यः जांडा यनोयक ॥९०॥एवं त्र्यः धा सिर्द्रशोत्राणिक थिता निषयादिजाः॥ अथब्रह्मास्वयंतत्रमगवान् मृनिसत्तमः॥९९॥ नक,वात्स्य,जी

न्य, शाडायनीयक एसंहें १० एसे दोसोव्यासीगोत्र नयने कहे अवसारोले ब्राह्मण और बनिये उनाका विशेष वर्णन करने हें ब्रह्मा गोना की योजना करे बाद-

मनमें दिनार करने संगेकि १९ व्स आसममें रहे हुये जो झारोसे मेरे प्रनह हनोके विवाह हैसे होवेगे जेसा कहके एक जनपूर्ण कसदा का स्थापन किया १० वी खे वे कतरामें ब्रह्माने दही सेतपूनदुध इनक्योंका होमादिया १ तक्ये कहरामे अवारा इनार एक्सी अहावीस कत्या २ अयोगि समय अहावे के पर्व जितान जिली कियापारमीपैराभव बनोके साममाद्याणी का स्थित करवाया ३ और सबोदि कर देवीया स्थापन कियों, तब ने यहस्यात्रमी सारीके बाह्मण नयना से जरूने की

अय नंबु बाह्मणोके गीनका चक्			अयांतर्वेदि शाह्मणीके गोलका नक		
) विश्वपन २ वीतिहस्य	७ कार्यतः ४ चार्यतिः	१३ पिमासि	१ न्याभ्रपार्	, क्षेत्रायन	९ रीकेय
र पीम	र रहित	१४ जहिन १५ शैवित	२ उपनीरा	५ समिकार	) फमना
<u>४ अनुसाविद्य</u>	• निर्मिक्तपासिः	१५ म्यूस	३ मीजग	७ भारासि	११ पेपृति
५ सम्बन्धापन ६ जीपती	११ सादिसायनि १९ स्वमार	१४ सहरामः १४ सम्बद्धाः	४ कारकायन	ट गायिनि	<del></del>

विभित्तमन् स्तपुनाणाक्यं वार्परिग्रह् ॥ तर्निक स्याप्यकल-द्राइटप्रितमभसा ॥ १०० ॥ तस्मिन् होमन काराजोद्धिमधु प्तादिति ॥ एवंतास्मिन् कते होमे अह्मणापरमे खिना॥ १०० ॥ क न्याजातास्तवाविभास्ततः कुंभा हरागना ॥ अवादशसहत्वाणि स्वाविशाधिक शतम् ॥ १०० ॥ अग्रु धप्यमानास्य द्रेपत्यूनात्रयो निजा ॥ नक्षस्ताभिर्विगहान्यनास्तिवन्य हिजन्यना ॥ ३ ॥ तेषानैयविश्वाहार्यकृत्यदेष्य क्षतास्तवा ॥ दृशातान् विनयपितान् ए हस्य धर्ममास्यितान् ॥ ४ ॥ अह्मानितांपरामाप्याचेनारपरमययो ॥ कथपास्या स्विग्यतिमस्त्रानीसुनेपुने ॥ १०५ ॥ तपोध्या नजतरता परस्पर स्पृद्दाहिन ॥ इतिसन्तित्य बृद्ध्या अह्माध्यानस्य स्थितः ॥ १०६॥ । अनोकु देखके ४ १५ अस्मानिता करने तगेकि आगे धुर पुगमे मेरे पुष तपथ्यान वतादिक करेगे और वणादीन रहेगे तथ दनोका पायन कैसा होवेगा ऐसा होहोन ध्यान करके पीछे १ ६०

अपने पानसे पावकु ताइन करते पृथ्वीने नो रेतिगिरि उनसे ७ धनीस हजार दोसो छप्पन १६०५६ सन्छू इ पेदामचे ८ वे सब मुझील नमतासे हात जोडके-बसाई कहने लगेकि हमने क्या कर्म करना ते कही १ तब बसा एकदम सब पेदा मचे हुने भिक्तमंत सन्छू दो कु देखके कहने हैं-१० ह पुरुष हो। यह बाह्मण मेरे नीर्यसे नेदाभये हैं-और तुम मेरे पायसे पेदा भयेहो जासे द्रव्य अन्य बस्जादिक से तुमने इनो का संगा करना १९१ आजसे बाल विल्य बाह्मणो नित्य-मितिक का स्य देवसूनादिक सब कर्म अहाय्य होवेगा- अर तुम अपने झारोले बाह्मणकु छोडके अन्य जातिस्य बाह्मणकु तुलायके मोहसे जो कर्म करोगे तो तुम्हेरा बो कर्म निष्म

पादेना ताडयसाद्यालुकापिता भृषि॥ तासांसरव्यासमादिष्ठा त्राह्मणा स्वयमेष है ॥१००॥ पर् त्रिश्च सहस्राणि दि हातं हुतथो सर्म् ॥ पर् पंचाहा इसच्छू द्वा विष्टे भ्योदिर णाभवन् ॥ ८ ॥ सृही लास्सदाचारा विनयान तक धरा ॥ आहु स्व वर्षां जलपः के कुम दिनवादिन ॥ १ ॥ रष्ट्राप्टु सन्तान् सच्छू द्वान् भिक्त तररान् ॥ उवाचपरमधी तो ब्रह्मालो कृषिताम ह ॥ ११ ॥ ११ ॥ अद्याप्ट्र पेता वित्रा स्वाप्ट्र स्वरं ॥ तिस्वे मित्तिक काम्यदेवपू जादिकं तथा ॥ १२ ॥ अद्याप्ट्र यदेते सुद्ध सम्यत् द्विष्य ते ॥ स्वत्ता तिन दिजं सुन्का त्या हु-यान्यं दिजोत्तमं ॥१३ ॥ करिष्यं तिचते सुद्धा लद्ध विष्य तिनिक्त तथा यो मोहा हा प्रमादा हा अन्ये कर्म समाचरेत् ॥ १४ ॥ धर्मघातो स्वरं य सनरः पंक्तिद्वक ॥ अध्याद्वा विष्टे सोनिका हो जान्ह ने तटे ॥ १५ ॥ स्वता ति यो वरे मुर्वे नचान्यो वेदपार ग ॥ सोम संस्कार संवध सा द्वा तिक मेवच ॥ १६ ॥ ज्ञा तिभिः सदक तिच्य मन्यया निक्क अवेत् ॥ एवच वर्तमाना ना दिजे हुच परस्परं ॥ १७ ॥ संत ति सहशाका लेभिवच तिनसंशयः ॥ महाक्याद पसन्त्य सम्बद्ध द्वा मसादर असो देवा ॥ १८ ॥ अस्ति स्वरं तिनसंशयः ॥ महाक्याद पसन्त स्वरं द्वा ससादर असो देवा ॥ १८ ॥ अस्ति स्वरं तिनसंशयः ॥ महाक्याद पसन्त स्वरं द्वा ससादर असो देवा ॥ १८ ॥ अस्ति स्वरं तिनसंशयः ॥ महाक्याद पसन्त स्वरं द्वा ससादर असो देवा ॥ १८ ॥ अस्ति स्वरं तिनसंशयः ॥ महाक्याद पसन्त स्वरं द्वा ससादर असो देवा ॥ १८ ॥ अस्ति स्वरं तिनसंश्वरं ॥ महाक्याद पसन्त स्वरं दिनसं स्वरं सावरं । ॥ १८ ॥ अस्ति स्वरं तिनसंशयः ॥ सहाक्याद पसन्त स्वरं दिनसं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं सावरं सावरं । ॥ स्वरं सावरं स

त होवगा १४ अ न्य ब्राह्मणल दुलायके कर्म करेंगे ते धर्म घाती पक्ति दूषक होवेगे। जीसाटर्भ उच्छिष्ट त्यापि श्रेप है और काश गगाकिनाने का है नयापि उत्तम निह है। वैसा अपना ज्ञानिस्य ब्राह्मण यद्यपि मूर्ग्व है तयापि पूज्य है अन्य ज्ञानिस्य वेद पारण उत्तम निह है कायसे नो सोमयज्ञमे विवाह सवधमे, श्राद्भे, शांनिक मैमें, अपने ज्ञानिस्य ब्राह्मणी कर्म कर्रवाना अन्यया निष्कल होने गा ऐसा कहाहै। वान्ते तुम परस्पर अनुकूल रहोंगे ने १० आगे तुमेरी संति षृद्धिगत होवेगी। और पेरे बननसे सच्यूट ज्ञानि हो हमेरे मे हो भेद होवेगा। एक मांवादित्य दूसने रतीच्यर ऐसे होवेगे। स्त कहते है ब्रह्मा खार ले बनिये हुं ऐसा कहते ९५ उनींके विवाह करनेके वास्ते रहि प्रामेताने कोम करने कतामने कत्या पेदा भईपा पीछे बनियों के विवाह करवामें वि बाद्याणोंके नितने गांच और गोंच नित्यों के होते भये विवाह करवामें वि बहुत नित्यों के स्वाहित जो कहा कि नित्यों के होते भये विवाह करवामें अर्थनाता नहींके तह दे पर १५ एकेक आहाणक रोटो शुरू मेगाके वासी किये और रहनेक वाली आत्यों दर नामक पावजी सका नगर बनायके दिया सत्यसुगमें उसका नाम वामीपुर पा कारण वो वरवत में बाहा शमीके वृक्त बोहोन हते वेगासुगमें दुर्गाहर शायर भीर कियुगमें शमि वृत्यों और कुरायह तीनीसे जाति सरिरवी पृथ्यित्यास

द्भावरमाभनिष्यतिसानादित्यारतीत्र्यरा ॥ ॥ सूत्रवाच ॥ ॥ इतुत्कातास्ततोत्रत्यापाणि यहमनितयत् ॥ १९ ॥ ततोहीः मुचकाराजोवध्याष्यमधुभिन्तदा ॥ कन्यास्त्रसमुसन्यास्तरताश्रयमया न्यन् ॥ १०० ॥ हिजानायानि गोत्राणि श्रद्राणातानि चैपहि॥ सतपाणियहान् सवान् रह्मानुसर्भृस्यूपया ॥ १२१ ॥उपाचित्विच द्रामुविमेभ्योदे हिद्शिणाम् ॥ ततस्य सा ्वेदेसेनेत्यणीनाद्यानदीतटे ॥ २ ६ ॥ तर्देकस्मैद्भिजापान्त्रसञ्बद्भस्पद्भपद्भी ॥ मुनीनावालारवल्यानाश्चद्राणाभोनुअन्मनाम् ॥ २३ ॥ स्थानजाल धरनामपचक्रीशास्कद्दी ॥ कतेशमीवुरप्रक्तिद्वेत्रेना्युगेत्या ॥ २४ ॥ कुत्राचहापरेचै्वकल्पान-त्योधरसमृतम् ॥ वामीदूर्वाकुरातरुजातेरपिसमाकुलम्॥ २५ ॥ अनेजिन्योधरसत्रमयितपरमेषिना ॥ अयोगचारीयः भीतीबारतिस्यदिनान्मति ॥१२६॥ ॥शकर् उपाच्॥ ॥याबच्चद्रश्वस्यश्वयाबद्धसाष्ठगालकुम् ॥तावति ध्तुतः-त्यान् वालित्यात्रमदिना ॥२७॥इत्युक्तवति देवेदोसजातनगरम हतु ॥ स्वस्वतत्रात्रमचकु वृलिखिल्यामहर्पय ॥ २८ ॥ निवासकृत्वतत्र्यसच्छुद्रात्र्यतदात्रमे ॥ सुत्रुष्ट्राप्रमानकु पालयनौद्धिजोत्तमान् ॥२९१। एवविधम इत्स्पानंशसुना स्थापितपुरा। हितायचालियेल्यानासन्ख्रुद्राणीति धेवच ॥ १६०॥ हैं २५ बास्ते जात्योवर नाम ब्रह्माने रखा अवशिव घाउ खिल्म

श्री कार्या करते हैं कि २५ पायन् कार पर्येत चहस्यका मकारा श्रह्मा दगोरान्द्री वाहातग श्रह वास्तवित्य कावियों का आग्रम मरस्यान रही गैसा कहते हिंव गर्प २०वाद पीनगर बहा बुद्धिगत भया सब कर्षि उसने अपने आग्रम बनायके ९८ निवास करने भये सन्द्रूद्र झारा से बनिये वि उना के आग्रम मरहके बी-श्राह्मणीकि से वा करने भये और वाहा रहते भये २९ हे बीनक।शिवजीने झारोसे ब्राह्मण और बनियों के सिये ऐसा बड़ा नगर स्थापन किया १३ 11 11

यह मच्छू द्रोकी जो कोई उत्पत्ति अपण करेगा तो उसकी सब कामना सिद्ध होवेगी॰ और मतर्ता की वृद्धी होवेगी॰ १३९ इति ब्राह्मणो सित्त भाषाया झारोला श्राह्मण और झारोले बनिये और जबु ब्राह्मण गगापुत्र ब्राह्मणोंकी उसन्ति वर्णनं नाम प्रकरण १९ सपूर्ण भया।

सन्द्वद्राणांसस्त्रतियः शृणो नि द्वेजोत्तमः॥ सर्वन् कामानवाभो निसंतरे हे दिस्तमाम् ॥१३१॥ ॥ इतिवास खिल्य इत्रेणनंनामप्रकरणं॥११॥ पंचद्र विडमध्ये गुजरसंभदायः॥ ॥

## अस रुग्त इन्हणकी उत्पनि प्रकरण ११

अब द्वारका वासि गुग्गुळी त्राह्मणोकि उसात्ति कहते हैं एक समयमे नी के यात्राके मसंगसे मन्ताद कहते हैं है ऋषी खणे! मत्र कु जानने वाले द्वारका वास्मणोकु बुलायके होम परार्थ लायके होम करके वाद तीर्थ यात्रा करने छ जाना १ ऋषी पूछते हैं हे मन्हाद। द्वारका में जो गुग्गुळी बाह्मण है मो किनोने स्थापन कियेहें सो कहों २ द्वारका पहिले वेद धर्म रहिन थी सन कादिक वायुक्त प करके रहने थे ३ जहां देन्याने दूर्व सा ऋषी कु बहिष्कार किया है चो आनर्त देशमें ब्राह्मण के

अष्ट हुन्हस्य वाल खिल्पबाह्मणोसितिमाह्॥ ॥ स्कांदे॥ ॥ वाल खिल्यखंडे ह्रास्कामाहात्स्टेच॥ ॥ प्रकाद्उवाच॥ ॥ त अस्थितान्समाह्यबाह्मणान्मंत्रको विदान्॥ हुम्द्रव्यंसमानी यतत्स्री यसमावजेन् ॥ १॥ अस्पय्क नुः॥ ॥ वसं तिहारका यांचे बाह्मणादेत्सत्तम्॥ केन हस्या पितास्त वे हस्तरण वद्स्वनः॥ २॥ कुद्रास्थलोनियापूर्व वेद्धम् ववर्जिता ॥ सनका चेन्ह् यत्रेवस्थीयतेवाहु स्विभितः॥ ३॥ अश्विदुत्रोमहाश्रेष्ठोयत्रदेवे विद्युतः॥ नस्मित्नान तिविषयेकेत्र तिखनियाद्वाः॥ ४॥ ॥ ॥ ॥ अप्र पत्रवाद्यवाच ॥ ॥ १९ एष्टं देजद्याद्वायात्रविल्याद्वत्रम्भताः॥ ब्रह्मावण्यु द्विव्येवरान्द्वामहर्षयः॥ ५॥

से रहते हैं सो कही ४ म-हाद कहते हैं- है-

असी स्वरं ! श्रवण करो वालाशित्य नाम करके विख्यात जो महार्षि उनोकु ब्रह्मा विष्णु जीव इनोने वरदान देके प

भीर भी कथाने अपनी स्थानकि शुद्धि अस समिभा प्राणुलके होमकरने वाचे बाह्मणस्थापन किये ५ गुग्युल होमकरनेसे सर्व वापसे मुक्त होनसे वाकी हे माह्मणोका नाम गुग्युसी बाह्मण कहती पर्य अब इक्यासी इजार बासस्थिन्य क्लीओ ये उसमेरी कितनेक जानिका सेममे गर्य कितनेक भारकर महस्यो गर्य और यहा कितनेक भागे बादीके मोसाकु साधन करते भये अबजो हास्कामे गुग्रुली बाह्मणोका अनुभए नहि सिवातो उनकु पाना फरानहि होताहै । जीनक इ अते हैं दे खुत शिवने पार्वती कैसी न्याही और विवाह कहा भया सो कड़ी १ खनकहते हैं दे बीनक क्षिका जासि घड़ने किएपात होतेसे यहा बैठ रहे एव सब दे

स्थापिता द्वारकाया च देयदेवेन विष्णुना ॥ सीया अमिशस्त्र र्थिसमि हुगुलनु क्का ॥ ६ ॥ सर्वेपापविनिर्मुकासोनपुग्रिक कारमृता ॥ केनिज्जालियु हेरम्ये केनिकारकर सालिधी ॥ ७ ॥ तिपुर्यानेष्ठतिथिमा अपामोसकसाधकाः ॥एपामनुष्रह मृतिवीर्य पा नाफलनहि॥ - ॥ वीनिक उवान्त ॥ ॥ कथाविवाहितामीरिविषदेवेन राभ्रना ॥ कस्मिन्स्भाने विवाही भूत सूत तह्य सामत॥ १ ॥ ॥ स्तुत्रवान ॥ ॥ निज्स्यानगते लिगेरेपे मोक्तोम्हे श्वरः ॥ अति ष्ट्याममगच्छके तासपर्वतोत्त में ॥ १० ॥ प्येनगलासप् वैप्रायेगामोहिमा चल ॥ तबार्ये सासमुसन्मासर्पलकाणलक्षिता॥ १९ ॥ , ॥ दीक्ष्य याच ॥ ।॥ नाइतद्र सु मिन्छामिनिया पून्यवगो नुमम् ॥ तस्मावानीयताम भवेवकन्यानगोद्भवा ॥ १९ ॥ यहिता हुक् युणोपेता कन्याताव वसो हु हेतु ॥ तत्कैठास गमिष्यामिनान्य षेवानंगे स्किति ॥१३॥ त-व्यात्वाविषुधा सर्वगतामोत्वादीमोतंष ॥ इरापवीयतोकन्यानंदेषीमहत्यागता ॥१५॥ ॥हि म्लियंव्याच् ॥ ॥ सम्पर्कतं भूषाब्रिक्वमेनकायास्तयामाने ॥ तस्मारानीयतामत्रसामतदादीबोरवरधा १५ ॥ विषाद्धिक्रया

नैयेनविधिरहेनकर्मणा॥ तदात्रिक्षितकत्वासापुसाधितिवादिन ॥१६॥ ववाबोने कसाफि है शिव पहासे इनके के

लास ने बलीत और इमसब हिमालय के पास जायके भार्यना करत है और बहा जी कन्याई सी आपके पासी उसका मई है १५ दिव कहते हैं। है देवही स्वीतिसधीर कैलास पर्वत कु देखनेकी इच्छा करता नहि हु इसवाक्षे वी हिमाउएकी कम्याकु महा अव १९ पोकन्या जी घोण्य होनेगी तो विवाह करके किलास पे जापुना नहिती ख काहि रहुगा १६ शिवका वसनस्तरके सबदेवता हिमालपकेपास नायके स्हाकि हूं हिमालप बिनकुतुम क्रमाबेस इसनाक्षेत्र प्रा आये है देखे काव्यन १४ कावके हिमाल पकरता है है वेपही सुमने ओक्द्या सो उत्तमहै और मेनका कि विद्वाला है गस्ते किय कु पहा लाव १० विधिसे विवाह करेगे ऐचा हिमालपका क्यन सुबके शावासशाबा

स कहके १६ देव कहती है है हिमालय इस वरवत शिवजि ऋषीके आश्रम में हैं और उनोक्त हमने कह्या कि केलास के अपर चली १७ तब उनोने कह्या कि स्वीविनान यह स्थान छोडके कहावि जानेका नहि ऐसा शिवका आयह है। वास्ते हे हिमालय हमेरी बात कनो तो शिघतासे कन्यालेके शिवके पास वले १० तव हिमालय स्त्री सहवर्तमान कन्याकु लेके बिवकेपास आया १९ आनर्त देशमें अर्ण नाशा नामकी नदीके नीर पेजायके जलपान करके साणमात्र आश्वर्य करता भया २० उस वरवनसव देवता शिवकुं कहते हैं हो शिव जीपार्वतीकी इच्छाकरते ही ती कामदेवजी दग्ध हुया है उसकु सजीवन करे। कामदेव निना उत्तम सृष्टि होने की नहीं २० शिव कहते हैं हे-॥ देवाऊन् ॥ ॥अत्रीणामात्रमेषुण्येसांपतवर्ततेशिवः॥प्रेक्तोस्मा निर्विवहुधाकेलासपर्वतंप्रति॥१७॥ तेनेकंन पिन् याहानं प्रयास्येहत् कुत्र नित् ॥ तस्मात्कुरुष्वनीवाक्यंतत्रीववजमान्तिरं॥१८॥स्तामादायचेतसे वीवायप्रतिपादय॥स् तामादायभायं नतत्रेवसत्तरेयये ॥१९॥ आनुर्त देवोसुरव्यान्त्व ए नाज्ञामहान्दी ॥तस्याक्तोरेजल्योत्वाक्षणाये वस्मयंग तः॥ २०॥ ॥ देवाऊहु-॥ ॥ प्रत्यापयसम्तिवयदियां च्छिसितां प्रियां ॥ स्मरेणे विवनसृष्टिः स् प्रियानम विष्यति॥ २०॥ ॥ ॥ शिवउवाचे ॥ ॥ जोवान्वितंक रेण्यामिकामदेवमहद्भाः ॥ अज्ञारीरंनपत्रया मितेनास्यवृद्भं सुरा ॥ १२ ॥ प्रेष्यत्वा निः जांभायं कित्वामम विखेवनं ॥ अश्रीरो पेसत्वय्योवन्यान् वैभ विष्यति ॥ २३ ॥ एवस् त्कातनो विद्यास् तसंजे विनीहरः ॥ तद र्धमजपद्देव प्रतस्थेचस्प्रस्ततः ॥ २४ ॥ ततव्यविष्टु पोवाचस्वयमेव पताम्ह ॥ एस्पोक्तन विधानेनकर्परेवा हिक इत ॥ २५॥ अहमहाभिष्या मिकमध्यिसः रातकहः ॥मध्यकं समादायमातृणापुरतोययो ॥ २६ ॥ देवदेवं महादेवोयत्रगीराच्यवस्थि ता ॥ उत्तरीयेनसंखाद्यवस्त्रीणार्र उतासती॥ २७ ॥ करस्यग्रहणे नात्रे वाकरस्यनयायह ॥ उभयो स्वेदना जातास रेन् पापपा

खनेका निह २२ अपनी स्त्रीकु नेजके मेरा पिडवन किया वास्ते शिर विनापि कामदेष बलवान होवे ॥ २३ऐसा कहके कुनस नी विनी विचाका जप करते कि उसीबरवत कामदेव उसन होता भया • २४पी छी विष्णुकहते हे इं ब्रह्मा गृह्यस्त्र ना नुसारसे विवाह कर्म करो २५ मय ब्रह्म देन होता हु तुम आचार्य हो। इद्रकर्माध्यक्षहो पीछ मधुपर्कपूत्र लेके कुल देवी छे आगेजाते भरो २६ जा हा गीरी बेडिहे नाहा जिय आये पार्वतांने जन्माके लिये उत्तरीय नस्त्रसे मुख आच्छा विनक्तियो २७ विवने पार्वतीका पाणि यहणा

देशको कामदेवकुँ संजीवनकरता इ परतु सक्तरि सुरुद्दे-

णा रीनी ॥ २८ ॥

ंकियांड स बसन बोनों के परिस्तेद से नहीं होती भद् ६८ बस्तके बाइरसे पार्वनीका स्वत्य देरवके अहमाबित्स या विश्व होयके पार्व ती के इस्तफु स्पर्व किया तथापि वि चार करने क्या कि शिवके मध्यमसगती होने से उत्तरीय बस्पसे पार्वनीने के सब्जासे भूरव आछाबित कियाहें ६ तब पार्वती कु से सा देखागा और क्या के सोवा ऐसा चितन करने करते काम बाणसे पीडिन होयके ६९ दपती भडित बेंबिके पास आय के कर्मका भारभकरके गीरीके सुरव देखने के बाको धूम बोडोन किया उस बस्व नशिवने धूमकी पीडासे नेश्र मौन किये ६९ इतने में बहाते गीरीकावसारवे नके मुस्त यह बेरबक्तिया ६४ सुरव के बरोबर बह्मा का बीर्य स्टब्सिस भया जब झहा

नारपाविस्मयाविष्टोवेनदेव पितामह ॥ अवितयत्विनेतुयस्या स्युष्टेपिसकरे॥ २९ ॥ अश्रेय सस्यितारु स्मामेम यमेन्त्रत ॥ आन्नखादितगीय्याचोत्तरीयेणलञ्जया॥ २०॥ कथपश्याम्यइताचकी ह्यू क्ष्माविष्यति ॥ एवितयमान्स्न कामगाणम्पी दित ॥ ३१ ॥ नेदी मूल तत् प्रामो इपनी सहिनस्तदा ॥ भारव्यचतत कमी ए हो। किपिनातत ॥ ३२॥ विहिन् न्वतनो धूमोगोरीयक दिदेश्या ॥ निमीलतेषन्यनेदेववेचेनराभुना ॥ ३३ अतदयस्छाचतारञ्जाकष्यपयान ॥ मुखमालो कयामासे पूर्णीतुसहरा -छवि ॥३५ ॥ रष्टमात्रे मुखेतस्मिनू री यस्मिवितासन् ॥ यथाच प्रावितासिकास्मनान् द्विजसन्मा ॥ ३५॥ ततम्बछादयामासासिकतानापितामह् ॥ वृतीपनयर्नेनाथताद्यादादीदीरवर ॥ ३६॥ मनाणाचिनादा्वेदस्वाध्यानेन्दा करः ॥ प्रहत्याया जनी हाक्यकिमिद्वर्षिनामङ् ॥ ३७ ॥ विकलत्वेनस्युक्तो भगान्जातश्च साप्तत ॥ किमेतकारणज्ञ हित ध्यलोकिपतामङ् ॥ ३८ ॥ ब्रह्माउथाव॥ अविध्माकुलेदेवगीरीयकिथिलो कित ॥ सतव्यक्षापराधोमेनतस्यलपुताममः ॥ ३९॥ ॥ विवउयाच ॥ ॥ यस्मालत्यत्यमाप्रोक्तममाभेचतुरानन ॥ तस्मातवात्रत्यसङ्क्रकमधिनोवित ॥ ४०॥ वेशे गर्भ कृते

ध्यलाक्षिताम् ह ॥ १८ ॥ श्रह्माउथाना अविध्माकुले देवगीरीयकि विलो कित ॥ सनव्यक्षापराधोमेनतम्बलपुनामम् ॥ १९॥ ॥ शिन्य याच ॥ ॥ यस्मात्सत्यत्यमाप्रोक्तममाभेन्यत्रानन ॥ तस्मात्त्वात्र तृष्टोहकुरुकमिधुनोनित ॥ ४०॥ ने वो वीर्ष कु रेतीमे वृत्राम १५ तव विवने तीसरं नेमसे रेतीकु देरनके १६ और मनकमका बिनाश हूना देरनके हास्य करके ब्रह्माकु फहते हैं १० हे ब्रह्मा इसवस्त तुम विक स केंसे भने उसका कारण सत्यक्षो १८ ब्रह्मा कहते हैं है विच्युमने धूनसे नेभ वप किये उसी वरनत मीरिका सुस्त मेने देखासो अपराप मेरा समाकरना जीरम यत्र पुत्र कु पापा १९ शिन कहते हैं हे ब्रह्मन् मेरे सामने तुमने सत्य बातकहि इसवास्ते मयसनुष्ठ भया हुवास्ते सामतकान तुम कमे शोप जी हैंसो पूरण करो ६०

और एजी वीर्य स्वितिनया उसमे जितने रंतीके कण निश्चितमये हैं उतने मुनीश्वर होवेंगे ४१ कीर वास्तित्वन नामसे मेरे कर्मसे तुमेरे द्वित्र हैं हे ब्रह्मन् कामपीडाकी वरवत तुमेरे वीर्यसे ये पुत्र भये हैं १२२ अंग्र अपने वीर्यसे वालुका मित्रित कीयी इसवास्ते तीन ठीक में पालकित्य नामसे विख्यात होवेगे ४४ बेसव वेद वेदागमें पा रंगत होवे गे ऐसा शिवन कहा। ४५ उसी बग्बन बाबुका मेने अंग्रुच नमाण बाल विख्य कमीश्वर प्रकट होते भये। वाम्ते महान् होक उनोकु वाल खिल्य कहते भ टे ४६ उनोकी संख्या ८८१२८ इत्यामी हजार एकसी अद्यावास विवने करीहे ४७ स्त कहते हैं कर्म समास भये बाद ब्रह्माने पूर्ण पात्र सक्वण दक्षिणा सिह

त विष्णुकु दिया ४८ उसवरवत ब्रह्मासन अपर वेचे हुचे विष्णु कहते है हे बिाव यह वाल खिल्यों मंसे पाचसी पाच अपिनकु कृष्णा पाठित जी द्वारका है वाहा मेजीजा हा ब्रह्मवी ये समुद्भवगोमती नदी बहती है ५० जिसके दर्शन मात्रमें सर्व पापक्षय होना है और हरे जो भक्त सनकादिक उने हे लाये हैं ५० जगत के उपकाराये ब्रह्माने भेजी है अंगेर सब जीव मात्रके कर्म पादाकी नाज करने वाली है ५२ उस क्षेत्रमें अन्या स्थान देता हू मोक्षाउन के हात में हैं ५३

तन शतानिय करने हैं है वियो वियामाया देवता के जितना कवियाहें एहम्याभन पुक्त मतुष्यो हु तो पिष्णु दूस राध्यहें ५४ इसवासे हम बह्मचर्य विवासन करके आक्षापारा ओडके आपकी आहामी जाहा आप यास यमें बाहा हम ५५ गोमनी के तट क्ष्यर रहेंगे और है जनार्यन जे शह्मण राज मनियह क रके ५५ मायश्चित्त नहि करते वे नर्क गतीकु पाते हैं इसवास्ते हम अयोगि समय हैं ५७ मापासे हु स्वी न ही होने के और मनियह माद्य है पास्ते हमकु बा पक नहींने ऐसा करो ५० भीकष्ण कहते हैं है असी खरो गृहस्या ममके आधार से सब आधाम रहते हैं और सबस्यावर जगम जीयोका पादन होता है

॥ वाल स्पिल्पाऊचु ॥ ॥ भगवन् वैष्णवीमायादेश दीनादुरासदा ॥ गृहस्यात्रमयुक्तानाहुराराष्योजनादेन ॥ ५५ ॥ ब्र ह्मचूर्यणसयुक्ता आवाापादाविषानिता ॥ त्वदात्तया करिष्या म अतृषचत्ववस् ॥ ५५ ॥ स्यास्यामागोमतीनी रे अयोनि गर्भसभवा ॥ राजमतियहेर्दग्धात्राह्मणायेजनार्दन ॥ ५६ ॥ भागस्थित्तम कुर्याणामातिसत्यमधोगति ॥ एत्स्मात्कार-णादेवअजन्मानोवययत ॥ ५७ ॥ मायादु स्वान्वितादेवतबादुष्टोत्रतिमद् ॥ सन्मापावापते नेवतयाकुरुनगराते ॥ ५८ ॥ ाजी विश्वरुवान्त्र॥ ॥ जाधारेणगृहस्यस्य संर्वेतिष्ठति नात्रमा ॥ जतवोषेनजीवतिसदास्यापरजगम्। ॥ ५९ ॥ जातिस्येनसदा ञ्चन्ता मतियुद्धपुराङ्मरवा ॥वेदवास्यसमायुक्तास्वधर्मपरिपालका ॥६०॥वापानुग्रहसामर्खा परदारापराङ्मरवा ॥ लाभपावाविनिर्ह्यंकाः कालेकाले विशेषकः ॥ ६१ ॥ तीर्यसेवाकरित्यतिभग्यद्भिक्तिसञ्चताः ॥ गूमिप्यतिचमेनूनकापराधाः म मालय॥६२॥ ॥ स्तर वाच॥ ॥ ततोब्रह्माइरिम्बैवहर सर्वेदिवीकसः॥ तेषासप्रेपयामाससामि हुगालपाणिना ॥ ६५॥ स पादमारम्बतुगुग्गल्मतिवलर॥ होनच्यपालासिल्येस्तुसर्वकर्मस्यायच॥ ६५ ॥देपवाक्यातुसारणसमि हुगुलजुक्का ॥ तेचमायाचिनिर्मु-कास्तेनगुगुलिकास्वमा६९॥

५९ भितिषीका सेनत करना चेद शास्त्रका अभ्यास करना मित्र हसे पराबद्धरव रहना ६ व प अनुपह करणेफु समर्थ परस्त्री भोगसे पराबद्धरव नोअपाहासे निर्मुक्त ऐसे किलकात वे होवेगो ६९ और भगषजकिसहित नीर्य सेवा करेगे वे विचेकरक मेरेपरमधा मकु आवेगे ६२ खत कहते हैं के क्रीन्दर हो नदनतर हसा विष्णु शिष्ठनीने देवना बोकु पानाहासिषधाओर गुम्युक्त हातमे निनके ऐसे पानास्वरूप महिष्यों के पामभेजे ६३ तब देवतान आविश्वरूपेफु सक्काकि अतिवर्ष तुमने अपने कर्म सीण करने के गस्ते सथा भार ग्रुग्यसका होम करना ६४ तब वो करियोंने सोर्श सामपाय के सामने चा दुर्गसाठं सामने यत्रक मत्रसे सिमधा गुगुळ का होम करने भये ६५ वो मायासे मुक्तभये और गुगुठ का होम किया उससे गुगुठी ब्राह्मण होते भये ६६ वे गुग्गुठी ब्राह्मणों मे सामन कालमे जबपुत्र होना है उसी वलत उसकु स्नान करनायके शुभ तिथिक प्रयम श्री द्वार काधीशके चरणारिवदके पास निवेदन करते हैं ६० उसवरवत यह मत्र पटते हैं है भग उन् देव देन्यदान उमानव सब हिर नाम गृहण करने से सब पापसे मुक्त होने हैं ६० और वेद स्मृती मे आपकी ब्रह्मण्यता वर्णन किये है दस नास्ते य ह ब्राह्मण करता है कि वालक आपका है कि प्रयम करते हैं की ६९ और बाकी के जो वाल खिल्यरहें वे कहारहे सो कही प्रसाद कहते हैं मदेह राक्ष

देववाक्यान्सारेणसम् हुर्ल जुक्का ॥ तेचमाया व नेह्कास्तेनग्रमः ठकास्मृता ॥६६॥जातमाञंहत विमाःस्नापयित्वा सभेदिने॥ निवेदय तेनसरे त्रि वेकमप्दायतः॥६७॥ अयिनिवेदनमंत्रः॥सापराधा हिर्देवादैत्यदानवमान्याः॥सर्पा पविनेह्काउधृताह्रीनामत्॥६८॥ वेदस्मृतिहुराणे स्क्यतो ब्रह्मण्यतातव॥ तस्मानिवेदयति स्मत्वेवायस्ति हरे ॥६९॥ अस्पयऊ हा ॥ अन्येये वाल रिवल्याक्व देजास्तर्वे वसंस्थिताः ॥ स्वेषामसुर्के अस्थानं कथयसत्वरं ॥ अन्दाद्ववाच ॥ ॥ मदे हानामॅरेदेत्यावतितेसूर्यदात्रवः ॥ ७० ॥त्या नग्रहणार्यायप्रिंगितास्तेतप्यनाः ॥ ७१ ॥मंत्रपूर्तजल तेरेम सिपतित्वह-विद्या ॥तेनतो येनदैत्याम्य भेरमनाया ति नित्यदा ॥ ७२ ॥ मंत्रस्नानत्त स्तार्दोक्त विधिनायतः ॥ अष्टाददासहस्ता जिअषा वे गातिकशता। ७३ ॥ स्थिताजा छ गहेरम्य रेषा मो हे कसा धका । । केला मेप वितरम्येजा हुवनो नुर्ज्ञ ते ।। ७४ ॥ जहु वृक्षस्य वे श्रा तिहुँ पांसुक्ति करे स्कुता ॥ अधारिते द्वेजके षावेदवेदांगपारगा ॥७५ ॥तत् कर्रसमाप्तिंचचकारचत्राननः ॥ कर्मणा तेत तोवैद्यां दक्षिणादादि।दीरवरः॥७६॥द्दीकर्मसम्ध्यर्थश्रह्मादीन्ह्ररसत्तमान्॥ऋषीणांचैवसवैषास्नीनांच वेदीवतं ॥७७॥ ॥दीवउ वाच ॥ ॥ इ. हिमहान्- दुर्वक्र केर्तमन सिवा छिते ॥ अदेयम पेदास्या नि संदेहंमाक रेष्यथा। ७० ॥ सजी सूर्यं हे शत्र है ७० उनों के नादार्थ साठ हजार वाल खित्य सू

र्यके पास भेजे ७१ तबवे ऋषी सब मात काल सायकाल कु मनीत जनका मोसण करते भये ७२ उस जनके प्रतापर हे देखिनत्य मस्म होते है ७२ असी सब निस् मत्र सान करते हैं प्रशेक्ति वान विल्पोमेसे अवारा हजार एकसी अवावीस १८१२८ ब्राह्मण ७३ जालि बहमें रहें हे झारीले ब्राह्मण भये वाकीके मोझ साथक भये ७४ कि तनक ब्राह्मण जब्जनदीळ तट पेगये वेअधापि वेदवेदागपारंगतहें ७५ उसपी छे ब्रह्माने कर्मसमा सिक्ये ७५ तब ब्रियने सबोक्क दक्षिणा देके कहते है हे ब्रह्मा दक्छित वरदान मगो ॰ वब्ह्या कहते हैं हो तिनमेरे नीयसे यह पुत्र नुमने उसना किये हैं भीर नुमेरे मेरेमें सर्वह निह हैं यह नुमेरे पुत्र हैं ७९ यह पुत्रों के दिवाय हतो हु सान देव भीर मेरे कुदी न्यास्यान की बरवत सर्वे ह होने दें सो नुमेरे अनुपह से ने अझान ना वा करी दतनी दिलागा मेरे कुदेव ८० शिन कहते हैं है बह्या अगरा हजार एकसो अगरीस जो गठसिन्य नुमने कहे ०९ में जालियह ( झाम्योवर नगर ) मेमेरे बनन से रहे और जो दारकामें गोमनी तट के अपर रूप्या के मेचक रहते हैं ०९ ने भी क्या देवके आयित हैं एहस्यायमी बेद नेदाग पार गत होये गे ०५ सप्तर्ण शास्त्रार्थ कु नार्नेग सत्य ग्रुण विति कालिकाल आयके मास होये गा असमे

्त्रसोवायः ॥ ॥ पएतेभवतास्याममवीयन्मिहेश्वरः॥ आवयोन्सिस्देहस्तेषुत्रास्त्रिपुरातकः॥ ७९ ॥ तेषाः हिनायसर्वेषाञ्चानतस्मात्मयन्छता ॥ यथाममापिस्पदेहो व्यारम्याने आयतेयदा॥ ८० ॥ विनादायुत्ततेस्वेतवृदेवप्र सादत् ॥ एतामेदिस्णांदेहियदित्रष्टोसिहाकर ॥ ८०॥ ॥ श्रीकिव्उचन् ॥ ॥ श्रष्टादशसहस्माणिशतमेकपिताम ह ॥ अष्टाविदातिसयक्तपत्वपापीक मेवमे ॥ < ३ ॥ स्थिता नालियु हेरम्थेममवाक्यानुसारुत् ॥ हा्रकायानुस्थताये-चेगोमलाकुणासेवका ॥ ६३ ॥ आश्रिताकुणादेवस्यसवाधिप्रप्रियस्यच ॥ भविष्यतिनसदेहाः श्रीमामोद्धीकसाध का ॥ ५४॥ येगृहस्याभाविष्यतितान् ऋषुष्यपितासह ॥ तेत्रसर्वेभविष्यतिर्वदर्वदागपारगाः ॥ ५५॥ तथेब्र्चिको पेणममगाय्यान्त्रसद्यायः ॥ तष्टाचतुर्णार्वेदानाज्ञात्माणार्वेदकुत्त्म्जाः ॥ ८५ ॥ तथातत्रोपपेदाना चतुर्णोमपि प द्यजभा किकालेचसमाप्तेचसुर्पेसत्ववर्जिते ॥८७॥मयोदानत्यज्ञिष्यतिसुतिस्मृतिपराभणाः ॥ तीर्थेप्यपिचसर्वपुषिच रिष्यंतिमकितः॥८८ ॥एकमार्याभविष्यतिपरदारपराड्युरगः॥सीवनेपिचंरिष्यतियथायुद्धाय णवर्तमानां भूपालोयदिक शिन्त् ॥ ११॥ अपनी मर्पादा त्यागकरनेके नहि और भ्रति स्मृतिके मार्गमे वसर रह नेगे सक्तीर्थयाप्राकरेगे

क्षान निवास करा का प्रतिकासी करा के अपना मार्थित त्यागकर ने के नाई आर द्वात स्मृतिक मार्ग तसर रहे वर्ग सबता प्रयासिकर १६३००। वर्ष प्रतिकासी परत्नीकासीन करने के निह तरुण अवस्था में विजीसी वृद्ध होते ऐसी मार्ग से चले गेट १ और बहुधा करके एजा प्रीक वृद्ध देये गे त्यान पान निवाकरेगे आप और अनुमह देनेकु समय होते गे और धर्म मार्ग से चलने वाले गुग्जुली बाह्मणों कु जो कवी राजा न लोक १

देषात् पोडांक रिष्यं तिप्रयास्याति पर्सयं॥ पचकी राप्तमाणीन् व्यासायां है स्मून हूः॥ ९२ ॥ ज्ञातमान्ने भ्यसंप्रासाभ वेष्यं ति नसंश्यः ॥तस्याप्पया नित्रे द्रीसन्पापहराणि ॥ ९३॥शर्म भिर्दून्याद्रे जिति भि्नोहतंयतः ॥ एगेसुगंप्र तिभवेत् ह्रा रवत्यां वेदोषतः॥९४॥यदास्मिनभवतानामत हा हुल्यूंभिष्यिति॥ दुगानुसा १ण सन्दि पचाराजने द्व वाः॥९५॥ विप्रा दीनां भिष्यं तिदेवाना म एकत्र हाः॥ अस्यावाडवाँ श्र्ये व्यात रिवल्यो सर्वे कुलं॥ १६॥ भाषिष्यं ते नसंदे हे मत्त्रस द दना म यं॥ दिवादायेभ विष्य ते वेदयुक्त सम्भद्भवाः॥ ९०॥अन्यदेशे दुत्तेसर्वेतत्र यास्यं ते निणियं । त्यादार वते सम्यक्ष सिकाले पेतामह॥९८॥ अशा विंश टिए के नशादेनीव द्विजनानां ॥ निर्यस्त त्रकर्त्य संशामें ह कर्रेय । १९॥ जेनायां पण्यत्याच चतु पष्ट्याचहापरे ॥ हा त्रिंदाके वर्ग त्रा णिकलोभावीन्यसंश्र्यः ॥१००॥ एवदत्यावरान् तस्ने बह्मणेश दी दी दे रवरः॥ मेरि सा दायलंहर . कैलार पर तंगत । १००।।वाल खिल्यास्त तेसरे स्थितायत्र एताम हः ॥ पितामहस्तु तान् रष्टु इानम सान् दि जानतर् ॥१०२॥संस्कृरिये जिरामासमागृहै : से हंसँइन ॥ गृद नंच ददे ते कर एके कंच पृष्ट् पृथक् ॥ १०३॥ चला रे शलमार ऋतराचाप भेरेवन ॥ एतदः सर्वेमारव्यातं यस्य है देज त्माः॥१०४॥संगमो हिरेयाजातीगे रे हर विषाह-कः ॥ उत्पत्तिव सिल्यानां सब्पे तकना दीने ॥ १०५॥ विव पार्नी कु लेकं केलास में गये १०१ वालाखिल्य वाहा रहर्र-

भये १ बहा ज्ञानवंत है ब्राह्मणीकु देखके संस्कार करते भये १०३ और अखताहीस सम्माहक एक एक गे दान पृथक पृथक देते भरे ११०४ है ऋषी भरोजो आख्यान पूछा सी संपूण वर्णन किया १०४ भैसा गीरी हरका विवाह भया उससंगमनिभित्तसे बाल खिल्य की उसत्ति कहि यह भवण मात्र से सर्व पात कर

नावा करने वानी है १ ५ छ्या कहते हैं करीड गोदान करनेसा जी पुण्य होताहै उत्तना पुण्य शरकार्य गोमती तबके अपर खण्यसी आह्मणों के बर्गन फण्ने भी होयेगा १ ६ हे तहनी नेमामय सबीक विषष्ट्रचेसे यह ग्रुग्ती बासण सब मासायोमे अधिक होवरा १ अ उनीका पास मरे भामने गोमनी नर पे होवेगा मयदि पहा रहुगा १ ८ कविश्वग् के पान हजार वर्ष होजावेगे तब मैं बासण क्यमे यह स्थानमे रहुगा १ ४ वेग्रुग्रासी बासण हारकामे रहे चार वेदके प्रवर्तकत्रामसम्बद्धावदीवेगे स्पोर गोमता पापाके बानो जो लोक आवेगे उनोका उदार करेगे और मोमन काकने गुण्यकी बाह्यणोका मबीका स

तयाच छ्यावचन ॥ ॥भेनुनाकोटिदानेन यसुण्यत्भतेनरः ॥ दार्वतागोमनीतीरै वासस्वित्मस्पदर्वनान् ॥ १०६ ॥स् र्वतोकेपुसर्वभ्योद्यपूर्वोद्वययापियः॥श्राह्मणोपुचसर्वेपुषालसिल्याधिकेत्या॥१००॥तेपावासोभवेदत्रगो मत्याममस्त्रिधी ॥तिष्ठाम्मद्दम्तोनित्युगुल्यायादप्रेकुसे॥१००॥पचव्यसद्त्याणिक्त्रीजातेसमुद्रते॥ तटाइदिजक्त्येणस्यास्येय्यानेचतुत्री के ॥१०९॥ नेतुनयास्य ताँ वित्रास्त् नेद्वनकी ॥ सध्योपासन्द्रीहास्तेभविष्यन्तिनसद्याय ॥१००॥ लोकात् द्वारियपातिगोम तीनीरस्मूत्वन् ॥ इरिक्षणासाप्रतगुरमुकीषानामेकएपयजुर्गणात् १ ॥ शारवामाध्यदिनीचास्तिभीहरि कुलदेवता ॥ उपना मानितेषा वैसम्बिकातिस्र्व्य्या॥ ११२ ॥ आसीसुराचतत्मध्युन्छानि हादुक्षेयिहि ॥ एषाभोजनस्य पो कन्पास्यधुरुच्चु ॥ ११३ ॥स्वर्गण्यभयतिनान्यनेति विनिभ्वयः ॥गुन्युतीब्राक्ष्मणानाये चोसनिर्वणिनामग्॥११४॥ ॥ इतिब्रास्मणोसनिर्मार्तेष्ठेर गर तीब्राह्मणोत्मत्तिवर्णननामभयोदशम्मभक्षरण ॥ १५ ॥ जुर्वेद माध्यदिनी शारवा है अयगुर्ग्यत्वी ब्रीस्मणोका अव •>

कुल देवता श्री धर्फानाय है १११ इनोके अपटक सत्तारीस उसमेसे बारा अवटक नह अपेही बादी के प इपे दी कर उपाध्याय १० नारणहोरदाकीर. धगअवटक शनमें हैं उसमें बाकोर छमकारसेहैं अवटक बक्रमें व्यवहीं गीमके नाम सारोने कि उससि

८ मर १६ व्यास ४ पेप रावाकीर ३ पाट में पहिने कहे हैं बाहा देखना १९२ इनोका भोजन संबंध और विवाह संबंध १९ १ अपने गुम्पुती वर्ग में हो ताहे

१ पाढक १ सुवानभर १४ घटकाई १ होराहाकीर ५ पाढक १ सुवानभर १४ घटकाई १ होराहाकीर ५ पुगेहिन १० पढियार ५५ घेघावा २१ विडारिबाहाकीर अन्यम नहिंदे ऐसी अस्त आह्मणोदि उसिंद मयने बणन किया ११५ इति गुग्तुसी श्राह्मणी सित्त मकरणह १५ संपूर्ण भया

## अञ्नागर श्राह्मणीसनि प्रजरण १४

भव उ प्रकार के जोनागर ब्राह्मण और विनये उनीकि उसिन कहता हु उसमें यहिले उनोके जो कुल देवना हटके स्वर महादेव है उनकी उसित कहता हुं जोनक प्रस रखते हैं के सूत कहते हैं आनर्द देशके व जोनक प्रस रखते हैं के सूत कहते हैं आनर्द देशके व नमें के ईएक समयमें पार्वती के विजोग से शिव नम होयके फिरने फिरने भिक्षा के वास्तों हातमें कपाल पात्र लेके मृनी के आश्रम में आपे 3 वाहा मुनी की स्त्रिया न मिशिवका स्वरूप देखके कामातुर होयके लोक लज्जा छोड़ के शिवके पी छे फिरने लिया थ तब मुनीयोने व नम्युरुप कु देखके के पसे कहने लगे ५ जिसने मिशिवका स्वरूप देखके कामातुर होयके लोक लज्जा छोड़ के शिवके पी छे फिरने लिया थ तब मुनीयोने व नम्युरुप कु देखके के पसे कहने लगे ५ जिसने मिशिवका स्वरूप देखके कामातुर होयके लोक लज्जा छोड़ के शिवके पी छे फिरने लिया थ तब मुनीयोने व नम्युरुप कु देखके के पसे कहने लगे ५ जिसने मिशिवका स्वरूप देखके कामातुर होयके लोक लज्जा छोड़ के शिवके पी छोड़ फिरने लिया थ तब मुनीयोने व नम्युरुप कु देखके के पसे कहने लगे ५ जिसने मिशिवका स्वरूप देखके कामातुर होयके लोक लज्जा छोड़ के शिवके पी छोड़ फिरने लिया थ तब मुनीयोने व नम्युरुप कु देखके के पसे कहने लगे ५ जिसने मिशिवका स्वरूप देखके कामातुर होयके लोक लज्जा छोड़ के शिवके पी छोड़ फिरने लिया थ तब मुनीयोने व नम्युरुप कु देखके के पसे कहने लगे ५ जिसने मिशिवका स्वरूप देखके के पसे कहने लगे भी स्वरूप के स्वरू

अय नागर ब्राह्मणानाम् सित्तं सारमाह ॥ ॥स्कादेनागर रवंडे ॥ ऋष्यऊ ॥ ॥रहस्यं पूज्यते ठिगं कस्मादेन सहामुने ॥ । विशेषात्मप रत्यज्य शेषांगानिस राष्ट्र रे:॥१ ॥ सूत्र वा० ॥ ॥ आनत् वष्यं चा स्तिवनं मुने नजना यय ॥ कदा चित्तं मयेतत्र सप्ता- सित्र हरातक ॥२ ॥ सती वियोगसम्त्रांतो स्म्मणण इतस्ततः ॥ नमः कपाठ मादाय प्री सार्थपवि चेशसः ॥३ ॥अष्ट तद्वपमान् लं क्यतापस्य कामम् हिता ॥ शिवेनसह मागे वेषक्र मुक्त कर्ते किका ॥४ ॥ अष्य ते मुने र स्वातंत्र वियोगस्य पानह व कर स्त्रीणांप च क पारुणेसणा. ॥ ५ ॥ यसमा त्रू र कृतं कर्म तस्मा द्विगं पति ह ॥ एतिस्मानं तरे भूमी ि ठिगं तस्य पपान ह ॥ स्वा ॥ सिताय धरणी पृष्ठं पानालं प्रविचेशह ॥ अष्य हे गस्य पानेन सुत्राता च हवे भवन् ॥७ ॥ इंद्रादे ये भयत्र स्ता इ ह्माण- शर्णयुः ॥ त्रह्मात द्वनं मुन्ताग्ताचानर्तदेश है ॥ ८ ॥ देवे सहस्त तं चक्रे भवस्य परमात्मनः ॥ संधार य द्वनि स्व य च द्वतं र त्र ॥ १ ॥ ने चेज्जगत्र यदेवनू नं ना शम्य ति ॥ ॥ शिवं च च ॥ ॥ अद्य प्रमृति मेठिगं यदिवे च दिजा त य ॥ १॥ १॥ १॥ ।

हमेरी स्वियोकिश्वरताकियी उसका छिंगपान हो - ऐसा शापदेने शिवका छिगपतन भया ५ सी पृथीकु भेदं पाताल मे यवेश कि या शिवका छिगपात होनेसे अनेक उतात हीने छगे- ७ उससे इद्रादिकदेवता भया भीत हो यक ब्रह्माई शरण गये ब्रह्माने कारण जान के वी आनर्न देशमें आयके इद्रादिक सहवर्तमान शिवकी खिन करके कह्याकि है शिव छिगकु छन धारण करों ९ नहीं तो तीन ओक नाश पावेगा शिव कहने हैं हे ब्रह्मन् आजसे सबदेव अंग्झा ह्मण मेरे किंग कि मी १ द्ना करेगे तो किंगभारण फरताहु बन्मा कहते हैं है शिव पहिने मणपूजा करताहु किर रवश्राह्मण प्रमाकरेगे उसमें प्यावदीका तहें परत कहके ११ देवतापीकु साथ छे के पातालमें आपके भन्तीसे दिगकी द्मा किया १ फिर बह्मने के शिवके किंगसारी ग्या दूस गरिय पातालमें स्थापना किया और क्या कि १६ मधने आज हाटक कहते करणिया जिंग बनायके स्थापन किया है वासी जगतमेपातालमें हाटके वर नाम से विस्थान हो १४ इन की पूजा करने से भर्म अथ काम मोस वह बारो पुरुषार्थ मास हो वेगे ऐसा कहके देव सहदत्तमान ब्रह्मा स्वर्गने नमे १५ शिवने चानाल में अवेश किया हुया जो स्थल

वुजियवित्यतेनतिद्वधारयाम्यइ॥ ब्रह्माउगन् ॥ ॥ अ इमादीयुज्यामिकि वृनर्देवधासणा ॥११॥ ततः प्रविद्यपाताल देवे सार्देपितामइ॥ स्वयमेनाकरोस्जातस्यिलगस्यभितत ॥१२॥ तनाइाटकमावायतदाकारतदात्मक ॥ कताकिगस्यत अस्यापयित्नामवीद्व ॥१३॥ मयात्यचाविद्विगद्दाटकेनिर्मित ॥ स्यातिपास्यिनसर्वप्रपाताले हान् के स्वरः॥१४॥ अस्य पूजनयोगेनचतुर्वगिकल भयेत् ॥ इतुक्तासचतुर्वक सहदेपित्यविष्टप ॥ १५॥ जगामसोपि केलास लिगधृत्वामक्षेत्र्यः ॥ तिस्मिलुत्याटितेलिगेविनिक्कातरसातलात् ॥ १५॥ प्रविभज्ञान्दवीनोयसर्वपापहरच्या ॥ यत्रवेस्नानमान्नेणहाटके स्वरद्वीना त् ॥१०॥ चाडालत्वादिनिर्मुक्त स्विद्वाकुर्नृपसन्तम ॥ सञ्चरीरोदिनपात्रियमानिष्यलेनचे ॥ १८॥ अस्वेस्नानपोगेनहाटके स्वरपूजनात् ॥ तत्साज्ञाविद्वयातिमहापातिकने। पिये ॥ १९॥ तत्त्वद्वामहष्यास्यर्वस्वर्यामपूरित ॥ तस्तेत्र प्रजया मास पासुपिर्देवराट्तदा ॥ २०॥ एवनादामनुपाते तस्मिन्तीयस्यलेचये॥ जात्तेनीयमार्गणनागापातिघरातला ॥ १०॥ तत्तोना गविलस्यातसर्वस्मिन्त्वस्थातले ॥ यदद्वीवृत्रमाहत्यास्यस्यत्वाम् १२०॥ व्यवस्थातस्य विभाव के भारणकरके केनास

जगर गये गो दिशा निकालते विनेसे नरुकी भाग निकली सो पृथ्यी कपर भाई लो परम पविमा जान्हवी गया जर भया जिसमें स्नान करनेसा भीर हाटके म्बर के दर्शन करने से १० विश्कृ एजा बाडार तसे मुक्त होयके विन्यामित्रके मणे बर से देह महित स्वर्गी गया १० यो नीयी मे स्नान करनेस और हाटके म्बरके दर्शन से पहापानकी होने तथापि स्वर्ग माने रहे साध्याम्बर्ग देखा और स्वर्ग साग प्रगयानक यो तीयी से तकु इक्रने सुविकासे भरविया १० ऐसा यो तीर्य बाग पाया और मुविकासे जगाएकी होगई बाहा नागोने एक विस्ता सो स्वर्ग साग पानाक में से भूमि क्वर स्वान को दिनसे स्थानका नागविक नाम वि रव्यात भया जब इंट्रन ब्राम्फर इं मागब्रह्म इत्या हुई २२ उसकी शुद्धी के गर्स गोह नाग विलक्षे रम्नेसे पाताल में नायके गेगामे स्नान करके २३ हाटके न्यर की प्रना करने ही ब्रह्महत्या दोप से कह हो गया तब ओह आर्थ्य देखके इंट्रने मनमें विन्तार किया कि जैसा बड़े दोपसे तन्काल में नुद्ध हो गया चे से अनेक की क उस रस्तेम जायक कहद हो गेगे बास्ते यह रस्ता बद करना ऐसा विचार कर्ज हिमालय पर्वत अपर जायके २४ उसका सुत्र रक्त गृंग पर्वत या उसके जायक में वी बिलके अपर स्थापन करदिया उससे बोह रस्ता बंद हुवा २५ पी छे बोह पर्वत के अपर अनेक महिर और नीर्य भये २६ और कपियो के आयम भये एक-

जगामसत्वरं तत्र यत्र नगि विलं किल ॥ नतः प्रचित्रपाताल गगानीयप रिष्ठुतः ॥ २६ ॥ प्रजना द्वाट छे अस्य निर्मे छतं गतः सन् गणात् ॥ द्वाहारोध चमत्कारं शको गत्वा हिमालय ॥ २६ ॥ तत्व वंरक्त शृंगारक समानीय त्यान्वितः ॥ ति इतेस्थापया मास् तेनाग् मयमभू किल ॥ २५ ॥ रक्त शृंगे पित्रस्य च्याप्यनागि विलंतदा ॥ तस्य परिसह रव्या नितीर्थी न्यापतना निच ॥ २६ ॥ संजाता निह नो चसंजातात्र्यत्या या या या प्रमा किलं निस्ति हिस्मृतः ॥ २० ॥ हरणी शापयोगेन कुष्या धि समा छुतः ॥ विलं विलंग वा पो प्रमानं करिया तिस्य हित्य हिस्मे पतः ॥ चेत्र हे निर्मे हित्य तिनसंश्रयः ॥ ३० ॥ ततः समन सिध्याता कुष्य पि परिस्य ॥ स्मानं चक्रे ययान्यायं यद्या पर्या हतः ॥ ३० ॥ ततः छुष्य निस्ति हित्या छे सम् प्रभः ॥ निक तः सिले लिलंग स्ता चितः ॥ ३२ ॥ ततः प्रणम्यता न् रेपान् यास्यमे त्रुराच्हा ॥ प्रसादेन हेद्या छं स्को हं बाह्मण समाः ॥ ३३ ॥ ति व ह देशका राजा चमकार नाम करके था३७ उसकु हरिणी के शापसे कुष्योगपैदा नया उसकु -

द्र करने व वस्ते अने क तीर्थ फिरा परह कुष्ट नहीं गया र इतने में रक्त शुंग पर्वत के ऊपर आया वाहां एक ब्राह्मण के मुख्य अवण किया कि २८ चेत्र सुद्ध चित्रा नहां ते दिन निराहार हो यके यह हाट के अर्थ नजी क जो शंरव तीर्थ है उसमें तो कोई स्नान करे तो बोह सर्व रोग से मुक्त होय के बडा ने जस्वी होवेगा र इस में संशय नहीं है ३० ऐसा अरियों का वचन सन्ते चमत्कार राजाने अपना रूप रोने के वास्ते अद्धासे शरव तीर्थ में रनान किया १३० तब कुष्ट रोगसे मुक्त होय के वारा सूर्य सरीर्यी का निरा की शर्म वो राना बड़े हर्षसे वे तोर्थ मेरी बहार निकल के ३० सब ब्राह्मणों कु नमस्कार कर के कहने लगा है ब्राह्मण हो त्मेरी ह्या से मंच्रों गरीं हुक्त हुवा ३३

बास्ते यह गाय देश दाति घोटे धनजो कुछ मेरे पास है सो सब भाष भइण करे ६४ तब बाह्यण कहने लगे है सना इम बान मस्य धर्मी है परि मह करनका नहीं है इमकु राज्य देमन प्रया करनेका है। बास्ते धुमजाप धर्मसे अपना गाज्य पासन करो ६६ तब राजा बहाण्यास हो यक अपने परकु गया। राज्य करने लगा ६० भीर गाज्य नमें विचार करने नगा कि यह बाह्यणाका उपकार कैसा होनेगा। जिनोने मेरा नवीन देह दिवाई ६४ जो सुनि बेस सब अपनी तपः बान्तिसे भाकाश मार्गसे नित्य तार्थ सेनोमे जान है। यह एक या दो गानी रह के सुन्। स्थपन घरकु थाने हैं। पर्तु मेरे में बान मनियह नहि करने ६ ऐसा विचार करने करने एक समय मे पुकार क्षेत्र

एतम्बर्गन्यवर्गन्य स्थयादित यापर॥याकिनिद्धियतेमस्यत् भुण्यत्वदिजीत्तमाः ॥२४॥ समीवानुस्तार्यामतदामीचुर्दिजीत्तमाः ॥ ॥ मास्यणाऊन्यु ॥ ॥निष्परियष्टधर्माणोबानमन्यावयदिजा ॥२५॥स्य प्रसारुका किन्नो राज्येन्त्रिभवेनच् ॥ तस्माः-न्तगन्करानेद्रस्वभमेणप्रपाल्य ॥ ३६॥ ततः सभूपविद्रयान्त्रगामस्वगृहपृति॥ नकारपूर्ववद्राज्यनितवानोदिवानिशि ॥ ३७॥ क्यतेपादिनेद्राणामुपकारोमविष्यति॥मदीर्येभेमयेदन्तगात्रमेतस्यनर्नव॥३८॥तपिसर्वेमुनिश्रेष्मरवे वरत्ससमन्विताः॥त प अन्तयासदायानिन्तुनान्त्रिष्युभक्तितः ॥ १९ ॥अपित्यारजनीतश्रहिरात्रवापुन्युहान् ॥ समागन्छ निनेमन्तानदानप्रगृणित्य ॥ ४०॥ कुवाचिद्यनेसर्वेकार्तिक्यापुष्करत्र्ये ॥ गतायिनि व्ययक्तवापच्यावस्थितिविति ॥ ४९ ॥ तस्माहिन् स्ववारेस्तु रिस्तित्व्य स्वराकितः ॥ एवतेसमयकत्वाग्नायावद्विजीत्तमाः ॥ ४२ ॥ ताबज्ञपनिनाज्ञातन्किनेशनिश्वति ॥ तेपामेध्येसुनीक्राणादिस मृतिमहात्मन्। ॥ ४३ ॥ द्मयतीतिविख्याताराजपत्नीसुत्राोभना ॥ तेत्मुवाचरहस्येचवजल्व-वारुहासिनी ॥ ४४ ॥ हाटकेचर जे-सेत्रेममादेशोधुनाभुन ॥तत्रतिष्ठतिमा पल्पोम्नीना भाँ वितात्मना ॥ ४५॥ भूप एगनिविन्ना णि तासायक्रमथेक्रया ॥ नता सापनयोस्माकंप्रकुंचनिमतिमद्गा ॥४६॥ में पाच दिन क्रवा रहेना रेमा निम्पय फरके यो मली पुष्कर जीकु गर्मे ४१ मधिका रक्षण स्त्रियो क्रु सुप

तकरके गये ४१ यह शाव गता चमन्करने सुनीकि रक्त इस पर्वनके उसर बोहोनेर सामीनं से कोइ भी नहीं है ४६ तब इसपती राणीकु कहने समार है ज्यी ४४ सु हा दक बोम में आबाहा नमन्दी बाह्य की स्त्री एक उनके अपन उनके भी दक्त कर कर के स्तर अपन के स्तर अपन के स्तर अपन कर कर के स्तर अपन के स्तर कर कर के स्तर कर के स्तर कर कर के स्तर कर के स्तर कर के स्तर कर कर के स्तर के स्तर कर के स्तर के स्तर कर के स्तर के स्तर के स्तर कर के स्तर कर के स्तर कर के स्तर के स्तर के स्तर के स्तर कर के स्तर कर के स्तर के स्त

इस्यार्स न्यियाक प्रस्तालकारकि प्रीति नादा गहिति है करछे कोड् वी रहे से स्थियो के लोभायमान करके तुम बस्तालकार देवी वोई उपकार होनेगा। तप राणी ने नयान्तु कहक नाना प्रकारके प्रसालकार लेके बड़ी हर्ष युक्त होयके क्षेत्रमें आई तब अरिपणिनयोंने वी बस्तालकार से शोभायमान राजपनी कु वेरवर्क मनमें कहने लिया कि धन्य है यह राजस्त्रीकु ५० तब दमयती राणी सबोकु नमस्कार करके कहने लगी कि है नायस स्त्रियहों मेरा जितना यह अलकार समृह है ५० सो यह प्रयोग प्रकार कर के प्रसालकार कर के लिये है वास्त्री तुमेरी जैसी इच्छा होवे वेसा प्रहण करने ५२ ऐसा बचन सनते सब यान प्रयोगित एकादशीका उपोपण करके स्नानक रके विष्णाके प्रीत्ययदान कर ने कि लिये है वास्त्री तुमेरी जैसी इच्छा होवे वेसा प्रहण करने ५२ ऐसा बचन सनते सब यान प्रयोग प्रसालकार करने कर के लिये है वास्त्री तुमेरी जैसी इच्छा होवे वेसा प्रहण करने ५२ ऐसा बचन सनते सब

कथं चिविषक्त त्रोण्ं न्त्रीभ्यमाना प्रभू रेशः ॥ स्त्रीणां भूषणजा चिंतासूदाचेवा धिका भवेत् ॥ ४७,॥ एपएवभदेनेषा सुप्कार-स्यसभवः ॥सातयंतिप्रतिज्ञाय विचित्राभरणा निच ॥ ४० ॥ यहिताहर्षसंदुक्तातनस्त्रस्त्र्यमाययी ॥ अयंतास्तासमालोकय-दिव्यभूपणभूषितां॥ ४९ ॥दमयतीं समा धिस्या श्वि नं चिंतांप्रचिक्रिं॥ धुर्न्येचं भूपते भीय थेव भूपणभूषिता॥ ५०॥ दमयते न मञ्जेता सर्वाः विधिवविव ॥ द्मयंद्वाच ॥ ॥ ममायंभूपणस्तोमउ दिञ्यगरुं उध्वनं ॥ ५० ॥ क त्मेते च दनेस्नात्वासरु पी-व्य देनंहरे ॥ तस्माद्वणहेत् तापस्योगयाद्त्ता नेवांच्छया ॥ ५२ ॥ तदासर्वाच्यताप्रस्योभूषणार्थसम् तस्का, ॥ सस्यद्धी गरहस्ता-न्भूषणो नस्वयं हिजा ॥ ५३ ॥ एवंसापंच देवसंनिट मेवददातिच ॥ पचरात्रमतिकाते तृप्तास्ता स्ता पस प्रया ॥ ५४ ॥ नौसाम ध्येचनस्त्रसूपणानिनज्यहः॥५५॥ ॥चतस्यस्तापस्यऊः ॥ ॥न्।स्माकं भूपरे कार्यभू पेनाबालकेर्यं॥५६॥तस्माः ब्रच्छ नेजहंभें अ र्टिभ्य संपूर्व यतां ॥ एवसंवृदती सावीतयासाई ह्जोन्तमाः ॥ ५७ ॥ चलारः पत्तयः प्रामा एके कस्याः प्रथक पृ थक ॥ सुनः रोफो थ शास्त्रीयोदी दोदात् श्राहरीक . ॥ ५८ ॥ वियन्सारिक चत्वारः प्राप्यस्वाश्रममायहः ॥ शेषाः सर्देगिति भंबांपा 

नारलेनेके वास्ते वडे उद्युक्त होयको एक कहती है इस अलकार कु मय ले हुंगी दूसरी कहती है मैय ले बुंगी ऐसी ईपी करते करते व्यतं कार लिये ५५३ ऐसा पाच दिन तक राणी दान देने लगे वो अल कारसें तापस स्त्रिया तमभईया ५४ उस मेर चार स्त्रियोने अलकार मले के कहने लगी या कि है राणी हमलु इस अलकार से क्या जरूरी हैं-हैम बालक नसी भूषित है ५६ वास्ते तुम श्रपने घरकु जाव जो लंभी हो है उनो कु देव ऐसी भोन्वार स्त्रियां गणी से बात कर रही है ५७ इतने मे उनो के पतिचारो श्राह्मण शुन बोफ- याचेष हिंद शतयह १ आहता मार्ग में अपने आदम में आपी वाकी के अवसर भरी आफावामार्ग धलके पृथ्वी क्रवर नकने तमे १९ अपवी नार बाह्यण अपने भाष म में आपके स्थियांकू प्रन्त्वने हैं कि मने नापमी न्यियोंकु पत्यालकार देके बमेरे आवाम कु दू वर्षिया ६ तब अनकी स्थिया कबनी है नमत्कार राजाकि वर्षा है इसने बन्धालकार मनाकु विये हैं ६९ वमरे वी परम वेने कु बामी हनी परमु बमवे निषेध किया ६ व्यत कबने हैं ऐसा स्थियोक्शवनन सुनते नारी बाह्यण काण यवान बीयके गणीकु बाज देन हैं ६५ वे दमयनि इस वीवानेर बाह्यण पुष्कर सेवसे कानि कि पीर्णिमाक स्नान वासी आकाब वर्णसे गये वायु वेगसे ६४ उस

केनेयपाप्मनास्माकमात्रमोयविडवित ॥मदत्वातापसीनात्रभूषणान्यवराणित्र ॥६०॥॥ पत्यकतु ॥॥त्म त्कारस्यभूपस्यतेषा भाय व्यवस्थिता॥अनयासमदत्तानिसविस्तिभूपणानित्र ॥६०॥ अस्माकमिषसमातायत्रेषनृप वस्मा। ॥ अनयासमदत्तानिसविस्तिभूपणानित्र ॥६०॥ अस्माकमिषसमातायत्रेषनृप वस्मा। ॥ तासात इत्तरमुत्वातनस्ते कापमार्चिता॥ कृत्यनृपत्रभीयीतत्त्व्यापमुद्वर्गु ॥६३॥॥ वतारोत्राह्मणाकतु ॥॥ दिसस्तिवयपापेरमानार्थपुष्करे । ता ॥ कार्तिस्यान्योममार्गणमनोमास्तरहस्ता ॥६५॥ वत्यारस्तरमेशासायेषावारे मतियह् ॥नस्तरत्तस्यभूपस्यकु भायोन्या कथ्वन॥६५॥ त्ययाविडिशियस्मादाभमोयतपस्तिना॥वित्राह्मपृत्रिभेषास्तरस्माद्रयतुकुत्तिना॥६६॥ अयसा तत्स्वणावेविह्मात्वापम्पत्र ॥ तत यपरिवारोस्यात्तत्व रवनसमाकृत्व ॥६७॥ राजेसकच्यामास्तरमयत्यात्रमुद्व ॥अवस्यात्त्रस्याविद्वात्त्रप्रविद्वात्त्रप्रविद्वात्तिम् ॥अवस्याविद्वात्त्रप्रविद्वात्तिम् विद्वात्तिम् विद्वातिम् विद्वात्तिम् विद्वात्तिम् विद्वात्तिम् विद्वात्तिम् विद्वातिम् विद्वात्तिम् विद्वातिम् व

गमार्गम कृतिनेत्रमणय गमानं वर्णयोक नदरवके न्यीके गोकके निये ७१ शिलाके पास जायके अनेक तरहसे विद्याप करने लगा पीछे वो शिला रूपी स्थिक निय जान नार्ग नरक अलागक महीर बनाया ७२ और कपूर वरास केसर चदन अगरू पूप ने वेच वस्त्र आदि पदार्थी में वो शिलारूपी है तथापि नित्य उसकु मिले ऐसा वंदीवस्त कर विवा ७३ फिर किक निन गये याद राजा उदास होने अपने सैवक नकु साथ लेके घरकु आया ७४ पीछे औह अडसट ब्राह्मण पुष्कर जी से पांच रस्ते से हाटक होन्र में आये शिहीन यिक है जिसे अपने सुर्व के उपर रज बोहोत उदी है ७५ और घरमें आयर्क देखते है तो सान्त्रिया विव्य वस्त्राल कार धारण करके रवित है उनोकु

ग्वाशितासमी देन विललापाति वित्रधा॥ तन कत्वालयं तस्यात्समे तात्हुमने हरं॥ ७२॥ कर्षरागरु धूपा है दिन्न कुंकुम चंद ने ॥ योजयामासंतांभायांशिलाह्र प्राप्तितां॥ ७३॥ ततः व्रत्या हेषुगते खुन्पति यो। ॥ स्वरहपति स्वाति १ वार् समन्वत ॥ ७४॥ पद्मामे वसमायाताञ्ज हेष हे हेजीन्तमा ॥ परेश्व ता कशांगात्र्यधू लिधूस रेताननाः॥ ७५॥ यावस्वरयं तिहाराम्या दिव्याभरणाभूपिताः॥ तत्रश्व विस्मया विद्यापमञ्जुस्ते हर्ताः॥ ७६॥ के मेद् के मेदंपापा विरुद्धं विहतं वपुः॥ कथपान्ना निवर्त्वाणिभूपणा नेवराणिच्य॥ ७०॥ त्त्रमस्म इते के द्रः खेजातीनान्यथाभव न्॥ अयातः सर्व वृत्तांत म् न्स्तापसयो पत्त ॥ ७०॥ तच्छुत्वाम् नयः लुद्धं ज्ञात्वाराजम निर्दं॥ तत्र भू पत्यराष्ट्रस्यना शा क्षेत्रगृहुक्तं ॥ ७९॥ अ नेनपाप्तास्याककु भूषेन विना शिता ॥ रवेग नेलीभिवित्वाहु पत्न्य स्माद्य विभूषणी ॥ ००॥ एवत् मुन्यीयावत् शापतस्य महीपत्॥ परच्छ तित्तास्तावद्वनुभीय स्वान्विता ॥ ०१॥ नदेयं भूपते स्तर्य शाप ब्राह्मणसत्तमाः॥ अस्मदी यवचस्ता वत्र्य तव्यम पश केते ॥ ०२॥

देरवते आद्यर्घ करके ह्यातुर हुवे हें ओंर पूछने लगे ७६ अहो-के पापिणी स्त्रियद्यो यह क्या किया वारीरके अपर बस्त्रालकार काहासे मास भये ७७ निश्चय करके तुमने कुछ पापिकया है उसके लिये आकावा गती हमें गंभ्रण हुई तब वो स्त्रियोने हत्तात कह्या ७८ सो सुनते राज मतिग्रह बडा निद्य जानके राजाका और राज्यका नावा करनेके वास्ते ऋषि ओने हातमे जल लिया ७९ औण कहने हें यह पापी गजाने हमरी स्त्रियों कु लोभित करके आकावा गमन नावा किया ८० ऐसे वे ऋषिजव तग राजाकु वााप देते हैं उतने में उनकी स्त्रिया को गायमान हैं यके कहने लगी ८१ हो बाह्मण हो तुमने राजाकु वााप नहिंदेना बांका छोड़ के पहिले हमेरा बचन स्कृतो ८२ इम सब राजस्तीसै शीभायमान हुई या दिष्य बन्यालकार मदाकरके विषेहें ८३ तुमरे घरमे रहके वरिव्रतासे कभी भीमनुष्य देवका सुरव भुक्त मानजिह किया और देह रुपितभया ८४ वास्ते राजाके पाससे सभी और इक्ति पदार्थ ने के किर देखा पुत्र पीभाविक का स्वरूप के होताके ८५ और ना कर्य विश्व प्रमेश करने के तो इमसब अपना भाण त्याग करेगे८ ५ तुमस्तीवध पायसे नकने अवोगे ऐसास्तियोका वचन स्वनते ८ ० वो बाप देने के पास्ते जो बातमे नस्तिया धामी भूमि अपर आत दिया नव वो जस्मे दाय हुई अस्वरताकु मासभई सो स्वयापी देख पड़नी है किर सब बाह्मण कांप छो उके यह पा

वयुस्पनिरेद्रस्यभार्षयासमलकताः ॥ सूर्वरचेर्भ्यणेर्वियो अखाद्यतेन्चेतसा॥ ५३ ॥ वयुद्रिद्वोपेण सदासुप्मन रहेस्थिता ॥ कृषितान वसमाससुरवमत्पेससुद्भव ॥ ८४ ॥ सूपालात् स्मिमादापयति चैवा मिवा छित् ॥ तनौसीरिव्य चवीसध्यपुन्योत्रसस्त्र्व ॥८५ ॥ नकरिष्ययने द्वाक्यमेतवस्मेत्वीरित ॥ सर्वा माणुपरित्यागकरिष्यामीनसंवाय ॥ ८६॥ यूयुरुत्रीवधपार्यनेन्त्रक् वैग्मिष्यय॥ एवतेप्रुन्य श्रुत्वातासायाक्यानितानिवै॥८७॥ भूप्रुष्टे तत्यञ्चस्तायज्ञाः-पार्थपत्करेर्भृत्।।ततस्तन्तोष् निर्दर्भस्तिद्वभागः कितस्तदा ॥ ५८ ॥ ऊत्तरत्व मतुप्रासोत्प्रपापि दिजसत्तमा ॥ ततस्ते-श्राह्मणा सर्विगतकोपाद्धुमीति॥८१॥यशकर्मकगार्वस्थेपुमपीश्रससुद्वेषे ॥एतस्मिन्नतरेराजाकत्वाद्याति हिन न्मना ॥ ९० ॥ तत्रागत्याद्वेजानुसर्वानुसाधागप्रणना महः ॥ सुप्मवीयप्रसादेनुसमामजन्मन' फुलः ॥ ९१ ॥ मधारीग्वि नारोनतस्मा द्भुतकरोमिकिं।। ो अञ्चषित्राह्मणाऊच् ।। ।। भार्यपातवरा नेद्रवयसर्वत्रघासिन ।। १२ ॥नीताकताः र्थनावलारत्नानिविविधानिच ॥१३ ॥अ वश्ययदिते मँद्धाविधाते दानसभवा ॥ सेनेवापिमहापुण्ये कलादेहि पुरोत्तम म ६६ ॥

ग एक स्थासम करनेकी इच्छा करने लगे इतने में चमत्कार राजाने स्त्रना कि शक्ताणोने की भारताग कियाहि इ तब वाहा आपके सब ब्रान्सणोकु नमस्कार करके कहने लगा कि भाज जन्मका कल मास भया ९१ वास्ते क्या आवाहि सी कही तब अवसद ब्रा स्था कहते हैं है राजा तेश स्त्रीके लिये इस सब यहांके रहने बाले भय ९२ और रलाल कार बन्द्रादिक देके लतार्थ किये र वास्ते आगे दान करने कि तेश भद्म बोरोती इस सीनमें एक नगर पनाय के दे ९४ जिसमें हम करवसे निवास करेगे राजा चमत्कारने वो बचन करके उत्तम एक नगरबनाया १५ जिसकी लंबान और चौडान को सभरकी है चारो तरफ से कोट वधाहें वाहेर से पानिकी खदक है अदरतीन रस्ते और चार रस्ते एखीटे होत होटे ऐसे त्रिकचत्वर है १६ उसमें अडसट घरवनाये उसमें कवर्ण रत्न वस्त्र रवान पान पदार्थ भरक ध्वज तोरणादिक से बो भायमान करके ग्रहस्थ कुठीन श्री त्रीय जिते दिय बाह्मणों कु श्रद्धारे बास्त्र विधी से राजाने चमत्कार पुरका दान दिया ९१ पीछे ग जा बाख तीर्थ के ऊपर बैठके अपने पुत्र पीनों कु बुठाय के बचन कहने लगा १०० कि यह चमत्कार पुर मयने त्राह्मणों कु दान दिया है वास्ते मेरे बचन से इनका तुमने

आयामव्यासत्रश्रीवको वामात्रं सहत्तम् ॥ त्रिकचतरसंद् क्तप्रासादप रेरवान्वितं ॥ ९६ ॥ कत्य देताततस्तत्रअष्ठष छिग्हा णिच ॥ स्वर्णमणिमुक्ता देपदार्थरे परेर पे ॥ ९७ ॥ पूर्त्यत्वा तृपश्रेष्ठः ध्वजत रणमि उत्। शास्त्रणे पयो क्रिकीने भ्योगहरूरे भ्यो दिशेषतः॥ ९८ ॥ औं श्रेयेभ्यश्चदांते भूय सहअद्धालमान्वितः ॥ शास्त्रो लेनप्रकारेणपददे नगरश्चम ॥ ९९ ॥ वास्वतीर्थे स्थि-तीराजासमाह्यततः स्नान् ॥ पुत्रान्पीत्रास्त्या भृत्यान् याक्यमे तदुवाच् ह ॥ १००॥ एतत्र्रम्या कत्वा ब्राह्मणे भ्यो निवे देत॥ भविमीमवाष्येनरक्षणीयंप्रयत्नते ॥१०१ ॥यः युनेद्वेपसङ्क स्ताप्यनयिष्यति ॥ वराच्छेदसमासाद्यग्मिष्यतियमा-लयं॥१०२॥ एवंसभूप ते सर्वोस्ताइतकातप सास्छितः॥ गतपंचरातेवष्ट्र शहरुवाच्त ॥१०३॥ अचलोहभ विष्या मि-स्थानेतवमहामृते।। अचलेश्वरदृत्येदेनामन् रन्यातीजगत्रये। १४॥ एवसभगवास्तत्रस्पदैवव्यव्स्थितः॥ अचलेश्वरह्रपेण-चमत्कारहरांतिके ॥१०५ ॥तत्रकृष्णचत् देवया चैत्रमारं सदीव है ॥चमत्कार पुरस्येवय क्रयं द्वपद हीणा ॥१०६ ॥ जा तिस्मरत्यमामीतिसर्वपापिवर्जित ॥॥ अर्पयऊद्धः ॥ ॥ चमत्कारपुरेत्यनि ऋतात्वत्तीमहामते॥ १०७ ॥ तत्से अस्य प्रमाणयत्तदस्माकप्रकीत्तिय ॥ या नितत्रचएण्या नितीयाँ न्यायतना निर्च ॥ १०८॥ रक्षण करना १ और जो कर्या ब्राह्मणीकु सताप देवेगा

उसकावज्ञा छोद ही वेगा और यमलोक में जावेगा २ ऐसा कहके राजा नप करने कु वेगा उसक पान सो वरस जव हुने नव शिव प्रमन्त होय के कहने है ३ हे गजा यह हीरी तपश्चमीकि जग्गों में अचलेश्वर नामसे मय स्थिति करनाहु ऐसा कहके याहा रहे थयो चमन्कार पुरके पासहि है ५ चेत्र रूपा चनुर्देशों के दिन वो पुरिक जो कोई प्रदक्षि-णाकरेगा वो सर्व पापसे मुक्त होयके भूत भाषीजनाका ज्ञान होवेगा ६ शीनक प्रमकरते ही है मुनि वो सेज का गमाणा और वाहा जो जो तीर्थ देवालयहां वे वो कहा १० ८ त्र सून करत है। है कर्पात्यर हो हो सेन्का पाप कीमका प्रमाण है सेन के पूर्व मेगपाशीर्प है पश्चिम में हरिपद दक्षिणोत्तरम गोकणम्बर भोर दाहकेम्बर नो प बिने दिराजते हैं १९ जो होना अगतमे बड़ा प्रिप्त राजा-वमस्कारने वान दिपा १९ उसदिनस वमत्कारपुर उसका नाम पड़ा जिस दस्त गणान व्यवनि दमपनी स्वीका स्वरण करता गणा और पुरका दान हिया १० नवसब भन्प स्विमा गजाकु सनीय करने के वासी परस्पर कहने सगीया कि १९ के स्विमा को जिस बयन अपने पनीसे प्र दि विवाद विकास सम्बर्भ साथे भारे में कार भक्त और कार्य समासीक दमय वीका पुत्रन कर गड़ समें सदेह नहि ही और विवाद का वसने नो कन्या पहिले

॥॥ सृतउग्न्य। ॥पचक्रीवाप्रमाणनक्षेष्ठप्रह्मण सत्तमा ॥प्राच्यातस्याग्यावीपिपियमेनहरे पद ॥१०० ॥ वृक्षिणोत्त रयाञ्चवणोकणंत्र्वरस्तित ॥वाटकेत्र्वरस्तृतुपू मासी हिनोत्तमा ॥११० ॥तस्त्रेवप्रयितलोकेर्न्वपातकनावान ॥यव प्रशृतिपिष्योद्तृतेनम्हासना॥११९ ॥चमकारेणतस्यानमान्नारमातिततोगत ॥ यदारातापुरवृत्तभापितित्यतासदा॥ ११२॥ अथता मोनुरन्योन्यतापस्यस्त्रसुरास्त्रित ॥तस्यभूषस्यसतोषजनयस्योद्द्रितोत्त्तमा ॥११३ ॥य्वास्माक्ष्यहेवृद्धि कदाचितसभिष्याते ॥ तद्यत्रव्यप्यापद्यस्य प्रयुत्त ॥११४ ॥ करिष्यामोनसवे हो सर्वल्पेश्चसवेदा ॥ एना दृष्टाकृमा रीपावेदीमध्येगमिष्य ती॥११५ ॥ साम्भिष्यत्यसदे हान् पत्यु प्राणसमासदा ॥ तस्मात्मविप्यत्नेनकन्यायक्त्रअस्ति ॥॥११६ ॥११५ ॥वस्मयतीप्रदृष्ट्यापूजनीपाविशेषत ॥ ॥स्त्रवाच ॥ ॥ एवतभपुरे ते न मूसुजास्तमहात्मना ॥११० ॥ अश्व स्वर्त्यान्य स्वर्त्वान्य ॥११८ ॥ गतानिन स्वर्वस्य स्तानिप्ति द्वानिच ॥ चतुःपिवस्यतात्र पुरेवोष्टिजन्मना ॥११९ ॥ ॥स्ययङ्ग ॥ ॥कदिक्नागमयतेषायेनतेषिगताविभो ॥ परिसङ्यित्वास्यान्यस्य स्त्राविक्ता । ॥स्ययङ्ग ॥ ॥कदिक्नागमयतेषायेनतेषिगताविभो ॥ परिसङ्ग्यितस्यान्यस्य स्त्राविक्ता

दमयतीके दर्शन फरके पीछे वदी में जावेगीक तो वो भपने पतीकु भाषा समान इपिगी करमात सब मयलसे विषाइमें १६ दमयतीका दशन और पूजा अवश्यकरना उस दिनसे नागर मासण बनियोंने दमयतीका पूजन होताहै सून कहते हैं वो गजाने जगत्कार पुराने ३७ अह सट गोजस्थापनिक्षेत्रे असमेसे बार गोजके माह्मण उन के पास जार सक नहीं यह आह नागर माह्मण में जो अह कुली ऊर्च माह्मण कहते हैं वो भूषे और जीसदा माह्मण बो नगर में रहे १९ नव अर्था कहते हैं बनोकु

नाग भय केंसा भया सो विस्तारसे कही और चमत्कार पुरका नगर ऐसा नाम कायसे भया जिस्पनगरके गामके प्रतापसे नागर ऐसी संज्ञा ब्राह्मणोिक भड २० स्त कहते हैं में भानर्त देशका एक प्रभजन नामका राजाया उसकु वृद्ध अनस्यामे पुत्र भया २१ तब ज्योति आस्त्रज्ञ ब्राह्मणोकु बुलायके प्रच्छाकि यह पुत्र कैसा होवेगा तव ब्राह्मणोने कद्याकि सर्वका नाहा करने वाला होवेगा २० गंडातयोगमे पेदाभया उसकी शाति करो तव गजा जलदीसे चमत्कार पुरमे आयके २३ ब्राह्मण सभा मिलायके बृत्तात कह्या तब ब्राह्मणोने आपसमे विचार करके कह्याकि २४ हेराजन् हम मोला ब्राह्मण दर महिने तेरे पुत्रकी वृद्धी के वास्ते गांति करें ॥ ॥ स्तरवाच ॥ ॥आनतं धिपति पूर्वआसीन्नाम्नाप्रभंजनः ॥ ततस्तस्यस्मतोजज्ञेप्राहेवयसिपश्चिमे ॥ १२१ ॥ देव ज्ञान् ससमाहूयकी हक्षुत्रेभ विष्यते ॥ इतिष्ठ छेतदाय हुर्यंस विनात्राकः॥ १२० ॥ गडाने इसमुद्भतस्तस्यशा ति वे इगर तालागारू न अवर्र हुन से निर्माण कर्ण । १२३ ॥ तत्रिवित्रान समाव्ययवृत्ताता व निर्वे दत ॥ तत्रस्ति ब्रोह्मणाः प्र हुन्सं धीयता ॥ ततः ससत्वरंगत्वा चमत्कारप्टरतृष् । ॥ १२३ ॥ तत्रिवित्रान समाव्ययवृत्ताता व निर्वे दत ॥ तत्रस्ति ब्रोह्मणाः प्र हुन्सं मञ्जाथपरस्पर ॥ २४ ॥ हेर्राजन्प् तमास वैक रूष्या मात्रुज्ञातिक ॥ पोढ्योवययसूर्वे तव्युत्रस्यवृद्धये ॥ १२५ ॥ उपहाराः स दाप्रयास्त्याभस्त्यामहिष्ते॥ तथे हरकागतवतिनृष्ये दिजातय ॥ २६ ॥ शा तिक विधवच्चकुश्र्यानु श्र्यरणसङ्गकाः॥ दे ने देनतदातस्मिन् महाव्याष्ट्रिजायत्॥ १२७ ॥ तह्त्रस्य वशेष्णतये विभिजन् स्यच ॥ तदात् बाह्मणा कुद्धा अहान् शह् सम्दता ॥१२८॥ ताबद्दन्हिरुवाचं दर्धयोभ्रतादिजोन्तमान्॥नचात्रवोष खंटानाय्ययेषे उगि दिजा ॥१२९॥ तेषा म-ध्येस्थितश्र्येकांत्रिजात बाह्मणाध्म ॥ तद्देषेण नगुणहतिहुनंद्रव्यंत्रहाद्मे ॥१३०॥ तंत्यत्काय देकुर्तततदागां ते मे विन् ष्यति॥ त्रिजातस्यपरी सार्वशृण्वं हु द्रिजसत्तमा ॥ ३१॥ अत्रस्टदेजले विपाः स्थितायेष उगि देजाः॥ तंस्मानच द छुर्व हु-गै २०. ज्ञातिका साहित्य भेजना राजाने तयास्तु कहक घरकु जायके सामान भेजदिया २६ ब्राह्म प्रिट्सिन्द्धर्मात्मनः॥१३२॥ ण विधिसे गातिकमें करने अगे परतुष्वकु त्यीर महलमें सबलोकी कु विनदिन कु खाधिवडता गया तब बाह्यण प्रहोकु जाप देने कु तैयार भये २८ इतने में अपीने पत्यसम्बप् धारण करके कहाकि यहाँ प्रहों का दोप नहिंहे नुमरे सोना ब्राह्मणों में २९ एक क्रिजात नामका ब्राह्मण नहिं पावडानीच है उसके दोपसे होम की आहुतितयह लेने नहि है १३० वास्ते वं ब्राह्मणकु छोड़के कर्म करोगे तो ज्ञानि होवैरी जिजान ब्राह्मण नीचकायसे है उसकि परीक्षा सजो १३१ इस जलके होचमे तुम सोला

भाराण स्नान करों आपनि सुब्कि पासे ३२ पीछे इसमें नो त्रिजात होनेगा उसके अगळमर तत्सास निस्कोटक रोग होनेगा ३३ तब सबनो न्यान करते मेचूइ होनेगे एक प्राष्ट्रणाकु निस्कोटक होग में तब नो बाह्मण सज्ज्ञायुक्त होयके मुरवनीना करके पुरके बाहर नलागया ३० पीछ पपण प्राह्मणोने जानी किपीतव म भजनराजासहकु दुव रोगसे मुक्त भपा ३६ अब विजाद बाह्मण बनमे जायके विन्तार करने लगा किमानाके नामि नारके दोपसे मेरेकु दोप मान भया ३० फिर बाहि नपक्यों करने हैंगा अब-नमकार पुरका जो बहानगर नाम हुनाहै उसका कारण कहते हैं जमतकार युरमें एक नहुभ बगका करा नम करके बाह्मण पासो अ

एतेपामध्यगोयखिजात समिवधित ॥ तस्यिक्सोटकैर्युक्त स्नानस्याग मिषधित ॥ १३३॥ ततस्ते मास्नणा सर्वेक मास्त्रिनिम्बल ॥ चमु इहिद्याना सर्वे मुस्तेक मास्त्रिनिम्बल ॥ १३४॥ सोपिल ज्ञानिको विभ कृत्याधोपदन तत ॥ निकातोयसभामध्यातस्यानादि प्रसमुद्रवात् ॥ १३५॥ तत्र्र्यचातिक चकु चमत्कारपुरस्थिताः॥ ततो निरोगतामाम सभूपस्तत्स्यणादि । १६॥ विजातो पि दिन्त्रेषेणगताकि इत्तातर ॥ मातृतोपादहर्यावपेल स्वप्यप्रगतः॥ १३७॥ त नोपेराग्यमापकोरोदे तपिससम्भित ॥ चमत्कारपुरेचेको विभोन हुष्यदाजः ॥ ३८॥ कयो नामयथोगवित्नागतीयिपति । वान्यावणस्यासिनेपस्त्रेपच्यपप्रपद्वचने ॥ ३९॥ तत्रापद्यन्नागवाइल पुडेनव्यपोपयत् ॥ अध्यसाजनवीतस्य निका नाजल मध्यत् ॥ १४०॥ द्यानिपतिन बोल नग्देशतागृह्यप्रो॥ अन्तरस्याचन सिम्बात मृतिजवालक् ॥ १४०॥ प्रला पानकरोदीना अन्तेपति ॥ एत्सिन्ततरेनागा सर्वेत्र समागताः ॥ १४२॥ तानुवाचतन दोपोको भेनमहता निन ॥ इपकेष्यरजेसे नेपा तहे सुजगोन्ताः ॥ १४३॥ पुत्र मतिहत्यासुसकु दुष्यरिष्ठ चुन्यत्वारपुर सर्वभक्षणीयत् तत्पर॥ १४४॥

ता पर ॥ १४४ ॥

इकारसे फिरन फिरने फि

वहारहोतुम ऐसा बचन सनते सब नाग-वमकार पुरमे आयके अपने विषोसे ब्रह्मण हीन सब सबगाव कियातब मृरक पातेपाते कुछ बाकी जो ब्राह्मण रहे चे भयभीत हो यके पुर छोड़ के प्रद्रजहां जिजात ब्रह्मण तप करताया बहा गये तब वो बड़े तपसी जिजात ब्राह्मण ने अपने गाव के सब दु खित ब्राह्मणों कु दे रव के और अने क ब्राह्मणों के बंदा स्पय हो गये सो सनके प्रमस् रोने छगा ४८ और कहता है है ब्राह्मण हो मेरा बचन सकता में जिलादिन से प्रमसे निकला उस विनसे विवक्त प्रसन्न किया हु ४९ ऐन्सा कहके शिवकी स्तुती करने छगा तब शिव प्रसन्न हो यक वर ब्रहि वर मग ऐसा कहा तब शिजात विषय कहता है है महाराज हमारा पुर सब नाग छो को ने घे

त्रिवयस्ति. कार्यसमस्ति .पन्नगे स्मेः ॥ तरे तु त्काचतेसर्वे चमत्कार्पुरंगताः ॥ १४५ ॥ अत्राह्मणपुरच्छः स्व वि वेन सुज्जेमा ॥ अयत् ब्राह्मणाः केवित सर्वेष्य भय वेव्हलाः ॥ १४६ ॥ तत् वनसमाजग्र स्त्रजातोयत्रसंस्कितः ॥ हरलब्ध वर हृष्टः समहत्तपसि स्कितः ॥ १४७ ॥ स्व हृष्ट्यास्थानजान् सव ने तया तु रवपरेषु तान् ॥ वंशस्यं च त हृष्टः भृत्वाच्याकुल लच्नः ॥ १४० ॥ त्रुणवेद्व ब्राह्मणाः सर्वेवच्च में सामतं ॥ मेया वि ने गतिचेवत् सुरंगः से विते हरः ॥ १४९ ॥ तत्रस्त्र सामतं वि वास्याहत्वं वर्षे । ॥ त्रेजात् ०॥ ॥ नागेरस्म सुरंग्रसं कृतं जन वि वि ॥ १५० ॥ तत्रस्मानं स्वयं या हृ वि प्राणां व सितिभवित ॥ ममा पिजायते कीति .स्वस्थानं द्वरणे द्ववा ॥ १५० ॥ ॥ अत्रे वीव व्याच् ॥ ॥ ने हुक्तं हननं वि प्रनागानात्व योगतः ॥ तस्मानं हपवस्या मे सिद्ध मत्रमहत्तमः ॥ १५२ ॥ यस्योच्चारणमात्र्यण्या पानात्वं विष ॥ तन्मत्रं तत्रगत्वात्वं तदि पेरिविवेदिनः ॥ १५३ ॥ त्रुणवेद्वात्याः ॥ तस्मानं हपवस्या मे सिद्ध मत्रमहत्तमः ॥ १५२ ॥ यस्योच्चारणमात्र वास्य तेपातात्वं पन्नगाधमाः ॥ १५४ ॥ दृष्प हाक्याद्व वेष्यं ते नीविवास्त संश्राः ॥ गरं विषमि तमे क्तं नशब्दान्तास्तिसामत॥ १५५ ॥

र लिया है वाहा हमार लोक कोई नहिंहें १५० इसवास्ते सबनाग क्षय है जाव श्रीर हमेरा सब ब्राह्मणोका निवास ही देतो श्रपना स्थान उद्धार करनेसे मेरी कीर्ति ही देगी ५१ शिवकहते हैं हे शह्मण तेरे निमित्तसेनागं कु मारना योग्यनहिंहें वास्ते सिद्ध मंत्र तेरे छुदेताहु ५२ जिसके उच्चारण करने से सपीका विष ना शापावेगा वे नगर ऐसा मंत्र वमत्कारपुरमे जायक सब ब्राह्मणो छुले के नागो छु सनाव ५३ जो कोई नाग तुमेरा शब्द सनके पाताल में निह जाने का ५४ तो देनाग तत्काल निर्देष हो जावे गें इसमें सशयनहीं है गर ऐसा विषका नाम हे सो बाहा नकहते नहिंहें १५५॥ नामी मेरे अनुसहसी है आह्मणात्तम नगर नगर ऐसा शब्द स्तरक जो नीच जानि नाग नहीं जानेके ५० और पाहा रहेगे तो वध पाने और ब्यानम वा चम-कार पुरकानाम नगर ऐसा होनगा सबभगरमें पहिले ए नाम पड़ा पाम्ते पृद्नगर या बढ़ नगर बिरन्यान होनेगा » पृथ्नीम नेग कीर्ति विरम्पात होनगी एसा शिव का बचन स्तनके निज्ञात सब बनमान सब ब्राह्मण पुरमें नगर नगर कहते हुने आमे तथ वा शिवोसका मिष्यमानकु अपण करने चव नाग ५० पानाक में चलेगप ऐसानानों कृतिकान के सब बाह्मण सरवपाये ६० किर विज्ञात ब्राह्मणकु मुस्यकरके सब ब्राह्मण अपने छत्यकरने नग बीनक प्रभ करने है कि विज्ञात ब्राह्मणका क्या गोम

मत्मसादात्वयास्रोतं बुचार्यं ब्राह्मणोत्तमः ॥ नगरनगरचैतत् श्वत्वामेपन्माधमाः ॥१५६ ॥ तत्रस्यास्यविते पथ्पाभविष्यति यणस्कतः॥ अग्रभृति तत्त्यानं नगरारव्यधरात् ले ॥१५७ ॥ भविष्यतिस्काबर्ज्यातत्वकीर्तिवृत्वर्कतः ॥ तत्त्कृत्वाबाह्मणा संदेशिजातेनसम्बिता ॥१५५॥ नुगरनगरमीची रुचरत समायमु ॥ अयतेपन्त्रगा शुत्वासिद्धम्बद्धियोद्धव॥१५९॥पा माल विविद्य सर्वपुरनागविवर्जित् । एवमुत्साचनान् सव न् ब्राह्मणास्तगतव्यया । १६० ॥ विजाते तपुरस्कत्यस्यानकृत्या निचिकिरैं॥ ॥ मर्पेषऊत् ॥ "॥ त्रिनातस्पैचिकगोत्रकिनामकस्यसभवः ॥ १६१ ॥ यानि ग्रोघाणिनशनियानिस्स्यापितानि च ॥ नाम्तस्त् निन्। ब्रह्तित्तुरेस्तनदन ॥ १६२ ॥ ॥ स्तउबाच ॥ ॥ तत्रो पमन्युगोत्रा येकीचगोत्रसमुख्या ॥ कैद्रोार्यगोत्र स्थार्नेवरं याहिओं समा ॥१६३ ॥ तेथ्यापिनसम्माग्यथागो उचतुष्यतसूर्वस्वनका दीनायन्यसानामजास्यान् ॥१६६ ॥ र्रापान्य समय्ह्या मि बाह्मणान्गी नसेभवान् ॥ कीदिकान्ययसभूतायद्चे विराद्धतेरमृता ॥६५॥ क्रयपान्यसभू ता सप्तांशीति हिंजीत्तमा ॥लस्मणान्वयसभूतोएकविशानिरागताः ॥ १६६॥ तत्रनशसुन प्राप्तास्त्रस्मिन्स्यातेस्कर् स्विता ॥भारहाजा स्वय प्राप्ताकींश्वनेयाश्वनुदेश॥ १६७ ॥रेभ्यकानात्याविशन्पायश्यकितया॥ गगणान्वहिविशन हारितानात्रिविद्याति ॥१६८॥ है किसके वरामे पैदाभया १६१ और गौत्र कितने नारापाये और कितने गौत नगरमे स्थापन किये सी कही

६२ स्त कहते है कि सब गोषोमे जा उपमन्युगोन के और कीच केशोर्य गोन के नो ब्राह्मण मये सो फिरके नहि स्त्राये स्पीर उनके पूर्वि हनकादिक गोमचे सी न गर्के मधसे नष्टकुचे ६४ स्थव बाकी के बिजान ब्राह्मण के साय जो ब्राह्मण स्थापे है वह नगरमे उनके गोन स्पीर सरस्या कहनाकु कोन कोन गोमके फिनने कित

नं श्राह्मण न्य्राये सो सर्व्या नकमे स्पष्टहें १६५। १७० ऐसे यह कमसे के शिकादिक गोत्रदे ब्राह्मण जो कहे है उनके वेदोक्त संस्कार श्राहताली स ब्रह्माने कहे हैं १८० श्रेरित्रजात ब्राह्मण ब्रह्माके वरदानसे भर्तृयज्ञनामरे विख्यात भया सब देवार्यकु जानता भया ८१ यह नागर ब्राह्मण में दवाप्रकारके भेदहें से रचे िदुभिनेवर्गत्राणांपंच विदादुदाहताः॥ गीतमानांचषिद्वादातुभायनिवातिः॥ ६९ ॥ मांड्चानां त्रिपिशातिबैह्नच नां-त्रि विवाति ॥सांकत्यानांवसिष्ठानां प्रथक्तनद्त्रीयतु॥ १७०॥ तथवां गिरसानांचपंचनेवपकी तेताः॥ खाद्रयाद्दासरच्याता सुङ्गाद्रयास्तयेवच ॥ १७९॥ वात्स्याः पंचसमारच्याता कोत्साध्यनवूस्तवा॥ शां दित्याभागवाः पंचमे द्रत्या विवातिः स्मृतः॥ १७५ ॥ है ध्धायनाः कीवालास्य अवान्यात्राः प्रका तिताः ॥ अथवू पून्वपंचाशूर् मे नवाः ससुससि तिः ॥ १७३ ॥ यान्तुषा स्टि वा तिख्याताश्य वनाः सप्त वेवाति ॥ आगस्त्याच्य त्रयास्टि बार्जे मुन्याददीवेत् ॥ १७४ ॥ नेध्ववाः पचपंचादार् पेने ताःसप्त निद्विजा ॥ग्रेमिलाश्च पेकाकाश्चपंचपंच द्विजासमृताः ॥१७५ ॥ श्रीदानस्य श्वेदादाम् स्प्रयस्त्रय्यदात्दनाः ॥ स्रीगास्यान नांत्यापर्ध रे पिकात्यायनारू यः ॥ का पष्टलाजाञ्जासान्त्रस्णाकासम्सम् तः ज्ञाञ्चानाजातम् कृतान्य ने स्मसम्ति. ॥७६॥ कात्य यनारू र प्राप्त हिद्दाा ऋवर: समृताः ॥ कृषा वैयालयापैन दत्तावैया स्टरीयन ॥ १७७ ॥ नारारणाः द्वीन-कैया जाबाला : ज्ञातसंख्यया ॥ गेपालाज मदस्याऋ ज्ञा लिह त्राऋ ज ए का ॥ १७८ ॥ भारू रार पाकाऋेवमानुकाही णवास्तथा ॥ सर्वेत्र ब्राह्मणा अस्य : क्रमेणा द्विज सत्तमाः ॥ १७९॥ एत्यामे वसर्वेष संस्कारार्ये द्विज्य माः ॥ वत्य रेवाक वाधीच एरामं क्तास्वयस्त्रा। १८० ॥ त्रेजाती बाह्मणके छो पतामह दरेण वे।। भृत्यइ इ तेरव्याती स व वेदारी विद्यूत । १८१ ॥द्राप्रम णारं प्रोक्तः स्वेते बह्मणोत्तमाः ॥ च्हंष छिए गेत्रेष्ठ ६४ एवं ते ब्राह्मण त्तमः ॥ १८२ ॥ तेन तह समान ती कि-जात्नमह सन ॥तेषामे अञ्चाता निद्य पंचय ता निच। १८३ ॥साम न्यभागमीस्या पिता नितेन कातानिच ॥अश्वव शिवे भारनपूर्वमायव्यये स्टं॥१८४॥ सक्ष गोत्रहें दर यह सर्व कु त्रिजात बाह्मणने ठायद स्थापन किये सो पंधरासी बाह्मणभये १८३ यह न

गरमे अउसर ब्राह्मणो का जैसा पूर्वी लाभ खर्चका भागया और अधिकार या वैसा पीछे यह पधरासी ब्राह्मणी का भाग सामान्य मध्यम रीतीसे भया १८४

श्रय नागरधासणाना गत्रिष्ठपसस्या १ १७ मीनस **५० १५ मीरानस** ३ ४५ कान्यायन भानेप १ ४६ वेदक ३ ३७ वासमि कणिक नुस्कार्थेय । भौगिक भागीरा ९७ ६९ छीमास ५ ४७ रुगामेय गीसम 🔍 भागसम्ब दरपर ३५ ६९ रेजिस **५५ ४४ रजानेप** ७ फीला **च**मसि ५३ मानुक ९ १९ म्यामुभावन सन्यवा ५८ स्प्रीयक अब ४९ नागपण **चे**मिनी फापिड ९३ १९ आहित्या भारदान ३ १३ माउप *सोन* देश ५५ ४६ सार्करास सी हनेक ११ ११ मीद्रस्य नेप्रय उपमन्यर २ कीच १ ३१ वैनिक ७ ४५ न्द्रेस्यास्य १ भ नेशामा रीभी १० भ सफरण **देशोय** ४३ बार्कन ५५ भीरातः ५४ गोभिक १ ५१ गोपास र १६ पसिष्ट भर्मकदिनायः ९१ १७ कागिरस ५ १६ वायन ५५ १५ मिम्रक ५ ४४ शमी ७७ ५६ जामदस्य

पृष्ट् नागर ब्राह्मणोका नाहा तक अवसर ब्राह्मणोका समूह स्कीवाचा पाहातग इनकी स्थिति अच्छी इती विचातने छापे बाद सामान्य सब भये १०% विज्ञात ब्राह्मण निसंबरवत नगरमे आयक रहा। बीर उसकामताप केन सवण करके हरके रहने बात बाह्मणार्थ वेबी नगरमे आयके रहे मगरकी बृद्धि बोह्यत भई उस दिनसेबहनवर ए

त्रवासीद्धगोत्रेषुष्ठरुपाणाप्रसर्यया॥तत् प्रशृतिसर्वेषासामान्येनस्यषस्यितिः॥१८५ ॥भिजातस्यचपाक्येनसेनद्राद्धिः सुतुं ॥समागुन्छ तिन्धेद्रा प्ररथुद्धि प्रजायते ॥ ५६ ॥ तसुरयुद्धिमापन्यपुत्रपीत्राविभिस्तदा॥ ॥ भर्षयञ्ज् ॥ ॥ कानिकानि चनीर्यानिसिंगानिपरमेशित् ॥१८७॥

सानाम विख्यात भषा ७५ शीनक प्रन्कतं है कि इस प्रममें कोन कोन तीय और फोन कानरे

विवित्ति है किनोने स्थापन किये हैं सो सब विस्तारसे कही १८७

स्त कहते हैं वो हं जमें पहिले शरवनीर्थ है बारव मुनीनें निर्माण कियाहें जिनकी कियी हुई शरव स्मृती कें र उनके भाइ लिखितउनकी स्मृति चल रही हैं ०० वाहा स्नान करनेसे कुषादिक रोग नार्न है दूसरागया शिर नीर्थ हैं ०० जाहा मेतत से मुक्ति होती हैं और मार्क डेय क्ष्पीका स्थापन किया हुवा ब्रह्म देवका मदिर हैं ९० जाहा स्नान पूजन करनेसे आयुष्य की बुदी हाती हैं और वालकन कि शानिकारक वालतीर्थ हैं ९० इद्रका किया हुवा वाल मडन तीर्थ है जाहा स्वामीके देप करके हुवे पापसे मुक्त होता है और मृतवीर्थ विष्णुपद तीर्थ गोकणीतीर्थ नागतीर्थ सिद्धे वर महादेव सप्तार्थ नीर्थ अगस्त्यात्रम विकत्त्वर पीठ ऐसे अनेक तीर्थ हैं ९२। ९३

कंनसंस्था पतानी हतनी बद सु विस्तरात् ॥ ॥स्तउवाच ॥ ॥ त्रथादी बारवनी धेच बारवेन प्रकात्मितं ॥ ८८ ॥ स्ति नात्र मस्यानात्कु षादीनां विनादानं ॥ तत्रोगया शिरंनाम तीर्थपापप्रनादानं ॥ ८९ ॥ देतत्वा स्व मुस्तिवेभ देख्य तेस नि श्रि तं ॥ पितामहस्यमासादोमाकं डेयेनस्या पेत्. ॥ ९० ॥ यत्रस्नानाच्येनेच त्र्याह र्यु द्वे प्रजायते ॥ बालसरव्याख्यतीर्थन चबालानां शांतिजारकं ॥ ११ ॥ बालमंडनकति इन्हिण च ब ने मितं ॥ स्वा मिद्रोह कतातापात् ह च्यत्नात्रसंशय ॥१९२ ॥मृगत् देतताप्रोक्तते थेषियु प्राव्हया। गं कर्णास्य ततक दियत्र दुर्ति नादानं ॥ ९३ ॥सूर्वते यि गुमो जातः क्रेडेहाट कसंज्ञके ॥ नत्रास्ति कलेदें शिसदृष्टे के तमः स्मृतः ॥ ९४ ॥ ततः सिद्धे स्वरीनाम द्वांपा सिक्र दीकः ॥ नागेनी से न तः प्रोक्तंसर्पे तिन्वार्णं॥ १५ ॥ सत्यत्हत्सं जिकं नोर्धंदु प्रतिग्रहदोष कत् ॥ ऋगस्त्यस्याश्रमस्त्रपीठं विशेश्वरा भिर्धे ॥ १९६ ॥ यत्राराधनमात्रण्यात्र सिद्धः प्रजायते ॥ दुवीसात्री जदानश्चमत्कारपृष्टेगतः ॥ ९७ ॥ त्र हस्राद्विजान्सरीन् हु तैस्म तेयरायणान् ॥ विद्याबादेशं इंदेरसान्नत्वाह निरव्रदीत् ॥ १९८ ॥ मम् इद्धिः समुत्यन् । भोरायेतने प्रति ॥ के देव हमणज्ञाद्वेत्रतस्मात्स्छानं पददर्थता ॥ १९९ ॥ सएवज् त्य मानोपिनोत्तरच दर्दु ईजा. ॥ तदाकोपेनदुव सा स्तान् आजाण द्व जनमान्॥२००॥ ९४।९५।९६ एकदिन दुर्वासा मुनि चमत्कार पुरमे स्थायके ९७ वेद शास्त्र सपन्न बाह्नण विद्या के विवाद कर रहे है उनोकु देखके

नमस्कार करके प्रझ्ने है ९८ है आह्मण हो मेरेकु शिवकी स्थापना करनेकी इच्छा भइ है बास्ते स्थान दिखाव ९९ वैसा युखने अगे परतु वे ब्राह्मणीने उत्तर दि-या नहीं तब के पायमान है यक दुर्वासा शाह्मणी कु शाप देते भर्य २०० दुर्गमा कहते है हे बाह्मणहो विचाके मन्से मेग बनन सुना तथापि इनर नहि दिया पास्ते तुम सब मनीन्यत हो नाव १ चीर मापा मीनसे पिता पुन खूर जान फिर पाह बपोकि क्या बनी है हो हो है है है है साम के दे हो है साम के दे हा है से स्वाह स्वाह कर के बाह्मणहों के बाह्म

॥ दुर्वास्तावयान् ॥ ॥ विद्यामदेनमद्दाक्यश्रुपवृतीपिनतस्यच ॥ उत्तरभददुस्तमान् सूपसर्वमदान्विना ॥ २०१ ॥ सदासी स्वनिर्मुक्ताः पित्रोपिसुती सह ॥ मविष्यति पुरेष्यास्मिन् किर्नुनर्गाधवादमः ॥ २ ॥ रवेसुत्का सद्वनीसान् इत्तर्तदन्तर्॥ मयतन्त्रध्यगोविष्ठश्यासीद्वद्रतम् क्रधीः॥ ३ ॥स्त्रशीसंद्रतिविख्यातीवैदवैदागपुर्पूग् ॥ सत्परमययीपृषानिष्ठिति चात्रुवन् ॥ अयामाद्यगतदूरनत्वामोवाचतमुनि ॥ ४ ॥ ॥सुरीलिपवाच ॥ ॥ एतेवीनोत्तरदत्तसहस्त्यप्रवीम्यह ॥अ स्मिनुस्यानेद्विजयेषप्रासादकन्महीति ॥ ५ ॥ सुद्गीलस्यवच सुन्बादुवसाहपस्युत् ॥प्रासादनिममेपस्यातस्य्वाक्ये चवस्थित ॥ ६ ॥ अयतेश्राह्मणा जात्वासङ्गिनेवस्तर्थरा ॥ दुवी ससेमदेत्तावे देवतायतनायन्व ॥ ७ ॥ ततः मेत् स मासाच्येनज्ञासादुग्रत्यना ॥ वयत्रसेद्रवय्द्रतामासादापपमुख्यरा ॥ ० ॥ तस्मात्वमपिनास्माकवास्य एव भविष्य स ॥ सुरीलीपिहिंदु रीलोगम्नासकीर्त्यनेवधे ॥ एषमुत्कायतेविमाञ्चतुर्वेदसमुद्भवा ॥दु शीलसपरित्यन्यप्रविधा-स्वपुरेतत् ॥दु रीलोपिवहित्यकेगृहंतस्यपुरस्यच ॥ ९ ॥ तस्याम्बयेपियेजातास्तवात्यसिप्रकीर्तिता ॥वात्यकियासु

सर्वी सुसर्विपा,पुर बासिना ॥ २१०॥ स्यापना किपी ६ तब बोह सब बाह्मणोने सुनाकि सुद्दीलने दुर्गासाकु देव मदिरके वान्ते पृथ्वी दिया ७ तब सु गीलह कहने लगेकि निसम्स्थीने हमकु शापदिया को कपिकु दुजने पृथ्वी दियी वान्ते ट हमेरे समूहसे द्वाहार है नेसनाम सुद्रील है परनुमानस नेरा दुर्शील नाम सव क हेगे ऐसा कहके सब शाह्मण दुरशीलकु छोड़के बापने पुरमे पतें गपे दुर्शीलने विवाह पुरके बाहर अपना धरवनाया ९ पीछि उसके बहामे जितने बाह्मण भय ने सब बास नागर वा बार इ नागर पर्य पुरके बाहारका सब कर्म सो करने हैं २१ है वेनक हो अब तुमकु बड नगरमे कितने तीर्य है सो कहता हुं उसकी यात्रा सेवोने करना नागर ब्राह्मणोकु तो अवद्य है बास्ते पहिले धुं धमारे स्वर महादेव के द वेन करके उसके उत्तर वाजू ययातीस्वरके दर्शन करके १९ सरस्वती नदीके समीप चित्रद्विालाकुं देखके जल बादके दर्शन करना १२ पीछे विस्वामित्र कुंड में ब्रियुफरमें सार स्वत तीर्थ में स्नान करके उमा महेस्वर कलबोस्वर रुद्र के टेस्वर उज्जयनी पीठ भूण गर्त चर्म हुंडा सांबादित्य बटेस्वर महादेव नरादित्य सेन

ततोर च्छेन् निश्रेषा ६६ मारे व्यरंहिरं॥ तस्येवे तर देरमारे ययातो व्यातो व्याता ॥ २११ ॥ तत कित्र शिलात्र सरस्त्यः समीपतः॥ तस्य वीत्तर देग्भागे देवस्य जलवा रिनः ॥ २१२ ॥स्थानमास्ति सु वरव्यानं सर्पातकनावनं ॥ वेश्वा मेत्रसास् द्भार क उद्भाषा प्रवास के ॥ १३ ॥ तत्रेवा सिहिजके छाः हु हु एटं ए करक्यम् ॥ ब्रह्मणा स्थापित हु एट कत्वाय क महे त्सवं ॥ १४ ॥ त्र स्वार स्वार के विकास के प्रवास के किया है अप के प्रवास के प्रवास के किया है अप के प्रवास के प्रवास के किया है अप किया है अप के किया ह खिते ॥ द्योनिना शकस्त वकल रे खरक शिवः ॥ १६॥ तस्टे वे तर दिग्भारे रुद्र कोट् हेजी त्मा ॥ अस्ति संपूर्णता दे मैदीक्षिण त्येम हात्म भिः ॥ १७ ॥ तत्रे बोज्जर नी पीठम स्तिकाम अवन्यां ॥ श्रमणगर्म खन है वन्तम मंड तथेवच ॥ १८ ॥ तहे वनल हो धेनिसन व्या शि ह नावाकं ॥ साबा दिल ऋ तरें वन्ते स्वर बीन स्त या।। वेष ॥ बिन्गंगानरा दिलः मा हित्व देवता ह या ॥सं में करक तर्रेवश में शार्ट ए सुत्तमं ॥ २० ॥ व्मत्कारेक्टरी देवे आन तेक्वरकः शिवः ॥ जामद्रक रामे हदः स्कंदश किशिवातथा॥ २१ ॥ नमलारप्रेयु अभिस्थानं स्तर्वो भनं ॥ तथा व वाहवेदी च श्वपार्वतीस्वा ॥ २२ ॥ रुद्रशावी ब्रिक स्त्रमाल स्वित्यात्रम् स्तया ॥ स्त्रपण रिव्यक्वत है हम ह लक्ष्य मने हरा॥ १३ ॥ श्राम बृद्ध महादेवीक्रीमातः पाद्क तथा॥ हिन्ह तिर्देह कुंडगें स्रवेल हय हेळ ॥ २२४ ॥

निष्द्र सुंखे गर्रवे हय एक ॥ २२४ ॥ मेष्यर इनों के दर्शन करना णिखे नल तीर्य शिमिषा तीर्थमें परक्ष राम छोहिने स्नान करके १३ १४ । १५ । १५ । १५ । १९ । २० । चमत्कारे प्यरी देवी के स्रोर आनर्ती प्यर महा देव स्कंद शक्ति यज्ञ भूमि विवाह वेदी २२ रुद्रवीर्ष विव वा लिखा श्रम स्तपणीश्रम महालक्ष्मी त्याम चुद्रा देवी श्री मात् पादुका इनं के दर्शन करना और वन्हितीर्थ ब्रह्म कुंड गर्रव ल ह यशिका कामप्रदादेषी राज जापिका श्रीरामेष्यर महादेव श्रानर्ततीर्थ अवादेवी रेवतीदेवी भट्टिका तीर्थ कात्यायनीदेवी क्षेमकरीदेवी सुक्कृतीर्थ रुवार तीर्थ कणीत्मल तीर्थ अवेष्यर

महादेव याज्ञवन्ययासम् प्रविद्यागीरा वास्तपाद सजामह दाधिका धर्मरानेस्वर मिशान्तस्वर तीन गणपठी जावानेस्वर समरकुउ रलादिस गतनीय इत्यादि जानो तीय स्वीर देवालय है बाहा स्तान दहीन करना ६ है बीनक हाटक सेनम ऐसे दूसर वी अनेक तीय है सडसट नी संमे हाटक सेन मुख्य है बीर अब श्रामेगत तीयीसन बाह्मण जीनोकु हालमे नागर बनिये कहते हैं उनािक उसिन कहा कहना हु स्थानत दहामे एक सत्यमध राजाया पा अपनी रतकरण किसको देवायह पूछवेके वस्ते कन्या कुलके बह्म लोक में गया ३२ बाह्म बहादेव सायकालकी सध्या कररहें तब राजा शणभर येने हुसे बाद रा

कामप्रदामहादेषीराजनापीतथैवन ॥ श्रीरामेश्वरिक्षणन्वतीर्थमानतीसक्त ॥२५ ॥ श्रवपि श्वतीर्थेषु मुख्यहाटक सज्जूक ॥ श्रवारविकादेवीभृद्विकातीर्थमुत्तमं ॥ २६ ॥ कात्यापनीतयातभृदेवी स्तेमक्रीतिन ॥ सुक्रतीर्थमुरवारवतीर्थ कणीस्लाक्य ॥ २७ ॥ अटेन्स्रोमहादेवं याज्ञवल्क्यात्रमस्तथा ॥पचपिडा तथागीरी रास्त्रपादसंसुद्धवं ॥ २८ ॥ अ जामहोदी,पिकान भर्मराजे बरस्तया ॥ मिधानो बरदा सुध्वत्याग्णपतिनय ॥ २९ ॥ जाबाली स्यापितलिंग कु उनामरस ज्ञकः। गर्ततीर्यन्तनभैनरत्नादित्यस्त्यैवन् ॥ ३० ॥ एवमादित्यनेकानितनतीर्यानिसति हि ॥ अयान्यामपिनस्पामि क याहिनसमुद्भवा ॥ २३९ ॥ आनर्तविषयेपूर्वसत्यसधोमहीपृति ॥ कन्यावरपरिमञ्जलकोकगत सता ॥ ३२॥ ग्र हीतातमक्रू हङ्गासायतनिक्र्योस्यक ॥उपविषे सणतमकमेति रूपम्बर्गुत् ॥ २३ ॥ ।। बह्मीवाच् ॥ ॥ यदर्यमागतो सि लननाव्ययंश्रुपुन्प्॥ ममानिकप्पनस्यत्यजात्युग्नय ॥ ३४ ॥ सर्वेतिवैधेतामत्यीयेत्वयामानसेधृता ॥ तन्खुत्वाना समाबायप्राप्त सर्वेशयुक्तम् ॥२३५ ॥स्छलस्यार्नेजस् दृष्ट्राजस्यानेस्यस्त्रतया ॥ पृष्ट्यनापिनजाना तिसवधकेनिनुत्स हि। २३६ ॥

जाकु ब्रह्मा कहते हैं २३ है मत्यसंथ जिसवासी सुचहा द्याया है यो आवर्ष अवणकर सुचरसे निकल कर मेरे पहा सणमात्र बैठा इतनेमें तीन पुग भूगी में बीत गर्प २४ हानने जो जो मतुष्यों की देनेका विचार किया हता वे सब मृत होगर्प ऐसा ब्रह्माका क्वन सुनके यजा कन्याकु रेके अपने देशमें आया स्मीर २५ देखने कगा तो भूमिके विकान जरू हो गया है जिसके विकाने स्थल होगया है पिछानेजाता निक सोकोषु मुखताहै तथापि सबभ माहम पडतानहाँ २६

नव गजाने पूछा कि यह कीन देशहे और कोनसा नगर है तब लोक कहने लगे यह श्रानर्त देशहे यहा बृह इस राजा राज्य करता है २३७ इस नगरका नाम प्रातिपुर है साभम तिनदी है और यह गर्न तीर्थ है यहा पूर्व बड़े ऋषी हुन है ३० ऐसा सुनते सत्यसध राजा बड़ा रोने लगा तब बृह हुल वाहा आयके में से पूछने लगाकि रोनेका क्या कारण है सलसध कहता है कि स्थानर्त देश में राजा में हु मेरा नाम सत्य सध है ४० कन्या के वास्ते वर पूछने क यहासे बहा लोक में गया न्यीर वाहान्ये फिरकरदोघडीमे पुन यहा त्रायातो २४१ सब बिपरीत होगया किसीकु जानता नहिंह तब बृहद्गल कहता है हेराजा त्राप आयेर

कोरंदेश पुर केवाइ तिष्ट्रेजनः जरुः॥ स्मानत् संज्ञके देशोराजात्त्र हुइ इलः॥ २३७॥ एतत्मा सिप्रंनाम एषासाध्त्रम् तीनदी ॥ गततिर मिद्पृण्ययत्र नेमासुनी स्वराः॥ ३८ ॥ तन्छुत्वासत्यसंघ्र वैरुरोदो है स्तदानृपः॥ बृह इलः समायानः तपप्रन च्छद्यानितः॥३९॥र दनकार्णं किनं सत्यसंधस्तदाह्वीत् ॥ स्नानति धपते स्वाहंसत्यसंधद तेस्मृतः॥२४०॥ कन्यावरं परिप्रखंबह लेक मेतोगतः॥ तते भूय समाय तो हहूर ने वस्तल ॥ ४१ ॥ ताब हिल्मेतां मासस्नी वेदि किचन ॥ तदा हह ह समाहरवागतंतेमहारूज ॥ २४२ ॥इदंराज्यं तरीवासिं अहं भृत्यं स्तवस्मृतः ॥ पारपरिपाराजेद्र मसेतत्सक लक्षतं ॥ ४३ ॥ स त्यसं धे स्वक्रां है पूर्दित्वा बारिनागत । अहंत्वह्र असंजाते सूत्र समिति विभी ॥ ४४,॥ ॥ सत्यसं ध्उवार ॥ ॥ नाहर ज्यंक रेष्या मेगर्तर धेत्प रु हं। एवत्योः भवदेतीः रन्ये न्य समिपालयो ।। २४५ ॥ गर्तनी धेसस् द्वता बाह्य ए . डील्ड न्दिताः॥ आगत्यपा र्थवस्टे व्हृत्व वृत्तां नस्त्तमं॥ ४६॥ स्थितास्तव सत्यसंधी चूप्पाहबृहद्वलं॥ मयीपूर्वयद्व वानाऋँयाः सर्वे क्षत वहु॥ ४७॥ नभू मेदानं विभिन्यो एतावद्व दे षितं॥ तदबृहद्दले प्याहदीयतामनसे पित ॥ २४८॥ यह अपन्त

४२ रे राज्य हमेरा हैयू मय् हमेरा सेवक हु वंश परपरासे मय् इनता श्राया हुकी ४३ सत्यसधराजा कन्गा इन के वे वला गया सो श्रयापि नहि श्राया गस्ते म य आपने वरामे ७७ मा पुरुष हु ४४ सत्यसध कहताहै मय् राज्य करता निह हु गर्त तीर्थि तपकरुं गा ऐसे दोने राजा बील रहे है ४५ इतने में गर्त तीर्थीयन ब्राह्म णोर्न हत्तात रहन के बड़े आश्वर्ष में वहां त्रायके बेंबे ४६ तब सत्यसधराजा बूह इल राजा कु कहता है कि मय्ने अर्वि यज्ञायाग दान अपय बहु ते किया है ४७ प

रत समिदान नहिं किया दनगा बाकी रह्या है तब बृह इल ने कहा के आपकी जितनो इच्छा होचे उतना दान करों २४ ट

त्य मत्मम् ग्राम गर्न गर्धीमध्यास्मणाके पाद प्रसानन करके प्रत्वामिक वास्ते ध्रियान करके रहाद्त पु आशापासन करने की वेस स्माप हान्ये भेव में आपक वर्ध तपस्त्रमा करना भया । इहाद्वम ग्राम वी बोबे कि दिनोमें हा चु के सुद्रमें स्न्क्याया पिछे गर्न ती पीसन्त शह्मण रुप्यो हो पक ५० छत्य स्थानानी पाम आपक कहन त्रीकि है गर्म केनस प्रकाश वानमान तिया परतु उसका फर रमकु निहम्या रह दूनगता आपकी आशास पुरवसाय के जेना परतु शेवि मरग्या वास्ते दमकू नेसा मुख्य होचे पेसाक्ता अ तब सन्यस्थ ग्राम कहना है कि है शह्मण हो मैथ् तो सन कर्म त्याग करके वैना दुन्य करने कु समर्थ नहि

ततः प्रसान्यसर्वपापावान् सपृथिवीपितः ॥वदीसगर्विभिन्नेश्वो पुरार्य भूमिमुन्तमा ॥४९ ॥ वृह इत्तर्यवादेशद्वीसमिष् तः स्वयः॥गत्वाहाटकः स्त्रेपैनिनतेपेतपस्ततः ॥२५०॥वृह इत्योत्यकालेन युद्धस्तः पुषे यवान् ॥ततस्त्रश्रह्मणाः सर्वे गर्तनीर्थससु व्रवाः ॥२५०॥सत्यसधसमन्येतः मोनुर्तु स्वस्कीयकः ॥ परिमहः कृतोस्मा भि केवलपृथिवीपते ॥२५२॥न विकितिसल्लात्रवृतिन्वसम् ॥तस्माह्मयहम्यस्वप्रसाद कियताममः ॥२५५॥॥सत्यसभ्यापाः सर्वे वमन्कारपुरोद्भयाः ॥ श्वाप्यवृत्तिकर्तुन्वसमः ॥तस्माह्मयहम्यस्वप्रसाद कियताममः ॥२५५॥तदेवबाह्मणाः सर्वे वमन्कारपुरोद्भयाः ॥ भगत्यवृत्तिनाह् सत्यसभवपत्तिन ॥५५॥॥वमत्कारपुरस्यबाह्मणाः क्ष्युः ॥ ॥त्वह्वानेननो दत्तंपुर्विम्युन्तमाः॥ भगापिवर्ततेराजन्तन्वविद्यसमागने ॥५६॥सर्ववृत्तिगृहस्यानाययायोग्यप्रयत्नतः ॥तवामेकिवप्रवृत्तं क्ष्ये स्तिसक लयतः ॥५० ॥य्योवृत्तिपुरादनाय्यासरिक्षताव्याः ॥तस्मावित्यराजेद्रस्यानवर्तनसभव ॥२५० ॥ उपाययेनमर्यादाः । निक्तस्यात्तात्रवेनतु ॥ततः ससुनिर्थातागर्ततीर्थससुद्भवान् ॥५९॥भाकार्योपमन्युवद्यसभयान्ववेदपारगान् ॥पणिपाते यस्त्रायनन प्रोयानस्यत्रभवः

मस्तायत्तं प्रोचीनसादर॥२६०॥ तुम अपने परकु जान मेरे अपर अनुप्रकृ करा ५६ ऐसा भाषण करत है इतने में नमत्कार पुरके नगर आह्मण मन आपके सत्यस्प प्रजाकु कहने तमें ५५ हे राजा तेरे इनज नशस्यन हमकु यह नगर शनकिया है और उत्तम नीतिका वीपी है सो आज दिनतगन्तता आमाई परतु अ इ इसमें एक किम आया है । दमप्रहस्यासमी है उसके विषड़ ऐराजर्णाभयधर्षियों वर पान्य हाता नहि है तुमरे सामने हमने क्या कहना तुम सन नानने हो ५० आपने प इसे निर्मा श्री शीपी और रसण किपाबान आगे हमेरा मसारनते और कार्य भार कर ५० हेसा उपाय करो तब सत्यस्प प्रजा विरकास विनार करक गर्वती पासका जो बाह्मण उना कुन नमस्कार करके बिड स्थार्नवनार बचन कहते हैं २६० है गर्न नीर्च बाह्मण हो रेश स्थान जो चमत्कार द्वर उसमे रहने बाले जो नागर ब्राह्मण है उनके सब कृत्य नम्बता से में कि स्मार्थ के करना ६५ इनेकि रहा करना तुर्रेश बचन मयादा यह ब्राह्मण पालन करिंगे २६२ स्में र यह नागर ब्राह्मण तुर्मेर में कोई बातोका संदेव ह नेगा या बादिनाट होयेगा या राजदरबारका कार्च होयेगा बाद्या करदे हुने ६६ जेसा हुने सबचन निकसेगा देसा निर्णय करें ने इने का पालन करना और स्थान हार्च ऐसा भी करना १६५ हम भी ब्राह्मण है इनोकं संबक केसे होना यह बात छोड़ के मेरे स्थानक कि युद्धि होनेके बास्ते

मदीर स्थान संस्थानां ब्राह्मणानां दिरंपतः ॥ सर्कत्यानिकार्य णिश्वतः हिनयान्विते ॥ २६१ ॥ नित्यंरक्षा विधातव्यादु प्रदायं विचीत्वितं ॥ एतंपात येष्यं तेमपादाकरहुन ॥ ६२ ॥ संदे हेदुन सर्वेष्ठ विवादेष्ठ विद्याप्त ॥ राजकार्येष्ठ नान्येष्ठ एतं द्वास्य ते निर्णय ॥ ६३ ॥ स्थ द्यं वनः इत्याद्ध संवाय देवाहु सं ॥ एतेप त्ररे भमादेन हिन्याश्व दा कितः ॥ ६४ ॥ इं पं सवाप रित्यत्यम् दीर स्थान धृद्ध ॥ वार्ष मत्याद स्थान धृद्ध ॥ वार्ष मत्याद स्थान धृद्ध ॥ वार्ष मत्याद स्थान स्था

मेरा पूर्वेक्त बचन पालन करें तबगर्न बाह्मणीने तथास्क कह्या फिरचमत्कार पुरके नागर बाह्मणों कु राजा कहना है है नागर ही विष्या हमेरे ससार कत्य चलाने के वार्त मयन देशे है इन के बचनरे हमेरा सब काम ही शंगा ६० हमेरे बदामें साप्तत कालमे कोई राजा है निह वार्त इनसे आपि प्रतिषा हो गी। ६० त्यापके प्रत्यित बाह्मणोरे निह ६९ स्त कहते है तबचमत्कार प्रके नागर बाह्मण प्रसन्ध होये गर्न बाह्मणोक्त लेक बडनगर में जायके उर्न प्रसला सब कर्म करते भये २०० उसदिनसे नगरमें धर्म मर्यादा बाहे त बढ़ि गाई प्रकि वि बृद्धी भई ७१ पी छे नागर बाह्मणोके त्यह प्रह से गर्त नी सी सम्

बाद्यण बडे एन्यय कु पाय न्योर सुरवी भय कार वर्तमान कारूमें जो जागर बनियं स्पीर विलोख नागर बनिये कई जात है वे गर्न तीथींस न बाह्मण महाकम त्याग ही नेस भये हैं इसका कारुण पारो किरनुगा 🧈 पान सलसम् राजा तपन्यया करके सलसभेन्यर महावेनका समापन करके माह्मणाकु सुप्रत करके स्थाप स्वर्गमें जात मया >३ हे बीनक स्मीरिव बास्पनामक नागर बाह्मणका भेद वर्णन करना हु एक पुष्पनामक बाह्मणचा उसने एक बाह्मणकुँ भारके उसका पन स्मीर उसकी स्त्री कु तेक शटक सैनमें आयके प्राप्ती नृद्धि होनेके वाली नागर बाह्मणी कु बुतायके नमानामें पूछन क्या तब प्रप्य बाह्मणका कुरक में वेरवके सब नागरीने कह्मा कि ऐसी सत्यस्पीतपन्तस्वासत्यम्भचदाकरः ॥ सस्याप्यविमानादिदयययोक्तर्गनराधिपः ॥ २७३ ॥ अयान्यदिष् सस्यामिशः णुत्रीनकसूत्तमः ॥ युष्यसज्ञादिन् किमित् इलाबास्मणसुत्तमः ॥ ७४ ॥ वहः द्रव्यचतद्वार्याणकीत्वाहारकययो ॥ समाह्रयः

दिजान्सर्वान्नापुरान्न्यात्मद्युद्धे ॥ २७५ <u>॥ पृष्ट्अनियां विश्वस्तदामोत्तु स्</u>वृनागराः ॥ एतादु हास्य विश्वस्युकारुमे द्युद्धिर्न्िष् चते ॥ ७६॥ वेपयैकोब्रोह्मण पाइन्डवार्मतिनिकत ॥ युरम्परणसंसम्याबतेनास्यायसंसर्ये ॥ ७७॥ मुर्विष्मत्। तिसंपोक्ते भक्त्यातूनकत्रवत् ।।पुष्पं सवलरस्यातेविपाष्मासमप्यतः॥ ७४ ॥ पष्ठभागः । ददीवित्तविप्रायुच्डवार्मणे ॥ कोट्याधिक ततः सर्वनागर्। कोप्रपृतिता ॥७९ ॥ततस्त्रेसमयकुत्वासमानीयन्वमध्यगः॥तस्यास्येनततः मोत् ब्रीह्मस्यानेच्यवस्थिता ॥ २८०॥ अनेनलभियुक्तेन्तिरस्कत्पद्विजीत्तमान् ॥ उप्यवित्तयुपादायमायाभ्वित्तप्रकीर्वितम् ॥ ८१ ॥ तस्मादेषु समस्ताना भारपः सू तोभविष्यति ॥ नागराणाहिजेद्राणामयान्यः मार्छतस्तया ॥ ८३ ॥ अध्यभभृतिचानेन्य स्वधेकरिष्यति ॥ सोपिबाह्यश्वसर्वेपानागरी णाभविष्यति ॥ २८३ ॥ मोजनवाधपानीययस्यसप्पनिकहिचित् ॥ करिष्यतिचसोय्येवपतित सभविष्यति ॥ ८४ ॥ पापीकी ग्रुदीनहि है

अध्यानमेचे एक चढराम्मा आह्मणाने कह्माकिपुरम्बरणसंघमीकेत्रत करनेसे इसका पापस्य होनेगा सहयात सनते पुत्र आह्मणाने त्रताचरण करते सुद्ध होगया ७८

न्यपने धनमेसे छ हाभाग चडवामा कु दिया तब नागरबाह्मण कोपायमान होपके बह्मसभामे बेठक विचार करके एक मध्यस्थि पुरुषके मुख्यसे चढवामी कु स्रोर दूसर कुकेहला भेजा १८ कि चडरार्मा ब्राह्मणाने नोभके किसे सब बाह्मणोका विश्म्कार करके पुष्प ब्राह्मणाकु धनलेके सुद्धकियानास्ती यह पापी भया ८१ इसनास्तीन्त्र

पने समूहमें से इसकु बाहर किया है जैसा को ई पाछत यूद्र हो वेथेसा जाननाट र आजादनसे तो फोई इसकेमाच सबच करेगा सो भी बहनागर बाह्मणके समूह से बाह्य को थेग

्य सीर यह चड्यामिक चरकु जो कोई भीजन करेगा खेर पानी पीरेगा तो सी वि उसके सगैग्या पतित हो वेगा ८४ ऐसा कहके सब बाह्मण खपने खपने चरकु चले गये तव चड्यामी बाह्मण चिंताहुर होयळ स्रे देव हो मेरेनियित्त वि चड्यामी बाह्मण ज्ञानिमे पतित हुवा है ८० वास्ते सव नागरे के समान हो वे हे सा करें। स्र्य कहते हैं हे पुष्प भक्त नागर बाह्मण एकका भी वचन मिथ्या हो सकता नहि है ८० फिर सबी का वचन तो मिथ्या का हासे हो गा इसवा स्ते चंड गमा वडा पवित्र हो वेगा ८९ परता नागर बाह्मणों के भेदमे बाह्म नागर नाम से प्रथ्वी में विख्यात है

एवम्त्काततसंवेजग्मः स्वंसं निकृतनं ॥ चंडगम पिसो द्वियः पुष्पपार्श्यमागतः ॥ २८५ ॥ वृत्तांतकथयामासद्य शितातुर्भवत ॥ श्राराधयन्त्र नित्रं स्वरं विवर्ते ने नित्रं स्वरं दिनं प्राह्म वर्षे प्रते ॥ ॥ एकस्या विवर्ते ने व्यव्या । ॥ एकस्या विवर्ते ने व्यक्त । ॥ एकस्या विवर्ते । विवर्ते ।

व्य त्रुंणा हका: ॥ २९५ ॥
इसके वर्शन आगं भूमीमें जो पुत्रादिक हाँ होंगे- २९० हो सब राजस भामे मान्य श्रीर पूज्य होवेगे ९१ श्रीर इसके भाइवध सब इसका समागम किरो तोही वि उसके समान होवेगे सूत कहते ही ऐसा सूर्य वचन कहके श्रांतधीन भरे ९२ पीछी पुष्य ब्राह्मण बड़े श्राने दसे चंड रा मिंग चर्रु भएकु नायके ९२ कहता है है मित्र तेरे वास्ती दे हत्याग पर्यत सूर्यका श्राराधन किया वास्ती सूर्य के श्रानुश्र हसे तेरे देहमें पित्र पना निह है २९४ श्रीर श्रागे पुत्र पीत्रादिक जी हीवेंगे हस बही नागरी में जादा गुणवान विरुत्थात होवेंगे - २९५ ६९ ६९

रमकाले पहाले खनकते जोर पुण्यक्षण सरस्तीके तर कपर यहाँ यादा आश्रमकरके १६ तुमेरे साथ श्रपन निवास करेगे और अपने साथओं कोई आवेगे उनोका पोषण मयकक्षण विता छोडवेय १० ऐसा पुष्पका बनन सनते वी नहहाम्मी शह्मण श्रपने भादवसु जनीकु लेके बहनगरक नमस्कार करके बाहासे उत्तरात्रिमुख आयके १० सरस्तीके दक्षिण तह अपर बहास्पान करके रहे जिना राधन करके नगरे बरनामक लिए की स्थापना कियी पुष्पने विषया दिखनामक सूर्य की स्थापना किये १ वह श्रम्मी ब्राह्मणकी साक भरी नामकरके स्त्रीयी उसने सरस्वतीके तह अपर श्रपने नामसे हुर्गी देवीका स्थापन क्रिया

तम्मादुतिसगच्छामोनदीपुण्यासरस्वती ॥तस्यास्तवे निपासाय कतानियाम दिजा ॥२९६ ॥त्यपासह वसिव्यामियेचा न्येतेनुपायिन ॥तान्सर्वान्पायिव्यामित्यजतामानसीन्यया॥१०॥तच्छुत्वाच्छवामीतुस्विष्धुभिरानित ॥नमस्कत्य पुरत्वचन्तरामिमुर्गययो ॥२९० ॥गतासरस्वतीतीरेतस्यादिस्यादिक्तदे ॥स्यानमहत्तर कता शिवमाराध्यमिकत ॥ १९ ॥तिगसस्यापयामासम्परित्वत्यासामित ॥ १९ ॥तस्यापयामासपुष्पादित्यमथापर ॥३०० ॥वाद्यभितिविश्व्यातामा पासीव्यव्यामणि ॥त्यासस्यापितादुर्गासरस्वत्यास्तवेसुमे ॥३०१ ॥तस्यानाम्याचसावेवीमोन्तावात्वभरीभुवि ॥तत्य मृतिपुण्येवसरस्वतास्तवेसुमे ॥२ ॥बाह्यानामागराणाचस्यानजातंमहत्तर ॥पुमयोनममुद्धानांदीहित्राणादिजीत्तमा ॥३॥ चमत्तारपुरस्याचेपत्यान विषयाधने ॥कस्यनित्वयकालस्यविश्वामिनेणधीमता ॥४ ॥वातासरस्वतीकोपात्कता स्वित्वामिनेवा॥३०५॥तत्तरतेनागराबाद्यास्तात्यत्कादूरत स्थिता ॥कादिशी काक्तयाजाताभस्यमाणाक्तराससे ॥६॥कालातरेणसास्तव्यासीत्सरस्वती ॥कदाविद्याव सेत्रेष्ठहायद्ववका रह ॥३००॥ ३ । उसविनसे बाद्य नामदेवका मसिद्या स्वीर उसदिनसे बाद्य नामरोका स्थान पुनपीनाविकसे बोदोत वृद्यित मन्

या १ पीछी कीईक समयमें शत्पनगरके स्थानक के नबीक जो सरस्तती नहींथी उसकु विश्वामिन क्रमीने बापिईया सी ठिपर बाहिनी भई वाहा राह्मस ही होत सानदसे रहने संगे १ भीर बाह्मणोंकु भहण करने संगे तब बाह्मनागर बोस्छानकु छीडके दूर बसेगये बेकादिशीकानागरका मेद सुहासया ६ पीछी कालातर सेसरस्तीनदीफीर स्टब्स्अई अब नागर बाह्मणोंकि सहसद कुछ देवीका वर्णन करने हैं एकसमयमें हाटक हो भने ब्रह्माने पहाकिया ५ ७ तन पांचने कार्ति ही पीणिमा के दिन केलास लंकरें अवसर माहगण आये उने कु देखके र ब्रह्मा में नत्याग करके नागर बाह्मणो मेरे एक मध्य स्थ मुख्यबा हमण कु हुनायक कहते हैं ९ हे ब्राह्मणाध्यक्ष मेरे बचनसे हुम बबनगर मेरे अवसर गोत्र के जो एख्य ब्राह्मण है उनकु कहोकि ३०० यह अवसर माहगण जो है ने एक एक गोत्र में एके के कुल देवी का अहण करी १० और अपनो अपनी जग्गो में कुल देवी कु स्थानक देवें ऐसा ब्रह्माका बचन कतने वें मध्येस्थ ब्राह्मण स ब नागरो कु हुलायके ब्रह्मा का अभिप्राय कह्या तब सवीने मान्य किया पीछी सावित्री के ब्रायसे जब माहगण ब्याकुल भया १२ तब श्री दुवरी देवी कहती है है

तत्रविपंचमेहस्त्रेप्राप्ताः कैलास लेकत । ॥ दृष्ट्वामातृगणारे न्त्र्यण्य शिप्रमाणातः ॥ ३० ८ ॥ तत्र मध्यगमा हुण्सत्वानगरं स् वं ॥ ब्रह्मणंस्वरूणयावाचात्रत्कामीनं तामहं ॥ १ ॥ तंगत्वामयवाद्येन विपान् नगरसंग्वान् ॥ प्रहृ हिंग त्रह्रव्याश्वरूष्ठ य शिप्रमाणातः ॥ ३१० ॥ एतेमातृगणाः म ताः त्यष्ट्य शिप्रमाणकाः ॥ एकेकगं त्रेह्रव्याश्चर् एकेकस्यममाणतः ॥ ११ ॥ स्टे स्त्रेभू मि विभागेचस्थानं यद्वेह्रसांप्रतं ॥ तच्छुत्वामध्यगः सव ना द्वयत्मागरं हेजान् ॥ १२ ॥ यथे त्तं ब्रह्मणा पूर्वत्याच्छ्रश्चते हिजाः ॥ ततः सावित्रिशाण्न व्याकुलेमातृकागणे ॥ १३ ॥ स्थे दुंबर तवे वाच शृणुष्वमहच गत्वित ॥ त्रय्यव शिष्ठु गे देषु भवत्यः स नियं जिता ॥ १४ ॥ पतामहेनहृषेन तत्र प्रज मवाप्सतः ॥ यूयरात्रे चसंज्ञा भे हिस्य प्रवित्र का श्वर् प्रस्ति य स्यात्रनागरस्यत् मं देरे ॥ वृद्धिः संपर्यत्का चेत् विवृष्टान्यं प्रवृष्टा ॥ १६ ॥ तथा यायो वितः का श्वर् हुरहारं समेत्यच ॥ इ दृष्ट्वास्यमाधायस्य पिष्यं तेव तिततः ॥ ३१७ ॥ तेनं च भ वितातृ हि वैद्यानाच्याम् स्वर् । याद्वन्वच्यत्वे त्रिष्टा स्वर् नात्रमा त्रात्या ॥ १९ ॥ इत्कुल मातृका ॥ ॥ स्यू तयच च ॥ ॥

ताउव च ॥ ॥ मातृ गणहे हम कायकु व्याङ्गल हे ते है ब्रह्माने हम छ एकेक गोत्रमें स्थापना किये हैं वाहां तम पूजा सन्मान पावों गो आजरे नागरों हैं घर में विवाहा दिक मगल कार्यमें रात्री हुं हास्य विनोद से तमेरे नामसे पूजा करेंगे १६ ऋीर जो कोई स्त्रिया पुरके हार के वाहा बलि दानदेवेंगे तो हमेरी वसी हं हेगी. जेंसी यज्ञाने देवनान के वृत्ती होती हैं ही श्रीरजी कि विमेरी कही हुई पूजा नकरें गेते उने छ पुत्र मरण पावेगा इस वास्ते है मा त्राण हो हमयहा रही और नगरकी रक्षा करें ऐसी नागर की छल देवी स्थापन भइ ३१९

य्त भरते हैं हो ति क एक बोर इतात कहता हूं कत्मा राजमें ओर बाद में छुत्यान बाह्यण कता १ तब प्रपेक्ति सबसे में छुत्यान कोन है उस अप कहते हैं कि नितने जागर प्राह्मण है वे पेदशास्त्र सम्बद्ध परतु उसमें भम कृती कहते श्वाट कुछ के माह्मण उत्तम है २१ मई यह राजाने बाह्मणी कि मर्पारा स्थापन किपी हैं शीनक पूछते हैं हूं सूत भए कृती बाह्मण उत्तम कामसे मये सी कही सूत कहते हैं एक समयमें रेत्या में पराजय पाया रुद्र को विष्यूके पास जामके पूछते हैं २३ है महाराज लाहा आद्करनेसे सुक्ति होने वो क्षेत्र नवार विष्यु कहते हैं हे इद हाटक क्षेत्रमें

अयान्यमिष्वस्यामि वृत्तात् बाह्मणोद्भवः॥ कन्यावानेनयात्राद्धे कुद्धानो ब्राह्मणोत्तमः॥ ३२०॥ तत्रयेनागराः सर्ववेदवेदा
गणरणः ॥ त्रेष्ठात्ते धिसत्रोक्तात्र्याष्ट्रकृद्धोद्भवः॥ ३२०॥ अर्तृपद्गेनविपाणामपादास्यापितानतः॥॥ अर्प
यज्नुः॥॥ कुरुमात्तेनागरात्र्वताविपात्र्याव्यक्तिः ह्याः ॥ ३२०॥ अर्तृपत्तेनविपाणामपादास्यापितानतः॥॥ ॥ स्
तउपाचः॥॥ वेद्रये पराजिनक्षेत्रेशेगताविष्णु सुवाचहः॥ २३ ॥ यत्रत्राद्धेनसुक्तिर्विनस्त्रेत्रमे समादिदाः॥॥ विष्णु रु
वाचः॥॥ वेद्रये पराजिनक्षेत्रशेगताविष्णु सुवाचहः॥ २३ ॥ यत्रत्राद्धेनस्त्रित्रसेत्रमे समादिदाः॥॥ विष्णु रु
वाचः॥॥ वाद्रवेश्वरनेत्रेत्रक्षेत्रमे कन्यासस्यविष्णु स्वाच्याच्याच्यु द्र्ष्यायः भा च्यु कुरु तेनरः ॥ २४ ॥ अप्यविद्रशे द्रवेषे
विभी सिष्वत्तार्यनि जान्॥ तद्यत्रमभवाविभाष्यप्रवासस्य द्रवाः॥ ३२५ ॥ तप्य प्रसमास्यायवर्तते हिमपर्वते॥
आनर्ताधिपते दीनात् भीतास्त्रसमागताः॥ २६ ॥ तान्यद्शं त्याद्वनगञ्च तत्रस्तान् सचमत्कारपुरी द्रवान् ॥ २३८ ॥
वानप्रस्थात्रमोपेतान् दारुणेतपिसस्थितान् ॥ तदाते पूजित व्यद्वीबाह्मणानिवमञ्चवीत् ॥ ३२९ ॥
क्रियासमानी चर्वदिशी

या अमानास्या उसदिन जो पृष्ठप मित्रसे सप्टकुनी नागर बाह्मणों कु तुवायकं भाव करेगा तो नो न्यपने पित् ओका उत्तर करेगा यो सप्यकृती कोनसे ऐ सा प्रहेगातों ने हाटक होनमें न्यान गोनके न्याड ब्राह्मण पैरा भये पेने न्यानर्त राजा के बात होने के भयसे वो होनक छोड़ के हिमाछय पर्यत के कपर जायके उप तपमर्था कररहे हैं १५ पनीक जलदीसे नायके मादकर ऐसा निष्णूका नचन स्तनते १७ एक ऐरावन हानी कपर बैठके हिमाछय प्रत के उपर गपानाहा वमत्वार सरके बाह्मण गान मस्यान्यम भारण करके तपकर गई हैं उनीक नेरवके १९

इंद्र कहता है है अपीत्यर हो विष्णुकी स्राज्ञासे मय्यहा स्रायाहु तुम मेरे साय हाटक क्षेत्रमे नही ३३० वाहा तुमेरे साक्षी से आद्र करता ह इसवासी स्त्री युत्र सहर्रामान अभि होत्रक् छेके मेरे साथ चली २१ तुमेरा और वाहाके लोक का कल्याण होवेगा अष्टकुल बाह्मण कहते है हे इद्र हम युन-चमत्कारपुर में निह त्यावने वाहा दुसरे नागर बाह्मण त्राच्छे वेद बास्त्र सपत्न है उनोधी साक्षीसे हम शाइकरी तव इद कहना है कि ३३ वाहा ब्राह्मण नो है परंदु देवी हैं स्पोर कितनक द्याही नहीं ३४ वार्स्त तुमनो सर्व गुण सपत्म हो विष्णुने मेरेकु कत्याहै इस ऊपर भीजोश्रापशाष्ट्र करावनेकु निह चलनेके ३५ तो तुमकु शायितकरुं गा

भे द्वजाश्वमयासार्द्धसमागछंदुहाटकं ॥ चमत्कारहरेविष्णोराज्ञयाहंसमागनः ॥ ३३०॥ त्रश्रादंकरेष्याभिह्ष्यद्ये द्वजंत्तमाः ॥ सवालवृद्धपत् काःसारिहोत्रामयासह ॥३१॥ तस्मात्गुच्छ यभद्रवृस्त्रस्यानाभविष्यति ॥ ॥असङ्खल ब्रोह्मणाऊतः ॥ ॥नवयनत्रयास्यामस्यम्त्कारपुरंपुन्।॥३३२ ॥अन्ये पनागगुःस्तिवेदवेदांग्पारगाः॥तेषामग्रेद्धरुत्र द्धतेदेद्रे बाक्यमूब्दीत् ॥ ३३ ॥ तत्र्येबाह्मणा संनिद्देदागपारगाः ॥ अपिते देपसंयुक्तारं पास्ते त्यक्तसे हद्देश ३४ ॥ युयसर्टर जीवेना विषेत्र नामेष्रकी हिनाः ॥ यदिश्राद्धकतेनत्र नायास्य यद्विज्ञेसमाः ॥ ३५ ॥ ततः शापंप्रदेशयां सितः स्माद्रिक्क तसत्वरं ॥इस् काँ स्ते नतेस वैदार्जणसहतत्वणात् ३६क इयपर्यं व की उन्य अहिणाताः त्रार्क्कवे द्विषः ॥ वैजापष्यस म- प्रोक्तः काष्टिक्षोषिके तथा ॥ ३७ ॥ एत्त्कुंल एकं प्रोसे देंद्रैण सहभी देजाः ॥ चमत्कारएरेत वर्गे सकू प्रमाग-त म्॥३८॥ ततः स्मात्माद्धयामास्त्रशाद्धां हे पाँ जशासनः ॥ तदादेवां ऋ पतरः देतस्याश्वयेतया ॥ ३९ ॥ देतस्य हि-णः सर्वे द्वजोपां ने समा क्षिता ॥ एको द्विष्ट हे श्राद्धे देतत्वेन विव जिताः ॥ ३४० ॥

वासने जलदी चलो ऐसा बचन कानते त काल वी आठवी अपनी इंद्रके साथ आपने कर्यप गीत्री १ कें जिन्य गीत्री श्रीक्णशागीत्री १ शाकिवगोत्री १ दिषगोत्री १ वेजाप गीत्री १ कापिश्वल गीत्री १ उ रिकगोत्री १ यह सब बमतारपुरमे गया कूपर्छ ऊपर त्यायक बेठे ३८ तब इद स्नान करके आद्यक्ष तासे देव पित्री जी मतस्तप होगरी घे ही सब प्रत्यक्ष स्तप धारण करके है अष्टक्त बाह्मणमेके पास त्यायके वैवेउसवस्वत इंद्रने एको दि ए त्याद, करते सबदेव त्र्योर पितृगण पेत जन्मसे सुक्त होगये ४०

राक्तराक्तमहावाहो येपाशांद्रकत्वया ॥ तेषयस्वर्गमापनाप्रसादात्ववासव॥ ३४१ ॥ तच्छुत्वावासवोवाक्य्हपै णमहतान्वित् ॥ अहोत्।यमहोतीयेशसमान् पुन पुन् ॥ ४२ ॥ वासम्बनसानिध्यस्यापप्रि त्वाचशकर् ॥ तता हो मावसानेतुतर्पिता द्विज्ञोत्तमान् ॥ ४३ ॥द्क्षिणाया द्दीनेषा आधारस्थान्मुत्तमम् ॥माकूलेसंस्थितंय च दिव्यभाका र्भूपित ॥ ४४,॥ सर्पामेयवित्राणासामान्येन ऋषीत्वरा ॥ ततौ एक् लिकान् वित्रान्समाङ्क्षया व्वीदिद ॥ ४५ ॥ सुष्पा भिन्तुसवाकायां वितारिगसमुद्भवा ॥ अस्ययस्मान्मयादना वृति श्रव्याक कार्किकी ॥ ४६ ॥ लिगवितासमु मृतश्चय नामत्रकारणम् ॥ ॥ अएकुरु श्रह्मणा ऊचु ॥ ॥ नुबच्बिचुं पत्रेष्ठकरिष्यामो बचम्तव ॥ ३४७ ॥ लिगचि त्रीसमुद्ध तैश्चयतामनकोरणम् ॥ बर्म्स्यूद्विधस्वचतंडागोत्यविशेषतं ॥ ४८ ॥ भिस्तंस्वत्यमय्त्रनाश्येत्ससपूर्व नान् ॥ अयुत्मध्यग माहकतानिहिं हैंनेनिम् ॥ ४९ ॥ हङ्गान्यमनसंशककतपूर्वीपकारिण ॥ देवशमां भिधानस्तु विग्यात प्रवरे स्मिषि ॥ ३५० ॥ अहिताफरिष्यामित बिंगलं मुद्र्या ॥ अपुत्रस्यतु मेपुत्र यदियञ्च सिवास व ॥ ५१ ॥ यस्मात्सना यतेपशोयावदास्तसपूर्व ॥ तच्यूतावासवोहर स्तमुवान्वहिनोन्तम् ॥ ३५० र ॥

उसका कारण करों वाकाणा धनर्वताका धन की र धर्मीर्थ जनकास्थान गावडी तताव उसका धन थोडावि खानमे सामातो मात पूर्वज वहाकु हुवा नाहै ऐसा बचन करने हह कामन दूसरे विकान जाने लगा बी देख के इहने उपकार किया है ऐसा जानके द्वीक्त बाढ झामणमेसे एक देव गामा आहमण हात जावके रहकु कहना है २० है इह नुमेरे शिवित प्रकाका कार्यमयच साबुगा परनुमय अञ्चल हु मेरेकु युव जी देवने जिससे आनेमरावश बहरमूर्य तम चक एसा बाह्मणका बनन करने हह प्रमन्न होयके २५२ कहता है है ब्राह्मण तैरेकु अति उत्तम धर्मात्मा सत्यवादी ब्राव्याह, करने बाला देवहच्या बर्म करने बाला ऐसा पुत्र होवेगा ॥ ५३ ॥ ६॥ ॥ ६॥ चीर उसके व्यागं वि नोबगमे होवेंगे त्यव देवाह्म सपत्म होवेंगं व्योग एक बचन दूसरा कहना हु भो कनो ३५४ वाल मडन तीर्थ के ऊपर मयन बहुर्व के जो ब्रह्मा उनकि आजाती लिगस्यापन कियाहे वास्ती चनुर्व के त्यादेव हे व्यरहन कु बाग याम दिये है ५६ इसमें नो ब्राह्मण रहेंग दे मांगलीक कत्यमे इनका आह करके पी छी नादा आह, करने ती उनी कु विद्याहीनेका नहिं वोग नकियों ने विद्याही व्याप्त के बाल-

॥ ॥इंद्रज्ञाच॥ ॥ भविष्टि हुभस्तुभ्यपुत्रीवंशधरः परः ॥ धर्मात्मासत्यवादीचदेवस्वपरिवर्जकः॥ ३५३॥ तः स्यान्यदेतुष्ट्याभ्विष्युनिम् हुत्सनः ॥ नसर्वेत्रभविष्यतिन्द्रूपा्वेद्पार्गाः॥ अपरंश्रुमेवाक्ययन्त्रेवस्यामिसद्विज ॥ ५४ ॥ तथा शृण्वंत विभेदात्मवैयेत्रसमागताः ॥ वालमंडनके तीर्देम् रेति छिर सुन्म ॥ ३५५ ॥ चत्र क्रिसमादेशात्च नुर्व ऋष्रति श्वतं ॥ यामाद्वाद्वारेटसामयार्ववस्य चास्युभी ॥ ५६ ॥ वसिष्यं तिच्ये विष्राष्ट्र दिशाँद् उपस्थिते ॥ ते श्रो द्धंप्रथमं चास्य कत्वाश्रादंततः परं ॥ ५७ ॥ तत्कत्या निकर्षयं ति तती विद्येनव जिताः ॥ बुद्धिः संपद्ध ते तेषां नी चे द्वि इंभिटिष्टति॥ ५८ ॥ मृहिम् से सिनेपुरे अयेदवर्षिते ॥ त्झाम् से स्थिताल्य येत्रांगत्समा हिना । ॥ ५९ ग्वांतरंडनंडेस्नात्वो हिंगमेनत्समा हिताः ॥ यूजे येष्ये तस्यस्तय नैधास्यांतपर गेरि ॥ ३६० ॥ ॥ सूर्रेड चार् एत् दुत्काम् हस्य सः नत्र ऋष्टिकत न देजान् ॥ अन्त कोपसर्क्त स्ततीर्य न म्डर्ग ॥ ६९ ॥ एते. सेम्कुर्लिन्टि स्त कत्र व्यन्ति ॥ कत्र मेस्त न् अपिया मिस्त मृत्य द्र स्वायः ॥ मृम्याक्य द्र प्र छ एने लक्ष्यः द्विज समा ॥ ३६२ ॥ नर्धना संभविष्यं तिनीतापद्दारते स्विलं भक्तानां चप रित्यागएन पांवंदाजा द्विजाः ॥ ३६३ ॥ मडन तार्थं मे स्तान करके बतु

नेक महादेनिक प्रमाक रेंगे भक्ती में नो उनी कु परमगित याम होवेगी १६० सत कहते हैं। इंद्र इतना कहके स्वष्ट आहमण जो सामने खड़े हैं। उनी कुन वचन कहता है ६१ यह सात कुन के बाह्मणोंने मेरा वचन मान्यनिह किया स्वेर छत्तमहै वास उने कु जापदेता हूं ६२ मेरे बचनसे इने कु उन्मी यास होचे री तथापि निर्धन रहेगे स्टीर भक्तीका त्याग करेगे ३६३

रिषुर भीर बोहोत भोजन करेगे ऐसा कहके इब स्वर्गमें बतागपा ऐसे बहनगरे ब्राह्मणों में अष्टकुती बाह्मण उनमकहे जाने हैं अब आगे हासकी बरनत में बो तो हतात भगाही और भैसी वर्तनूक बलरही है सो कहता ह ६५ उसमें पहिसे नागर बनिये की में भये हैं सो कहता हु ३६६ पहिसे गर्न नौर्थायन बास ण जो कहें हैं बोही सब नागर बनिये भये हैं एई के कि सुगये शासिबाहन शकके साल में जाहागीर बाद शाहाकी मनळस में गानेबाला पडा सुणवान् ता न् शान् गर्नेया था सो वीपक रागका गायन करने करते उसके सालापके अवसे जिसबरवत शरीर में साग पैदा भई उससे जलने सगा तब बाद्या का स्विकृत

बूझता नहीं है महार राग सनने में भावती हाति होने शस्ते चारी सुलरन फिरते फिरते बड़नगर में आया ६८ तब नहा नागर बाह्यणों कि स्थिया गायन के लामे निष्ठण फिपासी तान शान्का दुस्त नानके महार राग गाने लिगा मा ६९ तब तान बान् गवेधा महार राग सनने शाल प्यावहें कान्य सिक्त दिल्ली के नाह नाह के पास आपके हतान करा। ३७ आहाणीर बादशाहने कि सारी एक्टी में नागर बाह्यणों कि स्थिया बढ़ी स्पर्ध वान् बोर ग्रणवान् है ऐसा जानके नेस्थियों कु अपने राज्य में दुलाई तथापि ने स्थिया कुछ शाह नहि तब कीपायमान हाथक ७९ स्थापन सेनापनी जो फीजका मालक उसकू बुलाय के कर्या के नेसन नागर बाह्यणों कु मारके ग्रणवानी स्थियों कु मेरेपास लान ३७० तब सेनापनी सेना है के बढ़नगर में स्थाय के स्थिय मंगी परत् बाह्यणों ने स्थिया दियों न हो तब

चडा सुद्ध भया ३७३ उस लडाइ में नागर बाह्मणोका बोहात नाइा भया। स्त्रियोंने बावडी कूर्व तलावमें माणत्याग किये ७४ कितनेक बाह्मण अवकाश देखके -भाग गयं यवनोंने ऐसा निश्चय कियायाकि जिनोकि गलेम जनोर हैं उनोक्क मारना और जिनके गलेमें जनोर्ड नहिंहें उनोक्क खोखदेना ७५ ऐसा निश्चय स्कनके गर्त तीर्ट के बाह्मण सब यज्ञ पर्यातका त्याग करके हम शुद्र हैं ऐसा कहके बड नगरसे बाहर निकल गये ७६ उसवखत साडे चूहोत्तर सो ७४५० बाह्मण श्रुद्र हैं गये ब्रह्मकर्मर्स खूट गर्ट विणक् वृत्तीसे उपजीविका करने लगे और जगतमें विह खाते के आरंभ में खोर देशावर के कागद छिखने के आरंभ में ऐसा ७४

त्वनागर विपाणां विनाशः समभून्महान् ॥ बार क्रूप तडागेष्ट स्त्रियः पाणान् जहुः कित ॥ ३०४ ॥ तड्वा काशमपरे स्थानात्तस्मासला येताः ॥ अत्पदी तेन् स्याज्याः हन्यावेसोपदी तिनः ॥ ७५ ॥ एवं तेषं स्कृतियमं ऋत्वागते द्वाः हिजाः। स्त्रत्यत्क वयं श्रुद्धा द्वुत्का च हिर्गताः ॥ ७६ ॥ सार्द्धेचतुः सप्त तऋ वातान्याप्टस्तुशूद्भ तां ॥ इस् कर्मपरिभ्रष्टाः व णिक् वृत्योपजी विनः ॥ ३०० ॥ द्विसहरू गतास्त्रं भ्यः पट्टने स्मनाहरे ॥ चतुर्दशः वातान्यवगताः सोराष्ट्रदेव के ॥ ७८ ॥ तक द्वाद्वः वात्रामाणां भे देनेवव्यव स्थिताः ॥ दिसहरू स्थितास्तद्व देवोर्द्यार्त्यक्षेत्रं के ॥ ७९ ॥ द्वाद्व ग्रामभे देन तिन कव्यवस्थिताः ॥ दिसहरू स्थितास्तद्व देवोर्द्यार्त्यका स्थिताः सर्वे स्थला त्रिक्यां स्थला स्थल

साडेच्योक्रिका श्रंक लिखते हैं उसका कारण यह है कि हम इस बिहमें या कागद में झूट लिखे में तो साडे च्योत्तेर सी ब्रह्म हताका पाप हो है गा ऐसी प्र तिज्ञा वास्ते लिखते हैं ७७ श्रव वो साडेच्योत्तेर सो मेर्स दे हजार सिद्ध प्र पाटण में गरे वे पटनी नागर भये छोर होदा सो प्रभास पाटन छे जिल्हे में गरे ७८ वाहा बारा गामका जया बाध दे रहें उसकु सोरठीया सबा कहते हैं श्रव बारा यामकाना म कहते हैं पहिला ज़नागड १ मागरील २ पोरवदर ३ नवानगर ४ भूज ५ फना ६ देलवाड ७ पभासपाटण ८ महूवा ९ वासावडा १० घेषा ११ श्रीर दे हजार गुजरात में रहें वो गुजराती संवाक ह गया उसके विवा रागामके नाम कहते हैं श्रमदाबाद १ पेटलाद २ नित्याद ३ चर्ड दरा ४ खबात ५ सो जितरा ६ कन्याली ७ सीनोर ८ धोलका ९ विरमगाम १० सुमधा ११ स्थासी १२ श्रीर दोहजार चितीड गर्ड गरे वे वित्र है नागर भये ८० एसे साडेच्योत्तर हजार जो जनांउ छोड़ के चर्ड गरे रहे उनके पीछे घे है क दिना में

बड़ नगरे आह्मण विगये वे बोह स्थानक के नामसे विस्थात भये ८१ जो बितोड गहमें गर्त आह्मण गये व विमोडे बनिये भये खोर पछि से वह-नगरे आह्मण गये वे विमोडे नागर आह्मण भये पछि तहेतीस गामाका सवध खाने पीने का खीर कन्या छेने दनका दनाने रखे नहि वास्ते यह विमोख आह्मण बनियोका जया जुराहोक रहाई खान तहेतीसगाम कानसेसो कहते हैं पहिछ मोरवा सवाके गाम १२ दूसरे गुजरात सवाके गाम १२ तीसरा पोछकी सवाके गाम सुरत १ दुंगरपर २ वासवडा २ पाटण ४ मधुरा ५ काझी ध्वरानपोर ७ ध्यणहितपुर ८ बाछेम १ खोझा १ इडर ११ डावछा १२ पाटण वगर छ

भोजनादिक सब्ध स्त्यक्त स्तेन पृष्क स्थिता ॥ एनिह्न जसमृहेतु विवाह समयेष्र ॥ ८३॥ ओयलीमस्तके भृ त्यामात्वद्वीनयिति ॥ कत्वापाणि एहं पश्चात्कुलद्वी मधुजयत् ॥ ३८४॥ भिस्तेरंगम्याससस्त्रपादीपोप्रि स्थित ॥ विणिक् एहं विवाहेतुपायजारस्य विधिष्ठाम् ॥ कुषीत प्वविवसेरात्रो देवी मधुजन ॥ पर्पटादिपदायस्य पचपच मसरस्य के ॥ ८६॥ हिरिद्रानारिकेलानि कापसिल वणत्या ॥ ताबूलानिवालाकास्वयटका मोदकास्त्रमा ॥ ८०॥ कपदिका पचसरस्यामाचिकारत्यास्तर्यवच ॥ वश्वपात्रे एहीत्वे वपचजामा तृसंग्रुत ॥ ३८८॥ कन्या ए हित्वासगच्छे हरराज एह्मति ॥ तत्रकन्यास्वहस्तेन पूजाचे वसमा चरेत् ॥ ८९॥ एहित्वामगल वस्त्रपुन स्वयह मात्रजेत् ॥ दिग्सज्ञाविवाति सज्ञादुर्गस्यानोनिवचते ॥ ३९०॥ भोक जुदाहे और करत बग्ण प्रकाशि यह-

तीनो गाम एकी है पहतीनो सथामे गाम ३३ समें सब बडनगरोका भेवहें ८० अब विनाबकी ज्ञातीका विशेष बर्णन करते हैं विनोब बाह्मणों में बिबा हमें पर राला शिरपर आपही कहते लाह पीछि हिर तीनो रंगकी रेशमी नापने कि हवी चिरिसी लायके बापके सुसरे के परकु आना इस्त मिलाप होते नग बरकी मा सामने आने नहि किर पाणि प्रइण हुने बाद पर कन्या दानोंने की बु कहते कुछ देगीका पूजन करना उसकि रिति ३८४ मीत के उमर रंग की ७ मूर्वि निकाल के बसके सामने दीप वो रसना उस अपर भातुका पान टाक के दोनी बर कन्या उसके ऊपर बेट के पूजा करनी चिनो के बात यो के परमे विवाह के पहिले दिन राजिकु पाय जा नाम करके कुछ देवी कि पूजा करने हैं उसका विधि बशपान में पायह जाड़े २५ उसमें ६ मादे ६ कुकु लगा थे हुने ६ जीरे के ६ धिन यो वा दाल के एसे भीर पायह बारीक ९५ सेनर में उहुना २५ राजिकी १५ उहन के बेट २५ वी है पान के २५ शका का २५ नाही पत्त ५ पा

नीके लाखके ५ केडिया ५ हलदिकिगाठ ५ निमक शेर । कपाससेर - कुकुम नावल पूजा नेवासी यह सब पदार्थ छाबमे लेके कन्या सहित पान जवाईवर-ं परकु यावे उनो कु एक एक नारियल देनावाद सपैदवस्न कन्याङ लिंदिके कन्याके हातसे पूजा करवाना बाद मगल पाद ही १ श्रीर मिठाई सेर १ कन्या के हातमे देना पीछे कन्या श्रापने चरकु श्रावे ऐसी रीति श्रानेक है श्रीर नित्रींड बिनयोंमे दसा विसाका र्द निहि है ९० श्रवनागर ब्राह्मणोका मेद कहते है पहिले बोहोत्तेर गंत्रिक ब्राह्मण जी वडनगरमे रहे हैं वे बंडेनगरे ब्राह्मण कहे जाते हैं उनीमे भिक्कक नागर श्रीर यह स्थानागर एसे दो र्दसे कहे जाते हैं ९२ श्रव विसल नगर ब्राह्म

अष्टनागरि प्राणां भेदं वस्या मि विस्तरात् ॥ पूर्वोक्तगोत्रजा विपा चे बुद्धनगरे स्थिता. ॥ ९१ ॥ ते बुद्धनागरा विपा विरव्धा ताधरणोत्त हो ॥ भिक्तकाश्च गृहस्याश्च वस्येया पि हित् यकं ॥ २९२ ॥ प्र येराज चरेत्रोक्तं विसलस्य कथानकं ॥ श्वास्ते हिस् लदे वे चे रे राजार जरे दे शक ॥ ९३ ॥ प्र विश्व हुत्तर न व बाते वा जे च वे कि मे ॥ स्वनाम्नानगरे स्ताय इं रके न पोत्तमः ॥ ९४ ॥ तद्ध पागता विपान् नागरान् वृद्ध सज्ञक न् ॥ द हिणांदात् मारे भे राजा मे समाकुलः ॥ ३९५ ॥ न कुम हो वयं सर्वे राज्य व विपान् नागरान् वृद्ध सज्ञकत है गृह तां ॥ ९६ ॥ द ह क्वा न तस्त लाग्नाम नाम ज ॥ तं वृत्त विपान स्वाय विपान विपा

तिरवी है गुजरात देशमे विक्रम संवत १३६ के साल में विसल देव नाम करके राजायाउसने अपने नामसे एक नगर बसाया और पापसे मुक्त होने के वास्ते वाहाय- इकिया तब वोयझ देखने के वास्ते बड नगर से बड नगर बाह्मण आर्य उर्न कु देखके राजा र्यमसे दिसाणा देनेलगा १५ तब ब्राह्मण कहने लगेकि हमदान लेते निहं न वराजाने कह्या कि दान दिसाणा निह लेते तो ताबूल ग्रहण करो १६ एसा कहके विसल नगर गाम का नाम पान में लिखक बीखा ब्राह्मण के हात में दिया १७ ब्राह्म णाने बीखा खोल के देखें तो भीतर गामका नाम देखके बिचार किया कि बलात्कार से प्रतिग्रह तो होगया। अबस्ती कार करना अवश्य है एसा निश्चय कर के विसल नगर का दान लिया और उसके संबधी वाहा आयके रहें वे नगर सिद्ध पुरसे दिन एको साल को सके ऊपर है बड नगर पूर्व में पाच को सके ऊपर है किर वे दिन से वि

सारोद कृष्णा सालोर पामाणा भितयतत ॥ व्दी विसल देवो वे ब्राह्मणाना विशेषत ॥ ४०१ ॥ तत प्रसृतितन्नाम्ना विरयातास्य भवन्दिणा ॥ आवारा दिप्रभेदेन पृथक्षेन स्थिता ऋते ॥ २ ॥ वात्यनागर भेद्यपूर्व मे प्रभी तित ॥ वह वाम्मी ब्राह्मणाव्य प्रथाविमस्ययोगत ॥ ३ ॥ स्वान्य ज्ञाति विमस्य कन्याया ऋपित प्रहात ॥ वारहारष्या ज्ञातिरेका स्यन्त कमी विशेषत ॥ ४ ॥ म्यो त्रराणा भेद्यपूर्व मुक्त स्यविस्तरात् ॥ दुर्वीसस सुशीलस्य मे यो तरक्यान क ॥ ४०५ ॥ कादिशीक ममेदा विभागार प्रथम ॥ सर्वेषेते प्रश्रेष्ठी विभोत्य सुकु हो द्वर ॥ ६ ॥ वतुर्विति गोचाणा प्रवित्तेषा दि ज्ञाना ॥ दोनिमणितमये ततो द्वादशागो न न ॥ ७ ॥ विभागता ऋको स्यावेशेषास्त्र मिति ॥ गोनाणा मवरा-णाचिनिणित्य कि स्कृट ॥ ४०८ ॥ दृश्य प्रवराष्या ये विस्तरानी स्यते मया ॥ एषा भोजनस्व थोकन्या स्व थएवच ॥ ४०९ ॥ स्वर्गिषेव भवति भोजनक्ष चिदन्यथा ॥ इते श्रीवाराणा वैचोत्य तिर्विणिता मया ॥ ४००॥ ॥ इति श्रीवाह्मणो सिनिमार्तिहाथ्याये नागर ज्ञानिभेदवणीन नाम मकरणं॥ ४॥ प्रवृतिद मध्ये गुर्नर सप्तवय ॥ ६० ॥ ६० ॥

भवपर गास मागरीसे वारव नागर नाम करके एक साति पैदाधद है उसका कारण यह है कि अन्य साति के ब्राह्मणकी कन्या के माय विवाह करकेपी जें सा तीम वड देके जो रहते हैं विशेष करके ब्रह्म कर्मसे जो क्टापे हैं उनोका वहा हाल में प्रिक्त रीतीसे चल रह्मा है वे बारह मागर कहा जाते हैं ४ अब प्रभोत्तरे नाग र ब्राह्मणोका मेद पहिले कर्या है द्वीसा क्षीने देनमंदिर वाधनेके बारते प्रभीका प्रभावित्य होताल ब्रह्म कार्या उसके वहामें जो आगे ब्रह्मण मधे वे सब मभोत्तरे कहे जाते हैं दन क्या ऐसी है कि अहिल्झ माम में रहने बाला एक ब्राह्मण वैशानर कृति कला रसने में समिक एक के घरमें रहा बाहा सवीमें एक सहस्म श्रायक घर वाले के बाल क है गया तब घर वाले रोने लगे इतने में यह बाह्मणने स्थपने विद्या सामर्थ्य रे रासस कुमारके बाल क कु नाया तब पिकान कहने दुर-का हरण किया वासी प्रमून हर भागर भारे उनो छु हाल में भमीरे कहते हैं ५ स्वीर बाह्म नागर में का दिशीक भेद भयाहे वे प्रसारे समवते हैं पह सब मंद कह उन में अह कुछी बड़ नारे हैं वेउसम कहे जाते हैं ६ पहिले क्षेत्र स्थापना करने की बरवत बाह्मणों के गीन ८४ ये उसमें में बारा गीन रवडा यते बाह्मणों में गरे हैं वा कि ७२ गीन प्रवरका निर्णय नागर का प्रवराध्याय नाम करके प्रंय है उसमें देखले ना ८ प्रवराध्याय के स्थार भ में ऐसा लिखा है कि आ महान द पुर महा स्थानी य पंच दशा जात गीनाणा सबत २८३ समर्थ पूर्व तिष्ठमान दिससित गोनाणा समान प्रवरस्य निवध वास्ते वो ययम गोन प्रवर निर्णय है स्थव यह पूर्वीक जी नागर ज्ञा तिके में द कहे हैं उनोका परस्पर भोजन सबध स्थीर कन्या विवाह सबध स्थपनि स्थपनि ज्ञातिके समूह में होता है कारण स्थान कम्मूह में धर्म न्नष्ठ ला होने लगी यो क्या नागर खड़के १९३ । १९५ वे स्थयायों में हैं और हीनवर्ण ग्रास क्यातरसे ज्ञाति में सबध करने लगे वास्ते पछि उनीने वर्व वस्त किया कि भोजन स्थीर कन्यादान स्थान स्वर्ण विना दूसरे में नहीं करना ९ परतु भोजनका यो छा केरफार है जैमा निल्ह पर परणों में बड़ नगरे विसक्त गरे परस्पर एके कके घरकु पानि पीत निह हैं सुरत में पानि पीत है दिस्त है बहा महे सूर निल्हे में भोजन व्यवहार है ऐसा विलक्षण व्यवहार है पर्न जिसमें वर्म रहे वो बात करना सुरव्य है ऐसी नागर बा हमण बनिर्याका उसति भेद वर्णन किया ४०० इति नागर भीद वर्णन नाम प्रकरण १४ सपूर्ण भयार

व्यक्तमाराणा गीच प्रश्निमान्य

			श्रय नागराणा गाः	<u> अभवरामण्य-</u>	प २१०					
स	अवटक	गान	मचर	गेद	कारिया	देवी	गण	देवना	भागजण	इार्म
9	दर्वेपचक	श्राह्ण	बबिास झाकिपाराधार	य	मा	भागरी	खाग्यला	हरकेम्बर	५झालापारण	शंम
3	दये	कापिष्टल							ড	गोत्रदर
3	मेतानलस्वा	श्रल माण	वशिष्ट को डिन्य मेत्रा परुण १	य	मा					दन
४	पंड्याभूधर	भारहाज	भारद्वाज स्रागिरसवार्हस्पत्य ३		न्या					नान
प्	·····	गार्करास-	भगुच्यवन श्रास्चानी द्वर जमद्भि ५	平,	श्रा					मित्र
فع	<u> वासमी दासाके</u>		गोनम त्यागिरम त्योतच्या ३	च	मा				90	दत्त
S	जानि	<u>गार्च</u>	यगिरसभारद्राजवाबसत्य चवनगगिति ५						ų	शर्म
=	त्रगांड	कींडिन्य	बिशिष्ट को डिन्य मित्रापर णेति ३	सा	की					वत्त
_			विकास समापा						<del></del>	<del></del> -

दात ऋषकुळ बाह्मणा

सल नगरे बाह्मण नामसे विख्यात भये १९ उनोमें सवाबों है एकबीस नगरा रूसरा भागवाया कहा। जाते हैं दनोमें फल्या परस्पर वेते नहि ४ फिर न्योर भिसलदेवने बाह्मणों के सादोव रूक्णोर सालोर एसे तीनगम बीढें में वानदिया । उस दिनमें सादोवरे नागर रूपणोरे नागर सालोरे नागर एसे नामसे बिन् रत्यात भये भावपह सब बाह्मण पहिले बढ नगरे ये परतु खालार भावता के योगसे म्यपना न्याना जवाबाद के हुदे हो गये हैं खपनी भाजार भवता खपने हु भाह्मपढ ति नहि है । अब बाह्म नगर बाह्मणका भेदतो पहिले प्रणानामाणकी सुदिके निमित्त से जब बास्मनि स्थापन कियी वो बाह्म नागर कहे जाते हैं ३

ष्यवम्ह बाह्य नागरो से बारह नागर नाम करके एक झानि पैदाभइ है उसका कारण बहु है कि अन्य झानिके बाह्य लकी कन्याक साथ विचाह करकेपी छें झा तीम दड़ दें के जो रहते हैं विशेष करके बह्य कर्मसे नो खूट गये हैं उनोका वहा हाल में द्वीक्त रीनी से नलरह्या है वे बारह नागर कहे जाते हैं ७ स्वय मधीनरे नाग र बाह्मणीका चेद पहिले कह्या है दूर्वाला क्रपीने देवमदिर बायनेके पत्ती प्रवीक्य मधिक्य है तब सुद्वील बाह्मणने उत्तर दिया उसके बहा में जो आगे बाह्मण भ्यव सब मधानरे कहे जाते हैं दनक्या ऐसी हैं कि साहिल्य बाम में रहने बाबा एक बाह्मण देशानर कृति कला रसते में सभिकु एक के बरमे रहा बाहा समी में एक सहस्त यायके घर वाले के बालक लेगया तब घर वाले रोने लगे इतने में यह बाह्मणने अपने विद्या सामर्थ्य रे रास्त सुभारके बालक सुलाया तब पिकान कहते हुए का हरण किया वासी प्रमुन हर नागर भये उनोक्क हालमें भयोरे कहते हैं ५ स्थोर बाह्म नागर में को विशोक भे द भया है वे प्रमीरे समवते हैं यह सब में द कहे उन में अद्युद्ध वि बहु मारे हैं वेउसम कहे जाते हैं ६ पहिले हे अस्थापना करने जो बखत बाह्मणों जे गोज ८४ एं उसमें से बारा गोज रव खायते बाह्मणों में गये हैं बा कि ७२ गोज प्रवरका निर्णय नागर का प्रवराध्याय नाम करके प्रयहें उसमें देखलेना ८ प्रवराध्याय ने सिरा है कि श्री मदान द प्रशास प्रयानी य प्रवर्श वात गोजाणा सवत २८३ समर्थ पूर्व तिष्ठमान हिससित गोजाणां समान प्रवरस्थ निबंध वास्ते वो श्रयमे गोज प्रवर निर्णय है अब यह पूर्वीक्त जो नागर हा तिके मेंद कहे हैं उनोका परस्पर भोजन संबध और कन्या विवाह सबध अपनि अपनि ज्ञातिके समूह में है ता है कारण अनेक समूह में धर्म प्रवर्श के श्री विशास के पानागर खडके १९३ । १९५ वे अध्यायों में है और हीनवर्ण ग्रस स्पातर से ज्ञाति में सबध करने लगे वास्ते पी खे उनीने वर्ष वस्त किया कि भोजन और कन्या दान अपने सवगे विना दूसरे में नहीं करना ९ परत भोजनका थोखा फेरफार है जैसा निल्ह बाद परगणे में बढन गरे विसक्त गरे परस्पर एक के के घरकु पानिपीते निह है सुरत में पानि पीर्त है दक्षिण हेवा बाद महे सूर जिल्हें मे भोजन व्यवहार है ऐसा विलक्षण व्यवहार है परत जिसमें धर्मरहे बीबात करना सुरव्य है ऐसी नागर बा हमण बनियोंका उसित भेद वर्णन किया ४९० इति नागर भीद वर्णन नाम प्रकरण १४ सपूर्ण भया

वाषानामाणा मीच प्रतर निर्माण कर्म

			ऋथ नागरा प	गात्र प्रवरा	गण अर	<del>१ २१</del>					
स	श्र्यदक	गोत्र	<b>भ</b> यर		चेद	द्यारवा	देवी	गण	देवता	भागजण	शर्म
9	दर्वेपचक	श्रीस्ण	विशिष्ट शक्तिपाराशर		य	मा	भागरी	खारवला	हरकेम्बर	५झालापारण	शंम
3	दये	कापिष्टल								v	गोत्र२२
3	मेतातलखा	श्रद्धभाषा	विशिष्ठ की डिन्य मैत्रा ष्ठण र		य•	मा					दत्त
8	पंड्याभूधर	भारद्वाज	भार द्वाजन्यागिरसंबाईस्पत्य ३		<del>7</del> 74	न्प्रा					नात
4		<b>गार्कराक्ष</b>	स्यच्यवन आस्वानी द्वर जमदिन ५		<b>平</b> 、	श्रा					मित्र
ध्य	वासमी हासा के	गीतम	गीतम ऋगिरस स्थीतच्या ३		य	मा				90	दत्त
ত	जानि	गार्ग्य	श्रंगिरसभारहाजवाबसत्य-यवनगरोति ५							ч	शर्म
5	त्रवाडि	की डिन्यः	ग्रिक की डिन्य मित्रापर णेति ३		सा	की					वत्त
			विकास का सामा								

इति अष्टकुल बाह्मणा

श्रय रपडा यता विभ वणि गु सति भकरण

मान सरायने बाह्मण और बनियोकि उसचि कहते हैं जीनक प्रथा करते हैं है खुत उसम मनकु न्यानद करें वैसी एक कथा वर्णन करो निसक्षाके अपण फर्नेसे कोट्यर्फ भगवान् मुक्ति दायक होने १ सीर कोट्यर्क मगयान् कोन वेगहे सीर कोनसे देशमे मतिश्वित है सी कही सूत कहते हैं पूर्वी कल्यात की बखत वि प्युके कानोसे मशुक्रेटम, बोनोर्वेस उसन होते मये १उन हो नोकु मारनेके वास्ते विष्युने कोव्यके का रूप पारण किया वो कोव्यके क्या देखते हैं वे बोनो देख नाहा पार्च 3 उसपरवत बहुत भयसे खक्त होयके विष्णुकु नमस्कार करके कहती है है कोट्यंकीश यह तुमेरा स्वक्ष पृथ्वीमें मेरे करके स्थापन होता है थ राजरात देशमें

॥ न्याय रषडायना पिमन्षि गुस्तिसारमात् ॥ उक्तचपाची कोट्यकी माहात्यो ॥ ॥ शौनकउवाच ॥ ॥ स्तस्त महाभागकथा वदमनोहरा ॥ यस्यावैश्वयमाणाया कोट्यकी मुक्तिदायक ॥ १ ॥ कोट्यकीन मकोदेन कस्मिन्देवी म तिसित ॥ ॥स्तञ्जनच ॥ कर्याते विष्णु कर्णाभ्या मुस्तिनी मधुकेटमी २ तीह तुभगग्र न्यूणु काट्यक क्रूपमा भिन ॥ कोट्यक स्रपट है बना हु भी निध्न गती ॥३॥ तदामसाभयान्युक्त्स्तिवाचविश्वनेदा ॥कोट्येकेवास्त्रुक्षपत्रेश्विसस्याप्यतेम्या ॥ ४॥ साजनमत्यास्तरेरम्ये सुनीरेविषयेमहत् ॥ तत्रत्वसदेषेत्राक्षपाकृत्वाममोपरि ॥ ५ ॥ कोट्यकेइतिनाम्नविसरी होकेषु विस्कृत ॥ भगवात्वाच ग्रु॥त्वयातु चितितकायत्तुसर्वेमिवृष्यति॥ ६॥साभ्यमत्यास्त्रदेत्रीयसन्निधानमयाकृतः॥ क्रोट्यकेइतिनाम्नात्वेम्नु िस्यापमाद्तात् ॥ ७ ॥ स्वैत्नान्येत् भुजास्वेत्माल्यानुलेपनी ॥ आग्यस्यतुसुग्स्येवत्वसूर्तिपरिकल्पय ॥ ८ ॥पार्ष वीतन्नसस्या्च्योक्तनदन्द्नाषु मी ॥ कार्तिकें सुक्षमेनु एकादृश्याशुभेदिने ॥ ९ ॥ सूर्यपारे क्तनस्त्रेत्रहजातस्तदास्तन ॥ हा दरमाता कुमी देत्यी मनो निधनमापतु ॥१०॥ साध्यमतीकै तर ऊपर वाहा साथ कपा करके बास करना ५ को व्यर्क (का ट्रास्कु )नामसे सबसी

कुमै विस्मात हो भी भगवान् कहते हैं। हे बह्मा तुमने जो विचार कियाई सो सब होवेगा ६ सा स्मनतीके तर अपर मयने गाहा मेरा धशारखाई तुम कोट्यर्क नामस मेरी प्रविका स्थापनकरी ७ स्वेतवर्णका पुरवारविव्सेत श्रुजा स्वेत चवनसे बर्चित ऐसी सत्ययुगकी पूर्तिकी कल्पनाकरी - स्वीर मेर्ट्रारक बहुत् वौनी तरफ न्यू सुनद पार्षद गणकु स्थायनकरो कार्तिक सुकू एकावनी के दिन ९ रविवार अभनसम्बद्धादिन मय मकट भया हु सीर हावनी के दिन ने मधु के र भवी नो वेंस्य नावा पार्य है र

इसवासं वी हादशी रेष्णवी तिथी उत्तम कहते हैं उसदिन बडा उत्सव श्रीर विस्तार से मेरी बूजा करना ११ ऐसा विष्णुका बचन स्कनके ब्रह्माने कोट्यकेश दीवडी ब्रजा किये स्त कहते हैं हे शीनक हो उस उपरात कोइ समयमें वी तीर्ध में श्रीक महष्य श्राये १२ मनुष्योंने स्नान करके कोट्यकें शाकु नमस्कार किया उस बरवत उन कु होने के वास्ते विमान समूह मास भया १३ वी श्राश्चर्य वेरवके राह्मस विमानोट्ट खेबने वाले मास भये दशदिशा मेसे दें उने ठरे १४ तब राह्मसी ट्र वेरवके ये मानव सब गण पतिका स्मरण करते भये उस बरवत गणपति पकट होयके राह्मसी इस मारे १५ विमानो में बें वे हु वे मानव सब वे गणपतीका स्तवन करके मासादर मं

अत-सादादक्र छावेषाद ति थेरुक्त ॥ महीत्सवस्तरक यो मत्यूजाचस्त विस्तरात्॥ ११॥ एवं देषा देवा है वहत्वातरी वहत्वान् विधि,॥ ॥ सूतउवाच्॥ ॥ ततः इदा विस्तर् धेमानवः समुपागूताः॥ १२॥ तेसूरमानं कृतंत्रकोक केशो नमस्कतः ॥ ततं विमानसंघक्तानं हु सहप्स्थितः॥ १३ ॥ तदृष्ट्वाम् इदा ऋदेराष्ट्रासास्त्रहप्स्थिताः॥ तसेदेपद्वता दिग्यये विमानाकषेणोत्हकाः ॥१४ ॥ तांस्ट रङ्घामहोसातान् गणपतंस्र रेश्वती । ततोगणेशः संप्रा सीहतवान् सुसासाश्वतान् ॥१५॥ विमानस्थानराः सर्वेक्तत्वातंगणनायुकं । पासादेस्थापयामासुर्गणेशंदु रवनाशकं ॥ १६ ॥ ततस्ततीराणेशक्तिमयास्या त व्यम्ब है।। इत्युक्तास्वर गान्तान्वेत्वेवांतरधीयृत ॥ १७ ॥ तंब कृतायहायूजाक् कर्कस्यमहात्मनः ॥ खंडपूर्वे दिजेसेवेः रें ण्वेश्वमहात्माॅभिर् ॥१८॥ ततस्तरमन्महात्रेष्टे हरुमान् भुदेस स्थितः ॥ एरावेश्वाह्मणः क् ऋदेदवामें ति विश्वनतः ॥१९ ॥ तोर्थयात्राःत्रकुर्वणोत्राप्तः सारखतंतरं ॥ तस्मन्सरस्वते तीरेदुर्गामंबाप्रपुष्टच ॥ २०॥ तते लोके हरवाच्छुत्वाके कर्कत् ९ हत्तमं ॥ तत्रगंद्धमनश्वके दूरं द्वादशर्य जनं ॥ २१ ॥ पादयोनीस्तिनेशक्तिः केकर्तव्यमतः परं ॥ यादेवोसर्वे सूते हुशक्तिक्त दिरमें) स्थापन करते भरं १६ तब गणपती स्वर्गमे जाने वाले मानबोद्ध इस क्षेत्रमे मय रहुगा ऐसा कहके ग्रम भर्ये १७ वाहारव

ड शब्द है पहिने जिनोकु ऐसं जो खडायते ब्राह्मण श्रीरखडायते वैष्णव बनियोने कोट्यर्क की महापूजा किई १ टंउस उपरात वे महातीर्थ में हटुमान की रहते भये पू िएक देदशम्मी नामकरके ब्राह्मणया १९ वो तीर्थ पात्रा करते सरस्वती नदीके तट ऊपर श्रायाः वाहा दुर्गा देवी को पूजा करके २० पोछे लोक के मुखसे की ट्यर्क तीर्थ का महिमा श्रवण करके बारायोजन दूर है वाहा जाने का उत्साह किया २१ परह पावमे शक्ति नहि है कैसा करना जो देवी सर्व प्राणि मात्र के बीचमे शिक्त स्पसे रहती है २० वे देश मेरी मनकी शन्दा पूर्ण करने छु पोन्प है ऐसा देनीका सावन करते देशीने इनुमानकी स्मरण दिशा २३ तम इनुमान नमस्कार करके सामने स्थापन करते रहे तब देशी कहत है है इनुमान मेरे बचन स्वणकर वेदरामी जो झाइमण है २४ वो पापसे यह हीन है बास्ते थे आहमणी चमकु है के के क्यू फे तौ पैने स्थापन करो न्योर तुम्पी बाहार हो २५ उस ती पैने जो तुमेरी पूजा करेगे उनोका कार्षे सिद्ध होने गा ऐसा कहके देशी स्वत्यान भई १६ तब इनुमान जी मसन्त होयके वेदरामी झाइमण कु है के सणमापने को क्यू ती पीने साथे २० वेदरामी बाहा ती भी काते को क्यक भगवान कु नमस्कार करके बाह्म सकार करके बाहमान जी कि स्वर्धि म

निशाहिये २० और श्री हिकाने विश्व क्या स्वादिका स्थापन किया निसाहिकाने शिर श्री क्या क्या स्थे १९ वासी क्याले स्थापन के क्याले स्थापकर अपनुम्हरी दीक्षित नाम करके श्री प्राप्त से धनकान् भया और द् सरी क्या कहना हु १ सूत कहने है है सीनक। पूर्वी और एक धीर करके श्री प्राप्त ममयमे वह नगर करके याम है गहा स्थाप ११ वेट शास्त्र के जानने वाली नी नी में कुराल आचार सपन्त ऐसे नागर श्री हो नगर सामाहे १० सो धीर श्री होण सब नागरी कु नमस्कार करके याना कि विधि करण हाटके स्थर महादेव-की हमा करके १९ स्तृति करताहै है हाटके स्वर तुम अरणागत के भय दर करने वाले है ३४ मय दरिद्र से व्याम मया हु रात्रीकु निद्रा नहीं है क्ष्या तुर पुत्रा दिकों से मय सदा पीडित हु ३५, व्याप जानी से वा पिगेध भया है विद्या विवाद से व्यन्छे मनुष्यों कि चुद्धि नष्टहोती है ३६, वृद्धि नाअ के योग से हम सव नष्ट हुं है इसवास्ते हे भगवन् आप के वारणागत व्याया हु ३७ स्त कहते है ऐसा धीर बाह्मण का बचन कन के महादेव कहते है हे बाह्मण मेरे ब्यह्म इसे तेरे कु करव ह वेगा ३० को व्यक्त तीर्थ में वास्ति पहिले तुरंश प्रवारह बाह्मण का समागम मयन किया छ र वं सभार यज्ञ करने के वास्ते मयन वचन कह्मा ३० हे धीर बाह्मण को व्यक्त तीर्थ में तेरी ब्याज्ञा से पहिले तुरंश प्रवारह बाह्मण का समागम मयन किया छ र वं सभार यज्ञ करने के वास्ते मयन वचन कह्मा ३० हे धीर बाह्मण को व्यक्त तीर्थ में तेरी ब्याज्ञा से

नृतस्तंत्रचकारायसधीरं ब्राह्मणं त्रमः ॥ हाट्जेशमहादेवपपन्मभयभंजन्॥ ३४ ॥दार्ष्ट्रेणा मिभूते सि न्द्रांनेवल भेनिशा एत्रा दिनी प्रितम्बह् सिपासाकुले सदा ॥ ३५ ॥ असमाक झानिक साद विरेधे हिमहोन सूत् ॥ विदावा देनभ देवर दिन्धामन विणा ॥ ३६,॥ इ दिन्। शास्त्र के बयसवेमहे त्र्यर ॥ एतस्मा त्कारणा इहन्त्र महं शेरेणगत ॥ ३७॥ ग्रेंत्रेवाच ॥ ॥ एतच्छुत्वांम्हाँदेवं भगवान् भक्त वत्त्तत ॥ उवन् भी माम्रह्ने मत्मसादा्रेकरेवत्वे॥ ३८ ॥ कीन त्यर्इतं भूँभेटतांसमागमे ह शादैशानां हिम्याकत छ्रा॥ तस्मिन्समारं म्मयूज्ञहेते मयातनश्चीक्त मिदंवचे महत्॥ ३९ ॥ कं स्यर्जितोधीमम्बह्मह्त्यायज्ञकत्रत्ते विनादामागना ॥ त्वदाङ्यय्ज्ञविधः कृत्महान्यस् निविने नमया इर्रिणा ॥ ४०॥ उक्तामयावर हुक्ते है यता हु यूरे पितूं॥ तत भवत सह पि वच हैं व स्थिता ऋरें॥ ४१ ॥ ततस्त बाह्मणा सर्वेस्त्रिया मधुंगृहेगताः ॥ताभि सार्द्धराष्ट्रेसम्बर्देषुन एनः ॥ १२॥ तत सर्द्धनाजाताखडायते तिसंद्भा॥ तस्माद्भवह्या जा न्रिंदुइन्तिनामच ॥ ४३ ॥ अष्टाद्याना विप्राणा हे हे हुप रचारळे ॥ वडनगर दाने इ दत्ता वेह ही सच्छू द्रीसे वकी प्र क्ते त्ये जेकस्य दिजस्य न ॥ ४४ ॥ मयने प्रसन्न वित्तसे यज्ञविधि किया उसरे मेरी ब्रह्म हत्या नारा पाई ४० पीछे मयने हुम्कु क्त्या कि इन्छि

त वरदान मंगे उस वरवन हम सब विचार करके योखी वरवत वाहा बेंगे ४१ वाद सब ब्राह्मण त्र्यपनी त्र्यपनिस्त्रिय हु पूछने के वास्ते घरकुगरे स्त्रिय के साथ वारे वार स्वटपट करने हुने परह मगने का निश्चय निह किया २२ उसका कारण से खडायते नाम करके ब्राह्मण भये इसवास्ते तुमेरे वशमें जो उसन्त होवें ने दे खडायते नाम से विख्यात होवेगी ४३ तुम जो त्रावरा ब्राह्मण होसी तुमेरे सेवक सच्छूद्र एकेक ब्राह्मण कु देदी बडनगर से इलायके देता हुं ऐसा कहके दिये ४४

भीर कहते संगेकि एको तुमकु मधने सन्धू इ सैक्कदिये हैं। वैविख्यायमें बनिये मधने कहें। स्यो खायने बनियोमें जो विवाहमें विधि होताहै। स्रो कहताहु ४५ विवाह ना धिक्रममें वह भक्तपढ़ि मरदत वाल नामक को धान्य है। उसकी उस कावर बनाना घर सानि पूजा हवन करनानि समाक्त कन्याकी घाटा आममें फिरानानिह होहे गमेन्यरा की पूजा करते हैं। ४७ तदनतर हे धीर ब्राह्मण उस होन में विश्वकर्मा कु वृत्त स्थाने नगर निर्माण किया ४८ और मणीक दुन्स बारिय ना सक्त नगर मयने स्थारह ब्राह्मणोकु दिया। उसमें वासकर ४९ जिसवरवत वे ब्राह्मणोकु मधने वर

स्वडायतास्तु सन्बाद्रामयामोक्ता पिना दिना ॥ सन्द्र्ज्ञाणान्वतेषावे विवाह विधितन्यते ॥ ४५ ॥ पोराणिक महामत्रे कर्म्यस्व मे विह्न ॥ दयानिर्देश स्तुमयेवकच्यतेस्व अपना दिजसेवकाना ॥ ४६ ॥ निष्यावरव देस्तु वर्द्दियेयो प्रह्मप्र्जा हवनन वेव सुम गढीकन्य काया धार्मपर्वन ॥ ४७ ॥ ततस्त भा देज अपना रिनित मया ॥ विश्व कर्मा मया इसी नगरत्य कारयत् ॥ ४८ ॥ वस्मिन्छानेरस्य दु रवदारित्या नावके ॥ मयावते दिजे हाणा तस्मिन्यक स्ति ॥ ४९ ॥ यस्मिन्का ले मयाविष्य वरो दत्ती दि वन्मना ॥ तस्मिन्का ले वयात्र नम्द्र निवाह । ५० ॥ तस्मात्त्र वेवस्त व्यक्त पाले । तमते दु स्ववारित्या सर्व नम्पति तस्मात्र । ५० ॥ इसुत्का तुमहादेवस्त वन् । ५० ॥ तस्मात्त्र वेवस्त स्वाह्मप्रह्मा स्वाह । ५० ॥ कोटप के स्वस्ति तस्मात्र विवाह । १० ॥ दसुत्का तुमहादेवस्त वन् । १० ॥ वर्ष वनी सक्व वन् । ॥ १० ॥ वर्ष वनी सक्व वन् । ॥ स्वाह वन्म । ॥ स्वाह वन् । ॥ । स्वाह वन् । ॥ स्वाह वन् । ॥ स्वाह वन् । । । स्वाह वन् । ॥ । स्वाह वन् । ॥ स्वाह वन । ॥ स्वाह वन । ॥ स्वाह वन । । स्वाह वन । । । । स्वाह वन । । । । । स्वाह वन । । । । । स्वाह वन । । । । स्वाह वन । । । । । स्वा

बान दिया उससमयमें तुमने मेरा बबन स्नानिह ५ इसबास्ते वो कोव्यर्क क्षेत्रमें कपार्क मन् बान दिया उससमयमें तुमने मेरा बबन स्नानिह ५ इसबास्ते वो कोव्यर्क क्षेत्रमें कपार्क मन् नजीक कार्तिक मासक बन करनेसे विष्णुबासादिक वेकुठ कुं जाते भय ५२ ए इस्तेनमें नील कठ महादेन स्पितिह शीनक पूलते हैं है सूत सहायने बाह्मणांके गीम किन ने हैं नाम क्या है सी कही सूत कहने हैं है शीनक जनक १ रूष्णानेय २ कीहिक २ विश्व ४ भर हान ५ गार्ग ६ नस० यह सात्गोध खबायने बाह्मणोंके जिनने

७ अव खडायते वृतियोके गंत्र कहत है ५९ गुदाणु गीत्र १ नां वेह्यगंत्र २ मिदियाणु गीत्र ३ नानुगीत्र ४ नरसाणु गीत्र ५ वेदयाणुगीत्र ६ मेर्बाणु गीत्र ७ ॥ ६०॥ म टस्याणुगीत्र ट साचेळाए गंत्र ९ साहिस्याण गीत्र १० कागराणुगीत्र ११ कल्याणगीत्र १२ ऐसी वारागीत्र वनियोक्षे कहें ६१ त्रववाराकुळदेवी कहते हे नेषुदेवी १ गुणम । यी २ नरेम्बरी ३ तुर्या नित्या नदिनी ४ नरसिंही ५ विम्बेम्बरी ६ महिपालिनी ७ ॥ ६३ ॥ मंडंदरी ८ बांकरी ९ सुरेन्बरी १० कामाझी ११ कत्याणिनी १२ ॥ ६५॥ ऐसे-कोट्यक देवेनतथा विवेनकपाल्ना थेन्महे स्वरेण ॥ अष्टदेवो अवस्या मितेषां चेवयथा क्रम् ॥ ५७ ॥ यूवेवारा हिनामातु हि तैया दुर्वरानना ॥ चाहं डाबालगेर चबंह देव हुपचर ॥ ५८ ॥ षषी चसीर रीनामा स्वात्म छंदा हिस सरी। विणे जांच प्रवे स्यामिग जाणि विविधानिच ॥ ५९ ॥ उदानु ग्रेजनादोल मिरेषाणु हुत्यक ॥ नानुनरसाणु भवेत्रयाणु ६ मेव णु सहमंत्र्या ॥ ६० ॥ भटस्यापु सान्तापु सालिस्यापु नथेविहि ॥ जागराणु तथाग्री ने मित्यं वां मकी देते ॥ ६१ ॥ देव्यस्य दाद्रामीका तत्राद्य न्ह्संज्ञा। त्त्रेष्टणम्ड प्रेक्तान्रेम्बर् तृतीयका।। ६२ ॥ त्य नित्य न देने हनर सेंहीन् पंचमी ॥ षषी विस्थे स्वरी प्रोक्ता स समीम्हिपालिनी ॥६३ ॥भूंडोदर् एम देर्ग्शंकर नवम तथा ॥स्कूरेक्शिंद ज्यासीदेव्ये हे जाद्रास्मृताः॥६४ ॥ द्वादरं च त्याम् क्तिग्रम् त्रज्ञ्याणम् वहि ॥ तयाकल्याणिन् यवैद्वादकी हुमकी द्विता ॥ ६५ ॥ इतिनेषाहणीत्राणि देव्यक्षपरेकी तैताः ॥ को ज्यकेंसस्थि तेस्ते षाव णिजंचिद्विज्य नां ॥ ६६ ॥ खड र तानं स्टेंड को क् की मिल्वायकः ॥ कपालेशे महादेरः नील कट स्तरीवच ॥ ६७ ॥ चर्म हे त्रंतयास्टें हे त्रक्री मिंदरं ॥ बाक लेवं तथात रिवालमें कराश्रमस्तथा ॥ ६८ ॥ यत्रपूरे तुरामेण सी तात्रकामहात्मनः ॥ तस्यास्तीसहर जीकुवा लब्द तस्मृती ॥ ६९ ॥ याभ्यापूर्व हतंसके रामस्य कलेमहत् ॥ ऋष्टमेध स मारंभेक रामस्य महात्मन ।। ७०॥ रवडायते बनियो दे बारा गोत्र बारा छुळदेनी वर्णन किये ६६ यह रवडायते बाह्मण स्रोर बनियो दे मुन्द्रि देने वाले कीटारक देवहैं कर इसकोट्यके क्षेत्रमें कपाछेम्पर नील कंडेम्बर चर्स हंत्र स्र्य हेत्र श्री गिलितेम्बर शकलेशा तीर्घ बाल्मीक ऋषीका त्राश्रम यह सब इस क्षेत्रमें हैं- ६८ जिसहीजमें पूर्व रामचद्रने सीताका परित्याग किया पीछे सीताङ्घ दीउ पुत्र कुद्दा, लव जाहाउसका होते भये ५९ जिन कुद्दा लवीने श्रम्बमेधकी बरवत इस जम्मेमे रामचंद्र

स्यापन कियेहें ५६ त्य्रव वेत्रेय सात गोत्रोकि कुल देवता कमसे कहते हैं ५७ प्रयम बाराहि १ खरानना २ चासुडा ३ बाल गौरी ४ बंध देवी ५ सीरभा ६ सामखंदा

की सेनाका बीबोन नाम किया ? जिस विकार शिवने गजासुरकु मारक गजवर्ग आगमे धारण किये उससे नमेंसेन भया » और वर्ग भारण करके उसमेंसे जोरका किन्या अससे विवाद में की स्वाद करके वार नाम है सत्य पुगमें छतवती नेता पुगमें मणि किन्या अससे विवाद साम किन्या किन्या

गुणासुर पत्रहतागजचर्मधरोहर ॥ वर्मसेत्रतुत्जातयत्रश्रीदाकरेण्य ॥ ७१ ॥गजवर्मधृतरक्ततेनश्रीतिष्ठतेश्वर ॥ ते नेवरक्तेनम्ह सुद्देननदीत्वा॥ ७२ ॥ हस्तेमहतीवस्व ॥ श्रीसाक्तमत्ये। मिललनिमित्रितायापामलानाप्रशम्बकार । ७३ ॥ हत्तेस्वतीनामनेतायामणिकर्णिका ॥ द्वापारेषद्रभागाचक्छीसाक्त्रमतीस्मृता ॥ ७४ ॥कर्णिकारव्येमहातीचे कोव्यक्त कुल देवता ॥ ब्रह्मस्थानचत्त्राक्तरव्यपुरमीरित ॥ ७५ ॥ दधीवराश्रमस्तत्रमहायुव्यक्तस्य ॥ दुर्थस्योमहादेवसम् योतेस्य रक्त्रमा ॥ ७६ ॥ वकदाल्योक्तिमस्यामहोत्त्रम् ॥ एतद्द कथिति भाक्तोत्व्यक्तरमहात्म ॥ ७० ॥ महात्म्यपु णयद्धन्यसर्वपापप्रमादान ॥ धर्माच काममोस्ताणाकारणप्रमम् ॥ ७० ॥ रक्डापतास्त्रयेवियातेषानान्यत्प्रतिमह वडसरा णा विमाणाविज्ञान्यतिमह ॥ ७० ॥ विभाणाविज्ञान्यतिमह पत्रमहात्त्रमतुलन्यादु स्वविभोन्ता॥ ८० ॥ एतन्बद्वत्वानुणासद्य सर्वपापस्योभवेत् ॥ एतस्मात्कारणाद्विप्रस्थोतव्योमहिमामहान् ॥ ८० ॥ ॥ दितरवडाय तोविववणिज्ञात्मासार्यणीन न्नाम ज्ञातिप्रकरण १५ ॥ ॥ पत्रद्विद्यमध्ये गुर्जर सप्रदाय ॥ ॥ मासकापर

म साधक है जब रक्षायते जो बाह्मण है उनोड़ अन्यका पविषद् निहेंहे रवहायतो विषोड़ रवहायता विणक्ष का प्रतिसह है जह यह ब्राह्मण विनयों के दे व कीट्यकी है पह महात्स्य दु रव मौचक है त दसके अवण करणे से मनुष्यों के पाप तत्काल सपपानते है इस वास्ते हे बाह्मण हो स्वत्र्यमह अवण करणा त्व द्वि रक्षायता विभावणिन फोलिसी मकरण १५ ६२ ६२ ६२ ६२

## श्रय वायडा बाह्रणेत्पत्ति प्रकरणं १४

यान गायडे ब्रायण त्योर वायडे बनिये उनीकि उसनि कहते हैं जो नक पर्म करते हैं है सूत । तुमने हम्छ पहिले देवदेत्य राक्त्सादि कीकि उसनि कि १ परंतु वायुक्ति उसनि कि नि है तो कहों कि दिनों का प्रम् देव होना चाहिए मो देवत्व कु कैसाभया २ स्त् कहते हैं पूर्व सिस्ट् गमें जय विजय नामक विष्यू के द्वारपाल दो- दन व यमनकादिक मृति ज्ञापसे त्यासुरी योनीने त्यासे वे दिनी छै गर्भसे पैदा हं यके लोकों छ पीडा करने लगे १ तब विष्यू ने वराह रूप धारण करने हिरण्याख्य- कुमाग नृसिहावतार लेके हिरण्या कार्य कि नि प्रमृत कि प्रमृत कि नि प्रमृत कि प्रमृत कि नि प्रमृत कि प्रमृत कि नि प्रमृत कि प्रमृत क

अयवायडा विणिक्ति सित्तार कथ्यते॥ ॥ उक्तच ॥ ॥ वादु दुराणे मारुतोस नियसंगे ॥ ॥ अस्वयउद्दुः॥ ॥ स्तस्त सहाभाग देवदान वरस्ता ॥ पिशानीरगनागानासभवः कियतस्त स्वा ॥ १ ॥ नवायो कथित सिन्तिसमा द्वर्णयता है नः ॥ दिया. पुत्र. कथ्तात देवत्व पूजि मिवान् ॥ २ ॥ तृत्की तथि तिसपृष्ठो सूनः में वाचसावरं ॥ दुराकृत्यु विषे कथ्य विजयस्तया ॥ ३ ॥ शापाच सन कादीनांदेश्व पा पिते दिन ॥ ताभ्यासं प दिताल कास्त विष्युः स्करेम्बरः ॥ ४ ॥ वाराहरू प्रमा श्रम्य विरुप्यादं नियान है। ततं तृतिहरू है एवं किर्यो है रण्यादं नियान है। ततं तृतिहरू है स्वर्ण है रण्यक दित्र स्वा है हुन है है ते से त्रा वा चा साव ध्यास्ता है प्रका त्रा ॥ ७ ॥ नतासां वदनं कि स्तातर वावलोकते ॥ तस्या दे हिस्त ह ह न्दे वर्ण सम्रेण ॥ ८ ॥ ॥ कद्य प्रवाच मा ॥ ॥ वतन्ति कर्षे स्कर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण है स्वर्ण है स्वर्ण सम्रेण ॥ ८ ॥ ॥ वत्र स्वर्ण वा च ॥ ॥ वत्र स्वर्ण सम्रेण सम्रेण ॥ ८ ॥ ॥ वत्र स्वर्ण सम्रेण सम्रेण सम्रेण सम्रेण स्वर्ण स्वर्ण सम्रेण सम्रेण सम्रेण सम्रेण सम्रेण सम्रेण सम्रेण स्वर्ण सम्रेण सम

जगतमे कैसी रहु जि-न ज सनान निह है वेपध्या किह जाती है जमात काल कु उने का हरव कं इ देखने निह है तस्मात् इसवास्त है पनी हुछ में इदादिक कु जीते ऐसा पुत्र दे यह कम्यप कहते हैं है स्वी बरस दिनताइ एकवत करेगी ते तरे कु बड़ा प्रतापिएत्र होवेगा देवोका ऋहकार उतारेगा ९ ऐसास्वामीका बचन स्कनते दिति कहती है कि कोनस वेदामे अनकरना जिससे बतकी फल प्राप्ति जलदि होवे १० कर्यप करते हैं हे स्वीवत करने कु उत्तम स्थान कहता हु सो सुन महदेश सी गरदेश और धनदेश बन तीनी के बीच में ११ मादिका सेन हैं जाहा उत्तम वापिका है। सीए मादगण वाड बादित्य निश्त करते हैं और विष्णुकुड रुद्रकुड ब्राइड स्पेईड तीर्थ हैं और दीय कोस के रूपर वाण गंगा नदी हैं १४ उसके मुगपरत करके बार नाम है सत्य युगमे वाण गंगा वैतासुगमें सत्योचना रापार युगमें सुबहा किसपुगमें विनाशिनी ऐसे नाम हैं १५ वाहा आपके ब्राइट नव दिति प्रकात हैं है प ति वादिका किसने निर्माण करी और कुड बाण गंगा बहा कैसे भये सो कहो कर्यप कहते हैं प्रिकित्यात की बरवत साथ कारहों गया और जनुरहित कोक भया

कद्यप्रवाच ॥ ॥ भृणुभू व्रे प्रवक्ष्यामिदेशानामुन्तमोत्तमः ॥ धन्वसीवीरमद्राणासधीसुरविनिर्मिता ॥ ११ ॥ वाटिका-विषुन्तरम्या पुरवाणी विभूषिता ॥ वस्तिमातरीय यसवेलोकसुरवा पृहाः ॥ १३ ॥ वाडवा वित्यसङ्गोस्तिभगवान विनव्सः ॥ चतार सतिवैकुठा विष्णुरुद्रविनिर्मिता ॥१६॥ ब्रह्मकुढ्या विरयात सूर्यकुड हि पावन ॥ वाणगगास्तिनिकटे पौज नार्थमहत्तरा॥१४॥ कतेवाणतिविरयातात्रेतामध्येसर्लाच्या ॥ दापरिस्त वहानामकलोमोक्ताविनादीनी ॥१५॥ तत्र ग् लाकुरुवतमित्युक्तापुनराइसा॥ बिद्नादीकताकुन कुडा केन कुता सुभा ॥ १६॥ बाणगुणा कयतंत्रते तत्सर्ववदस्यमे ॥ ँ॥ कुरुपुपर्ववाच् ॥ ॥ भिःप्रभै स्मिन्धिरात्येकेसर्वेत्रतमसावृते ॥विष्णोर्ना भिसरोमध्यान्धिस्त हिक्दोदार्यं ॥ जङ्गे तन स्माचतुर्पफोत्रसाधितस्ततांभूवत्॥१८॥ अनेरभूत्महातजाबाउवीमानसः स्वतः ॥ तमुवाचात्रिस्तनपंत्रजास्जममैन्ख्य या ॥ १९ ॥ श्वतावाक्यतपस्तैपे वर्षीणामधुनायुन् ॥ तपसानापिनादेवा ब्रह्माणीशरणय्युं ॥ २० ॥ नदाबुद्मासुरे साक-स्रद्रासीर् सागर ॥ तनगत्वाजगनाच स्तुत्वानीत्वासभास्करः ॥ २१ ॥ वरेण खद्यामासवाडवा दित्यसन्तिभ ॥ वरवरय भीवत्सवरदेशावयास्छिता ॥ २२ ॥

भागरत पर दशापपारकारा ॥ १५ ॥ उस बरवत विष्युक्ते नाशि सरीवर मेसे कमल पैदा भया कमलसे मह्मा भया ब्रह्माका ऋ विश्वन भया १० व्यक्ति नरपीका वाठव नामकु मानसपुत्र भया उसकु श्रानिने कह्याकि मेरी र्व्छासे तुम मजाकु इसन्तकरो १९ ऐसा अनिका बचन क्षनते वाढव कपी अस्पर्य पर्यत नपस्पर्य किये उनके नया बस्से देवना वर्षने लगे तब ब्रह्माकु स्राण आये २० ब्रह्मा आनेका कारण जानके विवस्त और देवना वीकु साधा लेक श्रूपे सहबर्त मान सीर समुद्रके ऊपर नायके विष्युक्ति सुति करके २९ विष्यु ब्रह्मा शिव सूर्या दिक सबदेवना वाटिका क्षेत्रमे पाउन असीके पास आपके कहने लगं हकपि वरदेने कु समर्य हम तरेपास आयहे तुम वरदान मगो २२ तव विष्णादिक दे उता बोकु देराके असन्धिनिसे तपोवलसे जिसका ने सूर्य मिरीखाभयाहै वाली गड़वादित्य किय जिसका नाम बो किप स्वयादिक देवता बोकु कहना है २३ है देवही तुमजो असन्त भये हो तो मेरी मानिसक खिट पृथ्विमें वृद्धिगत होवे ऐसा- वरवान देव २४ वाडवादित्यका वनन सनते स्वयादिक देवता कहते हैं है बाडवादित्य तरेकु अयोनि संभव दर्भक संनान होवेगे २५ जिसवरात सब छोकों जे सुख के नाम बायुदेवता इसन्त होवेगा उनोद्धी शुखाके ग्राम्ते तरे पुत्र अयोनिसे दर्भने उसन्त हुये भये चीपीस शास्त्र जोर अडनाकीस विनये अह आतिकी स्त्री सहवर्तमा न पंत्र होवेगे २७ किर अडनाकीस विनये सामिवायडा भेग्य विनये चोवीस हजार उसन्त होवेगे और बोवीस दर्भके बाह्मणों से वारा हजार वायडा शहराण भूमीमें भे

तान् विलेक्यमृहायुक्तो ब्रह्म हिण्युम्हे ख्रान् ॥ योवाचयणतो वारमी भारकगढीन् सुरीत्तमान ॥ २३ ॥ यदियम नामत्येच वरहासः प्रवास्थिनं॥मानस्यो मेंपजा सर्वा वृहिंगच्छेत् भूनले। २४॥ वाडवादित्यवचने सुन्वार्योच् सभाम्बराः॥ अयो निजाः कुगभवाः सं-त्तिनन्तिपियत्॥२५॥यदैवीसहित्यादुःसर्वेठांकुरुखावहः॥तेषाँहुसूपणार्यायपजाम्नेकुगर्यभवाः॥२६॥चत्रिंगतिसंख्याका बाह्मणावेदपारगाः॥ हेरुणास्वततिवया, भार्याः स्ट्रीसम् द्रवाः॥२७॥ तेपासस्द्रवाः सर्वेविण्जीवायडा निधाः॥ निवयं तिह जाः मर्वेतन्नामाने वेचस्राणाः॥२८॥चहु देशितसंख्योकाः सहस्वेषणिजागणाः॥तद्धित्राह्मणाभूमीकि वृष्येति वचस्रणा ॥२९॥ ताव-तिय दिज्येष्ठकलावार्गामहत्तरां ॥यावद्वैतिसूमिष वायवे लोकभावनाः॥ ३०॥ चलारोत्रमहन्द्रेडान् वित्वकर्माक रत्यति॥ सूर्यद्रे उस्त प्रवेष्याद भिणम्यां महेन्वरः ॥ ३१ ॥ यते न्यां वैणावः कुं उस्त दु शन्या पितामहः ॥ वाणगं गामहापुण्या निकटे प्याग मिष्यति ॥ ३२ ॥ वाय डार्यप्टरेडे छंव णिक् विमविस्षितं॥ भ विया तह्नुमां खबरान् स्पतिशोधनान्॥ ३३॥तस्माद्धनिष्ठभद्रेने तपसोस्मा स्टुदुक्रगत् ॥ सुताते यां हिन्चनंबाडवी विस्मयान्वित । 38 ॥ वाहोवेंगे २० उस समयतग हे ऋषि हुयहा वडी वाषी निर्माण करके निवास कर ३० और यहा विस्य कर्मा चारकुं

उ निर्माण करेंगे प्र्व दिशामें स्पर्कुंड दक्षिण दिशामें महेन्वरकुंड ३१ पश्चिम दिशामें विष्णुकुंड उनगदिशामें ब्रह्मकुंड करेंगे विड पुण्य न्त्पवाण गंगा वि तुमेरे समीप आ वेगी २९ औरवायड तुर नामकरके जगतमे विख्यात बाह्मण विनयोस होवेगा औरवहा हनुमानका जन्म होवेगा और उनकु वरमासि बोहोत होवेगी ३३ सवास्त हे बाउव ऋषि अ बऊचे तपस्वयों छो ढो ऐसादेगेका बचन हुनते वाडव ऋषि आस्वर्य करके २४ सबोके कत्याणार्य न्यीनदूसरा वरदान मेगते है कि हे देवहो यह वापिका पुण्यरूप नीर्थसरीखी होवे १५ और यहा जोकोइ नपकरेगा ता उसकु सिद्धि तत्कार होने और मरेनगस्य पुरुष यहा आयके जो स्मानकरने दूसरेगी मानवस्तानकर नेती अस्वयासर्ग मासी होने गया व रदेन आर नापुदेवता कि उसित होते वन मैने यहा रहमा बाद एइ देहसे मेने तिकि होना ऐसानरदान देन नव रवता नान सवास्तु कहके अपने अपने स्वस्थान कु जाते भये १० अप हे विति वाण गंगाकि उसित कहता हु सो यनणकर जिसवस्वत प्रथि सब वी जो कु भास कर गर् उसवस्तत उसकु मारनेके वास्ते प्रयुक्ता ध्नुवीण लेके पी खे दी उ १० सा आवुगडके समीन आये तब त्याके दुरससे वाहायों डे स्वडेरहे बाणजो वास्तो पृथ्वी कु लगा वाहासे हो धारासे एक नदी मकट भद्द वाणसे उसन्त भदवाको बाण गंगा विसक्त

बनेवर पुनस्तेष्यो नैजाक्यस्यहितंच्छया ॥ एषावापीमहृ सुण्यातार्यक्रपाभवन्मम ॥ ३० ॥ अवागत्यतप कृषुक्तेषासिहिर्नगंका ॥अभे वागत्यमृ इशाः करिष्यतिहम् जन ॥ ३६ ॥ अक्षय्यनाकभवनलप्सतेन्येपिमानवा ॥ वायोठत्यनिमानमस्यितरत्रभवेत्सुरव ॥ ३० ॥ पम्बन्धप्रवृग्येव वहनानेन्सुवता ॥ तदादतावरदेवा स्वर्कायम्बन्ययु ॥ ३८ ॥ नचात्वकप्रवृक्षयामिशृष्यु भद्रे यश्किनी ॥ प्रस्तवी जाधगहतुपृथेव नोयवायपो ॥ ३६ ॥ अन्तुवानलभासायतस्योकि वितृषातुर ॥ वायानगामभूपीटतस्याक्तातानवीहिष्या॥ ४० ॥ वायानगामभूपीटतस्याक्तातानवीहिष्या॥ ४० ॥ वायानगामभूपीटतस्याक्तातानवीहिष्या॥ ४० ॥ वायानगामभूपीटतस्याक्तात्वनित्रवृक्षया॥ भवावादिवनगत्वावतं त्वात्तिकर्योभरपि ॥ ४२ ॥ तस्यपार्यवित्रवाक्तात्वने वित्रवाक्तात्वने वित्रवाक्तात्वने स्वर्वाक्तात्वने स्वर्वाक्तात्वने स्वर्वाकरोत्यवस्यवस्यात्वन्तित्ववस्य ॥ ४० ॥ ज्योकरातुमध्यापापूर्णगर्मादितिस्तवा॥ ४६ ॥ कतम् त्रपुरीपामासुवापविधिमा हिता ॥ एतदत्वरमामाध्योगस्यपोहिर ॥ ४० ॥ ज्योकरातुमध्यापापूर्णगर्मादितिस्तवा॥ ४६ ॥ कतम् त्रपुरीपामासुवापविधिमा हिता ॥ एतदत्तरमामाध्योगस्पर्वहरि ॥ ४० ॥ ज्योकरातुमध्यापापूर्णगर्मादितिस्तवा॥ ४६ ॥ कतम् त्रपुरीपामासुवापविधिमा हिता ॥ एतदत्तरमामाध्योगस्वपरोहिर ॥ ४० ॥

नाम नेत्र जिसके सुवर है बस्ते सुलोबना शीतल जर बहनेसे सुहता और जिसमे स्नानादिक परनेसे पुर्कान्यका नाग होताहै वास्ते दिनाशिनी नामस्त्रपार है विति पहणुसात सब नेरेकु कहा। इसबास्ते बाटकाबनका आध्य करके अनकर नहा कहम भरतारहते है ४२ उन केपास नशके तट अपर दिक्पालोने यज्ञ किपाह उसके तिथं विग्रमाल नाम करके बड़ानगर भषाहै जिसकु हातम वृशीन पुर (शासा ) फहते हैं ४३ तब विविधारका बनमं आ-यक बतका आरभ दिया उसबसत इस्ते जानादि मेरे मारनेक बास्ते बतार म किपाह सो जानक भयान्यात हो पके ४४ दितिकी सेना करनेक वास्त समीप आपके नमस्कार करके न स्वासे कहताहै है मावापिताने हुमी रसाक्तनेक बास्ते भेगाहै ४५ ऐसाकहके कपटसे सेनाकरनेक मा इसउपग्रव एकदिन गर्भ पूर्ण दुवाहै जिसका ऐसी दिविमायकार की वसन ४६ मूत्र पुरीपो त्सर्ग करके वर्ष पूर्ण होते आया उसमें मोहित होयके रायन करित भइ इतना व्रतभगदेखकेई इयोग मायाके बळसे स्हमह्म धारण करके २० दिती के गर्भ में प्रवेश करके वाल करके सात खाल कर से सात सात हु कर किये तथा पि सर्व बाल कर रोने लगे तब रो बात ऐसा इंद्रने कहा। पी छे इद सह वर्त मान सब बाल क बाहार निकले ५९ तब दिति जा एत हो यके देव सरी खे पुत्रो कु देख के इद कु पूछ ने लगि हे इद यह सब तेरे पासन खाते हैं वे कोन है सो सत्य कहो। ५० निह तो साप देवुंगी तब इंद्र कह ता है हे दिति तुमेरे कुओं कर यप से वरदान मास भया सो मेरी माने कहा। ५० और पिता के अत्यंत मसन्य हो यके मेरेसे अधिक ऐसा पुत्र विया और पुत्र होने के वासे एक बतबी दिय सो जान के मयतु मेरेपास आया ५२ एक दिन हमेरे बत मेन्यून ता देख के तुमेरे उदर मे जाय केन

प्रियमभंभि छेदबालंबजेणसप्तधा॥सप्तस्योभवद्वालोदेवराजसम्हृतिः॥४८॥ तानेवसप्तधास्ये चिछ्नेदरुरुदुस्तदा॥ मारोदत्त्तये दुत्तः बालकानिर्गताब है ॥४९॥दित प्रबुध्द दहत्रोबालकान् देवस्त्रपणः॥ पप्रख्याकंपार्श्यस्यंकस्य तेवदस्वमां॥५०॥ न चेद्धस्यामिन सरुधातदाशकोबदीत दित्तं॥मातामेकस्यत्सर्ववरदानंतवा दितं॥५०॥ पित्रात्यंतं सन्नेन्ह्त्रोदत्तोममा है क ।॥ तत् सिन्द्येवतंदत्तं एवजा बाह्मागतः॥५२॥ दृष्ट्रेकदावत् क्षुदं छिन्नोगर्भरतुसप्तधा॥ यदातेनसृताबालास्छिन्नाश्चसप्तधाहुनः॥५३॥ रुदंतःपार्थयामासुमस्मान् हिन् सिशातकतो॥तदेवबाधव स्वत्ते विद्यामः स्रोत्तमाग॥ ५४॥ इद्धुक्ता नसृता सर्वेद्र तस्वते निद्देतं॥अयह्नवा दितः शक्तं प्रोवाचहरतः स्थाना ५५॥ एतेषांपोषणं हुन्ने क्यासंभ विद्यति॥तदासस्मारकशक सोप्यागत्याद्वद द्वरु॥५६॥ क्ययस्वस्व विद्यास्य विद्यस्य विद्यास्य विद्यस्य विद्यास्य विद्यस्य विद्यस्य

तब सात बालक भये गर्भ मृहु पाया निह फिर सातके सात सात खड किये तथापि मेरे निह ५२ वे एक कम पचास बालक रोने लगे और पार्थना करने लगे कि हम्कु मारो मतर हमतुमेरे भाई देव होवेंगे ५४ ऐसाकहके गर्भके बाहर निकसे सोबात तुमकु सत्य किह तब इद्रका बचन सुनके दिति कहती है ५५ है इंद्र यह सब बालकोका पोषण एकि लीसे निह होनेका तब इद्रने बहााका स्मरण करते बहाा आयके कहते है ५६ हे इद्र तेरा काम क्या है सो कहे इद्रकहता है ए सब मरु द्राप विता दिती के गर्भ से उस नाम ये है ५० सब मिलके एककम पचास है उनाको पोषण करणे हु एक दिति समर्थ नहीं है वास्ते उनोके पोषणार्थ माता बोकुलाव ५८ इद्रका बचन स्नते बाड व ऋषी का स्मरण करते ओ ऋषी वा हा आपके ५९ कह

में अगेकि मरेकु किमर्प इसाया है जो कार्य होने सो जाउरी कही तबब्रह्मा कहने हैं ० है बाउब मरणी मरु हुओ का पोपण करने के बाक्ती वर्ष रूप सिहत पु भोकु उसाय करी तप करती बस्वत पहिले के तुमकु कहा हैं ६ १ बोबीस बायउं बाह्मण औरउनों के सेवक वेउय बायडे बिधान बद्धि भार्या पुक्त बाह्मण से दूगने करें ६२ यह सब्बाय डा नामस विल्यात होनेंगे सबोकी बायु देवता हो वेगी पहिल मयने चौबीस की मर्यादा स्थापन कियी हैं ६ २ बाह्म चौबीस हजार बाह्मण अडताली स इजार बनिये हो वेगे एक बाह्मण बोबनिये इस रितिसे अपने राह्म पाउन सेमन कर गे ६० एनो कि कुल देवता यह बायी हो वेगी जो बोह बाह्मण यहा आयके बील इस करे गे ६० ने पापसे मुक्त हो पढ़े स्वर्गने जावेगे तुमजो बाह बादिस हो सो तुमेरी और बापीस्व माल्यणो का जो पूजन करेंगे वे भरण मुक्त हो बाह पीना दिकसे बरा

दुव स्मृतोस्मिलोकेशक्तर्यक्षयमानिर॥ भुताभेयस्यन्तन पातामोवाच पुत्रक॥ ६०॥ स्ज्ञपुनान्स पार्यस्वम्र तासेवनेन्छया॥ कृशक्ष्पान्पुरेगोन्कान् तप्यतस्तपम् नमः॥ ६५॥ चतुर्विशतिस्य्याकान् गृह्याम् वायदास्याम् वर्ष्यविसर्विणावायुर्वेवता॥ मर्पादास्योपितापुन् वतुर्विशतिमस्यया॥ ६५॥ सहस्रते प्रविष्यति त दर्षति हिजोत्तमा ॥ भास्यणेकतुर्वेविष्यीपालियपतिममता ॥ ६५॥ एतेषाकुलदेवीयत्ववापी। प्रविष्यवि॥ चुडाक मेसमागत्ययेकि व्यतिवादवा॥ ५५॥ तेसर्वपापनिर्मुक्ताभविष्यविदिगोर्यन ॥ त्वामेववाडवादित्यवाप्यामातृगणास्त्वा॥ ६६॥ वायडाञ्चविष्यति भरणासुक्तानसभय ॥ तेपापुत्राच्यपित्राच्यतिम्यति मृत्याप्यामुक्तानसभय ॥ तेपापुत्राच्यपित्राच्यतिम्यति मृत्यापित्राच्याम् हिथा क्र तान् ॥ विष्याहिजान्तसम्यनेसभायान् कृशिनितान्॥ ६०॥ स्त्रावान्य मर्पयामासिवत्यकत्। सुमूपध्यमिमान्वेधा द्रयुक्ता वितिनंदनान् ॥ ६९॥ माद्र मृत्रुक्तप्रयोगास्काप्यार्यस्त्रतान्॥ तस्मात्तान्तापृतीप्रशिमासे सप्तमके पुन ॥ ५०॥ चित्रपञ्चारवीदीला स्त्राम्यास्त्राम्यामसे सप्तमके पुन ॥ ५०॥ चित्रपञ्चारवीदीला स्त्राम्यान्तान्ता ॥ वस्मात्वान्तान्ता ॥ वस्माकिता ॥ तस्माकिता ॥ तस्माकितान्तान्तान्तान्तान्ताना ॥ ५९॥ मात्रमके पुन ॥ ५०॥ चित्रपञ्चारवीदीला स्त्राम्यान्तान्ताना ॥ वस्माकिता ॥ तस्माकिता ॥ तस्माकिताना ॥ वस्माकिताना ॥ १०॥ ॥

शहिरात हानेगा ६७ सू तकहते हैं हो गोनक जाताका नवन सुनते नादवा दिसने भाषांयुक्त बाह्मण और यनियोक्त उसन्तकिये ६० फिरझमाने दिती गर्भीसन्त एकेक बाह्म के स्थान करमापके ने गापडा कु अपणकरके कहने समेकि इसोकि इसुपा करा ६० अस्माने जो दिति प्रमोक्त माझपव सुकू पश्चीक्त रमान करमायक अर्पण किये वासो उसक् स्मापना पश्चिक हते हैं फिर नाहासे सातने महिने कु ७० चैन सुकूषणी के दिन ब्रह्माने मरुद्राणां कु डोटा रोहण करनाया उसदिनस हिडो सिनी पश्चिक हते हैं और उसदिनस्तम अस्म करेग ७० उनो कु नास रोगिती पांडा होने की नहि ऐसा कहन ब्रह्मा ग्रहानये ऐसा वो वायडे बाह्मण और वायडे विणक वैत्रयों,काव डा स्थान ७२ जिसका विस्तार सोलाकों अवडा उत्तम वा उवादिखंक तपा यलने जिनकारी निर्माण किया ७२ वो सोब से बार मान्यण और वारा महादेव निवास करते हैं उनोके नाम अविकादेवी १ मान्यला २ खाटयला २ अखिन ला १ जायिला ५ ॥ ७४ ॥ रामे स्वर १ भीमे स्वर २ प्रिपुरे स्वर २ पावने स्वर श्री को स्वर ५ वात्र के स्वर ६ ॥ ७६ ॥ उनरे स्वर ७ विल्लाके स्वर ६ सिद्धे स्वर ६ कर्द मे स्वर १ वीत के के स्वर ११ हतु माने स्वर १२ ये हैं ॥ ७७ ॥ वो पुरमे चार वो होड़े है चार कुंड है

#### अथउन्नत्वाभौभा स्मणोत्पत्तिप्रकरण १६

भव बनेवार ब्राह्मणो कि उसित कहते हैं जिवजी पार्वती कु कहते हैं हे पार्वती तदनतर अन्तरसममें यामार्थ जाना थी उन्तर होन से उत्तर दिशामें करितो या नवीं के तट अपर १ ब्राह्मणों ने ब्रह्में नवर नाम करके विवकी मतिया किये हैं जियने ब्रह्मणों कु वो स्थान बरात्कार से दिया २ वो उन्ततस्थान कैसा है बारो नरफ जिसकु सीमा को न बथा है नवीं गण जिसका रहाण करते हैं तपके महान उद्यक्त वस्तत अहा सिम उद्घाटित किया २ उससे अन्तरस्थान भया अथवा प्रास्तवका पूर्वहा अवा है उससे ४ उन्त त स्थान कहते हैं अथवा जहा विधासे और तपसे कविवब उत्क्रप्ट हैं उससे उन्ततस्थान कहत है अ जिसकरवत सब ब्राह्मण मूल वबीश महा देवके पास बैठके साठ

इजार वर्ष पर्यत तपन्वर्षी करते असे करियोषा नदीके तरकपर शिवका ध्यानकरते वैठ है। बिवकहते हैं है पार्षती जाहा वे तप करते है। वाहा मथा भिष्युक का रूप ते के आणा व तव वे तपत्वी क्रिया वर्ष मान के जानने वाले करियों ने देखते बरोबर मेरे कु पिछाने तथा १ है बिव तुम कहा। माने हो ऐसा कहके मेरे पिछे आप है है अर है दिया सुक कहते वीं उत्ते वीं उत्ते वालकाल पर्यत आते हैं। और अपने वेनसे दरा दिशा कु मकाशित करते हैं इतने में किंग कुं देखे परन शिव कुं निसंबद्ध सुल नंबी शालिक देखें। अर्थ करते के परन शिव कुं विर्व परन शिव कुं विर्व करते के अर्थ उत्तीवरवत सब सुनि स्वहसे स्वीक्ष गये। २

जब न्वर्ग बोहोत त्याम भया देखा और दूसरेवी आयरहे हैं वो देखके इंड १३ भूलोकमें आयके वो लिगकु आच्छादन किया १४ उसवरवन वाहा अंगरा हजार मु निचे वे उन्म लिग्कु नदेखते भये १५ वन्न महित इद्रकु देखते भये यावत्काल पर्यत उसकु ज्ञापदेते है इतनेमें इद्र नष्ट भया १६ तव शिव वे बाह्मणो कु को धायमान दे-रवके मधुरवचनसे बोलते है १७ हे ब्राह्मणहो तुम सदाशातिचत होथके उदास केसे भये यसन्त्रमुख करके मेगवचन सुनो १८ तुम एसे ज्ञानी होयके स्वर्गकु बढ़ा मानते ही नाहा पुण्य सीण होनेसे मनुष्यका नीचे पतन होताहै १९ ऐसा दु खयुक्त खरीकु पडित लोक मनमे नहि रखते इसवास्ते मेरा वचन सुनो २० तुमकु रहने के वास्ते अति नेज यदात्रिचरपंचामंत्रसंबैद्यातरञ्चन ॥आयां निचतर्थेवान्येर्नयस्तप्सीज्वला ॥१३॥एनदंतर्मासाच्समागत्यमही तले॥ लिंगमा छाद्यामासवस्त्रेणैवरातऋदुः॥१४॥अष दश्सृहस्ताणिसुनैनासूईरेनमां॥स्यितानिनतुपश्यंति छिगमेतदनुत्तमं॥१५॥रातऋतुन रहसहसार्षीवकणसंद्वतः ॥ यावदिवां तित्राापेते तावुन्य एउएर ॥ १६ ॥ रङ्गातान कीपसंयुक्तान् भगवान त्रिषुरांतकः ॥ उवाचसाँत् यॅन्देवोबाचाम्हरया हेजान्॥ १७॥ कथं वित्ना द्विजयेखाः सदागातिपरायणाः॥ प्रमन्नवद्नाभूत्वोश्चयताव्यनेमम्॥१८॥ भव दिद्वी नसंदन्तिः स्वर्गः किमन्यते बहु ॥ स्वरुण्यसंबरं भारे यस्माहै भाष्यते नरः॥१९॥ एवंदु रवसमार् का स्वर्गी नेवे ह्यने ब्रुटेः॥ एतस्मात्क रणा दिमा क्रिक्षंवचनंमम। २०॥ रण्हीध्वंनग्रेरम्य निवासायमहापूर्म ॥ हुयंना म मिहोत्रा णिदेवताः सर्वटा द्विजा ॥ २१ ॥ यजे ते वि विधेयों के अवता देवपूजने । भा तथं के यता नित्यं देवाप्यास स्तयेवच ॥ २२॥ एवरे करता नित्यं विना ज्ञानस्य संचरे । । प्रसादान मिबिमंद्राः मार्टेस किर्म विषयि । १३॥ विप्राऊचुः॥ ॥ असमर्थी परित्राणे जिताहागरमपे विता ॥ नगरेपोह किकुर्मस्तवभ कि मेर्ह प्य यः॥२४॥ ईश्वरँजवाच॥ ॥ भविष्यतिसवाभिकर्द्धभाकंपरमेश्वरे॥ गण्हीधंनगरंगमं कुमध्ववचनमम्॥२५॥ इत्युक्त भगवानदेवर्द्ध न्मो सितलोचनः ॥सस्मार विश्वकर्माणयांज सिः सायतः स्वितः ॥२६॥ प्नी रमणीक नगर् देना हुसो यहण करो वाहा रह के अभिहोत्र करो देव

ताकि प्रमाकरो २१ यज्ञकरो निस पित्प्जन अतिथी पूजन वेदाभ्याम करो २२ ऐसानित्यकरो तो जान विनापिमेरे अनुसहमे अत्रकु मुक्ति होवेरी। २३ बाह्मण कहते हैं हे-बिन यह दारकु रक्षणकरणेकु हमसमर्थ नहि है हम जिता हार तपस्चि तुमेरी भक्तिकी इछा करते हैं यहानगर छेके क्या करेगे २८ तब बिच कहते हैं तुमेरी भक्ति परमे खरमे हो बेगी रे नगर शहणकरो मेराबचन मानो २५ ऐसा कहके विख्वकर्माका स्मरणकरते वे हात जोड़के सामने आयके खड़े रहें २६ भीर स्या आज्ञाही सो कहो ऐसा बचन सुनते शिव कहते हैं है विश्वकर्मा तुम बाह्मणा के अर्थ उत्तम नगर बनाव २० विश्वकर्मा सब चारो तरफ की स्मिक्न देखके कहते हो २० है जिव मुचने भूमिकी परिलाकिय पहानगरनिर्माण करना योग्यनहिंही पहा किंगपान भणाई विवताका बास है २९ सन्यासी याने रहना पहस्यासी सीयोका रहना योग्यनहिंही ऐसा कहा तब महादेव अ पुनः कहते हैं भरे कु छहस्यासमी बाह्मणाका यहा पास करवाना अछा तगता नहीं है २९ बास्ते जहा गपने किंग अ आमित दिया है ऐसी किंपतोया नदी के तब इपर अधि उत्तम नगर निर्माण करी ३२ शिवका क्वन सुनते विश्वकर्मी अठवासे क्येड शिक्तिमो कु छेके नगर बनाया २३ नीन

र्वेभोनुमें हेण्यर ॥४०॥ ठोकमे उन्नव ऐसा कहते हैं यह नगरपश्चिम समुद्र नजीक का हियाबाद देशमे देखबारा गामके पास जिसकु उना ऐसा कहते हैं ते नगर कु देखके शिवनसन्त होपके ३५ सब बाह्मणोक्त बुलायके कहते हैं हे बाह्मणहो यह विश्वकर्मा विभिन्न उत्तमस्थान है ३५ इसके आधीन वारो तरक हमार गाय है नगर के बारो सरक नमहरदेश बबायुण्य कर है ३६ नहाशिन अपनी बच्छासे नमहोयके फिरेहे उस स्मिक्त लोक नमहर देश आति युण्यकारक कहते हैं १० बोदेशस्था बीहा बचीसको सहै पूर्व मेशकमर्था नवाहिष्यिभमे शकुमनी है ३० उत्तरमे कनक नदा दक्षिणमे समुद्र अविधिहें ऐसा यह नगर महणकरी स्वीर वसन्त हो १९ बहा श्रीक स्वीर छक्ति होनेगी इस में संग्रयनहिंहें तब सब उनेवाल बाह्मण कहते हैं ४० ईन्वरकी आज्ञा तो डनेक़ कोनसम्भेहें है गिव हम तप असि होत्र वेदाध्ययन में निधरहें गे ४१ उस बरवत दा रूण किकाल में हमेगण्सण कीनकरैगा आरोग्यता और मुक्ति कोन देवेगा ४२ ईन्वरक हते हैं हे बाह्मण हो महाकाल सक्ष्यसे यह महो द्य ती ये में रहके तुमेरे राह वो काना दा करगा ४३ और उनत विघराज विघ् कुं छेदन करेगे ४५ औ गणपितका आराधन करेगे तो तुमकु वो हात धन देवेगा हुगा दिखा जो है वे तुमकुं आरोग्य करेगे ४५ उनता वासी बाह्मण कहते हैं है शिवजो कु वे सवती भी यहा वास करेगे और देव कुल के बाह्म गिवजो निवास करेगे ४६ कि सुगमें हमरे कु पावन करने के वासो रहिंगे तो

इसनगरका मित्रह करते है निहितो मित्रिह रुते निहितो प्रतियह रूपे नि

इ।परवुगमे क्रोकाया फित्युगमे पापाणमय है ऐसे वो स्यावमे स्थान के स्थान के विवास करते हैं ५४ वने पास बाह्मणोसे सीर दूसरेबि ठोकोसे निखयूने-

रीयंबहापरमोक्त स्यतमङ्ममयकठो ॥ एवंतन्नस्थितोदेव स्यलकेत्यरनामतः ॥५२ ॥ इजितत्वसदान्यैत्यत्यं तस्तेन यासिनिः ॥ इ त्यतत्कयितदेवी उन्ततस्यमहोद्य ॥ ५५ ॥ सुतंपापहरनुणामर्षकामफलप्रद ॥ ५६ ॥ इतियात्राह्मणोत्यत्तिमार्तेचे उन्तत्यासी ब्राह्म णोत्यत्तिवर्णननाममकरण १६ ॥ पेन्नविष्ठमभ्ये सर्वरसम्बाय ॥ आदित मूलस्थोकमस्या ०१६५ ॥ ६२ ६५ ६५

जाते हैं हे पार्वती इस मुकार से उन्तर से प्रकार का प्रभाव के साम कैसा है कि अवण फरते मनुष्य के पाप दूर होते हैं। सबकाम सिद्ध होता है। ५६ इति उने अन्य बाह्य णकी उसति मकरण १६

अथगिरिनागयणत्राह्मणोस्यित्रकरण१७ अप निर्नारे शक्षणोकि उसनि कहते हैं नारव प्रह्माकु इच्छते हैं है गुरु परम पवित्र ऐसा जो बन्द्रापय क्षेत्र उसने गिरिनायण नामकरके जो शह्मण रहते हैं १ उनोकागिरिनाशपण नाम कापसे जपा किसने किया सी कहा २ बहा। कहते है पूर्वकालमें निष्णु भीर "शिन यह बोना दवता चड़ केतु राजाके ऊपर रूपा करनेके बास्ते है व

अयगिरिनारायणत्राह्मणोसिनारामाह् ॥ उक्तवप्रभामम्बहातर्गते बस्त्रापयक्षेत्रमाहास्ये॥ नारद्वबाच॥ ॥महसुप्यतमेहे त्रेश्ववोवस्त्रापभेहिजाः॥गिरिनारायणास्तवेनिवस्तिपितामह॥१॥गिरिनारायणास्यावेकथमेषामञ्ज्ञाकिल॥ तत्रसंविधन वेन कतास्तद्रहिभेउनघ॥२॥त्रह्मोवाच॥पुगहरिहरोदेवीन्त्रद्वतो स्पापगे।दिवतययतु साझात्मृतिमतोमहाचलो॥३॥निजीनेचतपो वर्शेभूगवानित्यवितयत्॥त्राह्मणनिवात्रवकपस्यास्येविजिने॥४॥ततोनारदस्तम्मारत्राह्मणस्वात्मरूपिणम्॥इतिसवित्यभगवान् गिरोरीनतकेनसन्॥५॥

ताचन पर्वतके अपर सामके ६ एकात जन यजित जग्गों में बेठे तब भगवान विचार करने खमेकि बाह्मण विना इ स स्वतमें केसे रहेना २ शक्ते है नारद वेसाजानक खापसूप ब्राह्मण का स्मरण किपा ५

और आप गिरिनारायण वामोदर नाम धारण करके रेवताचल पर्वतके ऊपर आये फिर वाहा आयके भगवतका हद्भत जानके हिमाचला दिक कि गुफा वोमे और गगा तथे के ऊपर ६ जो ऋषि वेदाध्ययन करते बैठे है वाहा गये ७ तव सब ऋषियोने हिरहरका वृत्तात पूछातब गिरि नारायण कहते है हे ऋषी त्यर हो जिव और विष्णु यह दोनो प्रसम मूर्ति धारण करके रे वताचलके ऊपर बैठे है ८ ऐसावचन सुनके सब ऋषित्यर बडे मे महुत्त होयके रेवताचलके बगीचे मे आवते भये १० जहां अनेक बुक्त लगे है अपनेक प्रमान के पक्षी नादकर रहे है वाहा हामो वर भगवान के घरकु आयके ११ गिरिनारायण का स्मरण करके स्तुति करने लगे है भगवन् १२ हमेरे ऊपर अनु मह करो और दर्शन देव बह्मा न

निर्नारायणइति विषोदामोदरीययो॥तदानारदगुंगायास्तरे हमवता दिए॥६॥ ऋषयो नेवसं तिसम्बह्म धीषपरायणा ॥तस्रतेषा नेव सतात्याजगाममहातपा ॥७॥ ऋषिस्ते ने इकिथते गरोरे विन केहरे ॥ भवश्या पेमहादे चस्तिमताहु भाव पे॥ ८ ॥ तदाने अरषय सर्वे श्रुतातस्यमुनेवच ॥ नेवसते हे रहरी वृष्य स्थित्वत्वारके ॥९ ॥तेनेवसत्यतप्साहरी नेर्भरमानसाः ॥समायातास्ते वमलारेवतो चान् ह त्तुमा १० ॥ नाना हुस्तु ताळी णीपरुपक्षिगणान्विते ॥संघाप्यरैवतो द्याने दामे दर ग्रहेयहुः॥ ११ ॥ गिरनारायणसमृत्वास्त श्रह स्ते द्विजेन त्तमा ॥ ऋषयऊ हु ॥ भगवन्स्तमञ्जेशसर्भात वभावन ॥१२ ॥भसादे इरुदे हे देशनदे हिमे विभो ॥ ब्रह्माव च ॥ ॥ इति संस्ट्रहता है षां दश्योभूत्वा त्रवी हुन्: ॥१३॥ वर्णानामाश्रमाणानिरसावी विधृतामय ॥स्थातन्यमत्रस्तत्म तेष्ट्वीममे प्सतं॥१४ ॥ भवतोममसामीप्येन तिखंह स्टिरमानसा ॥ गैरनारायणइतिम्मारव्याक येतामया॥ १५॥ यथात्वहतयाय्येते गिर्नारायणाकता ॥ तपसोभवताम् अ क यंतो वैघकारेण ॥१६॥ तेह भस्मी भ विष्य तिममको धदवानल र् ॥ हुष्मान्य ति हियेचान्ये दे पळ्टे तिपा टेनः॥१७॥ देखार स्तेपिमे सत्यंन ज्ञास्तातेषामहंसदा। ब्रह्मोबाँच। इहुत्त्व ऋषरःसर्देहषीग इदयोगिरा।। १८ ।। ऊत्तुः प्राजलये भूत्वा गे रेनारायणाहरी।। गे रेनारायणा िंद्रजाऊ<del>ट् ॥ देवदेवजगन्नाथनारायणपरात्पर</del> ॥१९॥

नारद्कु कहते हैं हे नारद भगवान ने ऋषियोंकि स्ट्रित अवण करके उने कु दर्शन देने १३ कह ते हैं हे ऋषीत्वर हो वर्णा अम धर्म ने धारण कियी है वास्ते हम सबोने यह स्थलमें वास करना मेरेकु इष्ट है १४ मेरेपास रहेना और यह स्थल में मेरा नाम जिरे नारायण मयने रखा है १५ वैसी हमेरी ने जिरे नारायण शह्मण ऐसी संज्ञामयने रखी है तुम तपश्चर्या करो उसमें जो कोई विद्या करेंगे १६ वे मेरे को धरूप अमीसे भस्म हो नावेंगे स्प्रीरत मेरा जो देपकरेंगे पापी लोकतो १७ उनोने मेरा देव कथा ऐसा जानके उनो कुं शिक्षा करूगा ब्रह्मा कहते है सब ऋषियोंने भगवानका बचन खनके बडे ह धित हो यके गद्र द पाणीसे १४ इतिजोहरे गिरिनाय्यूण भग्नान्क कहते हैं है वेपाधिदंग ईनायसण १९ यह सिहस्पाधादिसुक पर्वतके ऊप्रकोन्सी रातिसे रहेना व आरस् हा रहतेसे आने स्या होस्मा सोकहो तबजानेदर भगदान कहते हैं १९ हे गिरिनायपण बाह्मण हा आगे मानिष्ण होनवाला है सो सना २० हाम पहा रहोगे सो हुना कु दूसर मर्गि अपनी क्रियानोक्षनास्त वर्क पूजनक निकस में तबसहा जायक परमालकार सहित्कर्या नाके देनेग २५ यहाका राज बढकहा विनाहके समयम आयों के सुम सनोकु पामका राज करेगा जाहागीर पम दिखदेनेगा २४ वसमें तुम सुर्ग हाकर बहु पाग सुन्य करागे इसम सहाय नहीं है २० इतिहास पुराणादिक तुम ना

अनैविधिनाकन्यास्यामिरेनतगर ॥ सिह्याप्रममाकीर्णनानापिति विह्नम्॥ २०॥ अमैववसताव्य किमन्माक भविष्यति ॥ तह्र त्वणननापत्ततोष्ठामेह्येत्रपत् ॥ २०॥ सिह्याप्रमान्त्रवाच ॥ ॥ गिरिनारापणा सर्वेष्यतागवतामम् ॥ मायतुम्मवताप्रमानाक्ष्यभिष्यकथयामित् त्॥ २०॥ भव्यत्रीनिवस् स्योनभस्प्रमान्यवर्षितः ॥ कन्यास्वरुखता सर्वाप्रणास्ति वर्षानिवाद्यक्ति । तन्यास्वरुखता । वर्षाप्रकार्षात्र । वर्षाप्रमानिवस् स्योनभस्प्रमानिवस् । वर्षाप्रमानिवस् । । वर्षाप्रमानिवस्त्र । । स्याप्रमानिवस्ति । स्याप्रमानिवस्ति

मेथकरिष्यति॥ यदाते भारिता निर्मार नापणा दिजा ।॥ १३॥ वांगे एछे होते होन नाहात बरम गर्म बाद स्वर्गमं द्य देशोका सुद्ध होनेगा २६ पाहा दे त्यों कु दब्बा भारने तब मगरूण भक्त भो यमा अपुमाना से दुन्धित हायक गरी भरणासे रेनता चलक बाहा आपके सुम मासी के वानी महा करेगा नव मेथू कृषियों के सुरव होने के पारते भीर एका कृष्यभास हाने के बाहा भपन विचार करक । अध्ये बद्द के तुन्ध पुन हाय बुनिया लोग करने वाते को हु एक वशी प्रमान की से सिक्ष हो को कृष्य समान भा के दे परमान की को दे परमान की सम सुनेर विना

दूसरी नातीके ब्राह्मणसे यद्म बानादिक करवायेगानो उसका सव निष्कल होवेगा असुरी कर्म होवेगा ३५ फिरयज्ञ हुवे वाद जिन जिन ब्राह्मणोकी चृत्ति हीन होगई है उ न कु राजाजा गीर देवेगा ३६ वोसए गोत्रके ब्राह्मणोकु वीसल्यामका दान देवेगा ब्राह्मणकी संख्या वि उतनी होवेगी ३७ और सुवर्ण रत्न भूमिका वि दान करेगा ३८ फि रगर्ग मुनिसे विचार करके मय् वामनरूप धारण करके वडा नगर बनावुगा ३९ वोनगर जगतमे वामन स्थली नामसे विख्यात होवेगा जिसकु हालमे बनयली कहते हैं जूना गढम पश्चिम में चार कोस के ऊपरहें जहा सूर्यकुड नामक वडा नीर्थ है वो वामन स्थली जिसबरवत दुल देखसे ब्यास होवेगी उसकु देखके बडा बलवान राजा दशरथ ४० वा

याज येष्यं तराजानंवाजिमेधेनमारमरन् ॥यज्ञदाना देकं कर्म गेरिनारायणै विना॥ ३४ ॥योत्रवस्त्रापथहे हेकरेष्य तिसचासुरः॥ अहरे सहस्रभोक्तामविष्यत्नसंशयः॥ ३५॥ यज्ञावसाने विदेश्योराजादास्य तेज्ञासनं ॥ यस्ययस्य विद्धानं हितस्यतस्यतदेव है॥ ३६ ॥ चतुः पद्यी तेगोत्राणां चतुः षुद्यी चशासरेः॥ तत्सृहैक्यंतु विशाणा मिनिसंख्याभ विष्यति॥ ३७ ॥ तेभ्यः प्रसेकमेकैकंशामं हु बहु स्त्र मि क् ॥ हिर्ण्यरत्नसंद्रक्तंराजादास्यतिशासन् ॥ ३८ ॥ गर्गेणसहसं नित्यसं मनायसम् पत् ॥ अहंवामनरूपेण करिष्या मिमहर्द्धर ॥ ३९ ॥ भ विष्यतिम्मार्व्योतिनाम्नासाग्मनस्यकी॥तो हे दैत्युजनाऋानो दङ्घादशरयोबकी॥ ४०॥ कलादेववर्धतोत् राजादास्य ते भूषिता ॥ गि भारायणेष्योपराज्यश्री वस्तुसंभृता ॥४१ ॥भातिष्यवेश्वदेवंच वेदानाचातुपालन ॥अ मुहोत्रतपः सत्य मिष्ट मित्यिषि धीयते ॥ ४२। इष्टापूर्तेषु धर्मेर्ये ज्या विमामस्थ्याः ॥ गिरेनारायणाः सर्वे मयासंब धिनः कताः ॥ ४३ ॥सीराष्ट्रदेशे विमुळे पूज्यास्ते मुम्शास्नात् ॥ करिष्युमाणम् इस्य ग रेनारायपे दिने ॥ ४४ ॥ तत्रराजाद शर्योत्हरू मे धंमहामखं ॥ कत्वाह् रहिन् संते प्रनानावस्टे हिनीरसे ॥ ४५ ॥हतादैयगणांस्त्रम्कतादानान्यनेक्षाः ॥इनयस्यित्ययोध्या हे राजधानीस्वकांप्रति ॥ ४६॥ ततोहंत हहेजन्मधृताद्वाह्सादिका न्।।हताश्रमाणावणीनास्याप येष्टे स्टि तेंपरा ॥ ४७॥ हा आयके दैत्योक्क मारकर वोवामनथही यामकु शोभायमान करके गिरिनारे ब्राह्मणोकु देवेगा ४९

अतियाकीसेना वैश्वदेन नित्य नेदमार्गपालन वेदपहन अगिहोत्र इन पदार्थीकु इष्ट कहते हैं ४२ और वायि क्वा तलाव बधाना देवालय बगीचा बुक्तो धान इनोकु पूर्त कहते है नास्तो हे बाह्मणहो तम मेरे आशिर्ना दर दृष्ट पूर्त धर्म मे योग्यहो और वो कर्म नेलगना इनबाह्मणोकु मयने मेरे संबंधि किये हैं ४३ यह सीराष्ट्र देशकाविया वाड जिल्हे मे मेरी आज्ञासे यु-ज्यहो इसक्षेत्र मेराजादशरय गिरिनारायण बाह्मणोसे अश्वमेधयज्ञ करके देवता बोकु हो मद्रव्य से अन्य लोको कु वस्ता लंकार से संतुष्ट करके ४५ दे त्यगणो कु मारके अने क दान दे

उतिबोखिक मारच्यात कियत स्प्यामम्॥ भिष्यभवितव्यचिक मन्य केति भिष्ठिया। ४०॥ गिरिनारायणा कचुः॥ जयवित्ये न्यरिक मारच्यात कियत स्वित्य स्वामने ॥ ४०॥ न्यासम्यापिता वेवित्य स्वामने मिरिनारायणा। नमोनम् परेशायिनिर्मुणायिवतासने ॥ ४०॥ न्यासम्यापिता वेवित्य स्वामने भिष्या ॥ भैवते। चानिष्ये त्यानिष्ये त्यानिष्ये त्यानिष्ये त्याप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त

ामयाशास्त्राविधादनः ॥धूनापयातमनुना कालफालनुमाहता ॥५७॥हुन्धकादानशालाम्बव्याभनारस्ताः स्त्रियः॥असत्यवादिनाः विभानसगोपभकारिणः॥५८॥रक्षोवशाद्द्रजाधुन्यावेदासीरपिदूपिनाः॥समैतेविपराताम्बन्नावयतिकहोयुगे॥५९॥ करेंगेदेव् छसका ना

करेगे ५४ सुरानो मदिरा उसका पोषणक इते औषभादिक अर्कादिक के निमिसने सेनन करेगे नाममान शह्मणका जगतमे विख्यात कर गे परत ब्रह्मकर्म से सुट जायेगे-भीरदूसरे कु खूडार्वेगे ५५ और कितनेक वैत्य रहास राज कुछ मे पैदा हो पके ने बहाबेश भारीओ वेदनिद्य नास्तिक ब्रह्मण हैं उनोका पाठन करेंगे सकर्म निश्च ब्रह्मणोक्षा अनादर करेगे ५५ किकाल से मोहित मयेहुने लोकसन झूमजाचार झूम शान्यका बाद विवाद करेगे और ओ सब अपने अपने मे मान सन्मान करिये निनोक्क हाउ के बस्त तमे हुभारा कि सभा कि जाती है ५७ अगलने को मके बास्ते कान करेगे सिमास्यक्तिनार रत होने भी ब्रह्मण मिस्यानायण करिने अन्यमाती गोषभ ससर रहेगे ५८ बास साथ बाह्मणोने पन स्थादा बाह्मण पृज्य होवेगे और नेद उनमें दूषित होवेगा ऐसी यह सात निपरीत देशा किल्हिंगमें होवेगी ५९ तब उनोढ़ शिक्षा करनेके वास्ते अवतार धारण करेगा है ब्राह्मण हो हुमें के कल्याण के वास्ते यह भविष्य वृत्तात मयने कह्या ६० और मेरे वचन मे तुमेगयहा कर्याण हो बह्मा नारवजी के कहते हैं कि है नारद भगवान ने ऐसे वो गिरिनारायण ब्राह्मणों कि म्यापना करके अतथीन भये फिरबाह्मण सब यहा रहे ६२ पछि योडेक दिन गये वाद इसरे असी वाहा आयके उनो कु कन्यादान करते भये विवाह की वण्यत चें बकेतु राजा ६३ वाहां आयके प्रामका और भूमिका और वस्त्रात को को दानदिया ६४ तब गिरिनारे ब्राह्मण कडे हिंगित भये राजा से सन्मान पाये रैवता चळ पर्वत के ऊपर रहते भये ६० दशर्य राजा कार्ति

तदाकन्कीतिनाम्नाहतेषांशास्ताभवामिन ॥मये तक धितसंवीभि ध्यंवी विद्त्तये॥६०॥भवन्द्यो स्विहकल्याणम्स्यी यतांममशासनात् ॥ब्रह्मोवान्या ॥इतितान्बाह्मणां स्त्रवसंस्थाप्यहरिरीत्वर ॥६१॥ गिरिनारायण् क्षेत्रबह्मप्यो तरधीयत् ॥ ततस्तेवाडवाःसर्वे स्थाने रेवतकाच्छे॥६२॥तते न्येत्रख्यस्तेष्यः कन्यायानंददुः किछ॥द्वाहसमयेराज चंद्रकेतुः पुरातनः ॥६३॥ज्ञासना निवित्ते विद्यानि मान्ते बहुभू मिकान् ॥अवादति इस्माःभूषियति दिजोत्तमान् ॥६४॥ततस्तेवाडवाः सर्वेहप् निर्मरमानसाः ॥धूजिताराजि सर्वे संत स्थाने विद्याने गरी ॥६५॥राजादशरथस्तावहुनः स्वेषा दिजन्यनां ॥कार्तिकेमा सस्यानां जिल्ली द्वरं रेष्यिति ।॥६६॥रेवतरेवति सार्द्यानियागयणंतया॥गिरिनारायणस्त्रदुर्वभास्तोषसंदुताः ॥६७॥तेष्यादानमशेषत् हरियूजनहत्त्रमे ॥इतिकिथितंवस्य गरिरेवति कत्या॥६८॥गिरिनारायणानांचोत्यानिविकिथितामया॥रेवत्यारेवतीस्त नरेवतंरिववासरे॥६९॥राधादामोदरहष्ट्रपरकाराः पंचदुर्वभाः ॥७०॥ इतिकिश्वाह्मणीत्यः गिरिनारायणबाह्मणोत्य निवर्णनेनामयकरण १७पचद्रविद्यास्योग्रहर्पसंप्रदायः आदितः मूह्यस्यो

कसंख्या २२३१ ७, क मासमे वाहा आयर्न फिर वे बाह्मणो जी णो द्वार करेगा ६६ वो गर्नारे जूनागड क्षेत्रमे रेवतपर्वत रेवती स्त्री सहवत-मान बलदेव गिरिनारायण और गिनीरे बाह्मण यहा दुर्लिम है६७ वो बाह्मणो छु दानदेना और हरिकी घूजा करना है नारद तुमने जो पूछा उसका कारण सब मय्ने कहा ६८ रिवगर जे दिन रेवर्त नक्षत्रमें रेवताचल पर्वतके ऊपररेवनी कुडमे स्मान करके राधा दामो दरका दर्शन करना यह पाच रकारका संयोग बडा दुर्लिम है ७० इति गिनीरे बाह्मणो कि उसिन सपूर्ण मद पकरण १७

# अधागिरिनारामण बाह्मणानामवरकगोत्रमवरशाखाजानकारक

#	भरफ	मामाद	गेन	भव	र गेर	श्वारमा	Ŋ	उपाध्या	मास्त्रक	वशिष	<u> </u>	य	माध्य	884	<u>चेग्र</u>	<u>चोरपाङा</u>	<u>भार</u>		<u>प_</u>	मुप्य
1	श्रीन	10.00	<u>ज्यार<b>ए</b>ज</u>	1	TO	माधीरिन	34	पमस्	<u> नोरनाम</u>	क्रमा	- 3	प	माप्प	10	<u> सोगी</u>	<u>"माइभिष्</u>	<u> बत्सस</u>	<u> </u>	<u>मा</u> _	<u>भिष</u>
1	मर	मधाना		1	<b>4</b>	भारतापन	84	प्रसारित	माभुद्रस	रुणार		ηr.	मार्थ	**		मानुसरा	सुदामस	ب	<u>प</u> _	<u>ग्रप</u>
1	नादा	गागिसेरा		$\overline{}$	<u> </u>	मध्य	39	गकर	नुसरीत	क्षणा	3	य	मार्थः	86	<u>जोगी</u>	चुरुपारमा			<u> </u>	मध्य
V	मंग	THE PARTY	, भा	1	4	माभ्यं	3,14		पृष्टियार	<b>Foll</b>	1	य	गार्थ	70	-ग्रापक	माभुग	<u>क्रणा</u>	<u> </u>	<del></del> -	
<u> </u>	नोर्ष	मिलेका	<u>'मा' _</u>	1	म्	मध्य	*	जीपी	पानीपा	स्चा	1	4	<u>माध्ये </u>	49	जोगी	मुपेचा	<u> कार्पप</u>		<u>प</u>	मध्य
٤,	नोगा	सम्प्रम	मा	₹	3	मस्य	•	ओ गी	ीनास	प्रणा	3	य	मध्ये	49	<u>जोगी</u>	<u>आजिप्पि</u>	क्रिया	1	<u>य</u> _	माध्य
	मेता	पसराम्बर्ग	प्रमुपप	3	<u>-</u> q-	माध	10	सकर	-पापडा	गोदिय	્ર	प	माध्य	41	-संगी	<u>चारपरिपा</u>	फुफा	1	<u>प</u>	माध्ये-
▼	भर	<b>म्मा</b> रया	भारप	1	प	माध्य	3,1	<b>अंभार</b>	मिलाकर	पाड	3	<u>य</u> _	माध्ये	48	<u> </u>	1	11	t.	<u>.</u>	3
•	<u>नोर्ग्</u> य	सस्यक्ष		•	य	माभ्र	33	क्याध्या	#4-144	स्पेतिः	1	प	माध्ये	44	कन्मानिय	5	<u>.</u>	\$	3	t.
<u> </u>	परोत	<u> विजारिया</u>	भोग्रम	3	मा	म्पर्णम	11	सकर	कस्मासग	रदाम	4	सा	की पर्मा	46	प् <b>मक</b>	गाउद्या	भ्रास्पप	1	<u>य</u>	माभ्ये
<u>าา _</u>	यहर	चार	संस्कृत	3	<b>∓</b>	<b>का</b> न्यना	14	र्वेडपा	मिंबाडिया	<del>प</del> त्स	4	सा	कीपमीर	4	चास	छिपोदिप				
	<u>भगकी</u>		भक्तम	1	स्म	र्फापः	74	मर	<b>स्टे</b> यंग्य	• बल्म	<u> </u>	, मा	कोपमा	•	नार्गा	सम्पद्ध	शीरि	4	सार	क्ष
	म्बर	<b>व</b> धेरा ।	<del>फेर</del> ुम्	<u> </u>	_या	माध्य	15	मनान	भक्रे चए	<b>कीराय</b>	<u> </u>	पः	_मार्थ्य	49	गदर	पमीनवा				
	<u>गास</u>	रामाणीय	भिरवस		प	माध्य	ų.	नीकी	यनसारम	फ्रंपी	1	यः	माप्प	<u> </u>	मान	गास्या	मार्यप	3	म	माध्य
	<u>डपा</u>	गमन्परा	स्वर पन	3	<u> </u>	मार्ख	15	नाना	संदिपा	भारत	$\overline{\mathbf{x}}$	प	माध्य	33	मोत	भानिक्या	काम्यप	<u> </u>	च-	माध्य
r -	गोभाषा		भरवस	3	फ	मार्थ	75	जारा		भैरम	1	<u>प</u>	मार्थ	89	उपाध्या	ग्देहसस्या		$\overrightarrow{}$	च~े	माध्य
			मोनस	3	<u>य</u> _	म्हस्य	₹.	मेना		फेर्यम	<u> </u>	7	माध्य	12		प्रकारिप			<u> </u>	
			<u>मदामस</u>	3	<u>प</u>	मध्य	87	उपाध्या	स्मानस्य	<b>एकाम</b>	3	य	माध्य	44	पुरुषा	सिन्धि			च-	माध्ये
		भक्ता र	समस	3	<u>प</u> _	माप्य	84	भाग		भारकान	1	4	मार्थ	14		मातिया				
		त्तीरपा ।	<del>11141</del>	<u> </u>	<u>\P</u> _	माध	V	जीपी	मीगपरा	भार	<u> </u>	<u>च</u>	माध्य	1/2	पश्या	<u>नारजंडी</u>	भारहा	<u> </u>	च_	मार्थ-
	क्या उ	नाभिन्द्रेष र	<u>रामस</u>	`	<u>म</u> _	मा प	14	गरुर	भारतस्या		$\overrightarrow{}$	<u>च</u>	माध्य	440		मणन्तरणी			· ——	
र मा	•मध्र	राम्परेश व	DA _	1	<u> </u>	मार्थाः	પ	गहर		सर्मस	<del></del>	च	माध्या		पंडपा	H	जामिन्	7.7		

## उर इंडेल इह ए सिन इक्स १८

अवकडोल बाह्मण और कपोल विनये और सीरव विनये कि उसिन कहते हैं स्कद् पूछते हैं है शिव कंडूल जो स्थान है उसका महात्म्य मेरेकु कहो- वो स्थान किसने ज्यापन किया और गहा बाह्मण विनये कितने हैं ? उसका क्या प्रमाण है सो सब कहो शिव कहते हैं है स्कद तुजने प्रमा अखा किया २ इस स्थानका आख्यान मय कहता हुं एक मनसे अवण कर ३ पूर्व सत्य गुगने कण्व सुनीने स्थापन किया और माधाताने पालन किया हन् मानने जाहा दूतत्व किया है सूर्व साक्षी में आये हैं ४ है स्कद पूर्वी सत्य सुगने पाच क्षी या र देशमें पापापनो दन नामका एकवन ऋषिगण सेवित हैं ५ वाहा एक भिछ रहता था प्राणिकी हिसा करते करते वो होत काल गया ६ एक समय में वो बनमें पाच ऋषी यर बन

र्णगणिशायनम् ॥ अथकं डोळबाह्मणः कपोळवणिज से राष्ट्र विणाजानामुद्र तिसारमाह् ॥ स्कंदहुराणे ॥ ॥ स्कंदछवाच ॥ ॥ कङ्ळस्थानपर्वस्यमहात्स्यंवद्यकर् ॥ केनतर्स्या पितंस्थान विपाञ्चव णिज्ञ किता ॥ कित्तर माणमापकं ब्रू है वेस्तरनी खिछं ॥ ई त्यरिवाच ॥ ॥ साहु पृषंमहाभाग्सर्वपापभने दक्षत् ॥ २॥ आख्यानिमदमेतस्यस्थानस्य र्वकाम दं ॥ श्रु ए खेकमन वत्ससमासान् वद्य म्यह् ॥ ३ ॥ स्थापितं कण्वस् निनामांधात्रापाठितं कर्ते ॥ दे हे हुन्मतात्रस्य स्थापते ॥ ४ ॥ दुराकतरु गेतानदेशेपाचाल सङ्गके ॥ व नपापापने वाख्यमह प्राणसे वित ॥ ५ ॥ तत्र कित्र कित्र वित ॥ ५ ॥ तत्र कित्र कि

हा ध्यान करते हुवे समाधिस्थ बैठेहें ७ तथापि अति यंडिके लिये कपायमान जिनका शारि होरहा है ऐसे कु देखके दूसरे मुगई ठे हे ऐसा जानके शिकार के लिये वाहा आयाओ रउनोकु वेखते हि परमपापि जड़िया जपतु उनों के दर्शन करने ही पवित्र होगया और बिचार करता है की एबड़े ऋषी म्बर है तप करते है ९ बोहोत थड़ी के लिये इनो का देह कंपित हो ताहे ऐसा बिचार करके काष के अदरसे अभिकु १० उसन्य करके पदी म करके वे ऋषियों कु तपाने लगा तब वे सब ऋषी शीतता से मुक्त होयके सामने वो भिछ ई देखके ११ छ

सोप्पाह्मुनिवार्द्रतायुष्पद्दनियोगतः ॥ निर्मलावुद्धिरुलन्मा सर्वभृतातु कपन ॥१३ ॥ जातपरतु भौविषा् जन्मारम्यमयामहत्॥ पातकवैकत्योरंतभेषाद्दीन्कृत ॥१४॥पासकेनिपाकेन्सुवतुमेतपोधना ॥ भरेपयऊच् ॥ ॥ऋणुचेकमनान्याधतकजन्मपुरा तन॥१५॥पुरात्मभवद्वस्य करुकितिसुविसुतः॥धनवानपितेदानेन्दत्तकहिनिहिनेन्ध्कदानिदेवयोगे ननारदोसागतस्तव॥ एके तदाल्यानस्यमहाक्र्वाकिल॥१७॥कालाश्मीवतचक्रेनारदस्योपदेशतः ॥वनातेमृतिमापन्नोध्याधजन्मसमी विवान्॥१८॥ तद्रतस्येवपुण्येनचास्माकधर्मन्यम्त्॥निर्मलाबुद्धिरुसन्मा सर्वभ्रतानुकपिनी॥१९॥तशापिष्याधजातीयज्जनम्तरकारणश्रुणु॥ बह्मस्किनिविधिकपृहीनतस्यशापते ॥२ ॥ व्याधननामनसम्बद्धान्तिनेवद्भीनहिन ॥ नतोस्मतावरान् खचमन्येकं वगृहाणभो ॥२३ ॥ ईन्परउनाच ॥ ॥अयोनिततुक्ववोदात् सूपतिततुगालषः ॥उतथ्यन्यकवर्तित्वयददौदेववुर्लम॥२२॥ नातिस्परत्वमतुन्तददावागिर् सोसुनि ॥ बाईस्पत्योमृतिमादात्तन्वणात्समेमार्ह्॥ २३॥ लुच्यकदेहमुत्सून्यकिनित्कालात्रतत् ॥ युवनान्वायराज्ञातः सूर्यवशी नृपोत्तम ॥२४ ॥ माधातितिचित्यात अवभवतीम् इायशाः ॥ पृथिवीपालयामासचकेकालायमीवत्।।२५॥ क जादा छिय उसके शापसे २ जि

सकानन्म भया इसवास्ते हमेरे पास से परदान महण करो २१ ईम्बर कहते हैं हे स्कद भर्षियोंन लेमा कहके एकंक नरदान हेने मये कएव भर्षीने अयोगि सभव हो ऐसा वस्तु न दिया गालवने भूपित्वरिया-उनव्यने चक वर्तिविधा २२ भगिराने जाति समरणतिया २३ वहस्पतीने मरणदियाउसी वस्त्त बोहुत्वक मृत्युपाया २२ पो देहकु त्या गर्क रके बोहेक काळने धूर्प वही युवनाम्बराजाके उद्रसेपैदा भया २४ माघाता नामसे वहा चक्क वती विख्यान भया पृथिनीकामासन करता नया कालासभी कावन करना वापरतु ०० पूर्र जन्में अभ्यास से प्रजाके अपर निर्दयपणा करना हिसा करना दानधर्म रहित २६ ब्राह्मणो कि वृत्ति छेदन करने लगा जब धर्म नाष्ठापाने लगा और पाप बहूत भया २७ उसवयन ब्राह्मण दीनवदन करें के कप्य असीके शरण आये दु रव कहने लगे तबकण्य कहते हैं २८ वो राजाका वृत्तांत हमने जानलिया २९ राजा धर्मसे जगतका पालन करे हैं मालव माधाता के पास जायके मेरा बचन कहों कि ३० हेराजन् अधर्म कैसा भया अपने आत्म स्वरूपका स्मरण कर तवगालय करी राजाके पास जायके शास्त्रमार्ग से बोधकरने लगा ३१ माधाता गालवका बचन हुन के चहुरेंगिणी सेना और गालवकु साथ लेके ३० सीराष्ट्र देशांतर्गत पांचाल

राज्यं बुर्न्समाधाता निर्दये भूत्रजास् न ॥ पूर्वजन्मो द्भावसात् हिंसो दान विवर्जितः॥ २६ ॥ ब्रन्तिपं ब्राह्मणानां चक्रे विक्रमहुः सह ॥ धर्मी विष्ठ्रवमापन्ने पाएं प्रतुरतां गते ॥ २० ॥ ब्राह्मणादी नवदनाः केण्वं न शरणं यहु ॥ दुः खं विज्ञापया मास्त्राह्मतः कण्वो ब्रह्म इत्या ॥ २० ॥ तस्यभूपस्ययद्वतं तन्मे ज्ञातं हुन्याः ॥ तत्क रिष्टे यथा विक्रं पा ति धर्मेणपा ध्वः ॥ २९ ॥ इत्युक्त गालं शिष्ट माहूरे दस्वा चहा। गच्छगालवराजानं मयोक्तं वदि ति ॥ ३० ॥ किमधर्मरतोराज न् आत्मानं स्मरसाप्ति ॥ गालवर्म वत्ते विध्यामासशास्त्रतः ॥ ३० ॥ गालवस्यवन् सुतामाधातासन्वपं त्तमः ॥ चहरं गचमू सुत्तो गालवे नसमः नितः ॥ ३२ ॥ ततः सीराष्ट्र मध्यस्य पांचालदे श्वामाध्य देश माह्य देश माह्य देश ॥ ज्ञातं लेह देश माह्य देश माह्य देश महाराज के दिसारे प्रजाः परं । ३५ ॥ ज्याये नभागमादायताभ्ये यजस्वचाध्यरान् ॥ विद्वानप्रभावेन प्राहं राज्य मिदंत्य ॥ ३५ ॥ स्मरसीपाक्तनं जन्म यस्मात्सु रवम् व स्मात्सु रवम् दिसारे महाराजके विक्रा मिकं त्रिक्ता स्थित स्मर्ति स्मर्ति । ३६ ॥ इन्याना स्थाना स्थाना स्थाना सह ॥ नवाडवसमं के विक्रा मिकं त्रिक्त सिकं त्रिक्ता सित्ता विक्रा सित्ता विक्रा वि

कीणमेनाराको सके अपरस्थान कंड ल जिसकूं हालमे कहते है नोकण्याश्रममें आयके हात जोडके साष्टांग नमस्कार किया ३३ तन कण्य ऋषी धाकुं कहेते हैहे राजा तेराकुशलते है आल्ब्रिश ति सेप्रजाकापालनकर ३४ और न्यायसे प्रजाका करक्षी धन लेके उसधनसे यज्ञ कर जन्मां तरमे एक अभिदान करने से तेरे कु राज्य प्राप्त भया है ३५ पूर्व जन्मका स्मरण कर जिससे सुख पानेगा ऐसा सुनते राजा नम्रतासे कहता है ३६ हे सुनि हो तुमेरे अनु यह से मेरे कु क्या प्राप्त मिनि स्मरण किंतु सब प्राप्त भया है ब्राह्मण सरी रना दूसरा का मिक ती धनहीं है ३७ पूर्व जन्मके अभ्याससे मैंने प्राणि हो ह किया और अज्ञान तासे ब्राह्मण कु पीडित किये वो अपराध क्षमा करी ३८

कृष्य कहत है हे राजा तुभन्य है तेरी निर्मल बुद्धि मर् नियाप हुने बिना ऐसी बुद्धि होती नहि ३॰ हे राजा राजपोग सहय निमान राज्यका पालन करा और सर्व ध्वत प्राणिमान में आलम्बद्ध एक है ऐमा जानके द्यारखो थ ऐसे मार्ग में क्लोगे तो की बुधिक में से लिम होने के निह मा पाता कहत है हे करा तुमेरे अनुसहसे प्रभी कापालन करेगा ४३ और तुमेरा नो शुक्त होने सो कहा यहा क्या कर मथ तुमेरा सेवक कु ऐसा राजाका क्यन खुनते कप्य कहते हैं २० ई गजा जो तेरे विचने ऐसा है तो भय बाह्यणोका स्थान करता हुं सुम्बद्ध पालन करता हुं ४४

धन्योसिन्पदादिलमतिस्तेयदकस्मया ॥ एनोहानिबिनाःभूपनभूवेन्म्तिरी एदी ॥ ५९ ॥ राज्यपाल्यभ्रपालराजयोगसमाभितः ॥आसानसर्वभूत्युपर्यश्यासोतुकपया॥४०॥एसनितय्यतेभूपकर्मणाकेनिन्कचिन्॥ ॥माधानी याचे॥ ॥भावत्यसादत पृ भीपालिपपामिसुब्रुमा ४१ ॥ तवादिशतभोभी सकिकरोमी हु किकर ॥ एवं सपवेच सुत्वामक यु कणवभाववीत् ॥ ४२ ॥ एवमवन र्वविश्वितम्प्रजन्महामते॥स्यानकर्तात्रिमाणामहत्तरालयप्रभा॥४३॥ज्ञालातालानिर्वेशास्त्रवणिक्वाडवमिडत।रेस्यापयामिदि जस्थानस्येसाक्षिकमुचमः॥४४ ॥ तावन्तिष्ठमहाराजसमीपसप्तुपगित् ॥यावद्यमहास्थानस्यापयामि द्विजन्मनात्रक्षाततस्यिम् नसासहस्मिकरणमुनि ॥तुषान्त्रतति स्पै पातुरासी दुवाच्ह् ॥ २ ६ ॥ महर्षकण्वयञ्जितवतह्रद्साप्रत् ॥ दास्यामिद्रीममपिवरै वरयञ्चन्नेत्।। ४७॥ कण्वउवाच ॥ ॥ यदियसनो भगवन्निहरू ने समागत्।। वसाउ जुस्तरवे वित्रवणिज स्वापयाम्यह ॥ ४८ ॥ सूर्य उ नान्। ॥स्याप्यस्यानमञ्खनिषिक् श्राह्मणस्कुलम् ॥ ज्ञालानालानिनेशाट्यंसादीरक्षाम्यहंसद्। ॥४९॥ तयास्तुनोनलाद्समसा हुर्भूतोस्मियन्मुने॥वकुलार्केइतिरयातोसविष्यामिमहीतछ॥५०॥इत्युक्तवातर्दधेतत्रसम्बन्धमान्समान्॥महपिरेपिसदध्यीस्था नस्पापनहेत्रें॥ ५१॥

नारकार पर्यन हुन मरे समीप रहो ४५फीरमनसे भी सूप देवताका नितन करतेहि सूपी देवता प्रकर होचके कह वैहै ४६ हे कपन तुनेरे नितमे क्याते सो कहा जो दुर्नम वरतानमगना होपसो मगो मपदेगाई ४० कपन कहते है हे सूर्य जो प्रसन्त्रभय होतो इसके मने वासकरे यहा बाह्य या सनियोक्त स्थापन करताई ४० सूपी कहते हैं हे मयी तुमस्याननिर्माण करो मयसासी होयक सर्वकार रसा करूमा ४० हे सन तुजनकारकार में मेरी स्तृति किये उसके छि

वैका मक्ट हुवाइसवास्त्रे पृथ्वीमे बकुलाई नामसे विस्थातकोउगा ५० ऐसाक हुके सूर्य जतभीन मये पीस्टे कण्य करी स्थानक निमित्त ज्यान करते भये ५०

सी कहते हैं बाह्मण कितने स्थापनकरूं बाह्मणोंकि सेवाकरने के बास्ते बनिये कितने स्थापन करना ५९ पुरकी सीमा कितनी रखना और लोकोंने अच्छादिखे ऐसा कि सतरहसे निर्माण करू ५३ ऐसा चितनकरते हैं इतने मे श्रीहर मानजी प्रकट मये ५४ प्रचड जिनकी काया ऐसे हनुमानक देखके कण्य विस्मित हो यके पूछते हैं है बानर तुम कोन हो किसके प्रवास के अधिवास कार्य हो या सेच्छासे आये हो सो कहो हनुमानक हते हैं है करपी केसर बानर की स्त्री जो अजनी उसके पेषे वाहु देवताके वीर सेमय उसन भया हु ५६ मेरा नाम हनुमान है मेरा आने कारण कहता हु अवणकर ५७ हे नस्पी ब्रह्माने जैसी आज्ञादिये हैं वैसा कर वो स्थानकी सीमा चार देन

कतिश्रह्मविदो विपान् स्थापया मिसमा हितः ॥ सुद्ध षार्धे हेजानां हुस्थापये हे प्रीजः कति ॥ ५२॥ कि सीमा तिशोभाकं प विश् स्थानस्त्तमं ॥ कपंछोकेहुरु विरंत्वया मि वरं विवर्॥ ५३॥ एवं वितयत्रु स्थमहर्षमां वितात्मनः ॥ पादु विभूवसहस्पाहनूमान्वानरे त्र्यर ॥ ५४ ॥ तं वलोक्यमहाकार्य व स्मित् ह निरबर् दू ॥ कस्त्वंमहाक व वस्त तनये ते बले त्कुटः ॥ ५५ ॥ किम्बर् महसंघाताः स्वे छयाबातद्वच्यता। क पेरुवाच ॥ ॥ इह न् लेस रेणः क्षेत्रेह्मंजन्यांमारुतादहं॥ ५६॥ स्मुसन्त्रो भिधानेन हनुमा ने निविद्यतः॥ मद गमनकार्यत्ययाम्यपत्च्छ्ए ॥५७॥ विशेषिनायथा देष्टंतुषाङ्करत्यो निधे ॥सप्तको श्वतीस माचत् दिस् मवर्तता ॥५८ ॥माच्या सारंगशुंगृक्षप्रे स्वाबांहर्पे पे ॥मात्स्योन्हदः पर्ते च्या चके हेय तालप्रहतः ॥ ५९॥ चे लक्ये द सिण्स्यं च्तथा इस्र हाचसा ॥य स्याकता धिवासीमांब्रह्माँस देखवा निदं॥ ६०॥अतो खादशुसाहस्रस्थापयात्र देजन्मनां॥धर् वेशक्स सहस्रा णेसीराखेव पीजं तथा॥ ६१ ॥ कते जण्यालयं नाम्ना नेतायां करुषा पहं ॥ का पेल हा परे चेतर् हे धे जंडू लकंजले ॥ ६२ ॥ ब्रह्म कुंडे नरस्नात्वा द्वाद्वाद हु होएन गिनवर न ब्रह्मजालायां र पार्टे : प्रमुच्यते ॥ ६३ ॥ ख्या तमेष्यह दे : स्थानमीयदूरे महामुने ॥ हता महस्य वन नात्स्थीपयस्यान सु त्तमे॥६४॥ वामि मिलके सात की सकी निर्माण करो ५८ वो स्थान केपूर्व दिशामे सारंगप

र्वतका खंग और शाबुनगरी है पश्चिम दिशामिं मात्स्य हर है उत्तर दिशामि ताल पर्वत है ५९ दिशामे चे लक्य पर्वत और बह्म ग्रहा है जिस ग्रहामे बेठे हुवेब ह्मा ने मेरे कु आज्ञा कि य ६० इसबार ले अगर हजार बाह्मणों का और छत्तीस हजार बिनयों का स्थापन करों ६१ इस स्थान के दुगपर त्व कर के चार नाम ही बेगे सत्य सुगमें कण बा लयनाम ने तासुगमें कलपा पह नाम द्वापर स्थापन कर बह्म ग्रहा के देख के बह्म शालामें ने ना

स करेगा तो वो सपूर्ण पापस मुक्त होवेगा ६६ हे करों मेरे दूतल में रहनेसे यह स्थान विस्थावि कु पावेगा वास्ते बहा के बनसे स्थान की स्थाप करो ६५ ऐसा कह के हतुमान अत्थान सपे कण्वकरण अपना शिष्यजा गालव उसकु कहते हैं ६५ हे गालव सी चष्टु वेहामे जायके वाहा रहने वाले जो स्वक्ष निष्या स्थाप और बाह्मण अरेश बहु साम विसर ऐसे बनिया कु वि ६० स्मण और बाह्मण हा सुपा में वता देश बनिया कु वि ६० परिसा करके छाव पहाउत्तमस्थानकी मित्रण करताहु ६० तब गालव करणी मसन्त्रहो यह एक वमस्कार करके मनास हो समें आये रे बता चल कु देरवे ६९ पी छे

द्रस्तातद्धेवीरोष्ट्रनुमृत्सुनिरप्ययः। गालवपाद्गिय्यस्विनयावन्तवनः ॥६५॥ कण्कःवानः॥॥गच्छगालवसीराष्ट्देशीया न्व णेजाहिजान्॥सर्कमिनरतान् धर्मिनर्गलस्यस्यानयः। ६६॥ दुन्ती ना शालस्यान् मनेवस्यापियपानिसाप्ततः ॥ आह्मणाविष जन्यापिह् जसुत्रूपणेरताः गेहः ॥ तान्समानायविषद्रप्रश्रियस्यस्विनसः ॥ उत्तमस्यान् मनेवस्यापियपानिसाप्ततः ॥६०॥ ततः भणम्पसगुरुगालवो हरमानेसः ॥प्रभासस्वमासाध्रह्मपद्रयद्र्यद्रवन्ति। १॥ ६९ ॥ ततोगिरिमितिकम्यगालवो गाल्सारस्वति ॥ त अप्रमालवो यत्वस्यान् प्रणनामहिजोत्तमान् ॥७०॥तत्वरिस्ते विनो विप्रास्तवी स्पप्रणतम् नि ॥ पप्तकु कोभवान् कस्मादागतस्वाय सो अवीत् ॥७१ ॥ त्र्यवेतुमुनयभ्वात्रयद्यमहमागतः ॥ भवस्यसादतः कार्यग्ररोरतस्य सिध्यति ॥ ७२ ॥ पाचालारस्येजनपदेषुण्ये पाषापनोदेकं ॥ वनेव सित्धर्मात्माकण्वनामामहासुनिः ॥७३ ॥ हनुमतो सद्त्यस्यवनातस्यसुवतः॥ आसीसुन्धवरः सोपस्याप नेखाह्जिनमागः॥ ७४ ॥ तत्वर्यमहमापातो भवतः कष्ठुवतुनः ॥ आह्मणालज्ञु ॥ ॥ कल्यमामाविहायातावयतीया मिलाविणः॥ ७५ ॥ प्रभासस्तत्रमालोक्यमोदो स्तनः परोसुनः ॥पार्ययस्वसुने किस्वित्यत्तमनसिवा छितः॥ ७६॥ स्वतावलक् छोहके कार्य

र स्तिके तट ऊपर आयके स्नान करके पाहारीं है हुने बाह्मणोफ़ नमस्कार करते भये ७ सरस्ति। तर के रहनेवाल भारमण गालव भरपीहरूँ देखके पूछ ने लगे तु कोन है काहासे आयाई तब गालव भरपि कहते हैं ७० सब क्सी सवण करों जिसवाकी मय आयाह तुमेरे अनुमहसे हमेरे राहका कार्य सिद्ध हो ७२ पापाल के जाने पापापनीदन वनमें पर्मात्माकण्यनामकरके करपि रहते हैं ७३ महानके यून औहतुमान उनके बचनसे वर प्राप्त भयाहे आह्मणोकि स्यापना करनेकी रखा भ रहि ७२ उसवाक्तेमय आयाहु आपकोन बो नोकहो बाह्मण कहते है करम ग्रामसे हमयहा आये ती चीकी रच्छा करके ७५ सो प्रमास के प्रस्त देखके हम

दुष्प्रपम देवातच्यमस्मा भिर्धमेवलालेः॥ ॥गाल्व्उवाच॥ ॥यदिदुष्ट भवंतोमेवरयोग्यो सिन्देत्तया॥७७॥महरे स्वेन्ट स्थानस्थ -पॅनेक्कागर यसी।स्थानदान्मुपाद् यसाध्यदुरुरे में ता७०॥तदाक्णववन्तःसर्देगालबस्यमहर्षयः॥ऊत्तुःपरस्पॅराः प्रायःसमालोक्य चिरंततः॥७९॥अहो इह दिंचारे भवतां हुरुवताता ॥स्थानप तिमहोघोरे विश्रे हेण हिजनमनां॥८०॥ दें कुर्म उरि छत तद् हे हे निस त्तमापस्यालादुनशक्येतत्तदस्हतवयां न्छितं॥८१॥इदुक्तवत्हुम् नेदुवणिजःसपरियहाः॥तीर्थयात्रार्थम् देश्यप्रभासक्षेत्रमागताः ॥८२॥८ण्यासीराष्ट्रवेशीयासाह्यीलाद्यालवः॥धृतोप्दीतास्तेसवेदान्त्रीलामहाधनाः॥८३॥इत्वेदगलवो्वीक्यवणिजां विषदी जसां।।अहोधन्यतरेःकोस्तीमत्तोयद्वसुधातले।। ८४॥ द्विणेरोकतदानंय णिजश्वसमागताः॥अयतेव णिजःसर्वेप्रणम्यो सु द्विजोत्तमा न्॥ दशाविधायास्मासुकरुणांभू मिद्व सरोधनाः॥ भवंदुर्खोस्माकंसत्कर्मफूलहेत्वे॥ दृध्॥ याच्यंतांदाय येष्यामोभव दिर निका सितं॥गालवंनीदयामार्द्धसानिकाम्ट देजोत्तमाः॥८०॥स्मॅबर दयमन्वानः लार्ट सिद्धे हिने पितं॥यूरं वेनयसंपना द्वेजस्यूषणेरताः॥ ८८॥कर्छपाईहरूदराः क्रतोदेशात्ममागताः॥॥वणिज्यस्तः॥॥व्यंसोराष्ट्रदेशीयावैष्णवावणिजोहिजाः॥८९॥ प्रभास क्षेत्रमे आ

पेन्द्रें सीराष्ट्रेशमें रहनेवाले बढ़े दयालवंत यज्ञोपवीतपहीं हुवे दान यूरधनवंतथे न्द्र ऐसे वे तेजसीव नियोक देखके गालव करिष कहते है कि इस घ्रिम ऊपर मेरे सरीरवा माग्यवान कोनहेन्छ बाह्मणोने स्थान पति यह स्वीकार किया इतनेमें बनियेलोक विआये अबबनिये ब्राह्मणों कु कहते हैं न्द्र हे ब्राह्मणोत्तम हो सत्कर्म कि फल पासि होनेके वास्ते तुम हमेरे गुरु होन्द्र तुमेरा इच्छित जो होवे से मंगो हम देवेगे ऐसा बनियोका बचन सुनके ने ब्राह्मण गालव ऋषिक ने रेपा करते भये न ७ तब गालव ऋषीने अपनि कार्यसि वास्ते तुम मनके कहताहै है विणक लोको तुमसब योग्य हो बाह्मण सेवामें तसर हो न्न और दयाकर के हमेरे हृदय भी गेहे ऐसे हुम कोन हो के नरे देश से आये हो बनियेक विभाय का प्राप्त कर कर के हमेरे हृदय भी गेहे ऐसे हुम कोन हो के नरे देश से आये हो बनियेक

इते हैं इस सीराष्ट्रामे रहते हैं वैष्णव है बिणक् जाता सन्द्र है ८९ बहादेवने क्वतसे कोई वानरने हमोह यहा सेजे है प्रशासकी जम जायके सरस्वतिके तटफार के इते हैं जो माहात्मा तपो विश्व माह्मण जो है उनो कि सुभूपाकरों भीर वेबाह्मण जो आजाकरें वे कार्य तुमने निष्य स्थाप अधिकारकरना ९१ यह बहा कि आजा है सो जल दिक रो लेसी छनीस हजार बनियों कु भाजाकरने सपे १२ सोवस सेवस प्रशास सपे हैं ०३ वाले तुमेरा इन्छित होने सोक हो आप की कृपासे सिद्व हेरे १४ गालक कहते है पायाल देश मेपापाप नो दन ती पर है वाहा कण्यनामा को सर्वा स्थाप हो हम स्थापन करने कि इछा सह उमी बखत हम्मान जी सामने आयके गालक कहते है पायाल देश मेपापाप नो दन ती पर है बढ़ा स्थापन करने कि इछा सह उमी बखत हम्मान जी सामने आयके

केनापिकपिनाश्रैनमेरितानचनादिभे ॥गत्ताप्रभासतश्रस्थान्सरम्ब्यास्तटेस्थितान्॥९०॥ सुभूषभ्वदिजान्सर्गन्तपो निधान्सह त्तमान्॥ यदादिशतिनेषिमास्तत्कर्तथ्यमश्किते ॥ ९५॥ आदेशोय विधेरेवप्रमाणी किमनाह्नत ॥ पट्निशचसहस्त्राणावणिजाकपिसत मः॥ १ २ ॥ अविष्यानिद्यीतं प्रत्येकन सुविन्यतान् ॥ तीथयात्रामिपादियास्तद्वयसमुपागता ॥ १३॥ तद्वासुविनृण्वत्त्वावतं का सितहितत्। युप्पत्मादतः सर्वेसाधिषयामहेदिजाः ॥९४ ॥ ॥गालवृज्यान् ॥ ॥पापापनीदनतार्घे देशीपाचालसङ्गकै॥व्यस्तिन त्रसुनि साद्गात्केष्वनामामहातपा ॥ •५ ॥ तस्यासीन्महतीवित्ररखापनेञ्जाद्विजन्मना॥ तदर्पनित्यानस्यह्नुमान् पुरतोत्रवीत् ॥ ९६ ॥सोराषुदेशवसंतीन्दिजाच्यावृणिजस्तया॥समानीय्प्यसेनस्याप्यात्रमहासुने॥ ९७॥ युरोर्दिशमादायुर्म्पा सोस्मीहमाप्तं ॥ तदागच्छेतव सर्वतभाभाभिद्विजेन्सह॥९८॥अहोविधेर्नेरचनाङ्गातुकेनापिशक्यत्॥ एतद्ववैर्यसिध्यर्थवणिक्दिजसमागम् ॥ ९९ ॥गालवस्यवन् स्रुलाह्यिजस्यविजल्लथा॥पापापनोदतीर्घेवैपयातास्तेसा।लवा ॥१० अभयायातान् हिजवणिकृजनान्गाल नस्रातान् ॥समालोक्याव्रवीद्धिष्यदृष्टरोमामुनीत्यर ॥१०१॥ अहपन्योस्मिसुतपा छात्ररत्यतापावान् ॥वरवरयतुष्टोस्मि कर्मा णानेवसुवता।१०२॥

पानपसुन्त ॥ १०२॥ वोलने नने ६ किसीराष्ट् देशमेजी मान्नण बनिये रहते हैं उनोड़ लायके यहास्यापनकरों • ७ तब युरुकी आझा मेरेकु भइसो मय बहा प्राप्तक्तमा हु इसबाको यह बाह्मण सहबर्तमान वाहा बढ़ों • ८ अहो क्या आव्य है प्रह्माकिस्बना किसी कुमा हुम नहीं होती है युरुकी कार्य सिद्धी होने के छिपे माह्मण बनियोक्ता समागम भवा १ गाठवका बचनसुनते बाह्मण और बनियं गाठव सहबर्तमान पापपनोद मीर्थ पति आते भये । गाठवका बचनसुनते बाह्मण बनि योकु देखक कण्य करिय प्रसन्त होपके शिष्यकु कहते हैं १ १ हे गाठवमय धन्यकु कारण सु शिष्योमे रत्नसमान है भय सञ्च वस्ता मगो १० ९ गालन कहते हैं। आपके अनुयहसे बाह्मण औरविनये आये हैं उनों कि स्थापना उत्तम मुहूर्त मकरों १०३ परंतु तुमजो यसन भये होतो छह नार विनये मेरेकु देव सुमेरेस्या पना किन्दे हुवे स्थानमें उनाका स्थापन करता हु १०४ हे तुम तुमेरी छपासे मेरेनामम वो विख्यात हो तथान्तु कहके सुझ छम में अखादश अवारा हजार बाह्मणोकी स्थापना-किये बाह्मणकी युशुपा करने के वास्ते विनयो १०६ छत्ती मह जार स्थापन किये पीछे विस्वकर्मा का स्मरण किया ॥१०७ विस्वकर्मा आये उनों कु कण्व कर्मी कहते हैं कि बाह्मण विनयो कि स्थापना करना हु इसवास्ते यह वनमें उत्तम पासाद घर बनाव १०० उत्तम वाग वर्गी वे जिसमें होवे ऐसा सुदर पुरकी स्वना करों ऐसा कण्यका वचन सुनके १००

गाल्वउवान ॥ ॥ भवत्मसादने विपाव णिज्ञान मागता ॥ तस्यानस्यापयत्रह्मन् हुर्तस्मिन् युभपहे ॥ १०३ ॥ परं तुरो निव णि जापद्सहस्त्रपदीयता॥त्तस्यानस्यापनामध्येस्यापिय्या मितानह॥ १०४॥मन्नामेनार्य्या तुमायात्त्वस्यादान्पहाहुने॥ तष्तुस्त सुनेउरेस्थापयामासवाडवार् ॥१०५॥अखादगसहस्या णिकणवीद् इमतांवरः॥शुश्च पार्थ हुजेद्राणासमर्थानर्थ पूर्वये ॥१०६॥ विदा त्सरव्यास्हमा णिवणिजन्यापेयस्या॥ तथ्दु स्व यसंस्मार्वित्यकर्म णमारुमः॥१००॥स्यापिट प्रेमहास्यान विणक् विपेर्वराजिन त्।। तद्धमेत्र्विपेनेप्रामादान्कुरुसमतान् ॥१०८॥वरारामा् भिरामतत् पुरंश्चर्युद्रं ॥ निशम्य तिवचम्नस्य कणवस्यसुमहात्मन् ॥१०९॥ निर्मेपात् निर्मेसेयानं विश्वकर्मीस्वेन्स्म ॥ अपादशसहस्त्राणित्राह्मणानागृहा णिसः ॥ ११० ॥पट्त्रिशच्चसहस्त्रा णिवणिजामं दिरा णिस ॥रम्येंड्रें विनर्माय वुरू कर्माजगाम्ह॥१९१॥ ततो बिलोक्यकण्वस्तां पूर्णास्तरमम् द्विनिः ॥सोस्मरत्कामधे नुवैसर्वकामसमुद्धये॥१९२॥ ततोदेनिन्तर्भान्सर्यन्समाहयुर्नि त्यर ॥ शांत्यर्धयज्ञमकरोत्य स्मिन्सर्वविसास्मिरे ॥ ११३ ॥ समाष्ट्रचाध्वरं रूपवो विप्रानाह्यतान्य ॥ एकेकंप्रतिगोत्रसीष्ट दर्पेवार्त्यन्स् नि. ॥ ११४ ॥ ब्रह्मार्ण्णेकरुध्यासतेष्यस्यानमदान्सुदा ॥ दिशात्सहस्त्रसंरस्टेऋवणिक् पि. एरेपूर E1199411 11 एक निर्मिप मात्रमे अपने तेजसे वित्व कमीने

स्थान निर्माण किया अञ्चाहजार ब्राह्मणों के घर ११० छत्तीसहजारव नेयों केघर जिसमें हैं ऐसार्मणीयपुर निर्माण करके विश्वकर्माजातेमये १११ पछि कण्व असीने वो नगरी कु समृद्भिमान देखके सवकामना सिद्दहोने केवास्तेका मधेनुकास्मरण किया ११२ और सबदेव ऋगीन लोकों कु बुलायके शातिके अर्घ यज्ञ किया जिसयज्ञ मे सब आश्चर्य पाये ११३ फिर यज्ञ समामकरके बाह्मण कु हुलायके प्रतेकअगरा गोनोका नामले के ११४ ब्रह्मापण यज्ञ समामकरके तीस हजार बनिया करके परिपृतित वो स्थानका अगरा हजा रबाह्मणोषु रान्येनेभपे यह रान्मपने परमभन्तीये तुमकु दियाई सो पहण करा ११६ तन्बाह्मणोने स्वस्ति कर्क स्थान किया और आशिर्वाद दिया फिर कहती.
११ ० हे बाह्मण हो यह उतील हजार विषे तुमकु बािकताय देनेशाठे हो विषे ११० एकने बानिये बात गालय कर्णीने ने बाह्मणोकु अपने भक्ति से रोपविनये अहआर संबा के निमित्त देव भवे ११९ हमार ती से स्थानका वानदिमासवदेनता देखरहे है सन क्रिया देखरहे है उसनस्त बकुला के कहते है १९ हे देव हो मेरान्यन सुनो यह स्थान कण्कर पीने स्थापन किया है मेरी माही से बाक्ने कस्पर्यंत रहेगा १९१ कीर हम सर्वे यहा विवास करो प्रजाका पालन करो ऐसा सूर्यने कहा १९९ तन बहा। विष्यु शिव इत्र कुनेर

अराद्श्यइस्केष्योबास्यणेष्योभिन्नोर्भित ॥ एतत्षत्त्यामयाद्त्यभववुभ्योयप्रमृख्ता॥११६॥स्वसीत्युत्तवा नते विभैराशीर्षिरभि नदित ॥ युन योवाचतानुविमान्समदर्पिर्मुदान्वितः॥ ११०॥ षव्भिद्यान्यसहरूमाणिवणिजो विनयान्विता ॥ वाखिनार्यपदानिवी भविष्यवि दियोत्तमा ॥११८ ॥ युरोतेक्योदिनिकीर्णतत्यान्यालबोस्ननि ॥ भत्तर्यवणिज् शेपात्तिह्जोक्यः पद्तवान् ॥११९ ॥ स्थानेवेक्योदी यमानेपर्यत्यु निदरोपुन्॥मद्पिर्चसर्वेपुन्कुस्किनविदित्॥ १२० ॥सर्वद्यञ्चतुकोदेवास्योनकपेवणस्थापिते॥मयिसाक्षिपित्रयत्नेनाकस्या तमिपितिषति ॥ १२१ ॥भवतं सर्एवामिवसेतो दिवानिश ॥पालयत् प्रजा स्विध्कयवस्यानिवासिनीः॥ १२२॥ एवस्के ततो इह्या विष्य रुद्रेद्रयक्षपा ॥धर्मापिवैरुणोवासुईनुमान्सर्वदेवताः ॥१२३॥स्वस्वनाम्नान्बिरचातंतीर्येकृत्वाचनुग्मिरे ॥समानयन् निज्यु नीन्वणि जोषमहासुनि ॥१२४ ॥सोपरपद्दणिजस्त्रभगलवेनमतिश्वितान्॥उवाचेतितदाकपव स्मितपूर्वेसुवान्वित ॥१२५ ॥अम्तोगालवादी नानणिजानिद्वज्ञन्मना ॥ गालनस्यापितारोतेगालवा संतुनामत् ॥ ११६॥ तण्नापिकपोलारचाः कपोला-सुतकुउला ॥ येनपाक्वाङ वानित्यसुभूषार्थम्टविवै॥१२७॥माम्बाडान्सुरिभस्यातागुरुदेवाचीनेरता ॥येवामाम्बाभवेद्दाहोमदीयस्थापनात्मक ॥१२=॥तेमा मानाना क्रमानाना । या निषमाणागीतमादी निसतिहि॥ १२९॥ ॥ पम भिष्ति नाम आदि सब देवताने

१२२ अपने अपने नामसे तौर्य निर्माण करके जाते भये कण्व कर्षी अपने स्थापना किये हुने बाह्मण यनियोका सन्मान करने असे १२४ पीछे गालव करवीने जो छ इजारवनि ये स्थापन किये हो उनी कु देखके मसन्म नित्तसे इण्य करी कहते हैं १२५ मयम गालव आदिलंके यहावनिये बाह्मण आये और यह छहजार वनिये गालपने स्थापन किये याः को इनोका नाम गालव बनिये १२६ मो गालववनिये है भिनोके कपोल कहते गहास्यलके अपर कुछ छ सुशो भित दिखते है वासी कपोल वनियं पोन होनेगा और जोये पा क् वाडन बनिये यह सेवाके वासी फिरनेही वेपाक वाडव नामके विल्यात हो जिने का वाडा कहते रहनेका समूह पूर्व दिशामें है वास्ते १२८ वे पाक् वाडव बनिये मये उनोका इसरानाम मोरविये विनये ऐसे विल्यात भये जानना यद्यपि विनयों के गोत्र अनेक है तथापि जो बाह्मणों के गीतमादिक गोत्र है औद बनियों के जानना १२९ औं उनों का इसरानाम मोरविये विनये ऐसे विल्यात भये जानना यद्यपि विनयों के गोत्र अनेक है तथापि जो बाह्मणों के गीतमादिक गोत्र है अने कु कण्व कहते है उन कु कण्व करते है उन कु कण्य क्य क्या करते हैं उन कु कण्य करते है उन कु कण्य करते हैं उन कु क्या क्या कि क्या क्या करते हैं उन कु कण्य करते हैं उन कु क्या क्या क्य

तान्द्रेयसंत्व णिजांनानागोत्रोद्रवान्य पे॥ चाहंडावान्दिकागंगामहालक्ष्यी । १३०॥भोगादेवी वराघाघानान्येषां कुलदेवता ॥ततो िलोकयन्कृष्वीव णिज्स्तान्कतांजलीन्॥१२१॥ विनयावनतान्पाह्यसार्ष्व्रीहः वित्तमान्॥भ ज्ञांगृहं दुवण्जः प्राग्वाडारेचगालवः॥ १३२॥ २ विक्त्मासदासे गाकरणीया इजन्मना ॥ भवद्भि विभवाक्यो निनं लच्चा निकदान्न॥ १३३॥ स्वधर्मणूव तित्व्यंनाधर्मकर् महण । अहे विमा मृणुष्टं वीर् दत्रकथयाम्यहं॥ १३४ ॥अस्पद्दे वगोत्राणिगे तमादी निवे हिजाः॥ गीतमः साक्तिगाग्यी वत्तः पाराशरस्या॥ १३५॥ उन पम्युर्वदल्क्यविषः इत्सपे त्कसे ॥कश्यपः को शिकश्रेवभारद्वाज कविष्टलः ॥१३६ ॥सारं गिरिश्चहरितो शां डिल्यसन क्साया।।गे त्र ण्येत्रानिभेटिप्रात्त्या प्रेता नेमयात्र हि॥ १३७॥वस्या मिमवरानेषांशृषु छंतान्समा हिता ॥ तथा पेमवराण्यचगीत्राण्टे कादश्चिच॥ १३०॥ पंचर पिचचता रत्री पर कपवरा पिचे॥ गीतमः सन कः कुलोवतर पाराश्रेलया ॥ १३९ ॥ कपर पः के शिक के बीट मन्दु बें र लक्त या। द्मारवामाध्य देरीयेषांनवानामेवकी तिताः॥१४०॥ ज्ञा उत्यक्षेवगार्गक्रहारीतस्वत् र कः॥ ग्राखान्के यभी तेषांसामगानकत मप्॥ १४१ ॥कपिष्टलवसिर चसारंग रेस्तृतीयक ॥अयर्वेद विदुषात्रााखामध्यं ग्रेकामता ॥ १४२॥म्दीयस्थापनायोगात्सर्वेकाण्याभविष्यति ॥परोपकार् नर्ताः सदाचारदयालवाः ॥१४३॥स्णध्यात्वातत कृष्वभात्रदीत् क्रेजरुगवान्॥भ वेष्टेच अवस्या मिकियंतः कुलदेचताः॥ १४४॥चाहुँडाचैवसार्ट् ईरजकाब लिमातरः। नित्याचमडिता सिन्दातथा रिष्ट लवा सिनी।।१४५॥ ॥ महे चलना अधर्मकरना निह अहो हे बाह्म

णहें औरतुमकु जोकहताहु सोत्रवणकरो १३५ तुमेरे गीतमाविक अन्तगोत्र और प्रवर वेद शाखा कहताहु ओ सव चक्रमे स्पष्टहें १३५ 1३६ 1३० 1३८ 1३९ 19४० 1४१ 19४९ स्थितिसेतुमेरे कुल गोत्रशाखा कि छोर मयने हम्सी स्थापना किये है वास्ते हमेरा अवारा हजार ब्राह्मणोका काण्य बाह्मण (कंडो लिये बाह्मण) नाम विख्यात होवेंगा

पगेपकार करनेने नसर सवाचारी वयातान् होते रिश्य पीछे नाणभर भागकरके माह्मणोकु कहते हैं ते माह्मण हो तुमेरा भिष्य यूतात करताहु तुमरी कितनी-क कुत्तवेनता होवेगी उसके नामश्य नामुडा नामुडी वेश वर नका २ पिलमातर ४ निता भमडिता भिष्य अपियत वासिनी व ॥१८५॥ यहसव माह्मणाकि कुत्तवे चताहोंनेगी नहा जहा हिकाने अपर निवास करके आनदमे रहेग १४६ वोषो विकानेमें वे कुत्त वेयता इजित होयके भनवायकहो ऐसा कह के माधाना जो सामन है उना

एतादेव्योपाविष्यतिविषाणाकुलदेवता ॥यत्रयत्रकतावासाविलसतं सदाप्रुदा॥१४६॥तत्रनत्रार्वितादेव्योपावतुपत्रदा सदा॥ इसुत्तवाषाहराजानमाधातारसुपस्थित॥१४०॥पालयेनमहीपालस्पानमत् तुत्तमः॥मयापति धितराजन् प्रजापातास्तियद्भवान्॥ १४८॥ ॥द्विषीषा० कडोलत्राह्मणोयतिवर्णननामप्रकरणे१८ संप्रणे आदितः मृत्वप्रयस्था २३७१पचद्रविद्वमध्येपुर्जसमस्य अ

कु कहते है १४० हं माधाना नु प्रजाका पालन करनेवाला है इसवास्ते मयने जो अतिउत्तम् यहस्यान पतिधित किपाई उसका पालन कर १४० इतियों बाह्मणी मान अध्यायमें कहोन्द बाह्मण सोएउ वनिये भीरकपोच बनिये की उसकि मपूर्ण मह पवरण १० मपूर्ण ७, ७, ६५, ६५,

			<b></b>	~~~	<del></del>		1 14 <del></del>					,	•
<u> 4</u>	मन्द		7444	चेद	रामवा	प्रथ कडो	ल श्राह्मणाना गो	भावटक वे	दशास्वा	तानचक			·
3	पउचा	गीतम		्प	ना	T	अध्यात उपमन्य	<b>प</b>	मा	94	भारद्वान		
ئد		साक्रम				•	<b>दद</b> ल	य	मा*	34.	फरि चत	अप	मध्यमी
	<u>चोत्रो</u>	गार्म		ना	को	1	नसिच	म	-माध्य	7.9	सारगिरी	•मथ	मध्य
¥	मर-	<b>T</b>		<del>'</del> 9	ना	11	<b>इ</b> स	্ৰ	मा	14	<b>कारीयम</b>	<b>'मा'</b>	की
5	प्रमा	पासदार्		प	म्	33	पोन्स			74	गाडिस	'सा	की
_	नोशी	उपमन्		प	मा	73	<b>क</b> रवप	<u>च</u>	- भा		मन्दि	"प	माप
<b>₩</b>	नास	उपमन्प		प	~म्ह	74	क्रीशिक	प	<b>मा</b> _	10 100	गर्नेस		

## उर दिसपावन को कणस्थ ब्रह्मणो सनिष्करणम् १९

अव विनापावन कोकणस्य ब्राह्मणोकि उसिन कहते हैं शिवजी स्कद्सामीकुं कहते हैं जमदिन क्रियों के प्रतापी परगुराम नीनोने पिताके व अनिमित्त से निर्मान प्रध्यी किये १ एक वीस व खत क्षित्र यों कु मारके फिरनो का विवध से शुद्ध होने के वास्ते समझियों कु सर्व प्रध्यी का बान यथाविधि दिया १ वाद रहने के वास्ते समझि के पाससे थोड़ी पृथ्वी मंग छेके नवीन अर्पारक नामका क्षेत्र निर्माण किया वो क्षेत्रकी चहु सीमा क्षेत्रसे प्रविमे सह्यपर्वत दिक्षणमे सुब्रह्मण्य पश्चिममे सह द उत्तरमे वैत रणी नदी है वो क्षेत्र अपूर्वके आकार से है और छवा को स ४०० है विस्तार वो डा को स १०० है का शिये प्रवास विभाव अधिक है ५ वो अर्पारक को त्रमे नो विख्यात ती ये है उनो

अथित्तपावनब्राह्मणोसित्तमाह स्कांदे सह्या द्रिरवंडे महादेवउवाच॥॥जमदिन् हुन्-श्रीमान्भागेवोहु नेहंगर-॥पित्वंधिनिक्तं निक्तां स्वाह्माह्माह्माह्मान्द्र निक्तं निक्तं निक्तं स्वाह्माम् करे न्मह्मा ॥१॥रामेण नहताः स्वाह्माह्मावेदा १॥ सह्यात्सागरपर्यतं श्रूप कारंच्यवस्थित ॥ तार्योजन दीर्धन वस्तृतंत्री चियोजन ॥४॥ सम्बाह्मा चितापृथ्वी सहुद्राह्म वहत्ना ॥काश्यायवा धिकक्षेत्रसर्वत् । येसमन्वत ॥५॥ विमन्त्रं निम्तं नेवरवा दिरतीर्थ हत्तमं ॥ह रहरे स्वरंत्रार्थते स्वाह्मा स्वाह्म वेद्या क्षेत्र स्वाह्म प्रति । तस्यान्त्र द हिणे भागकु अस्थर्ठा रुद्र हता ॥७ ॥म्बद्रामं तथान्या निगोमा चुरुक्त थेवच ॥ तत्रेवस्था वितिष्यो रक्ष चुन्नमा रज ॥ ५ ॥ राम छुद्र इस्त च प्राची सिद्रं गणापमं ॥ एवंक्षेत्रं महादेशमा वेणविनि मितं ॥ ९ ॥ तन्मध्येत् कृतोवास पर्वतेचातुरं गके ॥ यान्द्रार्थने वय्ज्ञार्थमं त्रताः सर्व ब्राह्मणा । ॥९ ॥ ना गताक्रव्यः सर्वकृत्रो भू द्राग्वोह ने । मयान्त तनकर्वावेक्ष च्चत्वेत्वर्तं ॥१० ॥ ना गता ब्राह्मणा सर्वकारणं कन वचाहे ॥ ब्राह्मणा व्यान्तवाः कार्याएवं चित्रेविचारयत् ॥ १२ ॥ ॥

केनाम निमलतिर्थिनिमेल तीर्य खिदर तीर्य हिर हरेन्यर तीर्य मुकेन्यर तीर्य गलकेन्यरतीर्य सुंवाइमे वाण गगा तीर्य कुगस्यली तीर्य मठत्राम गोमाचल गोर्स्ततीर्यरामकुङ कुडमल तीर्य आदि अने क तीर्य है ९ ऐसे वो स्पिरक सेत्रके वी नमें चातुरंग नामक पर्वत के ऊपर परझ्रामजीने निवास किये वाद शाह्रके वास्ते और यज्ञ देवास्ते बाह्मणोकु निमंत्रण किया १० तव करिपनिह आये उसव्खत परझ्रामकु बोहोत कोघजायाऔर कहने लगेकि मयने यह नवीन सेत्र बनाया १० अब बाह्मण कायकू निह आवते सो कारण निह माळूम होता है वास्ते नवीन बाह्मण उसन्त करणाएं- सामनमें दिवार करके १२ मात कालकु स्मान करनेके बान्त समुद्र तहके उपर गये उनकेमें यहां अकस्मान् विता भूमिके नजीक भाइक पुरुष आपके खाँ रहें उनोकु वे रवके १२ परग्राम प्रकृति है इपुरुष हो तुमेंग कान जानीकोन धर्म और काहा रहत है मोकहो मेरे कु स्थापना करनेकी इन्छा है १८ तब केवरी कहने हैं कि है यम हमेरि जाति कैवरीकि है धर्म स्थापका है सुमुद्रके तह कपर हमेगवासकि हमेशासार मावका समूद्र है १८ ऐसा वो कैवर्तीका क्वन सुनके सम्बद्ध पवित्र किये बाह्मणत्व दिया सुनै विधामे कुराल विद्यो १६ और विवाद विकाण तुमकु मपने पवित्र किये वासे विन्यानन बाह्मण नामसे विज्यात हो ओर को ब्यरन सुनकु ओट् खमास-

स्पॅरियोतुरुनान्यिगत सागरद्वीने॥ वितास्यानेनुसहसाम्यागताभ्यद्दर्शसः॥ १३ ॥ काजाति कथ्यधर्मश्वकस्यानेचिवनासन॥ कृपयध्यस्यापनेरेकारणवर्ततेमम॥१४॥ ॥कैवर्तकाङ्म् ॥ ॥ज्ञाविष्ट्च्छमिहेगमज्ञाति कैवर्तिकीविच॥सिधुतीरकतीवासीच्याधध मैविशारवा ॥१५॥तेपापष्ठिकृतक्तापविभमकरान्त्।।बाह्मण्यननतावन्तामर्वविद्यासुनकार्ण॥१६॥वितास्यानेपविभताञ्चित पावनसङ्गका ॥यदाकरानार पाक वैपतिर्जायत्त्रिवि॥१०॥तदाह्य तमासर्वसम्बेता सुरवासये॥आगत्पाहतदाविमान कार्यसा पर्यस्पात्॥१८॥एनहित्रा भ्रेषसापादतातुभागवामुनि ॥ आनीतवान् स्वात्रये वेत्रतीक्याधिपति अभू ॥१०॥ततोनूतनविभेत्रयः ददीगोनाणिनामतः ॥ चतुर्देशमोनुकुसा स्यापिनाभ्यातुरमक ॥ २०॥ सर्वचगीरवर्णाभ्यसनेत्राभ्यसुदर्शना ॥ सर्वविद्यानुकुत्राभ्यभागु नस्यमसाद्वा ॥ १९ ॥गोकुणीप्यमीरामोमहाबलदिइसया॥महाबलेशसप्रज्यविधिव्द्रुगुनुदनः ॥ २२ ॥किचित्कालसन्वीषास्योकपी स्परमिनिषी ॥गतेत्रुभागीवेरामेतत्सेत्रस्यादिनात्याः॥२६॥ततः कालात्ररदेवीस्वकर्माणस्यितास्वते॥कृतो राचेवमादायस्यामिनुदि परीक्षणात् ॥२४॥क्षकाय्कर्मकरणेस्रस्मरुर्मार्गवमुनि॥कागतस्तत्ताणाद्वपूर्वोक्तस्यत्वकारणात्॥२५॥त्तन्नेवदृश्यते स्ट्यकीधि त सजगहुरे ॥त्रापितास्तेनयंशिमानियार्थेवकुश्वित्सका ॥२६॥ ॥ होश्तो मेय स्मरणकम्मा मयनत्काल आयके तुमेराकार्य साधन कुरुगा

६८ रेना भागिनिव देके उनोकु अपने स्मान ऊपर छापके १० वो नवीन आह्मणोकु चीवा गोभ और साठ उपनाम दियं २ - ऐसे यह विन्त पावन कीकणस्य आह्मण सब गीर वर्ष धंदर स्वक्षत सब विचा मे कुत्राल भी परशुरामकी छपाने अने भये २९ परशुराम महावले खरक व्हानार्थ आविश्वये बाह्य हुआ करके २२ कि विल्लाल भी गोकर्णे खरमे निवासक रवेशने पीछे परशुरामके यथे बाद वेसेवस्य सब साह्मण २९ फोकणस्य अपने स्वकर्म ने निच एक्ते भये फिर कि कि कि विक्ष हु होते २४ बिना काणा परगुरामके स्मरण करते तत्मण पूर्वियगान दिपाइसवास्ते आयके खडेरहे २५वाहानि कारण कर्म देखके परशुरामने जापदियाकि तुमसव निधे २६ कु च्छित रिटी हो जाय दूसरे किसेना करके निर्वाह करों यह मेरा सायणसन्यहै २७ शिव कहते हैं है पार्व नी नेरे सामने यह नित्त पावन ब्राह्मणोकि उसनि कथा किह २० फिरस-

ज्ञापत्रत्तानान्मेसर्वेकुत्सिनात्त्रवरिष्ठणः॥सेगांसर्वेत्रकर्तारःइदं निश्चयमायणं॥२७॥इतिहासरिमंदेवीत्वार्टहंसस् विवार् रितायनस्यनांसत्ते रद्निश्चयकारण्॥२८॥सह्यादेश्वतलेयामं वित्तपोलननामतः॥तत्रेवस्यापिता विष्नायावचंद्रदेवाकरी॥२९॥ अतः परंप्रवस्या मिगे त्रप्रवृतिर्णय॥उपनामा देवें दंच महाराष्ट्रारत्यकाषया॥ ३०॥ भार हाजास्वगार्या, क पक्ल मे लिता जामद ग्याश्र्वता ॥ बाष्न्या की शकास्टू प्रवरसमद्भृता विष्णु वृद्धा नित्दा ॥ वासिष्ठा के डिन्याः दुनरपि मिलता शा डिल्या काश्र पास्ट इंगिविह दिरेतेप्रणयन्समयेवर्जनीया प्राताद् ॥ ३१ ॥जाणाँ ते आउट ले चिप्युणकर हिचिनले आणिमोने चांपेवा चोलऐसे करसहवदतांट कजेया निधाने॥फद्गे हिमाडमोकेप रिमिनअम त्वाडट्करकाहींयासर्गेत्र अत्रेटशासहप रेजाजे गछेकरते हि॥३२ ॥ इंड आणिपॅड से मागव तवन्द्रि संस्थाजामदर्भ रुगोत्र॥ बाक्त वाचेव् हरवाल जाणादो हंगे व जाणाजे मानवाणा॥ ३३ ॥ वैद्यापाय नमाउकाभोंक हिमिडेसाहास्न हेन्या जाणापाचसरक्त पंपळरवरे नेतु दिनीसर्वथा।आचारिपटवर्धना दे फण्यो हेन निहसंरचाड रे नाणा निश्चय निनपावन असे की डिन्य गं चीवरे ॥ उर्जा ड्वेतया गांगलेकार जेकात सेमाल राजा जा है। हिएका॥ गोरेसे हिन मुक्तकालेसजाणा ऋष्मंदहैवत्मगोत्रा दीजाणा॥ ३५॥ नेन् श्रीणिक मंडजीकपरिसापाराज्ये हिनधा तेसे मेहदले तथा कणिम उँ है देव हिस्पर्धा ॥तेर आंछकरांसिहनअवघेहेसमसख्यापुर जाणा निश्वयद्भपसर्व समते हे विष्णु वृद्धिकरे॥ ३६॥ कालेविद्धांस कर्दिकरितमरेआणि जेकामरावे खांदेवेमायदेवासहपरिशिज आणिसान्ये ररावे वावेजाइलजेकां तदुप रेप रेसासागवत्ता मिधाने

ह्याद्रिपनिके नीने निपलोन नामकरके एक याम है बाहाबो आह्मणोक स्यापन करके महेंद्राचल पर्वतके ऊपर जानेक्सये २९ अवने शह्मणोका गे त्र प्रवर्णनामकाभेद वर्णन करते है २० भारहाज आदि लेके बीद्रा गोत्रके नाम स्पष्टहें ३१ और प्रत्येक गोत्रमे जोजो उपनाम है उसका अर्थ आगे चक्रमे स्पष्ट दिखाया है ३२ ।३३।३४।३५।३६

सरणाजाणारसातासहर विसमत्युक्त गोनाकपीने ॥ ५७॥ गोलंबे धमनोहरादिक तथा घाषाल घेसासही दर्व सोहिन रानर्ज्य त दुपरिटेणेकण्यानेसिक्षानोशिघापुरदेकि अल्ववल्हिने आस्ववेह्यतया भारद्राजकुलात्यहालकरा संस्थातिया सर्वपा ॥ ३८ ॥ ना भीषोरात् पाणेकर सहकर्वेखगनेकेतकार गोरेलोटेवसेहिसहित्सुस्करे आणिमाट स्तारप्रेमेचेय वेडेकर भरपरिसा टावके भागवत ऐसे हे युक्त गृहिंगल महस्तकरिंद्रपाशियारियमोत्रं ३० गहिंचेंबीपयेभाषयेच आगाशि हि गोड बोले तथाच तैसे हेकी पाक चैवाडमाचे नाणा ऐसे भेदहे की शिकार्वे॥ २ ॥जाणाद्वधरातशासन्कराकानीटकरासहि तेसेवेबलवर्तकासहरवरे ने आपटेचा महि बोड्येकालटकर फाटकरवुलेतेलावणेकारज ऐशेकीशिकगोबीजेविसवधून्काक इयाजाणिजे। ४१ ॥ बातारकर्मरक्रासह्भट्ट शिने गैशिष्ठिवेलणक्रासहभानु उनेमाडीलक्रामहकातरणेहिसाचे पालीक्रादिकंतया जिकाइयपान २० गानु वोसरगीख लैसहनयाज शोगले जोगित वैस विवलकरभाणि करवेतेल लगारेसि हैं। कान्हेरेसहमेटकारसुकलेदामोदराफान क्या जाणापच वीसकाइमपिपरिशिजेस्तोक ह्यीसस्यका॥४३ ॥साम्बोडसकारतेकरत्यादातार्वाडेकर् पर्केचित्रारपुरेत्सेप्रचन्यंवागृन्यअप्यकर् दुर्तिमोद्कसानर्करतथा जेमातर्क्ञ्येतथा जाणादीणकरावकोपुरकरावासिखगोत्रीअसे॥४४॥ भाषीयैदाविनोत बापटतथा जैगोषड्ये ओकृहि भार आणि दिवेकरास्हरवरे विद्येव नातृसहि। तिसे पोकिश्चि महावस तथा जैगोग देसावये वासिखा मिति भेव नीसपरिसान्छोकह्यं निच्यमे॥ ४०॥ यथैताम्हनकार आणिटक्छे कांआवडकार ने तैसंधामणकार हो त्यपुळे तीवेकरा आ णिज माटेपाडकडागरेत्तुपरीजेकेचकारातसे जाणानिक्यय भेदमेसकछ हो आ डिल्यगोत्री असे ॥ ४६ ॥ जोशी सोमणदामले प रचुरेआणीकविद्यासही कालेमाद्सभोगलसहत्यासाहस्यवुत्यासहिशका छेटीककका न छे निज्सुरे जकात्सेगोउसे गसेपारण्कार युक्तपरिसाजा्बिक्यगोभी असे ॥ ४७ ॥ जाणार्जव्यासिद्यां ने पननर करोह लावणेकारही पच मधेवाव हरे जे रिसपुडिशापये आणिक जैकाउपस्य तेसेहोकाराजवडकरशिधोरेसहितगणडुळेकांझरेकारसाचै तौच्लोकीमर्वसस्यातिसन्बिहितयोक्तेद हेशाडिकावे॥स्या ४९वहोत्वरके यह वित्तपावन ब्राह्मणोमे यर्जुर्वेद है तिरी बारियाहे आपस्तम बीधायनादि सूत्रके अनुसारसे चलते है यह लोकबडे गुणवान् है ५० व्यापारमे निष्ठ व होत है कितनेक शास्त्रमे निष्ठ रहते है अपने ब्राह्मणके पर कर्णमे और ब्राह्मणधर्म निष्ठ थं छे है ५० इनोका भोजनव्यवहार महाराष्ट्र ब्राह्मणोमे होता है कंन्या सब ध अपने कोकणस्यमे होता है अन्यत्र निह ५२ ऐसायह कोकणस्य ब्राह्मणोका निर्णयवास्त्र और रुटि देखके सहोपमें वर्णन किया ५२ और पूर्वीक्त इति हाससे कि चिह्नियेषकया माधव कतशतप्रमुल्लानिकामे कि है सो यहा कहते है सत्यादिके पश्चिम तरफ चीवा ब्राह्मण वेदशास्त्र सपन्न सङ्ग्रह ब पुत्र पीत्र सहित ५४ रहते थे

गोरेचत्र्दश्कुळें हु बस दिहों ती त्यानेचसत तह के बहुभे दहोती नेत्रां अधिकसञ्जर्ह शतदे नशां ने याते अधिक असती तरि भेदयाचे ॥ ४९ ॥ विश्वेषण हजाह तेसने वेते तरीयक ॥ अपस्तवा दिस्त्राहुया यन् हु यावत्त्रा ॥ ५० ॥ व्यापार निष्ठा बहुवः शास्त्र निषाष्ट्रकेच्नांस्वधरेकमीनरतास्तात्रयांस्वत्या धनाकु वि ॥५१॥ एषां भोजनससर्गी महाराष्ट्रे देशेषदः कन्यादानंस्ववरेच भवत्येवन संशय ॥५२ इत्येवंकोकणस्थाना विघाणांच विनेणीय ॥संदेरेणे प्रकथितः बास्त्रस्टी प्रमाणते ॥५३ ॥ अथा ६ निकमा धव कत बात त्रुक तकाग्रंयोक्त केंचि देशेषमाह सह्यस्यप अपे विमा सङ्खुवाश्वह देश ॥वेदवेदांगसंपना हुन्येत्रा देसेह ताः॥ ५४ ॥ र हि तेष महोत्रेह इष्ट्राप्तेह तेव है। शिष्टे विद्यामयच्छ सु अन्तराना दे कंतरा। ५५ ॥ एवं नवासं कुर्द सु अकरमा हैवयोगत् ॥ नीत्वान् सागरमध्य स्थि स्टेन्डे विवेरका दे भिन ॥ ५६ ॥ बहून्यब्दान्य ता नेतृभ्यो जाताचस्त ति. ॥ तत्समकी च संजाता स्त दूपाः ए त्रये त्रकाः ॥ ५०॥उहात्मतेन विधनादंपत्या नेपर स्पर ॥अभवन्प् निताःस्देसंसर्गेद्वी वासिन ॥५८॥कालेन कयतारामोजातः परद्वपूर्वकः॥ पनाटइ तिहरवातोबाककति चापर ॥ ५९॥ वैधीसे सिर्दधर जोज्ञानी प्रमधारिक । । सर्वशास्त्रेषु नेषुण सर्विदेवपाठकः ॥ ६०॥ त्रियकरू र्वलोकानां ज्ञालाशरणमायसु ॥तेन विभेणसर्वेषात्राय ऋनं यये दित ॥६१॥

अभिहोत्र यज्ञाया करते तलाव बावडी घा ट बाधते शिष्य कू विद्या पदाते और अन्नदाना दिक बिदेते ५५ इसरीतिसे रहते होने देवयोगसे अकस्मात सह दमे रहने वाले वर्बर आदि करके म्लेच्छोने वे बीदा ब्राह्मणो कु लेगटे ५६ वर्ष बोहोत भटे म्लेच्छोसे सतती भई म्लेच्छोके सपर्क दोषसे पत्र पीत्रादिक वेसे भये ५७ विवाह कर्म विधिसे नभया म्लेच्छो के संसर्ग दोषसे सवपतित भये ५८ पीछेबोहोत कालगये बाद बडे मताशी पर शुरामभये ५९ सर्वधर्म के रक्षक ज्ञानी वेदशास्त्रमे निष्ठण ६० सब लोकके प्रियकरने वाले ऐसा जानके वे ब्राह्मण इनके वारण आये

## अधितत्तवादन मास्यणानां उपनाम गोत्र प्रवर द्यान चकं

मुख	मो	' प्रनामा	- स्टेम	74	1	र्वश्रीया	पर्न १	<sup>मि</sup> नुबन	10	•	প্রকাশ	٦.	<b>-18</b> *	4	3	भागवस	1	भारक्ष
4	स	77	מ	198	3	भार	विके १	<del>- 章</del> ,	7.4	¥	मेहेद्ये	٧	187	We	7	हैच्छे	1	भा
7	٦	भितमे ।	<b>17</b>	-	3	भिके		7	3,8	4	मुख्युक	,	विग	₩ €	3	र्र्स	1	<u>मा</u>
R	- 3	आउने छे १	34.	*1	٧	सहस्	13.	_ <del>*</del>	¥	-	रेप_	٦	T	تبو	¥	र्पपाय	¥	भा
3	7	परके १	भ	33	- 4	पिपक	लरे १	ने -	<b>V</b> 1	13	पीक्रणक	T 3	वि	-	4	पांगुस	<u>~</u>	भा•
¥	Y	मीन 1	म	33	•	अरवर	न १	₹ <del>)</del> (1)	¥9	1	- चिमपे	1	कपि'	2.3	~	यनके	•	_ ਅਾ_
4	•	सीममे कर	म	**	3	*01		<del>- 1</del>	44	Ř	स्रावेदे	1	<b>\$</b>	49	•	गुष	1	नार
	<u>.</u>	पाइदेकर	ন্দ	<u> </u>	<u> </u>	भाषा	<b>የ</b> ተ-	की	44	*	भार्त	3	<b>4</b>	63	4	भेष	1	<u>মা</u>
A	Ų.	निष्मुयक्षर	<b>अ</b>	10	1	मान्द्र र	1_1_	_ मत्म	<del>Q</del> q	¥	<u>जाइट</u>	٧	<b>T</b>	24	•	मनोहर	1	भा
_ <	₹	-बादेकर	977	10	3	<u>ডিক্র</u>	<u> </u>	₹	VK	ų	कान	7	<u></u>	1	77	पैसास	<del></del>	414
<u> </u>	<u> </u>	नोयक्र	<b>भ</b>	•	3	मागब	_ 1	_ <b>T</b>	84	1	निश्	•	<u>**</u>	8.4	11	संसिन	4	শা
<u>),                                    </u>	77	यभोजकर	% म	34	¥	नौर्ग	¥	<u> </u>	44	U	करशकर	. 3	<del>*</del>	20	13	जोगी		<del>- भा</del>
11	11	मंद भी दे	<b>अ</b> न	7	٩	कार्स	u,	<u> </u>	44	đ	मर्गने_	¥	<u> </u>	8.0	25	भारतम	•	मा
13	1	रेंडमे १	नगरप	3.9	•	'पापरेब	<u> </u>	_ ¥	<u> </u>	*	माने	•	<u> </u>	The Park	18	गहानकर	₹	<del>- भा</del>
77	<u> </u>	₹₹ <u>\</u>	ज	33	•	सोइनी	_ ₹	₹	49	3	रगरे	•	<u>-</u>	5	94	क्रण्या		मा
14	<u> </u>	भागत र	न	27	<	भीर	_ •	₹	43	77	भागवन	- \ <del>\</del>	<u> </u>	3	<del>_</del>	<del>फर्व</del>	<u> </u>	गाम्प
74 1		शस्य ा	सम्बद	₹V	\$	गमोकन	₹ <u>`</u>	4,	43	12	रस्रात		<del></del>	उर	<del>-</del>	गाङगीक	<del>-</del>	
15	<b>t</b>	<b>18</b> 7 3	<b>4</b> ₽7	34	7	किसमि		भिपुष्ठ	44	12	पमदेव	•	<del></del>	<u> </u>	<u> </u>	सोव	<del>_</del> -	- <u>- tt.</u> -
40	3	कार्थ १	<b>₹</b> T	38	1	44	~ <u>~</u>	- <del>1714</del>	44	78	थारप_	<del>-,`</del> -	- <del>-</del>	च्ये	<del>-}-</del>	मार्ड	<del>`</del> -	- <del>- 21</del>

13	۱۹	० रामके	- 4	ग:-	- <del>- </del>	\ 3	भाव्ये	3	कीशि	594	9	नेले	9	कत्र्यप	734	29	कान्त्रवे	59E	फ∙
د،	٤.	६ जोबी	9	न	9६	. *	पाद	¥	की-	398	3	गास्र	٦	<b>य्ह</b> -	93 &	33	सुंकले	913	<b>फ</b> .
19	19	१० शंगत	- 3	गः	•(9	24	आपरे	· ·	की	47'5	3	जोग	3	<b>4</b>	3312	33	भट	90	<b>क</b> ∙
19	e .	८ घाणेक	ह ३	य-	२८	Eq	, चर्म	7	की	भार	ب	न्यचाट	गे ४	<b>र</b> क∙	13€	રહ્ય	तरपो	19	<b>新·</b>
Ū	5	९ खगले	8	गः	66	و٠	वापधे	٦	की.	996	34	गोरपर	<del>}</del>	फ	936	24	चामोद	7 30	£.
4	, ,	॰ केबण	कर ५	ग	300	-	भाव		की	13.	દ	चातार	. 9	फ	350	26	, येखाड	29	<b>4</b> .
7	3	१ गोर्न	£4	ग	303	९	्अागाइ	٦, ٦	की	939	6	करमग	कुर२	<b>फ</b> -	3,93	3,15			<u>क</u> .
दर्	72	१ वद्गी	•	म	3.3	3.	गोबची	क्रे-५	फी	933	\$	शित्रे	3	<u>फ</u> .	385	3/4	चेंद्रे	23	4.
23	77	भुसकुटे	<	गः	3.3	17	पाउंदे	فر	4	153	9	जोद्गी	ક	<b>ড</b>	983	29	कायदो	ર'દ′	<b>क</b> .
ck	36	सतार	1	ग-	908	93	रेवधर	v	स्रे	वर्ष	١٠	चेउण	हर <sup>५</sup>	<u>फ</u> .	188	7	मार	9	यशिष्ठ
بجنو	41.	् येथ	9+	η	900	93	सरकर	æ	की	33.00	19	भास्	E	क	944	2	बोडस	<del>-</del>	व-
< 4	96	. भेडेंफर	99	न्यः	905	38	फानिस	हर ९	म्हें।	978	92	छन्ने	وا	क	SKE	3	ओक	3	Ŧ.
c'>	919	भर	92	ग	900	94	देवल	70	की-	13/2	93	खाडिन	कर	कें	98.0	<u> </u>	<u> थापर</u>	<del>- ¥</del>	य∙
46	ييه	भागयत	93	ग	900	384	वर्तक	99	को	926	38	पालकर		<u>क</u> .	38=	4	वागुल	<del></del>	चः
-58	901	म्सकर	18	गुरु	306	919	रवरे	93	कीन	938	94	डोसर		कर	386	Eq	धारप	<del>`</del>	
**	2.	<u> फेतकर</u>	94	ग-	390	94	रोडर	93	की		984		99	<u></u> क.	340	<del>-</del> 7	गोकरे	<del></del>	<u> </u>
99	29	दावके	16	ा अं	999	75	कोलटक	र १४	की	939		विवलक	792	<del>"</del>	949	-	माभे	<del>-</del>	<u> वि</u>
13	33	राजमाची	र्म्य	<u>ملہ</u>	999	30	कारक	94	फो-				93	<del>- 1</del> -	343				व-
93	7	गद्रे	9	ساهـ	993	29	रप्रके	984	की			<del>ग्रुप</del> कान्हेरे	38	<u> </u>		<del></del>	पोक्षे	9	<u> </u>
68	ર	नाम	1	ग	998	<b>२</b> २	सावणेक	<del>- 919</del>	<del>\$\frac{1}{2}\frac{1}{</del>		~~~		94		343	90	विसे	90	<u>a-</u>
								····	······································			मस्कर		<del>事·</del>	उपप्र	99	गोवडे	99	बन

40.00	पारनेकर १	य	PO	गगपुर्व	11-	11	निनसर	·v	111		Ī	,	
946	बानार	<b>4</b>	909	रामरे	₹6	<b>2 2</b>	गोडस	ų	वस	Į	T	======================================	
***	द्विकर्	<u> </u>	10	भोजी	<u> </u>	<u> </u>	पारणफ	7.00	गा		Ī	Ť	प्रवरनामानि
44,5	पेड्र)	न_	107	भर <b>ार</b>	दा	v_	177	<u> </u>	न्त	Ē	3	_ <del></del>	
7 8	पारपर	<u> </u>	443	पर्प	मा ।	1 4	म्प्रस	₹	जा।	. 1	77	अभि	सामेपाचनाननप्रपावाचीते ५
**	पर्यन	प	143	त्रमहन्द्रस्	<u> </u>	3 %	पनपरक	<del>- •</del>	सा	. <del></del> -			जान नाम ति ति ति ताम मान व
12]	<u> अचर्यकर</u>	य	1 8		<b>रा</b> ग	<u> </u>	सम्पोक	<u>T 90</u>	<u> </u>	્વ	1	नामर	
3066	र्गत	<u> य</u>	964	श्रीयदेकर	नां ।	<b>*</b> *	पर्य	33	ग्रीर	. 3	3	बाजन	
123	मोडक	<u>प</u> •	- 14°4	<u>थामणकर</u>	्रागे"	<u> </u>	मर्प	93	गा		<del></del> -		
144	सामग्कर	<b>T</b>	HO	द्यपुर्व	<u> 1(i)</u>	* <b>9</b>	मेरी	13	भा	_		नेत्रम	·
164	भातस्य	q.	44	वीपरेकर	TIL	333	सिमनुब	14	ग्री	•	1	भेडिल	
344	र्गिकर	<u>व</u> ा	149	मारे	<u> </u>	779	<b>H</b> 33	44	<u> गो</u>	Č	1	कस	भागवयुरनामरा नेर्न्यामरस्भित्रक
140	क्षेत्राकर	<u> 4</u>	. 48	पानगी	इसे	293	उपाध्ये	96.	<u> </u>	<del></del>		'-	्मान् व बन्धामयस्यात् <u>सम्बद्धाः                                     </u>
160	प्प	<u> </u>	183	येगर	- रा	708	गजपाइप	70	संग		•	रीकार	आगिरमपी सुन्सभासवस्यपेति १
149	रिनी र	<u> </u>	193	<u> </u>	गा	2,94	मिथार	5.0	न्तर	•	16	द्धिप	केनियुक्तवाके एउत्पयन्ति प्रश्निक्तवान्यः प्रिमाणिकाणिकानिक
1130	<u> १६वेकर</u>	T.	753	<b>पिर्</b> म	चां-	496	<u>सेमस्र</u>	98	- रप	•	*		भागित्मवाईसम्प्रभारहम्बेनिज्यः
741	नास	<u> </u>	168	प्राच	<u> </u>	773	पमनिस	4.	्रांगे			- Tirel	<del></del>
107	मग्रह	<u> </u>	904	मार्स	∓ा=	70.4	्यारने फर	•	त्रा	70	33	ग4-	जागिरसनैत्यगार्यति इपेन्या
447	सारमे	- यः	165	भोगस	गा	296	नरवर्षे	33	सा	33	35	सेविर	नियामियोदेवराक्षप्रक्रकेविषय
מר שמור	<del>-4.z</del>		110	महस्तर े	शः	38	पापसे	3	₹ <b>ग</b>				
400 9	<u> सामझ</u>	सार	364	काणे १	<u>ची</u>	33	क्षेपरकर	78	10			4444	<b>क्रम्पपरत्मरीभुवेतिन्नम्</b>
N.FL	गोपस	जीर	78	रिक्क १	ना	रवर ४०	मार्ड	4	गा	27	<b>3</b> ,9	नमित्र	नही प्रशक्तिपरागे विमयः
<b>**</b>	भारत्	<u> </u>	T	कान्त्र १	<u> न्ति</u>					18	80	सारिक	अभिन्द्वन्यां (उस्तेतिम्यः

अस्पष्ट पनामच्छ

१ अभयफर २ कार्य	१३ रवाडिन्डकर् १९ गांगल	२५ जोबी ३१ ताम्हन्कर ३	७ नेने ४३ वर्षे	४९ माइत ५५ शिकः
३ आठोते = कारतका	१८ चातः २० देघाव	२६ ज्या ३२ व्छप्छ ३	ट नात ४४ वाऊ	५० रान्डे ५६ साठे
3 आन्यक १ कि अभिदे	भ् गणपूर्व २१ घायुर्ड	२७ जीगळकर ३३ थ्हे ३	९ पराजपे ४५ वेहेरे	५) हिमये ५७ सोमण
५ अक्रमं १० कुंठ	१६ गाडगीळ २२ चित्रछे	२८ टेणें ३४ वदी ४	० पटवर्धन ४६ भागवत्	५२ लोटे ५८ सीयन
पर्भ भ भे केन्द्र	१७ गडवोर्स २३ चापेकर	२९ टकले ३५ वावके ४	१ फड़के ४७ भारमी के	५३ वेलणकर ५९ सोहोनी
५ फरदीकार १२ कंझेकर	१= गोख्ते २४ छन्ने	३० डोगरे ३६ धामणकर ४	र फणशे ४८ मरावे	५४ वैशेषायन ६० सहस्र्ट्रेड

तन परर गमने ययार्यसत्रीकुमायश्वित्तविया १६१ साठ उपनाम और चे दागोत्र उनोकु दिये श्री परह रामने ६२ इनोकिचित्त दु हिकिये इसवास्ते चित्तपावन इने का-नामभया और शाकल शाखा ने तिरीयशाखा ऐसी दे शाखास्यापनकीई ६३वेबाह्मणनिषिद्दकर्मकरनेवालं मतस्य मासभक्षणमें तसरकन्याविक्रयकरने वालेदे द्रियासाधीन

उपनामान्यक्रबद्धिरुगीत्रा णिहुवनानिचादियेषा चत्तु दिस्यस्मात्ररहरामतः॥६२॥६ तत्तु दि कृतास्तेषामस्मात्तं चेत्तपावनाः॥ शारवाद्रगमंचसंस्याप्यताकलांतेतिरीयकां॥६३॥निपिद्धकमं निरतामस्यमस्मणत्त्वराः॥कन्या वक्रयकाराम्बद्दं द्वेयाणामन् महात्॥६४॥कलभाषीपालनाक्षकंत्रारखा प्रकीर्तिता ॥ चेत्तपावनज्ञा तस्योभेदश्चप रेकी ततः॥६५॥इत्तर्यांकुणपं त्यन्या भूताःपरद्धरामतः॥व पाष्ट्रवनसंख्याश्चत्त्व्यारखासदृरवं देवे॥६६॥बह्मचर्रणात्रेष्ट् द्विजाः सर्वे बहुन्समान्॥ब्ह्मचर्यमात्वापद्धारा प्रवापद्धः। ६७॥अस्मिन्क त्रिष्ट्रगापाद् तिमिष्या भवादने॥इद्दर्ग त्रंप्रपनामान्यभ्यष्ट् हिमव तेच॥६५॥प्रतारणार्थले केष्ठ कर्याम तः प्रराननी॥ अमूलकंत् तत्वर्वित्यापत्रम् ॥६९॥अब्द दुम्यः कुर्वे भ्यः प हिस्रखान्यव भवन्॥असवश्चतथा भिन्न भिन्नस्थानानिवास्त्रिक्ता ।॥ ।

त्या १०० ॥ ।। नरम्यने से बद क आदि लेके महरभाषणकरने वालेपिसयों के पालनकरने के योगसे के कि इन्ना तेना मुक्रपाये चित्तपावन ज्ञानी में कायह एक भेदवर्णन किया ६५ वे जेता हुग में परमुरामने में ते मित्त से स्टें दाबाह्मण उसन्त के बें स्वस्तकावर्णनसहा द्वरवंड केट २ में अध्याय में हैं ६६ वे सब बाह्मण ब्रह्म चर्य बत से बें हे तवर्ष रहे औ रमझर्ष नतके मनापसे मोस्यु पाये ६० वे नीवा महाण नीवागोन सार अपनामके कि सुगमे असल भये पह भाषण मिष्पाहे ६० लोको इन विने के सान में पातन क या कहीहे परत् इसक आधार नहि है ५९ जब नीवा कुड़ बसे सावभये मह जुदे जुदे विकान के उपर जायक रहे ७ कि समाग मानाम नीम गर्म कि र बत करफ जो है जो विनयक साहे यह लोक ध्रिनागन क्षी पानोका स्ववहार करते ये उसमें कि मिकहते की है का नाग इनोके हात से वो होत हो ने लगा उम्राठिय कि मिनवा असके फिनवा कि विरोदान भया है और जबस बाह्मण कुड़न शह्मण ऐसे भेद विहे ७१ सम्बर्ग विवाह होने से समनर ऐसा एक चौषा भोद भया अम्बोदो पसे शके था के साल में मुद

अधकन्द्राडे ब्राह्मणीसचिप्रकरण २०

अयककार आहार मिल्यान करते है वहानन प्रचाने हैं इ निक्षांस मक के मनोर्घ प्रके हैं महादेव कन्हाडे अस्मणाकी उसान मेरक कहा १ नव महादेव कहते हैं है अन प्रकार विहास करताह अवणकर कन्छ नाम करके नाठीस को सकाववा नोडा निक्षाणी ॰ वेडबती नरीके उत्तर बाल कोषना नवीक ( कष्णानरीके रिसणभागमे हुख

अयकाराष्ट्रबाह्मणोत्पत्तिमाह् सह्याद्रिराडे स्कव्उवान॥॥महादविषक्षास भक्ताभीष्टभवायकः॥ कथयरवमहादवकाराष्ट्रबाह्म णोद्भव॥१॥॥महादेवउवान॥॥ऋगुपुनमष्ट्यामिनेतिहासपुरातन॥काराष्ट्रीनामदेशोदितद्वायोजनविस्तृतः॥१॥वद्वत्यास्त्रोत्तः रेतुकोष्मासगद्क्षिणे॥काराष्ट्रोनामदेवन्य तुष्टदेश्ध्मकीर्तित ॥१॥सर्वेत्रोकाभ्यकिनादुर्जनाः पापकिण ॥तदेश्मास्यविमास्तुकारा ष्ट्रदिनामतः॥४॥पापकर्मरवारनष्टाम्यभिनारसम्बद्धाः॥रवरस्पह्यस्तियोगेनरत सिप्तिवभावक॥५॥॥॥

देशहैं १ मोदेशमें सबलोक किन हर्जन पापकर्या है उसदेशके ब्राह्मण कन्हाके नामसे विस्यात है ४ वेपापकर्ममें नसर रहनेवाले कठोर महानच अधिवार से उसन्तान के

ने और रामनके अस्थीके योगमें रेत प्रसेपिकया ५ उसमें उनों कि उसित भई और वो वेदामें माहका देवी वडा विकाल स्वरूप जिसका ऐसी विराजमान है ६ उसकी य ह कन्हांडे ब्राह्मण मितवरों प्रमाकी वखत बाह्मणका वनी वेते है वास्ते इनोकापिक भोजन व्यवहार नहीं रहा ब्रह्महत्याके लिये ७ और जिनोने बाह्मण का बली नहि विया उ नोका विश्व नाता प्रमाप्तिया ऐसा पूर्विवो वैदीने वर दान दिया है = जिनोके ससर्ग करने से सचेल स्वान करना वो देशका पापी वासु वागको दात का निह ने ना ९ के वल विषदेना यह वस पाप में पडानन प्रस्कृत है हे महादेव यह क-हांडे बाह्मणोंका गोत्रक्या कैसे भये उनोका नामक्या १० यह सब बत्तात योग्य मेरेकु कही तब शिव कहते है पुरीश गीत्र अति कीशि

तेनं त्यंसहस्य के जितारेपापकर्मणां।। तहेशे मात्वबादेवीमहादुष्टा कुरूपणी ॥ ६॥तस्या पूजायद हेचब्राह्णोदीयतेव छः।
तेपं किगोत्रजानश्चाद्वसह्त्यं मुक्किते ॥ ७॥नकृतायेनसाहत्या कुरुंतस्य स्पष्ट जेत्॥ एवंदुरातयादेव्यावरेद्तो हेजान् कुरु।। ८
॥ तेपांसंसर्गारेणसन्ते लंकान् मान्वरेत्॥ तेषांदेश गतेवादु नियात्योयोजनत्रयं॥ १॥क्विते वस्या स्थितं ॥ ॥ ईस्यरज्वाच ॥ ॥ इरिन्
जाम किगोत्रं के शिक्त ह हिती ॥ शासा हित्यं चेवमां ड्रव्यं वेवराजहुद्धिन ॥ एवक्तिणां गोत्राणिक्राता निमद् प्रहात ॥ ११
॥ संवस्ते महानी चाह्र हाह्यां मुक्किते ॥ सर्वकित्व हिष्कागः सर्वधर्मव हिष्कुताः ॥ १३ ॥ सर्विते नगरा द्वाह्या स्वार्यप्रवास्य हिष्कुताः ॥ १३ ॥ सर्विते नगरा द्वाह्या स्वार्यप्रवास्य हिष्कुताः ॥ १३ ॥ सर्विते नगरा द्वाह्या स्वार्य विकार पर्वार्य हिष्कुताः ॥ १४ ॥ सर्विते नगरा द्वाह्या स्वार्यप्रवास्य हिष्कुताः ॥ १५ ॥ विशेषाक्षेवज्ञ माता ह्यथ्वाभिनिस्तः॥ एतन्मध्ये त्रयो विकाः पद्यये नामधारकाः ॥ १६ ॥ पदमा विज्ञायत्रीपारगाः कोकणे स्विताः॥ सह्या दिमस्ति केभागे बोहनाने चहुष्यं ॥ १७ ॥ ॥

क वल हारित चाडिल्य माडव्य देवराज सुदरी न ऐसे यह गेत्र मेरे अतुमहरे कन्हांडे ब्राह्मणोंकु मासभये १२ मित् संवत्सरकु ब्रह्महत्या करते हे सर्वधर्म कर्म बहिष्कृत है १३ यह वास्तेनगरसे बाहर रखनान स्पर्श करनान है वे कन्हांडे ब्राह्मणोंने गरदां देवीका यज्ञ किया उससे सर्वत्र विजय भया १४ पी छे गरदा देवीने ऐसा बन्दन कह्या कि मयह मकु सब सिद्धि देनी हुम विवर्ष मेरेकु अति उसण हक्त ब्राह्मण कु बिढ़ देना १५ विशेष करके जवादकु अग बहिनके उड़ के कु देना उत्तम है अब एजो कन्हांडे ब्राह्मण है उसमें तीन असारी यं के नाम पचया ऐसाहें १६ यह पद्ययाना मपड़ने का कारण यह है कि केवल गायत्री के पदमात्रके पारजानने वाले हैं संपूर्ण गायत्री जिनो कु मालू म नहि है वास्ते पद्य

देवामीजिन्धेवामागल्येवासकमस् ॥१९॥ आगता परायोविमा कार्यनाजी नसहाय ॥ वर्जयेखर्वकार्येषु सर्वधुर्म विवर्जिता ॥ २०॥ नह डालबाह्मणाक्षेपेनपास तस्ययेजलं ॥इतिकोकणजाविभादु एदंशसमुद्भवा ॥२१॥ कुनैलाचारहीनान्यस्विकार्येषु वर्ज्येन्॥ उत्तम नेव बाह्मण्यमध्यदेशाधिकत्या॥२२ ॥ अन्यचदशभकरणे ॥इत्यहिमहुँतारन्याने सह्याद्वीरवडमध्येगे ॥ न्यासेन्रचितपूर्वत्रदेगेभकरी कतं ॥ २५ ॥पुराकुमुद्दतीतीरेसुमुखानामवैद्भिन ॥वेदवंदागतलज्ञामभूवर्णपरायणः॥२० ॥ मन्मयनितयामास पचवाणधनुर्धर ॥ तस्मात्मसन्ना भगुवान्मुदर्नोरतिवसुभा ॥२५॥ वसतोत्सवनामानस्वकरस्थमनोहरः॥ जीवहीनुदारीराणाजीवदातारुमञ्जतः॥ २६ ॥ सिन्द्रगथवीसाध्याना दुर्लभसर्वेवर्णतः ॥कषुकृदत्तवान्रामः द्विजवर्यायवोपणात् ॥२७ ॥ ततन्यातर्वर्षेमारः त्रहश्वतापसोत्तमः ॥ मणिपत्यविश्वशातसीदयी नंदर्वेषिलग्२८ ॥ फर्देपेत्रयामलविष्यकोमलक्कवत्सल ॥ नन समागताकाचित्रकावराससुद्रवा ॥ २९ ॥ सानारी क्षपसपना यु वतीयतभ्रतेका ॥सकेशीकबुकवीचसम्पीनपयोधसा। ३०॥ फुलवाविक्तागीचेस्फुटनाभी छशोदरी ॥ तत्रागत्यसुनी द्रायप्रणि पत्यायतस्यिता ॥ ३१ ॥ च बाणकु भारण करनेवाला जो कामदेव उसका ध्यान करनेत्रणा वी ध्या मसे रिवपित नगवान् जोकाम यो मसन्न कोषके सुसुरव बाह्मणके अर्थ एक सुदर अपने हात्मे निरत्र रहनेपाला और माण हीन पुरुषाक्क प्राण वेणेवान्य २५ सिन्द्र पूर्वा विकोक जो दुल्म ऐसा नमतो सन नामक एक गेददेता भवा २७ भाछ कामदेवती अति हित भय तम बोसुस रवजाहमणने जगतम व्यास होके रहने वा से २० इपामयण कोमक र्जीवका अगरिसेबोकामदेवद् नमस्कार करके वाहारहा उसवरवत वो सुमुख कर्या के आश्रमम ब्राह्मण वदाम उत्पन्न भाष हुत् २९ तन्द्रण रखवती विश्वासके बाहारमण्या

नाम भगाई सहग्राह्मक मन्त्रके तरक सोट ब्लोखीडा जारसी कोस तम् क्ष्यक गरे हैं उसम ताम सेन दगरयं बिना जो कोप भूमी है जो दश कर है जा उस ठाकरों को साम है १० बाह्म पह प्रथम होता है पह बाह्मण माद्य पास मनमे १० आये तो बह कापका नावा जानना सबकाम में उसके बिना करना २ वे मध्य स्थित्वे हो हो को कापका नावा जानना सबकाम उसके बिना करना २ वे मध्य स्थित्वे हो का के के के के के कि कापका महिला के कापका के स्थापक के स्थापका महिला के स्थापका के स्थापका महिला के स्थापका के स्थापका के स्थापका महिला के स्थापका के स्थापका का स्थापका के स्थापका स्थापका के स्थाप

द्यातयोजन्विस्तीर्णकोकप्रमितिनामतः ॥देदाचकेव्लन्य गडालजनस्वित् ॥५८॥ तुत्रैववासकर्तारः । पुर्ययोद्याध्यणाः खस्र॥भा

नियका कर समासल निसके सान के नेजया निक्ल जिसका अगरू जिसका उटर ऐसी वोस्त्री कर्षी कुनमस्कार करके सा केरा छिरिह के तबने स्त्री कु देख के वोक्षी इहते हैं कि तेरे कु पुत्र होने गायब बनन सुनते ओबाद्याणी विस्मित भड़ ३२ पुन कर्षी कु कहती है हे पुनिवर्य हुमे रावचनतो मत्य है के वास्त्रे मेरे कु पुत्र तो होने गायल परन (निया) देने में कु बाल होने गायल सुनत किया अर्थ करते है अर है कु भाषित कियकारण के लिये विषदायक पुत्र होने सो कही ३५ ऐसा अर्पी का भाषण सुनते वो स्त्री कहति है क्यिपवर्य पूर्व मियने गरदादे निका कान किया और उसन निक और स पुत्र होने ऐसा वरमगा ३६ उसवरवन वो देवी हास्य मुग्नी हो के कहती

ता निरीहर महायोगी नवहत्रोभि विषय ते ॥इह त्त्वापुनराकी क्य विस्मितीभू हिजायणी ॥ ३२॥ ततः सा विस्मितीभू त्वाहुन राह ह्नीस्वरं ॥ ह निवर्यभव हाक्यममे युक्तितत्त्व ॥ ३३ ॥ ममहुत्रे पिनेहाहुं गरल कुत्राले भवेत् ॥ इतिवाक्यं समाकण्य हुनिराह स्मिताननः
॥ ३४ ॥ किमर्थगरवी भयानवगर्भोकुभा पिते ॥ तहुनं मम निश्चित्यवकुम हिस्सिभा मिनी ॥ ३५ ॥ सा पेयुं हत्तपः छता गरदात्रा किमीहर न्व ॥
मदीयमीरसपुत्रयन्त्रदेवी निचाहुनं ॥ ३६ ॥ इहुन्त्वासाम् यान्या मिन् देवी हास्य वित्ति ॥ माठी है गरलं हे हितस्माहुत्रे भिष्य ति॥ ३०
॥ तस्यवत्रा समृध्ययवत्र्यन्य न्य हुन ॥ मर्थी निकारणकार्य बत्य न्य म्य हुन ॥ ३० ॥ एवमस्ति निद्कार्य हुन हुन ॥ अ० ॥ कहु कुन्त्वा हुनित्रा प्रित्रा हुन ॥ ३० ॥ कहु कुन्त्वा हुनित्रा विस्ति हुनित्रा ॥ ४० ॥ कहु कुन्त्य प्रित्र सा केपितस्त ।॥ ४० ॥ कहु कुन्त्य मिनी भू विस्ति हुनित्र ।॥ ४० ॥ स्व हुकस्पर्श मात्रेण हुमान् जातो हृदां गक ।॥ स्व स्त्र समाहुन्ति स्त्र ॥ ४० ॥ ४० ॥ स्व स्त्र समाहुनित्र तिस्त हुने ।॥ स्व ॥ स्व

र्य विपरेवेगी ते पुत्र होवेगा २० और आगे उसके वरावृद्धिक इच्छा हो वेतो तीन तीन वर्षि अतरसे मसीतिकारक विपदान वतकर ३० और इसहीरीतीसे वंजावृध्यर्थआ गपरपगने वत्न नताना इस प्रमाणमे वो छके बो न्य्री पुत्र न सर्पाङ्ग नमस्कार करती भई ३९ पी छे बो ऋषी स्त्री छु देखके आ ऋषे हुन्क हो चके देव की आ ज्ञाव छी है ऐसा मनमें लाय- के मस्त क हलाने लगा ४० पी छे बो गेंद हात मे छे के समीप एक गर्म का अस्थिप खाया उसके असर डाल के पुत्र वो गेंद हो ते में रहे वता भया ४० पी छो बो गेंद के स्वर्ग भया अपनी छो ने में स्वर्ग भया विकास के स्वर्ग के विवास के स्वर्ग क

दिन् क्रियानाम्यस्य स्वत्यावक्ष्म्याद्रियद्व नेत्रथम प्रयाप्य क्रिया क्ष्य मकागतर क्रित् में एसाकि परगुण नामक निम निवासनाम स्वास स्

याहा श्रीतरमान कर्ममे निष्ट नेष्वेदोगसपन ४९ न्यीयुश्य सेवकादि सह्यनमान ब्रह्मण रहतेर्य ५ उसमे एकब्राह्मण ब्रह्मइपी पा पी निर्तन राजनिद्य अम्बाह्मण वेतक व्यक्तिवारस उसन्त अपाइनाइपा और उसमे इत्य ब्राह्मणोढि वि सामीप्यता होती सङ्गीखे कहा क्षिणे बाद वो ब्राह्मण मु खुपाया ५२ पीछे ये सहवासि ब्राह्मणोने अपनाक्त्यत नानके दूसरेबाह्मणाके ब्रारण गयेवव ब्राह्मणारे शेष प्राप्ति सहवासि ब्रह्मणाने समाणमे नामिन्न किपाऔर कृष्णानदीके नव असर क्ष्यक्तमम् नामके नहे ५४ उसके निये कहाते ऐसी सजामह अरुक्षमेत्री अपस्थिते प्राप्तामक ब्राह्मण भेप ५५ प्राप्त ब्राह्मण भाषान्त और

उनीका व्यवहार भिन्नभमा उनीकु सचीकु एक देदका व्यथिकाण है ५६

फक्त अरगेट भागस्त्र महित पटना पचय बाह्मणोने वि साग ऋग्वेद पदना ५७ अपने पदमे (देशमे ) रहे वास्ते पद्ये (पद्ये ) अये करहाट देशमे रहे वास्ते कन्हाडे भये ५८ ऐसे यह हो मकारके बाह्मण पद्मच कन्हाडे ओहेउसमे पूर्वीक्त दुषकी सामीत्यतासे कन्हाडे कहेगये ५९ औरदूसरे पद्मच भये सबसुन्द्व भये देवीका आराधन करनेसे ६० वरदा नदेती भइ है ब्राह्मण है। तुमेरे जातीमें मेरे मीत्यर्थ जो ब्राह्मणोक। पूजन करेगे ६१ तो शेष पदबी कु पावेगे और सतानकी मासी हो वेगी बालि बाहन पाक ९१५ के साल

वरवेदमार मध्यस्यसागोपागसस्त्रकं ॥पद्यारव्यामेवचैवं हे तरवेदंसम्यगध्यसेत् ॥५७॥स्वस्मिन्नेवपदेवासान्तेपद्यास्ह प्रकीति ता ॥करहाटेहुसस् नेवासान्त करहाटका ॥५०॥एव्टे द्विधामोक्ता पद्याख्या करहाटका ॥तस्टसा मिय्यमात्रेणकरहाटा प्र धाः स्मृताः ॥५९॥तस्यसा मिष्यमाञ्णपद्मारव्याञ्जपरेहः ताः ॥सर्वे हिद्याञ्चात्रभवन् छतं यत्तेम् हत्तपः ॥ ६०॥देव्याञ्चाराधनच्छः द्रगिरव्यावरदाभवत्॥ स्वज्जा तिष्टमह हरे बाह्मणान् यूज्य ति ।। ६१ ॥ संतस्तपन्सिं स्नाः श्रेश्वतं प्राप्तु वं ति ॥ पंचेद्र नद्य भिते बाँ लिवाहनजनमतः ॥ ६५ ॥ करहाराञ्चाँम विष्यन्यद्कंर्मस्वा धिकारिण ॥ अतः परंत्रवस्या मे गे त्र प्रवर्रे पियं॥ ६३॥ नत्वागणेशा गोपालीस्मृता पत्पदाहुजं ॥ज्ञानार्था करहाटानां कियतेगोत्रचिद्रका॥६४॥आद्यो हो काश्यपाजामदग्याअध्यापकः स्मृतः॥आत्रेयोड या धिकार तेवा रे छाॐ मृत्येरमृता ॥ ६५ ॥जामदग्याञ्चतेभारद्दाजोऽया चित्रज्यते ॥ ६६ ॥असव्डेकरद्त्याद्धः काश्यपोषा ( आ रगहरे हिधा। भारहाजागार्थगोत्राहिसेदाआग्वेकरा ॥६७॥वासिष्ठाज्ञामदग्याश्चाचागळेपार्थिवा स्मृता । आध् हेक्रसंज्ञा नांचा सिष्ठंगे त्रम् चते॥ ६०॥ भारहाजाजामद्य्याचा सिष्ठाइ तित्रयः॥ आचारीकाश्यपाआजरे आठत्ये चापिकी बीकी ॥६९॥ आठले कर्आ डिहेकरॐवाऽहेयगोत्रजः॥आमोपकरष्ठा दुरेपनामासत्वाऽयनेकणः।१००॥ भारहाजा हेधाआङ्टेभारहाजाऋकाश्यपाः॥आरं वृकरोभरद्दाजवंश्यआळवणीत्ते॥७१॥जामद्ग्यःकाश्यपोष् आळीकरसमाद्धाः॥भारद्दाजाआंखकराआंतव्छेकरसंज्ञाः॥७२॥ वो स्षिःकोश्यप्रभावर्डेन्सःकोष्टिाना स्मृताः॥आवेकराश्वद्धधितआत्रेयाःकाष्ट्रयपाछि ॥७३॥वा सिष्ठाश्वे तेचत्व र आंवटेकरसं ज्ञकः॥जामद्रम्यः,थआत्रेयआंबरेकरसंज्ञकाः॥७४॥

में कन्हाडे षट् कर्माधिकारि भये ६२ अब इस उपरांत

इनोका गोत्र प्रवर उपनामका निर्णय कहताहु ६३ । ६४ । ६५ । ६५ । ६७ । ६८ । ६९ । ७० । ७० । ७२ । ७३ । ७४ ॥ ॥

भारहाजा आवृद्कुण उपाध्येत्रिविधाः स्पृता ॥ काइसपाइ वयुवासिष्ठाउत्राणीक एउवन्ये। ७५॥ एकाउधे चत्रयाणाहि गोन्यासिष मुच्यतः॥ ओखदेगीतमाओष्रर्करः कारपूर्यच्यतः॥ १६॥ औद्योहिता भोष्यीभाभपाभावतीकराः ॥ नासिखकाद्यपाओ विवेकरा कुँक्किंगः स्मृता ॥ ३७॥जामदेश्यागार्थगानास्तार्तीयाः कीशिकास्त्रते॥आसन्तवाटिकामाणगाने अनुर्केरः स्मृतः ॥ ५८ ॥ गौतमः क्षेत्रिका कर्णक्मलाकरसञ्चक् ॥भारद्वाज कमाल्यम्द्रितीयः काष्यपः समृत ॥७९॥भाषया कर्करेमोद्रल्यास्तेकरमलीकरा ॥क र्मब्करःकलावनीभारद्राजापमोस्युनी॥००॥कर्वेतुकोशिकाज्ञयास्त्रिविधास्त्रुकवोष्करा ॥कार्यपाः कोशिकाभारद्वाजा कैक्क्ये त्रय स्मृता ॥-१॥कृत्वकरस्तुभारद्वाज कानकार्यपा स्मृता ॥कानडेपिनयाभारद्वाजवेन्यभिधाद्विषा॥ ८२॥कानेट्कराज्यभा रहान कानकरसङ्घ ।। काररवानीसञ्चान्पोजामवय्यस्कापडीक्कावबेकोशिका काबेनेलस्मियन्यपास्युना ।। जामद्प्याः उत्र यवैत्रामित्रवासिखनैधुवा ॥८४॥अवयेनेधुवाउक्तायुर्वृशस्तेष्रकीर्तिता ॥काबेलुकर काष्यपोद्दायकाबेलनेधुवा स्मृताः॥८५॥ने भ्रवायुर्जराप्वसमाप्तावर्णताभिधा ॥भारह्यज्ञकाकिङ्काजकेकाशिकाविसा ॥४६॥चाडित्याज्ञामवस्याक्वकाख्येकाह्रद्रकमात् गरकामनैकरकाद्द्येतानुभौकाद्यपास्युती ग*८७* गञानयन्धेत्वाराषोभारद्वाजास्त् किकिर ग**क्षितृतेभ्रवाषासिन्धा किरा**णेस्युताज् में ॥८८॥ किल् स्करस्तुभारहान किन्युदेकरस्तया॥कीर्तन्यकाश्यपा कुर्क्येगासिसा कुलकणिति॥८९॥हेथा८०त्रेषा काश्यपा क्षकाश्यप हुचकेकर । दिधाकेळकरीमोद्रत्याहरू मेयोकाटिभास्कर ॥९०॥वासिकोजामव्ययम्ब हिंधाकोनकरास्त्रया॥कोलेकोल धेकराभारहाँजा कोलडनगरस्ता ॥९१ ॥कोबाइगीतमा कोटकरोवासिषगोवज ॥कोव्वेकरास्त्रिधाकीत्सभारहाजा असयस्मृते ॥९२॥खान्वलकरीह्।बानेपवन्योखानीकर रूप्त ॥जामद्मागा पंचारुह्।जकाष्ट्रपुपान्जा ॥९३॥खाडेकरास्त्रय खेरागीतमा र्वंबुकर्न्युता ॥वासिष्ठोगगनमानापापयवेचताविमो॥९४॥भारद्दार्जीतयागर्चेतेतुगोबद्दवाधिकाः ॥जामव्य्यास्ववासिष्ठाः गल्गल्येकाशिका स्मृता ॥१५ ॥ ॥

भारद्वाजागळांड्येतु गाग् व्कर्समाद्भय ॥ की शिको्र जिरास्तेस्त राजाद्दर नेवा सिन्ः ॥१६॥ तत्मांता उष्टा धिकारेपु निरुक्तोधर्म रक्षणं।।पद्यनालारव्यदुर्गिन्छभोजगर्जन्धाम्ता॥त्रयोदशाधिकेरुद्रवातं १९९३ संख्ये प्राकेगते।। ९७ ॥ विरोधकन्ना स्निपद्वर्ध नं पि भिधानकः ॥गोविंदभद्दनामासी त्तदंशाक्ते हुने धृषा ,॥ ९८ ॥अत्रयेदुर्जरास्तेहु मागासन्पद्दवर्धना :॥ तेतुर्जरदेशस्खार्ज गेपा भिधमया ॥९९ ॥उपाध्यायमथाचा पराजदत्ताँ हिर्ले भिरे ॥गे विदभष्टवंश्यास्ते देपये अत्यजन्ततः ॥१०० ॥ तेतः प्रभृत्युपाध्यायाः रुजराम्बारपितः भवन्॥एतन्ताम् पटेस्माकं वस्तरेणानिक्षपितं॥१ ॥रुजीसः काश्यपंगीत्रवदेखज्ञानतः कचित्॥अज्ञानायस्कितहेनद्ररदेशं

गतत्वतः॥२ ॥वृह्यसान्निध्यतन्तास्त्रपट्टादर्शनतः किल ॥ रुजिरांतर्गताभेदाभूगोलज्ञापराक्तयाः॥ ३ ॥ काळेसार्वेकराः कुर्वे दुन्तेटे वॉय् ध्येन्वन दी हिता ॥ एतेत्ने ध्वा सर्वपूर्णये आनेयगोत्रजा ॥ ४ ॥ यो छण्कार दिधाजामदम्यवासिष्ठ मेदतः ॥ गीडेगीरैका १पपे दीगे सामी त्रूपेनामकः ५ भारहाजोगोळवलकुरा कार्यपगोत्रजाः ॥गोविल्करोज्धवासिस्रोघ्यवेतेनु दिधासमृताः ॥१०६॥जा डेलानेह् वास्त्रे तिभारदाजास्तुष्परी

चार्टेट् की जीकात्रये हुग् रतेजामदग्यजा ॥०॥चणे केर कारयपी रूपचौदीर करसँज्ञ : ॥भारद्वाजीजामदप्यक्रांदीर ऋक्णेस्मृतान॥ ॥भारद्वाजाश्चिम् उत्काष्यपाश्चिरपुर्कर ॥भारद्वाजायवासिष्ठा श्चिचळकरसमाव्ह्या ।।९॥नेष्ट्वा ब्वापिनेद्वेधाचित्तरेकै ज्ञिका म्मृता ॥ चिद्रेकृत्माः काशिकास्ते हुनेकरसमान्ह्याः ॥११०॥ चोब्बरः ठाश्यपः धात्रजठरोने ध्रुवःस्युतः ॥भारद्वाजाऋतेजव्हे ज न्येते गे

तमा रमृता ॥११॥जान्हर्वकरसङ्गरू भारद्वाजीयजायदे॥भारद्वाजाजामदस्या द्विधायाजावडेकरः॥१२॥ सी पिद्वधाजामदण्यक्तीः-ि शिकाभ्या विभिन्नते ॥जाभीकरा कीशिकास्तेजोशी गार्ग्यस्मृतोप्र ॥१३॥म् इत्यक्ये तेसदेधाझांसी वाले इंटगीतमा ।।अयात्रेयपुर

णकरोजामद्य्यप् टिकेकर १४अन्य वा सिंघगोत्रऋ टिटवा सिंघगोत्रजाः ॥ टेब्टेल त्रेयगोत्रास्टोळाआत्रेयगोत्रजाः ॥ ११५॥ टेब्टे तुजा मद्न्याची क्रकराश्रेत्रयः स्मृताः ॥वकारः काश्यपः पादा भिद्यतेवाकुरः क्रमात् ॥१६॥गोदैः काश्यपवा सिष्ठके शिकात्रेयने हुवैः॥भा 'रहाजनपर्धनडग्ब्येलेसंभजतितर्॥११७॥॥

डाम्यकारयपगात्राम्त हिकत् तुपमन्यवः ॥ हिक्यदिकंकराम्बापिवासिखादिगणेकराः ॥ १८ ॥ आपया कार्यपादेग्वेकरास्तेनीपुवा अपि॥डेग्यक्षानयगोत्राम्बेटग्राएव्निता ॥ १९॥डोगयंत्रिविषाद्ययावासिखाऽनेयनेभ्रुवा ॥ नैभ्रुवास्तेयनगस्य रेव्देवासिखगाः नजा ॥१००॥ आनेघावा करेटारेनान्येतेतु द्विधामता ॥ गासिखजामव्याप्या जामव्यम्तुनाकर् ॥ २१ ॥ तत्व्वक्वरास्त्रोगासिखा की ाधिकाश्चहियामना ॥तळेकरापिवासिष्ठाँ३५अयगांनाविभिष्यते॥२२॥भारहाजस्ताटकारस्ताटगेताटकेषवा॥कार्यप्रजामद्रस्याश्च दिभाताविभिवेदिमा २३ माइत्यगार्यगामाभाभोशिक्यस्तु उसुल्क्ग् ॥तुक्सुलंकापिनाताडवासिमा काव्यपा समृता ॥ २५ ॥ नोफ-रबान चदनत्र आनेपाञ्चवारिजा ॥वाणेविहाणदासाञ्चवासिष्ठीवैन्यगान्जा ॥१२५ ॥कीशिकाञ्चापिदानोक्द्रीस्त्रतास्तेतृनेश्चवा ॥भा यक्तायुजराएंप कतदाष्ट्रप्रमृत्वयाः ॥ २६॥ कार्यपादुवबे्द्रुमाबे भारह्यायेत्रज्ञा । अन्यस्तुद्वं येदप्रस्कराः की शिकाः समुता ॥ २७॥ गार्गिभारद्वाजगानास्त्रिधावेषुक्कररस्मृत्राजामव्ययोषय्वारस्युर्गिसिष्ठाः कोशिकाक्यते॥ २८॥ द्विधाततावेयदारुकरोदेषपरस्तया ॥काइयपा<sup>७</sup> नेनकक्तुभारद्वाजे स्मृतोजेने ॥ १९ ॥दवस्करी ७ पवासिषादेपसी कर इत्यपि ॥ देवस्थलीतु आयेपाजामद्**य्यास्यते हि**पा ॥१३ ॥देसाईसप्तपान वृकाष्यपा काशिकाञ्चित्र। भारद्वाजालदस्यामीद्रच्यान्वेतिपचघा॥३१ ॥एतेतुकेवसञ्चित्रेपस्विविश्वपणी ॥तेपापचीजामद्न्योवासिच सप्तम्भ्वते॥ ३२॥देसाद्रीपब्सुतप्रत्याचायोपाकर्सा स्मृताः ॥भारद्राजाञागिरसाधामणुक्रसमान्ह या ॥ ३३ ॥धूपकारोऽयधामिछ केोशिक काष्पपस्तिथा। घोषम्बरकरारनेधा मारहाजाम्ब्काद्यपा ॥ ३४॥ आत्रेया स्वेतिवासिधा घोटपोड्ये तुवे नि भागजामद्त्याञ्चवासिधाः कोशिकानमशेष्यया १३५॥ नामद्प्यास्तुनवरेभारद्वाजाः प्रकीतिता ॥ ननाध्येतेतुवा सिंघास्तेच्वेवविद्योपणाः ॥१६॥आमेपीन्।इकोनारवजामद्ग्योऽतिमीनयाः॥नार्यतुकाशिका भारक्षाजानावेकुराः समृता ३० नाद्-गानकरास्तेतुकारमणनानलिक्ष्मा आत्रेयोजामव्त्यात्र्यनानिषेत्करसम्बन्धा ॥ ५८ ॥ आत्रेयानापके नामिवासिवानारं गवडी ॥ना रळ्कराजामद्ग्मावासिष्ठानारिगेइति॥ ३९॥ नार्तकर स्युताभारहाजोऽयोनाबसेकर ॥ वासिष्ठोजामस्भ्यभ्वद्भिणानिकन्योग्पर॥ ४०॥

निखाड्येको्शिका प्रोक्ता कार्यपास्तिनिगृहुकुरा ॥ नेंद्सर्जरास्त्रआनेयानिवाळेगा ग्येगोत्रजा ॥ ४१ ॥ निंवाळ्करीमी तमश्चकार्य पाइलकराभिधा॥ जामद्ग्यास्यने वाळकरासीगीतमाभिधा ॥४२॥झाशीवालेएतएवपागुक्ताराज्यसंस्थिता ॥ भारहाजस्तुपर्वंडे त्रिधातेपदृवर्धन ।। ४३॥ ने हुचा काश्यपाभारद्राजास्तेषां हुनै हुवा ।। येगुर्जरे हुन्यव्र स्तेष्ठभवन्युर्जराइ त्॥ ४४॥ पट्ठी हुका इयन पोजामद्द्यास्तेहपराड्कराः ॥आत्रेयास्त पराङ्येस्हः परशेकर्नाम्काः ॥ ४५॥ वत्सोत्तराजामदःत्या स्त्वासरेवादिकाइ रि॥ वासिषाः पब्सु हेपाटकरोगार्गोडेयपाटिल ॥ ४६ँ॥जामद्रम्यश्चवा डित्योगार्ग्येके तित्रिधामनः॥पाडलकरोडयग सिखआवेयोपात्क रःस्मृतः॥४७॥वासिष्ठोपि द्वेषागार्यः पाथपे दुक्र स्मृतः ॥पायर्जरोभार्गवस्ताऽ७ नेयोपान्वल्करःसमृतः॥४८॥पाव्या-स्करास्त आत्रयगोत्रा कांतारसंस्थिता ॥ अधुनाते स्छितागोव देवे पाछे करास्त ते ॥ ४९ ॥ जामदण्याः काव्यपस्त पागरे करमं इ कः॥ त्राणीताऽऽत्रेयगोत्रः स्यात् पत्रेवा सियगोत्रजाः॥ ५५०॥ भारद्वाजाः स्मृताः पर पपवयकाक्यपाः समृताः ॥ आत्रयाश्च द्व धाडक्रेया द तिल्करसमाद्भया ॥ १५१ ॥ एराणिकाच्या ८५रो हता : काश्यपगाँतजा : ॥ एसछकर पेठकरोद्धावा डक्रेयी तये : पर ॥५२॥भारद्वाजकतद्वीत्र पैदर्करसमाद्धयः॥आत्रयगात्रीविद्य पेक्ट्करसमाद्धयः॥५३॥वाटकागोवसं धस्यस्सप्रागासी स्ळेकर ॥जामद्य्य पौरवरणकरःपोद्यारस्ज्ञक् ॥ ५४ ॥ आवेषोऽयापो मुरतेकर गार्ग्यस् हुद्भवः ॥पोत्केकरास्त्रतेभारद्याजाः पं उत्तसंज्ञकाः॥१५५॥पंत्रधाटेस्मृतागाग्यो के शिका बां उलास्तया॥भारद्वाजाः काश्यपास्त्रक येवासि छ गात्रजा ॥५६॥ फणशीकरास्त तेमारद्वाजाआत्रेयगोत्रजाः॥फण्योफण्सल्करावेकावाऽऽत्रेयोत् दिवान है॥५७॥सूद्रभाषेवतहेत् फण्योते हु निधामताः॥वासिषाजामदस्याञ्चको शिकाञ्चे तिगोत्रत्रे॥ ५८॥ फण्सलकगेजामदस्ये द्वेतीयीके प्रकण्यते॥ नारद्याजस्त तारीय-फछणीकरसंज्ञकः॥ ५९॥ जामद्ग्यो ७ यवरवले भारद्वाजास्तु कांश्यपाः॥ वेर्जेइस पनामानस्त तोबह दुले द्वेषा ॥ १६०॥का इयपाजामद्य्याख्वाडथत्तेवारामसीकरा ॥जामदग्यावावकराश्वा पेगांत्रह्य धिकाः॥ ६१॥भारहाजका इयपंच वारवरेवत्सगीत्र जाना केवलाजामद्यास्वतंषांभेदः कि चित्र चित्र । १६२॥॥ 

वाभेकरः काश्यपन्तुर्वाध्यतेवेन्यगानुजाः॥ वावुक्करा कीशिकाक्तं काश्यपा विडवाड्कशः ॥१६० ॥ विनीपालप्तवासिष्ठाः सोत्विचळकग स्पृता ॥भारद्वामाषुरोभोकाबुद्हेगीतमाः स्पृताः॥५५॥भाषाकारवेतेस्युर्वेजेकरसमास्यगः॥वासिमासे भ्यवंकिनुगादोपाध्यायतागृताः ॥ ६५ ॥ तानेवकरहायस्तुपाध्यायाञ्चमकुर्यते ॥ वेर्डेषासिषजायेष् घल्करास्ते आमद्यस्यजाः ॥ ६६॥ न्दर्करा जाडिलाभोकाड आनेयगोपना ॥वासिचार्ब्बाद्वेधायोणकरा काज्यपगावना ॥६७॥ यावरेत्दिधापारहानावासिच ग्रानेनाः ॥भारहाजा स्मृताबद्धोकाश्यपाबार्वणकरा ॥६८ ॥अधनशहिधाभारहाजकाश्यपभवतः ॥ भेडककराजामवन्याभ दुभर्देशादरायणा ॥६६॥अरहानानामवय्याभानेयागायमुक्का ॥ वासिछा कात्रपपास्वतिसमझा विनोदहः॥१७०॥ भाष्ये त्रोपच्याऽऽनेयाजामद्द्याच्यगोनुम्। ॥ गार्पाञ्चभार्गवाञ्चतिज्ञामव्यन्यस्तुभासतः ॥ ७१ ॥ जामद्द्यावत्सगोत्राहि्याभावयदेक रों ॥ भाडारीजामवप्यन्तुभाडपेतेगीतमाः स्मृताः ॥ ७२॥ भूगोब्धे फुर्नगुस्तेतुं पायुक्तानेभ्रुपा इति ॥ भोपट्करागीतमान्ते भोदते जामद स्पनाः॥ ७३ ॥कार्यप स्पान्मटकोमेइयेगासिष्ठगोत्रेना ॥मणेकेरा कार्यपास्तने ध्वावनिवृद्धिमा ॥७४ ॥मसोतुना 'मद्भ्यास्ते कार्यपास्त महाजणी।। मार्ण्करास्ते आनेया दिधा ते मान्यकराः ॥१७५॥ केष्द्रिकाने ध्रुवास्तेतने ध्रुवास्तृत्युजीरा ॥ माज्येकरा काञ्चपास्त्र ने ध्वामाह की करा ॥ ३६ ॥ माङ्खाल करोमाण एती हो काञ्चपा हति ॥ महजगाव स्थिता एपका इयपाम ज गानुकरा ॥ ७७॥ मिजाङ्कराजामव्ययभान्या मिखणकरा ॥ मिराशाद्विधाभारद्वाजागार्यव्यतीस्मृती॥ ७८ ॥ सुराष्ट्वर की शिकस्तभारद्यामानीकर ॥ युन्धेवासिष्ठ गांभास्त द्विधातेयुण गेकरा ॥ ७० ॥ बासिष्ठा ३५ अयमी नाम्या मुन्तिबुढे कर्यस्यि॥ तया भाषांमिकगानभजनेजामदस्यजाः॥१८०॥ मुर्गुणेक्षसुरूपसंसकाष्ट्रपाढ्डनैयगीतमाः॥बासिछाभ्वेतिनेत्वारोपिन्नगो त्रारुपमुन्तते॥ ५१ ॥जामद्रयानतदेद् सूत्कार्भाषत पर ॥ कुलदेवस्तोषेठो सिनान्तीतिनविष्पहे ॥ ५२ ॥ तस्मान्त पहिषानीहमपोजनमितिस्थित॥ सुड्ल्येतुद्विषधाअत्रकाश्यपाने भ्रवाद्वि॥ १८६॥ ॥

भारहाजामेमण्येनेमांधेमोद्भत्यग्नजाः॥मंडठीक काइयपःस्यात् हुक्तयेनेहुदगेनजाः॥१८४॥प्राहुकार्सेतुयोगीतेन कीशिका स्मृता ॥ भारद्वाजीराउतस्टुतेचभागवताअपि॥१८५॥राजव्डकरसंज्ञेसुकाश्यपोराट्कर : समृतः॥ कीशिको धरीयक रोवासिया क्रिवास्त्रते ॥१९६॥ रंगेरुणकराजामद्य्यवा स्थ्रगे इतः॥ द्विधारेडे भरद्व जा्लघाटेसंप्रकीर्तिताः ॥१९७॥ इतः इतिल्छीत्स्या सेष्ठ को शिंदे दिधा। लामगावकरोमारहाजो ड्योलावगन्करः॥ १०० ॥ वेन्द्र आहेर इति दिधायो लुक्द के दि धा।।वासिष्ठजामद्याम्यामात्रेयोत्रोवलेकरः॥१८९॥लोक्नयेवासिष्ठगोत्रास्तेत्रद्कर्येवाश्यपाः स्पृताः॥आत्रेयास्य देघाँदर्जः काश्यपे उयवडेकर.॥१९०॥वर्ष्डेकरसंज्ञस्तु जामदुखः प्रकीटितः॥वहाळ्कराजामदुखावळामेळेत्रयः स्मृताः॥ १९१॥व ळ्वलकराजामद्त्यावारवत्येकोिशिकास्मृताँ ॥वास्धिवाग्वरेवाळ्येको शिकाअत्रयः स्मृता ॥ १९२ ॥ वाकण्करा द्विधाम रहोजोक त्यथकार्यपा. ॥ वाँय्गणकरा अयोव यथ्ये में धुवास्ते हुगुर्जराः॥ १९३ ॥ विद्रोह गीतमार देकराहे पाह की शिकाः॥ भारह जार्ऋं तगाग्यों वेळ ब्करसमान्ह्यः॥ १९४ ॥वेद्या द्वेषाकों शिकाऋँ ने हुवास्त इके शिकाः॥ ते हुपंतीपा भिधानास्सामं तास्य नृपस्यते ॥१९५॥प्राणाचार्य रेट्राव्हवाटीस्था अयकाश्यपाः॥ शहाणेशां डिलाँख्येति हिधाते पि शिव वरा ॥१९६ ॥काश्यपाअत्रयस्या ६-द्विग्दारः को शिक स्मृतं ॥शोज्वल करस्तुआन्नेयो इयोशोलोणकराव्हरः॥१९७॥के दिल देवड्येतेत् च दुर्घ डेड्रेंट गोत्रजाः॥ भारहाज जामदेश्यावा सिचाइत्यथो त्रिधा९८३ टेकराजामद्याभारद्याजाऋ काश्यपाः ॥ बोवचे करसङ्गरू जामदेश्यः स्युतोजने ॥१९९ । बोो चेवासिष्ठगोत्रास्तंक्रीखंडेकाइयपाः समृताः ॥ अंदे त्वानेचगोत्रःषाचल्दु श्वापित्येच्च ॥ २००॥ सर्देव कुळक णे हुकाइयप स्तेन्यन मका ।।आहेयाः की शिकाऋे तस्र्देसाई देधामताः॥ २०१॥सब्रीस स्तथासह्येसप्रेआहेयगे हजाः ॥सर्मछ्करःकाइरपोहरूमी कादमसंतकः श्रावीन्यगोदः सर्वेद्धेत्वा रिष्ठः क्षेत्रिकाअि। वा सिष्ठगोदः सर्वाप्टेसारवरेसाधलेत्य ३ होव ७७ त्रेयोसारमांड ल्टेसारमांबुलोक इत्य ए॥जाम देभ्यासमृती भारद्व जःस्यात्सायने अरः॥२०४। सागल्जरः काष्यपी ५ ए सांबुस्य ज्जामद्यस्जी। २००१२०१ १२०२ १२०४

मा ब्लाक काव वाव विवर्ग विवर्ग

भारहाजाजामन्य्यावा सिमान्धेतितिश्या ॥ २०५॥ साङ्येवा सिष्ठगात्रा स्तेसा तुव्यं करसज्जका ॥ सापरेक्रसज्जास्त आनेपानेश्वना अपि॥ ६॥ हिधात्वान्भियास्तेपायुक्तायुक्तिम्ह्या ॥ वासिष्ठ स्रह्स्क सोनानोजामद्य्यक ॥ ७॥ हर्निकरस्वसेदानीदोज्यङमा ममाश्रित ॥इडीकग्गातमान्तह्ययावन्मृतोजन ॥ ०॥भारद्दोजोडीपहर्पत्कीशिकाहबचेस्मृता ॥मोद्रत्या कार्यपाहबबेहक्वे द्रभातनिभ्वा ॥ । भदेत्कारणपांग्यकायनान्यदिस्वयन॥ इष्पन्ति द्रभातेयोवासिष्ठ कोशिकस्तया ॥ २१०॥ हाविष्ठं करसद्रास्त पायियोहिनणेकर ॥ अनिम काम्पपोइजुर्गानार परिकथ्यत॥११ ॥हेर्डिकराभिधानस्त्रभारद्दान अकीर्तित ॥दंदनात्कैनिस्तुंसास चितान्युपनामितः॥१२॥सहस्यस्यगेत्राणिकाष्यपादानितानित्तु॥ जनार्वनहरीत्यारप्यविद्यपास्वशिलामये॥१५॥यमेयस्मिद्येतेपा मिकतानित्ततामया ॥स्याध्यस्कृतयेतपारिन्तागो प्रचित्रता। १४ ॥वेशानर स्थिता कनिकसिद्धा स्वापनामितः ॥केनिकाग्रमाम ट्यादिनाम्नात-प्रयमन्कृतितृ॥२१०॥ रपनामांतरयाता सेन्यामादिनामि ॥देशातरस्थितास्तचनकायते उधुनाम्या॥१६॥ उ पनाम्नीकारणानि दशयामपराक्रमा ॥कर्मस्त्रनादिवसतिस्वाधिकारादिनामभि ॥१७॥पृयक् पृयक् विभियतेनात शक्तास्मिस अहे ॥ सर्वपामेकएपाहरातोनबहवाय्यस्य ॥१८ ॥ आयर्खदोतुराधेनज्गात्रभत्ययस्यन्त्रक् ॥ अन्यादिपुत्रहेतपिकतस्तत्कारणात्र ॥ ॥ असास्तयार्तेऽप्रिगात्रप्रकोञ्चारणादिषु॥ वदतित इदियति र ष्ट्रेनागात्रचित्रमा ॥ २२०॥ मत्यर्पीयाँ ४ पिपादिभ्यो ६ नृतस्यास्त निगणलत् । सर्वनात् असमर् सनस्तत्व्वपत् ॥२९ ॥ आत्रेयगानमस्यपात्आत्रयास्यगितमा ॥इत्याद्य अयोगास्तेनिर्विवादा भवतिहि॥ २२ ॥ निमत्पराः स्विद्यास समेताते कपालन ।। समाजीला क्षमादना सुमुखान्वा बुदाइन ॥ २३ ॥ नदूरपापक घरमा त्कर्मकृषुण्यकत्सुकृत्॥मनकृत्यत्योभूतयस्यम्बूतिमनात्मन् ॥२४॥व्यक्ताव्यक्तसुगणणीश् प्रत्युद्वातासुगाधितः ॥ मृतिता जानकाजानि सन्तेन्युतद्वापर ॥२२० ॥ सर्जरोपाभिष पाइरणि सतीरामचदाभिषीम्यात्मजारणुँ सुसत् ॥२६ ॥वासुदेषा-भिषोर रारचच्छिकारी। धिसर्थे १७ १६ शके बहास बतारे ॥ माधवसितशिव विष्यासुरीसमीरोर सित्धियागयुते ॥वणिजकरहाटानां

अब ऐसा यह काराष्ट्रेश नर्मराक बक्षण तारपर क्रणाकि उनरतीरप उसके मध्य भागमे तुंगभद्राके उत्तर भागमे १२९ दशयोजनका कहाडा देशहे 230 उसमेची पांच कोसका करबीर क्षेत्रहे औ काशि क्षेत्रसे या मात्र अधिकहलक्षीने निर्माण कियाँहै २३१ उसक्षेत्रका दशीन करनेसे महापातक का नाग होता है उसक्षेत्रमे वेद वेदाग पारग बाह्मणरह नेहैं १३२ उनोके दर्शन करनेस पापलय होता है वो क्षेत्रकेवल लक्ष्मीका महापीर्ग्हे १३३ और लक्ष्मीका विलास स्थल ह देवीके मीत्पर्य अडसट नीये जाये है वो तीये मत्स्य-

पुराण में प्रसिद्ध है जो कइ साधुयुरुप यो तीर्थमें स्नानकरेगा जलकापान करेगा तो ब्रह्महत्यादिपापान मुक्ति पावेगा निश्चय करके और वहा अने क देवताची-के मदिर है वहारु हा गया है। उस विकाणे जो कोई स्थान्द्द नर्पण करेगातो उसके पितर मोक्ष पावेंग उसके उत्तर भागमें रामकुँ उ है उसके दर्शन मात्रसे सब पातकका क्षय हो ता है उति शा कन्हा डे ब्राह्मणोर्कि उसित्त भेद पुराभया मकरणा २० ६० ६० ६० नपरेतृहरिमाह्मणोकिनयत्तिकहत्त्वेअवभिद्योक्षमभू भक्तासिमानीजीयम उन्द्रु नमस्कारकरके दैनहर्गोतिनामक नवनभाग कहता हुं १ वो ऐसाकि " पासुदेपवि महे" पह नामका होई एक नित्तावन नामण पनवान हथा १ वो पत्तवाग नहाव चाटकूप विरे भर्म छत्यने तसर एहता जानिक परमे भावे हुवे महत्वका सत्कार करना ऐसा म साहोक पश्चिम भागमे सरकात रहनाया २ उसने वेदतन मार्गिये देवीकी कातापना किई कोरको शाह्मण अनिकी आने उसके पछान्त्रसे भोजन करवा ने ४ ऐसा वास्वरस स्मानस्म नव दियानपर्योक भागपनस्वात्राह्मण बाक्तिविद्धपाया ५ आवासुदेव वित्तव्याने परग्राम सेनमे भारण्यमे स्मशानके नजीक आहा पानी नहीं है ऐसे रक्ते के अपरतकात वना

प्लिकानिकालनेसे सामदाम कोह आर्रीबरेसे उपापमे आवेहुने सवनणीं न्यंक्से मृतिका निकलगन समा आपधनवान पा तथापिशुण सपना बाह्मणाविकोनी मृतिकाका उचार करना निकलगन समा आपधनवान पा तथापिशुण सपना बाह्मणाविकोनी मृतिकाका उचार करना निकलगा करने निकलगा करने कि प्राप्त करने कि स्वाद करने कि स्वाद

ऐसायाक्य विस्तार सुनके वासुदेव बाह्मण सामदानादिकसे पार्टनाकरने लगा १४ ओ मनमें नलाते वारप देके कहते हैं तुमरे पत्कामें जो भोजन करेंगे भाषण करेंगे १५ और सहवास रचे गे वो बारिइताई पावेगी और तुम सबब्रिइ ते ओहान १६ लोक निंध हो वेंगे जोतुमेरा सगकरेंगे वे बाह्मण के शापसे दग्धा हो वेंगे और वहिष्कत हो वेंगे १७

कृतात् हाक्य वस्तारेवा चिवादमञ्ज्वीत ॥पार्ययामासतान् स्वीन् सामवाना विभि ईजः॥१५॥अनाहत्येवतहाक्यं शापं दला हजान्प्रति ॥ हुपासको दुर्ह्जीरन् ववेहुः सहवस्त्रये॥१५॥सहवास्च कुर्व तिनेदा रिन्ह मवाहुर्ह्छ ॥ यूयंसीनेद रिद्रास्टु स्तेज ही नाव हिस्कृताः ॥१६॥ भवे ट्लें के नचाम्बह्य पालंसर्रों का रेणः ॥देववत् दिजशापाने राधाम्बा पव ह कताः ॥ १७ ॥देवरुख पदेशाच्याना तरे देवल्दखकाः ॥ नवेद्देशक प्रमितेशा क्षिवाहनजन्मतः॥१८ ॥देवरुखाश्र्यसंजाता कत्तपावनशापतः॥१९॥ ॥इतिबा॰ देवरुखत्राह्मणोसन्तिवर्णनंनाममकरणं २१ पंचद्र वेडमध्येमहाराष्ट्रसंपदायः॥ आदितः परः संख्या २८०८ ॥ દ્ય

देवरुख प्रदेशसे आये वास्ते देवरुख नामसे विख्यातभये हे शालिवाहन शके १४१९ के वर्षमें देवरुखके बाह्मणभये चित्तपावनके बापसे १९ इति देवरुखे बाह्मणो सित सपूर्ण भई मकरण २१

उर अभीर अभिहुं हम्पे त्य ति म्करणे २२ अवआभार बाह्मणकी उसत्तिकहतेहै एक समयमें सीताल स्मण सहवर्तमान रामचंद्रजी पिताके बचनसे दंडकारण्यके १ वनमे फिरते फिरते विध्याचल के नजीक तापीके तरऊपर आरे वाहा पिताका सांवल्पीक आद्धाया २ उसवास्ते ब्राह्मण मिले नहीं तब चिता करने लगे ३ इतनेमें पांचकील आये उनोक्क पूछेतुम कीनहीं ४ ४

अथअभिल्ल आस्त्रणोत्पत्तिमाह ॥ ह रिक्षणाः ॥ श्रीमद्दाशरशीरामः पित्विक्यार दावनं ॥ देडकारण्यकं पागात्सीतात्रस्मणासंदुतः॥ १॥ वना द्वातरं गच्छन् विध्याद्वि निकटेयद्ये ॥ तप्त्याश्चत्वेषासस्तदासां वत्सरे पितुः॥ २॥ श्वान्द्रं प्राप्तं कुदेशे व करंकर्म पाविष्यति॥ विप्राप्तावे वित्रायां निमदेस तराष्ट्रवे ॥ ३॥ तवे वपचे विवत्ती स्प्राप्तावनचा रेण ॥ तान्यमच्छसरामे दे केयूय मितितेहवन् ॥ ४॥ ॥ ॥ ॥

तन रो कहने तमे हम भीतह क्या काय है भाकहा तन समन्त्र भनम विचार करने को कि समानम आह्यण यहि मिनते नामो इनाकु र नाह्यण बनाया ऐसा विकाय करके जमीन उप सातने राज्य हो हो के के समाजित है भरत मिन्न प्रतिकार के समाजित है भरत मिन्न स्वीकार के समाजित है भरत मिन्न स्वीकार के समाजित है भरत मिन्न स्वीकार के समाजित है भरत का समाजित है भरत का समाजित है स्वीकार के समाजित है स्वीकार के समाजित है समाजित है स्वीकार के समाजित है स्वीकार के समाजित है समाज

त्वनीक इने जगपति भाषा भाषा भाषा स्वाप्त स्व । व्याप्त व्याप्त व्याप्त क्षेत्र स्व । विकास स्व । विकास

थासर्वाजगनाथ्रु ताचत्यस्याद्तः॥१३॥ पिछेकहिएकदिनगयेबाद्श्राद्ध्यक्षे वास्तेसब्बाह्मणोङ्जआमंत्रणिक्यापरेह कोईब्राह्मणञायेनहिउससेपरगुरामकोपायमानभेरे ॥५॥पिछित्राह्मक्षेत्राह्मकोपाद्यक्षेत्रक्षेत्रवाह्मणतोनाहिएतवपरग्रुरामनेत्रिहोत्रपुरनामकदेशमेरहनेथालेपंचगोडांतरगतदशब्राह्मणलायके ध्गोमातकमेपंचकोशकु शस्यलीइत्यादिसेत्रमेवेदशब्राह्मणोकिस्यापनाकिगेठनोकेनाम भारहाज को शिकवत्सकोडिण्य कस्यपचिस्थितित्रामित्रगोतमञ्जिलेसयहदश्राह्मणोकाश्राह्मणोकाश्राह्मणेविक्षेत्रोशिकवत्सकोडिण्य कस्यपचिस्थितित्रामित्रगोतमञ्जिलेसयहदश्राह्मणोकाश्राह्मणोकिम्वयाममेकुद्रलातमेकेलोशीमेगोमाचलइतादिस्यानोमेस्थापनिकये ९औरउनोकिकुलदेवमागिशकहनेमगेशमहादेव महालक्ष्मीत्मालसाक शांतादुर्गानागेशसक्रकेट्यरादिक स्थेष्यरेसे और श्रेते और श्रेते और श्रेते और श्रेते और श्रेते वालेहे भर्गानोकेस्मरणक्र रोसे सचित्जोसवपापना

तबवाकर्नेसरी हम बीछह् क्याकार्ष है साफको तब यमचढ़ मनमे क्विर्करने नरीकि इसमानम बाह्मण निक्र पिनते वास्त रनाकु र बाह्मण बनाया रेसा क्वियकरकेण नमीन अपरसातरेलाकरके उनोकु बह्मकि बसकु उञ्चयनकर तबवोपहिसी अपर क्षर रेबड रेब रामने पुल्का तृमकान है। ६ तब अनेन के हमसिख है। परत मिल्लातीकाक सखोडके सुक्समानी है दूसरी रेकाकपर विश्वकर्मा जातीके जेनाकहारिसा आगे नी सरी रेखा उपर बाब वार्षा रेखा अपर सब्बूत अपानवी रेखा अपर बेबप छड़ी रेखा कपर सिक् स मातवीरेखा अपर अप आप क्व पुल्क तुमकान हो उनीन कहे हम बाह्मणोई र नवरमन आह कमसप्रण कर के पनीकु कहे कि तुम निक्

वयिकराताराजद्रिकार्यवरन प्रमा ॥रामीविक्तपामासकरिष्यामिद्विजािक्तान्॥ ॥ ॥च्कारसमोरंखाना सम्मक्तदनतर॥ उस्
ध्यतिमारंखाद्वितान् प्रविद्यास्त ॥ ६ ॥ प्रथमापास्त इति प्राप्त चित्रा प्राप्त ॥ वृत्तीयायान्त्र वृत्त्राच्यत्त प्रत् ॥ ७ ॥प्रयमायावययेद्या प्रधायस्त्र प्रत् ॥ १ ॥ इति प्रमुख्य स्त्र ॥ १ ॥ अयरामस्त्र स्त्र स्त्र स्त्र मास्त्र ॥ १ ॥ अयरामस्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र ॥ १ ॥ अयरामस्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र ॥ १ ॥ इत्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र । ॥ अयरामस्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र । ॥ अयरामस्त्र स्त्र स्त

समयाय ॥ आय्त पद्म सरमा २०२२ २८ ॥ २५ ॥ "तत् नीकहृतेत्रगे हेगम झायकि छपासे ऐसी पवनी मिनी अवनीत्रजातीमनह्नि वै ११ तब रामषद्रने फत्या भच्छा तुम जगतमे अभित्रजाक्षण भवना असीर बाह्यणनामने विस्यात हा ११ और विनाहादिक में तुपर कृत्यदेवीकानु वर्षर सुवारकी राजाकरना १० मिन पैनमणनीमें देवी की प्रमाक्तमावाने कुनाडान्यपेवना अरवड शैपारलना १२ महत्रकाणकी उपाति मयद्रीत्रक रामसकती वृष्ठपर्व मानननामक ब्राह्मणके सुरवसे मुनके वर्णनिक्यी १२४ आभी १

थासर्वा जगन्नायह ताचत्वस्यादतः॥१३॥ <sub>पीछ प्रहिएकदिनगयेवाद्त्रमाह्यक्तकेवास्तेसबत्राह्मणोक्कामंत्रणकियापरेटुकोईत्राह्मण आयेनहिउससेपरग्रुरामकोपायमानभर</sub>

॥५॥पीछेत्राद्यज्ञ केवान्तेवाह्मणतोनाहिएतवपरशुगमने विहोत्रपुरनामकदेशमेरहने वालेपेचगीडांतरगतद्शवाह्मणलायके ध्रोमातकमेपेचकोश्कु अस्यलीडत्यादिक्षेत्रमेवेद्शवाह्मणोक्स्या पनाकिपेउनोकेनाम भारद्वान को शिक्र वत्स की डिण्य कञ्यपयिष्ठ जमद्मिवित्यामित्रगोत्तम अत्रिऐसेयहद्शवाह्मणोकात्राव्दसेयज्ञादिकमे भोजनमेव्यवहारचलने के वास्ते विहोत्रदेशस्यपेचगी सन्तिमारस्वतवाह्मणोकिमन्याममेकुहलातमेके वेशीमेगोमाचलङ्लादिस्यानोमेस्थापनिकये १ और्ष्यनोकिकुलदेवमागिशकहतेमगेशमहादेव महालक्ष्मीह्मालसाठ्याना दुर्गानागेशसाकोटेम्परादिक

्योष्ठ ऐसे गोदेश ने हि वेपरव्युरामने खायके ११ प्रेयु मस्थल मे भक्तकेकार्यके वास्ते स्थापनिकयेओर पेसर्वे देवता जाज्वत्य तास भक्तकेमनो रखपूर्ण करेने वान्ते है १२ जिनोकेस्मरणकुरने संसम्बन्धासम्पना

 शानतारिषदस्तकः इत्तृत्त्रसंद्य्वदेहे देनगतः नाय तमेरे अत्यव्यक्तेनोक्षात्वमनकियोगकरिष्द्यरनुपरत्यमनेजानिदीन पुरदेशस्वदश्याक्षक्ष्यपनेकारके निमित्न बारवापनित्येषदनोकिकवासविकारमरेषु कहोत्वशिनकहतेहे हेपुनक्षकामकास्याक्ष्याकानायोगकीरस्थितिकेमीनाकहताहु अवणकरण्य विद्याकाहाण्यो नावक वनोकेषा सदनुत्वचेदसमेसोहकत्यकी केवासी (क्षेकेभमें केदशब्दा)भोरकीडिण्यवह तीनगोगोषु दशवशुकुक्तसहितस्वापितकियेपक तीनगोभके बाह्यणस्वयूनित १० स्वस्पनतस्यणिकमेनेपुन सदनुत्वचेदसमेसोहकत्यकाम । वरुष (सस्य अम्बूनीकोर कोवती मिसकेवहवारगावने सकुक्तस्यापित किये नृष्टामणिनामकमहासेनमेदशक्त १९तीनदेवतावसक्तकेपुक्तस्यापितकिया वीप

द्शगोभक्यिविभास्तिहोनपुरगसिन ॥आनीता परगुरागणस्कार्यार्थस्यसिद्ये॥१२॥हेशमोन्तस्यिस्तारंकययन्यसमासतः ॥॥ईन्यर्यवाच॥॥ऋगु
सुमतानुष्टुचकोषोगम्बक्यस्यिति ॥१५॥त्राद्यणादश्मोभान्यकुखक्यपिकस्यते दुश्रुश्मक्यांच्युद्ध्यामानाणिस्यापितानिहि ॥१५॥कोत्यवस्यकीि
न्यगोनंदश्कुद्धानिदापुरोविभाग्राविभाग्राविभाग्राक्षाने कृता ॥१०॥सुद्द्यात्मवात्म्यद्वुगः सवकर्मे हः॥मठपागीवरंण्यन्योद्धान्यद्धान्यद्धानाम्यद्व्यान्यद्धानिक्षात्रक्षानिक्षात्रक्षानिक्षात्रक्ष

रखेमा चढकेम व्यभागमंबाद्ध उने स्यापन दिना इसन्दारसे प्रशुणमने कृष्ठदेवतास दिव नेस्य महस्य प्रायम गायसे स्यापन दियो २० कीर उनी के व्यपाप प्रायम अधिकार दिया २० इसम् महस्य स्थापन दियो देव स्थापन स्यापन स्थापन स्था

विरणीमकहतें हैं भान्यायरगावमेरहने सेसारिकरनामभया है २० शामों के अधिकारसे नामभासभया है इसमे संश्वनहीं है अबबोणवीयह नाम भासहो ने का कारण कहते है प्विकर्नीट कभात मे मस्र्वमीना मकरकेराजाह तायमका प्रोक्ति के स्वाद्य का स्वाद्य के स्वद्य के स्वाद्य के स्वत्य स्वत्य के स्वत्य स्व

अधिकाराच्च यामाणामाममनमस्वायः ॥विमान् सारस्वतान् पूर्वराजात् शिखिसं क्षकः॥२९॥अधिकारंचषण्य तिमामाणांचद्दी केल।एत द्रामा धिकाराच्च शाण्णार्व हुपनामकं॥३०॥मामं हितेन विमलंगच्छतीतिनशंक्यतां॥सुद्द्रशानवीयाच्योयं देशायं ज्ञायं देशाव्यवत्॥३०॥यशाआ ग्रायादेशब्दा द्यापाञ्च पितृत्या किथायकाः॥ तथायागन वियाव्योयमिषृद्धविवाचकः॥३०॥इतिके देनिविमाणा ग्रान् नित्य किथायते॥ नित्र हं द्व-याद्यानामेपाह पपदेसित्॥३३॥अतः सिद्धं शाण्णावितं तत्वे नव्यवहारतः॥बाह्मण्यमिषित् हं नः संश्र्योतीन युज्यते॥ ३७ ॥अस्मत्कोकण्याम्मे हिश्लाक्यतेयत्तु देनित्य क्ष्यते तानिरासार्थनामह्यदिमाणकं॥३५॥देशस्यते लवादीना देशस्याती लवाद ते ॥वदं तदेशकेष्ठाच्यत नामने हिश्लाक्यतेयत्तु ॥३६॥सुन्दुः कोकणशब्दोयं ते लवादिकशब्द विभागामे क्षाया विभागामे क्षाया कर्ति तत्र ॥वदं तदेशकेषाद्य त्याव्यवहारस्यतत्ततः॥ ३०॥कोंकणा कींकणा कींकणा क्षाय्यवहारस्यतत्ततः॥ अध्यवहारस्यतत्ततः॥ अध्यवहारस्यतत्ततः॥ अध्यविवासस्य विधानतः॥ ३०॥वारंतवावत्या देसं ज्ञा करतेषां व्यवहारतः॥केरलाक्ष्यत् लंगात्र्यत्यास्तरे राष्ट्र वासिनः॥३९॥कोंकणाकरहाटाक्ष्यवरालाटाक्ष्यवर्गः॥ इतिकेरत्तर्वहिकेरला देष्ट्रसास्तु ॥ ४०॥देशेष्ठ किन्नभाषाणां समकंसह दाहतं ॥ सर्वेषां बाह्मणादीना सर्वेभाषान्ववर्गः॥ ४०॥ यथावेकेरलेदेशे हिनानां वसताम पण्यकाकरत्याक्षेत्र आधिनतरा॥ ४२॥॥ स्तरंशवरता यो

न्यनहीं १४अबहमेरेयहसारस्वतीका कोकंणेनामकजोतीसराभे दहेउसऊपरसेजोकोईशकाकरते हेउसकानामरु विभागासे निराकरणकरते है ३५सो ऐसा कि देशमेर देश-स्थानेक (तुलब) देशमेर हे बास्तेतुळवे माह्मणउसी मुजक तेलगद्रविड कर्नाटक गुर्जर इसा दे भेद जेसे तत्त हेशानिवास करने सेमा समये उनसरी रवाकों कण कानामजानना ३६ उसमें कों कण पायह सुद्ध स्वतीलवादिक शब्द सरीरवात हेशा वासी आहमणों कुएकवाचक है भे से गुजराती आहमणा रत्तु गुजराती में चोरासी भोद है वेसा ३७ उसमे सुन्द को कणी माषायह सारस्वत को कण उर्फ शाण्णवी बाह्मणों कुमत्यस्वित्वर विर्वाद स्वति को राज्य स्वति के अपहार है उसमेर हने से को कणे, साकवळकर, कुडा लेकर, कायह ळकर, इसा दिजी नामचला सो आवि स्वति स्वयात है ३८ अभेर सो देश कि केरल एमल बार ) वुलंग (तुलु ) सो राष्ट्र को कणा करहाट (कन्हाड ) वरा लाटा बर्बर इसा दियह सात वेश मेर वर्ष डर्म वर्णन कि ये है ४० और ओ देश कि मत्ये क भाषा-

पिनहें तबमलंबदेशमेशास्यादिहेदिन्योद्मापासद्द्वतीन्हेरिश्चेसाकेरतदेशमेकेरत्याद्राणोकिनेशीरद्वते सबवर्गीकिनिशापाकरती है ४१ वैसीकाक्षणदेशमे शह्मणा दिहोदिकोक्षीभाषादिखपदतीहि ४६भाषार्क्षतपुत्रवाताहिणायादेशकृतवातिहैसभामभीतिकिनाताहै वर्णररवस्पान्द्वनाताहे ४४ भर्यात्यह वारोपदार्णोनेकुन्तादिककाल नहीतदिवासीब्हसारस्वदशाण्यवीकाकात्यासेशास्यव्यक्षायासेकाकणत्रसिद्धहेयहजातकेह्पदितशकार्वण्यकोहकेस्पिरचित्रतरहो ४५गर्भीपानादिक्षाया ४०६सकेस्पष्टिकार बाह्मणाक्कवक्षीहिनेश्वसद्वादककर्मसेचीन्यहोतहे ४६ एवयह कोक्यारोणवीसारस्वतशास्त्रणोका महालविषयमे ओवतकत्तर ममाणवा सो दिसाया ४०६सकेस्पष्टविषक

त्रीवकोकणेदेशेयामापाविपतेषुसा॥ द्रयतेसहजातेन सिद्धकोकणकेषुच॥ ५३॥ आचार कुरुमारचाितदेशमारचाितमापित ॥ सम्मम् क्रोद्मास्चाितवपुरास्चाितको ॥ १४ ॥ आचारणचिमवको कण्तंचमाप्या॥ अस्मासुन्विनि खिलानि खिलानि वपिता। ४५॥ पचितं वाित्रस्काते सस्कृताचे द्वितातय ॥ तेपिकाम्वपीग्यास्य आचािद्वसुमिताः॥ ६५॥ एवको कण्यगियास्य खेलाव स्वाधित । १५॥ पचा द्वा स्त्रावा स्वाधित । १५॥ अस्य स्वाधित स्वाधित । १५॥ ३३॥ अस्य स्वाधित स्वाधित । १५॥ अस्य स्वाधित स्वाधित । १५॥ अस्य स्वाधित स्वाधित स्वाधित । १५॥ अस्य स्वाधित स्वाधित स्वाधित स्वाधित । १५॥ अस्य स्वाधित स्वाधित स्वाधित । १५॥ अस्य स्वाधित स्वाध

अयसारम्बत ब्राह्मण और तोवाणेसिनियों केउस निमकरणः २४ भनितकी कन्छी बाला रियुर्नर सप्रराजि सारस्वत ब्राह्मण और अवाणेक्षित्र याकि उसनि कहते हैं। सुरच राजा पूछनेहें है कमेधा ऋषि। हिसुला जो देवी-और सारन्यन ब्राह्मण, और ध्वत्री उनाकि उत्पन्ति कहा १ तय समें वा क्यी कहते हैं- ब्रह्माके सायकालकु नैमिनिक प्रलय हुवा फिर करमके प्रारमकु ब्रह्माके प्रा त काल समयम विष्णुने योग निद्राका त्याग करके २ सब जरमय पृथ्वीक देराके सृष्टि करनेकी इच्छा करने छो। इतनेमे श्रीभगवानके देहमेंसे हिरालाना म करके 3 इच्छा गिक एक देशी प्रगटभई फिरवी देवीका आराधन करके नाना प्रकारके स्ट्रंटी किये ४ एकवरात वो हिगुला देवी मेरुपर्वतके ऊपर वैविहे अीर्उसकु

अय मारस्वत ब्राह्मणोत्यसिमाह ॥ उक्तच ॥ स्कादे हिर्ला द्रे खडेपूर्व स हिताया ॥ ॥ हुर्य उवा्च ॥ ॥ हिर्लानामयादेवी तदुसिनवदस्वमे ॥ मारम्बत्स्याधिपस्यत्याक्षात्रञ्जस्यच् ॥ ५ ॥ मम्धाज्वाच् ॥ १ ॥ ब्रह्म णो विवसस्याते वच्छेजलम् ह धे ॥ कत्यादें च महाविष्युयीगनिद्रातमात्रित ॥ २ ॥ एकाण्य हर्रद्शास्य किन्तुमने द्धे ॥ तने भगवतादेहात्समुद्भताचिहरुता ॥ ३ ॥ इच्छाजानितर्महादेर नामागध्यविष्टुः स्वयम् ॥ समजीविविधं विस्वृंशांतद्भिषे वसवसा ॥ ४ ॥ एकदाहिर् ठाढेच्याः स्थि तायामेरुपर्वते ॥ स्वयभावस्य विस्तारं कर्ने मिच्छातते असवत् ॥ ५,॥ पाणिनापाणिमाघृष्य हिंगुलामानसंसुनम् ॥ ससर्जजसरा जारवंस्वमत्चस्वमाहितम् ॥ ६ ॥ कृतांजिलिपुटवीरमधाहिहं सास्ययम् ॥देशेदेशे चम्ह्रप्रधापयस्ययते हिया। ७॥ तथेत्या-हायर् रःसनानादेशस्यलेड्च ॥ स्थापयामासतानानारूपनामस्मान्वितोम् ॥ ॥ एवंसी हेउलादेरोकपार् सेत्रमुत्तमम् ॥ आ साद्यसंस्थितातत्र सर्वदेरे प्रमुजिता॥ १ ॥ मणिद्वीपतमेवाहुर्य त्रदेरीसु संस्थिता॥ अथयात्रा न मिर्न न द्वेजोलित प्रकेष्य-

अपने यनाप विस्तार करने की इच्छा भई ५तच अपने दोनो हात चर्पण करनेसे जसराज नामका एक मानस पुत्र पैदाभयार ६ वोहात जोडके ख डा ग्ह्या तव देवी कद्भी है हे जसराज देशदेशमे मंरी स्निकी स्थापन करो ७ तथान्तु कहके वो बीरने वे होत म्यलोमे वे देवीका स्थापन किया = सो बोदेवी सुख्य करके सि धु देश और क्ट्रची स्थान इन दोनोंके बीच में समुद्रक नजीक हियुरुपर्वतके मास कपाटक्षेत्रहें वहां निवास करति भयी ९ वो स्थान कु मणि द्वीप ऐसा कहते है स वदेयता वो हिंगुला देवीकी भ्लाकरते हैं अववो हिंगुला देवीकी यात्राके निमित्त सेजोसारस्वत बाह्मण उसका भये सोकया कहते हैं १०

जिससमय रामचह रावणामारके उद्मण मौता इनुमानादि सह पर्नमान निमकृट पर्वनके नतीक गभीरा नदीके तट अपर १० आपके बैठे और इतुमान केमा पर्शनक तरहकी बार्ता करते करने १९ कहने अगेकि है इनुमान मधने पहिले गेमा निम्मयकिया याकि जिसवस्थन मीता सहवतमान अयोध्या रामकियों आहु गा तो पहिला हिराबारेवीके वर्षान करके वाद राजगादी पर बेढ़ गा रेमा कहके हनुमाना है बानर सहवतिमान प्रपाणिक्या १५ मो स्नावे दिन श्री रामच इ हिराबाने थी इ क इर्ब के प्राचि कार्य वाद्य कार्य वाद्य स्त्रीमें सोधाई १५ असकू इनुमानने जगाया तब वोक्यीं उनके गमच इकु ने सके बड़ा इर्षित होयके कहने सगाकि आव

क इत्वहे अपोर कामे आये गृहा एक वर्णत रखेमे सोयाई १८ म्सक ह्युमानने नगामा नव मो मर्पता गढ़ के गमनहकु ने तहे का हर्णिन हो पके कहने स्माधिक सम्माधिक सम्माधिक स्माधिक स्माधिक स्माधिक सम्माधिक सम्माधिक स्माधिक सम्माधिक स्माधिक स्माधिक सम्माधिक सम्माध

काम् ॥ ३९ ॥ तस्यतद्भन सुत्वाप्राचान्तराभवस्तद्या। अधुनानवयभाज्यकुम हुन्नाह्मणाचना ॥ २२ ॥ आव आन मेरा भान्योदयहुम १६ तबरामनाने द्या तुम कोन है वो कहता है मैय कार्षि सिद्धं १० अभीस युगपर्यत मयन निम्ना किया हु मेरा आयम कपाट सोनम हिग्नता देवीके पास है। वषणमने कत्याकि हे कार्षि । दमेरेकु वो हिग्नता देवीका दर्शन करान दुमकुं बहायुण्य होनेगा १० तयास्त कहते वो कार्पिट सिद्ध सुरुष निमकु हाइके दरवत मे वो सिपके हिग्नता देवीके रक्तेमे आग्रुषा ऐसा कहते है यो भागे यतने क्या पीके सपरिवार रामक्य बकने तमे ती आगे एक कतरने का सुद्र स्वत काया उसकू रामवाद देखके १ यो सिद्यकार्षीट रामकु कहता है कि हेगम। यहा भोजनकरक बाद अपने सब हिग्नता हुन को तो देश का वार्षीका बचन सुनके रामने क्या कि सभी को नन निक्र करनेका २२ कारण मयने पूर्वि लल शहरणका भोजनका सकत्य कियाहे और उनोकुसेर सेर सुवर्णका दान देनेका है २३ सो शहरण तो चोरके भ यसे पनायमान हुनेहें और उनोंके भोजन किये विना मेरा भोजन निह होनेका २४ ऐसा रामका वचन स्तनते वो काणीट सिद्धने कह्याकि तुम विना करो मन मय श-ह्मणोंकु दिगाता हु २५ ऐसा कह्या इतनेमें सरस्तती देवी प्रस्क्ष पकट होके रामकु कहने लगी कि हेराम! तुम मनी प्सिन वरदान मगो २६ तब रामने अपना वृत्तात कहके श्राह्मण मगे तबसरस्ततीने पृथ्वीमें अपने हाति स्रिसे २० वाहांसे अग्नि सरीरवे तेजस्वी वारासो छन्तु १२९६ श्राह्मण पेदा भये २० स्तो रामचद्रकुं देके सरस्व

त्समेक वृतापूर्वे भंजनार्थीमयान्य ॥ प्रस्थमेकंद दे चाहंदिजं क्ये हेमिनिम्लम् ॥ २३ ॥ तस्करस्यभयेनेवसर्वेविपाः पता यता ॥ विनाविपानमान्येहंयावन्नोनियम कत ॥ २४ ॥ रामस्य नियम हत्वाकार्णीटव व्यमब्र दीत् ॥ उद्देगंमाकथाराम दर्शयामे हनादिजान्॥ २५ ॥ रामस्यप्रयतस्तत्रपादुरास् ोत्सरस्वती ॥ रामंत्रो वाच सादे विचरवृणु हरे सितम् ॥ २६ ॥ त द्रासमः स्वयुत्तातं चोक्वावबेदिजान्मम ॥ देही तिर्वेषः ॥ तदासाद्राग्रदादेवी स्वपाणी घृष्यभूतले ॥ २७ ॥ सारस्वेतास्तदो स्व नादी मपावकसन्तिमाः ॥ त्रयोदराद्रातं तेषां चहुन्द्रनं तथेवच ॥ २८ ॥ दत्वारामाय विप्रास्तां तत्र्यां तदे हेसती ॥ तेपिसारस्व-ताविपाः शारदातिल कंयया ॥ २९ ॥ रामोः पितान् दिजान् सर्वान्भोज चित्रावरान्तके ॥ प्रत्वेत्रस्थमात्र वेस्कवण दिस्तिणा म-दात् ॥ ३० ॥ स्ववासन तोदत्वास्वयवेद कुर्जततः ॥ वहुिमः सहितपश्चाद्यके हित्रामिधेतदा ॥ ३० ॥ सारस्य तास्वत्रिकाव ददेवां पारगाः ॥ विभज्यादाच्च विमे भयोदेशलोकान् पृथक् पृथक् ॥ ३२ ॥ केचिच्च प्रेषिता पूर्वके चिच्चादिशहत्तराम् ॥ केन्दिच पश्चिमदिशिद क्षिणायांचके चन ॥ ३३ ॥ एवसर्वान्दिजान्रामोस्थानंदत्वाजगामह ॥ तेपिसारस्व विमाविरत्याताजग्तीतस्था ३४ ॥

ती सम होगयी वो बाद्मण सरस्वतीने पैदािकये वास्ते सारस्वत ब्राह्मण ऐसा उनो का नाम विरव्यात भया २९ फिर रामचद्रने वो ब्राह्मणोकु सुदर पकान्नसे भो जन करवायके एकेक सेर स्वपित वानिकया ३० ताबूल कादान देळे बाद बधू सहवतिमान रामने भोजन किया ३० ऐसे वो सारस्वत ब्राह्मण वेद वेदांगपारंगतभ येउनोकु एकेक वेशका दानिवया ३२ कितनेक ब्राह्मणोकु पूर्वदिशाको इक्र उत्तर,कोईकु पश्चिमदिशा, कितनेक कु दक्षिण दिशाका स्थान ३२ ऐसादान ब्राह्मणोकुं देकं रामचद्र हिसला देवीके दर्शनकु चलेगये वाद्वी ब्राह्मण सारस्वत नामसे प्रवीमे विरव्यात भये ३४

ऐसा सारस्वतः ब्राह्मणेष का क्यांनि सारमयने धर्णन किया १५ अप उनोके जा जनाणा नाम करके धानिय प्रमान है उनाकि बसनि ब्राह्मणोक मुख्ये स्किनी हुद् कहना है १६ (ह्या पु गोजने रामचढ़ मगवान पेवाभये उनोका पुच जननाम करके भया उसके वहामे गर्भीर निनक स्मपूत पा गकर कहन है वो पेधामये १७ वो सब सूर्यपरा। है उनोका गोमवेवीरलावेवीहै भारबाद देहाने एक पादपुर करके गामही बाह्य कर्गाजमे जय-बद नाम करके राजाथा उसके राज्य बलानेवाले किया सि ८४ जागिरवार मिरवार ये ३० उनोन कुछ राज्यके कामम धनकी बोरी किये असके विये राजा के साथ बढ़ा विरोध स्था। और उत्सवत भैयाना करने लगकसके विये रा

एवसारस्तोत्तिवर्षेकदस्य च सृज्ञा ॥ इरिष्ठणोनग्विता हिरानाद्विष्ठणाना ॥ ३५ ॥ अतः परअवस्पामि नवाणा स्वियस्यच ॥ उस्ति भेद्रिकु सुतीद्विज्ञ सुतीद्विज्ञ सुरवाच्य ॥ १६ ॥ इक्वाकु गान्नप्रमवीरामनामामहाप्रभु ॥ तस्यप्रभोतव प्रोक्तीराक्तिरस्त क्रिकोद्व न्या ॥ ३५ ॥ अतः पर्यव्यक्ति स्वयं ।। ३५ । रजप्रत कृत्ये स्वां ज्या न्यां न्यां न्यां ।। ३५ । रजप्रत कृत्ये स्वां ज्यां न्यां ।। ३५ । रजप्रत कृत्ये स्वां न्यां ।। ३५ । रजप्रत कृत्ये स्वां ।। त्यां स्वयं ।। त्यां स्वयं ।। त्यां स्वयं ।। त्यां स्वयं ।। त्यां प्रमाणित्रा ।। न्यां प्रमाणित्र ।। ।। न्यां प्रमाणित्य ।। ।। न्यां प्रमाणित्र ।। ।। न्यां प्रमाणित्र ।। ।। न्यां प्रमा

ऐसा राजाने वो दुर्गा टसका अपमान किया वो सुनर्क वे सरदार रजपून लोकोने वडे सन्मानसे अपने जयेमे हे गये ४७ और कहने छगेकि हमेरे बि तुम दसोदि इस वे हिस्सेके मालक हो नारस्वत हमेरे आचार्य है वास्ते आप सारस्वत और योग्यहो वास्ते ४८ राजाकु जितने के वास्ते सहायता करना तव दुर्गा दसकी शीलतासे हजा रो छोक ४९ रजपुत सत्रिय और सारस्वत ब्राह्मण सहाय करने कु आये तब वो सरदार ब्राह्मणो कु कहने लगे कि ५० आजसे तुमा कु आचार्य पदवी हमने दिये है किर स्वियों कु कह्या कि जी किव हमकु राज्य मिला तो ५१ तुम हम सब राज्यका भाग समान वरावर लेड ो ऐसा सबक नाथ वराय करक ५२ दूसरे राजा बों कु साहाय लेने

कोइ भी राजाने सावायना निह कियं तब वो अवसरदार लोक उदास होयके सिधु देशमे बल गर्य ५३ अब छ मिनने बाद इनोकु मारुगा ऐसी नो राजाने मित्रा कियीषी उसमे आव दिन वाकी रहेहें राजा जयबद्र में नालेके मारने दु आना के ५० यह बात सनते या बरदार लोक भयाभीत होयके दुर्गा टब्कु पछने नगीक हमा रा रक्षण करनेका उपाय करों ५५ तब दुर्गा दत्तने कह्या वाहीत अच्छा तुम रामवर्गा हो सार देव का मेरेकु दर्शन होवेगा तब अन्य अने लेखे होता कहके स्मृतिका आरम किया ५८

ादिन तीन गर्य बाद सागरदेव मत्यस हो के बरदान यंगे ऐसा कहा। ७९ तब दुनी बन्तरे कहारिक ओ आप मसन्त अपे होतो इसकु अक्षम देवो । तब समुद्र ने कहारिक य हासे कीस मरके अपर ६ सोईका गई हमकु दिन्वेगा बाहा आयके विवास करना सुमेरा अप होतेगा ६९ भीर ने गई एक ईम दिन रहेगा बाद अनर आन होनेगा वा कोएक देम दिनके अवर वो किसेसे बाहार मिकसना ६९ सोईके किसेसे बास करनेसे ओइवास ऐसा नाम अमेरा होनेगा ओइ वास के ठीकाने की नाणे ऐसा का दिने भीर व्यनसे तुमेरी सब भागीका मेंकुन बेबता कु ६ , मेरा प्रसम्प्रम करके मूजा करता नुमेग फरवाण होवेगा ऐसा कहके को स्यगर देव अंतर ध्यान होगये ज्यो आज तम द

्दिनजर्मे यानिकाने मुस्तन् सागर् स्वय ॥ वरवर्य भव्रते खुवायदिज पुगव ॥ ५६ ॥ यदिदेव मसन्तो सिद्धभय वेहिमेप्रभी ॥ त योगपस्य १ इतो ने को शमात्रके ॥ ६ ॥ दुर्गी होहमक्त्रेष्ठो रहिमार्गमाविष्यति ॥ गन्वानिवास कर्नव्या स्वस्तत्रभविष्यति ॥६९ ॥सदुर्ग स्थास्य विष्यविकानिचे कविशानि ॥ निर्गनन्यविक्रिसम्मासतो समाभविष्यति ॥ ५० ॥ लोहदुर्गी नेवासत्वा होहवासा भिषाम्ब्री ॥ अध्यमस्तियुष्णाक मृह्येकुलदेवता ॥ ६३ ॥ युजामदीमाकन्तिमातन अधा भाषप्यति ॥ इत्युक्तामागरीदेवसा तभातवधीमञ्च ॥ ६४ ॥ चतुराशीतिका सर्वे सर्वेक समन्तिता ॥ लोइबुर्णप्रवश्याधवा तून निरमुस्तत परम् ॥ ६० ॥ आ-शवशा विमस्तातें हुणा निग त्य ते हु । निर्ममु समहद्वामसर्थते कसर्यावह ॥ ६६ ॥ तल्याविति वायिन् प्रलाहोरूमस्तके ॥ तन कितिपर्यकाले गनेनपामिषायदा॥ ६७ ॥ पुत्रपुत्री विवाहार्यसकीचा ह्यमवन्महान् ॥ तदातत्मार्थनायोगा दुर्गा दत्तो दिजी नम ॥ ६० ॥ चतुराशीतिभेदान्ये कत्वापोवाचनान् पनि ॥ त्यक्तास्वर्गभी जिल्या पाणिगृण्हृतुनिर्मय॥ ६० ॥ ॥ दोहरी॥ चौरासीसरदारते नुरुषचौरासीनाम ॥ अपनो भपनोवर्गतजी करांच्याहकाकाम ॥ १ ॥ ॥ दुर्गोदन्तव भुन्वातयान्य सुर्वि बाहकम्॥ विवाह समये तेपासारस्वतिहानसामाम्॥७ ॥ त्याधानने नापके सब नौवाने अपने इनकी सेचा करते हैं ७३ फिरवी सब सस्वारदुमा

दत्तक और दुसरे सब होकोपु साथ नके वो बाह्यह मे रहक शसुकु जीन नचे ८०फिर हो किसेमेरी अवाग दिनके बाद सब लीक बाहार निकल के बतागाम बसाय के बहु। रहते असे ६५ मा भी बो म्यान मिश्र देश और ताबोर दे बीबमे कियात है ऐसबा छोपाणे कास्यान भया फिरकहो पा दिनमये बाद करणा पुत्र बाबोन सम ६० वनी कुलेने देने का त्रकोष बढ़ीन होने तमा तब दुर्गीदलकी पार्चमा किया कि हमने विवाह अवध्य केमा करना तब ६० हुर्गीयलने चौत्रक कामियोंके चौत्राध्य भेद करके कहार कितुमने अपना

यम औड़के दूसरे वर्णने विचाद सदय निर्णव तामे करो ५६ योगा दुर्गो बलका वजन कमके पंसा करने अ

फिर वी सरवार चींन्यामी जो घे उनोके साथ जो मारम्बत ब्राह्मण आयेथे । उनोकी १६ नुरवार्थी तुरव कहते उन्तु वर्गये सो विवाह्के बीचमें ७ व्झा वार्थ दक्षिणा के वास्ते परस्पर कलह होने लगा सारस्वत ब्राह्मण की तुरवा १६ लोगाणो क्षत्रियो की तुरव २४ तव वो न्यूनाधिक के योग से कलह होने लगा संवेरवके दुर्गादत्त दसो दिने नियम किया जिसके कलह न होवे ७२ जितनी लोगाणेकी तुम्बर्थी उत्तनी तुरवोक्क एक एक सारम्बत ब्राह्मण कि तुरव देवे ७३ वाकी के वारावर्ग जो ब्राह्मण के रहे उनोक्क एकेक लक्ष्म पर्य देवे प्रसन्त किये वो बारावर्ग देशातरक्क चलेगये ७४ जैमाउमवरवत दुर्गा दत्त दसो दि

थमाजाति ॥ ।। कामान्यवा वैसा अवी नग उनोके वंदास्य प्रुष्य का प्राप्त में मान्य है ७० लोवाणों में विवोप करके मान्य है और प्रुप्य हैं और वो दुर्गों दत्तके वंदास्य प्रुष्य दसोदि, तथा अजा जी, तथा वागेंट ऐसे तीन नामसे विरयात होते भये ७६ ऐसा पश्चिम देदास्य सारस्वत ब्राह्मणों कि और लोवाणे क्षित्रयों की उसत्तिका भेद भें सी िक गुलाबि संदर्भ देशी और भेंसा विष्य के प्रतिसे सुना सा मयने वर्णन किया ७७ द्तिपश्चिम देवि य सारस्वत ब्राह्मण और लोवाणेका उसति भेद पूरा हुवा पकरणक्ष्मादित पथम २९५१

अथद्धीचसारस्वतमाह्मणाकिउसितमकरण २५ अबद्धीचसारस्वत माह्मणा निनक्ष प्रोत्क कहते हैं और महा सभि बनोकी उसित कहता हु शीनकादिक सभी प्रच्यते हैं हे खता। हिराबा देवीकी ब सित कही नो देनी दिनसे पैदा मई फौनवेजामें फोनमी वरपत १ उसकी पूजा नित्म कोन करताही पूजा करनेसे क्या दे तीहें सो कहा दत कहते हैं दे नर पिन्यते। उसकी उसति कहताकु रेवो देवी सिघदेवाके पश्चिम अतमे कियुक्त नामका पहाड उसमे विगतमानके कियुका नाम कहते हैं पूर्व द्वाराफ देवामे विम चिति देलके बांधम के एक विधुक बुसरा सिदुर यो दोनोंने सबदेव दु रवी दोचके पानेती के दारण आये थे फिर पायती कि आसासे गणपतिने वो सिद्ध

भणद्पीन सारस्वत प्राह्मण प्रह्मस्त्रिययोद्धसन्ति भेदसार माह्॥ उक्त स्कादोपपुराणे हिएलादिरपडे उत्तर सहिताया ॥ ॥ अस्ययञ्च ॥ ॥ सूतस्त्र महापालाहिगुनाया समुद्भव ॥ पदकेनन्त्रसा माता कस्मिन्देरो कदान्य ॥ १ ॥ केस्नुसपूजीतानि स्य प्रिता किद्या तिच ॥ ॥ स्तरवान ॥ ॥ अनव कथिष्यामि हिगुलाया समुद्रव ॥ २॥ स्थितासा सिधुवैशा ने दिशुके पर्वतासमे ॥ पुरा तुरोफके देशे विमित्तिस्तुरो भवत् ॥ ३॥ तस्य प्रश्नी महातु सी दिगुलो सिदुरस्तया ॥ तास्या प्रतासिता देवा पार्वती रारणयस् ॥ २ ॥ पार्वती तुत्वाते माझात्वाद्व स्वमहत्तर ॥ यत्रमा झापया मास सिदुर्स्य वथा मवे ॥ ५ ॥ गणेशेन यदा वैत्यो सिदुरोन्इतोयुधि ॥ तवातस्याः नुजोदैत्योदिरातस्य पत्रसम् । ६ ॥ दिख्यवर्ष सङ्खेवैचवार मेरुपवते ॥ तपसातस्य सत् षोवरपूरीतानोववात्॥०॥ ॥ हिगुलक्षाच ॥ । वियत्वधिव्यापातावे तलशास्त्रीस्तयास्त्रके ॥ त्यहिस्केर्मृतमात्रे र्मुखुमी स्नामप्रभो ॥ ८ ॥ तथे सुन्तागनो बस्मा देखासी मदगरित ॥ सेन्द्रान् सनापया मास तदाने चाति दु खिता ॥ ९ ॥ जननी शरणयाना हिए लेपर्व तो नमे ॥ देखा स्केनना देवी तुष्वु कार्य सिद्धे ॥ १० ॥

भाई दिश्च ६ ने देनताके हचार वर्ष पर्यत मेरूपर्वत के ऊपरमप किया। अवबस्ताने असन्त होके वरदान मणी एसा कहा। अ सब दिश्वस कहता है। इ बहान आ-कारामे प्रवीपे पानासमे असमे शस्त्रास्त्रमे तुमेरी असमादिई हुद स्रपि मामसे मेरामुखनाई होना तथास्तु कहने प्रसागये बार्यरवानसे बहा मदीन्यन होयके इशादिक देपताक हु रव देने लगा। तय सब देवता हु रवी हायक हिरास पर्वत के ऊपर जायके देवी सूक्त्रस सति करने सगे १

तब देवीने उनोका दुरम जानके कत्यािक हे देवता व हो। तुमेरे कु हिग्रल देत्यका वडादुरव भयाहे ११ वो वेन्यकु मयने मारा ऐसा जानोः तुम जाव तव देवता व वे वचन सुनके स्वस्थान जाते भये १२ देवीने उत्तम स्वरूप धारण करके विमालयके ऊपर वेदीन वाहा हिग्रल देत्य आयके १३ सुदरदेवी कु देखके मेरेसा व वचन सुनके स्वस्थान जाते भये १२ देवीने औ वचन स्कनके उत्तर नदेते ग्रहाके वाहार निकलके फिरते फिरते सिधु ससुद्र केसँगमके उपर आयी १५ मेहसे याकु उहा पक की पासे का पासे का पासे का पासे निकलके कि साथ मेरा सकोग दुर्स के १०० मेरा एक बडा वत है सो कोई भी पीछे आरह्या दुरा हिग्रल देत्य के देवी कहते हैं हे देत्य मेरे वास्ते का यकु फिरता है तेरे साथ मेरा सकोग दुर्स के १०० मेरा एक बडा वत है सो कोई भी

देवानां परमंदु रवज्ञात्वे वाच्जगनमधी ॥ भे भे देवा भवद्द रवज्ञातं हिंदु ल देत्यजं ॥ ११ ॥ गत्व्यं स्वा धिकारे हु हते द्यन्यम हास्तरः ॥ देव्यावचनमाकण्यं गता सर्वे स्वमालय ॥ १२ ॥ रूप धृत्वापरदेवी हु हिना चलसंस्थिता ॥ एतस्मिन्नं तरेतत्र हैं रुलश्चसमागत ॥१३॥ की डिदु तत्रताहस्वा मं हेने वाच दैत्यराट् ॥ सुद रेत्वमयासाक वसं ते की डन कुरु ॥ १४ ॥ तच्छू त्वाचिकतादेशोकिविन्नोवाचचं त्तर॥ उत्थितासार हाभ्याशा दागता पृथिशीत छे॥ १५॥ में हेनच्या कुलोवेत्य . पृथतः सतदा यर्थे ॥ प्रित्रमती सादेवी आगतासिधुमागरं ॥ १६ ॥ साग्रेचस्मासाद्युवाच देखपुंगवं ॥ ॥ देखुवाच ॥ ॥ मसृष्टे-च किमर्थत्व विचरिष्य हे भूतले ॥१७ ॥ त्वाहरी नासरे द्रेणसंभोगे ममदुर्ल्भः॥ तस्मान्य तिश्ववागच्छ मास्रवास्रो कनं इस ॥ १८ ॥ मद्गतंदुकरतरको कर्त्वप्रहर्भवेत्॥ ययागत्त्यागच्छ स्वकारे दितिन दन ॥ १९ ॥ एवह त्वावचनंदेत्पराजी मनी रहंनाभिनिवेशन्तनः ॥ कितद्रततेकययारं भद्रेक रिष्येहपाणतत्र्याधिक ये॥ २०॥ ॥ देख्याच ॥ ॥ नम्ने भवमहा दैत्येत् त्त्वाचात ईतामव्र ॥ अत ईतातदादा हा हग्ताकग्तेतिच ॥ २१ ॥ इवन् परिभ्रमन् कोके सिंह देशमणागमर्॥ देटी बिँचारया मासमारणे केत नेश्वया ॥ २२ ॥ सिंधु देशांतरे गतास्यूलरूप चकारेसा ॥ नीलांजनसमाभास सर्वाष्ट्रध वरा

जिता। २३।। करनेकु समर्थ नहीं है। वास्ती जैसा आया वैसा जा १९ ऐसा स्तनते देत्यने कह्या कि प्राणसे जादा होवेगा तो भी हुमेरा वत करूंगा वास्ती मेरेकु कहो २० तबदेवीने कह्या है देत्य तुननहों जा ऐसा कहके अनर्धान होगई फिर हिगुल देत्य देवीकु श्वडता हुवा २१ सि धुदेशमें आया तब देवीने विचार किया कि इस देत्यका मृत्यु देव देत्यादिक ब्रह्मा कि सृष्टिसे नहि हैं। और जाहा सूर्य का प्रकाश पड़े वाहा भी मरण नहीं हैं। वास्ती जोहा सूर्य प्र-

कारा न होने ऐसी ज्यों में मारता यह क्यिर करके एक पर्वता कार क्या सक्सरी फरेडो जिस् हु गुत्यस्थान मोह फारक दिस पहन हैं। ऐसा नय क्य भारण किया औ र जी पहिला छोटा सहरर इस था। ओवि भारण किया। तब देखने यो लक्सई देखके इपित होयके २७ कहने लगाकि। इतनी वेर नगा हूं कहा गई यो। मेरा धामध्य त् जानती नहीं है श्रणमरमे तैरेकु मारुणा मेरा सामक्य देख २४ ऐसा कहके तरबात हातमे लेके मारनेकु आया इतनेमें विका देवी से बढ़ी देवीके भगमे प्रवेश-किया २९ देसने भी उसके पीछे वो विवयोनीसे प्रवेशाकियां द्र नवपाछे आ खा हुवा देखउसकु हुकार शब्द स्र ताहन करते ही देशीकी योनिके अदर पढा ६९ मुहामोहस्युनिकरुन्यभगुज्तेरेष्ठीत्॥ एतस्मिन्नत्रेदेस्योहियुहोप्याजगामह्॥ २४ ॥ ननौवेषीमतित्वके तस्यवैत्यस्यमार् णे॥ नाम वेवेर्नयक्षेर्वाननरेनीगकिन्रे ॥ २५ ॥ स्पस्य चानपो यंजनतनमरण मवेत् ॥ एतन्मा दहितस्यानेमारण चिभीयते ॥ २६ ॥ एविक्वार्यमाणासापुनः पूर्वस्वरूपमा ॥ पद्यतस्तस्यसम्बाना सम्बाहर्षमवासवान् ॥ २७ ॥ ॥ हिसुलासुरज्यान्व ॥ ॥ निस्त करानावेनीम इसत्वनवेतिन । अतस्ता नाशिपयामि सणीनपदयमेवस्म् ॥ २८ ॥ देखान्ता रवसु मादाय ताडिस कत "निम्बुय" ॥ ताबत्साम्बिकादेवीदेखुपस्येजगाम्ह ॥ २९ ॥ नस्चनः स्वयदेख्। गुरुयानीजगामह ॥ ३० ॥ स्वप्थनं म्वा <u>गृतदेखवर्यक्रकार्यास्ट्रेनस्ताङजन्नी ॥सभाहनोदेधिदास्त्रोत्यवायनापपातयोनीजगद्विकायाः ॥ ३१ ॥पतमानेन्यतदेहेः</u> देहि देहीत्य वीच्यतः ॥ स्वभाणाक्यगताः करेपराग्लानिमवापदः ॥ ६२ ॥ उन्मील्यनेत्रेवानके देनीस्तोत् प्रचक्रमे ॥ त्वद्रपुर् येणचमो हितोइनजानेतामाध्याकिप्रेषा ॥ ३३ ॥ ॥ देखुवाच ॥ ॥ वरवरयभागत्स हिरालासुर यो निज् ॥ लासुरउषाचे ॥ ॥ यदिमातः त्रसन्नासिवरदातुंसमागता ॥ ३४ ॥ मन्नामारव्यातिरूपेणां आकर्यात स्थिति कुरु ॥ वरे मृन्यचयाचे हमन्नाम्ना पूजनतयः॥ ३५ ॥ शरणेभगरूपेने प्रवेशेनकरोतिच ॥ तस्या सुसकलानिचानुकामान्दाभी सुभास्म ते॥ ३६॥ प्रसका देह पढ़ के बरवता देहि देहि ऐसा बोलते बोलतकी पढ़ा कवमाण आये वडी ग्लानी पाया १२ फिरह्लूसी नेश रवालके देविकी स्तुति

किये ११ देविने कर्या वरदान मग हिंगुलासुर कहते हैं है माना। नुमनो मसलाहुवेही और वर दान देते हो तो १४ मरे नामके क्यसे कल्यपर्यत निवास करना कीर मे रे नामसे तुमेरी पूला होता १५ और भगक्य महस्यान में ओ प्रवेश करेगा उसके सपूर्ण मनोरथ मिछ हो १६ तथास्त ऐसा देवीका वचन स्पनते हिगुलाकर देत्यने देहत्यागिकया दिविको सायुज्य मुक्तिकु पाया ३० उसवरवत ब्रह्मादिक देवता पुष्पवृष्टिकरके स्तु तिकरने नित्र नित्र देवी कहितिहिक ३० देवित प्रत्यान दिया उसलिय हिगुला विका मेरानाम भयाहे तुमने भी मेरेपास रहेना ३९ तीर्थ त्रीर त्रपने ऐष्वर्ष भोग सिहन न्यीर अर्थि सहत्र मान नित्यवास करी त्रीर नौकोइ यह भगरूपी स्थानमे त्रावे गे ४० उनोकु तुमने मुक्ति देना ऐसा कहके हिगुला देवी त्रावर्षन भयी ४९ फिर वो ब्रन्सिक देवता वोने नद्र कूप के नजीक वास किया ४२ जाहा सिष्ट नदी त्रीर समुद्रका सगमहे सिधदेशके त्रातमे वाहा तीर्थ बोहोत भये उस ह त्रका वर्णन करते हैं जा

तरेत्यं मितित दाक्ये माकण्यं कर्राट्ततः ॥ जहे प्राणान् शरण्यं च देवी सादु ज्यमा सवान् ॥ ३७ ॥ तदा ब्रह्माद्योदेवा पु प्यवृष्टि प्रचक्रम् ॥ क्तृ ने चक्तक्तदेवाच हिर लाजगद बिका ॥ ३८ ॥ देत्यायवर दान न जाता हं हिर लां बिका॥अत् देदेवता सव् तिष्ठत ममस् निधी ॥ ३९ ॥सर् ष स्वस भीगास्व ऋ विभि . सहितास्सदा ॥ २ जिविदाग मिष्यं तेशरण् भगस्तप् ॥ ४०॥ त षां हानिपदेश्वाथभ्यित्व्यसर्रेश्वरा ॥इट्स्वासातदादेवी हिरुलाचंड्विकमा ॥ ४१ ॥ पत्र्यतासर्वदेवानातत्रेवातर्धीय ता ते चित्रेवास्त तत्रीवस्थितास्त बुद्रकूषके ॥ ४२॥ तीथानि सिष्ट्रस्या ने निम्नगा हिंदु होनिन्॥ जानानि सिष्ट्रदेशांतेस्म द्रेसंगमा मिर्गा ४३ ॥ गूरिजानिम्नेगायत्र इसा कामदुघा स्त्या ॥ विदुम्नीमहातीर्थं देवर्षिगणसेवितं ॥ ४४ ॥ गेरि जायास्तरेरमें हिंदुले पर्वतोत्तम ॥ हिंदुलस्टसमोपेचदंभे च्या महासुनि ॥ ४५ ॥ महालक्ष्याम हाम के करे तेसुद्ध मानस ॥आवा हितान्तिनादे को टितोष्ट्रितत्राहि॥ ४६॥ को टितोर्षि मितर्त्यातंतत्ते शेलं कपादन ॥ हिंह सस्ये त्तरेदे र्वेगच्य त्रियमानंतः ॥ ४७ ॥याम्समित्तेतेसाचकामधेन समास्मृता ॥ हिर ली याद्यसर्वेड पाषाण गिरेकादेये. ॥ ४८ ॥ते सर्वेजनेद्वेयंमहालक्ष्मीयतः स्थिता ॥ तस्मिन् गरेनवंकोट्ट श्वास्डाश्चेवस स्थिताः ॥ ४९॥ हा हिराला नदी गिरिजा नद

वृक्ष कत्पवृक्ष समान है बिदुमती तीर्य है ४४ त्योर हि गुल नामका एक पहने है उसके नजीक दरी च सुनीका त्यासमहे ४५ उस सासमि भीतर दरी ची तर मि महालक्षी जो काच्यान करते है उनका निर्माण किया हुवा कोटिती थे है ४५ के रवे हिगुल पर्वतके उत्तरबाह खयकोस के ऊपरजी सुमि है सो काम चेहु सरिख है व क्षत्रमें जितने वृक्ष पाषाणहें स्त्रों सब कवर्ण मय है ४४ वाहां नवकोटि चाम्खा वासकरते हैं व पर्वतके नजीक स्रगाध जल भरा हुवा एक सरीवर हैं-

५ उसमे मच्छके रूपसे विममी निमास करते हैं नी अब की मृतिकाके पीगसे लोहेका काला हाताहै। ५९ कीर की पर्वत के दक्षिण बाह्य सेरका झाड है उसके मूलके पास गोपी चदन सरीले सफेद फचरहें ५९ उसका चूर भीर ताबा स्ववीनों कु सिरीने गाउनेसे सक्वर्ण होताहै वो हिस्स परीस के किरस्फ पर एक नमत्कारीक साउ है। ५३ उसके पनेका और बचिकाकापान महर श्रामिने गम्भुद प्रकके निकाले नो रूपाहोता है। ५४ नोबनमे अस्त सजी विनाबेत है उसके मापि जो कि भावण रूपा बनुवेशी रविषाके दिन जीर सथराभिक जो होनेतो एवं माणिक तत्कार जीवत करे ऐसी है। यह को बनसे मणिश्वर एक बढ़ा सर्प

हिरालाहे स्पूकटके सरोवरमुदीरित् ॥ विनादारहित्त न सालिल्ब वर्तने सद्यु ॥ ५०॥ तस्मिन्यीनस्व स्पूपेण निने बोबती सदा ॥तस्यससरीमात्रेणायसकनकनामियान् ॥५९॥ हिगुलाहेदिसिणतीयतीतेस्वादिरस्तरः ॥तन्युलेसंस्थिती प्राचीगोपी च दनसन्भि ॥५२॥ त्व्रणतामससर्गां कनेक जायतेष्क्व ॥ हिगुलास्यस्य विरव्हेक श्रिविनतः समृतः ॥५३॥ तसर्णक स्यससगैष्टिन्सयेजायनेतेदा ॥पचप्रहरपर्यतमाध्योगेस्तेसुन ॥ ५५ ॥रीप्यहिजायतेतस्त नामकायि विचारणा ॥ तस्मि चने प्रकाशास्त्रास्तराजीविनीसता ॥ ५५ ॥न्यास्तेचडास्तरपासास्त्रीपिधृनिधिमीता ॥त्रायणस्यचतुर्वेद्योरुणायार्वि वासरे॥ १६॥ तस्या माप्तीनिवीषेचे समुतान् जीवये साणान् ॥ तस्मिन् सर्पामहानास्ते मणिनासहित सुचि ॥ ५७॥ हि युकाद्रेरधो भागे सर्व प्रदश्योजन ॥ तह मुके स्थितभद्य तस्य सिद्धियम् ॥ ५८ ॥ स्थाप्त स्थापायी प्रपच्ये व्यागिरेरधः ॥ सप्ति स्थापायी प्रपच्ये व्यागिरेरधः ॥ सप्ति स्थापायी प्रपच्ये व्यागिरेरधः ॥ सप्ति स्थापायी सप्ति स्थापायी प्रपच्ये व्यागिरेरधः ॥ सप्ति स्थापायी सप्ति स्थापायी सप्ति स्थापायी सप्ति । ॥ ५९ ॥ विद्यम्याजन्तरती गय्य विद्यम्याजन्तरती गय्य विद्यम्याजन्तरती गया । ५९ ॥ विद्यम्याजन्तरती गया । मिनित्येः सिहि ॥ ६० ॥ कस्मि खिलामयेदेवाभी मदेल्पपी खिला ॥ हिसलाई पुरीभागे दपीचेरा अममिति॥ ६० ॥ ग्ला

चाराथयामा सुदुर्गीकोहितदेस्थिता ॥तदाबाचाहनदेत्यदिनभेतुर्दिवीकस ॥६२॥ है ५० भीरवो हिस्स प्रवेतके वारोतरफ चानी साकीसतक जितने इसके मुंख है यो सब अनेक तरहकी दूर दर्शन दूरगमन अरहण करणादि सिद्धि देनेवाली हैंग्यट बोकोन रक्षणक वास्ते पर्वतके जीने पानवेशी या निवास करती है शिखरके अपर सातरेवीया निवासकरते हैं पर बिंदुमती तौर्धके उत्तरवानु वारकोसके अपर गिरिजा दिखका समुद्रके सगमनजीक सुपदा

तीर्थ है ५० कोई समयमे भीम देससे पीडिन भये हुने देनता हिन्न र परीतके माने दथीच मत्यीके मात्रममे मायके हुगाँ कि माराभना करते मचे तबरेबीने

वं देसकु मारे देवतास्वर्णमं गये ६२ कोइक समयमं सित्रवर्ड दुष्ट स्वधर्मकु त्यागकरके असत्यवादी निर्दय में च्छ बुद्धि होके प्रजाकु पीडा करते मये तब उनोका नारा करने कं गारा के ने के भगवान् वेशाख्य कु ३ रिवार के दिन जमदिय अषी के घर अवतार हिया ६५ उनके अवतार से सब होक सुरवी भये एक समय सहस्तार्जन नारा करने कं गया मारे नारा के सित्रवर्ण करके है गया ने तब रेए का जमदियदीनो बर्ड दु.रिव होयक ६७ क्षात्रियमं जमदियकी कामधन गोकु नर्मदानदी के तब्छपर चरती हो वहासे बहात्कार से हरण करके हे गया ने तब रेए का जमदियदीनो बर्ड दु.रिव होयक ६७ क्षात्रियमं कहा कि जोमयह मेरा प्रत्र हतो बोकाम अपने प्रत्र पात्र कहा कि जोमयह मेरा प्रत्र हतो बोकाम

जदादितमर भूपा निर्यास्यक्त्र ध मीण ॥ अस्त्यत्सरा सर्वेना सिना, परघा तेन । ॥ ६३ ॥ प्रजार डास्नि हुणा सात्रि या म्लेच्छ हु द्वेय ॥तदावतीण भगवान क्षात्रियांतकर है रिः॥ ६४ ॥ वैद्यारवस्य वर्त याया सङ्ग्रायारि वासरे ॥जमदिः हुतं जात् साक्षात्त्र दुवा पर ॥६५ ॥तस्यावतारय रे नसरे हे हुरिवने भवन् ॥ कदाचिद् नो वीरोह मृथे हु जहारच ॥६६ ॥ जमदुर्भर्वज्ञानमूदक्षेरंते नर्रदाति ॥ रेणुकाजमद र क्ष्युअभीदु रहेनपी दिती ॥ ६७ ॥ ऊचेटु स्वस्तंरारं घेटु दर्शनका है णें॥ धेन्द्रिताहँत्रतेनद्रष्टेनार्जन्त पेणाँ ॥६८॥ नादे हित्वम्ँहाभागृहत्वातक्ष वियाधम्। ॥ राम्युवाच ॥ । तक्षम यिष्टे हें वे यह ह भवता हुते ॥ ६९ ॥ रामइत्यम तिज्ञाय हेर का द्रिजगाम ह ॥ चहु देश तेवत् की कितप्स्तूत्रच्छारह ॥ ७०॥ वेजय प्राप्तरेश में देश ने कृत ने ऋयः ॥ तदारूसनः श्रीशंक्ष वाच वचने हुई । ७० ॥ लेगस्यापयमे राम ने अती यातदेहुभे ॥ त्वद्ग तियोगतस्तरियोस्यास्या मेसव्दा ॥ ७२ ॥ अह प्रभृति लो के सि स्थान मेतन्ममाइ या।।रामक्षेत्र नि तिख्यातंभविष्य तेनसंशयः ॥ ७३ ॥ इमगृहाणपरशुमजे यस्त्वंभविष्य सि ॥ इत्युक्त तर्दि रुद्रि द्रीम परशे माददे ॥ ७६ ॥ ततः परशुरामश्र्यगता है हयपन ॥ हत्वाद्धनंतर पश्चात्स त्र रायमने द्रे ॥ ७५ ॥ हिन्द्र त्रारण ६० विकास हेन्स लाहुगा ६९ ऐसि मतिज्ञा लाहे है

युल पर्टतकं ऊपर जायकं चीवीस बरस तपश्चर्या कियी ७० जय होनेकं वास्ते श्रीर विवकादर्शन होना ऐसा निश्चय करके हेवेतब शिव प्रसन्न होकं कह्याकि ७१ मिरे लिंगकी स्यापना करी ७२ श्रीर श्राजसे यहस्थान रामक्षेत्र नामसे विख्यात होनेगा ७३ श्रीर यह परश्च हम यहण करें इससे हम अजय होने गे ऐसा कहके-विवन्यतर्थीन भरे रामनेने शिवकादियाहुवा परक लेकं माहिष्म तिनगरीमं जायकं सहस्त्रार्जनकुमारकं क्षत्रियों कु मारनेकाउँची ग करते भरे ७५ ने सेमने सारस्वत नर्पीका बढास्पानभमा जोनिक मन्न इरते हैं कि हे सूत सारस्वत कुछ कि उयित मेरे कु कहा ७६ सरस्वती कु छन्न भया ऐसा कही ने हमने मुना नहीं सूनकहने हैं व क्षीत्रारों। श्रुविकैतासपर्वत के छनर शिवने मोरक्द स्वामिक कथा कही हैं सो कहता हु ७७ पद्म कर्य के पहिसे के कर्य में त्रमा दृष्टि बोहोत मई ७८ पृथ्वी में व्यानका नाजा को हात्रमण हो के क्षयपाये देवता बोहा भाग नय हो गया नव सब देवता बहात शरण का ये ७९ कहने छ गे भूमि में यह होता न ही है हम स्वर्गसे करहो गये हैं वासी मेचकी उसित करो जिनसे दृष्टि होते ८ अहमा कहते हैं सुमसब पीखे कि से सी मा पणि पक्ष करके लोक कर रहण करने क

सारस्वतम्यीणाचजात्स्यानमहत्तर॥॥ अत्ययकत्तु ॥ ॥ सतस्वविद्यास्माकसारस्वतक्नुतोद्भव ॥ ७६ ॥ सरस्वता

त्वक प्रमोजातस्त्र प्रमहेवप । स्तः क्षेत्र स्तः प्रमाण प्रमुखायि । १ ०० ॥ नहदा मिमुनिश्रोष्ठा सा

रस्वतक्यानक ॥ पद्मकत्यासुराके त्येत्र अतावृष्टिर नायत ॥ ७८ ॥ निरन्ते भूत्वे जाते सर्वति का स्यगता ॥ नष्टभागास्त

दादेवा ब्रह्माण शरायस्य ॥ ७९ ॥ अयही भूत्वे द्वरयम् भ्रष्टादिवी कृतः ॥ मपोस्ति कुरुवा स्यस्माहृष्टि हिजायते ॥ ५० ॥

॥ मह्मोवान ॥ ॥ प्रयस्वे निवर्त्य मत्त्र ते सेसुविस्तरे ॥ स्वामोत्मित करणे कृत्वा सो भ्रामणि अ ॥ ५० ॥ किष्ये छोकर

सार्य यहार्थि विभाग । १ विभाविष्ठि विस्ता के सूत्र माययी ॥ ८२ ॥ त्वनार स्वति श्रित्ति । ग्रावादे विष्ठि ।

भित्राक्ष वृष्ट्य विभागत्य ॥ ८३ ॥ यवास भृतस्य मारो ब्रह्मासारस्वते तते ॥ स्थितासो प्रास्त सदे ह्र कथि महो भिष्यिति ॥ ८५ ॥ एविष्वायी सीवेषास्य पिमामनदा ॥ देवाना गौरवाषी यज्ञाना वण्य श्रारिणी ॥ ८५ ॥ ॥ आका श्रावाण सुष्ठा व ॥ ॥ भो भो देवा अधुष्ट्य भो श्रावी प्रवास प्राप्ति स्वास प्राप्ति ।

वा ॥ भो भो देवा अधुष्ट भो द्रश्रार्थ प्रवद्यास गणि सम्बर्गाता । देवाना भारत्य । वा स्वास स्वा

वासी शहरी जतान करें में ऐसा विनार करके वेबता बाह्य साथ से केंट्र भूतन में सरस्वती नरीके तटफपर सारस्वत तीर्थ में इंडिके मास्ते पद्मकरने उगा ८३ अब ब्रह्मा सरस्वती के तट क्षपर पहाने साहित्य के वेबे ब्रोर मनमे विनार क स्ते अमें कि इंडिको जस्मिन होनेगी ७ ४ ऐसा विनार करके समाधिनगण के बेंडे तर्व सामाधावाणी कहती हैं ०५ कि है देव हो । इंडोसिन के बास्ते उपाय स्वत्य करो एक कराने सुना मणि समृत मरके रस्तो फिर स्विनी कुमारदो स्त्रीर सरस्वती नदी इती के स्वागम में जो विषयत होनेगा स्वीर कृममे पड़ेगा उसमे से स्विके स मं उत्रोसिन होबेगी-ऐसा कहके वाणी अवर्धान भई तन सबदेव सरस्वतीकी स्तुति करने ठमें ८१ स्तृति करने उसीवरवत्त वो नीर्थ मैसे प्रत्यक्षरूप धारणकरके देनी निकली उनल देखक बहा। कहते हैं ९० हे देवी तुमेरे दर्शनसे मन पसन्त हुनाहै एक कार्य करो यज्ञाबिना देवऋषी आदि सब पीड़ित भये हे वास्ते हुमेरे गर्भ से-म इद्रकि उत्पत्ति होबेगी-९२ तो वो इद्र अठें किक वृष्टि करेगा ऐसी हुमेरी आकाश्वाणी मधने कना ९३ वास्ते अस्पिनी लुगार वेद्यके वीर्यसे हुमेरे गर्भ से पुत्रनिश्व य करके हुंचेगा ऐसा ब्रह्मा का वचन कनने लिकत होयके देवी कहने लगी १४ तुमेरा भाग और तुमेरा बलजो अस्पिनी कुमार कु देवेगे तो में गर्भ धारण करूगी ९५

यावत्काल पर्यत मेरे हुत्रका बवारहे बाहातक भाग रहेना १६ ऐसा सरस्वनीका बचन सनते सब देव मूची अधिनी कुमारलं वारण जायके अपने भाग और बल देते भरे १७ तब वे दोने बडे हिंदि भये सब के सामने सरस्वतीके हात धरिलये ९९ अधिनी कुमारने अमृतपान किये और देवी कु साथले के सरस्वतीके जल में स्मान करते भरे स ब देवबी स्मान करते भरे १०० किर रात की अबे समयमे सरस्वां कि योनिने वीर्ष स्थापन किया १ १ तब देवी बढि इर्षित होयके स्थापने नलमे बोमने क्या १०० इतने में खमहिने हुने नो प्रयोगसे वो गर्भका पान होगया १ १ तब बढ़ा हाहा कारहुवा सरस्वती बढ़ी हुन्दी मई १०४ किर देव सहस्वतीमान अल्पाने वो गर्भकु व्यवने दो हात ने खेके सीमा मणि सम्बक्ता भराकुवा और क्षत्र गर्थक के करस्व के कार के वा प्रयोग के हो तो दिया १ ५ सरस्वती ने वे करका लेके नलमे जाएके देखे तो एक गर्थके वो भाग सर्थ हैं।
१ ७ तब मनमे विचार करने खगी कि एक भाग देवना लेवेंगे और दूसरा भाग मचरत्वांगे १ ८ ऐसा विचार करके अक्षत्रे कहने लगी कि मेरा मर्म वृद्धि गत हो।

व्यवायकाले स्माप्ते म्हास्मान्यसरस्वता ॥ सरस्वता अयो-पाचैरवची परिपापयतिते ॥ १०१ ॥ गर्भेजाते तदा वैवी हवेंण मह ताकृता ॥ खुख मेदेवस पेषु खेजले इस्गामिनी ॥ १०३ ॥ पश्चमासगतेका छै गर्भी भूचद्रपाइर ॥ कविद्देव बता देवपति त्-श्रुवाय्यकालम् ॥१०३॥गर्भेचपतिनेत्रत्रहाहाकारोम्हानभूत् ॥हिरण्यगर्भजादेवीद् स्वनमहत्तावृत्तो ॥१०४॥स्तोवे युम्बसहितोश्रुसालोकुपितामह ॥गर्भेगृहीत्वास्त्रपाणाभटम्ध्ये निपातित ॥१०५॥ सोत्रामण्यमृतेनापि सीपधीनि कु दौस्तया ॥ प्रितीप्रणीतोषेनकन्माहस्तीदरावसी ॥ १०६ ॥ हस्ते यहीत्वासाक मजलमध्योस्पितातदा ॥ दहवी साचतकुं भगर्भ मक्दिभारत ॥ १०७ ॥ तदा क्विरमामास्देवीगर्भष्यवस्थिति ॥ एकदेवायहीष्यति दितीयमहमुत्तम ॥ १०८ ॥ विचा-र वैषिश्वमाहमद्रभीषधीतामिति ॥ देवानातेजसातत्रगभीवृद्धिमगात्तदा ॥१ ९॥ हपेणश्वत्ताचत्दासरस्वती अभोतरे-निश्वलमानस्मासा ॥ विल्लोक्यस्रमुगसुकोमल ततोस्यवृत्तिं स्तरकरवाच्कारह् ॥ ११०॥ एव वर्षवातदेवी तमालोकपूर् न पुन ॥जाते दातेच्ये पूर्ण सागर्भस्य वयदानन् ॥१९१ ॥वाकले कल्यास्ये दे जाते गर्भोष्य सूत्त्या॥ तटस्येन्यने कत्या क्लि व्यस्यस्ततभदा॥११२॥ तदेवोलोहितोनामनाना वेदेषुगीयते ॥ नातेषुत्रसुगे देवा सवायाविष्ठमानसा ॥१९२॥ तयः

तम देवता निम्ने वैज्यसे बोगर्मशृदिक्षपाया १ ९ तम सरस्वतीवही इपीत होयके कुममे कोमस दो प्रमङ्ग देखके उनकी प्रध्वाके वास्ते उत्तमयोजना करती मई ११० ऐसे सी बरस तम यार बार वोगर्मकु देखवी पर्द ११९ सी बरसजनपूरे बुचे तच ततस्य नेज से देवीने प्रमङ्ग देखके १९२ वी साठरम शोगमा सो सोहिनेत्र हेवानाम देवमे वि स्थानहीं दो मुनोकु देखके हैन न्यान्वर्ध फरने उगीकि इमने एक प्रमद्धि बच्छाकरिष्ठती "घड़ा दो देसी भये सरस्वनी कहती के चढ़ दोना जन वेर विभक्तने व

रव्यात होटेगा ११६ सब देव ऋषीक बीचमे अधिक यशस्वी होवेगा १९७ दशाजातीक ब्राह्मणजोहे उसमे यह पुत्रश्रेष्ठ होवेगा १९८ त्राव आगे लोहिते इकु हों तुम से त्रामणि यज्ञकरो ११९वं मेरे पुत्रके पतापरे श्रुन्न वृष्टि होटेगी ऐसा देवीका बचन क्तनते देवों ने सीत्रा मणि यज्ञ किया १२० सरस्वतीके तटऊपर वृष्टिके वास्त सीवामणियज्ञ लोहितेवने किया १२१ उससे सूत्रामा नाम प्रसिद्ध भया देवह ित भये अले किक वृष्टि भई १२२ अनकी समृद्धि भई तब सरस इच्छितं प्टेक पूत्रे पेजातं वरुगलं कथ्र्॥ ॥ सरस्व स्वाच्॥ ॥ इमें ही तनरी जाते रुष्म वर्ष करें प्रेरी ॥ ११४॥ एक चाह गृहीष्या मिमतः तिकरण सदा ॥ यूयं सर्दे वसघा वृष्ट्यं कार्य साधनम् ॥ १५ ॥ लो हेतें द्रेण कर्त्यं गृतव्य चूत्र देशमे ॥ म न्मान्नाप्यप्रः इत्र सारस्यतद्धे चयः ॥ १६॥ ऋष् इदेव्संघे इतापसे इत्येवच ॥ उपकारे इसर्दे इदे इपरे गीयते ॥ १९७ ॥ ऋषिजातिदीराष्ट्रीकाकर्मणातपसापिया,देशा धिक्यो हिमहुत्री भविष्य तिनसंशयः ॥ १९८ ॥ ऋतः परंभव दिश्व करिष्ट यज्ञकारणं ॥ ह हितंद्रेणसहिताः से त्रामणि दिध्यतां ॥११९॥ममध्त्रप्रभादेण्त्र्यन्वष्टि विष्यति ॥देव्यावचनमाञ ण्यींचळ्य से त्रामणिहराः॥१२०॥ यहं स्रस्वतीत रेसर्टेस्भागूमायहः॥ वृष्ययंच कतीयद्यो से त्रामणेरतं द्रेणा॥१२१॥ हैन देत्य क्रिया जाता सूत्रामाल कर्व देतः ॥देवाह बिपरप्रापु दृष्टिर्जाता हुँ ले किकी ॥१२२॥ जातासदेसम् द्वस्य सरस्वत्याः प्रभावतः ॥ तदासरस्वेत देवीद्धी द्वे मह बैता ॥१२३ ॥ जगाहपरम डीत्यास्त्रन्यदान चळारसा ॥ दीतं स्तन्ये तदाहुकी पूर्ण तांत्रापिते क्षणात् ॥१२४ ॥ एतस्मिनांतरे वेधास्त्रिद्शांतानुवाचह। अयि दः क्षत्रवृत्या ब्रह्म स्रवं रक्ष ते ॥१३५ ॥ स्र रंडुने द्धीचंस्ट्र सोरस्वतङ्कां धेपः ॥ भ हितामृत् लेकिंडु ऋषीणोङ्कषपालक ॥ १२६ ॥ यस्मिन् शास्त्रा ण सर्वा णेड्रा णा न्यहच्छ्या ॥ तथेवन्दाःसांगास्ट्र तिषंटु तेन्संशयः ॥ १२७॥ ्रतीने सारस्वतद्धीचकुं श्रीर ले हिनेंद्र अपने उत्संगमे बिगयने स्तनपान करवायाः १२४ इतनेमे बहादेव देवे ने कहने लगे कि यह इंद्र क्ष त्रेयधर्म से बहा दात्रिका रक्षण करेगाः १२५ और यह दधीच सारस्वतङ्कका अधिपति हैं नेगा ऋषोकापालन करेगाः १२६ जिनोके पास देद अगशास्त्रपुराण सब रहें गे १२७

लेहे ११४ मेरी मीतिके वास्ते एक कु मयल थुगी न्य्रीर दूसराजो लोहिते इ है उसकु वृष्टिक वास्ते तुम्ल के स्वर्गन जाना श्रीरमेरापुत्र सारस्वत वधीचनामसी वि

बास्ते इन्होंनीका यहाँपवीत उपनयन सस्कार भीर भार्ष विवाह करी १९८ पैसा ब्रह्माका रचन सुन्के सरस्वती दोनोका बनक्य किया १९९ देवता वो ने दोनोजुओं कु ब्रह्मचर्य के सब रहार्ष दिखे उनोने ब्रह्मचर्य पालन किया १३० बारा बरस तम सब देवता वि दवत मुबाहा रहे १३१ पी छे जातुकण्य नर्शीकु दो फन्यायी एक वेदमती सो द्यीचके बास्ते दूसरी अची सो दोहिते ब्रके वास्ते लाये १३० यथा विधि दानांका विवाह किया १३३ वहा आनद भया पी छे इत्ती सहबर्तमान लोहिते द्र क्षेके सबदेव स्थमिनपं भीर सारस्वत हमीचने स्त्री सहबर्तमान आई क्षेत्रमे बास किया १९५ फिरउनो कु छत्र तो बाहात अय है उ

अतोदी हिनकाम थिं कर्तव्युवतन्यन् ॥त्यो ह्युहोपिकरीय्य आषेत्रवर्षिक्छोपितः ॥ १२८ ॥ इत्येव मुत्का वन्त्नदेवी तमच्कारहः॥ सारस्यत्रवर्ष्य्वतन्यन्त्रन्ये कर्ते ॥ १२९ ॥ वसन्ययेषदायीय्यवृद्द्वाञ्चतीयात् ॥ एवचीपनयेजाते तम्बन्धारह॥ सारस्वतस्य वर्षम्प्रतव्य च नामर् ॥ १२९ ॥ महान्य प्रयासम्बद्दुद्वा स्वता भात् ॥ एवचा पन्य पति वर्षा वर्षा ॥ १३०॥ ना न्य विद्या प्रविद्या पर्यत्य दिवा स्वत्य पति । १३०॥ ना न्य पत्य देव स्वत्य पति । १३०॥ ना न्य पत्य देव स्वत्य पति । १३०॥ ना न्य ॥ १३०॥ सारस्वतद् पी नायद् नावेद मती । १३०॥ स्विद्या वर्षा वर्षा । १३०॥ विद्या पत्र पत्र । १३०॥ वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा । १३०॥ वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा । १३०॥ वर्षा । १३०॥ वर्षा । १३०॥ वर्षा । १४०॥ वर्षा । १४० वदीपवेवस्वनिष्णुक ॥ ३९ ॥रुक्षक सोनपालश्रम् सिद्ध स्वापर पर् ॥धर्मीनारायणश्रीवितिमिरोधर्मिणस्तथा॥१४० नोका

तीनिर २४र्र्दुर अन्तमदिवि ३६ नगत् ३७ कपाछि ३८ सम्यक अहर्कदर्जा ४० गिमासक ४१ च्यवन ४० अकक ४२ चंद्र ४४ क्राच्द्र ४५ मानद ४६ ग्राकंदक १७नंद १८ मानक १० मानमा ०० चंपक ५१ व्यास ५२ पिष्यलाह. ५३ त्राधानुकः ५४ देवत ५५ चृत ५६ की स्थ ५८ मके ५९ अणः ६० भेरा ६१ छणात्र ६० विश्वपालक ६७ नग्पाल ६० तुंवक ६५ तुलिस ६६ वामदेव ६७ वामना काण्काण्क ६८ ब्रह्मचारित्र हः ६९ भेण्वः नरकपा लक वक वालम्य सुद्धा. कपि १४० यह आदिलेक इट्यासी अन्यां कहे हैं भी अर्था गोत्रके पवर ज्ञानना गाण्य श्री र सांकृतियह ब्रह्म द्वाचिक गोत्र जानने १४६ तिनीदर्दरके वजमव येर्जग्नया ॥ कृपालि सभ्यकक्री वृहद्शी विद्यमारक ॥ १४१ ॥ च्यवनः सुकक्री द्रः हुचेषुक्री व-

मानदः । आकृतकस्तयानदो मानकस्येवमानसा ॥१४२॥ चंपकस्रतयाच्यासः पयलादे उपधातुकः ॥देवले दूर् ले इटस सूर्यमकीन्भेरवी॥१२३॥क्रणात्रिविश्वपालश्चन्रपालश्चतंबरुः॥तुलसीवामदेवश्ववामनाकारकारकः॥१४४॥ इहन्या-रीबहुत्रीरभेरवं नम्पालकः ॥वकश्रवेवतुदालक्यत्यवेवसुदुवः कपः ॥१४५॥ अष्टाद्रीतिस्मृताह्येते प्रवरादीम हर्षयः ॥ गांग्याः साकृतयः योकास्त्र देता हिजातयः॥ १४६॥ मस्तायं गर् पसंबुहत्स्त्र स्यसंस्थितः॥ बृहत्सत्र स्यवायादः सुहेता परम धारिक ॥१४७॥ सह त्रस्य वृहसुत्रः सारस्य तकुरेषरः॥ मा लिनी के शिनीचेवधू मिनीच वर्गोगो।। १४०॥ इसे तॉ॰ केन्यका जातार दमत्यांभ्यद्वह ॥ इतिवंशान् वंशात्र्यगात्राणिव्याजानिच ॥ १४९ ॥ जाता रितार वक्तको अपिवृत्याच हुई रवः ॥ इते वंक थित विष .सारस्वते इन्हें भव ।। १५०॥वश्वचश्ववत्रो नित्यम अपे धारु तंफ्लं ॥ संघार हिन्र एण्ट इत्रपोत्रा देव दिएं ॥१५०॥ सारम्यटेनऋषिणारिक्षतं सत्रयं कुल ॥ निक्षत्रिकरणेकालेरामात्सत्रिकुलांतकात् ॥ १५२॥ ॥ ऋषयं ऊतुः ॥ ॥ ब्राह्म पेरिक्षतं क्षात्रं क्षत्र ब्रह्ममञ्जूकयं।। एनत्पर्वमं ये पेण ह्य हिल्स्तनं दन ।। १५३॥॥ श्रीर श्री गरागीत्र विहे ब्रह्म स्विका दायाद सुहोता होता भया १४७ उनकाज्येषपुत्र एकसारस्वतङ् लमें भयाहे स्त्रीर मालिनी केशिनी धूमिनी यह तीन कर्या सारस्वतद्धीचकु भइहे एसा यह वैशाह वैश्व गीत्रजी माया है उन्

का सद्दर्ण वर्णन करने कु कोई समर्थनही है यहसारस्वत कुलका उद्भवक्या १५० यह वंदाजो अवण करेगा उसकुं अह त अन्यमेध यज्ञ करने का पुण्य होते गान स्त्री रपुत्रपीत्रादिककी वृद्धि होवेगी १५१ एइसारस्वतद्धीचने परसुरामके नयर सात्रिकुलकारसणिकवांहै १८२ ब्रोनिक मक्स करते हैं के बाह्मणीने सित्रयों कारसण केया औरभ्रमहर्म् केसाहुपासो कहो १५३ ख्तकहत् है सहस्मार्जीन कुमारके परगुरामने नि काति पृथ्वी करनेकी इच्छाकरी तव १५४ प्रपे दिसाण उत्तरपश्चि म्यारो दिशामके सिनिपोक्ष मारते हुवे सिंधुदेशमें आये १५५ मिधुदेशमें परगुरामका यहें यह बात सुनते सब सामि मयाभी तहां गये १५५ पो देश में नगरनामफरके सिनिपाका राजधानी स्थानहें ऐसा नानके परजुरामने यहा पाचित्न निवास किया ५० सिनिपोक्ष मारने के वास्ते तथ सिनिपोका नाश भया ५८ बोनगर का स्थिपाकी खुर्य का परमक्तक राजसेन करके राजा था उसने परगुराम आने पाले हैं यह मुसात मालू महोते उनके साने के पहिलो ५० पाचित्रयो कु ने के यस द्धार से रहा और

सूत्रवायाः ॥हेइयेनिहतेरामः क्षणातायमनोद्धे॥गतासीय्वदेशाते नि स्त्रवरणायवे॥१०४॥ एवदस्थिणदेशाते प-स्थिमातेत्रयोत्तरे॥परिकामन्सदादेशसिधदेशमयागमत्॥१५०॥ सिधुवेशात्रराममागतत्त्वतयाविध॥ज्ञात्वाजातास्तदायः वैभयकातास्युद्धहः॥१५६॥क्षेत्रियाणापरस्याननगरस्थानमैवयत्॥ जात्वारामोपिस्वस्यानस्यानप्यानप्यादनात्मक॥१०७॥ च-केसानियनात्रार्थमत्रकापिस्थितोञ्जना ॥ एतस्मिन्त्त्रेकाले स्मियाणाक्षयेतदा॥ १५८ ॥ सूर्यवशोद्भवीराजासीरत्रतपरायणा ॥ रा मस्यचभयात्स्वरिक्सेनोमहीप्ति ॥५९॥स्भितोसीसृप्तरूप्णभायापचकसंयुत ॥रामबाणभयोद्दिसस्वतयामासन्वतिसूत्र १६०॥ रामबाणादहीन्। तानभूतोनमाविष्यित् ॥अतोनाकम्नुसेयरामात्स्वयुक्तातकात्॥ १६९ ॥ यलायनवर् मन्येसरुनीक गर्भ सञ्जा अपीणामायमेस्यान्कृतीय्वनगोत्तरे॥१६२॥अस्पेराथमसयोगेराम्बाणभयनाहः॥यदाकदान्तिः जायेतम् त्याणगमन्त यत् ॥१६२॥तदातत्पतितिषेद्रभंगातुनस्याय ॥एवविषायायनभूपितस्तदानिशीथमध्येन्गराद्विनिर्गतः ॥भाषां यदीत्वानिज्ञा द्वारिणी स्वयंत्रगामायवनवनातरं॥१६४॥वरास्यापिदीपद्मासुङ्गाराक्रवाविती॥ भार्यापत्वकसमुक्तः मभातेत्वात्रमेशुक्री॥ ॥१६५॥मरपित्रेषदद्वाायमारस्वतदधीविदं॥नमस्करास्थितस्ततं सधुसीवीरकाधिप ॥१६६॥ ॥ मनमे विगारकरनाई १५ महोपरस्र

केवाणके भयसं रक्षणकरनेवालानह्यन्डुवानक्षिणा वाल्यकामिने क्याकरना १० १ वास्ते गर्भवती पानी स्त्रियोक् लेके यहाचे भागके ऋषिके भागममे नाय के बासकरना इनमहें ६२वाइएसमाण मयहोनेगानिक दानिन् मेरामाणजानेगा परतुमेरी गर्भगत सतती रेक्केवगी इसमे सहायनकी है ६५ ऐसा विचारकर के ज्ञायनी कुज्यनी न्यियोकु साय होने पाक्ते वनवना तरकु नक्षेमये ६४ यह मुन्दी, यद्मिनी, यद्मा तसुकुमारा, कुबायती ऐसीपाचरिक्षमा सहवनी मान मातरकाळक ६५वधानम पीके आत्रममें आयेवकां ऋषीकुं देखके नमस्कारकरके सिंधुसोवीर्दशकाराजारलसेनकहताहै १६६ हभगवन् त्र्यापसब जानते ही परशुरामहात्रियों कुंमारनेके वामीनगरस्यानमेत्र्यार्येहे १०७ उनके भयसें स्त्रीसहवर्तमान त्र्यापके शरणांगतत्र्याया हुरस्याकरों ६० मेरीपाचो स्त्रियागर्भवती दिखती है ऐसा कहके उदास हो के वेण तब क्रियाकहते है ६० हे रत्नसेन! हुमेरे मनका दुःखळीड के सुरवसे यहां वास करों मेरे त्र्यात्र्यम के बहारगया तो हुरतमरेगा दसमें संशयनहीं है १०० हे राजा कंद मूल फल मस्या करों ऐसा कहके त्र्याने त्रात्रम में यदर जगा दिये ०१ फिरगर्भवती स्त्रीया सहवर्तमानराजा सारस्वत दधी च के प्रतापसे सुरवसें वास किया ०२ नवमास पूर्ण भटे तब पांचो

॥ ॥रत्रू नेउवाच॥ ॥ भगवन् केन विद्तारामः क्ष त्रेयसूदनः ॥ आगतः सिंध्वेद्यानि नगरस्यानकेयदा।। १६०॥तदाहमयकितः सन्पायीकि सह नर्गतः ॥रक्षसं मत्यस् ते चरारणागतवस्ति ॥१६८॥मन्मारीपँचके विश्वसर के ममना ते बूट् ॥इस्ट्रक्तवे विरते रेव क्रोजानमु परद्र ते ॥१६९॥ ॥त्रर परेवाच॥ ॥राजस्त्वूम्मानस्दुःखं विहायच्हु खंचर॥म्माश्रमा ह्र ह्योते मरिष्य रिनर् शयः॥ १७०॥ भस्यस्वरूपकैष्कदमूलफला देवं ॥ इंदुन्तवा प्रदीर्थानंस्वाक्रमेमध्य मोत्रो ॥ १७१ ॥ द्धं चे ऋपिता ऐनस्र रहेनच्म ही पीतिः॥ स्थितमादाश्यो रमयेसगर्भव ने तो इतः॥७२॥एवँपूर्ण्टरेबालेर क्षिण्यः सुद्धुः भजाः॥ चंद्रास्यायं स्मुद्भूत सून नॉमजर से न्छेः॥७३ ॥पदिन्यांदःसमुद्भतो बिंदुमान्भ वितान्यः॥पद्भयोन्सम्सन्ते देशां लेराजसत्तमः॥१७४॥ सुँकुमार्यासम्सन् ऋंद्रशालेने तिरिकृतः॥कुत्राविसाऋत्नये भरतेत्य केर युत्॥७५॥ इते देनामकरणं कृतवान्सद्य नकः॥तत्स्त्वात्र्यमे पस्थाः न्त्रीखम् षिक्षले देतां ॥ ७६॥ चुक्कर्ते ऋषिवालेन्सा इंतपंचमा ब्युजाम् ॥ एवं जाते इथ्यं चाब्दे कदा दिल्य हुण तिः ॥ ७७ ॥ सुगयां कर्तुमग्र देकाँकी गहनं वनं ॥ तद्यें देव्योगेन यूज्जातं त निबे धता ७० ।। श्रांत सर जा वि मांतराह न वि निर्देश के वह यसूकरं ॥ विचारमा पाश्चमयाच कंकतं विनिर्गते हंचत्ररेः स्वमाश्रमाट् ॥१७९॥॥ हियाकुं पुत्रमरे इंद्रह्रदीकुं जयरे ननामकाषुत्रभया ७३५ दीनीकुं बेदुमान्पद्मा

कुविशाल हुलमारी इं नंद्र शाल ज्वाविती कुं भरत ऐसे हुन भर्टे ७५ नर्षीने उने के नाम करण किये तब वे पांची बालक नर्ष के बालकनके साथ नर्षि छुलसरी खी जी अ करनेलर्ट ७६ऐसी की डाकरते पांचबर सगये एक देनरत्नसेनराजा ७७ दी कारखेलने के वास्ते आश्रमकूं छोड़ के ऋघी रवनमें चलागया-वाहा पारब्ध वोगसे क्याहुवासी हु नो ७८ राजाशिकार करने से श्रमित हुवा दूकर कुं छोड़ कुं घर कु ऋगनेलगा तब मनमें विचार करता है कि मयने यह क्या किया शरही के ऋग ऋम कूं छोड़ छे बाहर ऋगया १०९ ऐसादिवार करते करते परवृश्यमके मन्मुस्त्रभागणा १८ व्यवपाग्रु समापहिले को नगर म्यानमे काईका समिनिक स्थापना समापन ज्ञानर क्रिको फिरने पुनः को सिपुसीवीर देशमे माणे ८१ तव महाकूरपस्तु समझ देखके समाप सभा ८२ न्यपने पत्र प्यापना किये व्योर माणने समा ८३ तव रसुरामने एकवाणात्त्यकु मारासी कव शेदकरके बाहर विकास गया ८४ रत्न से नस्त्रा मृत्यु पाया-उसकु देखके रामदू सरवन मे चले गये ८५ दू सरे सामियों कु मारने के बाद्योग गा तीरकु मये फिरराजाकी पाचित्रीयानीची ८६ सोप्रभोष कहने तिगया है अमही सुमेग पिताक हा गया क्या आत्रम के बाहरगया अनुक बडी देर साई स्थान का समाम

एविवार्यमाणोभीरामस्वप्रगिरहा ॥नगरस्थानकं यस्पिन् द्रांषीसिधुपीरकं॥१००॥नास्थित भित्र कसिवितिकाताविनिर्पषी ॥देशाहेशातरग्न्छन्युनस्त हेशमागमत्॥८१ ॥रामहष्ट्रापरम् रेक्वारेणसमानित ॥सन्महकं बनेनाथराजानासम्बापस ॥८२॥त स्याज्यस्व प्रवादिनर्गत ॥८४॥त स्याज्यस्व प्रवादिनर्गत ॥८४॥त स्याज्यस्व प्रवादिनर्गत ॥८४॥समान्यस्व प्रवाद्यास्य स्थाप्य स्था

त्यादेहमधाकरीत्॥१९२ में आपेनिह च्याकोऋषियोषे उमो कुसायवेषे यनातरमे नायके पिता कुलेम्यादभौजनकावस्वत्वल्लगया च्य ऐसामाकावच न सनदे गोसव राजपुत्र क्रिपिपुमोक्क सायवेषे सरस्वतीके तटफपरवेरवनेकुम्याये - १ सोस्यतन् देखे परतुराजाकाशीधलगानही तय दुन्रवी कोयकेपाछे फिरनेलमे दर्जमें राजाका देह सुतहोपक पडाई सोदेखा ११ तयहाहाकारकरने लगे अपनेत्रात्रममे स्थापके हुनातकत्वाची सबीने स्वण फरते पाची स्थिमा अपियालक पहस्य ११ जाहा फ्जाका देह सुतहोषेषकाया। याहास्त्राये स्थिमाविद्यापकरने लगिया १२ ऋषीने राजाके कठमेसे बाण निकानके विताक कपरदेव कुल्यापन पिया १९३ तवपाची स्त्रियोने को इसे त्यागनहोवे ऐसी ससार मायांकु त्यागकरके अपनेषुत्र सारस्वत दधी चक्क सामत करके ९४ सरस्वती के जल में रमानकरके सर्वाने पतिकी निनामें पवेदाकिया अंदरजायके बें विया और पतिलोक में गईया १५ फिर ऋषीने छुत्रों के हातसे सबी की उत्तरिक्षया करवाय के महाहु . रवी हे यके छुनः अपने आय-ममें स्त्रायदे १६ विचारकरने लगेकी इसवालकों के माता पिता नहीं हैं और राज्यादिक नहीं हैं वास्ते इनोका रसणकरना अवस्य हैं १७ ऐसा बिचार करके राज छुत्रों कुं क हमें लगेकि मेरेकु तुम माता पिता जानके की डाकरों सरवसे रहें १० फिरवी जयसे नादिक पाची पुत्र के दसूल फल महाण कर के आनदसे ऋषी के आत्र्यम में निवास करते

1,11,

तदाराज्ञः स्त्रियः सर्वास्त्यक्वामायां सुदुस्यजां ॥ आरे प्ययुत्रं नृ िवर्यस्यचां के नितामयारो प्य दिव्रसाह नि ॥९४॥स्मात्व स् रस्ति ते रे पंचतास्त्राक्षलोचनाः ॥ रुरु हुस्त स्थितायां ने पतिल कसमायदुः ॥ ९५॥ सांपरायं तदाक्रमक्षत्वा ते पवनां तरात् ॥ आगताः स्त्रास्त्रमे सुरेदुः खेनमहतावृताः ॥९६॥ गाता पतृ वह नास्त्र हतराज्यावनां तरे ॥अती हे सूं विस्त्रास्त्रस् ॥९७॥इत्यं देचार्यायचराज्युत्रानुवाच्याक्यं शरपे दुत्रवत्यतः॥मामेयमाता पतरे देचार्यत् दहर्तुकाम ऋस्रदेन तस्रता॥९८॥ तन्तर्राजयसेनाद्याःपंचरुत्रास्तृदात्र्यमे॥विहर्रातस्रवेनवपक्षमूलफला दीनः॥९९॥ एत स्मेन्नेतरेक लेभागैनःक्ष त्रयांतकः॥अ गते ३ थद ६ चेचद्रष्ट्रतस्या अमेरुनः ॥२००॥द्री चिः पूजयामार रामंस्या अममागर्त् ॥ उवाच क्रक्ष्य्यावाच । करमादन त्व् गमः ॥२०१ ॥ ॥ रामउवाचा। ॥ भगवन् सार्याय ब्चर्ममहीतलं ॥ एववद तरामे हु दशास्ते नृपतेः सुता ॥२०२ ॥ कस्येमे हुन कारतात्सत्यंबू हिममात्रतः ॥रामस्यवचनात्युर्वेद्धे निर्वाक्यमब्रह्तेत् ॥ ३ ॥स्टंबर्कि प्रेरामब्रहेष्ट्वाः परतपा एवं ब्रह्म पवनः इतारामोवचने मुंबर्टि ॥ ४॥बाह्मण्सर्मे दुनानसं तेतवमं देरे।।बाह्मणानां परंक्षरं कि नंस्त्रक्तस्यच॥५। इमेडुनाः ह त्रियाणांसं त्लेत्रीवगे पिताः॥ मार रिष्टेन्संदेहीपश्रतस्तवभ्रस्तरः॥ ६॥ ॥

भर्द १९ पीछे घोडेक कालमें परसुराम सारस्वत द धीच म्हीकू देखने के वास्ते उनके आश्रम में श्राय २०० उने कु देखके दधी विनेरामकी पूजाकरके कह्या कि श्रापका श्रामन काहे के वास्ते हुवा-२०१ तब परस्रा म कहते हैं हे ऋषी सत्रियों का नाश करने के वास्ते फिरता हू इतने में शे जाज प्रश्नों कुं देखके कह्या २ यह पुत्र किसके हैं सो सत्य मेरे साम्ते कहो तब ऋषी कहते हैं के ३ हैराम। मैं सबक हता हुं ऋषि उन हैं ४ तब पर हुरामने कह्या श्राह्मण के पुत्र हमेरे मिदरमेन इंहे श्राह्मण का श्रीर सित्रियका स्तप हुवा रह ता है-५ यह सित्रिय इनेहे ह मनेखसररवहेवानी तुमेरेसामी माळण सरहनहाहै ऐसापरणुगमकाक्रमबनसुनत मगीनकता है यम महजाहाण पुनहें में सरसम्य कहता हू अवद अगमास्य उपनिपद्गायमीद्वीसे परिसाकरों व तबरामोकहा अच्छीवात है माध्यान्ह संध्या करक माताहु गांखे परिसाकर नाहु ९ ऐसा कहक सरस्वती के तटकमर सध्या करने कुंगये १० अब सध्याकरकेनवत्य आते हैं इतने में बपीच भरपीने उन्हें के कमें अपना प्रज्ञोपनी तपहना आ११ और उने के मसकक अपन हात रखके कहा। है सन्युन ही। मेराकरनसुनी १२ तुन परतुग्रमति है सामने निभय हो के मेदपटण करों ता नुमकु उनसे मृत्यु होने का नहि १३ तुमेरे मुखसे बेद अवण हर के पी छै क्या करें में मोजान

द्धंरामवनः क्र्रश्रृतालक्षित्स्य ॥उषाचवननरामसन्यसत्यविभजाः॥ ०॥परीक्षत्वसूगुभेष्ठगायत्यविदक्षपगाधावि सागोपित्पविद्यांतिः सार्य्येत्वविद्यांतिः सार्य्येत्वविद्यांतिः सार्य्येत्वविद्यांतिः सार्य्येत्वविद्यांतिः सार्य्येत्वविद्यांतिः सार्य्येत्वविद्यांतिः सार्य्येत्वविद्यांतिः सार्य्येत्वविद्यांतिः सार्य्येत्वविद्यांतिः ॥ अत्यान्वविद्यांतिः ॥ अत्यान्वविद्यां ॥ अत्याविद्यां ॥ अत्यान्वविद्यां ॥ अत्याविद्यां ॥ अत्यान्वविद्यां ॥ अत्याविद्यां ॥ अत्याव

ना नहीं ऐसा दथी विमोत्तर है इतने में परयु सम्प्राये १४ भोजनकरे बाद यु नो कु कहने लगे हुम जो का मियपुत्र होती तुम कु माठगा सश्चम हिंदि १५ भीर जो कभी बाह्य प्रमुख होती वेदका उचार करो तब नयसन आदि पत्यो पुनम १६० वेद ब्यम सार्थ सम पठन कर गर्थे वेदपारायण भरो वर कियासी सब परी सालेक १७ पर यु सम कहेत है इंदपी च। यह बाह्य गर्दे निक्ने कर के परतु सदे ह कारफ है १० वास्ते ए कपाम में सुमने इनके साथ भोजन कियान मेरासस्य बुरहो नेपार २०६ नवम्नीने तयाम् श्राह्मणके वान्ते भीजन करता हु ऐसा कहके एक केठीका पत्ता मंगायकं २९ अंगुष्ठ से पात्रमे ब्राह्मण सिवयकी मर्पादा रूपी ध्वतर रेखा करके वोष्ठित्रों के साथ भोजन किया २२ वी अत्यत आस्वर्य देखके परबु राम कहते है २३ हे भगवन्त्रमंप सबस्य मयने जाना विनोका ब्राह्मण कुलवार्त्त सबस्य चढी प्रत्र काम प्राहे से कहा २४ नाम मालुम पढ़े बाद जिष्य रूपमें मरेपास रखके रहस्य युक्त धनुर्दे पठन कराबुंगा २५ ऐसा परश्रामका वचन सन् के दथीन्य कहते है हे राम। यह बढ़ा जयगम नामक बाठक है सो आपके शिष्य लाके योग्यहे २६ उस कुछके जाव और ईसी इच्छा होवे वेसा करो ऐसा अर्पीका वचन सनके २७ परबु राम

एत्रामवरः श्रुताशरणागतवृत्तालः॥ सारस्वतदधः चिश्र्वतंत्र्षेत्यवदस्यः॥ २२०॥ भगदन् ब्राह्मणार्थेन् भ्रूजाजिस हतं चरैः॥ एतावदुन्तवावचनं आर् पकदलीदलं ॥ २१ ॥ अंग्रुष्ठेनां तरे रेखां कलाद विधिका रेणे ॥ अंतरानं गृहीलाच अंतरेणच तैः सह।। २२ ॥ अतरांततरतसे असाळ्मादन् हाऋिः।।आअवर्धपरमंदक्षारामीरचनम्बर्धत्।। २२ ॥ ॥रामउबाच ॥ ॥भगवन्-न्नोतसर्व र्वाह्मणानां करुखारु ॥ जिनामज्ये घट्टरस्य बद् हे ष्यु जजासून ॥२४ ॥नामिन्नातेमयापश्च त्यीकारंखाट संप वं॥स रहेर्स्य ६ इटेदं दे थे ६ छे ने संशय ।। २५ ॥ एत इच् ने माकण्टे में बॉच ऋषे ईग्ट । ॥ अटे छे यंजयरामारळः वि छे एकरणे सु २ - । २६॥ तंग्रहीताहुगच्छत्य देच्छिसित्याकुरु ॥एत्रामेणत् इ ब्यमाञ्परेसहस्रो हितः॥२७ ॥गृहीताजयश्मोणागृडब्ये दुनराप्तत्। इत्यार तेथे भूर राजए त्रे राजन्य एके जयसे नके राते ॥ ३० ॥ वो का कुला स्टेच्ट्रे एकंट दा स्थित सावादे अस् कस कि वासे ॥ उद्देस क्रिके पे णिगंडच्याविभू युद्ध ॥ स्वाधीष्यजयशर्माणं पर सन्उरु विस्या॥ २९ ॥ एवं द द्वार्गाणे सुसूपात् कृतार दा ॥ तदात्वसी प्र-स्नात्माज्याचनुप्नदेने॥२०॥ ॥राम्ज्याच॥ ॥जयसेन्भवान्सत्यं शिष्याणांपूरमोन्रन॥अतस्त्वाम्पदेस्यामिअस्त्रं नियामह मते॥ ३९ ॥स्मान् कुरुमहाभागगंडक्यां शुन्द्रभावनः ॥ एवं राम्यचे सुत्व स्मात्वासे भक्तिकारणात्॥ ३२॥ ॥ वीजयज्ञामीकु लेके गंडकी

नदीउपर्जाते भरे जयर ने जगरे पी छे चारी माई शांक व्यास हे यद रहे २० अब प्रहरामने जिप्यदी प्रीक्षा करने के वास्ते वे गंड की ऊपर के हिक बरस ब बास कि या २९ में बारा ने पाया प्रीक्षा करने के वास्ते वे गंड की ऊपर के हिक बरस ब बास कि या २९ में बारा ने पाया प्रीक्षा करने के वास्ते वे गंड की ऊपर के हिक बरस ब बास कि या २९ में बारा ने पाया प्रीक्ष में बारा के रेकु मय अस्त्र विद्याका उपवेदा करता हु २१ सुन्ह अंतः करणसे गड को नदी में स्नानकर ऐसारामका बचन मुन के भक्ति स्नानकर दे ३२

वामी दर्भ हातमे लेके रामके पास अध्यके रवडारया तब यम कहते हैं है जयशम्मी तेरी संवासे गय मसन्त हुवाहु २३ और सब बंद वो पहिले वधीनिके आध्यमें बाह अवन्याने तुनने पाठ किये हैं अब जो यहा धर्वेंट है सो मरे शक्तिसे यहण कर ३४ कारण क्षी के दोनों कर्या है अपराधी कु शाप देके देव देवे अगर वाणसे शिक्षा करे आगे-वारोवेंक और पीर्छ जिनके पतुवाण पेसे बाह्मण मतापा है ३५ वास्ते तेर के धनुविचा तह तहु एमा कहते विधा दिया नयशमिन रामकी आजासे सब विधा महण करी १३६ वरे पराक्रमी वाण भी दक पीर अपश्मा कुरे के प्रभास सेलमें आये ३७ सरस्तती नहीं के नवक पर बैंव मध्यान्ह का सक सूर्य किरणमा ताप से पी बीत अपे सब

तरहु यह जप हो रत्या है सोशास होनेगा ३ ॰ धनुष्प वाणकरक सज्जहांक बैठम छ निद्या भगकरामन ४ ॰ बाकोई मेरी निद्या भगकरेगा जो ह मेरे हात में भरजापायेगा ऐसारा मकाबचन सुनने तथा स्तु कहके ४१ बचन स्वीकार किया सरस्वती के सी तल नटक्रमरजायके अपन धनुष्य वाण शिष्युंक देखे उत्सगके उसर मस्तक रखके निष्टा बदा साथे ४२ परशुष्यमकु जब बही तिनिश्राशाहीत्व अयसेनमनमं विचारकरने समाकि धनुषियाकी परिस्ता करना ऐसा मनमे काषा होने हान मिष्य बल बान् है उसके किये ४४

इद्राद्ये भ्रयोहिमाष्टिं नामाप्ट दुरस्या॥देविभित्तत्रचागस्य हुनां तजयशार्षणः॥६४६॥ इंद्रायकथयामास चे सत्या रं त पूर्व । नार दानस्य मायं हे ह्लादेवान् वचावर्षतः॥४०॥ ॥ इंद्र्र्यवा ॥ ॥ अत्रवंशसम्द्र्रतो अप्रवेषयागे पितः॥ परह राम रूप्या मन्य तेतृण व- ज्ञान्॥४०॥ ४०॥ ४० ॥ उत्तर्भित्वे । एव वचार्य मन सि कि कर्तव्यं स्त्रणां तरे॥ ४९॥ ७० रू रास्त्र घहा ने स्या कि द्रा वंग्रह भागीते ॥ स्रि । स्र । । स्र । स

लेके पृथ्दीर्न प्रवेशकरके परगु गम जैसे जारे वेसा ५३ जयर नके उत्संगळं बड़े विषसे इंश किया तब जयसे नक्छं दु- रवते बेहे त कियापरंतु धेर्य रखके चेचल निहास मान प्रवाती गुरुकी निहास महोदेगी ५४ ऐसा जानके श्रास्त्राक्त का याग करके रह्या ५५ समरने जयर नका उत्संगकुंदेश करके रुधिरकी धाराचल रही है पीछे थोडाक रामके कर्ण कु विडंश किया ५६ उसकर्ण पीडासे राम निहा छोड़ के ऊठे इंद रखने में जायक रवडा रह्या २५७ और कहने लगा कि गुरु जागृत हुं देश अच्छा हुवा अब शाप होटेगा २५०

रामोऽ फ्लियबार्माणस्वाचलितवचः ॥ अरामख्वाच ॥ ॥केनमेकर्णपीडाचनिद्रात्माग्यकेनच ॥ ५९ ॥स्वस्त इदमो विभनोचेखा पदवामितं ॥इतिरामवन् श्वलाजपशर्माद्विजाकृति ॥६ ॥धवानवन्त्रत्यरामायामिततेजसे॥ ॥ जयसेन्छवान्॥ ॥ स्वामिनिद्रा 'स्तानेत्रमपात्रिकतः कत् ॥६१ ॥अस्मिरियामयात्मकालोकलोका इलेपरा॥ तदाममोत्सगतलद्दः कस्विद्धिपापिना ॥ २६२ ॥ तेने वास्फोरिवोस्नेगेगतचरुपिरवद्गे॥मगोसागापिनाकपीपीडाजातातवयभो ॥ ६६॥ वेनस्यात्याजिताच निद्रामात्व । समाक्करु ॥ इति तस्पवन भूता विलोक्यरुपिरंबद्भ ॥ ६४ ॥ धेर्षे तस्यून्त्जाता नाम् विभो भियन्यते ॥ यया विभस्यरुपिर नत्या क्रियन्यन्य ॥६५ ॥ विमस्यरुपिरशीतसृष्णसम्बद्धस्यन॥रक्तरकासरधैर्यकोविमोधूर्पनान्धनेत्॥ ६६ ॥इत्यविचार्यकन्दात्वामोनस्य ज्यसेनकः॥ ॥ रामुख्यान् ॥ ॥कसनदाभियवायाव्तिदाभगसन्यास्तः ॥ ५७॥ धैयैणमहतात्वहित्यश्रेनी वानु प्रयुज्यसे ॥ ममानाम्यचोद्धच्य कृत क्मेमहत्तर ॥ ६८ ॥ बद्सलातु विप्रोबास्पियोवाक्यबद ॥ एतद्रामबन्य श्वलासंबारोजात्वेपंयु ॥ ६९ ॥ उबान्यम्भारणा संबीत्व वे ालिभार्गव ॥ मारणेतारणेदस्रात्नादधीनोस्म्यहमुने ॥ १७० ॥ ब्राह्मणत्वदधीचे स्वस्तियो विषयात्तव ॥ ब्रह्मसत्रोसम्यहजातोयये

च्छसि तयाक्षरः॥ २७१ ॥ ॥ नहीं है १५ बाह्मण्या रिएसीतल रहताहै शिवियकारण रहताहै वास्ते एकतो इसकारियरणाद्सरा धेर्यनस्ते वह आह्मणनहोने ६६ऐसा जानके रामणहताहै अरेत्कोनसमिवसुभहे मेरानिहा अग्रिका६० धेर्यतेरावडाहै-और शाह्मणवानिकाई मेरीआहा उद्धेपन अभिवहामहरूर्म किया ६० बास्ते द्वाहमणहे सो सत्योल ऐसारामकावनन सुनते केपायमानहोके ६६ कहने लगा है राम। तुमसकतानते हो तुमेरे बारणभाषाह तुम मारे विभावती के विभावती

ातिय वालक है ७२ जीकभी इसकु मारताहुँ तो वेदशास्त्र अध्ययन कियाहै बाह्मन हुवा मारनेसे असहसाहोचेनी निश्वातार्देसी होवे मेरेसे इसकु अस्त्रविज्ञा मातभइ है सो मरेगाक्या मरनेकान ही ७४वा स्तेविधानिष्म छ हो ऐसा ज हि निमित्तरो युत्तरह्या और महासमृत्यु के भयके छिये बाह्मण भया ७५ जो अब तेरेकु मारता हुं तो मेरा दास है ोनिफल होवेगी ७६ झीर बहा सात्रिय नामसे जगतमे फिरो ऐसा रामका शाप सुनके जयसेनने २७७ सारांग ज्ञातोरं सात्रिरः इत्रे मार्ये हे स्तंय दे॥ २७२॥ त हिंचेना पेनेदात्राष्ट्रधीता बाह्मणे भरेत् १३॥कर्तव्यंचे भय्त्र भृते ह्ये दे वयुज्यता॥मन्ः प्राप्तास्त्र ववरं मृद्ं क्षेप्राप्यते हुना॥ ७४॥ ।।रामेवान्।।।उ तोज्ञा तिर्धेनैरमृद्भीतो देजेक्षवर् ॥७५॥मारयेत हिवासक्ते शुपु लंदा। ताक्य तेती। ७६॥ ब्रह्सित्रियनाम्बाहि वचरस्वयथोस्तरवं ॥ इतिरामस्यतच्छापे हत्वाच्ज एमासदुः स्तिः ॥ तवसेवाफलंराम क्रेमादु स्टत्रं भूटेत् ॥ ७८ ॥ ममास्त्र विद्यानाशेच्देह त्वंजाहिमाम है॥ २७९ ॥ ॥ रामउवाच ॥ ॥ मार्भेषोर्भूप्सहसाक्यंधिनमच्छापरूपं ध्फ ष्ट्रिकातामाश्च त्ररिषंवधीचे ॥२८०॥ सार्स्यतात् मास्वेदी सिचलमतः माहः शस्त्रविद्याः स्वांवस्यते मूल मत्रं॥ ८१ ॥ इतु स्वाचगतेरामेजयसेन थगडकी ॥ महुकामे स्वगात्तर गे च्छसार् स्वतं प्रति॥ सत्मनोरथे विद्यांमुपदेस्य तिनि श्चितम्॥ ८३ ॥ तेनमंत्रमभावेण ब

हुनासहितः पर ॥ २८४॥ ॥ नमस्कार करके प्रार्थनाकरने लगा हेराम तुमेरी सेवाका फलक्या दुःख्

त्याग करुंगा सत्रियों छ अस्त्र वेना जीनाव्यर्थ है वास्ते मरेकु भी भारी ७९ नवराम कहते है है राजन्तुभयाभीतही गच ८० इनसे तेरेक् वेदिवधां भासभईहैं और मेरेसे गस्त्रविधां भासभइवास्ते ठोकमें ब्रह्मस्त्रजातीकाम् ठ द्भयाहे और द र्वत के फपरचले गर भी रजयसेन वेह साग करने के बास्ते गंडकी नदी ऊपर आयातव गीतम नसी कहते हैं है - इन स्प्रेहे नु

ऐसाफ्डके जयसन्फार्ति भरके गीवमक्ति दुधीन कपुषिकेपाम ऋषि २८५ तब गै तमसहीत जयसेन्छ देश के दुधीन्य ट्रच्छ ने है देज्यसेन्छ अनुकु शरू वोहि बोहोत् विनगपैबाद ऋजि तरेकु देखें वर्त्तु उदासकाय्से विखनाई सो मरेकु कहो वर्ण वबज्यसेनने पर्युत्तमका जायामयायो सब बुत्ता त्येणीन किया इतने मेचारी भाइ श्लाये ८८ नारो भाइत्राव सब अधिवेरवर्ते हैं उनक्रमाम्ने सारस्वत दथी चकु मधुरतासे जयसेन कहता है ८९ हे ऋषि। जिसक भाइबद्बा कि करत ही वे उस का जीना ध्यर्थ है राम एतावदुच्चाक्चन ग्रहीलात करेण्च॥ गीतमस्तुवधीनिचमाप्तवान ऋषिसस्वि॥ २८५॥ सगैतिम नृपव स्वाद्धि चिवीक्यम्ब्रवी-त् ॥ कश्चित्तेनाम्सुस्वस्ति चिरादषोढस्प्रिन् क्ष ॥ ८६॥ मुरवकात्मात्वेवा नदुर्मना चुवल दूयसे ॥ ८७॥ ऋतद्धी चेवीचन्सराजादु स्वेन युक्तीवचनचसादरे। अवाचशापभूगुवशक्तेतोर्वृनातरेयुत्कतं कमिगह्य।। ८८॥ एतस्मिन्न तरेकाले बधव स्मृपागताः। ऋषीणापश्यतात अभीवानुमधुरवर्च । एक्य तान्नातुँणाचापिदधीविष्कपिसत्तुम ॥ ८९॥ ॥ जयसेवउवान्॥ ॥ किन्तीवितेस्। वयाणावधूनापरिक्रोनिता ॥ भार्गवात्मासविचोइतस्माच्छापमवास्वान् ॥ २९०॥ अतीब्रह्मसुतातीरेमाणात्त्यस्यामिनिश्चित ॥ इतितद्वचनस्रवीद्धीचिस्तस् वानह् ॥ ११ ॥ ऋणुत्वम्मग्राक्यहिमाकाष्ट्रिसोहसचतत् ॥ पुरोहित स्विकि विक्किर चन्पनदन ॥ १० ॥ प्रेरोहिते कर्वेपेत्राज्लप्सिद्धिर्भे विष्यति॥विनापुरीहितेनापिमत्रासिदिर्नवीमवन्॥ ९३॥पुरीहिते क्यमाच्यो वस्ताभूतम्विष्ययो ॥ शापानुग्रहकारश्चसपुरीहितंड च्यते॥९४॥अत्रुक्त्वत्याराजन्युरोकितमुपावजः॥तदुक्तवचनश्चत्वाराजोशचतवाभरिषः॥९५॥एतत्तवैवसंक्लतस्मात्वमेयुरुर्पाव॥ लियातच्चननीपालित पोषित रेल्या॥९६ ॥तयाचाध्यापितावदा पीराहित्यकुरुखह ॥ ॥वधीचिरुवाच ॥ ॥पीरोहित्यक्तियस्यतथा कर्तुनशक्यते॥१७॥॥ से शस्त्रविधामिति फिर्डनोकाद्वाशाम्बुवाश वास्त्रे सरस्वती नदी किनारेनिस्वेकस्के माणसायकरताहु ऐसावचन सुनतेद्यीत्वक हत् है ११ हे ज्यसेनारेसासाहस्कर्ममतकरे मराक्चन्त्रवणकर भीर एकपुराहित्कर १ पुरोद्वित करनेसेजपसिद्धिहोवेगी युन्दिनामनसिद्धिहोतीनही है १२ पुरोदि त्रकेसाचिद्रयेजीसूत्रमविष्यवर्तमान्कालकुं जाने और शापटनकु अमुमह करनेकुं जो समर्थणसकु पुराहित कई ना १८ वास्ते हराजा। अवनलवीत् पुरीहितकरनवरा जासारस्वतवधीच्कुकहते हैं २१५ हे फवि। यह पीगेहिसआपडी करो मरे यह हो मातापिता तुमहोपालनपोषण तुमनेह मेरा किया है १६ वेर माने वजा वास्ति की से स्वास

क्याको देहत्यारा करताहि सारस्यत वर्षाच के पासजाबी तेरे मनकी ब्ला पूर्ण करते उनके मन्न महामसे तेरे ब्यु सह बतेमानुजुरातमे ब्रह्मस्थि पदवीकु पायेगाद्र

रतु वेरी जो ऐसीडच्छा है तो मेराएक वचनसुन २९८ मेरे वंशका कोड़ भी ब्राह्मण खोर तेरे वंशका कोड़ वी क्षत्रिय वो परस्पर गुरु युजमानके भावसे रहेना ९९ खोरे जो कभी भेद रचेगे नो नकेवासी होचेगे तेरे प्राके नो ब्रह्मसात्र ख्रीर मेरे व्याके नो सारस्वत द्धीच ३०० यह दोनो एक मिलकूर रहेना मेरे वचन कु उछ्छन करना नहि सारस्वत ब्रा राणके पारपूना मे जो तसर रहें गे तो मय पे रो हित्य करता हुं ऐसा ऋषिकावचन रकनते बडे हर्षसे जयसेन राजा कहता है हे ऋषि मरे वंशका के इबीराजा तुमेरे वंशस्य पुरा न्ज्नानस्ययत्मापत्सापंहुइरोहितं ॥ यदिल् देच्छास्याइहेत्हीं कंशृष्टुमह्च ॥९८॥ महंश्रुं हेजक श्रेक्ट हंशः क्षत्रनंदनः नेन्यान्यंतुगुरुत्वेपितयेवय्जमानके ॥९९॥कुर्वतिचे दिवाभेदंतेचे निरय्गामिन ॥ तह्राष्ट्रह्मसेने वा तयासारस्वतोत्ह्वकः॥३००॥ र्कीक्लचारिष्यत्मिद्दाक्यंनान्ययाभवेत् ॥सारस्वतस्यवंशस्यपद्भूजाप्रेयद्वि॥३०१॥भूविष्यूतिचराजेद्रकरिष्या मिसुन्द्रत्॥ एत इंद्यंतर क्पीहर्षेणोयाचतत्त्प ॥२ ॥त्येद्वास्यमन्यधाकर्षकित्रिकाचिन् ॥ कर्मक्यिविहायत्वेत्स्यवेद्वास्योभवेत् ॥३॥ य्नुकः त्वर्गत्रेयातु पृथि वी जलक्ष्मना ॥शेषो पिरज्जु नाया तुमहाक्यनान्यथाभवत् ॥ ४ ॥अतस्वममवशेचभार्गदेशस्त्रचेजः॥ चेभे दरां करदेना युक्त रुषह स्माहितः ॥ ३०५॥ ॥ दंधी चिरुवाच् ॥ शबद्दाक्य सत्येन सुद्दानिने हमद्दाक्य सत्यन सुद्दीन्तत्त्वं॥ अद्यानार साहिताहुँ वात्रुं रोहितोहं तबसंप्रयुन्न ॥६॥त्वंराजन् हिंगुलादी सांगृही बनुप्नदेन ॥महामंत्रीवनाराजन् हिंगुलेदर्शनं न्दे । ्र्भू द्वीनेप्रचलेन्उपोधाराधनंकुरु ॥इत्युत्काताद्वीविद्याद्वानिशदेशस्त्रचतान् ॥ ८ ॥ हिरुतादीक्वासेत्र ॥ ॐ हि एसेपन्हिंगुसे अन्तर्दिणित रुशिक्तिमनं . शिवे श्रीहिंगुल येनमः स्वाहा॥ एवंतान्दे स्तोन्सर्वान् यही न्वात्रस्पित्तमः ॥ ३०९॥ । तित्कु सागकरके जोक्य करेंगे ने उन्हेंक बेशक्य दोवेगा ३एक वरवन नहीं देखियान होवेणनाल स्वर्गमें आयक वैठे पृथ्वी जलक्य हो जावू गोष स्त्र नेतु मिरखा हो 'ति परंतु मेरावच्नकतो निया होनेसा रही ४ सामे यह अस्यस्त्र जो भागोव बन हे उसमे न्यापसुग्वमे पागे हित्यकतो ५ सारस्वत वर्धाच कहते है हे गमा नेरे मत्यवचन से भर पान्तिहान भीरमेरेवाच्यन्यते तुप्रो हुनावास्य न्यानरे जने कत्यांन पर्यत्ने गतुराहिन् भया ध्यावत हिंतुला देवी की दीला ले बोहमहामेत्र विना देवी के दर्शन होने के भारे अपने रशोषण करके मंत्रानाधनको हेमां कहते देनी प्रक्रणनक अधिकेन्सित हुने ऋत्न मृतिणीननु शनिमन शिवेसी हिसुलायेनम स्याहा यहमंत्र विधा

करोनब मारस्वत दधीच ऋषिकहते हे हेनुप। क्षत्रियका पीरोहित्य करना उत्तम नहीं हे- ९७ कायसीक यजमानका जोपाप बोह पुरोहित कु

का उपदेशपाची पुनकु किया पीछी उन सबोकु हो के अरिय २०१ कि गुसासी भेगे बाये सबत प्रस्मिक हो ने अगे अग बारा बरस हु है तब देवी मत्यस हो के कहने स्था भेगे हैं कि मने पित परवान मने नब से विकास है है देवी परव राम के शापसे मेरी शत्यिका नख होगई है १२ बास्ते तुम स्वपा करके शत्या रूप है वेचे हि शुसा कहती है है वप परगुरा मका शापनी मिध्या होने का निक तथा पि तेग हिन कहती हु सुन है राजा। तरे बपु सहबर्तमान नम हो पके पविभागासे १४ हान में कर पुष्पकी सुटी वापके भगक्यी मेरे स्थान मे भवश कर है प्रजाकर १५ यह मगस्यान मेरा स्वरूप है जा मेरी पी निमे श्याया उसके पुन जन्म हो ता निक्र १६ इस प्रजा के मना पस वधु सहबर्त मान हमार

जगामित्र्यनासेत्रदेवीदर्शनकाम्यया॥ ऋषिभि सिहतास्तेवैत्युस्तत्रमहत्तय ॥ ३१० ॥ एवस्माराधयताद्वाद्याच्यानितक मान् ॥परित्पालगन्मातामत्यस्त्रपाइहिरुला॥१९॥ ॥श्रीहिरुलोगाच॥ ॥मसन्नाहशुण्यकोवरान्कामपरायणान्॥ ॥जय सेन्ष्याच्या ॥ गुजस्त्रविद्यापिनसमिभागिषस्पचशापतः ॥१२ ॥तस्माद्यक्याकृत्वाद्रास्त्रास्त्राणि मदीयता ॥ ॥देव्युवाच॥ ॥ भागविस्यन्त्रापोहिष्यत्ययासक्यमवेत्॥१३॥तयापिकययियामिहिततव्महीपते॥नमोभवमहीपासमधुपि सहित सु चि ॥१४ ॥मु विबध्यापु त्यक्तुं सरण्येभूगरूपकं ।मिषश्यन्सुपुण्येनमञ्जगेषूजनकुरु ॥१५ ॥ रूद्भगमत्वरूपरामेणपूजित खरा। मधोनिगस् पुरुषीमाद्योनीनगन्छति ॥१६॥ एतसमाद्रपेसाहस्त्रब्धुमि परिवारित ॥राज्यकुरुमहाराजनगरस्थानेज् सु मं॥१०॥इमान्सार्न्वतान्विपान् कृतपरममाज्ञया।। ब्राह्मणस्ययेषाकमययाविद्यात्रियस्यच ॥१८॥ ब्रह्मत्रस्ययद्वम्वायर्वण विधिचर॥त्वहत्रोकुत्रामाना कृताताष्ट्रविकरुपदा ॥१९॥ मखुजान्तारदीचेषहोमवित्रात्रितर्पणी ॥कत्रस्या नियमेकार्छे ममसतो युकारिका ॥ २२०॥ मासेन्सर्यावापिषायसेनघृतेनवा ॥ युक्तपीनधनादीनारु। स्वायस्यहः॥ २२१॥ मनस्यममचैताजन्तृ पिराधर्षणोनहान् ॥चतुर्भुजितिनयनस्मरत्वनृपनदेन॥ ३२२ ॥ वप पर्यत् नगरस्यानकाराज्यकर् असारस्वतं ब्राह्मणोकि द्वनाकर स्ट्रीर माह्मण

मण्यम् नगरस्यानकाराज्यकरः असारस्वतं श्राह्मणाकि युनाकर श्रीर शाह्मण काजोकमें भीर दापिका जो कर्म १०वेसा ब्रह्मक्षिका कर्मभाषवण विधि श्रान्यणकरो तुमारे वद्यो कुछदेवी कुद्दामाता नामकी मय फल देने वाली हु १९ शारदी नय स भमें स्ट्वरसकु मेरी प्रनाकरना होमकरना बाह्मण्योजनकरणना १ मास मदिरा दुध पूत्रस मेरासतीय क्रियातोष्ठनां कु पुन्नची स्थनका लाभादेने वाली होतु गी ३०९ हे सना मेरे मनकी देवता श्रायर्वण मरपीहै भिनेच बहुर्श्वका दुष्यानकर २२९

भीरभेरमभेरिनारियामे जो पुरुष है उसने अपने कत्याणकी इच्छा होवे तो ओकात्र रहनानहि १५ तेरे उपरांत दशराजा हो वेगे येवेदशास्त्र हीन भूमिमे फिरे गे ९४ तब तुमेरे उप जी विकार्थ विश्वकर्माकुं भेजुगी बोद सोके उपजी विकार्थ शस्त्र होवेग १५ उनसे तुमको स्तरव हो हो राजा। ऊठ सबी कुछ के २६ नगर स्थानमे जायके गज्य कर इतनान कहके देशा स्प्रतर्धीन में १२७ फिर सम्पिसह वर्तमान जयसेनादिक सब यथाविधियात्रा करके नगरस्थान में स्प्रायके राज्य करने लगे २० पी छे पाचे भाइये ने विषा है कि या प्रावृद्दिगत्ह्वा अपन्तदेशकी कन्या निनोने बहणिकयी ऐसे बोहोतकाल गयेवाद बलु विस्थानमें मुसलमाने ने बला लागसे २३० नगर स्थानका राज्य छीन लिया

त्ररेवनववरोषुमञ्जन्म देवसे क चित् ॥ विहपेनिवसित्रे धदीन्छेन्छुभमात्मन ॥ २३ ॥अतऊर्धनराजेंद्रराजाने दशामा वेन ॥ ते निरस्त्रा शास्त्रहीनाविन्यते महीत्से ॥ २४ ॥तदाहविश्वकमीणप्रेर्यासुपजीवने ॥एतेषामंत्रशस्त्राण्डपजीवनिकानिन ॥ ३२५ ॥ विद्यतितदालं केनेनुसीरयंभविष्यित्॥उत्तिष्ठतमहाराजभातृ भिःपरिवार्रितः ॥२६॥गेच्छस्वनगरस्थाने राज्यक्रिष्ववंशाज॥ एतान दुक्तवावचनदेरीचांत ईतातदा॥२७॥ते पेसर्देसऋषये यात्रांकत्वायया विधि॥नगरस्थान्मागत्यराज्यचकु-प्रहर्षिता॥२८॥अत परं-विवाहवेचिकुर्स्यचुम्नानरः ॥तद्वरीया परावृद्धिप्राप्ता कालेनभ्रयसाः ॥२९॥षट्पचाडाद्देवाजाना कर्त्याःसंजयहस्यते ॥तत्तीवहिन्छे काले म्लेन्छे वृहिरेजेर्यथा॥ ३३० ॥राज्यहनबले नैवनदानहश्रजानेपा ॥ विद्रुरधादेय स्हेसिएत्रपष्टबाधवाः॥ ३१ ॥ता उता मलेन्छहरे त्राजाशास्रणाहिकायस् ॥नत्र हे चमहामुख्ये ऋतसेनविद्रसी ॥ ३२ ॥देवीमाराघर हो द्वादशाब्दमह नेश ॥परितृष्टाजगद्धात्रीयच नते प्रतिद्वेज ॥ ३३॥ ॥ देख्याच ॥ ॥भोभो क्षात्रियदायादो सूयतापूर्वकारण ॥जयसेनायक यतंतद्व चरतां धूवँ ॥ ३४ ॥ ब्रह्मक वाभवने वैष्ट्रवीजाताममाज्ञया ॥नवास्त्राणिनचा स्त्राणिप्रभवंतिकदान्त ॥ ३३५ ॥रामशापात्परेकाले केंबाहू स्वस्यकारणं ॥इतिती दे वेवाक्यंच झुलादु रहेनचे छितं॥ ३३६॥

तब जयसेन के वंशस्थ

विदूरधादिक जोचे नीह श्रपने स्त्री पुत्रादिको कु तेकं ३१ त्रात्रा पूर्णा देवीके नजीक गये उनसबो में हतसेन विदूरध यह दोनो हरव्यये ३२उनो ने बाराबरस देवीका आराधन किया नब देवी पसन्न होयुके कहनी है ३३ हे सित्रिय प्रत्न हो। पूर्विका कारण कनी जयर नकु मेने जैसा कह्या है वैसा हम त्र्याचरणकरी ३४ हम ब्रह्म सित्र भयेही त्र्य रून गरुत्र तुमकु प्रताप देने के नहि ३३ ५ रामके गापसे वास्ते तुमेरा पराक्रम हमेरे हातहै ती होने क्याकारण है तब वो दोनो बडे दु रवी होयक कहने लगे ३३६

मा फित इमेरी जीविका कैसी बसेगी इम श्राप्तियधर्म छोदनेकेनहि ३३० श्रीर रानमतियह यहाकरवाना वेद परवाना यह बस्स वृत्ति वी कसेके निह तब व्वीन ३८ विश्वकर्मी कु बुतायके क्यांकि यह समिय प्रमाहे इनोकु शस्यविद्यान हिंदी वासे उपजीविका विस्ताव तब विश्व कर्माने वेविका क्यन सनके राजपुत्र करने रुगे ३८ हैं उन श्रोग तुम ध्रुत्यवाण श्रादिकरके सब शास्त्र बाव विश्वकर्मा मा क्यन सुनके उनकी प्रभा करके ४५ ध्रुप्ताण तरवार फरश शक्ति सस्य बोहार्गा जागन यह श्रास्त्र क्ष भीके सामने रखाँवेचे ४० किर विश्वकर्मीने सम्बन्ध बोह सस्यावान्यायन किया भूजा किये श्रीर जो ब्रह्म स्थिमा की ग्यामिका ४३ यह ग्राट शस्त्रों में असर की स्थापन कार की क्या कार की कार की

उन्तु सीपुनर्देशिमसमद्वि क्रथमकत् ॥नवयस्त्रधर्मित्यनामोपाणस्करे॥३३७ ॥क्रथमहापरधर्मयाजनाध्यापनाविक॥नकुन्दः वितर्वाक्यम्भतास्तर्गद्विमा॥३०॥आह्यभिष्यभीणवन्तनेव्ममनीत्॥॥वञ्चान्॥॥इमीस्त्रियदायादीनिरत्नीमात्यसयुनी॥३१॥अनोनयोनीविकोपायस्वित्यमानिर ॥इनिक्रवाक्वोदेव्याविष्यकर्मामर्वास्त्रो॥३४०॥उम्बाद्धनीयतांवत्रोपनुर्याणाविकानिन्य॥वन्त्रात्वन्याक्वनमुत्ताक्वापत्रव्याव्यव्यापत्रव्यापत्यव्यापत्रव्यापत्यव्यापत्यापत्रव्यापत्रव्यापत्रव्यापत्रव्यापत्रव्यापत्रव्यापत्रव्यापत्रव्यापत्

रा गिरीके कमकरना नात्योकान्यापार करना पापाणकं उपर र न बनायके बेचना यह आदि लके सनक जा मरे शास्त्र में जिएम विचाहे अपनीविकाय होतेगी एसा कहते देवीकुं विस्कृत महत्वे हैं यह शामि करि मसर्गसे उसन्तम्या हे सो मुक्जिसिन्ह जाति मया ४० परतु बन्ध सन्न अभि कहें स्यर्गका जो उपवेद विस्कृत शास्त्र असमें जीविका सीर वो वेदसे निस्तिनिस्त स्ववेदोन्ह कर्ष करना ३०० छ पोडा हाथारघयह वाहन करना पूर्वोक्त रास्त्रोरं लक्डेका कामकरना ५१ अध्यम्जीविका वास्ते धान्यका व्यापार करना ५२ घोडा हाथी रथगी कन्या रासि इनका जी वि कार्य सम्मह करना नारकारण निकालके रगना कपडेपर छाणे डालना ५३ धी सेंत स्मादिलेज तेल बिना सबरस जी विकार्य बेचना स्मोर सुन्ने -वादीके छुरी, तरवारा बहुक, ध सुर्वीण, यह बास्त्र पास ररवके नौकरी करना निर्वाहवास्ते ऐसा कहके विश्ववामी स्वर्गमेगये ५५ देवी कहते हैं दे बालक हो। विश्वकर्माने जो उपाय कहे हैं उनकु जो छोडदेगा तो स्मपने कुल अष्ट होवेगा ५६ स्मपने कल्याणके वास्ते यह सारस्वत बाह्मणोकी प्रजाकरना ५७ जेसा विद्रयका वंश वेसा श्रुत सेनका वश ब्रह्म स्वर्गाणके तुमेरे-

अश्वंरथं हासिन ववाहूनं तस्यतद्भेत् ॥ अथवाका श्वास्य स्ट्रैरेते प्रकत्य्य तां ॥ ५१ ॥ जी वनार्थ सहाकार्योधान्य संग्रह एवच ॥ जी वनार्थ हु संगृह्य कर्व्यं वेप जी वने ॥ ५२ ॥ अश्वंरयं गजि हु तथा कर्या चरासिकां ॥ ठा हा सारागोद्भेव कर्म पर हु द्वाप कारका ॥ ३५३ ॥ घृत हु द्वापासंग्र से हेनर हैना वरसा शाधन विषय हु तथा कर्या चरा स्वास्य कर्या वर्षा ॥ वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा ॥ वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा ॥ वर्षा ॥ वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा ॥ वर्षा ॥ वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा ॥ वर्षा ॥ वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा ॥ वर्षा ॥ वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा ॥ वर्षा ॥ वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा ॥ वर्षा ॥ वर्षा ॥ वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा ॥ वर्षा ॥ वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा ॥ वर्षा ॥ वर्षा ॥ वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा ॥ वर्षा वर

सिच्छुरत नगरातर ॥ ३६४ ॥ आगेजो पुत्रादिक होवेर होरे भक्त होवेर और जौहार है सब मेरे ऊपर भावररवके अपने स्थलमे रहो ५९ ऐसा कहके-देवी अतर्धान भई पाछे वो दोन जने ऋषि स्थीर स्त्रीबालक आदिसबोकु लेके अपने नगरमे गये से बरस हरवबासिकया ६९ पीछे प्रीटपुत्रोकु राज्य हु पतकरके स्त्रियो की आज्ञा लेक ६२ हिगुरा से अमे जायके कार्परी कार्यके कार्परी कार्यके अपने स्थानमें रहे ३६४

ण्नस्मिन्नेवकारं तुववरस्पवलम्हन्॥ आगतनगरगेन्हु मितिज्ञालाविनिर्मता ॥६०॥गजपुना सपुनाश्चसमार्यास्यमातका ॥पत्र पत्रसम्बन्धाततेन देशचतेगता ॥६६॥ तद्द्राचारते सर्वेजातास्ते मुकुमारका ॥ अगवगादिकेदगेस्थितास्ते नुपुरापरा ॥६०॥किं निज्ञत्वपराकृषि जिल्लिकारान्वपापरे ॥धान्यविकयकारस्यरसिक्यकारका ॥६८॥सुविन सतुतेपुना सुम्बिन सनुतेशिवा ॥ बह्मस्त्रान्वपेजातामहाद्र्षपरायणाः॥६०॥ण्यद्द समुपारव्यातद्वस्यक्षत्रपानक॥ नपासारस्वगवरा श्रुत्वाकुरुकर परः॥३७ ॥ अपुत्रोरुभतेपुत्रनिर्धनोधनवान्यर ॥ सर्पाकामानवामातित्रस्यक्षिमहीयते॥७१ ॥ अपान्य वस्तक्षित्रपत्तिनिष्का हिन् प्या तथान्य बस्तक्षत्रस्यकारियाद्वयतेस्तुना ॥सापिनोस्यानिविक्यविक्यविक्यविक्यवि ॥३०१ ॥ तद्वयतिप्रमाणेतुवाक्यानिस्तिक्या म्यह ॥श्रीमद्वागवतोक्तानिसारस्रतानिचादगत्॥७३ ॥वैवन्वतमना पुत्रोपनमोध्यदर्यि ॥धृष्टान्धार्थमस्त्रमञ्ज्ञस्यम्यनिका ॥७४॥भन्यद्वा मनीविक्यत् पोन्नोनामागडतिवस्तुत ॥नामागादंवगयोः सुद्विद्यप्यरपीतर ॥३००॥

कु भरण करेणको अञ्चक् उस निर्भन कुंपन और धर कामना पास हारेणी बह्माति होरेणी २०१ अर आर बह्म हापिकी सानि मेर कहते हे पहिते जो नपसे नरानाकिन मिससे बह्म सामि पिकी उससि कहि वे समिप भाति एकरसप्तयसे प्रसिद्ध है निष्म कहते उसी रीतिसे अन्या कहते दूसरी विवह्म सानि हाति इस काउमे जो नासिक पुना कादि समराप्ति समराप्ति समराप्ति के वोक्षाति उसनिक मर्प बाह्मणोंने जानना ०० उसकातियों के ममण सून भीम क्रापन ने सरस्त कार स्तानिक किसता हु ७३ वेदस्त महस्य प्रमाण करके भए। उससे पार्टनामकरक समिषकुछ बाह्मणात्र कृपापा ७५ अपकार तर । विवस्त महस्य सम्माण सम्माण नाभाग नाभागका अवगण उसका सम्माण विवस प्रमाण करके भए। उससे पार्टनामकरक समिषकुछ बाह्मणात्र कृपापा ७५ अपकार तर ॥ विवस्त महस्य सम्माण सम्माण नाभागका अवगण उसका सम्माण विवस राज्य के स्वानिक २०५

र्यीतरस्याप्रजम्यभायांचात तर्वे र्यतः ॥ अंगगजनयामासब्द्यवर्चिनिनः सुनान्॥ ७६॥ एते सेने यस्तावेषु नस्वाि रसाः समृताः॥ गर्यः तगणा प्रवगसंत्रोपेना हजातयः॥ ७७॥ अन्यच्च ॥ ययातेः पचपुत्राणायः तिमः पुरुषे इकः॥ तमारम्यसे मकांतं एरुवेषाः पकि तिनः॥ ७८॥ ब्रह्मस्वस्यवे पोक्तोवंशोदेव पेमन्कतः॥ समकं प्राप्यगजानसस्यां प्राप्यतिवै कले ॥ ७९॥ एवपुवांकवंश्यानांस्यान तादात्स्ययोगतः ॥ अचाि पच्यवक्तायं ते ब्रह्मस्त्रियमदनः ॥ ३८०॥ ॥ इतिब्राह्मणोत्यन्तिमार्तेष्ठाध्या

येत्रह्मेस्तियमंदवर्णनमितंदधीचमारस्वतत्राह्मणज्ञातिवर्णननाम प्रकरणाम् २५, पद्यमं ३३३१ छ ह्मणो सिनिमार्नेड प्रथभापामे त्रह्म स्त्रियों कि उपनि सिहत द्वीच मारस्वत त्राह्मणी यित्त वर्णन प्रकरण २५ संपूर्ण ॥ ७, ७ ७ ७ ७ ७

## ऋष नर्भद्रे नर्भ सारस्टत इस पीत्र ते प्रकरणं ३६

अवनर्मराके उत्तरचात् जी सारखत प्राह्मण है उनीकि उसत्ति कहते है भेशायन ऋषि ननमे जय राजाकु कहते है कि एक समयमें वलदेवजी तीर्थ यात्रा करने कु निकले सो जहा नारका सुर देसदेवासीवडासंग्राम हुवा केर चंद्रमाने वहां राजसूययज्ञ किया? वाहा आपके स्नान करके वानसुण्यकरके सारखत सुनिके तीर्थ उपर गय र

अथनर्मदोत्तरवार सारस्त्रत्राह्मणोत्म नि प्रसंगमाह उक्तनमहाभारते गदापर्र णि वैद्यापायनउवाचा। यहे जिवानु हुपरी राजसूरे नभारत।। त स्मिक्त विमहानार्स त्सं प्रामस्तारकामयः॥१॥तत्राष्टु पस्पृष्ट वले दलादान्, निचात्मवान्॥सारस्वतस्यधं मात्माहन्सीर्यजगामह॥२॥ नामा प्रभावाय वरस अनार्षि भर् उसबस्तत भारस्तत मुनीने सब बाह्मणोकु वेद पद्यये और पासन दियं २ अनमेनय राजा प्रख्ते हैं दिशायवरस अनार्षि । तिहं विप भारस्तत भुनीने यद केसे पदायेसी कहो २ वेशपायन कहते हैं हे राजा प्रधी महा तपसी बड़ा युद्धिमान् वितेष्रिय महानारी दभीन नाम करके भरपी विख्यात होता । उसकी तपस्पासे दूंद्र भयाभीत होपक बग्दानसे खाभाषमान करने कु पपस किया पर्तु कर्षि छोत्रित महि भपा ७ किर इसने दभीच अभीकु मोहित करने के शक्त अखुशा अप्यस्त मेत्री । सो अपन्त पत्या तपण करते ये सरस्तीक नटकपर बाहा भाषके सकी रही । तब सुदर अपनरा

तत्रहाद्श्वापिक्यामनावृद्धाहिजोत्तमान्॥ वद्निध्यापयामास्युरासारस्वतासुनि ॥३॥जनमे जयउवाच॥ ॥कयहाद श्वापिक्यामनाशृद्धाहिजोत्तमान्॥वेदानध्यापशानासपुरासारस्वतासुनि ॥४॥ ॥वेश्वापायन्यवाच॥ ॥आसीद्विमहाराजसु निर्धामान्महातपा ॥द्धीचर्तिविस्यातोत्रह्मचारितितिष्ठिय ॥४॥ तस्यातिनपस शकोविमेतिसत्वविभो॥नस्राप्तिय तृश्व फठेवहुविधेरिष॥६॥भठोष्ठनार्पतस्याथपाहिणोताकशासन ॥दिव्यामप्सरसपुण्यादर्शनीयामठवुषा॥ ४॥तस्यत्व पंयतोद्वान् सरस्वयामहासन ॥समीपतामहाराजसोपानिश्वतभामिनी॥४॥तादिव्यवपुणीदश्वातस्यर्पेषाविनात्मन ॥१त स्क नंसरस्वतातस्याजपाहित्तमगा॥९॥कुक्षीचाप्यवभद्द्वशतत्रन पुरुप्पेष्ठ॥साद्धारचत्तगर्पापुत्रहेतोर्महानदी॥१०॥सुपुवेचापिसम् यपुत्रसासरितावर ॥जगामपुष्रमावायतस्यपातिचप्रमा॥१०॥ अस्पिससदितदद्वासानदीमुनिसत्तम॥तत् पोवाचराजेद्रद्वतीपुत्र मस्यव॥१२॥अहार्येतवपुत्राहतद्वन्तपाधारिगोमपा॥द्वात्यसरसरतोयत्कन्तपानद्वुषा॥१२॥तत्कुक्तिणाषेत्रहार्यव्यस्तरस्य हं॥निक्नाशमिदगच्छत्वनेज इतिनिक्षिणात्॥१४॥प्रतिस्द्वाचपुर्त्रस्तमयाक्तमनिदित॥इद्युक्त प्रतिज्ञाहप्रातिचायापपुष्ठशा॥१५॥

पंगमें उसका मक्तक सुंगके निरकाल आलिगन करके १६ सरस्वतीकुं वरदान देते हैं हे देवी तेरे जलसे तर्पण करनेसे विश्वेदेवा पिद्ध गधर्व अप्सराआदिसब वृत्ति पार्ग ऐसा कहरे वो नदी की सुती करते हैं १८ है महा भागे बहासरो वर मेसे तेरा मबाह निकला है १९ वर्ड अर्षी तेरे कु नदीमें श्रेष्ठ जानते हैं और मेरेकु भी वर्षी पिय हैं २० वाने एतेग पुत्र तेरे नामसे जगतमे सारस्वत सुनी ऐसा विख्यात होवेगा २९ और वडा तपस्वी जिसवखत बारा बरसकी अना बृष्टि होवेगी २२ उस बरवत सब बाह्मणोंकु इद पवणकरावेगा - त्योर तू भी सब नदीयों में पुण्यतम होवेगी- २३ ऐसीवह दधीच अर्पीने स्तृती की ये और वरदान दिया तब सरस्वती पुत्र कुलेके चली गई २४ इतन क

स्वस्तनायाजिङ्सम् भेट्रेमणा देजोत्तम ॥परेषज्य निरकालं तदाभ्रतस्त्तम ॥१६॥सरस्वते वरपादात्रीयमाणो महास् निः। विस्देवा सपितरोगेधवाष्मरसाराणा ॥१७॥ तृ तियास्य तेसु भरे तर्पमाणास्तवाभसा॥ इतु सवासतु तु साववचो भे में मह नदी॥१८॥भीत परमृहशात्मायथातच्छ्रणुपार्थव्॥ प्रसृतासिमह भागेसरसोब्ह्णा परा॥ १९॥ जाने त्लांस र च्छेषांस्न य इसित्रवता ॥मम प्रेयकरीचा पस्तते प्रियदर्शने ॥ २०॥ तस्मात्सारखनः हुत्रोमहास्ते वरव पिना त्वेवनाम्ना प्रयितः हु त्रस्तेलेकभावन ॥ २१ ॥सारस्वतद् तिरव्यातोभ विष्यतिमहातपाः ॥एषद्वादरावा विक्यामनावृष्ट्यां द्विजर्षभान् ॥ २२ ॥सारस्वते महाभागे वेदान्ध्याप येष्य ते ॥ इण्याप्यश्र्यस रेक्ट स्वंसदाइण्यतमा हु के : ॥ २३ ॥ भिष्य सिमहाभागेमत्त्रसादात्सरस्वती ॥ एवसासस्तानेन्वरलब्धामहानदी। २४ ॥ एत्रमादायम् दिनाजगामभरतर्षभा। एत स्मेन्नेवकालेत् दिरे धोदेवदान्दी. ॥ २५ ॥ शकः प्रहरणान्वेष ले कार्रीन्वचचारह ॥ नचे पलेभे मग्वान् श्रञ्धा पहरणं तदा ॥ २६ ॥ यद्वेतेषां भवे चीग्यं वधाय विद्व हिषां॥ त्त उट्टे त्स्रान् शक्त में शक्यामहास्राः॥ २७॥ ऋते स्ये भैर्वे धीचस्य नहतं विद्याद्विषः॥ तस्माद्गत्वाव्य षेष्टे छोयाच्यतास् रसत्तमाः॥ २८ ॥ दर्ध चार्ष्य निदेही ते ते वे धिष्यामहे रेपून्॥ सन्तेय निते उस्य नेयत्ना द षे वरस्त्या ॥ २९॥ कालमे देव दैयोका विरो

भारत प्रतिका १५इद्र आयुध धूडनेके वास्ते तीन लोकमें फिरने लगा परंतु देलोकु मारने के वास्ते शस्त्र नहीं मिला २६ तब देवोकु इंद्र कहता है उनोकुं मारने कुं मय समर्थ नहीं हू २० दधीच ऋषीका अस्थि मिले तो काम होवे वास्ते हे देवही तुम ऋषीके पास जायके अस्थि मगो २८ वह अस्थिके शस्त्र से शहकु मा रेगे तब सब देवता ऋषीके पास जायके अस्थिमगे २९

द्यीवने इनोका बबन सुनने कुछ विवार न करते माणत्यागकरके सात्यावय मुक्तीक पाया १ फिर इन्न पढ़ा मसना होक यो अस्यीके नाना प्रकारके वारम बनायों ३१ वन्य बक्त गरा और बढ़े दह ऐसे शत्य करनाये और द्यीव करीक नेजसे इन्न दिन स्था ६२ यह शत्यमे जो बज़ है सो बहा के पुन सुपुक्ता ठनाने बढ़ा नेजनी मनवूत कराया ६३ इत्यमे सब पर्वतका सना बढ़ा मतायी विशास्या उसके तेजसे इन्न दिन इद्याकर ३४ फिर इन्न वह भरायणात्य मन सहित बजसे ९९ वह देत्यांकु मारे किर क हीक दिन एथ बाद ३६ वारावरसका अना इटीका काम पढ़ा उसके सिये अनेक कृषि सुपीकी पीठा के छिप अपासीन होके दवाविहा। भागन लगे उनोकु वेरवक सारस्वत

प्राणत्यागक्षुरु श्रेष-बहारियाविचारयन् ॥ सत्योकानस्यान्मामोदेवर्षिप्रवरस्तदा॥३•॥ तस्यास्थिभिरपोशकः सप्रहष्टमनास्तदा ॥कारयामासिव्यानिनानामहरणानिच ३१ वज्ञाणिचकाणिगदागुरु न्दशस्त्रपुष्कछान् ॥ साहितीम्रेण तपसासष्टतः परमर्पिणा॥ ३२॥प्रजापतिसुतेनाथभ्रुगुणाछोकभाविना॥अतिकाष्ट्रमतेन्दित्रोकसारोविनिर्मितः ॥३३॥ जन्तेरोळगुरु प्राह्यम्हिकापयितः प्रभुः ॥नित्यसुद्धिजतेचास्य तेजसः पाकशासनः ॥३५॥तेनष्णेण मगवान् मभपुक्तेन भारतः ॥विषुक्रोशिष्ट्रपन भ्रह्मतेना द्रवेनच॥ अवशास्त्रवान वीग्रणानियानविर्विण अवकालव्यतिकातेमद्रस्तिभयकर॥३६॥अनावृष्टिरनुमासाराजन्द्र् व्यावार्षिकी॥ तन्स्याद्रवावार्षिक्यामनावृष्ट्यामहपयः॥३०॥वृत्यर्थेभाद्रवन् राजन्तुप्रातीः भाद्रवन्दिशः॥दिरम्यस्तान्मद्रुतान्दृश्चाद्वति सारस्वतस्त वा॥३०॥वृत्यविष्ठभारति पुनत्वाद्वारमहमदा॥३०॥वास्यामिमस्यप्रवरानुष्यतामिष्ठभारतः॥ इसुक्रसर्पयामाससिविद्वेवतास्त्रया॥४॥आहारमकरानित्यमाणान्वेदास्त्रभारत् ॥अयतस्यामनावृष्ट्यामतीतायामहपयः॥४०॥अत्योन्पेपरिपमच्द्रः पुनः साध्यापकारणात् ॥तेपाधुभापरीतानानश्वदास्तुभावता॥४२॥

इन्छ। करने लगे अस्वत्तत सरस्वती भार हायके कहने छिंग हे युम तुजाय मत सब्भिष सहवर्तमान तर कु आहार के बाले बेछ मत्य दे हुन पका रहा ऐसा सरस्ती का व्यव सम्बे यहा रहे और देशमापि पित्रणोका नर्पण करते भये ४ किर नित्य मत्यका आहार करके पाण धारण किया वेद भी धारण किया किर वह अना विधिक्त समय गया ४१वे सब भर्पो परस्पर इक्किने लगेकि सुधाकि पौबास और दहादिशा परिश्वमणक योगम अपने वेद मछ होगये है सो अब कोन पक न कर्पना ४२

ीराणयन कहते हैं हे नन्मेनयराना वह कृषियोंमें कोई कुभी वेदका भान न रह्या तब उसमेंसे एक कृषी मारम्बत क्रियोंकेपास आया ४३ वह सारस्वत मुनी वेद पठन कर रह्या है निया है वहां ते जसी को तिमान देव मरीखा निर्जन वनमें वेदपठन कर रह्या है तब वो सब क्रियों ४ तहां कि यहां ते जसी को तिमान देव मरीखा निर्जन वनमें वेदपठन कर रह्या है तब वो सब क्रियों ४ सारस्वत मुनी केपास आपके कहने लगे कि है मुनियों छ हमकु वेद पठन कराव ४६ तब सारस्वत मुनी ने कह्या कि तुम विधी से शिष्य हो वेंगे तो वेट तुमकु पठन करा हुंगा तब मुनी गणों ने कहा तुम बालक हो ४७ सो मुनके सारस्वतने कहा मेराधर्मका नाजान हो वे जो अधर्मसे बोलेगा और अधर्ममें यहण करेगा तो ४८ वह दोनो गुरु शिष्य नाजा पा

सिंपामे बराजें न्द्र नक्ष्टित्य वेभानवान् ॥ अयक ऋ द पस्तेषां सारस्वत हु चे यवान्। ४३ ॥ कुर्वाणं से शितात्मानं स्वाध्याय सृषिसत्त म् ॥ सगतान्यतं हु ने अधान्य स्वाप्त स्वापत स्वपत स्वापत स्व

ति द्वणानान नकरण । वेगे अथवा परस्पर शाह होवे वास्ते वर्ड पना वरस के लिये वा सप्द बाल होने से वा धनके लिये वा बोहे त भाइ बंद के छिये निह हं ता जी सांग ने दपटे वह बड़ा कह्मा जा ता है ऐसा धर्म हुन के वो मुनिगण सब साठ हजार विधानसे शिष्य होयके वेद पटे और धर्म आन्वरण करने लगे - ५१ फिरबो सब न्नरपी सारस्त मुनी के देठ ने कु आसन करने के वास्ते एक एक मुश्चिद में लाते भये ऐसे वो साठ हजार नर्शी सारस्तत मुनी वालक है तथा प उन के आधीन हो केरहे वो सब सारस्त तबाहमण नामसे विख्यात भये ५२ वो तोर्थ में वलदेवजीने धनदान दे के बुद्द कन्या के तीर्थ ऊपर जाते भये ५४ इति नर्मदा के उत्तर भाग में रहने वाले सारस्त तबाहमणों कि उस ने मकरणं संपूर्ण ३६ ६९ आदित पर्य सं ३३८५ ६९

## अधकनोज स्रोर वारवरियाकि उसत्ति मकरण २७

अब करीन और श्रुविधा शहराति इसनि इहते हैं मय कहते सारसत्शासणों के उसचिकहें बाद शहराणके मुससे ह्वकाठीन हत्तान कर के कान्यकुका नि र्णय कहताहु १ इस नेतायुगमें समवद्र सब्बद्ध मारके सौता सहसण सहवर्तमान अयोध्यामें आये १ बाद सम्पद्ध प्रतापिक हुना किर समवदनी सर्व वर्णा यमी छो कोई जैसा सुख होने देशा राज्यकरने तम १ पीछे बहोतदिन गये बाद वसिक विश्वामिन वाज्यिकादिक मुनीन्वरोक बुलायक उनोके हातसे सविधि पहा करते सथे ४ ज मपद्ममें करोज बेहामें रहने बाते दी भाई एक कहन और इसरा कुझ ऐसे हो बढ़े प्रताप अन्य दूसरे शहरायों कु सायलेक समवद्रके पहा बेखने के बासी आये ५ जस म

कुछ नामका बाह्मण है सो मनमं विचार करने सगाकि आमनाइनी वदी भीरवशहरा करके पहा पदाकरते हैं वास्तेशस वहाने इम बान व सिणाकुच्छखने के नहीं अपेसा कहक न्यानावडा माइकान्य उसके छोड़ के सरपून्यी के उसर तट नजा गया अप्रसे असुसारी दूसरे विज्ञाह्मण रानमति महके अपके किये कु अभामणके साथ नले गये १ तब कान्य नामका जो शहरा बोगहाम रहक राम नहने दान दक्षिणा सामदिया सो सब पहणाकिया और कान्यके अनुसार से रहने गांवे नामा । सिणा वे वे वि यमकादिया हुवा जाम दक्षिणादिक पहण करते भये अ और सरयूनिक उत्तर देशमें जो ब्राह्मण गये उनोकु सर विरदे ब्राह्मण कहते हैं ११ उनोका विवाह व्यवहार ऐसा है कि जिस गांवकी बेटी छेवेगे उस गायमें अपनी बेटी देने के निह्न और कोई गायमेतो ऐसी रीतिहै कि अपनी गायकी बेटि जिस गायमें दिये हैं उस गायमें पानी तगाद सबी छोक पीने नहीं हैं १२ हाल में सर विरये ब्राह्मणों का जिया गीरव पुर जोनपुर गाजिपुर मिरजापुर कािश्व प्रयोध्या बिस्त ब्राजमगढ़ यह गावों में हैं और और भी गायों में थोड़े हैं १३ इनिक भोजनिक रीति ऐसी हैं कि जिस विकाने रसोइ कि चिस्त करेगे वहाि जीमेंगे अन्यविकाने हे जायके जिमनेक निर्व यह संप्रवाय अच्छाहें और रसोइ एक जादमी करते जिमनेक पिछान

उत्तरधानी तरेदेशियेगताश्चिहिजोत्तमाः ॥ शरयूब्राह्मणास्तेवैसंजातानाम भिः किछ॥ ११ ॥ यस्माद्धामात्वपुत्रार्धे कन्यां गृळं तिते हे जाः ॥ तास्मिन्यामेस्वकन्यां ने नदं तिकदानन ॥ १२ ॥ अध्ने पासमूहोवेवति बहुधान्नु वि ॥ गोरखादिनवहरे नधान्यत्रा पवति ॥ १३॥ एवा भोजनरी तिश्वसापिश्रेष्ठतरा किछ॥ यस्नि त्याले न्याकः कतस्तत्रेवभोजनं ॥ १४ ॥ कुर्वे तिनीत्वानान्यत्रघृतपद्या देकत्या॥ एकप त्यपिवधानां सविधानां किछ ॥ १५ ॥ गृळ् तिसर्वदानां नि विशेषणाह्न नाष्ट्र वि ॥ एवंसंस्थितः भोकोश्चर्र हजनिर्णयः ॥ १६ ॥ अयथेद सिणे भागेशरय्यायाश्चसंस्थिताः ॥ कान्यसं धिनोविषाः कान्यकुकाश्चते स्मृताः ॥ १० ॥ तेषाभेद महत्वस्थे धा १९ ॥ वर्षे ते॥ स्मृतिशास्यां पत्ते रिद्रामस्मृते ॥ एवं भोक्ताद्वाग्रामाश्चार्द्ध चिगीसकं दुरे ॥ २० ॥ अयगोत्रा णिवह्या मिषोडशेट हजन्मना ॥ क्र स्थरः काश्यपः श्चेववत्योगर्गीय गैतमः ॥ २१ ॥ शा हत्यश्चव सिष्ठश्चधनंजयपराश्चरे ॥ भारह्याजभरह्यानक्षणात्रेयोपमन्यवाः ॥ २२ ॥ इत्राक्ष्याः किष्टे हष्ट्गोङोसना विभादत्ते त्योत्तमाः ॥ २३ ॥ ॥

नवाले तो भी बिन पिछान वाले-भी एक पक्तिमें बैठते हैं १५ हालमें यह ब्राह्मण सबदान लेते हैं ऐसा सक्षेप में बाइबरिये ब्राह्मण का निर्णय कहा १६ अब सरयून दी के दिसिण भागमें जो कान्यनामक ब्राह्मण के संबंध से रहेंगे कान्यकु का ब्राह्मण भये १७ इनो का याम और गोत्र प्रवरादिक का भेद कहता हु उसमें पहिले सांडे दस गायके नाम कहते हैं स्थूली १ सरवरेज १ गो रि ३ सिउराजपुर ४ उमरि ५ मनोह ६ गुदरपुर ७ बरिआव्हरिवं अपुर ९ पचोरी १० विगीसपुर ॥ ऐसे यह सांडे दस गाम कनोज ब्राह्मण के हैं १० अब कनोज ब्राह्मणों के सो ला गोत्र क्राह्म है करयप १ कार्यप २ वस ३ गर्ग ४ गीतम ५ शांडिल्य ६ वसिष्ठ ७ धनजय च परावार ९ मरहाज १० कछा। त्रेय २ औ पमन्यव १३ कु विक १ ६ की विक १५ न सार्य यह मोजागोनमे सगोभ उत्तम है २६ भारदान उपमन्यव द्याहित्य कर्यप कासायन सास्त्र यह सगामके शहरण उत्तमजानने १४ यह स गोम के नाहाण अपन सगोभके अहर कत्या सबस करने हैं वाकिके दश गोमके आह्मणाने निह करते १५ वसादि दश गोमके आहमणोकि कत्या को इस रक्त अडन्यासे सेवेगे परतु देनेके निई और बहोत करके यह करोज आहमण दूसरा राज मतिग्रह करने निह है १६ अब यह करोज आहमणोका पेद-राग्दा स्मका निर्णय कहते है कर्यप कार्यप गर्ग शाहित्य यह नारगांत्र और पाचन यह गोभके आहमणोके सामवेद की यमी शारवा गोमिल

अध्यष्ट्कुलाः भारदाजीपमन्यय बाहित्य कत्र्यपीत्तम् ॥ कात्यायम् साक्तत्रव्यष्ठितेगीक्जोत्तमाः ॥२४ ॥ एतंपट् गान्नमा विभागपट्गीने एवकेष्ठ ॥ कुर्वतिकत्यादानवेनान्येपुदिग्नानेपुत्त ॥ २५ ॥ वत्यादिद्दागीन्नात्यकेन्या गुद्धतिकृत्रचिन्। विशेषतान्यदानानिन एक्तिक्वात्रना ॥ २६ ॥ कत्र्यप् कात्र्यपत्रीव गर्म वाहित्यएष्ट ॥ चत्वारोसामगार्धेते शेषावात्सनेयि न ॥ २७ ॥ प्रवमञ्चयनजयद्तिपाठम्य ॥ स्वसंवध्विनात्र्यते वेकपत्ती दिजात्तमाः ॥ कुर्वतिभाजननेव पृतपकादिक्षिमा॥ २० ॥ प्रवमञ्चयनजयद्तिपाठम्य ॥ स्वसंवध्विनात्र्यते विक्ताम्य ॥ कुर्वतिभाजननेव पृतपकादिक्षिमा॥ २० ॥ प्रवस्ता प्रवस्ति । अर्थेकात्यायने गोने दिवेदी मित्र सङ्ग्रहा ॥ खोकनायाद्य समद्रावद्यक्रात्रा ॥ ३० ॥ ॥

महाणाका माध्यदिनी शारवा नारस्कर एस द्वमहे २० और यह कनोज शहरणोमे एक पक्ती में अपने सवध विना दूसरे के साथ मोजन नहि करते पूरि कचोरि आदि पक्षी रसोईका मेद सुवानहीं रखते नहा चाहे वहा से जाके पाते हैं २० अब पूर्वि छ गोम कहे हैं उनोका माम मेद और पहर वार मुस पुरुष और आस्पदका नाम पह सब हाल जो नल रहाहें सो कहनाहु ॥ २९ पहिला कालाय मोग उसमें मिश्र आस्पद बासे विनक्के पहर वार मुने पत्ती जाके नी तनीके पत्ती आधाम मेद ऐते १ मैं २ रवहे १ मिट्टे थ एंडे के बदर का वाले २० यह आ १ सिरिक हा २ नगवी सपुर १ नाको ४ पिड़ के पी हानी वाले १ रवहे के बेने गा उपाई १ लोक नाम के नी के स्वीव स्वीव स्वीव स्वीव के लाको वाले हे स्वीव स्वी

टरका पुरनायलन १८ प्रतिकात्मायन पूरा हुवा ॥ ॥अवकक्षपगोत्र दूसरा तैवारी मनोह १ सरवरे त २ वरु आ ३ पुद्रपुर ४ हरिवंशपुर ५ असामी हरी १ भनी २ लक्ष्मीनाश्येचर ४ रोचरके अवस्थि भये ५ हरीके वयुवा अवस्था दाझित वदर्के बोदलवाले ५ लक्ष्मीनके कन्याना गले ५ खगेचरके ५ करिंग तिनके लिरकान क्षिक गटन के जुन दो २ के शोणमा कषादन रानि चैना गाईके लिखा तेही के पुत्र ४ ऊर्गीत रंगम २ प्रयाग ३ गोपान ४ उर्गी के पुत्र ३ हे मानाय के निगरि ६ अदेश के करेलुवा वाठे अभिहानी ५ माम भेद हड हा ९ कत्याणा पुरी मिस भये १ मयागके पुत्र ३ आसादन १ सिवदन १ मेहु ३ आसादत्तके रवेडरावा हे खेरेन्वर वाहे अ यस्यिक अरोमणियाले - दुवे सदनिहा १ अरस्यि शिरोमणि १ सिह २ नाल ३ मेद ४ शिवदन २ के त्रिपानि खेमके दुन ४ मेकु १ गणा २ कन्त् ३ जन्त् ४ गणा के गीतमानार्थ्य मिया ॥ में ह्रके ते वारी कन्त्र युत्र व इरिहर् भैदन २ हरीहरके शीकात दीक्षित उपके २० भैदन १४ महतु २ मेनो हर विखे यहिमा घर बहुत है से हुउाके साहवाले कृति सखरेज मारा जामते पुत्र ६ राधी १ जानी २ चतुर ३ कान्ही ४ राई ५ विभाकर ६ राजी खी जानीके एक डलावाले ११ चतुर औ कॉन्ही के टुइट पेचित्र वेद्जाः दृषीकाः दिस्ति तास्तया ॥ हर्या देसंङ्का पष्टिएरुपाः वंद्रास्चकाः ॥ ३१ ॥ द्रां छिल्याख्येतृतीरे स्मिगीत्रे वंद्राक्रानरार ॥ त्रिपार्ट मिश्रकास्तेवेदिग्संख्याकाः प्रकीर्तिताः ॥३२ ॥ भारद्वाजचहुर्धवेगोत्रं सङ्कात्रि पाठिकाः ॥ पंचाद सुरुषान स्तत्रवंदावृद्धिराः स्मृताः ॥३६॥ वेहरवाले १० राई औं निहावाले न विभाकरके जूदवाले ५ वचुवा घरवासवाले १५ वरगदहा औछ भ्यपुरके दूनेन सामान्यसपरी पुरवाले गत्हूदेमध्यम माधवगणपति के अचितके वागीशा वाले १० ॥वरवाइवालेमीवे ६ व्यालपुरवालेमीवे कह मरावै वालेघरदो ३ सुरवी वालेमी

परगुर गीपनाय १५ भीविद्या १० तसकर १ असामी मीने ६ जशा रामलेके अधिहो भी ४ इति शाबिस्य गीय प्राहुना ॥ ३२ ॥ अस भारदाज गोय नवार । असी प्राधान पर्वे प्राधान पर्वे भाग में दिवाह प्राहुर पार्ट प्राहित १ प्राहुर पार्ट प्राहे प्राहे प्राहित १ प्राहे १ प्राहे

उपमन्यवकगोभूपनमपरिकीर्निक्म्॥दिवेदीदीसितास्तन्नपाठकम्बिपाठकाः ॥३३॥ अवस्पीन्तीः क्रुकाम्बेववानपेयकरास्तवा॥मः

सद्द्राच्यामाणिपुरुषा पृष्ट्सरम्का ॥३५॥

तक्ष ॥ अवउपमन्पवनोषद्म नेद पाच्या उपमन्पवजुहुजु तिनके अमना पार्ग २ द्रापादीहित केपुम ५ देनसम १ नदन १ गापि १ मनम्ब ४ गोसस ५ देशसमे जिस्न मीठ नाते द्वे पहनके छुम १ परवास १ अभई २ बाह्यदेव परवास के द्व्यवास १५ अभई के छुम १ नगत १ जनार्दन र मकरद १ जगत के अभई के हावति है ५ नगार्दन हे नगी वाले अमीहोगी १० मकरद के दुवे गगापार भोनपुर महिन्द इतिजेशन मुठ ॥ वाह्यदेव के क्षिण मुठ नाते १२ व्यक्त विया गोपी केपुम १ वास्त्री ६ वितक पीति वदिराशा स्व १ मन्द के नगत मुरी परवास के १० प्राह्म १ पता वस्त्री पता वस्त्री असिव । १ वीर १ वर्ष पत्री पत्

र्निनके पुत्र निष्णु महारार्म र महारार्म केपुत्र र जिवरार्म । गदाधरके त्रिमलवाले खरं छहा जिवरार्म । देवरार्म जिनके कुलमणि कुल मणि के खुत्र थ काशीराम । मणीराम र गांपी उ मधुरा थ काशीरामके १० मनीरामके १० मनुराले १५ गोपीके सामान्य र मनीरामके पुत्र ५ ज्येधीके मनोरय १ वाले छहुरीके मित्रानद १ महासुनि २ गृटेन्यर गांत काशिंगम के पुत्र ६ प्राणमणी न्तुलामणि र गगाराम ३ जयदेवराम ४ रहनाय ५ लक्ष ६ इति महारार्म्मी ॥ ॥ अथ विष्णु "तिनके पुत्र २ भास्कर १ छगे २ छगे न के गमभ इ क्रिके पीतिकर वाले छरवर्ग हा २० औ भास्कर के लक्ष्मीपित प्रचावाले लक्षीपित के हणा कणा के विवाह तीने ३ ज्येधीके वरानहिं र महिलोके पीपाल कर्माके प्रति १ हि १ विश्व १ विराह स्वी १ विश्व १

परंसं क्सगोत्रंतेह दिनस हैतं इनः ॥तन सुक्रः पंडिताऋ इ दुर्गामसंगतः॥ ३६॥ नमेला दियाममे द नेस्मृत ऋ धेरं इ

वारवरिं ब्राह्मणोळीउसि इरीभिर्दे छ ६९ ६९ ६९

## अथकान्य कुल्लबाह्मणोका कुलगोत्रआप्सद्याभकास्पष्टकोष्टक

देनकाम कर कार्य किमानकाम क्रिके मेर्ग कार्य कार्य कार्य । १३ मिम

			123.11.2.2.11.2		<del></del>	محيت						<u>=:::::::::::::::::::::::::::::::::::</u>							
141	<b>१भ्रापस्</b> ता	प्रयामनाम	रबस्य इप	स्त्रीम	भूमक्ष	.नेद	*174	<u> </u>	<u> </u>	**	<u> </u>	<b>परिते हैं</b>		<u>फा</u> कास्त्रपः		<u>I</u> -	<u> 및</u>	_ <del>''</del>	34
4	144			WH		पस'	नाय	77.55	<b>.</b>	ر <b>بر</b>	<u> </u>	_ <u> भरक्क</u> _	1रगण क		ــــــــــــــــــــــــــــــــــــــ	_ <u></u>		मोक्र	
1	पहरवारस	प्रसम्बद्ध		47	3	9	सा	T		-	नेपारि	मना दे		4443	<u>-}</u> _	सम	<u>भूप</u>	4117	- 45
<del>``</del>	पहरकारदुव	ग्रेविक		<b>1</b>	3	<u>4.</u>	THE .	<b>च</b>		34	नेपारी	<u> भस्ते नदे</u>		क्रमप्प	2.		<b>-</b> \$}_	┸—	16
┰	75/24/457	<b>1179115</b>		-		Ψ.	<u> </u>	1	_ <del>₹</del> ₹	10	वेकर	<u> चठवादे </u>		<u></u>	∄ .	4	<u> </u>	<u> </u>	
•	7104	- क्यानगर		157		Y	माः	<u> म</u>		4,4	नेवारी	रमस्यक		<u> </u>	<b>র</b> .	स्रा	47	मो	
_	रक्षामध	प्रमेग्वरवास	· <del></del>	4	3	क	मान	च	$\overline{}$	1	सेनारी	TRAHNA		<b></b>	4	er.	4	मी	
v	141141		संस्तानं	<u>6</u>	3	पं	<u>ਸ</u>	7		TI	भरम्पो		ज़ेक्ट्र	45	<u> </u>	T	¥	नी	
4	THE		संगान		1	प	म	T		17	गीसप	<b>3344</b>	4116	<u>-</u>	ő	स	स्म	न	
3	मेग्-		1111		3	प	म	च		11	Diffit		र्ग स्वयस		77	सा	4	गी	
١.	निष्		सरियस	*1	1	<u>प</u>	TT.	T		74	रीक्तिन	कस्य नागाने	सारवनक	事		स	की	-	
17	<b>मिम</b>		<b>क्रम्बर्ड</b>	Ŧ	3	<b>प</b>	Ŧ	T	<del>,</del>	39	THE T		11000	\$		म	#	<del>- 1</del>	
13	<u>मित्र</u>	क्रमेनगर्त	भागिण्यक	T	3	<b>T</b>	4	प		14	वेगार		<b>क्रेम्नाप</b> का	4		स	<del></del>	<del></del> मो	
1	मिम	HAVIOR	केशीक	-	3	<u> </u>	Ŧ	<del>-</del>	1	33	रास्त	47.4.4	<u> </u>	-		<del>\\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ \\ </del>	4	<del>- 1</del>	
<u> </u>	<b>मिय</b>	मादिनागत		-	$\overline{}$	प	7	प	<u> </u>	74	मण्डेन	HTE		<u> </u>	<del></del>		#	<del></del>	
<del>*</del>	भिष	रंगनेपान ते	<u> </u>	<b>₹</b> 7	1	4	4	चर	· ·	38	सिक		<del></del>	<u> </u>		<u>ज</u>	╼	╼╼╅┺╼╾	<del></del>
<u>.</u>	मिथ	मस्येषक	F-9784-6	NT.		<b>T</b>	<del>-</del>	4	<del>- `                                   </del>	<del></del>	भुक्	<del> </del>	-	-		<u> स</u>	<u> </u>	<u> ग्र</u>	
•	<u> मिम</u>	_ · · · · _ · · · ·			<del></del>	╅	47	पा	_ <del>`-</del> -	37	764	प्राप्त	भारतक			<u> </u>	<u> </u>	1	
-	मिम	<del> </del>	त्रांतर सुर्वा म	<del>- 11</del>	<del></del>	╈-	<del>-11</del> -	<del>- '</del>		<b>1</b>	<del>1</del>	<u> गिरोम्गिगस</u>	!	<del></del>		सा	<u> I</u>	<u> </u>	
<del>-</del>	मिश्रा	वीपाउपाठे	भागनायके	<b>*</b>	<del>_</del>	₩-	<del>ा</del>	च्ये		<u>v3</u>	<del></del>	<u> </u>				<del>स्र</del>	4	<u> </u>	
-	मप्राप	<u> रहाय</u>	<u> </u>	T.		÷-		<del>-</del>		*	<u> 194</u>		नेनाक.	<u>_</u>		<u>म्</u>	_左	<u> </u>	
	भिष	करीगावर वर्गगावर	<del></del>	-6-	<del></del>	₹-	≖_				<u>नुबास</u>	_ <u>_</u>	45	<u> </u>		<u>च्य</u>	1	<u> गम</u>	
		प्रमुखा <u>न</u>		—□_		<u> </u>	<u>म्</u>	<u> </u>		84	्रीक्सनः	_प्राप्तर_	BREET	<u></u>		<u>.म</u> ्	_\$_	<u> </u>	_ 72
<u> </u>	<del></del> -	THEFT	<del></del> -	₩.	_3	प्	मा	च	1	تغفر	पासिव_	भेदन दे	.1 <del></del> _	. 5		सा	王	<u> </u>	1

			. · · ·		र च	ो गो		७३	नेवारी	नंगीराचा <u>द</u> ्	ग नमुके	फ	3	सा	की	-गे-	20
व दिसीत		<u> </u>		सा				<u> 53</u>	नेवारी	करारेषाले	फन्दद <u>के</u>	<u>क</u>	3	सा	- <del>*</del> -	गी	98
पट हिसीन	<u> म्नोहरके</u>	<del>- फ</del>		41				<del>– ভট্ট</del>	नेवारा		चाचक	क	3	सा	की	,गो	4
४९ तेवारी	सेह्रुडाके साहवाले	<u> </u>	3	<del>।</del> स				<u> </u>	नेवारी	-सदरप्रमाने		क	3	सा	की	गी	90
५० नेवारी	सरवरेनक				की		11	1984	तेवारा	हरिवसपरव		事	3	सा	की	गो	30
५१ तेवारी	एक इलावाले गधिओन नि			सा सा	- <del>3</del> 1		70	<del>- 50</del>	तेपारी	<b>छी</b> तपाले	L <del></del>	<b>事</b>		सा	न्त्री	गी	99
५१ तेवारा	बेहरवाल चतुरकन्त्राफी	न क		<del>्य</del>	<del>- क्र</del> ी	<del>- भे</del>		35	नेवारी	रत्नधरीहा		<u>क</u>	<del></del> _	सा	=	गी	33
५३ तेवारी	गद्दश्रीनिवाताले	<del>- क</del>		सा	<del>3</del>	मे	<u> </u>	90	तेवारी	<b>जित्यानपरी</b>	<b>कस</b> छेन्यवनाता	· 事	3	मा	की	मी	93
^ तेवारी	चुद्यां विभाकरके	कर्म		<del>गा</del>	- <del>6</del> 1	गी	34	- <del>- 30</del>	नेवाश	1813753371	<del>चेत्र</del> क्षपंचनिया	<del></del> -	<del></del> -	सा	-4	गो	<del></del>
५५ वेवारी	न्सभाचरगस्त्र सामान्य है	<u>करप</u>	3-	<del>।</del>	- <del>1</del>	गो		- 69	तेषारा		आनंदवन्त्र केमीर्व	<del>-}</del> -	3-	<del>~~```</del>		<del>ग</del> ी	<del></del>
५७ नेगरी	वरगद्द्वा सामान्यह	<del>- फ</del> -	<del>-</del> -	<del>सं</del>	<del>क</del>	नी		<b>E 3</b>	नेवारी -	चगउमरकाक	40.124.27.00	<del>- 1</del>	<del>_</del>	सा	<del>-3}</del> -	1	<del></del>
	उद्गपुरके रसामान्यक	<del></del> -	<del></del>		<u>की</u>	<u>ग</u> ि		- <del></del>	नेपारा	व्याक मत्री के	-विकर्काणिक	<del>फ</del>	ੁ		की	गो गो	
५८ नेवारी	सपस्थिखाले 📉			सा	की	<u>गी</u>		- दक्ष			चार्यस्थामाठ		<del></del> _	सा			<u>u</u>
५१ तेवारी	गल्ह्ये मध्यमह	<u>事</u>	<del></del> _	सा		मी-			<u>चेपारी</u>	उमरी के		<u>क</u>	<del>_</del> _	सा	<u>क्री</u>	ग्री	
६० तेवारी	माध्वगुणपनि-	<u> </u>	<u>_</u>	सा	कीं		90		नेनारी		यचार	<u>क</u>		सा	की	गो	<del>_~</del>
<sup>६३</sup> तेबारी	अर्वितके वागीवावाले	<u>क</u>	<u>-</u>	<u>सा'</u>	敦	ग्रे			नेवारी		पुरमानंदके.	<del>क</del>	3	सा	की	गो	_ <u>~</u>
<u> ज</u> ोपारी	वरवाइवाले मीठे	<u>क</u>	_ئ_	सा	की	<u>ग्री</u>	<u> </u>		<u>तेवारी</u>		गीरीके	क	<u> 3</u>	सा	सी	-7	لبر
ते तेवारी	द्यालपुरवाके मीवे	<u>*</u>		सा	की	<u>ग</u>			नेपारी	पनोरके	<del></del>	क	3	सा	को	यो	ч
😕 तेवारी	कुहमरावैवाले सुखानाकेमी	क	<u> </u>	सा	की	गी	9		त्वारी	<b>चिगीसपुरा</b>	अर्धचर	कर्य-	3	साम	केाय	गोभि	
५ तेवारी	करमग्वेवाले दुखीवाके	<u>क</u>	3		की	<u>गो</u>	4	30 -	नेवाराः	<u> भादि थन्सक</u>		ग़ाड़ि	4	साम	कीय	गोमि	
५ नेवारी	सदरपरी हरिनायकेपुच	क	3		की	गो			<u>चारा</u>	<u>क्रमीतप्रवाले</u>	वर्जाघर	भा	3	स	की	गी	
• तेपारी	चीरवतीमीवे धाध्यासे	क	3_	सा	की	गी		99 T	मेश्र	हमीरपुरीवाले	दरिसरगाङ्ग प्र	ग्रा	3	सा	की	गी	
् नेवारी	जगीरावादी रमद्दे	\$	3		भे	ग्री			<b>मेश्च</b>		<b>बिषुराषा</b> के	ना	3	सा	#	- <del>ग</del> ो	43,
विवारी	सपद्वात दमाके	क	3		की	गो	95	94 1	मेश्र		Z	ना	-3	सा	की	<u>नी</u>	99
्रे तेचारी	पर्शवाले गोपालके	\$2.	3			गी	984	94 5	पेश्र	~~~~~~ <del>~</del>		जाा-	<del>-</del>		<del>3</del>	<u>ग</u> ी	30
तेपारी	कठेडवावाले गोवधीके	<b>45</b>	ર્વ	स्री	য়	गी	98		नन्म		~	311	ــــــــــــــــــــــــــــــــــــــ	<u>सा</u>	<del>- 1</del>	<u>गा</u>	92

<del>***</del>	मिय		पोरिस	गा	<b>—</b>	स्र	17	गो	95	•	सन	<del></del>		भा_	$\overline{\lambda}$	3	<u>मा</u>		13
- <del></del>	भाषिको ही	<u> </u>	संस्करकर्मार्थ	ulit		चा		गो	1	<u> </u>	375		<b>પ</b> ર્ <del>ગ કે</del>	भा		•	म	म	<u> </u>
99	<b>11.35</b>	Terrary.	<u> नगागमसंख्</u>	. सार	$\overline{}$	भूत		मो	υ	<u> </u>	76		PR	भ	_3_	<u> र</u>	<u>मा</u>	<u> </u>	9 Ex.
999	सुके	तरीये		भारका	<u> </u>	<u> </u>	4	पा		394	युक		पेडके	भा		<u> </u>	4	<u>च</u>	<u> </u>
1	तुस्क	<b>संगाद</b> े		178		7	4	<u>TF</u>		360	7-4	प्रकरना	मनीड	<u>41</u>	3	<u> </u>	<u> म</u>	<u></u>	-93
3	776	महर्गसो है		-17	3	म .	म	पा-		<u> </u>	<u> 54</u>		करापस्यम	<u> 41 </u>		<u> प</u>	<u>- ग</u> -	<u>पा</u>	
3	तुरु	प्तरीज्यके		<b>4</b>	1	प	<u>4</u>	<u>ঘ</u> _		3.0	435		<u> </u>	<u>भा</u>	<u> </u>	<u>प</u>	म	<b>T</b>	78
_7	सुरु	प्रसादे		<b>3</b> 1	3	<u> </u>	4	<b>च</b>		2.9	<u> </u>		<u>मानके     </u>	भा	<u> </u>	<u> </u>	<u>मा</u>	<u> </u>	
344	<b>ग</b> स्स	पदनपुरके		म	1	<b>T</b> _	1	प्र		<u>. 3</u>	नुस		रुगायासम्बद्ध	<u>भा</u>	_3_	_ <b>T</b> _	<u> मा</u>	पा	911
<u>.</u>	तुरु	संबद्ध		ना	1	<u> </u>	प्र	प		<u>. 75</u>	<u> </u>	<u>गन्त्रभोगने</u>	111	<u> </u>		<u>प</u>	<u>म</u>	<u> प्र</u>	
•	7.46	गेस के		भा	3	<u>प</u>	47	प		15	<del>35</del>	_ महोत्तीरासे	14414	<u>4</u>	_1_	<u> </u>	<u>मा</u>	<u>पो</u>	<u> </u>
₹	书事	उन्हेगसके		78	1	<u> </u>	वा	ना		11	7,75	सीयदिवासस	<u> गमनापके</u>	4	1	<u>प</u>	<u>म्म</u>	पा	1.
五	775	प्रविद्यान		4	1	<u>प</u>	<u> 4</u> L	पा		14	3.5	नगरे		भा	•	<u>प</u>	मा	प्र	ધ
790	तस	H-46 T T		47	3	<u> </u>	4	ना		34	344	करणारे		य	1	<u> </u>	4	-चर	
17	त्रक	प्राचनक		741	3	<u>य</u>	<u>ग</u>	प		39	त्रज	गातिक		पा	_1_	T	मा	-	વ
75	75	सर्गस्य स्वरंगाः		मा	_1_	<b>T</b>	भा	म	90	30	<u> </u>	<u> नामाप्रकेष्टपुर</u>		<u> </u>	_3_	प	4	पा	
11	47.6	<u> विस्पृत्तान</u>	HUNES.	भ	1	<u>प</u>	मा	<b>T</b>		14	राज	नपायक		भा	<u> </u>	<b>T</b>	मा	1	
14	17	म्यापपारी	<u>चेत्रके</u>	4	1	च	भा	4		30	गुरु	भस <b>्क</b>		भा	1	4	Ħ.	म	
114	चुन्द		वासाफ	9	3	<u>प</u>	स	ग		¥	TRAIN	न रामियारचरके		भा	1	<u>ष</u>	<b>可</b> L	पी	7 _
74	नुस्र		<b>विसादक</b>	-11	1	म	मा	पा	44	81	निषेश		कानक	<u>'भा</u>	3	म	<u>म्</u>	पा	3
74	3.5		नापणके	भ	3	<b>T</b>	46	प	44	U.S.	PHO	सम्बद	मानक	H.	1	य	मा	पा	1
<u> </u>	30		पराकार	पा	<u> </u>	प	मा	म	٦.	V.	निपंदी	सिम्ब शिक्त	<b>\$17.4.7.9.5</b>	मा	3	प	म	71	<u>c</u>
	तुस		दिशकरदे	T)	1_	<u>प</u>	मा	पा	ੋ <b>੨</b>	44	िर्देश	र्वाप्रमुख्याने		भा	3	म	म	7	*1
13	मस्क	~ <del></del> _	ररिराम्द	मा	1_	<b>T</b>	ना	<b>T</b>	94	४५	न्युक	वैद्यापाने		ना	3	<u> </u>	ना	7	स्द
3 7	उन्ह		<b>उम्म</b> क	4	₹	य	स	4		85	चुक	भ <b>मनाया</b>		म	<del>-3</del> -	<u>च</u>		या	16
										<u> </u>		* 1 * 1 * 1 * 1 * 1			_	٦	~	71	734

१९७ अभिही	र्गा अभयपुर	के						4	9 દ્	४ दुवे	मीरावक		3	व्	य	मा	पा-	G
१४० दिस्रीत		झपाक	उप	म ३	य	मा	पा	. ૧५	38,	९ पाठक	जानापुरके	विवदत्तके	उ-	3	य-	मा-	पा	
१४९ वाजपेई	असनीगोपा	स्यु सच्छाके	उप	- ३	य	मा-	पा		9૬૬	< अग्निहो <sub>र</sub>	री एकडलावाल	के देवदत्तके	उ	व्	य	भा	पा	90
१५० दुर	<sup>भे</sup> राजम्खवा	हे देवरामके	ড-	. ३	य	मा	पा		9 દ્વ	॰ अवस्थि	के सर मउके	वस्रदत्तके	3-	3	य-	मा	पा	9 <
१५१ दुवे	द्रशयवास्त्रे	घरवासके	उ	3	य	मा	पा		<b>૧૬</b> ૬	विदेवी		ब्रह्मदत्तके	उ	3	य-	मा	पा	90
१८२ दुबे	इस्याले	अभइके	उ	३	य	मा	-पा-	ų	१६९			यद्यदत्तके	3	3	य	मा-	-पा-	
१५३ अभिहोत्री	रेगरीवाले	जनार्दनके	-3-	3	य-	मा	पार	90	900	त्रियेदी	<u> </u>	रामनिधीके	उ	3	य-	नाः	-पा-	
१५४ दुवे	भोजपुरवाले	मक्रंदके	उट	3	य	मा	पान	<u> </u>	909	त्रिवेदि	एकउत्तमावार	<u> ५ पुरदरके</u>	3	3	य	मा	पा	
१५५ दुवे	क्यासरम्उवा	वासुदेवके	उ	3	य	मा	पा	93	902	अवस्थि	पुरंदर	<u>-</u>	3	3	य	मा	पा	
१५६ दी सित	दरियाबादवा	ग पीके	उ	3	य	मा	पा	59	१७३	त्रिवेदी		पुरदरके-	उ	3	य-	"मा"	पा	9.
१५७ दुवे		घरवासके	उ	3	य	मा	पा	99	308	अर्वास्य		<b>उरंदरके</b>	3	3	य	मा-		9 =
५८ दुवे		वाउँ के	3	વ	य	मा-	पा	94	१७५	अवस्थि	ने बरा शीवारे	माधवके	3:	3	य	मा	पा	٦,
५९ दुट	पस्यामाबा है 🕆	किसनके	<del>उ</del>	3	य	मा-	पा-	93	१७६	अवस्थि	त्तेवराज्ञीवाले		उ	<del>`</del> _	यः	मा	<u>'91</u>	90
६० दुवे	नरोत्तमपुरते ३	भेस <b>इ</b> के	उ	3	य	मार	पा	90	900	अवस्थि	तेयरी शीवाले		<u> </u>	3	य	मा	पा	95
	जानापुरके		<b>J</b> -	<del></del>	य	माः	पा	c (	100	अवस्थि	नेवरी शी गाले		<u>ড</u>	<u>`</u>	- <u>ं</u> य⁄	<del>ं।</del> मा-	पा	<u> </u>
.१ दुवे	हर	(दत्तक	3-	३	य	मा	पा-			अवस्थि	तेयराजीवार्ने		<del>-</del>	<u> </u>	<del></del>			
रे बुद	সা	नावे	<del>ु</del>	3	य -	——— मार	<u> </u>		000	अवस्थि गाजे	म्बर्ग चरे	अन्धेया	<u> </u>	<del></del>	य	मा-	पा -पा ।	90 

-دهـ ام و	) तुस्क		<b>अ</b> रिके	3		7	T#	======   <b>प</b>			<u>।</u>	तपंद	-विकास	भगेवेके	7-	) }	य	<del>-</del> मा	पा	46
						<u> </u>				- 14.		<b>∼∸</b> -	<b>बैहारीवा</b> ले			<u> </u>	<del></del>			
	13		रधनायके		1	<u>   प</u>	म	<u> </u>	**	389	यः	<u> </u>	<b>इ.</b> । ऐवा दे	<u> भतुव्दर्वे</u>	2	3_	<u>   य                                 </u>	मा	याः	
	(उड़		मंडनके	<u>্</u> ত	- 3	<u> </u>	म	पार	• • • • •	<u> </u>	न्र	रपेद		यीशाके	3	*	<u>प</u>	मा	पा	• • • • • • • • • • • • • • • • • • •
148	भागपेड्		यहाद सके	37	_ 3	<u>म</u>	मा	पा		* 1	याः	ापेर्		गमादत्तभ <del>ति</del>	₹-	3	य	मा	पा	34
964	<b>बानपेड्</b>	निमधापार		3.	3	य	मा	पा		— <u> </u>	47	पेर	-मसान्हारेस	र्व श्रम्	৳	3	य	मा	प	•
ted.	ग्रजपेर		काशिराम्क	3	3	म	मा	पा	†দ	1, 3	गाज	पेड्र	म्येशस्या के	क्मल नप्न क	: <b>3</b> -	<u> </u>	म्	मा	<b>'4</b>	3,0
760	नामपेड्		मनिरामक	3	1	- स	मा	पा	3-0	18			मीजमारा		F	3	प्	म	पा	94
144	बाजपेर्		मधुराके	3	1	य	मा	म	44	<b>ર</b> 4	स्पृष्ट	वेष उन	विजीतिकार्त		उ	3	य	मा	-पा	94
14	राभपेड		गोपीनेसामान	J.	3	4	मा	पा>	•		याज		मसिवाल		4	3	य	मा	पा	1.
•	बानपेड	मनोरपराने	नेषी के	3	1	प	項	पा		ર•••	मारि	होना	शरियानवना		चेप	3	यः	माः	या	
\$5	रानपेड-	<u>नटेम्परगढ</u> े	सहरी द	3	1	<b>4</b>	मा	प		3 ◀	न्त	F	क्नरधीके_		साप	3	<u>ग</u> ्	मा	पाः	
\$9	वानपेर	<u> वेस्वन्यवावे</u>	<u>स्मक</u>	2	•	<b>म</b> ें	मा	पा	₹•	र•६	पार्ड		<b>क</b> पिछाके		सा	3	प	मा	पा	
	पानपेद	सम्मीपदिपुर		3	1	य	म्	पा		v	भो		मेराडे		स्र	٦	य	मा	<u> </u>	
	गुजपुर		पीया के	3	1	प	मा	पा		vi	पांड		क्नीजर्द	<del></del>	सा	1	यः	मा,	पाः	
٩ ٦	गनपर		₹10क	ङ	٦	घ	मा	पा	~	37	पाँड		उरने कि	भराचारीवारे	स्रा	3	प	मा	41	70
ų P	एमपेर्		<b>मुरबी ५</b> रके	<u>.                                    </u>	1	भ	मा	या*	২০	212	पहि		<del></del>		सी	<del>-</del> -	<b>T</b>	<u>मा</u>	47	4.4
v T	जिपर्		परसंचमक	Ŧ	<u> </u>	प	मा	ملك			पेंड		<b>उसनी</b>		सा	<u> </u>	4	माः	नीर	10

													~		
39	५ सङ्	नमेल	श्रर्धघर	सा	3	य-		पा-		च	ान्यङ्क	इ हरी योदे गोन प्रवर देदशारवा सूत्र	क काष्ट	5'	
29	६ सुक्	फन्नुहाबादा		सो	3	य-	मा-	पाः	२०	<b></b>			<del></del>		
294	॰ सुङ्ग	अञ्चनीहा		सो-	3	य-	माः	पा-	२०	٥	गोत्र'	मध्राः .	चेद		सूत्र-
	सुक्ष	पुरनीयावाले		सां-	3	य	मा-	पा	30	9	भारद्वाजन		<u>यः</u>		पाः
					<u> </u>	•	·	<del></del>		- 3	भरहाज-	ऑगिरसबाई स्पत्य भारहाजेतित्रयः	य	मा-	पा•
299	सुङ्ग	<b>नभे</b> ल		सा	3			पा	٠	- 3	<b>स्था</b> नेय	आत्रेय और वान् शावा सार ३	य-	मा-	पा-
<b>२</b> २०	सुङ्ग	<b>रूपन</b> के		सा	3	य-	मा-	पार	94	. ४	ओपमन्यव	वासिस भरहाजेंद्र भमदेति ३	य-	मा-	पा-
229	सुक्क -	डोमनपुरके		सो	3	य-	मा-	पा-	१६५	4	<u> कुशिक</u>	यिश्वामित्रदेवरात्यदालका- ३	यः	माः	पान
	सुकू मिश्र	कीशिकीमिश्र		स्रा	3	यः	मा	पा•	५	E	कीशिक.	वित्र्यामिन्नदेवरातउद्दालका ३	य-	भा-	पाः
				2-2			-			v	केर्युट- फार्यनः	कश्यपयत्सनेधायः ३	सा	की	मो
	~ 13-8	- आदि गेड	ड माह्न प	। सूर	- 4	कर्ता	२८		<b>\</b>	6	सारुख.	आंगिरसगोरिवातसा कृत्येति शाक्यगोरिवीतसां स	रुसेतिवा- य-		मी-
अवस	गाद गंड बा	ह्मणोकि उतान	त कहत ह	पूर	क व	ननम्ज	यनाः	प कर	र्गजा	3	वत्सः	भार्गवच्यवनआयुवान् भे वीजामदग्दीतिभार्गवी व	जिम-३ प-	मा-	नाः
धर्मशी	ल नीतियुत्त	ह सत्य भाषणक	रनेवाला वे	दशास्त्र	में बु	, शल	ऐसाय	११ अ	ग्योव	90	गर्ग	आंगिरससेन्यगार्गेति ३ वा ५	सा		मीः
ती स्रोत	में रहके सकर	<u>अपृथ्वीका धर्मस</u> े	पालन कर	तायार	किर्दि	न यज्ञ	करने	केबा	क्षेत्र		गीतमः	गीतमञ्गिरस वाईस्पत्म ३		माः	
		वें वाकीस शिष्य								93	शाहित्य	असिता देवल शाडिलेति -	सा		नीः
स्तावाः समावाः	. <del></del>	त्किया ३वी यस	<del>11 2 - 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1</del>	रे के बाब	<del>.</del>		3 (*) 1	<del>}</del>		93		यसिष्ठवाकिपराद्यारा ३	यः		
77179	s simile As	हाकपा ३५१ पहा	प ५५ अ५ <del>चेन्</del>	4 416	1011	3, 4,	गक्ष	ታ ~ጣ	بر <del>س</del> ر رطها ـ	18		आन्रेयअर्चनानस्धानज्येति ३ वेन्वामित्रमा छ			
रादिकर	न सत्तापत्।	केये ऋर ब्राह्म	पादुः स्थनेव	१५१न द	4	ाता व	त ।क	484	1.59		परादारः	वसिश्व वाक्तिपरावाराः ३	<u> प्राप्ताचान रा</u> ग सः		पा
अव भृष	स्मान करके	अति भक्ति सं	एरुङ नम	स्कारक	रकेर	गुरुकी	महा	पूजार्ग			बह्म		यः		पान
रिस्डे दर्ग	क्षेणा देनेह	तयार भया ५ त	व वटे स्वर	मनी	राजः	प्रतिया	द्वनक	रते न्य	पने र	30	कात्याधन- व	भां गरस सेन्यगार्यिति	<del></del>		
		•	, ,	· ·					``=			7. 1711 7 7 111			

હ

देशजानेकेवाको राजाकि बाह्म लेके विकले ६ इतनेमे राजान क्या कियाकि एक एक गावके जामकी विश्वा तिखके ताबूलके विश्वम रखके ७ परम भक्तीसे निक स्वीवस्वत स्कर्क मुनिके शिय्योक्क एक एक पलका बीहा यामवानकी चिट्टी सहित दिये वे शियाने केवब ताबूलकी बीही जानके प्रेमपूर्वक प्रहण करके ८ प्रतिग्रामीर

अथम्य द्रिगोड बाह्मणोत्मत्तिमसगमाह् ॥ इतिस्था जनमजयनामावेताजाधर्मप्रपण ॥नीतिमान्सत्यसध्यवेदशास्त्रविनसणः॥ १॥भाग व्तेचनिवसन्पालयन्धर्मतम्ब्रजाः ॥वटन्यरमुनिवरशित्यपुदे समन्दितः॥ १॥यज्ञकर्तुसमाङ्क्यवेदाक्यस्यादु१४४४समिते ॥तन परमस्तुष्टोराजायम्चकारद्वः २॥द्वुर्षीन्स्तोपयामास्यूजास्तुत्याभिवदने ॥चकेदानान्यनेकानिर्ताषयामास्यसुम्रस्तु स् ४ एचकारायभ्यस्तानुगु कन्त्रातिभक्तिनः । मर्ष्क्रान्यकाराद्वीदिसिण्दरातुम् यतः ॥ ५ ॥त्यासमस्पिराटनीयभित्मक्ष्मण्करोत्॥आङ्गार्कृत्वान्यमेकस्वेद्रागमन्यति॥ ६॥ निर्गतास्यतदाराजाचेकेकमामसत्तमेषातिस्वितावादिकामध्येस्थापिकाचपमक् ॥ ७। एकेकपद्वीभक्तयोस्निशिष्येभ्यरसूच ॥ तेतृताबूखकं म तार्भितापेमप्रपेकः। - भनदीनवसमापातागभीरजलप्रति ॥जलमध्येयदापादीसंस्याप्यगमनभृति ॥ ९ भमति प्रकृतादापादीमपीतस्पाजलेततः गुप्रेजुलभत्रण्छलापादेनचागता ॥१०॥कथतदिपरीतं वैजातमभाश्वनामियः गुकलाविचारचोद्वाटस्पञ्चात्ताबुलवी्टिकाः)।१९॥मामदानप निकविद्याविवित्ययानिताः ॥दानप्रतिघृद्वान्यशागतिरस्माकमैवच॥ १२ ४ एवनिन्धित्यत्यपतिगंत्वामीचुरिजातयः॥केयवेयुसमर्गे पदानदत्तत्वया धना ॥ १३ भतदामीवाचन्यतिः माषार्गमणिपत्यचा। विनावेदिसिणादान्यकः सागक्यभवेत् ॥ १४ ॥ समध्यचापराप्रमेख्याकता ममोपरि ॥ एक्सुत्तवा स्वदेशविवासयामासतान् द्विजान् ॥ १५ ॥ तेगींड बाह्मणा सर्वेगींडदेशनिवासिनः॥वेदेशास्त्रपुराणद्वा स्वीतस्मार्तपरायणामा १६ ॥आचारे णिब्द्रीनाञ्चस्पर्भदोषविषाजिताः॥सास्माः माध्यदिनीतेषाचेदाःस्यक्त यसुःस्मृतः ॥१७॥भागाणिगौतमादीनिसूचकात्मापनीयकः॥सुत्माद्दिज्ञसु

रवादेतं पुत्तातपूर्वकाछिकं ॥१०॥ ॥
जल जिसमे भगई ऐसी नदीके तय्यम न्यापे पीछे जलके छमर पान स्तके जिसवस्वत-वलने लगे ९ तवपाव मलमे हु
वगये उसवस्वत मनमे विचार करते हैं कि पहिले तो जलके छमर पावसे चले भागे १० चीर इसवस्वत जलक्यरका गमन नष्ट कैसा भया ऐसा भापस न्यापस मे विचारक
रके पी छे तावूछ नीडि कु रवोलके देरवते हैं तो १९ उसमे भामदानकी विधीदेखे तव वोझोन भामवर्ष पायके कहते हैं कि यह यामदानका मविष्यह किया उससे जल उपस्की गति
सभई १२ ऐसानि स्यक रहे राजा के पास जायके कहते हैं इसजा तुमने अबि इमकूं गुप्तरित्तसदान कैसा दिया १६ तव राजास वोकु सा एगन मस्कार करके हात जोड़ के नमता

सं कहता है है महाराज दक्षिणादिये बिना मेरा यहां सांग कैसा होवेगा १२ वास्ते मेंने जो अपराधकिया वो हामाकरो और मेरे अपर छपाकरो ऐसा कहके वेसवी सनि शिक्षों कुत्र्यपने देश में निवास करवाया १५ वेसव गेंड देश में रहे और पहिले यहि बाह्मणों को शतिषा भइवा स्टेश्यादिगेंड बाह्मण मरे देदशास्त्र पुराण में निपुण श्रोतस्मार्तिक में में

निवंधनंत्रकत्वान्हरिक्षणी दिजः सुर्धः॥तेनश्रीभगवा निष्धु मेसिदोनः मसी वहु॥ १९॥ ॥इतिश्रीबाह्मणोत्पत्ति मार्तेडाध्यारे – आ दिगोडबाह्मणोत्पत्तिवणीनंनामप्रकरणं २८ पंत्रगोडमध्ये सुरव्यगोडेसप्रदायः आ देतः पद्यसरव्या ३४४१ छ ०००००

तसर रहते भटे १६ परंदु इन बाह्मणोमे बंहत करके आचार यं डा पालन करते हैं के रस्पर दोत्रामान तेन है है यह सब बाह्मणोका सक पट्वेद माध्येदिनी बारवा है १७ मैं तमादिक गोत्रहें स्त्रकात्मयनका है यह आदिमें ड बाह्मणोका पूर्वकालीन वृत्तात बाह्मणके र रबसे अवणकरके १८ ह रेक क्याने श्लोक निबंधन किये उसकरके मोहा

बाता विष्णु हमकु पसन्न हो १९ इति आदिगोड बाह्मणोसिन संपूर्णभइ प्रकरण २८ छ छ छ छ छ अट आदि गेंडा नां आरे चित् गो त्रान्टेंक सूरत्ना मान्याह ग्रंथ विरूप भयात् सर्व कि स्त्रीन्छ ते .

	भवर वैद शाखा सूत्र देती	में 3	नवटक	खरब	गोन्न	मवर	रेड-	बाखा	सूत्र	देश
१ क्रिगेर	य- मा- पा	११ द	च्छावत	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	<del></del> -				147	411
९ इरितवाल मिश्र	य मा पा						य	सा	ना	
३ इंदोरिया जोशी	य मा पा		साऱ्या				_य	मा	पा	
२ वेवेच्वाल नींद्री	य मा पा		<u>। सान</u>		·		य	मा	<u>-पा-</u>	
संयत			इालक				य	माः	पा-	
डाचोल्या जीशी	<u>यं मा पा</u> यं मा पा		डा				ੰਧਾਂ -	माः	पा-	
सुरात्या जोशी	<del></del>	१६ मारा	हिंसा	जाशी			ग	मा	<del>ग-</del> य	
पादीपीता नाडी	य मा पा	१७ तुर	ग	जोशी			<del></del>			
मारश्या परीत	य मा पा	१८ हिस	<b>ाय</b> न	जोड़ी			70-	<u>मा</u>	<u>पा</u>	
	य मा या-	१० दिव			<del></del>		4	मा	पा	
पचरग्या नोशी	य मा पा			<del></del>			T	मा	ना	
		२० मिय	<u>। ल</u>				य	ना	पा	

3	य श्रीमार्दि	ठे शह्मणानागोना दिनवभेद् <del>शा</del> नच	कम्	<b>अस्प</b> वऋ	स्यसवधः	पूर्व दिपचा	शत्तमेपश्	<b>५२</b> असि	ने		
	गोमः	मबर	<del>धर्म</del>	देशी	गणगीत	पस	शिव	भेरव	धर्मक	उपनाम	
-	सन्दस	सद्मेन भार्यमद् प्रसमद् १	नंद	करणार्वि	अनमीन	यक	वानके श्वर	ग्रानेद	<b>भगदी</b>	<sup>=</sup> ट कर	9.
3	भारहाज		ंशिव	बंधु पश्चिप	। उपियदुर्फ	समे <del>ष</del> र	नवत्रस्रेत्यर	र्बान	असि	नीपप	97
3	पार्यञ्गर	यसिष्ठ शक्ति २ पाणशर	भति	यटयसिणी	नर्फ	विभेश्वर १	<b>पारेन्दर</b>	सिन्द्रियस	यास	नाभे	4
V	<b>से</b> शिक	भागित्सु देवरान् भीगत्र ३	<u> भ</u> व	कमला	स्रमी	कामे पर	अंबके स्वर	काल	ओसा	ब्राब्या	5
4	बसस	भ्यु र व्यक्त २ आसवा २ अप्रेम ४ जम ५	फिन	बालगीरि	गोपस्त	गनगणी	धारेन्दर	मगलमूर्ति	<b>भवाही</b>	व्योत्तर	<b>E</b> 4
E	उपमन्यस	जनन्यर अभीवेर स्यु १	भ्त	मागनीः	सि <b>द्धि</b> नाम	उपपा	<b>धर</b> भुरे <b>च</b> र		भगही	मेहर	•
U	कार्यप	कारपप १ वस १ नी फ्रांच ३	भूत	योगेसरी	मुख	लकाणेयर	कदपर्वन्यर	ਆਫ਼ੋਲ	त्रवाडी	जाजरोका	13
	गीतमस	गीतमभ्यागिसा ५ औतष्य ३	वास	भरिष्य	साध	इसमंती-पर	र्यं सर	प्रामपास	दवे	नंपादया	<b>E</b> 4
9	ग्रास	आत्रेप् औतम्ब श्रीतम् ६	माग्	महास्यमी	<b>इंडी</b> फन	देव	मभूते पर	रुद्रचद्र	दवे	<del></del>	<u>ي</u>
٩	शाहिल्य	आशील १ देवत १ शाहित्य १	सोम	समकरी	उद्य	<b>পিশুভ</b>	<b>अंडेम्ब</b> र	असितांग	दुवे	कारुडिया	ş
11	क्षेत्रयान	भागितस्य औतस्य । बीद्वान १	गुप्त	नासुद्दा		<b>भ्ने प</b> र	भूवेश्वर	माणदास	दर्व	कोमर	-
93	मोद्रस्स	भौगिरस॰ भारस २ मोबलस १	भीश	वरानना	भाग	इर्पस	गंगेन्दर	वेबबताल	वर्ष	क्रुपश्चिपा	· ų
	किमनस	वसिष्क भारद्वान २ इद्रममद ३	द्त	सुर्भावगर	<u>जभ</u> म	<del></del>	नागेन्द्र	रस्थग	<u>्र</u> े	पतानिपा	30
14	इरितस्	भ्रतिस १	देवी	रसन्द्री		सूर्प	भागेत्रर	व्हपाल	भोझे		

अथग्री गोडा दि बाह्मणा स ते मकरण २९ अय गुजराति श्री गोड बाह्मण और मेडतवारु बाह्मण और खरसोदे आदिबाह्मणोका उसत्तिभेदकहते हैं ॥ पूर्वी विक्रमस्वत १९९० दे सारुमे मार्गश्रीष श्रुद्ध ५ गुरुवारकेदिन वडा प्रतापी विजयसिंह राजाने अपने गुजरात देशमे द सो आहमणोक्त अच्छेगाव जागिरदेके उनोकि उत्तम जीविका स्थापन करके श्री गीड ब्राह्म णीकि ज्ञाति अर उनोका कुलगोत्र मुद्र आचार गुजराती समदायरे स्थापन करता भया १ यह बाह्मण पूर्वि गोड ज्ञाती है काश्मेर में के हुनगर में रहते थे-गहा बडा दुफाळ पडनेसे माल व्ययोगसे मालवदेशमें आयके रहे परद यशमाप्ति अच्छी होना इस हेतूके लिये जब भाग्योदय हुवा तब विजय सिंहराजाने राजीर

अयर्जरसंत्रदार्य की में डा दब्राह्मणं स्तिमाह ककिता रवं देरुद्र वर्षे सह सिन् सुम्मे बाण् तथ्यांचवारे देवेज्ये राज रा जो विजयमहम् हा सिंह नामा स्राज्यः ॥ अ गीडज्ञा ति हु दिं कुल रुणगण ना चार हु दिंच तद देशे स्वेर्ड परेयः प्रक उत्तम करे त्याप प त्वास् वृत्ति॥१॥ वामेस्वेदुक्राणां वातरगलमह् वृत्तियोग्स्त्येषां पूज्य देवीचलस्मी सकलेस्र वर्ष सावलसे करिते प्रवेगेंडो ज्ञास विधिपरवश्गामाल देवालयं गात् स्थि लेटिसह शोह प्रति एट मनसोर जेरः संप्रदायात् ॥ २ ॥ तेषां विदे को विधोन्नतनो जी ण संज्ञपाकु ही नाचू तुनाजी गी। क्नीयांस स्तथापरे ॥ ३ ॥यस्मिन्मामे चयुस्या स्तिसा ह तिस्त स्यदीक्षया नाम संज्ञांच काराकी राजा विज यसिंहरार् ॥ ४ ॥ पूर्वमामस्ततोगे नं मुबरस्ततः परं॥ अवटंका दिकंसं है लिख हे हु के मे ण हि॥ ५ ॥ गृहिकादशकं के के कादशहतः परं ॥ चेतनोनां रहाणे हिहा वेंशल रेसंख्यया ॥ ६ ॥ यडे तिया भाद्रवणे छ लेचा काँद्रभी रेकाञ्चा धेरु ताश्च जाता ।। एतऋ रंचाई दुं तं विशेषंम नः परंसप्तर्यहेचहुव्ये ॥ ७ ॥ ॥

समदायमें स्थापन किंदे इनसब ब्राह्मणों के कुलदेती लक्ष्मिनामक लक्ष्मी जीहें २ वे भी रेड बाह्मण के रेद दोहोत है उसने कुलवान नदे खूरे अर अन्य भेदहें है के नेष जानने के जिस गावने जिसकी वृत्ति है वेद उसकी दीक्षाका नाम राजाने स्था पन किया ४ अवउसमे वे श्री गींड बाह्मणों का पहिले गावकानाम पीछे। गोत्र । अवटक आदिशब्द करके उत्तम मध्यम कुल यह सूब आगे कमसे कहते है ६ अब नवे भी में डर्क घर वादीस है उसमें र्यारा घर उत्तमहै स्यारा मध्यम है ६ अब पहिले जो नदे के बाद स घर कहे उने के गाय गीन अवदंक प्रवर और-जून के नाव गंत्र प्रवर अवटंक जो है ने सर्व चक्रमें स्पष्ट दिखारे हे वास्ते यहा अर्थ न हे हिरवते ७

छणाचद्रात्त्वपाच कात्माचन्युणमन्यवा ॥ वृटीयामाटियाचेव श्रष्टेकाद्शाप्वयत्॥ ८ ॥ यडितयाकुश्कती निभवरीपीठकाम ता ॥ मात्राणिवत्प्तीपुच न्योतिर्प चत्त् पुर॥ ९॥ छालेचाक्षिशिकाभित्रम्हिवेदीचोत्तृमामता॥ काश्मीरीगर्पगोशीया जिश्वच्योति पिसङ्गारा १०॥मीरागीन्तत रूणाभेपीभिक्द्द्वेदिका ॥माराशीन्द्रभानेपीनिद्वेदीतरापरे ॥११ ॥ नाहापसाभरद्दाना मवरीक्द भिपाठका ॥कात्यायन्याभिपवरा पावका मोदसौयका ॥ १२ ॥ऋष्टास्याद्यादिपाचकिसमाम्बविपाठका ॥कपदाक्वतयासीका-मिद्रिवेदी तथापरे ॥ १२ ॥मोरियाश स्तयाशिश्वपारकेकादशे गृहं ॥अनोन्येनदेघोगत्या ठिरव्यते बूतनेपिह ॥ १४ ॥कपयाअर्थमृही-याडु निहिषेदीतनस्मिकं ॥ मुडालोटामी ह्नीया वि पज्येत्नवटं किका ॥ १५ ॥ तन् पडो् लिपापास्का मिहिवेदीत्त परं ॥ पोलकीयाया ांडिपीया त्रिंद्रिवेदीचतेमना ॥१९॥६पटावोटलीपाचुमुजुगाच विपालका ॥ प्रवरेत्त्रिश्वतेच्यासा विधिश्वा नंसमीमत ॥ १७॥ शिहांसि यावशिषात्र त्रिक्षिद्वृत् पर्ममूस्डियापाराशर्यात्रवरे स्मि सुन्योतिष ॥ १८ ॥ पेटलाई अस्पानेयान्ति पञ्चेत्विसुता ॥सु दरीपानामककात्रिर्व्यास्तिमकीर्तितो ॥ १९ ॥ कपराटीपरीयाऋँ वत्समा यच्ज्येतिषा ॥ दर्भावत्याभरहाजा विज्योतिष्ठसहता ॥ २०॥ स्त्नानाकमोत्येषः जीर्णानाचनतः परः॥ इतिस्तनानुक्रमः ॥ धक्रोयिपावत्सपीचपचतेवे दिवदिकाः ॥ २१ ॥ धोलकीपाषः सपीनपचीपाध्याव्सरायाः॥ उपस्रीयक्सपा पचपारकैत्यवराकेकाः ॥ २२ ॥ दिस्पणीपचवस्मस्यज्योतिपामेरुसीयकाः ॥ भाराषी णभर ग्राजास्मि पड्येतित्युदात्का ॥२३ मधिकण्यागभरश्चास्मिर्व्यासितिचनेमवा ॥चचोलियाभरश्चास्मिदीक्षितउदाह्नता ॥ २४ ॥ भडकीदराभरहाजास्प्रिमंहानुबरकूका ॥ कपेडीकश्पपात्तह्र स्प्रिव्यामाख्याउदाव्हता ॥ २५ ॥ सागमीचत्रआत्रेयास्प्रिज्यातिष युटकिका ॥द्वागार्छणाञात्रेयास्मिन्यानिपउवाहनाः॥२६॥नागिऽपाषाडिलाभ्यविभिज्योनियम्बटकिकाः॥साथलीयाभ्यकारीनाः क्षि पडपैस्परंक्षिका ॥ २७ ॥ भारतजानास्त्रीपाञ्चवीसिता भवयरमयः ॥ रवेडालाबिद्दलसिपाद्विवेदीसङ्गकारमयः ॥ २० ॥ गभीरियाच कीशिक्पास्त्रिज्योतिपजदात्वता ॥सधाणियास्वमीनस्यास्त्रिज्यितिष्यवटिककाः॥३९ ॥ ॥

लांछलारं तरीयाश्चा त्रेयं यह षस्ंज्ञया।। जंहसरा के शिकाश्चदी हिताः प्रवरास्त्रयः ॥ ३०॥ धाराशिण याः शां डिल्य स्त्रिज्ये तिष्उ दाहताः ॥ धनस्रराः कश्यपात्र्य त्रि पंडरे त्यद्दे दिकाः ॥ ३१ ॥ के चन्मूह तः संजातास्त्र जण हुक्तरेण है ॥ एवं रे दहरं च त्का हन्य रे दा ू न्वदाम्यहं॥ ३२॥ ॥ अथम्डतवाल बाह्मणभेदकमः॥ ॥ श्रीगोडौतर्गताधेचमेड लालस्यवंशजाः ॥ तेषांस्थाना नेगे त्राणिकष्यं तेन त्येवटंकके॥ ३३॥जरगालाऋत्यावेया .पंडता अवरास्त्रयः॥खलासपुरवासीयाःसांकता स्त्रिस्त्रिवा टिकः॥ ३४॥ वलायता स्त्रिः प्र वराः पं डेताः श्रीवमेडता. ॥ आम् जोश्लवाभारव्यस्तस्यवंशे च लिरव्यते ॥ ३५॥ अगिडे मे लितोयसाह्यरं नीयो विधेर्वशात् ॥ शिहे रियार पाटलाइरेसराचर ठला। ३६॥ धामणी दरिया अवैव मेहलाण पुरस्तथा ॥ नवर्षा सन लतयकवागे ल सरथैवन ॥ ३७॥ हरे फ-ष्णाः जीर्गे इज्ञा तिभे देत विशेषं प्रवदाम्यहं ॥ जीर्गोडानां पर मत स्त्रये भेदा : भवन् दुरा ॥ ३८ ॥ मासर यामेडता इत्यासीयाइति हे धा।।मालरीया दिधाप्री के :जीए तुन् करेताः।। ३९॥ यह िधानूतना अतेषांनामानिकथ्यते।। रवारे लानूतनार्के वरवसे दियाम्बा सिन ंहें।। ४०॥ सूद्रकेन्याप रेणया है रों छी इति है स्मृतो है।। हुरागे उब्रोह्मणाश्च काय्मे रदेशवासिन है।। ४१ ।। अत्र तैसा हिण सेवेलस्मी ता नेनि भिक्काः ॥ जाताः श्रीहर्नेनगराभिर्गताश्व देशं देश। ४२॥ मारु वेच्यताः के चेन्सरु चेन्सरु चेत्र परे ॥ श्री शें डाइ रियक्य स ं भेक्तरसींगतः ॥४३॥ ॥ वाल ब्राह्मणभरं उनीका गोत्रावटक स्पष्ट है ३३। ३४ । ३५ । ३५ । ३५ । अब श्री गींड ब्राह्मणमेजी विशेष

में वहीं भी भी कित वान करते हैं १ महतवाल की गीड मालव देशसे आये वे उत्तम वर्णाश्रमधर्मकु पालन करते हैं १ महतवाल की गीड यह मेरट से आये वास्ते मेडत वान सवे बाह्मण बहु मा स्व के प्रवाति है। भवाति है। भवाति यह बाह्मणवाग्ड देशसे आहे प्रवाति ये कहते भवा सियह बाह्मण बहु धा स्वधर्म से विस्रव रहते है। अब जोन निलं शी भी के से प्राप्ति में दहें जून और नव ३९ नव के गेंड चार प्रकार के ही खारीला गावमें रहे वासी रवारीला श्री गींड नवे प्रसिद्ध है रवरसीद गावमें रहे वा ं गरसी विशे भी मी मही ४० और चीया भेद ऐसाहै कि जिनोने श्रद्रकन्या केसाय विवाह किया वास्ते डेरोला श्रोगीड भटे वे सबसे जूदे है यह सब गीड ब्राह्मण पह ले काशीर देशमें रहतेये ४१ मितपह नहिं करतेये परत कोईन्सन नहमीके शापसे भिष्मुक भये पाछे मीइहुन्तरमंसे बाहार निकसे तो आहा निनक अखा तगावा हाग प्रश्नोद माछने में भागे कोई मारताड़ में आये कोई वाग्य देशमें गये अवगीन बाह्मणोंका भौगेन प्राव्य के निम्त संभव के प्रश्नेत भागे कोई मारताड़ में भीद को भेदक छोड़ से सोन परस्पर कसा उक्त है ४४ अधापि इनोके विवाह में गीरन मोजनक दिन नहमी कुन दे कि निवाह में भीर को अवस्थित है के स्थान परस्पर कसा उक्त है ४४ अधापि इनोके विवाह में गीरन मोजनक दिन नहमी कुन दे

एपामोजनसम् कत्पासम्य एवन ॥कार्य सर्वेद्विजैर्निस सन्कामेद द्यवृधे ॥४३॥ अद्याप्येपाविवाहेतुगीरवास्य दिनेद्विज ॥उ त्यम किपतेन्द्रमा चुनपानत्येवन॥४५॥ ॥इतिभीबाह्मणोत्मिनमातेबाध्यायेश्वीगीडमेडतवात स्वरसोदियादि भेदवणननाम मक स्ण २० पनद्रविष्टमध्येशुर्नरसमदाय आदित पद्यसस्या १४०६, थ्र छ छ छ

==						इतिका योषु मेद				ધ્ય		<b>ಆ</b>		•	ኝ	•
	<u> </u>	(नतन क्रम)			_* <del>7</del>	<u>थित्रीगीउ</u> जा	स्मणोकागो	17	भगर अन	न्कक	स्पर	चेक			<del></del>	
<del>स</del> —	पामनाम	गीम	मस असरे ह	<del>। उसम्पर</del>			संसायन		गरक	<u> </u>		क्मराचीयरिया	ঞ্চাত্মি	``	प्यास	
	वंदेखना	<b>4848</b>	् पसक	_	- ~	क्रपदामुहिका		<u> </u>	<b>र</b> र्न	7	7.3	शिहादिया	पश्चिष्ट	<del>~</del>	34	<u>`</u>
_	भादागिया	स्स्रा	५ नोगि		70	क्रम्यानुस		_`~ 3	दर्ग			मसूरिया	पासगर	<u>-</u> -	भौशि -	
	<i>जातेच</i>	<b>NAME</b>	3 EV	T	33	मोदिया		<u>.</u>	पाठक	<u> </u>	- <del>'</del>	<del></del>		<del>.</del>		3
	<b>स</b> रमीच	74	3 मीरी		<u> </u>	क्रम्दा	অমি -	<u> </u>	₹	<del></del>	' \	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	<u>জন্মি</u>	3	पंड्या	<u>্</u> ড
-	ने मरिक्	क्र्यास	3 - 54		-7	<del></del>	'	<u>२</u> _			<u> </u> ૨	संदरिया	पामक्ष	3	•ास	ॅठ
_	मोग्राधिका	<del></del>			<u>~</u>	मुहार्क्ष	मद्भ	1	-पे <b>ड</b> पा	3	3.1	क्रमचारियारिया	<b>T</b>	_	<b>नोरि</b>	
_	सहापद्धाः सहापद्धाः	चेत्रात्रेय	३ दर्ग	<u>র</u>	14	प्रमिक्षण-	पासक :	}	रव	3	<u></u>	दर्भारता	भरद्रान	<u>.</u>	मोशि	
	गहारच	भराम :	१ पारक	उ	14	पंत्रक्षिप-	संदियं १	<u>`</u> -	<del>त</del>	<u> </u>		প্রথনীত্তিক		<u>₹</u>	411.41	- 3

19	<b>दुं</b> डावा	<b>ख्यात्रिय</b> २ जोशी		अथ मेडतवा	ल क्रमः	99	नलनदाकडागोला		
	सागमा	चद्राव्यं ३ जोशी	ચ્છ	धनसूरा	च रयप	30	<u> </u>		
٤,	कर्पडी	कश्यप ३ प्यास	ર્0	धाराशिणीया	बांहित्य ३ जीपी	९	र हलागा		
4	भडकींद्रग	भरहाज ३ मेहेवा	16	<b>जेंद्र्</b> सरा	कीशिक ३ दीसित	5	<b>भामणोदरिया</b>		
12	चंगोलिया"	भरदान ३ दीवित	35	बाखवा	र्गतम ३	ঙ	वेटला		
4	निरुणगरा	भरहान ३ प्यास	90	संधाणिया	मेनस ३ जोशी	ધ્	<b>हरेसदा</b>		
4	<u> थाराशिणा</u>	भरहान ३ पंड्या		गंभीरिया	फीशिक ३ जोड़ी	ų	वेणयला		
"	हिंदाणी	उत्स ५ जीशी	*	खंगला	विंदुउस ३ द्ये	ß	विद्यारिया		
3	उपन्तीरा	यन्मपी ५ पाठक	32	भारजा	व्यास ३ दीसित	3	यसायता	3	<u>पंड्या</u>
	र भोजिकया	नगुपी ५ उपाध्याप	73	भायलीया	हारीत ३ पंडपा	7	खळासिया	सांकतः :	१ भवाडि
	1 पनोक्तिया	वतापी 🗸 दो	73	-गागडिया	गाडित्य ३ जोत्री	3	अरगाना	भाभ :	२ पड्या

अश्रास्त जाह्मणां स्ति मकरणं ३० अन्युक मध्यवाह्मणोकी उसात्तिक हते हैं निसवखत पिताके आत्रममेसी सब छोड़ है अकदेवजी जाने छगे उसबखत प्रेम रसनासे प्यासजी है पुत्र है पुत्र ऐसी पीछेसे हाः अयर सुक्बाह्मणोत्मित्तम् गमाह उक्तं पादे हे जटेशमह त्येन्दु हिंदी ब्धायेख यासुकः समग्र व्यासंक्रेशितम् तम् नम्स् सपिदुः पादे स्वाभागवतं सुधः॥१॥क्रत हेवा हें जम्दिन्नातु सादयत्तः। भ्रवेजवाद्गमाहात्म्यं ऋत्व पद्मरं वरं॥२॥॥॥ ॥ क्षमार

ने लगे तब खाया शुक्रजीन पिताका रहे ह देखंदे नमस्कार करके भागवत श्रवण करके १ पितादे साथ चर्छ आयदे दिवाह वियापत्र सतान प्रये पीछे श्री द्र वेड देशमें प्रसिद्ध

भी पंकरेन्यरका महात्यसुनक पद्म सरीवरके बाहा २ आपके बहितपञ्चर्या किय बाद शीर्षकट न्यरके उपयोगमे आव वास्त सभामउपमी पारप ऐसे कमल प्रमोसी मानसपुन क्तमी आरुउसन् कियं व उनोकु ब्रह्मविद्यापदायके सवाकु मायले के वेकटवापरीत के अरु आयती वाहा भावपद तुकु प्रामे ब्रह्मान निर्माण किया हुया सायक टेवाका असर नरे रहाहि सोवेरवर्क बावकटश्की सेवानिमित्त सुक्रवेक्जीने उसवम वेयक पाहक के विकाण एकसी आव अपने मानस प्रमोक्त विये ५ उसाय कुने बाव अवण नक्षमके दिन व्यवस्थ तस्मानदुवा पछि शुक्देवजी प्रसन्निक्त हायके अपनेमानसपुभ सहवतमानस्मामि पुकरणीमे स्नानकरके ६ सामागडपमे व्यायके कहने छगेकि एजो मेरे एकसी व्याव

माप्यकुल्सम्सावसराकुन्द्री स्नत्॥सभेपून्मानसान् पुत्रानकोन्तरदात हिजान्॥ २ ॥तानध्याप्यवस्यविदांते सहाद्रिगसोस्नि ॥मा सिभाइपरेपुण्येबह्मणानिर्मितोत्सवे ॥ ४ ॥ वर्तमानसी निवास सेवार्यन्यास पुत्रके ॥ वत्सवेबाहुनान् कत्वावातमञ्जेतरहिजान् ॥ ५ ॥ उत्स-वातेचानभूतेमनणायीप्रसन्त्रथी ॥स्मात्वाचस्वामिसर्सितिदिजी कमछाज्ञव ,॥६॥सभायानेकदेशस्युनाइकार्यच्याजिश्वपत्॥सनाम्ना-यसुरव्यम्या क्रमसुरेश्वर॥ ७ ॥तस्तेवसमावसस्यजीवितशीपतेसुरु ॥सेवादुर्वत्वाप्रस्यवादकाउत्सवेषुते ॥ ७ ॥सुलासुनिवचादेवःशीनिवा मुस्तेयास्विति ॥ छायासुकस्यात्मजानासभ्यानाजीवमत्रवीत् ॥ ९ ॥ महात्रोकाजैगमिषु पुनेश्लोयासुकोपुनि ॥ छायास्वेतसभाईचेभानुपदास रोदरा। १०४ मदिस्णीकृत्यस्य स्थीयतामितिन्तृत्सजान् ॥भारहाजादिषद्गामान् शतम् दोन्तरसुधी ॥११ ॥ सभ्यान्सभासद पादानुबन्दाऽऽ काशजगामद्गाः देवदर्शनज्याच ॥ जुक्कपष्पसरोजन्यखोपासुकसुनैरपि॥१२ ॥ सेभार्हाणांदिजातीनासुकमानस्जन्मेना ॥१३ ॥ इतिसुकबाह्म णोसत्ति भकरण ३० पंत्र ब्रविड मध्ये द्रविड समदाय आदितः पर्यसस्या ५४९९

नम् अन्हे न नीवकटशकेनाइकार्य स्यापन दिये है और इदेव मयन मर नामस आपुर निर्माणिकियाहै ७ औ गानकानाधान्यहे नो आपकी सेवामे अर्पण्हे। और ये मेरे पुन मछय पर्यवण्यामेके दिन बाहक पना करके सेवाकरो ८ ऐसा लुकका बन्न सुनक बकने शुमश्चन अस्तुकहरू शुक मानस् पुनोक विरजीन हो ऐसा आशिवाद दिया १ पीछे शुकदेवजी ब्रह्म खोक-जातीयस्वत रूपा वरुभद्र सूर्य पद्म सरोवर इनो कि प्रविक्त भारदाजआदि छ नो पद्मे अपने मानसपुत्रों के भी वक्त दश जीकी सेवाम रहा ऐसर कहे के अ असम्प जो अपने पुन

और सभासबोकु कहके आकाशमानसे बर्तगये ऐसा पदासरोबरका माहात्य और सम्य दुक ब्राह्मणोकि उसत्ति कहि १३ द्वि प्रकरण ३०

करते भरं तबसव बाह्मणोर्न सेवकोका दु रवदेरवके सिन्द्रमाताके अहु यह से अंडाह रदेख कुमार है ३० वनियों के कन्या बनिये कु देते भये तब बाह्मण बन्धि सब-आनंद ह्र पी अमृतस्तीरंद सुखमे पूर्ण रहते भदे ऐसे होते तीन हु गदी तगये ३१ आर. कि सुग आयके पाप्त भया उस बखत दिसावाल बाह्मण दान भ ते यह करते नहते अ भित्वाखंडन करने के वास्ती कि हिंदु गने कपट से बाह्मण का वेश ले के ३२ दिसानगर में आयके एक दिन एक के घर कु कन्यादान हूं रहाया वाहा भ ते यह के ने भित्त से वाविवाद चला तब से वक कहने लगे कि इस गाव में को इयाचक नहि है तब कि बाह्मण कहता है हमतो भित्र मह करने के नहि अर भित्र महि करने बना विवाह होता कर्याद दस्त तह सेने ह्यानंदा मत पूरिता: ॥ जाता हिज ऋनंदा ऋह गान्धे दंगता है च ॥ ३९ ॥ का कि दि दास मह करने हिल्हे हुल ॥ म

वाविवाद चला तबस्विक कहेंने लगे कि इसगावमें को इयाचक निहें है तब कि बिना स्मण कहता है हमतो प्रतिपह करने के नहें कर प्रतिप्रह करने बिना विवाह हो कि क्यांद दुस्त तर् सेन्द्र ह्यानं वास्त प्रतिशः ॥ जाता हिज करने बिका हुए तो कर तो कर ॥ अ० ॥ का लिए हा से में से हे वा हे सह प्रति हों वे वह सह प्रति है हों वे वह सह प्रति हों वे वह सह प्रति है के विवाह के वे वह सह प्रति है है विवाह वे वह सह प्रति है है विवाह वे वह सह प्रति है के विवाह के वे विवाह के वे विवाह के वि

नहें है वास्त्र यह बाह्मणजे अते मह करें तो मयर्प मिट्स क स्वा ३३ तब ऐसा बडा के छाह्छ है - लगा उस बखत दिसावार ब नियान अतिर्द न तासे मार्रना किये कि दुमने मित्रह न किया ते हमेरा नाश है ताहै तब ने द्याल बा-ह्मणस्वकोका बन्व हुन्ते कछिड़ गको आयासे में हितमये पूर्व स्मरणनरहते बलात्कारसे अतिम ह किया क छिट्गेन प्रतिमह करवाय के ३४ सह हे गया ए के दिसावा क बाह्मण जिसवस्वत घरमें आते हैं उसके पहिले हि द्वागनास व अति मह दोष संस्वर में न् लिगइया ३५ अब बाह्मणों अपने अपने अपनि अपनि अपनि स्त्रिया कु नदेख तं बढे दुः खब्या कुल मये और पत्ति मह बलात्कार संकरवाया उसके लिये से बक्री कु के धर मार्रन लगे उसब स्वत सब दिसावार ब र ये घचराय के ३६ जो दशा है नामक गावमें जाय करहे व दसा दिसावार कर कि सार्ट सार्ट अपने पी

दिनतग जितनी शमणा के घरमे कुमारिकाहै उनो कापाणि पहण जो बायडे बाह्मण करिये तो तत्काल उनाका मृत्यु होबेगा ४२ ऐसा शाप देक अरिपन्छे गये बाद में सी खाइजार कन्याकुमारिकाबोकुसायलेके ४३ उनाक पिता वेशदेश फिरते फिरते शिसागावम आयक सिम्हमाताकु नमस्कार करक कहते है है ईन्बरी द्यानि पी ४४ सव वाशापवायुवान् विभान्कन्यका राहसास्थिता ॥ता राहिष्यतियेविभास्तेमरिष्यत्यस्यया। ४२॥ एवशालाग्नैतस्मिन्कन्यकापूित्रस वा। कन्यापोडश्रासादस्त्रसमुहसम्गर्धच॥४३॥भ्रमनादश्देशान् सिद्धमातास्यस्ययु ॥ सिद्धमाताभणस्योचु कपोकुरुद्यानिधे॥ ४४॥सर्वन्यापरिणयभार्धेवक्रीयनास्त्र॥तदास्मत्त्रयमि द्विधमम्बरिसनोष्ठवेत्।।४०॥ सिद्धमानानदोषाँचवायडान्प्रतिदृष्टिधी ॥युप्ततार्यक्रिष्यामिपरत्वत्रविप्रयूप ॥४६॥सस्यामध्ये सिनस्मादेनदिचारकुरुषया। नदेवाचुद्धिमा सर्वे सर्वासप्रतिदेनवे॥ ४७ । ज्ञाल्याद्राणा विभाणा कन्यू के हे सहस्मक ॥ बानबाहरण कत्वागता इत्यन् शुभु ॥ ४० ॥ तान्ह त्वाता स्मानी यपुरमध्येतत प र ॥ सर्वेषाकार्यसिद्धिस्यादितिसर्विनिवेदित ॥ ४० ॥ षायडानाबुच अफला सिन्द्राबाबाक्यमव्यवीत् ॥ मत्मसादेन फोविया हत्वातान् दुप्दा नबान् ॥ ५० ॥कन्यामानीयताशीयमितिमानाप्रचोिन ॥ तथैवकत्वातेषित्रा सिद्धावापुरवासिन ॥ ५९ ॥ कन्यस्य हीत्वाता स्वा मा तु सन्निधिमायश्च ॥ वायडाब्राह्मणास्तत्र झारोठा बाह्मणास्तथा ॥ ५२ ॥ अमातादशैनपुरकन्यावानार्थं मेवहि ॥ अखादशसहस्तेक्यो-ब्राह्मणेक्यो विधानतः ॥ ५३ ॥स्वस्वकन्यात्रवानवेषत्यक चक्करादरात् ॥ ततः प्रभृतिनेस विश्वाह्मणा हपनिर्भराः॥ ५२ ॥ ॥ कन्यावाका आजहि

छे बाह्मण पनियोका कैशशात भया तब धनियेसेबामेतत्पर रहे ३० बाह्मणांकु देवीकी उपासनामे जिसवस्वत नबदिन उपोपण भये इतनेमे एक भरी पायडा पुरमे आवुके ४०एककुर्याम्गी परनु कोड्बी माह्मणने ने उत्तम ऋषीकुकन्या नहि विषातन ऋषिकु बडाकाध आया ४१ तन वायडे बाह्मणीकु बापवेत है कि पाज्

विषाहकरो निसेक्रके उसमें हमेराकायहोंचेमा और धर्म सुरक्षित रहेगाएन उसकरत सिद्धमाता प्रमन्न किस वायडे ब्राह्मणोंकु कहने हैं तुमेराकाम मय करति हुए रत्उसमें थांडा कमजाता है रध सरव्यामें इसवारते जिसी सरवाधण होने वेसा विचारकरोत व वायडे ब्राह्मण कहते हैं हे माता अवराह जार सरवािक पूणता करने केवा स्ते ४० झारोले ब्राह्मणोंकि दो हजारक न्यावोक्क देश हरण करके गये ऐसा हमने सुना है ४० बास्ते वेसा किस नगरमें लावे तवसवोक्कि कार्य सिद्धि होत्य इस्तात कर्या ४९ वव वायड ब्राह्मणोंक व ववसवोक्कि कार्य सिद्धि होत्य इस्तात कर्या ४९ वव वायड ब्राह्मणोंका वचन सुनतं सिद्ध माता दिसावाल ब्राह्मणों कि कहती है हे ब्राह्मणांका मर अनुभवसे वेद्य देशोंकु मारके ५० कन्यावोक्क जन्धी

लाव ऐमा सिद्धमातान कहा। आज्ञा करने वैदिमावाल अदागह जार सब बाह्मण देवीकी ईप हातमे लंके देवीक मारक ५१ कन्यालेके देवीके सत्तुख आते मर्छ पी छेवायडे बाह्मण झारोले बाह्मण ५२ कन्यादान करने कंवास्ते दीसागावने आदे और अग्राहजार दिसावाल बाह्मणीकु ५३ वेद विधीर प्रत्येक ब्राह्मण कु अपनि अ पनिकन्याकादान आदरपूर्वक करते मरे विवाह भरे पीछे सब बाह्मण ह पैत होयके ५४ यजमानस्त्रित दिसार रहते भये एक ककलना मकरके ब्राह्मणजो दि। राजा कान् प्रधानया ५५ वी अपनासमूह लेके दीसानगरमें आयेक देवीं के साम्ब अति उत्तम होम केया गावक सबलोकोल मोजन दिया ब्राह्मणीकु अनेकदान दिये उसकी भक्ती

नासनकुरसरंनेवयजमानहरःसराः॥ ककलाख्यो दिजक श्रिज्यो तेः शास्त्र विशारदः॥ ५५ ॥ स्निद्धमाताष्ट्रंगल होमं रक्ते विधानतः ॥ ग्रामिणा भाजनंदलातथादानान्यनेकश्रा।। ५६॥ प्रत्यसंदर्शन प्राप सिद्धांबायाः कलीयुरे॥ घरिने घरिव्यासाचात् वरंकाश्यसंति है॥ ५७॥ चरितंक यतंत्रेत त्सर्वदर्शनवा सिना ॥ व णेजांबाह्मणाना नज्ञा तिज्ञान प्रदायकं॥ ५०॥ इतिश्रा बा॰ दर्शनपुरवा सिन्पव णिजे सित्त वर्णनना मणकरणं ३२५चे द वेडमध्येयुक्र रसंप्रदायः आदितः श्लोक संख्या ३६७७ ७, ७ ७ छ के को को को उप

कित्युगमें वि प्रत्यक्ष दर्शन दिया ऐसा सिद्धमानाका चमत्कार है यह दिसावारु बाह्मणोंमें धिकजी चोधिंग व्यास जो शि सवल पंड्या अध्यारु मेहंता आदि अ वृदंक है गोन आवहें और इसजाती मेकोकिलमत्कु मानतेंहें ५७ ऐसा दिसावारु बाह्मण व नियोका चर्नज्ञातीका परेज्ञान होनेळ वास्त वर्णन किया ५० इति बाह्म ण सिनि यंथमें दिशावारु बाह्मणवियों के उस नि मकरण ३२ संपूर्ण ७, ६० ६० ६० ६० ६० ६०

## उष्टें डा न स मिया नि प करणां ३३

अव वाजभीतरे रहेडावाल ब्राह्मण अ'र लाड बनियं उनोकि उसिकहरें है गुजरान देशमें आहु गडरें दिसिण दिशामें ब्रह्मरदेर नामकरके एक पुरहे १ उसकास सर्गमें ब्रह्मपुरनाम वेताहुगमें द्वापारहुगमें व्यवकपुर नाम कि इ. गमें ब्रह्म रहेटनाम है २ वाहा हिरण्या महानदी है उसके नजीक भीमर्थ साफ्नमरों का संगमवड़ा एण्य कारक है २ और नागत्दद तीर्थ है कार्तिक मासमें वाहास्नानवड़ा पुण्य कारक कत्या है ४ वो ब्रह्मरदेर नगरमें ब्रह्मा सा विज्ञा गायकी यह तीर्य देवता विश्वजमान है- और जनकर देवता रहते है जिन के पूजन करने से इच्छितफल भास होता है ६ और अविका देवी वाहा कराजते है नि

रस्ना उमस्परमा प्रजाका पालन करताया ९ उस राजाकु वन्ययं समया परसु पुत्रविना निष्ठ विता करते करते बोहात काना या १० उस ईंडरमे एक वस्तत इतिहआहर्र ण तामपणीनिरीके तटकपर रहने वाले वहीं नेष्टिक ११ पामाकरनेकु निकले सी कावेरी नुगमहा क्यार तापी रेवा महिमानमित यह निर्योका दर्शन और साम अविद्विधरनेटकबाह्मणोसातिमाइ इरिक्रणा एर्जरेविषयेरम्यब्रह्मस्वेटकसज्ञकं ॥पुरमस्तिमइहिव्यदक्षिणचार्नुवाचलात् ॥१॥ छवे ब्रह्मपुरनामभैतायान्यवकत्या॥द्वापरेसेवृतिस्यातकल्येविब्रह्मरवेटकं ॥२॥अस्तिवन्मदीपुण्याहिरण्यारव्यानदीसुमा॥ तैनवस्यन म पुण्य नरीद्वितयसंभव ॥ ३॥नागद्धवीपितत्रेवकार्तिकै वहु पुण्यदः ॥यत्रस्तानेनवानेननर्गनिरयेवजन् ॥४॥ माममध्येनिवसति दे बोबेपबासभव ।। भागीइयेनसयुक्त तत्रासादस्य पूर्वत ॥ ५ ॥ वापिकास्तिमहारम्यात्नमध्येकु ल देवता ।॥ यासाप्रभनमाभेणचेप्सि-तंस्रप्रतेनरः ॥ ६ ॥अनिकारन्याशिवायवसर्वप्राणिहितेरता॥ मानसारन्यसुरस्तश्रुनिर्मुकोदकपूरित्॥ ७ ॥ तस्मिन्देशेनरपूति अभियोक 'खुवलकः ॥ इत्बुद्ध<sup>र</sup> गुजशानितस्यभूपस्यवाभवत् ॥८ ॥पालयामासश्मेणस्योभजोषुत्रवत्तुं घी ॥ सत्यसैधीशर्मरती गोबाह्मणा**ह** र्वेस्त ॥ ९ ॥ सस्पेर्वे चर्यस्तोपिचिवार्वभूगापतेरभूत् ॥ एवचित्यत् कालोमहान्तस्यगृतः किल ॥ १०॥ तुर्वेकदादिजाः, सर्वेद्राविद्यास्य समागवा ॥ तास्पर्णनिदी तीरेवासिनाने रिकासमारे ॥११ ॥कावेरी तुमभद्रांच कथा। मित्रात्मजातथा ॥रेवां महीच्ट्रहेवस्मात्वासाक्र मतीवतः॥ १२ ॥ सिन्न्सोत्राद्यनेकानिसेवयतोसुनी स्या ॥ हिरण्यास्यानदीरमातुं द्रष्टुं वैप्यसम्बन्धः ॥ गरुपूर्णनिदीं हङ्का ऊचुर्ना-विकमभतः ॥ क्रिण्यां स्याप्परंपारुन्यतास्मान् हिनाविक ॥ १४ ॥ नव्यद्गव्यदात्र्रेस्त्वासीवाचनाविक ॥ ऋयविनापरंपारुनेनयां मिसु नीन्या ॥१५ ॥वन्यूताकुपिता सर्वेध्यात्नादेवनपद्मज॥आस्तीर्यस्थोत्तरीयानिवेनयाता परतरं॥१६॥रङ्गानेवाविदादेवींपूजिय-त्माचपद्मज ॥पुनस्तरिया परपारजन्मु पूर्वययागता ॥ १७॥ करके १२ सिद्ध प्रविद्व सरोवरमे न्यानकर्के वाह्य शास्त्रादिक कर्के सुनियोके आसमदे रवते देखते हिरण्यान्दीमेरणानकरनेके पास्ते भीर्त्रमाके दर्जन करनेके पास्ते १ १ इउरके नजीक आये पहा किल्पानदी नज्य है हिर मेजा सकते निह है वास्ते माववा छे क इने लगे कि है नामवाले हम सबोक्त नदी के उसपार लेजा १४ हमपैसे नहि देन के तब नाचिक कहता है कि इच्यदिये बिना उसपार से माने का नहि १५ ऐसा उसका बक

मेंछजलभराहुवा ऐसा मानमसरोवर है अवसदेशकासभा बणुबलानामक इत्वदुग (उफ ) ईडरमे रहकेराज्य करनाया ज सत्यवादी पूर्णत्या गोबाह्मण उमर दया-

सुनते ऋषियों कुं की ध आया ब्रह्माका ध्यान करके अपना अपना उत्तरीयवस्त्र पानी के ऊपरिविद्यायके उसके ऊपर देव के नदी के उसपार नये- १६ गाममें जायके ब्र्-ह्या सावित्री गायत्री अविका इनोका दर्शन प्रजन करके पुनः नदी के ऊपर उपवस्त्र डाल के उसऊपर देव के इसपार नले आये १७ उस सब मुनिस्पर्म दीभाइ सुख्य देवों कावाले ने राजा के पास जाय के वस्त्र के उपर वैठ कर नदी के पार आये यह बृत्ता त मुनियों का कहा १० राजा ने वो बचन सुनते बढ़ा आश्वर्य पायके सवो के दुर्हाय के अधि-विद्या करके अपने पास रखे १९ एक दिन देश वस्त्र जा समामें सब ऋषियों कु प्रश्न करना है कि मय पुत्र हीन का यसे भया २० नव सब ऋषी में ज सख्यद भा इहे सो रा

का वध किया है २१ वास्ने इस जन्ममें अपुत्रभया है यह बहा है त्र मुं पुत्र है विया कर ने प्राप्त कर ने

वेशुवृत्मसाद्राराजापरोपक्रणोरतः ॥ दृष्टावातान् हिजान् सर्वान् वेदशास्त्रार्थपार्गान् ॥ ३१ ॥नामगोत्रादिक्स्विताताने पाहिज्-न्मनां ॥ हिस्तित्वाग्रसरीत्वावैनागवद्धीदरुखिमे ॥ ३६ ॥ चतुर्विषातिमामाणिकातवर्णा निनानिच ॥ भवदी दिजवर्यभ्यो ताचुलानगं ना विच ॥ ३३ ॥ अयुर्येमस्थितास्त्रवेष्ट्रार्तः समीपतः ॥ वृतुस्त्रग्रहः सर्वेस्वर्णगोदान्युत्तमः ॥ ३४ ॥ तनामस्नानिर्विर्वेवासायस्थलददी ॥ चतुर्दशशनेभ्युञ्चस्वकीयेखरकेषुरुँ॥३५॥ सुपमनिविणिक जातिरुदिद्यानि विकतः ॥ प्रतिकामकरोत्तत्रसभामध्ये विशयत ॥३५॥भदी या भिष्तवदेशेमामुपुरेतया॥तपुष्मान्पाऴिषयित्राभकाषा विचारणा ॥३७॥ वयसवैस्तिया मलागदेशसमुद्भवा ॥कालपी गान्धमेष्नराजाता सर्वेषुनीत्रम् ॥ १८ ॥तस्र्रहाडवणिजः स्ट्रुबावर्णधर्मतः ॥नुम्स्कारणम्त्रणपन्यज्ञाः सर्वद्धाः १९ ॥ भा-धानादिविवाहाता सस्कारायमकीर्तिता । तेसर्व-वृषकतव्यावदमत्रीर्विनाहिजा ॥ २०॥ पीरोहित्यचतेपावैकर्तव्य मविषाकित ॥ यहवमानक रिप्यतितेहिदंड्यानसभाय ॥ २९॥ एवपेस्वेटकेयामेस्यापितावधुनाहिजा ॥ तेस्वेटवासिनाविष्याः यामाप्यतस्वासिन ॥ ४२॥ ॥ अक्षरहेरे से चोनिसगानिये २१ प्यवेशनताके समीप माम्राम्यणये उनाने सुवर्णगावानका मतिमह किया २० मवराजा मसन्मक्षीयके वे चीवासी ब्राह्मणीकु अपनेब्रह्मसे टक छरमे रहनेक्रस्यलदिया ३५ पाहा राजाका मत्रीप्रधान लाउ विविधाया उसने समाकेवीचमं मितिशाकिय कि ३६ मर जातीके जिननेदेशगाव नगर पुरीमें रहनेवाल है य

सन तम्यपालन करेग इसमे सशयनहि है २७ इमसनकात्रियहै पूर्वी छाट दशम रहनेवाछ वास्ते हमेरि कातिसमूह का नाम छाड़ भयाहै परत काछ योगसे सनिय धर्म सेष्मचहोगये है २~वेसन छाड़ विनये सञ्दूष्ट्रधमसे नछते हैं उनोने नमस्कारमवसे पत्रमहायज्ञ करना ३९ गर्शाधानसे विशाहात घोड़शकर्म सबकरना सोवेदमन रहित पीरणपंत्रसे करना किवनेक देशमें ये छोक अपने कुस च्छू द्रवर्णमानत है किवनेक सनित हिवनेक वेश्यल मानते है और धन छोभा द्राह्मण उनो कु वेश्य कहते है कर्म

दरबाजे बदकरबाये २ - तबबोछोटे भाइके अनुसायि २५ बाह्मण गावकी भीत अमरमे उल्लघन करके जलदासे गावके बाहार हागम १९ ईउरसे बाहार होगसे बे बाज खेडाबाल बाह्मणभय वड धर्म कर्म म निष्रृहनबाले मिनिमहक्रतनहि है हालम वह पडे एहस्य ग्रनरात्मे औड उमरेट मातम् त्लगहिंद देशमे पीना

पर्नमधराप्यनद्रतजानुर विणवन्ती आदिगावोमे मस्दिहे ३ अववेण बत्याजापरापकारकरने कु वडानसर वेवाज खेडावालो कु वेखके ३१ उनोका चाम गान्न सबजानके बाह्मणोकु मालुम नहीव उस रीविसे गोन्न और मामकोनामकी चिठीतावूल बाडि मे रखके ३२ चाविस गानक बाह्मणो कु लकार जिसके अतमेश्र वैत्रयमरीरा मुख्य इहते है परंतु शहके यो ग्यबी कर्मकरवाते निहिंह परतु रेलाड बनि ये धनगर्वित ऐसे अन्यतर है कि जिनोज़ कर्म में ज्ञान निह है मुख्य बचन मात्रसे वैदेय लमान के आनट पाने हैं असी देखों मेन्यीन्यहलोक क्षत्रियवणी हैं और हाल के बखत में सच्छूद्रवर्ण के धमेसे चलते हैं अर मुख्य वे देखल कहते हैं यह फियाँ द हम-ने किसकु कहना है कलिग जा मुमकु धन्य है ऐसी गरवड दूसरे वनियों में वो हैं असी ४० अवराजी का प्रधान कहता है है बाह्य णही तुमने यह लाड बनियों का पीरी हित्य-

एवर्टेटक विमाणां भेदे यसम्दात्स्ता ॥अयतेपाचगोत्रा दि निर्णयमवद्म्यहं ॥ ४३॥शां हित्या मित्देदलेतिमदर्त्रयो नेतांशां हित्यगोत्रं-त्रर्गत्दः उमादेव सुरक्षीत्राममयमम् ॥ ४४॥ आ गरसवाहिस्यत्यच्चन् पमन्यचसम न् तपन् म्वरोपत् कपिलगोत्रं त्रस्यद्वामलाइदेदी राहीली यामं हिनीयम् ॥ ४५ ॥ उपमन्येववछा भित् भारहाजे तिम्बर्ययो देतं उपमन्यवस्य गे इंन्युर्वेदः ॥ विन्यु वस्त देवी वर्णा की यामेत्ती दं ॥ ४६॥ नियानसिव यो मेत्रदेवराजे निषवर त्रयं ऐत वित्रानसगी त्रंत्ररगर्दवः कुळे म्र रीदे हे त्रणो लियाम् बहु हे अन्ने के चेत् महु खद्देद गज के हिले ते अमन्रातरम प्यानिते॥ ४७॥जातूकण्यं विन्धामित्रवन्छ्यसे ति त्रियवरो पेतं ॥जातूकरणर्या संयन्ते व द्वाकर्वाईदेवीअ त्रे ले यामेर ॥४=॥भारद्वानां गिरसवार्ह्स्पत्टे ति पवरत्रयो पेतुभारद्वानगे च इन्स्टेद ॥आबार्ड्स देवीय चौकी याहेष श्रम् ॥४९ ॥ रिज्यामि त्रदेवराज शिक्षकेतिप्रवरत्रयोपेतं ॥अथवादेवराजउप्नुस् हन्यामित्रेतिषवरत्रयो छेतं उपनुसूर्ग द्राक्त्रस् देव द्रिगा रुप्रामे सम्गा। भगाअरपराम्हं भारहाज जम्द्रि च दर् तपचमहर्ण देवल स्र २ व्ल्स् द्रु ।। महालक्ष्मिदेवी मोधेली मामक स्र तस्मि वेद रोहेप्रवर ह रमाह॥ भार्याच्यानाम्ब्अविजनद्रं तेपंच यवराणि॥५१॥गेत्मां गेरस्तेतस्य तिम्बर्ट्योगेतं गोत्मगोत्रंझर्णेद्यास्डेस्सीदेवीवहेली यामंनवम्॥ ५२॥शामानसभार्ट्च दन ने र्जाम्बस्ये त्यन प्रद्रे देवांशाम् स्मेत्र अत्येदः महालक्ष देवां जगाली आमे देशमं॥ ५३॥ छेट् क्रणाउ सितदेहराजे तिम्बरत्र्य देतेलंडुक्ण स्गीतंत्र्यत्व. टडेच देव देवे देवी बोसमेल दंशे ॥ ५४ ॥ भी लाक्य पावलं देने हे हे तेम्बर्जन

यो देतंकाश्यप गोर्ड सामर्ट और दिर बीहिं ही मोम हादे । अजा ॥ त्राका छोडके करना जो हुनेरा अपमानकरेगार देडपाट होने में ४१ ऐसाबह-हिटमें एपवलने जी बाह्मणस्थापन किये वे भी तरखंडावाल बाह्मणभये ४२ ऐसाखंडावाले का भेदमयने कत्या इनोका गेत्रा दि निर्णय चक्रमें स्पष्ठ छै ३३ १४४ । ४५ ्धा १७ । ४५ । ४५ । ५५ । ५५ । ५५ । ५५ । ५५ ।

सेंद्रियुवसिष्ठम्भिवरुणेति मष्र्नपोर्द्रतं कीडिन्युग्निभ्रावेद्द्रः ॥ महात्रुस्मी्देवी शियोतीयामञ्जयोदशः ॥ ५६ ॥भगस्यसा्मानसद द्रवाहै तिमक्त्रयोपैतनातपसगात्रेपस्टिन मूलसरीदैवीरेनालीभाम्बतुर्देशम् ॥ ५७॥ आगिरस्गीतमभारद्राजेतिपवरत्रयोपेतं राजा नसगोत्रयत्तर्पदं रावदेशे अहाद्यामाम्यवदरोष् ॥ ५० ॥ आगस्यवैनाधनानायततिप्रवरत्रयोपेतं विल्वसूर्गात्रअयर्वणवेद नित्सादे-वीनालो तीचामपोडराम् ॥ ५१ ॥ आगिरसवाईसंप्याक्तिकेतिनवरत्रयापतंपीनसगोनसामवद फिराईदेवीआदरोतीमामसप्तद्शम्॥ ६ ॥ उशिक विन्यामिनदेवेलेतिभवरनयौपैत ऋषााभिगोनयजुर्वद ॥ छणा। ईदवीका छेलीमा ममशद्राम् ॥ ६१ ॥ अंगिरसवा ईस्पत्य भारहाजेतिमवरनयोपेतगार्ग्यसगोन् स्यवेद् वित्वई देवीमारेतीमाममेकोन् विश्वातिमा। ६२॥ मुझुलागिरस्भारहाजेतिमवरत्रयोपेतम् इत्योत्र श्वरचेद् वेहेमायीदेवी स्यवेद्भामाने विशस्॥ ७२ ॥ विस्तानि तदेवराजीहरूतिमवर तयोपेतलोकानसगीत्रयञ्जवद् मलायोदवारः विष्माममेकविश्म्॥ ६४ ॥ अवरच्योपेतवाईस्गोत्रअय्वेवद पिङ्गार्यादेषीकालोलीत्रामहाविश्म्॥ ६५ ॥ अत्राचीन् शिवशिवेतियव्र त्रयोपेतं अंगिर्सगोतं यज्ञवेदं वगेळीवेबीचर्गलीयाम्त्रयोविशम् ॥६६॥आगिरसनेधवद्यीनकेतिपवस्त्रयोपेतआगिरसगोत्रयज्ञवेद हिरायीदेवी हिरोलीमाभंचेतु विरम् ॥ ६७॥ एवमोत्रादिरचनासंसीपेणमक्तित् ॥ वास्मानास्वर विभाणां तथान्येपाद्भिजनानाम् ॥ ६०॥ स्रतानिमसुरवादेत वृत्तात प्र्रेनेकाठिकं ॥ निवधनच्छतनान् हरिख्णाहिज सुधी ॥ ६० ॥ इतिया बाह्मणोत्पत्तिमार्तडाध्याये खेटक बा ह्मणोत्पत्तिनर्णननाममकरण ३३ सपूर्ण आदित पद्मसंख्या ३७४६

पर खेडाबाठ बाह्मणीमेंसे एक रहेडुवा बाह्मणमें स्पाह वे बाह्मण ओडुबर बाह्मणकी वृत्तिकरते हैं ६० यह सब कथा पूर्व काठकी भइ हुई उत्तमब हु मृत बाह्मणके मुखसे सुनके हरिक्छणने विशेषन कि इ ६१ इति खेडाबाठ बाह्मण ठाड यनियोकी स्मान सपूर्ण भयी प्रकरण ३३ ६९ ६९ ६९

अथ खंडाबाल बाह्मणाना गामगीन प्रवर कुलदेवी झानच के

~	ग्रामना	म कुल	ः गीत्र	मबरा.	चेद	द्यार	73	<b>ी</b> चोली	'महालस	पी कैंडिन्य	कोडिन्य वसिष्ठ भित्रावरुण-	ऋ	आ
	<b>गरे</b> ली	उमादे		य गांडिल्य असित देवल	<b>*</b> **	आ	38	रेनाली	मूलेम्बरी	लातपस		य	मा
7	गुरु <u>ग</u> गहोनी	मला	<u>फ</u> िल		वसमाभ ऋ	आ	94	लिहाली	रविदेवी	क्रनानस	आंगिरस गीतम भारद्वाजः	च	मा
3	विष्णोर्ल			वस् उपमन्यव चत्सास्मितः भारद्वाज		आ	98	नालोली	नित्पादेर्व	विल्वस्	आगस्यवेना घजानायत	अ	स
¥,	त्रिणोर्ल	क्लेम्ब	री चित्रावर	चित्रानस विश्वामित्र देवराज	74	आ	90	आदरीही	पिठाइ	पीनस्	आंगिरसबाईस्पत्य आस्तिक	सा	की
4	आशीरी		जातुकप	ि जातुकण विश्वामिन वच्छम	य	मा	90	काछेली	रुखााइ	रुणात्रि	उशिक विश्वामित्र देवल	य	मा
E	मंचाडी	आग्नापु			<del>7</del> 4	आ	36	मोरेली	बिल्बइ	गार्थस	ऑगिरसबाईस्पत्म भारद्राज	<del>4</del>	आ
19	सिगाली	मोराही	उपनस	विश्वामित्र देवराज ओ हुल	त्रम	ं आ	30	। भूपेली	चेहेमाइ	सुद्रल	मुद्रल आंगिरस भारद्वाज	ऋ	आ
=	मोधोली	महालक्षी		उरपरामव भारहाजजगद्मि च्या	निभ ऋ	आ	29	खुदाली	मलायी		विश्वामित्र देवराज औद्सरः	य	मा
<u>e</u>	वहेली	चामुंडेम्पर्		गीतम अगिरस औतथ्य	豘	आ	२२	कालोली	पिठाइ	बाईस	3	अ	<del>स</del>
90.	शिलेली	महालस्भी	शामानस	शामानसभागवन्यवनऔर नपद्रि	भ भ	आ	33	चंगेली	चंगेली	आंगिरस	অন্নি সর্বন গ্রিবগ্রীব	य	मा
79	शियोली	पडेयी	लंडुकर्णस	लबुकरणअसित देवराज-	34	आ	58	हिरोली	हिराइ	आंगेरस	आगिरस नैभव शीनक	य	मा-
٦ ;	रेनाली	श्रिया		काश्यप अवछंद ने भव	सा	事.	<del></del>					<del></del>	

अव रायकवाल बाह्मणों के उसिन कहते हैं प्रित्सि सहंगवनाम करके बड़े ऋषी होते मारे बागरों ब्यापु १२९२ शिष्य सहवर्तमान १ ने चावर्त्तमें वासकरते हते दे अपि बड़े स्वकर्म निष्ट दे दे दे वंगशास्त्र यज्ञ कर्म ने विशार हुए २ एक समयमे उजरात देशमें कर्ण दरकरके गावहें उसकाराजाने यज्ञ करने कि इच्छा किये ३ पर हु उत्तम यज्ञ कराने वाला बाह्मण का हामिलेगा ऐसी चेंता करते हैं इतने में स्वक कहता है ४ नं चावर्त में सव वेचा में निष्ठण महायोगी एक सत्य टुंगव नाम करके असि परहते हैं उनकु बुलाव ५ तब राजाने हुने हुं हुलाने के वास्ते दास कु भोजे तन सत्य टुंगव अम पन देने राज दूने के बचन सुनके अठार गोत्र के बारासे बाण्यु १२९२

५६। ५०। ५०। ६०। ६०। ६०। ६०। ६४। ६४। ६५। ६० ऐसीगांचा विक कि रचना सहापम मयने कहि बात्य भी क्षेंद्रियुवसिष्ठमित्रावरुणेति मवर्चगोपुति कोदिन्यगोन्भरवेद ॥ महास्क्षीदेवी शियोसीमामञ्जयदिश ॥ ५६ ॥अगस्यसामानसद द्रबाहै तिमक्त्यपेपेन्छात्पसगोत्रेयसुर्वेद मुलेखरीदेवीरेनासीमाम्चतुर्दशमे ॥५७॥ आगिरसगोतमभारद्वाजेतिमवरत्रयोपेतं शजा नसगोत्रेयसुर्वेद प्रवदेशिक्षहात्र्ययामुपेचदश्रेम् ॥५०॥भागस्यवेनाधजानायवेतिमवरमयोपतं बिस्वस्गीत्रअयवेणवेद 'निसावे वीनालो लीबामपोडवाम् ॥ ५२॥ भागिरसबाईस्पत्यास्तिकोत्त्रवरत्रयापत्पीनसगोनसामवद फिगर्ददेवी आदरोलीमामसस्द्राम्॥ ६ ॥अशिक निम्नामित्रदेवेलेतिप्रवरनयोपेते रुप्णाभिगोनयजुर्वद ॥रुप्णाई द्वीकार्छेलीग्राममधादद्मम् ॥६१ ॥अंगिरसवाईस्पले-भारह्य नेतिभवरन्योपेत्गुर्न्यसगोर्न्वस्यवेद् विस्वईदेवीमारेतीमाममेकोन् विश्वातिम ॥ ६२ ॥ मुद्धस्रोगिरस् भारहानेतिभवरत्रयोपेत्यु द्रलगीत एक्टबेंद् वेहेमायीदेवी भ्रयेत्रिमाम विशास ॥ ६३ ॥ विश्वामि प्रदेवराजीदले तिमवरत्रयो पेत्रेले कानसर्गात्रय सुर्वेद् मला यादवी खुँ यारिमाममेक विश्वाम्।। ६४ ॥ मनरन्यीप्तवाईस्गीत्रअय्ववेदः पिद्वाचीदेवी कालीतीत्रामद्वाविष्वाम् ॥ ६५ ॥ अन्याचीन् विविधविष्ठवर् त्रयोपेतं आंगिरसगोत्रे यस्त्रवेदि, चगेलीदेवीचर्गेलीयाम्त्रयो विश्वम् ॥६६॥ आगिरसर्ने भ बद्यीनदेतिपवरत्रयोपेतञ्यागिरसगोत्रयज्ञवेद हिरायीदेवी हिरोलीमा मंचेत् विशेष ॥ ६० ॥ एवगोत्रादिरचनासंहोपेणपकी तिना ॥ बार्यानां खेट विभाणां तथान्येपादिजन्मन्। म् ॥ ६० ॥

सलानिम्सस्त्रादेतं इत्तात प्रवेकाठिक ॥ निवधनचळतवान् हरिक्ष्णाद्विज सुधीः॥ ६९ ॥ इतिभी वाह्मणोत्पत्तिमार्तठाध्याचे खेटक मा त्यणीत्पत्तिवर्णननाममकरण ३३ सपूर्णआवित पद्यसंख्या ३७४६ गर खेडानाळ बाह्मणीमेसे भे मार्गणकी इतिकरते हैं ६० यहसनकया पूर्वकालकी भइ हुद् उत्तम बहु शुत बाह्मणके मुखसे सुनके हरिक्छणने

_	स ग्रागन	म त	े गीत्र	मब्राः	चेद	नार	वा १२	-िश योली	महालक्ष	पी केंडिन्य	कोडिन्य वसिन्छ मित्रावरुण	<b>?</b> {	आ
~-	स्त <u>मान्य</u> सुरली		•		- <del></del>	आ	38	रेनाली	मृतेस्री	न्यातपस	भगस्थसामानस इंपवाह	य	मा
	<u>गुरून</u> सहोली		<u>कापिल</u>		ान ऋ	आ	74	लिहाली	रविदेवी	<b>३</b> ानस	आंगिरस गीनम भारद्वाज	ेय	मा
3	े विष्णार		इस् उपमन्ध		***	आ	38	नालोली	नित्पादेर्व	ो विन्यस्	आगस्यवेना घनानायतः	अ	स
¥	त्रिणोल		री चित्रावर		<b>नर</b>	भा	313	आवरीसी	पिठाइ	<b>पीनस्</b>	आंगिरसबाईस्पत्य आस्तिक	सा	की
-	भागी ही			नानुकण विश्वामित्र पर्यक्स	य	मा	90	काछेली	<i>ऋधाा</i> इ	रुणात्रि	उशिक विन्वामित्र देवल	य	मा
Ex	गंचाडी		रा भारहान		不	भा	38	मोरेली	विस्वद	गार्ग्यस	ऑगिरसवाईस्पल भारद्वाज	<b>承</b>	आ
5	<u>सिगाली</u>			विश्वामित्र देवराज औ दल	<b>7</b>	आ	30	भूपेर्ना	चेहेमाइ	मुद्रल	मुद्रल आंगिरस भारद्वाज	羽	आ
=	मोधोली	महान्दर्भ		उरपरामव भारहाज जगदिम न्याउन ५	<del>'</del> Æ	आ	29	गर्टाली	पलायी		विश्वामित्र देवराज औद्दल	च	मा
P	वडेली-	नामुंडेग्य		गीतम अगिरस औतथ्य	<del>有</del>	आ	23	कालोली	पिठाइ	बाईस	3	अ	स
ō	र गैली	-	<u> शामानस</u>		<del>4</del>	<del>'31</del>	53	चंगली	चंगेली	आंगिरस	अभि अर्चन शिविधिव	- य	मा
)	िषोनी	<b>पंडेपी</b>		लदकरणअसित देवरान-	चेन	आ	38	हिरासी	हिराइ		आगिरस नैभव बीनक		मा-
	×	श्रिया		काश्यप अवछंद ने भव-	सा	<del>\$</del>		14 11 7-1			(W 1 11 70.17)		
_		_					<u> </u>	<del></del>					

अव रायकवाल बाह्मणों कि उसित कहते हैं पूर्व सत्य पुंगवनामकरक वहें ऋषी होते भरे बागरों व्यापु १२९२ शिष्य सहवर्तमान १ ने पावर्त्त में वासकर ने हते हैं अपी बढ़ें स्वक में ने ए देव वेदांग शास्त्र यज्ञ कर में विशापत हुए २ एक समय में उत्तर ने कि वेद्र रूप के पावर्त में अप के दूर कर के गाव है उसकारा जाने यज्ञ करने कि इच्छा किये २ पर उत्तर में पावर्त हैं अनु कु इलाव अत्य का का मिलेगा ऐसी चिना करते हैं इतन में स्वक कहता है ४ नं पावर्त में सव विधा में ने प्रण महायोगी एक सत्य प्रण नाम करके अधिरहते हैं अनु इलाव अत्य का ने में इलावे के वार्त से बार्त से बार से बार्त से बार से बार्त से

शिषोर् साथते के रामाके दृत सहर्वमान कबेदर गामम आयक रामाङ्क विधीसे यद्य करवाया जिसम वोश्वीत विसिणादिये । यहासमासिक अवस्त स्मानक रके तसन्त्रभया पीछ रामाने अपने गुरुक् पानगरवानिवये = कवेदर) कुवरयती १ क्यामार १ कु माडु १ ॥ १ ॥ कब्योता १ ऐसेपानगावकादान करके सब शिष्याक गुरुक् वाहा नियासकरक तामया पीछ सत्यसुगवक्यिक गेदर गावमे रहक श्रीमहालहमीका आगधन किया १ तहमीका अनुष्यन करते वोहात दिन भये

अयुरायकवाल बाह्यणोत्मतिसारमाहः इरिक्टणः सत्यपुगवनामाविकापिरासीत्वरामकान् ॥ दिनवदावशशति १०९२म् निर्शिष्ये सा मन्दितः ॥१॥नदावतवसनुपूर्वस्वकर्मपुगिनिधितः ॥ वदवेदागर्गात्मकोयत्तकम् विशार्तः ॥२॥ युजरेविषयेपाम् कदोवरनितिस्यतः॥ त्रास्थितोमहीपाल यक्त्यिंचाकरोन्मति॥ ३॥यक्तकारयिवाकोवाबाह्मणीममिलिप्यति ॥इतिचिताहरेराक्तीसेवकोबाक्यमद्यवीव ॥ ४ ॥नद्यावर्तेमुह्युयागीसर्वेनियानुहारदः ॥सत्यपुं विनामाविभरिपरितित्मान्हयः॥ ५ ॥मुनेरानयनैचाँराः प्रेषिताश्चमहीसुताः॥ ध्य संदर्गोत्रस्तेमुनिश्चि समन्ति ॥६॥आगनोमुनिगदृतवन्ष्यारे समावृत ॥ युक्तचकारयामा्यभिधिना द्हृदक्षिणा ॥७॥ यत्तातेत् भूयँन्गाँलाममञोत्त्र्नातम् ॥गुरवेचमशिष्यायमुगः सङ्गम्पचकः ॥०॥ कृठो दरचमथमंकोवेरस्थलसुन्तेमं ॥ वृतीयकण भाराक्पकुणाडास्यचतुयक॥९ ॥कञ्चीतपूचमदत्वावास्यामासवान् द्विजान्॥तत्रस्थितासम्वनिराद्तहस्याराधनतत्पर ॥१०॥एव वहुगतेकाले विचातः समुक्षितः ॥ कस्मि सिद्धिद्वसे योगी निद्रावश्सुपागतः ॥ ११ ॥ तदागत्यमहालस्यावरस्रही तिचात्रवीत् ॥ नन्फ तस्निन्।तनसाप्चित्रहितासणात् ॥ १२ ॥देव्यांमतहितायातुस्निर्जागृतिमात्वान् ॥ करायत्र्वकरायस्रदेव शिष्यान्पुत्रेच्छह् ॥ १२॥ शिषा अचुर्नजानीमीराय क्रुत्रमेत्रारा ॥मुनिस्तुकोधमयुक्तस्तान्दादाापहिजोत्तमान् ॥१४ ॥स्यश्वात्रागतः संदेर्युष्मापि

काममोहिते ॥ नर्छान्य तथापिनिक्तेचावधारित ॥ १५॥ ॥

यमसे यह गपे है एकदिन सत्यपुगवन्रिष आसनके अगरजपकरते वर्वे है
और नमके छिपे निजावशान्ये है ११ इतने म महाउद्भावाहा आयके बरवू हि बरब्र हि ऐसा कहने छगी परतु निजाब छिपे मुनिने अनानिह और रूक्षीता उसी-वस्त अन्धान मह त्वन्र भी जागृत हो पके राय कराय कराय कर ते धनका नाम है वाझे भियोक प्रच्छने रूग कि धनकहा गया १२ शियकहत है है गुरी रा य उस्मी कहा गईसी हमजानने नहि है तब अभिकु कोध आयासी शियोकु शायटे व है १८ अरह शियहां रूक्षी यहा आह और तुमने काम मोहित हो के 7 '

नरेरदे नहाब्द सुना न उने का लक्षण चित्तमेलाये १५ वास्ते आजसे हमसब बाह्मणमेरे शिष्यमात्ररेक्यवासनामसे प्रथ्विमे विख्यात हो १६ रायः कहते रूक्मी क कहत के नसे स्थल है ऐसास्थलका नाम है वाहा तुमने निवास कियाहै वास्ते रेक्यवासना महे १७ यह रायकवाल बाह्मणों के गोबादिक कहताहु और-यह पूर्व के वृत्तांत ब्राह्मणंद्र मुख्य करके हरिक्षणाने वर्णन किया १८ अबरायकवाल ब्राह्मणों के गोत्र कहते हैं कुत्स १ वत्स १ वसिष्ठ २ गालव ४ भर द्राज ५ उपमन्यव ६ कृष्णात्रेय ७ कृष्यप ८ शांडिल ९ अत्र १० छुशक ११ पाराशर १२ गेतम १३ गर्ग १४ उद्दालक १५ के शिक १६ आंगिरस १७ कात्यायन अग्रमभृतितस्माद्वैद्यंसर्विद्रजं त्तमाः॥रेक्यवासाश्चनामार्वे सुदिवेख्यात केत्रवेः॥१६॥रायः क्रेतिस्थलस्वैदंनामेतस्र रिक्र दित्॥तत्रवासकत्स्तरमाद्रेक्यवासे तेनामुकं॥१७॥एषांगोत्रा दिकंसवेघवस्यामि वेशेषतः॥ऋत्वादिजहर्वादेतः द्वरिक्रणेन मितं॥ १८ ॥ कस्य निसद्यानि इत्से वत्सवसिष्ठ गालवनार ह्याजो पमन्यत्यम् ॥ कष्णाः कद्यण शांडिले डिव्हें शिकाः पाराशरे गेति मन्॥ गर्गोद्दालकके शिकां गरसकाः कात्यायनो ७ शत्या ॥ गें बेशा ऋषयो अरेक्ट जकु लेकु वे द्व में गले ॥ १९ ॥ आराध्याल हिन् हिक कुलप्तः के मूलनायोहरः स्थान् चैवएराकवं दरहरे चैषां यक्ते दिनां। भक्ति ज्ञान् वराक्ति शास्त्र नृषुणाः माध्यं देने शा रेदने रेक्यान सी १ विष्णयक में क्षेत्रालाः लवें हुने मंगलं॥ २०॥ एषा मेक सहस्वन्षेसम् हे ने मि तें के कमी के क्षेत्रें विभाग के न पतिन : ज्येष्ठः क निर्धापिय । । दृष्टा इं लिलिंग तथा न्मग्वान्ज्वालां कपार्ल दिन्दः ॥ राजारामम् ने नवासमकरी ज्येष के ने बुस्तथा ॥ २१ ॥ १ र सं व त्रातिक मार्कसमय ने के न देशाच्छ त वृष्ट्रियो तिकादिक १९३० तृत्य करे देर हो मा इते कर्ष्ट्री हर है है है है है है है सादे नवी। राजारामभयलने मण्ड्रे जातं शतंसंमतात् ॥ २२॥ इत्या ब्राह्मणोस निम्ति छ हे रायकवाल ब हाँ पीस नियं पनि ना

मंपकरणं ३४ पंच्छ देडमध्यें उर्जरसंपदायः॥ ओदितः श्लोकसंख्य ३७६० १० यह अगरा गीत्र रायकवाल मे है १९ इनो कि इलदेवी ल ले तांबिका है और मूलनाथ शिवहें स्थान कर दर पुरहे सब कियह देन मध्ये देन शारवाहें को कल मतकु मानते है २० यह रायकवाल बाह्मणों का हजारवर्षक सुमार में कुच्छकर्म ने मेनस ज्ञादिम दोयमाग भय सो एक तडबडा एक तडखोडा २१ फिर संवत १९३० के मेषक सूर्य वेशारव १ क्र पक्ष में दिनोया के देनल ले तांबिका के अद्यह के राजारामने द नोत डवा ले एकी वे किये २२ इदि रायकवाल बाह्मणे सिन्तः प्रकरणं ३४

## अथ रोहवालादि बाह्मणोत्मित मकरण २५

अब रोयजा बाह्मण नापल बाह्मण बोरसदा बाह्मण इरसोरा बाह्मण गौरवाल बाबीसा बाह्मण गान्छ बाह्मण ऐसे बाह्मणोकि उत्यसिक हो है उसमें पहिले रोड बाल बाह्मणोका भेद कहताहु पूर्वी ओ दिन्य बाह्मणोकि मतिया सिद्धपुर होनमे भाइ १ उसमे से कितने क बाह्मण मारबाड वेशम नले गये पाछे मारबाड वे शमे जायके रोपडा करके एक गावदूस ग्रक्जबाणु करके गान २ ऐसे दोगावमे जायक वो बाह्मणोने बोह्मोतकाल पर्यव निवास किया ३ तम वे रायहा गावमे रहे उ सकरके रोड बाल बाह्मण बाह्मण बोह्मत करके सेति करते हैं कितने क वेद बाह्मका अध्यास करते हैं ४ उनोकि कुल देवता राजराजे स्वरी जानना ए

अय रीयलादि बाह्मणोसितिमाह हरिकणा रोयलास्य बाह्मणाना भेदवस्यामिसायनायुरोदीस्य सहस्राणास्थिति सि हपुरेख भूत्॥ १ ॥ नेपय केचनिवास्य महत्वेशेगता किल ॥ तम्याम हपसुरव्य रोयलाक्जनाणकः॥ १ ॥ चिरकाल तत्रवास किल सि हपुरेख समें ॥ रोयलामामध्येवै निवासस्य कृत पुरा ॥ ३॥ रोहवा सबाह्मणास्ते जाता चामस्य नामतः॥ कृषिक मेरता के विकार मागरिता परे ॥ ४ ॥ कृष्ठ देवी स्मृतातपाराज्ञ स्वरीतिच ॥ भोजनवहुषास वे कन्यादानस्व वर्गके ॥ ५ ॥ स्था ज्ञातिपुर्ज रेपियतीते चामपचके॥ अवनापल बाह्मण वरिसदाबाह्मणोसितिमाह ॥ नापल बाह्मणाये चित्रा नापल बाह्मणाये चित्रा ॥ ६ ॥ तेपा मुसतिभदे वे मनस्याम् मुणुष्ठ ॥ अविषय ज्ञातिमध्यस्योपुराहिज कृमारकी ॥ ७ ॥ सविषय क्षातिमध्यस्य प्राप्त । १ ॥ तस्य वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष स्वराप्त । १ ॥ तस्य माम प्रात्यो निम्पयस्त स्य प्राप्त । भाषा वर्ष वर्ष वर्ष स्था स्वरात । १ ॥ तस्य माम प्रात्यो निम्पयस्त स्य प्राप्त ॥ भन्यातिभयपा स्वरात्या स्वरात्य स्वरात्

भायका ॥११॥ ॥
नेका भोजन व्यवहार राजस्तमे वडादरा हो। इनके साथ होताहै कन्याविवाह सब्ध अपने रोडवालमे होताहै अन्यन महिहो
ता अपक्रातिहाल राजसत्तमे पाचमाव कठलाद १ सरोहा १ नाकानेर १ मेहे मदावाद १ भोडासर १ वगेरे गानोमे हैं ॥ ॥ अवनापल ब्राह्मण और वोरसदे ब्राह्म
णोकि उसित्त कहतेहैं ६ पूर्वि औदिव्यसङ्क्ष ब्राह्मणकातिमेके दो बाह्मणके छोकरे असक विद्यामे कुत्रालम से और बढे पहित्रम से तब्राजसत् देशम एक-

राजा बड़ा धर्माताथा = उसकाऐसानियम इया सोमयक इताहु अवणकरो जो कोई बाह्मण उत्तम विद्यान्यास करके अपनित्वीक्क सायले के राजाकेपास अमेती

९ उसकु यामकादान देना ऐसाबी राजाका निद्धय सुनके वेदोनो बाह्मण के छे करे १० मनमे विचार करने लगे कि अपन विद्याकि ते परिक्षा देवेंगे परंहु स्त्री विन् ना राजायामदान करनेका निह तब दूसरे कोई अन्यज्ञाति के दोकन्याकु साथ लेके समार्थ सरीरवे होयके ११ राजसमामे जायके विद्याकि परिकादेते भये तब राजा ने देने कि विद्याकावल देखके १२ एक ब्राह्मण कु बोरसद या मकादान दिया दूसरेकु नापल नामका यामदिया नापल यामके ताबे मे दूसरे नव यामहै नापु १ बोरिस् १ गाना १ में गरि १ नावली १ वेमो १ ने मेण १ शिंगराय १ पुरी यह नव याम जानना दान प्रति यह करे बाद दोना बाह्मण के छोकरे १३ अपना कार्य सिन्द्रभया पसन्म-

भरं अपने घरकु आर पंछे वो दोनोकन्याकु कहने लगे बिहुम देनो अपने अपने घरकु चली जाव देर्करो मत १८ तबदोनोकन्या को धायमान हो यके कहती है हे बाह्मण हो जिहुमने हमेरा मूरियहन कियाते राजाके पास १५ जायके अबिजो हमेरा कहते हैतो तुमकू बढा दंड होवेगा के रजो हमक नछे डेगे ते हमकु स्रव बोह तकाल पर्त हे देगा १६ ऐसाद कन्याका बचन हुन त दोनो बाह्मण ने आपसमे दूर बचार उत्तम करके वे अन्य जा तिको कन्याका मिरियह के या उसकरके प्रतिनो अपनिजा तिरो उसवर्ग से बिह्मार हे गरे पंछे कितने के इष्ट मित्र संबंधी को बेरसदे बाह्मणने पे षण किया वे बेरसदे बाह्मण भरे और नापल गावक अधिपतिन अपने इष्ट मित्र संबंधिक तो सहाया भरे यह सब देनो यह देदी माध्य दिन शारवा के है १० इनो का भोजन व्यवह

र क्या व्यवहार अपने अपने जयेमे होताई अन्यननहिहोताई १० ऐसायह मानीन भेद मयने कहा अब इरसाले ब्राह्मणोकि क्या कहताह १९ एजरात देश महिरचंद्र पुरी करके एक गायहे असकाहालमें हरसाल करके कहते हैं हरसोल गाम अमदाबाद में ईगान्य दिशाम २२ वावी सकोस के उपर है कोड़ ऐसा कहते है कि सा मलाजि जाहा विराजते हैं भे हरिच्य ब्रुशिहें इसका मुख्य भमाण सकद्युराणोक्त छद्र गया महास्यमें देखना अस्तु वो हरिच्य नगरीमें रहनेवाले राजान यहादिया २० तब यहामें जो करतिज्ञ भये अनोकु राजाने बोपुर दानकिया और बाह्मणोकि सेना करने के बात्ते बेरय वनिये स्थापन किये बड़े हमें मेमसे ११ तब वे बनिये गायके नामसे इरसोले वनिये विरायात भये और बाह्मणविहरसोले नामसे विरायात भये २२ बाह्मणक छगोत्र है सुद्रल १ को शिक्ष भारहाज १ शाहित्य १ पारा ११ अ

कुलदेवीस्मृताचेपानास्मावैसर्वमगला॥अषादश्चाजादेवीतश्चापापि हिद्द्यते॥१४॥मालियाणादिगोत्राणि विणिजाद्वाद्वीव हिष्णापि मेहेताशाहापास्वभृत्येकमबटककः॥१५॥एपात्तातिसमूद्रस्तुसामतवर्ततेवहुः॥स्टादिष्ठपुरेष्वेवश्चविम्पत्यातदीत्य॥ १६॥गोरवाल बाह्मणानामुत्यात्मगवदाम्यदं॥उदेपुरवृषे ब्रेणकस्मि मिल्यसम्यपुरा॥२०। विभान दीचसाहर्तानसमानीयस्वकेपुरे॥ यशक्ततावश्चेपण्यामवानवकारह॥२०॥द्वावशातिलघुमामे सहितगोलसंद्रकं॥यामवदोदिने देश्योगोहिरण्यादिकत्या॥२९॥ ततस्त्रेबाह्मणा सर्वेगोलादिमामवासिन ॥वस्तुस्त्रनत्नातागोरवालादिजातय ॥२०॥दाविश्वतिमामवासाद्वावसात्तेपकीर्तिता ॥अयगरुद्वगालामुत्रावसात्राच्यात्वस्त्रकः॥३२॥धारपतिवश्चेष्ठाप्रमास्त्रावसात्रावसात्राक्ष्यस्त्रविभावस्त्रव

भीर है २३ इनोकि फुलदेवी सर्वमगलानामकरके अगरा जिनके हातहै ऐसी मत्यस भिव सामता जीमे विराजमान है दर्शन दिख पडताहै २४ और विनयों के मा जियाणाभीरियाण १ द्राशियाणा शियाणा १ गदियाणा १ गतियाणा १

युनिद्या२९तववेसव्याह्मणगोळगावआदिछेकेवाधीसगावमे रहेवास्तेउनोकुवावीसेयाह्मणोवीकबृतेंहैअव गरुड गरिरये बाह्मणका उसित कहते हे अजरात मातमे मसि इ गारुड (उफी गरुड गलिये ) बाह्मणजो है वे अधम है ३१ नाममात्र बाह्मण है चाडाल दंडे जो है उनों के घरका पुरोहितपणा सराद विवाहादिक कमें कराते हैं कंडमें यज्ञीपवीत हातमें मालापगडिमें ति येयह देखनेका पंचागरखर्त है ३२ परंड यह बाह्मण बाह्मण धर्मसे बाहार है स्पर्शकरनेकु योग्यनिह है जादा तुमकुन क्या करह ३३ इति ब्राह्मणो॰ भाषामे रोयडा ब्राह्मण १ नापल बाह्मण २ वोरसदा ब्राह्मण ३ हरसीला ब्राह्मण ४ गोरवाल वावीसा ब्राह्मण ५ गरुड गलिया बान इतिशी ब्राह्मणो सित्तिमार्तेडाध्यायेष ट्विधबाह्मणो सित्तिवर्णनंनाम पकरणं ३५ पूर्व पंचबाह्मणांनां पंचद्रविखमध्ये दर्जर संम्दादः भर् इतिशी ब्राह्मणो सित्तिमार्तेडाध्यायेष ट्विधबाह्मणो सित्तवर्णनंनाम पकरणं ३५ पूर्व पंचबाह्मणांनां पंचद्रविखमध्ये दर्जर संम्दादः भर

अथ भार्गट बाह्मणोस ति प्रकरण ३६

पकरण ३५ कुछदेव रेहरेमंगर्स्थे एकरूर ध के शिक धभारक धर्मा उल्लेख पाराश्वर ध भारकाइ ध

अब भारीव बाह्मणों के उसित कहते है शिव कहते है हे पार्वत इसउपरांत भृगुर्ता येका महात्म्य कहताहु दशा स्वमेध तीयसे ऐसी कमके आगे १ ब्रह्म अभृगुने रेवाजीके उत्तरवाजूवडा तपिकया २ निर्दे छल करने से जब भृगु के भयातव शिव कहने है ३ हे भृगु रुपि तुमेग कोध अविशांत निर्दे भया इसवार अथभार विवाहमणोत्पत्तिमाह उक्तर वाह्योक्त रेवारवंडे शिव्उवाच अत परंपवक्यामिशृहतीर्धमहत्तमं॥ द्शास्पमेध तीर्या है तदर्र तिक्रमांतरे॥१॥भृहनाममहादेवीब्रह्मणोमानस सुत ॥रेवायास्व तरेतीरेचचारविष्टुळंतप ॥२॥न देनङ्करुयांगेनयदाकोधोऽ भवद्ये ॥तदोवाच शेव साक्षाद पंप तेसदा शेवः॥३॥भे भाष्ट्रग दिजकेषकोधकोन गर्मगत ॥यस्पात्तस्मा देवेवलाकोधस्यानंभ विष्य ति॥४॥

क्ते यह जर्ग में क्रं धस्यान हो वेगा ४

जो इन्छित होये वो बरवान ममो भ्युकहते है हे शिव तमजो मसन्तमये हो और बरवान देते होतो ५ जहा मयने तपिकपा है वो स्थान सिद्धाद्द मरेनामसे वि रम्यात हो शिव कहते है हे भ्युपह स्थान प्रवित्त स्थाका है यह तम्छ मालुमनाह है क्या ६ वासो अनुमत छे के जैसा ध्यानमे जाव वैसा करो छस्पीका मति छे बिना-करोमत ७ मार्केडेय कहत है ऐसा कहक शिवगयेबाद भ्युपरियत्तान करके छस्पीके पास आपके कहते हैं हे कन्ये वैरी इच्छा होवेतो ८ तराजो यह स्थान मे-य स्थान करता हु गैसा कहके तस्यों के साथ छेके कूमिकी मार्यना करके ९ नदन सब सारे माय शुक्र पचमी के दिन उत्तर भावपदा नक्ष नक्ष स्थान

वरवृणीशाभिमत यस्तमनसिवर्तते॥ भुगुरुवान् ॥ पसन्तोयदिदेवेष्वयिवरोमम ॥ ५ ॥सि द्रसेनिवर्थानममान्ना भव तिति॥ शिवडवान ॥ यियासुतिवद्भव किन्सातंत्वयादिन ॥ ६ ॥ अनुमान्यत्रियदेवीययातन्मन्यतेषवान् ॥ करीतृ नदिभिनेतत्वरकत नतदन्यया॥ ७ ॥ मार्के उप्यवन्य ॥ एवपुस्का गतेदेवेरनात्वाक्ष्य च्छान् । १ ॥ नदनेवत्तरेमाचे पन्या सुक्ष्यस्के ॥ वास्तत्यो सग्दानेकुप्तस्यानन्वकरोम्यक् ॥ १० ॥ रवायाञ्चरेकुलेकुमे पृष्ठेमकृत्यत्य ॥ १ ॥ नदनेवत्तरेमाचे पन्या सुक्ष्यस्के ॥ वास्तत्यो सग्दानेकुप्तस्य नव्यान्तम् ॥ १० ॥ रवायाञ्चरेकुलेकुमे पृष्ठेमकृत्यत्य ॥ विनित्यविन्यकमणि नकारस्रुदितोष्ट्य ॥ ११ ॥ कुर्मपृष्ठेस्यि तयस्मा द्रगुकन्छामित्सम्त ॥ तत् कालेनमकृताकास्मि स्थित्वारणातर ॥ १२ ॥ वेवलाक नगामा सुल्ह्मीकिपसमागम् ॥ सम्पर्यकृति कालालेभगवेन्नस्रवादिने॥ १३ ॥ स्यानमेपालापस्वित तातस्र त्कालगामसा ॥ देवकार्यण्यनकानिकत्वात्री सुनरागता॥ १४ ॥ भृगुक च्छामहापुण्यकोदितीर्यसमन्ति॥ ययानेकुनिकात्वरस्य संस्याननतद्ति॥ एयकालनमहताष्ट्रगु पार्यता मिष्येवावदन्युनि ॥ एवि वाद सज्ञातोगरीयास्तुगरीयसा ॥ १६ ॥ ममे विवे ममेवितनतस्याननतद्ति॥ एयकालनमहताष्ट्रगु परममन्युमान्॥ १७ ॥ ॥

सूर्य उसिन १ रेगामीके उत्तर तरके जगर कूर्मकी पीठ उमर विश्वकमाझ बुलायके वडा न्यक बनाया ११ कूर्मक पीठ उपर मु-युने स्यान निर्माण किया नास्ते भ्रष्ठ फच्छ नाम विरव्यातस्या पीछे बोहोत कालगये वादकोई समयमे १२ लहमीने अपने पिता भ्रयुक्तस्यान कीकु क्लिसासम्बद्धकरोकमे नातिवरवत १३ कहतीहै हे पितायहस्यान मेग्रसभाली ऐसा कहते देवलीकम् आयके अनेक कार्य करके पुन अपने स्थान-पर आयके पिताके स्थानकी कुं विताला मगनलगी १५ तब है युधि छिर भूगुने कन्याका बचन सुनक मिण्याभाषण करने लगे बोनोकावडा विवाद बला १६ मृगु-

कहते हैं स्थानमं रा है तेरा नहि है लिस्मिकहती है स्थानमे राहें तेरानहि है ऐसाकहते कहते बोहोतकाल गया पीछे भ्रुपरम को धी उनीने १७ चातुर्वेदी बाह्मणो कु संस्थेक नहीं सो प्रमाणकरने कवास्ते इलायक भ्रयुकहते हैं है कन्यक यह स्थान मेरा ह्यायान है यह सब चुनात चातुर्वेदी बाह्मण जानने हैं उनीकुँ पूछो उस्मीक इतिहैं है पिता चार्वेदि ब्राह्मण हमकु विमान्यहें १९ यह स्थान मेराहे या तेराहे सो कहो पछि सब बाह्मण परस्पर विचार करके २० उसमेसे अंगरा हजारबा ह्मणोनेकलहका भयजानके कोई षातका उत्तर दियान है २१ धोर अठारा हजार दूसरे हुए उनोने मृगु ऋषी के के पक भयके लिए कहते है के जिसके हातमे-

चातु रिचान् प्रमाणार्थं चकारमहती गरं॥ भूरु रुवाच्॥ प्रमाणंममते तातचातु विद्यानसंशयः॥ १०॥चातु विद्यादिजाः सर्वे यथा जाने तपुच्छतान् ॥ऋ रुवाच ॥ प्रमाणंम्मतेतातचातु रिचानसंशयः ॥ १९ ॥ मदीयंवात्वदीयवाकपृष्तु द्विज् त्तमाः ॥ ततः सर्वे पते त् त्रसंप्रधारेपरस्परं॥२०॥ दिजावा पैक केंद्रखात्राह्मणांहांनृतंबनः ॥अषादशसहस्राणिनवीनन् कि चेंदुन्तरं ॥२१ ॥अष दशसहस्रे श्चभुगुः कोपभयानुपः ॥ उक्कताल कहस्तीयस्तर्थे देस्यान मुक्तम् ॥ २२ ॥ एत्च्छ्ताहु सादेवीनगरे ने गमेः सह ॥ को धेन महनाकां ताश ज्ञापि दिज्छं गवान् ॥ २३ ॥ श्रीरुवान ॥ यस्मात्सर्यस्ट त्मृज्युरु भीपहृत ने तसीः ॥ तुरं मत्यान् म्तृते सारमा च्छू एवंदु मे गरं ॥ २४ ॥ नम हिष्य तिवी विधे धनन एरुष रं ॥न दिती रंतयार देप देखे ते दिजा हिया। १५ ॥ यहाणिन दिने मानिन चम्ह्ते स्थिरा दिजा ॥ पहन पात सिर्धिमें निन्ने श्रेयर करें॥ २६॥ द्वागेत्रजने के दिल्ल में नावृतमानरः॥ नन् है धपरिक्य से कुम्स पाय ते ॥ २७॥ अद प्रमृत्सिंगमहेकारे द्विजन्नां ॥न ऐताहुनैवाक्यार्थनिषुकः पतृवाक्यकत् ॥२८ ॥अहंकारस्ताः संवैष्येवमुक्ता दिवेयये ॥म तांद-श्वाततोदेवान् अर्थं श्वापितपोधनान्॥ २९ ॥परमेषीभृद्यः सीय विपादमगम् सरं॥ यसाटयामा सपुनः श्वाकरं त्रिं एरोतकं॥ ३०॥ ॥

कुचि है असका स्थान है २२ ऐसावचन सुनते क्स्मीक पायमान होयक बाह्मणों कु शापदेती है २३ श्री कहरी है बाह्मण हो तुमने मत्यता छोड़के ले भायमा हो के खो देसा ही भरके मेरास्यान्छीनिखया वास्ते मेरा बचन हुने २४ दुमेरे तीनवंशात्म धन ओर विद्या रहनेकि निहे एक देद होके दूसरे देदमे गित होनेकि निहे २५ घरभूमि स्थिर रहने की नहिंदुमने भृगुकापसापात किया धर्मनाहेररवा ३६ और दुमेरे सब बाह्मणामें एक चित्त होनेका नहि २७ आजसे दुमकु असकार बोहोतहा

वेगा ऐतासुत्रके वाक्यकी इच्छा करनेका नहि और सुत्र पेताका वचन करनेका नहि २० ऐसाकहके स्वर्गम चलीगई ठर्ह्माके गये वाद २९ भूगु ऋषी कु परम रहेद-

मया शिवका आराधनिक्या ३० तव शिवमसन्त होने भ्राकु कहते हैं २१ हे श्रा खास कायसे भये हो सताय कायक वास्ते करनही मयमसन्त भया हु नो इन्डा-हावेसोक हो २२ भ्रा कहते हैं शिव उद्योगिरे स्थान कु और बाहाणों कु जाय देने को धकर के स्वर्गन सही गई तब स्थान अपोस्य है ऐसा जान के देव अस्य व सले म ये २३ अव अय स्थानक कहा जानु मेरास्थान योग्य केसा होने शिन कहते हैं स्थान ना काध युक्त रहेगा परंतु दूसरी बात शुनो २५ यह स्थान मेजो उसका भये बाहम एदि और अन्यस्य लसे जो आपो हुने बाह्मण है ने मेरे अनु बहसे २५ वेदशात्म में कुशल हान ग धर्म तसर रहे में और यह स्थान में देवगण बास करेंगे २५ जो कोई मनुष्य अपरामक ताथा की ततस्त खोम है स्वर्थ ॥ उन्ह स्वर स्वर स्थान का स्वर स्थान में स्वर स्थान में देवगण बास करेंगे २५ जो कोई मनुष्य

तपसामहतापार्थततस्त्र स्रोमहेन्यर् ॥ उवाचवचनकासे हषयन्ऋगुसत्तम ॥ ६९ ॥ इन्दिर उवाच ॥ किविपणो सि विमे द्रकिवासताप-कारणा। मेयिनसन्नेपितवेश्वहेपेतत्सर्वमजसा।। ३१ ॥ भगुरुवाच ॥ शे म्बास्याने दिनाञ्चापित स्मी कोपादिवगता ॥अपोग्यमितिमन्वानाः स्थान्देवर्षयोगता ॥३३ ॥भिकरामिकगच्छामिकथमेस्यानयोगता॥ ॥ शिक्ष्य ॥ ॥ऋोधस्याननसदेइसायान्यमपिमैन्हुस् ॥३४ ॥ अश्रस्थानसमुद्रताअन्यतीत्वागतस्तया ।भाह्मणामत्त्रसावेनभविष्यतिनसशयः ॥ ३५ ॥वेदविषावतस्नातासवैशास्त्रविशारदा ॥म त्यसाबाद्देवगणे भेवितेवसविष्यवि ॥ २६ ॥ यभ्यश्वनी न्यरदेवतयासी भान्यसुव्री ॥ यूजयिष्यतिमनुजास्त्रित्रमासे विशेषतः ॥ ३७ ॥ तस्य स्वर्गाणि सिध्यतिशिवलोकंकनतिच ॥ सार्कहेयुउवाच ॥ यनसन्बृद्शासीच दुर्गास्ताप्टिस्ववस्थिता ॥ ३८ ॥ फूलयेतिस वासेन्न क्षेत्रपा लास्त्रपोडशा।स्पर्भवस्पितान्त्ररुवारुवमितान्पाः ॥ ३९ ॥ नथैवद्द्राग्द्रियास्ताव्यञ्चराणेश्वराः ॥ भागाञ्चेवक्विशाञ्चसा्ध्राञ्चव सवस्तवा ॥ ४० ॥ एते-पविवसीन हिपाम्यतेचान् हतूपा। ततः कतिपयेकालेगतेस मुरपिसत्तमः ॥ ४१ ॥ तपञ्चचार विपुल् भूराविषेसह-स्तरमा स्यात्मासमुखनापुराची स्पीशिरोमणिना ४२ ॥तस्याविनाहोसजातोयदात्रीपतिनासह ॥ तदादेवर्षय सर्वे मुनयञ्चतपो धनाभाधवता ॥

शृषीन्वर महादेव सीमान्य सुद्री देवीं कु नेत्र मासमे फ्लाफरेंगे तो २७ उनोके सबकामसिन्द्रहोने गेमार्के डेयकहते हैं हे युधि छिर जिसम्बन्ध अवाय दुना देवी २० सोला सेवपाल न्याय उन्न २९ वारा खूर्य सृति वारा ग्र पपती एकवीस नागमूर्ति साध्यगण वसुगण निषास करते है ४ -ऐसायहस्थान पवित्रसवववसे रिसते हैं फीरकहिक दिनगये बाद भ्रुगुक्ति ४१ हजारवर्षकी र पम्बर्या किये स्युकी रूपा विनामकरके रही इमी अससे भीनामकी कन्या उसन्तमार हती ४२ उसका जब विवाह विष्णुके साथ भया उसवरवत देवकरिय स्वित को

होत आये ४३ करपप अत्रिभरहाज विश्वामित्र गीत्म जमदिन वृत्तिष्ट च्यवन पेर्गु ४४ असित देवल नारद पर्वत मतगृहारित जातुकणे बाष्कल ४५ शाकल्यशीनक मेंग्रमंड्क सुरभी यम ऋतु वेदिशिरा सोम्य शंखिलिखित ४६ गतर्रन गृत्समद सुमृत र्रेमिनि इत्यादि अनेक ऋषि ४७ वो विवाहोस्तवमें आये पुरशोभायमान भयाहें उसबरवेत रुक्मीनेमनमं विचार किया कि बाह्मण का स्थापनकरना ४० फिर अपने पतीकु कहती है है विष्णा ये जो भ्रुखादिक ऋषी है बाह्मण है उनीका ४९ यहाँ-स्थापन करनेकी इच्छा करती हु और चे वीस हजार प्रजापती कु स्थापन करना ५० और वारा हजार बन्नपद कि इच्छा करने वाले बहा चारी है ५१ नारद का बि ऐसा बच कर्यपोऽ त्रिर्परहाजो वृत्या में बोधगीतम ॥जमदिनिर्सिष्ठऋच्यवन पेरुरेवच्य ॥ ४४ ॥असितोदेवलक्षेवतयानारदपर्दते ॥ मतंग-श्या एहारी ने जाहुक परे । अप ॥ श्व ॥ श्व ॥ श्व ॥ श्व विकास से मुर्मे हुन् स्रिमिट मः ॥ ऋटुर्वेद श्राः सोम्याः श्रास्य के ख़ितस्तया॥ ४५॥ वातर्नीयतामदः हुमंदु है निसाया॥इत्ये वमायाऋषयस्तयान्ये पच्की वैवाः॥ ४०॥ आगतात्र्योत्सवेतत्र एरंचार्स तह्योपानं॥ वाह्मणा नांस्त्रवेराजन् विरेषायित् मुचाता ॥ ४ द ॥ छक्ष्मी अपितनामानमाहि चेद्यचम् दा ॥ एतान् दे ब्राह्मणान् प्राप्यान् भृग्वादी नियतवतान् ॥ ४९ ॥ विदेश चेत् मेच्छा मिल्लसादा दिहो द्यतान ॥ प्राजापत्पाच्यत विश्वासहस्त्राणिस्रेत्र्यम्॥ ५० ॥ त्रह्मचर्यत्रतस्यानापदे बाह्मजटे पेणां॥

नांस्त्रवेराजर् वेरेशियेत् स्वता ॥ ४८ ॥ छक्ष्मी र्श्वपतिनामानमाहर् देवचक्त्र दा। एतान् व्याद्धाव अत्याद्धात् प्रमुखादी नियत्र ततान् ॥ ४९ ॥ तिर्श कि मच्छा मित्रस्मादा देहो द्धातान ॥ पाजापत्याच्यत् विश्वासहस्याणि मे रेन्यण ॥ ५० ॥ ब्रह्मचर्य वत्त स्थानाप देशाह्मज्ञ विणां॥ हाद्रे वसहस्याणि से तेवेह रसत्तम् ॥ ५९ ॥ नारदस्यवचः शुत्यादेवादेवर्षयो। पिच ॥ साहसा धि तमनानाने दुः किचन केचन ॥ ५२ ॥ अ स्वतस्तानसमाकार्र बाह्मणान् प्रमित्तसहना॥ दिरा प्रणाम्यापे वाच मसादा क्रीयतामि ते॥ ५३ ॥ ए द्विशाच सहस्याणि वेश्यानामम् सं-स्थित । प्रथानिक त्रेह तिष्ठ दुवे देजाः ॥ ५२ ॥ त्रिम त्र्वाय स्थिताः सर्गतमानमा ॥ व्यत्वेद दिच दुवेद ध्या यिनः परमे = एज्यताः ॥ ५५ ॥ धनधान्यसमुद्ध क्र वाछितभा हिरु सणाः ॥ सर्वकामे प्रत्येपनाः गृह छूश विवर्जिताः ॥ ५६ ॥ इतिसम्या पितान् दिमान् श्रीः सदामत्यपालयत् ॥ गंगां निह्महत्ती र्थतत्रेवभारतः॥ ५७ ॥ न त्र ने देव क्रियन्य उत्तम मानवे क्रतरकुच्छ देतेन् सपे ५२ पछि लक्ष्मीनो भन् हुक हे छ नमृतासे बाह्मणीकु कहतीहे हे बाह्मणहो अन्यहकरो ५३ और छत्तीस हुनार वेश्य विचक्रमीन ओ उत्तन किरोहे उन का स्थापन करती हु और अ

न हुनक देव ऋषिमव उत्तम मानके ऊतर कुच्छ देतेन्भये ५२ पीछे लक्ष्मीको भन् गर हजार ब्राह्मण वि यहार हो ५४ तब हो सब ब्राह्मण और वेश्य तयास्त कहके प्रसन्म नित्तमे वासकरते भये नारवंद के पवन करनवाले परम तेजस्वी ५५ धन धान्य हं समुद्ध यह क्रेश से रहित ५६ ऐसे ब्राह्मण का स्थापन करके लक्ष्मी सर्व कालपालन करती भइ ऐसे वो भ्रमुक्त प्रमे गोना गोर्न नाम करके एक ती घी है ५७

हमरा समागम हुवाहै और जाहा विष्णुनाहा असिनी कुमार आहा भगका स्थान वाहा विषाह करना उत्तमहि ६४ यह भारपद शुक्क दशमिक दिन गो लिक उपमे मनुष्यने निभ्ने करके विवाह करना ६५ मनम कत्यना भाति सशय चिंता नकरते अवश्य जो विवाह करेगा तो शुभ फल होवेगा ६६ यह स्थानमेश्रो विहोत रेहेगा परेतु इस स्थानमे जो उस नभगे है वे महाभय विज्ञ है ६० मर अनु यह स बाह्मण वेदशास्त्र बन स्नावक धर्मने कुशल होवेगे ६० और मे-अनुभवस सबलोकोक हितकारक यह स्थान गोना गानी नामसे विख्यात हावगा ६९ मृत्यस्त्र नो बाह्मण रहते है वे सब तुमेर नामसे ८ भागव बाह्मण

अस्मित् थेन्रः स्मात्वानमस्येद वर्म दिने ॥ माहे गेरजल है दे विव हं कारये ततः ॥ ७१ ॥ वर्ष कर्म गलं दे हे त है दे बारह है -श्रयः॥ गोर्न येपार्वती देवोगोना वाबाद है श्वः ॥ ७२ ॥ ताक्यां में लापके यत्र विवाहस्त व शास्त्रम् । १० हम त्रव शिष्या में प्रययं के कयासह॥ ७३॥मत्मसादात् दिज्येष भृष्ट् सेवं भाविष्यते ॥हरिक्षणाः अधा पिभारीवाः सदीगे नागे स् इंदर्ज लं ॥७४॥ विवाह मध्येचानं यतंनकुं तेपूजनं ॥देशा विसायमं दक्ष्यं मध्योक्तिसां यतं ॥७५॥क मलेजपुरेचा क्तिभागे वाणां समूहतः॥तेषा पे जनसंबंधः कत्यार्संबध एवच्या ७६ ॥ न हे न स्ट दिने : सार्क २ व टे व कद चन ॥ क्षेत्र स्थत देजाः सहेस्वधर पर ने शिताः॥ ७७। इति हैं बा॰ भार्रेट ब्रह्मणे सित्तेन्य निम्म अरुणे ३६ पेचद्र विडमध्ये दुर्जर से पदारः आदितः श्लो अ संख्या ३६७६ ७४ लायदं वेवाहमें पूजना देक करते है और दशा दिसा केंद्र इनो में है ७५ कामलेजगावमें जो भागविकाजया है वे स्वधर्म में आलस्य बोहोत रखते है उस के लियं उन का भोजन संबंध कन्या सबंध ७६ भृगुक्त त्रस्य बाह्मण के साथ होतान है है क्षेत्रस्य जे बाह्मण है वे सब स्वधर्म कर्म नेश रहते है ७७ इति-ब्राह्म॰ भार्गव ब्राह्मणी के उस त्ते संपूर्ण भइ मकरण ३६ દર उरत्स दिरा इह्रणेस् ने म्बरणं ३७

अब तलाजिरे बाह्मणों के उस ने कहते हैं स्केद अगु स्ति सुनिङ्ग कहते हैं है अग स्ति प्रमास सेत्रमें रामतीर्थ करके एक पुनिन तीरी है १ पूरी ने तास्यामें

रामचंद्रने राह्मसोकु मारके निर्फटक प्रधा किये र जिनके राज्यमें कोंद्र रेगिया कोंद्र चेताहरया कोंद्र प्रत्याहुणी या कोंद्र रेधन कोंग हरवर हैता नहीं ताहर प्रजित्स कोंद्र प्रत्याहुणी या कोंद्र रेधन कोंग हरवर हैता नहीं ताहर जिनके राज्यमें सबले कहर ताहर परहा वाहर आयके ५ है जिन

ऐसे नामसे ) विख्यात हो भार उनोने यह गोनागोनी तीर्थ में अवश्य पूर्व क्त समय में मेरी आज्ञारे विवाह करना ७० इसतीर्थ में स्नान करने भाद्रपद शुक्क दशमी के दिन गोरज लग्म विवाह करेके ७१ तो मंगल श्वभफल जानना ऐसा शारूनका निश्चयंहे गें नी पार्वती है गोना शब्दसे मयह ७२ दोनोका जाहा मिलाप प्रयाहिन वाहा विवाह शुभजानना मयथाबिका सहवर्तमान यहा निवास करता हु ७३ मेरे अनुमहरू यह सब भ्रयु क्षेत्र होवेगा अबीतग भागव बाह्मण गोना गोनी तीर्थ

भीर रामकी निवा करनेलगा बाह्मण कहताहै है पूर्णी तु बढिशोक करनेलायक है कारण धर्म पानसे कभी होगई ५ और रामच हुके आधीन भाषु बड़ा क इसे क्ष भया ऐसी अपनी निवाशका करकेरामकइ ने है ७ इं बाह्मण तुमक क्या करहें सो कही बाह्मण कहता है है राजन सुमेरे राज्यमे तुमेरे दोषसे मेरा पुत्र ॥श्रीगणेशायनम् ॥भीजग्दमायैनम् ॥भीषण्पुरवउवाच॥श्रुण्वगरत्यमवस्यामिमसासेतीर्धस्ततं ॥शमतीर्धमितिरन्यात सर्वपापमणाशन॥१॥पुरानेतायुगेराजारामोदशार्यात्मज् ॥निष्ठदकाचकारोबीराससानावधात्मञ्ज ॥२॥तस्यराज्येकभ्वनासू इ.स्वीनम्याधिपीडित्।॥मल्ययुनिधेनोलोकोर्रातञ्जक्तिविवजितः॥३॥एवशासतिराज्येत्रेलोकं सर्वीमहासुरवी॥पृथिव्यासर्व जातीनाशासतेवैविशेषवः॥४॥वयद्भिवर् कस्विद्कालेमृत्युमागतः ॥समादायसुतस्क्रधेराजद्वारमुपागमत्॥५॥तत्रस्थित्वा-रामनिदाचकारमुनिष्गवः॥दिज्यवाच॥योचनीयामिव्सुधेबात्वपृद्धिरयान्युता ॥६॥रामहस्तमवुभासाकेषात्क्षतरेगता ॥ निधमानृतवाराम्यात्वासुनिद्नं इरिशा ७ शतमागत्यामवीद्रामो विनेक्षिपमम् द्विज्ञा दिज्ञञ्बाच ॥ इ।कष्टशुणुमेराजन् त्यियरा <del>प्यासिका वा अत्माद्यमिनपुत्रोयरोपात्तवमृत</del> किछ॥राम्तेपिनरिस्वस्थैराज्यकर्तरिकस्यन्॥\* ॥द् स्वम्तद्वित्यद्राज्येपुत्रोत्मासुम् नी मम् ॥ इतिनिदादिज्युरवाच्यु वारामाति दु वित्या १० ॥ मा भैरितिदिज्ञ महत्वतु रवनमाज्ये हैं ॥ तर्ने रामोरथवर माठरी हासुधान्विव ११दिशमेद्रीजगामाद्युवृद्धिसय मनुतितन ॥मैक्टवीचारुणीवामो सोम्येशान्यीतेन परं॥१२ ॥नासुक्कवापिनापश्य तृपापसूलमरिद्मः तन स्वाञ्चवराम पर्येन्यामद्रयेनवै॥१३ ॥विषिनवृक्ष्ससीर्यासिकव्याघ्यसमाकुल ॥व्यविश्यवहर्नममावटशारवावलेबिन ॥१४ ॥ व्यथीर मुरवचीधीपाद् पुरापानकरतदा शतरङ्घाविपिनेतस्पिन्राम प्रहरताबरः ॥ १५ ॥ तमुवाचतदावाक्यकोसिकोसिव्रवीतृन ।।अथोवाच त दासापितपस्तिवप्रुगृनर ॥१६॥ अत्यापुर्णमृतुपाया इंगम तुमेर पिताके गज्यमे अल्यायुकोईनिह सया भीरतुमेर राज्यमे मेरापुत्र अल्यायु होयके

मृत्याया ऐसी ब्राह्मणके सुरवसे निराधनण करतेरामचङ्गातिहु रवी होयके १ कहत है ई ब्राह्मण तुम भयपावमत तुमेर हु रवदूर करताहु ऐसा कहके आयु भ छे है रथमे बैठकर ११ इड़ आपि यम मेरन बुझ्य तपु कुन्र हुंशान्य इनोहि सबभगरिदेरवे १२ पर बोलोक मेकोइबि ठिकानेपायकालेश नाइहें पीछे रथमे बैठकर सब पुर्वी किरे १३ फिरते एक अघोरवनमें आये तो वाहाँ बड़के झाडसेपावच धेहु वे हैं १४ निचे सुस्वी किरे १३ फिरते एक अघोरवनमें आये तो वाहाँ बड़के झाडसेपावच धेहु वे हैं १४ निचे सुस्वी क्रपर पावहें भूम्मपान करताहै ऐसा वो तपस्व कु दे

रवकेरामचंद्र १५ कहते है अरे हे तपसी तुकोन है के नहें तब वे तपस्रीका वेष धारणकरनेवाला कहता है १६ हेराम मय बांह क नामका खद्र हु मय ब्रह्मपद जाने की इच्छा करता हु तब इतना बचन स्नते रामचंद्र कोध से लाल जिनके ने बहे गये है १७ वो घांह क खद्र हुं कहते है है दु ए तरे सरी रवे कुं देड देन वाला मय सो मेरे की इच्छा करता हु तब इतना बचन स्नते रामचंद्र कोध से लाल जिनके ने वे अजसे दूसराकोई खद्र ऐसा करे नहि १९ ऐसा कह के खद्र से खद्र का म- कु निह जानता १८ अरेत इप्रकात में वे उकर अप्सरागणसह वर्त मान गया पी छे रामचंद्र खुद्र के मारके अयो कि छोदन करड़ाला रामहस्त से मुस् है के बाह क खद्र व ब्रह्म लोक छोदन करड़ाला रामहस्त से मुस् है के बाह क खद्र वे ब्रह्म लोक छोदन करड़ाला रामहस्त से मुस् है के बाह क खद्र वे ब्रह्म लोक छोदन करड़ाला रामहस्त से मुस् है के बाह क खद्र वे ब्रह्म लोक छोदन करड़ाला रामहस्त से मुस् है के बाह क खद्र वे ब्रह्म लोक छोत है के ब्रह्म लोक छोदन करड़ाला रामहस्त से मुस् है के ब्रह्म के ब्रह्म के ब्रह्म लोक छोदा कर जाता है वे उकर अपसरागणसह वर्त मान गया पी छे रामचंद्र खुद्र के पाय के अप ब्रह्म के ब्रह्म लोक छोदा के खुद्र के ब्रह्म के ब्रह्म खुद्र मारके अप ब्रह्म खुद्र के ब्रह्म

हुन्देहंग्रह ने नम्मावांखा मेब्रह्मणः एदं ॥ततःकोधा तिताम्माक्षोरामोराजीवलीचनः ॥१०॥ तह वाचतदावर दं वे व्वतापसाधमे ॥रेदुष्टमानजाना स्तिरहाामंतकं प्रकृत ॥१० ॥त्वेजघन्यजोष्मत्वात पस्तप सिदुष्टरं ॥अतम्बोन्ह नेप्या मेनान्योयवेक रेष्यति ॥१० ॥ एवं हुवाणः रवद्वेणश्रद्धस्य दे खिरे ॥तेन यहां गमेलोक् ह्मणः परमात्मनः ॥२० ॥ विमानवरमारु त्य हुप्परो भिः समावृत्तः ॥ हत्वारामस्ततः श्रद्धमयोध्योप्पागमन् वा॥१० ॥स्वष्ट्रपे देशने व महेन नेगकतः ॥राम व विभावस्यविभिष्ठं सुप्ति व व स्वयापस्ति स्

खत व सिष्ठने निवारण कियातव रामकहते है २२ हे व सिष्ठ मयने क्या अपराध किया है सा कहा व सिष्ठ कहते है हे राम दुनेरे राजदारमें बाह्मणका मृत-वालक पड़ाहे २३ उस्कु सर्ज वन करो तव रामने वो मृतवालक कु देखक २४ उसके शरीर ऊपर हात फिराते हि यो मृतवालक सजीवन प्रया तव युत्र कु छेके बाह्मण रामकु कहताहै २५ हेरामहे महाराज दुने रायश पृध्विमे परचात प्रया और एत्र पीत्रादिक सहवर्तमान निकटक राज्यकरो २६ ऐसा आशिवादिक एत्र छेके बाह्मण अपने घरकु गया २७ बाह्मणक गरे बाद रामचंद्र राज्य गादी ऊपर है उन लगे तव व शिष्ट कहते है है राम दुम राज्य करने कु ये रयन है हो २० जिसवा से तुमने तपस्वी न इदा नाशादियाहै नो दूर हतातुमक भर्हे २९ भी यमकहते हैं है निस्टक्याकरने से दूरहता दोपसे मुक्त होजातु नोज्याय बतान मयकर मा ३ • विस्थ कहते हैं हतानुभा सहोत्र में जान वाहा अनेकतीर्थ हैं नहा त्याना दिक करने से युद्धि होनेगी ३ १ विस्थ कानाव्य अवण करने राम अति विद्ध हो के रवमें नेठ कर मभा स हतामुभागास होत्र में जाने जाने कि कि नो होत देश देखते देखते २३ सी राष्ट्र देशमें आपे तो पाहा एक भ्रष्ठना मकरके देश देखा ३५ वो देश में तरार नामक राह्य स रहताहै और रक्तमें अने जाने जाने के लोड़ा करताहै ३५ तन सबलोक तरार देखसे भयाभी तहीयके रहा ना देश के हताम करके चोदेश का पूर्व स रहताहै और रक्तमें अने जाने जाने वास्त सम्मानक्षित विकास सम्मान सम्मान सम्मान सम्मान सम्मान सम्मान सम्मान सम्म

॥ श्रीरामउषाच् ॥ ॥केन्क्रतास्म्हर्यानस्पतिद्विजपुग्याःकथयस्वमहाभागत्ववाचयक्रोमितत्॥ ३०॥ वसिष्ठ उपाच ॥ गण्ळप्रा समद्रतेतत्रतीयाँनिसतिनै ॥तमस्तानादिककृतानते सुद्रिमवाप्यसि॥३१ ॥ वसिष्ठस्य ऋषेवाँक्यश्चेतारामोविविव्हछ ॥ स्यद्नेनतुने नैवप्रभासंप्रतिचागमत्॥ १२॥ततः समुद्रतीरेणगच्छन्राजासराघवः ॥स्वरथेनासु योगेन देशान् इस्तान् द्वसा ॥ १३ ॥त्तः सीराष्ट्रम गमन्तनदेशवदर्शस् ।। अष्टनान्नात्विस्यानसमुद्रस्यसेमीपतः ॥ ३६ ॥तत्रक्षिन्तराकाख्योराक्षसोनिवेसन्भवि ॥ सोनैवकानुजोमा र्गेपीरियामासर्वेजनान् ॥ ३५ ॥ ततोलोक्झसमाज्यु । रहावा तस्यशात्ये ॥ रहोनाम्मानुष कश्चितृ तस्मिन्देशे वसंत्युरा॥ ३५ ॥ सात्तुक्तां विकारकातारु हागात नकी विता ॥सारु हावामगवती प्रसंसाभूत् महे न्यरी ॥ २० ॥ लोकानुवान्तरे द्वा णी कि बोद्ध स्वमुपस्थित ॥ ॥ लो कारज्यु ॥ ॥ रसः केश्वित्तरात्राख्योत्योकान्पीड्युतेशुना ॥ ३८ ॥ तहनिष्यसिमातनीमहत्तीर्व्यन्नविष्यति ॥ तुनः खबुसुपादायानिर्ग तातार्दिशयति ॥ २९ ॥ सागतारक्षसातेनसुंसुधेवैदिनेत्रप ॥ देव्याहततुतद्रक्षाः स्वनितास्यापितभ्रवि ॥ ४० ॥ रैवतस्य गिरे ज्रुगतस्या परिन्यभान्त्रिवा ॥ तत्रसान्यत्स्वरुपस्वस्यापयामासवेशिवा ॥ ४९ ॥ द्वावीसि नीतिविख्याताभक्तानामभयपदा ॥ ध्यागतासारु हाविवै

निवेशनमयात्मन ॥४२॥ ॥ रूक राजाया ३६ उसकी वो कुछ देवतायी वासो उसादिनसे बोदेवी कानाम रुहावा प्रसिद्ध नया २७ ऐसी वो रुहावा देवी सब छोकोकु पूछ ती हैं कि तुमकुष्या हु रबहै छोककहते हैं हे देवी एक तराछ देखा है वो छोकोकु पीडा करता है ३० उसकु मारे तो हमकु सुरव हो वेगा तब देवी हात मे रबहु छे जाहाद तथा ३९ वो दिशा मे जाय के वीनदीन पर्यत देखके साथ युद्ध किया देखकु मारक भूमी मे गाड दिया ४० और उसके उसर रेवत पर्वत का शुगस्यापन कि या फिर वो शुगके उपराभग एक सब उपराभन किया ४१ उसका नाम हारवासिनी मक्त कु अभय देने वा छो है फिर रुहा वा देवी उपने पर्वस्थान में मनेश किया ४२

धर्म अर्थकाम मोस नारफलकु देन्वाली बोमती है अववोरेवतश्यके ऊपरजोद्वारवासिनी विराजते है ४३ बो श्याके ऊपर धीवर नामकी हीनजातीके वहे पापिछो करहते हैं उन का ऐसान महे कि वकरे में दे हेले आदि पशुकु मारना उसका चतुर्थीश देवीकु अर्पण करके बाकी कासंसार रवर्चमें लाते है ४५ और नावमें है उके समुद्र में जो वहेवडे वाहाण झाझ आग्वोद आवती जाती हुं दे उसकु हूटलेना जोधन मिले सो चढ़ थेशि देवीके साम्ने अर्पण करदेना वाकीका संसार रवर्चमें लेना ४५ पीछे कड़क दिनगये बादरामचद्रवें ओड़ मार्गसे वो द्वारवासिनों के नजीक आय पहुंचे उसवरवत आश्विनमास आयं पहुंचा ४० तब रामचंद्रने नवरात्रका व्रत करके देवीकी श्र

भाजतेसामहादेवीच्हु दर्ग जलप्दा।। रेटतं शृंगमान तंसं स्थिताद्वारवा सन्।। ४३॥तस्मन् शृंग्वसितस्मधीवराः पापहुद्धयः॥ इल म स्मान्छागगर्ग न मेषरार्ग स्ततः परं॥ ४४॥मा हषां स्तत तोज मुस्सरे देखे सम्मर्ण न । न हथे द त्मां सस्य रार्ग कर तद्य तः। ४५॥ नोकि से मुमासां माव हुं उन्स्यंत्रकान्॥ तद्व मार महिषां स्तर्व कर ।। ४६॥ ततस्ति वसारीण राम स्तं देश मार महिषां स्वस्ता पासः स्पाम कालवेगतः॥ ४७॥ तत्र रामे पति देशोनवरा वस्मावस्म । ता देशे पूज्यामास उपवास परे नृष्यः॥ ४८॥ नवरा देत्त पूणे हं मात सकुमा रेको ॥ अभ्यक्ष वस्त्रालेकारिये जायिता यथा विधा ४९॥ विष्य भोजने दता द सिणाते वस्म जिताः॥ ततो हे भूयस् प्राद्य दे कहिजवरं पति। ५०॥ निष्कं महित् मायाता वारिष्ठ स्तर्व स्तरा ५०। निष्कं महित् मायाता वारिष्ठ स्तर समा । व वराणां तवा तेषा मध्ये के दे हु प वराः॥ ५२॥ विष्व व गृहित् त्याते भूयस् दे हिणा पति॥ षण मुख्य स्वात् ॥ आयाताः स्व कि हु सासी क्षेत्र स्वात् पति। ५०। निष्कं महित् सामाता वारिष्ठ स्तर समा व वराणां तवा तेषा मध्ये के दे हु प वराः॥ ५२॥ विष्व व गृहिता हो सित्त स्वात् स्वातः स्वात् स्व

यारामहतः हा िवनां तरे॥ ५६॥॥ जा करते मरे ४ न नवरात्रपूर्ण मयेवाद दुर्गाका हो म करके छुमा रेका पूजाकर के वस्त्रातं कार भोजन वे छे ४९ ब्राह्मणों कु भोजन वे छे दिसाणा देळ वसर्जन केया पछे एके कबाह्मण कु एक ४० निक निकर वर्ण देना ऐसा मनमे विचार किया तब यह वृत्तां त हुनते देश देश हो हो त ब्राह्मण आ रे ५० उसमें जो ६ वर जाति के बी हैं त लोक रे उनमें से ने फह वर्ण किला स्त्रासे ५२ ब्राह्मण का वेश ले के सूयरी दिसाणा ले ने छुणा ले ने छुणा से एक देश के हते हैं दे अग सितव रामने हे हैं वर बाह्मण का है थे से राम कु देश है उनो कु देश के ५२ जा हमा कि ता से में द्वार वा सिन देह है मारने कु ते यार हु है ऐसे राम कु देश के ५४ ज

तरी आपके रामुक कहती है हे राम ये मेरे भक्के इनोकुमारोमत ५५ यद्यपियह लोक हुए है तथापि मास्ने यो ध्यनहि है हे राम एक उर्द्र कार् बनमे तुमने मारा बो हिया अविग्र नहिं है तो यह हता करने केसे मुक्त होने में ऐसादेबी का क्वन झनते राम कहते हैं ५७ हे देवी यह लोक हुए हैं किल सुगमे वर्ण सकर करेगे तब दे वी कहती है है राम यह सब आहमणनेषधारी ५८ बदि लोक होजाब शिस्वायकोपधीत धारण करना तब वे सब धीवर राम कु प्रणाम करके सामने खडे रहे ५९भी जिसकी आहमसे वे सब बाह्मण विगामक गाममे गये बाह्म जनोर्द्र भारण किये ६० दिक्षण गावमे जायके कर्ण वेघ किया बेतलाजिये बाह्मणोके गोन्न कात्ययन जरायके विगामक गाममे गये बाह्म जनोर्द्र भारण किये ६० दिक्षण गावमे जायके कर्ण वेघ किया बेतलाजिये बाह्मणोके गोन्न कात्ययन

तद्यानगताराजन्द्माहताक्रमाजीसि ॥हार्गिसिनीक्य श्रुतारामोदेवीमथाज्ञवीत् ॥ ५७ ॥ रामउवाच ॥ दुर्शह्यतेकलीमासंकरियति दिसंकर ॥ ततोदेव्यवंदी हामोमेते आह्मणवेशिन गा ५० ॥ बादिन सम्जायतासाशिरवाद्यत्रधारिण ॥ ततस्तिधीकराराम्यणस्य तस्यरेग त ॥ ५० ॥ रामवाक्यात्ततोजसुर्माम्भिस्तत्रसन्ति ॥ तत्रयन्नोपनी नानिगद्धित नीतितेस्तव ॥ ६० ॥ मामगत्वा हिकणीर्यकणीयस्य ता कतः ॥ तेषात्रोचाणिससेवस्या पितानीयरेणवे ॥ ६० ॥ अवस्थित्ते चहिकणीयामीभूमीप्यागती ॥ पावागुची दकेदसनमान्देचाधिकारि ता। ६२ ॥ केवत्वहिज्ञमान्नास्त्रेसोपवीतात्मम्बका ॥ तहाहजाहिजास्त्रेते जाताराम्यसोवतः ॥ ६२ ॥ सस्याप्यतान् तत्तोरामोद्दानिसिन्या प्रसादत् ॥ प्रमासगतवान्यमातृभाष्यां स्तात्वायपाविधि ॥ ६० ॥ चंद्रचृहामणीं श्रुक्योति क्षिण्मपूजयत् ॥ सिधीस्यात्वाततोराम कता स्वारव्याभिसान्तितं ॥ ६५ ॥ रामनीर्यत्तत्रवेवरामेग्रमितिसन्नित ॥ स्थापयितात्रभान्दानि पिनृणासचकारम् ॥ ६६ ॥ बाह्मणान्योजयितानु वतातेपाचदिसणाः ॥ वासोककारधेनुभवतादानान्यनेकशः ॥ ६७ ॥ प्रचरात्रस्थितस्तत्र प्रस्थानमकरोत्ततः ॥ रथमाकह्यस्वराम साकेत

जिमिनास्तर ॥ ६८ ॥ ॥

गारण स्रवण आदि ० ईसरने स्वापन किये ६७ वे नियाममे दिकर्णमे गासिक्यनासे तडाजिये नाम परचातभया यह बाह्य
गोका पारतीर्थ केनेका अधिकार निर्देशोर याह्य अधिकार निर्देश ६२ केवल नामगात्र बाह्यण अमत्रक विनोह यहापवित है नडाजगावमे रहेवास्त रामके अनु यहसे तलाजिये बाह्यणमये ६३ यहगानगुजरात नबीक मोलनाद देशमे भावनगर से पश्चिमदिशामें बाराक्षेसकेफ परतुल जापुर ना तलानागावहि मोपनाय जिनके पासहि द्वा
रवासिनी जिनकी कुलदेनी है उसके अनुप्रहर्ष पमने उनेका तलानगाव मे स्थापन किया अससे तलानिये भागे इनका जयाहाल मे गानतलाजा झाझ मेर पौचल सुर सथरा उ
नदी वह गानों में है इस रितीस तलानिय बाह्मणोका स्थापन करके भमास तीर्थ मे जायके यथाविधि प्राचीन सरस्वतीये स्थानकरके ६० सो मेन्यरकी पूजा किये बाद सरहा मे

त्नान करंद अपने नामरे रामतीर्थ रामेश्वर शिवकास्थापन किया ६५ पित्रियोका श्राह्म ६६ ब्राह्मण भोजन करवाये दिलाणि देये वस्त्रारुकार गी और दूसरे अ नेकदानदिर ६७ पाचरात्री वाहारह के वाहासे प्रस्थान किया रथमे देवकर अयी ध्यामे आये ६८ इष्टमित्र भाइबंध ब्राह्मण सहवर्तमान नगरमे प्रवेश करके ब्रा ह्मणं इत नमस्कारिकया सब भाजवर्ग आये पावपडे ६९ ऐसे रामचंद्रकी शूद्र हता दूरभइ व सेष की पूजािकरे धर्म से राज्य करने लगे ७० यह कथाश्री स्कद-

भातृ भिर्द्वजवृद्धेश्वसहरामे विशाहरंग विप्राणांवंदनंकताभातृ भिः सो प्वंदितः ॥ ६९ ॥ हत्याश्वद्रस्यसानश् निष्पापस्तत्सणादभ्व त् ॥ वसिष्ठपूर्जाम्तानु स्वराज्यप्रशसासह ॥ ७० ॥ इत्यञ्यान ञंष्टत ह्या स्त्ये सुनिशद्ततः॥ आनदं परमे छेप जा ति छेप म्सादतः ॥ ७० ॥ इतिश्री स्कंद एराणे बाह्म ० तडाडजाब्र ह्मणे सिन्ध परणे २७ पचद्र विडमध्ये एज रसंघ्दायः ॥ आदितः पद्यसं १९४९ ६९ स्वामिके मुखरें श्रवण करके अगस्तिम्रानि बडे प्रसन्त भये ७१ इतितलाजिये ब्राह्मणोसिन प्रकरणं २७

अर मेद पाट ब्रह्मण ह नि मकरणं ३८

अब मेगाहे बाह्मण और बनिरं उनोकि उसित कहते हैं प्रथमश्री कात्यायन नामक जो विध्यावा सिनी देवी और दुंदी गणप ते कव्यप्रतीने १ एक छिनी महादेव पावनती है कि स्तार करके स्फष्टकथा कहता हु १ जो नक पूच्छते है हे स्तत मेवाड देशों एक छिनी महादेव से आधि कित-

कं गणेशायनमः॥ अथनेदप् ठब्र ह्मणेस निसारमाह॥ उक्तं चपाह्मे पाताल खंडे एक लिंग् हेन महास्टे क्रिक्ट कि निस्ते देवी नामने कात्यायन चपा॥ ६९ डिहेत्रप ते चेट का श्यापं से निष्ठ गणे। १ ॥ एक लिंग श्रिक्ट पात्र महास्टे के ॥ त्रिक्ट प्रति गणे। नित्र प्रति से स्कृदे॥ २॥ त्री निक्छ वाच ॥ भट्ट हरार के त्रास्ति हरार के त्रासि हरार

जो भट्ट हरहे इ उसकामहात्य कहे ३ सूत कहते है-हे शेनक हमने जैसा अनि मश्राक्या नेसा एक देन इष्पदंत गर्पर्व इन्जी कुं पूछता भया ४

से होवेगी इस रितीसे नारदकहते है १ इतनेमें तहाक नाग अकल्मात अपने सु वडे पनामानके कहता है है सुने सुमेरी गति सब विकाने एक सरिरनी है १० जैसे हम एकवानारदोयोगीपवित्री फर्ज मागत ॥पातालगगायुलिनेनागान्वैवित्र्यनारदः ॥ ५ ॥अनतमित्राम्यासीदत्त स्वागृतिकासनः॥ पुर पाहरुपानायावची विस्मयकारक ॥ ६॥भवता विभवन्यीयजगदान् द्वर्धनः ॥आल्हा दयति भूभार भारिण सुकृतस्थिते ॥ ७॥भूती वसट्हमनाआगतोस्मिविद्योकितं॥भवतातत्पातालेपिच्हतसततेर्गणम्॥५॥नीनास्त्रगार्डीभीति कापिसामान्यभीगिना॥स्वामि न्येव नेगदिति शित्यातस्मिन्सुनी सरे॥ ९॥तस्यकः प्राइसइसास्यात्मान्यकुमान्यन् ॥ सुनैसर्वज्ञभवतागतितरन्यभिनारिणी ॥१०॥०न कुर्ताभीतिरस्माभि सदशः क्षिपीसित् । तत सभगवानाहमानिन्यहुसन्निवं॥१९॥नारद्धवाच॥ भवारशानकुत्रापिनिकीति का पिरुर्यते॥ एवविभोपपावत्वशोपास्मीभूविष्यति॥१२ ॥तस्कस्यापराधेनकेनचिन्नोदितस्य इ॥ अस्मरशिस्मायातित्ववावस्यस्युत्तरि ॥१३ ॥अयुमित्तेभवनमुरस्योडिहिर प्रमञ्चलः ॥एतचरणवित्रामभाविनाव सरीसुपा॥१३ ॥उपप्रवृद्यम्यित् झापिततः इयस्थिति ॥भन्सुसुष्टिमान्तिक्ररपेनिगर्नपपि॥१५॥अनुनम्बद्धयनाशायभवूतस्तर्धकाद्यः॥उप्कमध्वस्वायैनित्यमेवपुनाकिनः॥१६॥ सतुष्टीभवतास्वामिभ्वतेन्तस्यभूषण । सर्वाभयविनाशायमकारभावयिष्यति ॥ १७ ॥ अथतेसुनिनोक्तेनसुपयावासुकि स्वतः ॥ वि

्दिनजगतमे फिरनेवाले नारदयोगी पातालगगाके तटकपर भगोकु पिषमकरतेक वास्ते आये ५ अनतकेपास गये तब अनतने अर्घादि पूजाकरके आसन्

देफे प्रच्छे नवनारद्धा व्यर्थ सक्त वचन इहते है ६ हे अनतादिक नागहो तुमेरा वैभव जगत्क आनद्वृद्धिकरे ऐसाहि तुमेरा सुकृतका अद्यहे ७ मयपोहोत्र सन्मनसे देखनेके गुले आयाह तुमेरा सत्वीका समूह पातालमे विस्तार प्रायहि ० और साधारण स्पाकु ग्रुडिश भीति नहि है तव वडे सपेडि तो भी विकाहा

चार्यन्स आहू यसर्गन् सर्पे करो हो बान् ॥ १८॥ ॥ तिर्भय है येसे इसरे कोई निर्भय काइाबी देखे तब नारदणी हास्य करके अभिमानि जो तह्यक उ कुकड़ते है ११नास्य करते हैं दे तसक तेरे सरीसा निभय काहाबि दुरवानहि तथापि तेरावश दर्थ हो बणा १२ सोड की मेरणा के निमित्त तसक के अपराधसे और सा-भिमान वास्य अवण करने में भाषा द्रमके छिपेव सद्रश्य हो वेणा १३ पह डिडिर सर्प है मो सुमरे में सुख्य है इसके चरण के आभ्य से तुमरा हो नार जो उपद्रव १४ उसके शातिका कारण वे मो मयने तुमक स्वनादिय यद्य पितु मकूरही तथापि मय तुमेरे अपराभस नाह १५ या सो तुम सब तहा का विक जो है वे भयना शाक सेने के वास्त शिवकी ख्यासनाकरों /'

१६ वो तुमेरे सामिहे तुमें उनके भूषण हो वास्ते भय दूर होनेक वास्ते उपाय बतावे गे १७ ऐसानारदका बचन सुनते सबनागुरु छ बु छायके वासुकी नाग १८ करे टका दिककु कहताहै हेनागहो तुमेरा भागी उपद्रव नारदजीन कहूंगा सो हुनो १९ और उसका शा तिका उपाय वि बताया है सो सबोने कोथ छोडके नित्य २० समा रखना तो सुरव ह वेग ऐसाकहं के वासुकी कैलासमे गया २१ नारदजीन हैं सा कहाया उस रितीसे शिवकी उपासना करने लगा और वृत्तांत सब कहा २२ तब शिव कहते है २३ हे वाह के हु मेरे वंशकाओं विनाश होनार है उसके शात्यर्थ मेरे वचन भगाणसे चलोगेओं र अद्धारखोगे तो कार्य है वेगा २४ एक भरत खंडमे मेवाड देश है सो बडा हु शो भित्त हैं जिसमे-ककेटिक हरवान् सर्वानादिदेशतदेश्ररः ॥अह् शृष्ट् भर्तां ज्ञा कितेषा स्युष्द्रवः ॥ १९॥तद्वारकः प्रयुक्तेपिह नेनात्रपृद्धितः॥त स्माद्भवद्भिः सेटोहिंह कीधनपरे :सदा॥२०॥व तेन बें यतः सीरव्यभने व ऋ समावतां॥ एवमा व धनागेशः केलास वास् के हिंगात्॥२०॥ नारदी दिसे हिंदी भगवंत सुपासत ॥ कथया मास्ततसहवा सु किन्द कद पेरी ॥ २२ ॥ एष्यदंतु कतस्ती भम हिम्मे बासु केर पे ॥ कर्षे ने दिन नाशायशिव वन्नमंबर्व हु॥ २३ ॥नागराजभवद्वंश विनाश विनेवारणं ॥मद्केन ध्वनाकुर्यात् कृतकुत्वास्तरः ॥ २४ ॥असि भारतर रवडे सिन्देश.परमशोषाने ॥मेदपाटइ तिख्यातो उनेकर्त रीसमान्ति ॥ २५ ॥ चित्रकट त्रिक्टा देणे रे किन्प रेर हैं।त: ॥तत्रया हि त्रिकट द्री निवसंतंकपे देनं ॥ २६ ॥एक रिगमव्योमतत्रसः माहपारू च् ॥ एवमादिष्टिई ने वास्ट्रें प्रहेस ने वा। २७ ॥ करं ने धारपदयोः प्रणास्ट स्ट्रेन्से यो। त्रिव्यतत्र विन्देशंरेवयामासमान्तितः॥ २८ ॥एकछिगः प्रसूक्ते भूदाह इँग्रोत्तर स्टरः ॥ स्ट्रष्टो सीभवद्भत्तयादाहु छेव्रस धी या। २९ ॥ वास् किरुवान ॥ स्वा मेनस्माक्मागा मेभटन १ करे छेने द् ॥ सतुष्टो स्कपाना १ तदेशो वा करम बही द् ॥ ३०॥ वासूके नाग राजलमंदुक्तंत रेतकुरु एन्दिनमेतदेवासे तदुपञ्चवनाशन ए ३१ ॥मदे तेकतीर्यभू सावतीते अर्षसे दिता ॥तस्य नेवासयपुरं वास्त ने मण भार रं॥ ३२॥॥ अनेक तीर है २५ चित्रकूट चिक्ट खा दिपर्वत है वाहा निक्रट पर्वत के उप एक लिंग महादेव विराजते है उनके पास जा २६ कीर वा हा मेरी सेवाकर ऐसाशिवका बचन सुनते वार को पसन हो दे २७ शिवक् नमस्कार करके मेवाड़ देशमे एक लिंग महादेवक पास आयुके भिक्तरे सेवा करने लगा रवत

हा मेरी सेवाकर ऐसाशिवका बचन सुनते वाह को प्रसन्न हो के २७ शिवक नमस्कार करके मेवाड देशमे एक छिन महादेवक पास आयके भक्ति सेवा करने छगा रहत व एक छिन महादेव प्रसन्त हो है हे वाह को मय प्रसन्त भयाह वरमंगो २९ वाह की कहताहै है 'शिव आपज प्रसन्त भये हैं तो हमेरा भा वे उपद्रवका नाश करो-तव शिन कहते है ३० हे बाह के मेरा कहा हु वा काम हुरत करे ए है हमेरा उपद्रव नाश करने का परम ने दान है ३० मेरे नजी के ती ए भू मेहे वाहा ऋषे रहते है उसठी का नि

١,

त्तमपुर निर्माणकरके २२ उसकी धिकाणेष्ट्रतम् श्राह्मणोक्य विधीसे स्थापनकरो और ओसरे हैं ऐसाजानकेपालन करो २३ तो व श्राह्मण व्यासुक्त होके उसदिनसे तमक से कहा आशिर्वा श्राह्मणोक्त सेवा करनके वास्ते विनये तथासु तारवर्गरे जातीक स्थापनकरो २५ और व श्राह्मणोक्त सेवा करनके वास्ते विनये तथासु तारवर्गरे जातीक स्थापनकरो २६ सुरमे उत्तम परवनायके उसमे सवपदार्थ ररवके दानपिधीसे देके स्थिरिन चरतके शिवक्रपी वे शह्मणोका सेवनकरो २० उनके पेमसे मयवि वाहा निवास करुगा और कालायनी देवी छो सुरमे निवास करुगी २० अव पुरकेतीन नाम कहते है भट श्राह्मणोक्त दान देनेसे भय हरण करनेवाला सुन

तत्रबासम् विभाग्यान्म् बीयान्स्यापनाविधि ॥ ताबकानिवतान् मलानिवरापरिपालय ॥ ३३ ॥ तत प्रश्नि तेसवे युष्पप्य करुणान्विता ॥ आशी शतेंद्दिष्तिन्यूयसामागममुह् ॥३३॥तेषातुपरिचय्पिताचन् सान्वयान्हितान् ॥ दिजाध्वानपणन्स्यानेंस्वापयानुमनीपिषणः ॥ ३५॥ तथानतेषासेवायस्यापयानतेषाच्या ।। पणिज शिल्यिन्न्यापिवास्तुविद्याविशारदान् ॥ ३६ ॥ सर्वदिगृहदानादिपुरस्कारविधान् त ॥ वासुदे प्रयत्तोसूत्वा मजतान् इररूपिण ॥ ३७ ॥ तत्रैवनिवशिषामि तेषाप्रोत्य र ॥ कात्यायनीन्त्रतेष्ठे युरुर्शस्यति निश्चित॥ ३० ॥भरतमासिजन्यन हेतुनाष्म्यतत्भवान्॥ त्स्माद्भयहरूनाम् पुरमेन द्भविष्यति ॥ २९॥ मञ्जूहराद्वयतो निषसिष्यतिस्रहिजा ॥अतोभ इहरनाम् पुरस्यास्य प्रविष्यति॥ ॥ ४० ॥ सतियेवै दिकाशीर्षिनीगान् भयसमागुमात्॥ निषीयीकरणास्छित्यासवैदासुपकारिण ॥ ४०॥ नागरानितितस्मात्तान्वद्तिकवयक्विमान् ॥सार्षकानिञ्जरस्यास्यूनोमानिजीणितान्यथा। ४२ ॥ पुरनामात्त सारेणाद्विजनामकाविष्यति॥ स्युर्भेर्रहर्नामानीनाग्यनागरक्षणात् ॥ ४३ ॥ भट्टाहराभ्वेतेभद्दायेदपाठा प्रसिद्धितः ॥ बासुकिरुवाचा भगवन् श्रीमदादिष्टकरवा-णिसुदानितः ॥ ४४ ॥ तदर्थभगवन्मत्यदर्शनीयास्तुवेद्दिजाः ॥ इत्युक्ताभगवान्त्राभुर्दर्शियता दिजीत्तमान् ॥ ४५ ॥ ॥ अया

भया वास्ते भयहर ऐसायुरकानाम होनेगा ३१ इसपुरमे भट्ट ब्राह्मण जो हर सरीखे निनास करिंगे नाक्ते भट्ट हर ऐसायुरकानाम दूसरा होनेगा ४० जो ब्राह्मण वेदिक मंत्री के आशिनिदसे नागोका रक्षण करते हैं सबदा उपकारी है ४१ शास्ते नागरि इन्ह कहते हैं इस पूरके तीन नाम स्प्रार्थक है ४२ पुरके नामके अनुसारस ब्राह्मणों कि विनाम होनेंगे भयहर मेनाबे नागर मनाबे ४२ मट्ट मेनाबे नामसे मसिंद है वासुकी कहता है है शिन तुमेरी आहा। हपेसे मय स्वाकार करता हु २४ उसवास्त ने ब्राह्मणों के दर्शन करान ऐसा बासुकीका क्वन सुनवे शिवने ब्राह्मणों कु दिस्वायके ४५

परम यसनाहीके कहते हैं है बाहु के रेरावचन रून यह चोबीस गें बंक बाह्मण आरे हैं ४६ इन का स्थापन कर वैभव रहाण करने के वास्ते भी मह हर प्रासे मट रवाडे चाबीस गंज पता जो है उन का स्थापन कर अंदि इनो के स्वाके वास्ते चहु श्री शित्र वाडे बनिये स्थापन करो ४५ अंद उसके आधे वास्तु विधामें कुशल ऐसे-मेवाडे सुतार मेवाडे सुनार मेवाडे होहार मेवाडे तंबोर्ल मेवाडे नापिक वरे रे स्थापन करो ४९ उनके घर के काम करने के वास्ते सदाचार यसगसे जितने दूसरे जाती के हैं वेसब मंबाडे नामसे विख्यात हो ५० हे वासुकि मेरे वचनसे हजन यहकाम अवष्य करना बनये वे भर मेवाडे बनम नामसे विख्यात हो ५० सोनार हुतार छोहा उवाचपरमर् तः वास्क्षृणुमेवचः॥ चढु विशृत्यस्टेते इमेवतासमागताः॥ ४६ ॥इमान्स्थापयनागेंद्र वैभवंर हित्व ॥ श्रीमद्रष्ट्र हरेभीट्ट मेदपावान देज् नमान्॥ ४७॥ चूढु विश्वतयोगे चपतयः दुण्यदृत्तयः। प्रत्येकंतच्तस्याप्यावणिजे यत् प्रवृत्ये। ४०॥ गृहकार्या दिकर्तव्य देधेर्चचतुरीणाः॥ तदधेरित्रिनःस्याप्यावास्त दिज्ञानसुंदराः॥ ४९ ॥ तद्गेहकारीवधयेसदाचारेपसंगिनः ॥ तेषी तदे भेधानेने ज्ञातिनामा पेचक्रमात् ॥ ५०॥ कर्ट्यम् हिनातेन विक्नायानुसारिणा ॥वणिजो महसंयुक्तो मेदपाठाः पुनस्त मीः ॥ ५९ ॥ दि सिनं प्रतेमहु मेदपा बाः रुणो निता ॥ एन् षामेत्रहसू : स्र स्मासु वं शाजा ॥ ५२ ॥सेवृकार जमानास्य कर दे पेमन सिनः ॥म ट्टन्त्यकृवानेतान्भेद्रपाठान् द्वज्ञन्मनः। ५३ ॥सेन्यतीक्नेट्टन्समज्ञा तिर्देखानचान्यथा । एतेषाम् केहोत्रा र्णगाईपत्याद्धमे तेच ॥५४। हैं इरहेंचीपची मैनेवर्तमाना मेहाँ धियः ॥ स्थापनीयः प्रयत्नेन हुँजराजानुया यनः ॥ ५५ ॥ एतेषो मेवये शिष्या एक हु खूबवी हिजाः। हती – कि स्थजार्त याः स्तत्र स्थि ते हेन्द्रे। १६ ॥ मदे देप रेवृत्ते स्मिन्त्रये वार्य पुरे स्थितः ॥ त्रवाय मेदपाठा से झात्य स्तत् पृथक्म ताः॥ ५७ ॥ ट्रेटेस्ट्रमेदेपाठानं भ द्वारव्यानां हिते ६०.॥ यरुस्या विदेज्ञानं वृत्तरे स नेदुगयाः॥ ५०॥ प्रामाणिकपदार्थानां हेते ६०.॥ यरुस्या विदेजानं वृत्तरे स नेदुगयाः॥ ५०॥ प्रामाणिकपदार्थानां हेते ६०.॥ यरुस्या विदेजानं वृत्तरे स त्थें त हिर छते द्विजास्तद त्या चनः॥ ५९॥ ॥ रजी है दे दे भर मेवाडे नामसे विख्यात हो ५२ भर मेवाडे ब्राह्मणी के क लिए गमे विसेवक यज्मान्-है वेर ५३ यह बाह्मण असि हो बा देक कर् करेरे ५४ यह से वक यजमान बाह्मण के कहे हजब चल्ने वाले हैं वास्ते अवृदय इनोका स्थापन करना ५५ यह भटमे वाले ब्राह्मण के शिष्य फिन जात ये के स्वतंत्र रहते हैं ५६ उनी कुमेरेपास त्रयंवाय ए रहें वाहा नेवास कराव ती देत्रवाय मेवाडे (उर्फत्रवा डि मेवाडे) जा ते ए दी विख्यात है ५७ हैनबार्ड मेवाडे बाह्मणहें भट्टमंबाडेके हिनका रेहे युरुस्वाधर्म जानते हैं ५८ त्रामाणिक पदार्थक जाननेवाले अपना हितकरनेवाले है उसी सजब भट्टमंबाडे-

बाह्मणोदि आज्ञाने रहनेवाले ५९ बीगसियामकी बृतिकरनेवाले जोत स्भापन फरताहै वे बोगती मेवाडे बाह्मण ६० मटमेवाडे बाह्मणोदि आङ्गमे वलनेवाले अपे और यह तीनोका हित करनेवाला एक बीथा झातिकी है सोबीबीस गीनमे मलेक गोनकी सुदी सृतिकरनेवाला ६२ सेवाकरने के अर्थ निष्येत भया वास्ते चोदिसे बाह्मणभया ६३ बो झातिकोद स्वतन है पर सु भटमे वासे के अनुसारसे बलताहै ६४ ऐसा चारमकारका झातिभेदकरा। जसमे भटमेवाडे सुरुपद के विकान कहे जाते है ६५ इसवास्ते हे वासु कि सुजाति यो का स्था

चतुर्सीतिकपामवर्तिन स्याप्यतात्वया॥ तत पृथक्षर्तातिश्रतुरशीतिनामवान्॥ ५०॥समध्नेवरपाठारचो महानासां तुयायिमा न्॥तपात्रयाणामपितिभेषवान्तातिरुत्तमः॥ ६१॥ चतुर्विशतिक्स्यानीचतुर्विशारचनुतिमान्॥ चतुर्विशतिगोत्राणाप्रत्येकसीपिचेककः ॥६२॥सेवायैसममूदेवचतुर्विभितिकाभिध ॥स्वर्धतेनविरन्यातोवधुरु प्चिविश्म ॥६२॥स्वतम् सत्विक्षेष् ज्ञाति पर्मशोभन् ॥भद्वानुयायोत्तपुनं भद्दानामनुसारवान् ॥६४॥चतस्रो वृत्तयस्वताज्ञातिसिद्धा पृथक् पृथक् ॥भद्वोमुरन्यतम्स्वयागुरुत्वेनोप्भायते ॥६५॥तुरमादेवमयलेनज्ञातीनास्यापनकुरु॥विज्ञापयित्वामययोवासुकिञ्चनृतः,पर्॥६६॥सस्मृत्यविच्चकर्माणपुरनिर्माणशोभन॥ चतुर्विशतिगोत्रेष्य स्ववशस्यविद्वहर्षे ॥६७ ॥श्रीम इहुहरपुर्रिवचना तृस्यान हिनेष्यविद्ये॥बानदस्यवमानपञ्चगपितः श्रीवासुदिः स्मा ्त्वे ॥यत्रब्राचतुष्यगण्पतिर्मद्वादेर्शोहिर ॥षुडीस्तेत्रपतिस्वर्मुकेधराकात्मापनीतिस्ती ॥ ६० ॥यत्रसेत्रेमहादेवएक्छिगः प्रभु महान् ॥ त्रिहरः प्रवित्रेष्ठोनदीरवच्छजलात्या ॥ ६९ ॥ विनायकोधनारीशोवेधाः शीख्दुक्छाया ॥ध्यन्तपूर्णीच्वसान्वासुक्तिर्मृतये स दा १७० ॥ भद्दारानिष्ठण प्रभावविषय् अपिदपानक्या ॥ सुझहाण्यनियामकास्तद्वतेनागेद्रसस्यापिता ॥ श्रीमत शिवसन्ति । श्रीव क्वीयुक्त निधायस्थिता ॥ स्वाशीवद्यति रितरत्यानंदिवपवासुकिम्॥७९ ॥ ॥ पूनकर ऐसा कहके शिव चुछे गयेवाद बासुकीने ६६ विश्वकर्गाक्

बुलायके उनके इस्तमे उनमछर निर्माण करवापके अपने पश्की वृद्धि रोनेके वासे नोवीस गोनके बाह्मणों कु ६७ औ शिवके बचनसे भी मह इरस्का दानिद्या उन् सबरतन पृथीमें वासुकी कु वडा आन्द्र भया जिसमङ्ग्रहम्भमे गणपित भड़ाके शिव इरिड्डिड सेन्नपित कारायनी देवी निवास करती है ६० जिससेन्ने एकि ग महादेव संस्थित विकूट पर्वत बनासनदी ६९ गणपित अर्थनारी स्र बह्या श्रीबहुक अन्तपूर्णों देवीय इसवदेवता वासुकी के मीतिके छिये निवास करते स्रवेष्ट

टमेवाडे आदिहें सब बाह्मण शिवकी रूपासे स्थापित भरे हुरे बडे शं भायमान् शिवकाबचन् मान्यकूर्के निरंतरवासुकि सं आशिवीद् देते भूये ७१ अव-चीवीस गात्रक जीनाम और प्रवर से आगी नक में स्पष्टि ७२।७३।७४।७५ हो नक प्रश्नकरते है प्रचिज प्रचीसवा बेह छ नाम करके जो जाति भेद कत्यासी जुदा हैं याइसमें है साकहो ७६ सूतकहते हैं भटमें वाडे बाह्मण चे विस गेंत्रक जो है उनसब का बंध सरीरेवी भी ति करता है ७७ रक्षण करता है वास्ते बंध से बाह्म णापनी से बाह्मण नामसे भया गणना के निमित्त से यहा गिनती किया परहु ज्ञाति भिन्न भइ ७० यह बाह्मण का भट मेवा है आ दे बाह्मणी मे भोजन व्यवहार चतु विद्या तेगे चाणां नामा ने मवदाम्यहं ॥ कष्णा वेयच मथमं पराश्रार्म तः परं ॥ ७२ ॥ कात्यायनं चगरीच ब्राहित्यं कु द्वाकंतथा ॥ की द्वाकंवतां वात्यं चुभारहा जंदगा गर्य छ ॥ ७३ ॥ उपमुन्यो खुकी हिन्दं में तम काइयप तथा ॥ मांड्व्यच्हा वेयच भागव गालवं तथा ॥ ७४ ॥ हिए वृद्धे हु दु छ च में नसंवाद्धिसंइ कं ॥ अत्रिगे त्रं चाँ तमं वेगोत्राण्येवं विनि देशे त् ॥ ७५॥ ॥ श्रेनकउवाच ॥ ॥ पचिवंशितिमः को ये-

कं थेने ये चुंब है तः ॥वदमागे त्रें रुखे स्मिन् स्ज्ञा तिरपर कि ॥ ७६ ॥ सूत्उवाचे ॥ ॥आसन्भट्टहरा वे पाखितु विशेषाः ॥वेध वहा तियः शिक्षा नेजात्मानेपुरच्या। ७७॥ श्री तिमान्रह यन्ने व यह लह मबोह्यात् ॥ ग णितोगणेनाँ द्वारा ६६ सूते द्विज है जिया। ७५॥ स् जिन्नियास्तरित्रसज्ञातिर धेको हिसः॥ स्वीत्यवहारेषु गृह्मे धीयूक्मीस् ॥ ७९ । मियस्तेषांचतेषांच नात्रं क्रियेद न्हे सूत्॥ तथा पिरू न एडादों बसूबमहदंतरं॥ ८०॥ निरंतराष हेदुः समस्रे हुते मित्रध में या. ॥ सांत्रा स्टु विवाहादी ज्ञा ते कारेटि तेडपूर ॥ देवे॥ विवाहे च रिशेषवैत्रवस्याम्य वृतच्छुणु ॥ ततः सुग्रिन् वा रेढंभ द्वतयधारिण् ॥ ८२॥ द्वंभोपरेफलारे पकारिणीया क्रिके गरहे। वरायाचमने द चा दिइ ते क्रामनासन्। ७३॥७ न्या. हुरेष्ट्रे गायत्ये तत्रतीअप्ति स्टिरे। संपूज्ये सु वस्त्रा हैरेना से भाग्य सुंदरी। ७४। ॥ और सब ज्ञाति

संबंध एकत्र होता है ७९ इने का अने का थेंडाबि अंतर रहता न है है पर्टु विवाह संबंध परस्पर होता न है है ८० मायासे तो केवल मित्र धर्म है पर्टु विवाह संबंध परस्पर होता न है है ८० मायासे तो केवल मित्र धर्म है पर्टु विवाह संबंध परस्पर होता न है है ८० मायासे तो केवल मित्र धर्म है पर्टु विवाह संबंध परस्पर होता न है है ८० मायासे तो केवल मित्र धर्म है पर्टु

बाहमें के रेअप अपने जाती के कार्यम अंतररखते हैं वश्यह भटमें बाड़े आदि जात में विवाहमें जे विशेष है सो कहता हुं विवाह का पूर्वि एक हुवा सिनी मस्तक अपर दें कलक पान भरे हुवलेके वश्कलशके अपर पंच पहांच और फल रखा हुवाले के जाहा वर्षाय के उत्तरा हो वे उस जग्गों में जाय के वर्ष आच्य न वेके आसन अपर नंकलश लेने वाला है वे उसके नाम सोमाग्य हुदरी ट ३ प्रिर दूसरी वि गाँवमें के सबसुवा सिनी मंगल गायन करती हुइ वाहा है वे फिर उपाध्याद है नोहरे में उत्तमजग्गाकरके कर राजाकु और सीमाग्यस्वरीक बुटायके बोनोतरफ की स्पियामिल के मगलगीत गायन करिती हुई ०५ चत्वर पूजा करती भई पिछे वरकु अर्थफूना कवल प्रवण विधि पाणि प्रवण चलमसण् ०५ सुटापुर्व आचार यामिक बरवाले संबंधियों कि मानपूजा मीरवका भीजन इतना व्यवहार करते हैं ०७ सब शहराणों की सेनाके निमित्त वासुकीने पहिले भटमेवाडे बनिये सन्दर्द भट मेवाडे सुतार भटमेवाडे सुनार भटमेवाडे नवोली नाह आदि करके झाति स्वापन कियट इन सबोका भमें बहु समानजानना ०९ भैसी बाह्मणकी सुस्य स्थानमें संध्याहे वैसी इब्रोकु बाह्मणसेवा सुस्य है ०० बीनक पूछते हैं हे सुत तुमने महहर स्थानका म

तयासहतत प्रचारकताचवर मद्यत ॥पूजनचलरस्येवउभयोर्मगलस्यियः॥८५॥कृषुस्ततो ५ भैदानचकवल महणतत ॥स्वयुं सिक्षानित विवाहचरु भहाण॥८६ ॥प्रयुद्धिमयाचार यात्रिकाणाचपूजनै ॥गीर वारव्यभोजनच कुर्वत्येते हिजोत्तमा ॥८०॥ विणिज शिल्यात्र स्रवेद सर्णकाराद्य परे॥स्यापिताहिजसेवार्यनात्रेवह ॥८०॥ नाम्नातेर्समिवव्यति मेटपाट मद्यद्य ॥ तेपामपिकुले धर्म स्रवृद्ध स्रविक्षात्र ॥८९॥ महास्रवाप्य यथासध्याभवेन्त्रस्यपदेत्या॥ स्रवृद्ध वर्णस्यविक्षेयापित्र ॥५९॥ ॥शोनक उपाचा ॥ स्रवृद्ध स्

ति ॥९०॥ सत्य कर्या परत् भिस्वास्ते बासुकीनागने पुरकादानदियाहै वो कारणकहो ९१ स्त कहते है पहुराजाके पान्युत्र उसमे अर्जुनके सुत्र अभिम म् भीर अभिमन्युका पुत्र परिसित होताभग ९२ फिरवोराजाकु माह्मणका शारभगिक अल्पसे सातवे दिन तसकनागसे तेगमृत्यु होवेगा पीछे सातवे दिन जब प रिसेतका तसकके निमित्तसे मृत्युद्ध वादेखके उसाह स्वसे परिस्तितका पुत्र जनमेजयने ९३ मेवाड देशमे नागराह नामकि भूगोमे सर्पस्त यसकरेगा उसयन्तर्भ सर्पोका बोहोत नाम होवेगा ९४ यह ने स्वयवात सुनके वासुकीने उसयहाहोनेके बोहोतकाठ प्रविक्तिकार नामकरके अपनि बहिन कुछेके जलदिसे ९५ भव मेवाडेमे वि

<sup>॥</sup>णा र द्रगोनके नरकारनामक बाह्मणकु विवाह विधिस् भूगिनि दिया ९६ फिर नरकारु आस्तिक नामक सुत्रकु प्रसवती भई फिर बोहोत काळातरसे रात्र दिन तपमेनिष ऐसे पुत्रकु देखके माना कहती है ९७ हेपुत्र तुत्र ज्यूल तपस्यूयाम निष्टरहताहै और तेरे मातामह काळुळतो नाष्ट्रा होरहाहै ९७ ऐसामाका ब्चन सुनते आ-मिकपुनिकहताहै है मात मेरे मातामह कुल रक्षणके वासी सर्पसत्र यझके महपमे जाताह ९९ और वाहाजायके न्यायमार्गमें उपद्रव शांति करनेके वासी पार्थेना करता हु ऐसा मानाकु कहके आस्तिक ऋषि १०० सपस्त्र मडपमे जायके नाना प्रकारके वचनचार्र्यतासे भाषण करते करते जनमेजय राजाकु और वर धर्चतरीक्क वामना वता दुत्वामातुर्वचः सम्युगार्र्तकोवाक्यमञ्जर्दत् ॥ मातुर्य मितदर्थ् यसर्वस्त्रस्य मंड्रपं ॥ ९९ ॥ प्रार्थ्या मिन्यायमार्गे रुपसर्वस्यक्रातिषे । उ-त्कैवमातरं धमञ्चास्तिकं ऋषसत्तमः ॥ १००॥ सेपसत्रत्तोग्लामं ह्यामासन्तपति ॥ वरधन्वतरंचेव वाक्टेव म्नरूपवत् ॥ १०१ ॥ यहाण मेत्ती वेमेंद्रइतिराज्ञायिकहरे ॥तक्षकमोचयर्वाधसहेंद्रमि तिचा स्तिकः॥ १०२॥ ययाचे तेनतत्रासी द्वाहाकारे जयस्तया ॥ सर्पसत्राद् परतोभूपतिजैनमेजय । १९०३ ॥ नागराजा शश्रोहःसममे हिमाने हुनेरिमे ॥ धन्यावये स्वराधन्या ययाजाते महान्हु नि । १०४ ॥ माता म हङ्करेंथेनमृह् यस्तं वेमोचित्।। तस्मा धन्न पवन्नाम तत्रमा स्त्वाहिज्ञ भय् ॥ १०५ ॥ अह्यो नवजार्त यक्क खना येवरे विताः। तेषांप्राणप दातास्यादास्तीकः नेवलस् नैः॥१०६। आस्तीकः सम् तिमान्यसपै ने नेविता मियात्॥ यद्गेतयातः रुप्यतमृतसपीहं सास्वतः॥१०७॥आ स्तीकवचनऋतासपी संपीत्सत्वरं॥ निर्देशभूयवृत्तःसन्मातंद्शत्कश्चन॥१००॥ चत्रिशतिभद्दा देमेदपाठ देजापि पं ॥सफलाः संभवेष्ट-स्मराहुके विषम् छिदे॥१०९॥ ततीनागदहनामहेरं निर्मायवास् कि ॥ब्राह्मणान्कति चत्रत्रस्थापयामास तस्हरे॥ ११०।

जैसा बळीकु में हितिज्यावेसा में हितकरता प्रया १०१ तबजनमेजयराजाने कहा के है आ स्तिक सुनिदुमंछु जो इच्छित होवेबो मेरेसे ग्रहण करो ऐसी राजािक माति है ते आस्तिक सुनिकहते है हे राजाजोइच्छितदेते है ते मयइतना मगताहु के इंद्रसहवर्तमान तस्तक नागछ छं उदेव १०२ ऐसा ऋ है ने मंगत इराजवरों के छोकमे सब हा हा कारहे ने छगा के रनागकु छ में सब जय जयप्राच्च है ने छगाजनम् जयने सर्पसत्र समाप्त छया १०३ पिछो सब नागराजा हु ने का महिमा देखके कहते हैं हे नागहों अ पन-सब धन्यहें जिससे बडे मिन्टें दाभया १०४ जिनोन माता महछू छ कु मृद्द से छु डवाया इसवास्ते आजसे हम सब कहते है कि जहा आस्तिक ऐसा आपका नाम अवण्य चार भया वाहा सपैका भयनहों १०५ नवळ्छ नागमे जो ए परहे है उन के सबो के प्राणदाता आस्तिक मुन्हें १०६ जे को ई महच्या आस्तिक में ने काना मग्रहण करेका तो काटा-

सेगायेदिजुनर्णानावणिजोतिद्रगुणास्ततः॥ नागवाहेतिनामान स्थापिताप्रत्यनतयन् ॥ ११ ॥ भद्दानापरिच्योयेकतसत्वमस्सुचन् ॥ रासु द्विंसिया मास्त्तो भूदकुतो भय ॥ १२ ॥ श्री मङ्गहरूरथान निर्माणन्य मण्डन ॥ ऐत्वरिषया वणा स्तर्वान्का मान पासु पान्।) १३ ॥ भद्रादिनेदपाटीयेरिशितोनागिकान्वयः ॥ हरिक्रणाः ॥ अत्रदेनकया चैकानपाद्रवेअताकितः ॥ १४ ॥तामहकयविष्यामि विवाहय्यवहारि-काशमेदपाठ्रिज्ञानाचचतुर्भेदाभवतिहि॥१९५ ॥ एकदानागकन्यायाविवाह समुपस्थितं॥अग्गानाभाइविधस्यकुमारास्त्रयएवक्रि॥१६॥नाग कन्याविषेणेक्येषस्तत्रपंखायित ॥गतोगापुरपूर्वतन् इशंभद्गसज्ञका ॥१०॥ बतुष्ययाते दिनीयोन्दीयाञ्चतुराशिकाः ॥तृते योभट्टपुत्र स्तुकन्यायानिषयोगतः॥१८ ॥मृत्वसतितोसूमीसरवीवास्यमयाञ्जीत् ॥हेकन्यर्षिवयोगेनयस्यक्वभविष्यति ॥१९ ॥कथति विवाहस्य सिद्धिरयेभवेत्तवधनागकन्यासरवीवाक्यनिषाम्यमनसिन्यिर॥१२० ॥किवायगुडस्बहस्यनागरुत्वाविषापहे॥मुन्धितस्योपरिक्षिप्तनन दावूर्णेसउत्थित ॥१२१॥ ॥ वेशास्त्रण बनिये विभव मेवाई ब्राह्मणक आधीन रहत्त्रम्य इतनास्य छत्य क्रके वासुकि निभय भया ११२ ऐसा यह महदूरस्यान निर्माणका भयोजन कत्या जो कोई पह चुरिन अवणकरता है उसकु सबकाय मास होता है ११३ फिरफ्ट मेवादान आसिक का बशा अस्ति तर इस रिस त किया।। अञ्जवयहा अवीचीननविक्या कोईके मुख्यते मुनीहे साकहताहु ११४ मेबाडे बाह्मणोमे चार भेव है। ११५ एक दिन नागकन्याका विमाह उत्सव मारभा भ या उसवरवत भटमेबाडे बाह्मणके तीनसुत्र विवाहकेवान्त आय ११६ तववडा छोकरा नागकन्याकेपास जाते उसकी विव छेड़ेर वासुसी घवरायके गावके वर्वज्जे कुं भागोल कहते हैं पाहातम भागमया नाक्तो उसके वशम और उसके अनुयायि सबभव मेवाक भये १९७ दूसरा भाइनाम कन्यांकि विवलेक्ट्रवायुसे प्यस्ययूके नी-

इंडे तम भागमायायासी उसके अनुपापि सव नामानी मेयाई। अब तीसरा आइ नामकन्याकि वित्र केहर माउसी बरवत १९० मृतसरीता का किनके

दुवा सर्पेतिवनिर्विताकु परिणा और आस्तिक नाम अवण करके उस जगमेनहिजानेकातो सर्पेस्त्रमे जितने सर्प मृत्युपाये है उनोका पाप उसके सिरप्र पडेगा। श्री आस्तिक मुनिकानाम अवण करते सर्पेने तुरव वो स्थान छोड़ देना निर्वित्र होनाना और दिसी कुढ़श करना निर्वित्र गोमने जो पर मेवाह बाह्मण उनाने प्रयम् से भाषित पहलके नाश करने के वासे जो पासुकी मञ्चतिकुं आशिर्वाद दिये वे सब सफल अये १०९ पीछ वासुकीन पाइ। नागद इपुर वाह्मस्थापन दिये ११ और वे बाह्मणोदि सेवाकरने के वासे दिये गित विये स्थापन दिये पीछ बेबाह्मण और बनियोक्यानाम नागदाह ऐसा नाम स्थापन करता अया ११ पृथ्वीमे पड़ा तब मर्गी कहत है है नागक न्या तेरे जेहेर हैं सबोकु नो ऐसा हो हेगातो १९९ आग तेरेसाथ विवाह कोनकरेगा तेरी मनोरथ सिद्धि केसी हो हेगी ऐसा सर्गीका वचन्सुन है नागक न्याने मनमें ब होत देरतग विचार करके १२० गुड़का नाग बनायक विषठतार ने के वास्ते मुच्छित जो ब्राह्मण पड़ाथा उसके उपर डाला तब तत्काल व तीसरा भाई उठके खड़ार ह्या १२१ पे छे उसक साथ विवाह भया उसदिन है यह तिसरे भाइक अनुयादों के र वेशस्थ सब त्रिपणि (उर्फ त्रवाह) में वाड़े नामसे विख्यात मारे १२२ त्रिवाहि में वाड़े ब्राह्मण में का एक ब्राह्मण में होड़ ब्राह्मण के क्या विवाह किया १२३ उसब्यत सब त्रिवाड़ि में वाड़े ने दें। है तमना किया परंतु रजे गुण अहंकार के छेटे किसीका सुनान है वास्ते पूर्व ज्ञाति में से हुदे पड़े तब उसक सब पहापाति यो मेल के राजस में वाड़े नामसे विख्यात मरे १२४ और यह ज्ञार्ट में विवाह है ने के पहिले नागयूजा करते हैं॥ ॥भट में वाड़े ब्राह्मण में दूसरे गावका वर होवे तो गावक बाहार गुड़ के नागकी पूजा करके दी

हेन्साडं देवाहेष्ट्रस्त हर जा हिजाः॥ त्रिपाणिनामा विख्यात बभूवपुद्धि ऋतं॥ १२२॥ त्रिपाणि दे प्रसंधस्थः कि के द्वाह्मणसत्तमः॥ मोहेरब्रह्मण ज्ञातिकन्य यास हमे छनं॥ २३॥ विवाहमकरोत्सवि व रितोपिरजीरुणात्॥ तत्सिं याः स्तताजाताराजसा मेदपाठकः॥ २६॥ विवाहसमयाद्धिनागपूजा विधीयते॥ इतेवंकि होमेदपाठ विक्रस्त द्वाशा १२५॥ ॥ इति व ह्याणोव मेदपाठ व ह्याणोव देवणेनंनाम प्रकरणं ३० पंच द्वाहित्सं प्रदायः॥ आदित श्लोक संख्या ३९७४ छ छ छ छ प्रमुख्या छ

मद्रावक् : ॥ त्रशा ववाह समयाद्र नागर्रणा १ विष्ट के ध्राम्य द्राम्य द्राप्त है । ॥ अदित श्रीक संख्या ३९७४ छ, छ प प्रज्वासनक रहे पिछे गावमें प्रवेशकरना और एक ही गावमें हैं वेती अपने घरमें रहमय नागर्क प्रमाकर के वीप प्रकट कर के पिछे विवाह के वासे वरने निकस्ता ॥ चोरासीमें वार्षे बाह्मणमें वरगावके होने या परगावका होने पर्त विवाह करने छु आती वरवत चार रस्ते के विचमें वरने गुड नागकी पूजा पोड को पचार कर के दी पलगाय के नागस्ती कर के पिछे विवाह कु जाना ॥ ॥ त्रवाई म्वाई बाह्मणोंमें और राजसी मेंवाई बाह्मणोंमें वरने वहु के घर छु जाना वाहा द्वार पूजा हु इ के उसी वस्तत पर्त ग्रं ए उकी रवादला विकास के पिछों विवाह कर्म पाना के वहु इस के पान आयके गुड का पानि छा है तववर उन के रवडा होवे पी छे वर के छु अपना मान के प्राप्त करना दिवर के पिछों विवाह कर्म चलाना ऐसि रितिहे ॥ गोसायक्ष मेंवाडे बाह्मणोंका उसकी के वर्ष मिन कि या १२५ इतिशी बाह्मणोत्सिययर में वाडे कि उन पकरणं ३० छु

## अथ भर् मेवाडा बाह्मणाना गोन प्रवरावटक ज्ञान कोएक

चन्नाः

1 2	व्याप्त	फ्ळाभिय आर्पिः भजारता स्वेतिनयः	18	<u> गोतम</u>	मोत्तमा गिरसी तथ्येति ३
<u>•</u> <u>प</u>	रमस	विक्रिय मिला परवार्क्नेनि १	94	<u> </u>	करपुप कर्णतम् मामावि साहित, पार्यपन्वति । अध्यार पुरान
३ का	स्यायन	कपित, कायापन, दिशामिमञ्जेति १	<u> 98</u>	मोबख	मृत्ययः मरकेयः विन्यामिमन्वेति ३
<del>الْبِرُ بِا</del>		भर्ग न्वन आगिरसर्भृति १	7.0	चेद्राम्य	<b>बंदामंप वर्ता छरमामा</b>
५ हो	<b>ाँ</b> इस्य	साहित्य मसिव, वेबल खेवि १	94	भार्गय	मागव स्वन अपन्तम् भीवि नम्दर्भ ने १
<u> </u>	बारू	कुराक अध्यम्प्या, वित्यामित्र स्वेति	95	गासक	गाळव- तपयसा हारोतेम्यपकस्थित जर्बतश्रेतिः
<u>ه</u>	शिक	क्रीशिक देवराजधिकालिय क्वेति	*	विष्यवद	मीतम्यः जन्मम्, सदत्त्यः
<b>८ प</b> स		वसा च्यवनः भीने भागवान् नुमर्दाप भीति ५	1/	सहस्र	मीद्रस्या रिरस् गाईस्पत्य खेति ।
९ गत	म्	गासय-च्यक्त सीहत-जमविप इपवर्श्वति ५	<b>~</b> 3	मैनस	मीन्स भागव वेत्रायसभ्यति
<u> १ भार</u>	<b>रा</b> ज	<u>भारदान आगिरस बाई स्यत्मन्वेति ३           पंडपा उपाध्याः</u>	33	पार्दि	वार्षियसञ्चवा ईस्पस
भ गाप	<u>र्व</u>	गार्च-चक्त भागिरस र्प वर्षस्यस्थिति ५	38	<b>भ</b> षि	अभिगतिच्छ पूर्वातिच्य व्वति ३
<b>19</b> 344		उपमन् उत्तरम् अगिएसः भारतमः वर्षस्यस्यविष			
<u>अथुमीताला और पाल ब्राह्मणीसित् प्रक्रण ३९</u>					
नर मोताला और पार बाह्मणो कि उसित कहते हैं शिवक हत है है रकद राजरात देश सुरत शेहर के जिल्हें में तापी नदीके पास बाणा मार के समने जहारामसरोवर					
	0 - 3	Company a state was a 1914 for 6 6 194 Bate	<i>भ<b>या</b> १</i>	हरत ग्रहरक	प्यत्के । यात्रा नदाक तास बाल भारक्यमन स्रहासम्स

अयमुक्तिक्षेत्रपासि ब्राह्मणोत्पत्ति माह् स्कार्दे वापी माहात्म्ये रुद्रउवाच् यत्ररामसरोवदावाणघातेनचाप्रवत्॥ तत्रस्मात्वा नरोपाविद्रह्मलाकमसंशय॥१॥पंचक्रोशांतरेवताराघवीत्रपुरागमन्॥दुष्टकाविनिर्मुक्तोदशाननवधातुर ॥२॥॥ बनाया हैवाहा स्नान करनेसे द्रसलोककिमाति होती है १ पूर्विपाचकासके अदर राम जिसवरवत आय उसवस्वत स्वणक वघसे आतुरये परतु बुश्च स्वभावसे मुक्त दुवे २ रामने व्यवना मन शाव दे

गमने अपनामन ज्ञातदेराके आसममे वेठेहुवे सुमत ऋषीकु प्रखते है ३ हे सुमत ऋषि यहावडा आश्वर्य देखा मेरा मन दुष्ट मावकु छोडके मोस्न मार्गम लगता-है ए सुमत कहते है हे राम पाचकोसके ऊपर तापानदी है ५ यहा उसका भ्वाप है जो तुमेरा मन् मोस्न्मे जा ताहे ५ राम कहते है हे ऋषी जो सुक्ति देनेवासी तान पी है तो मयन यहादान क्या करना सं कही ६ घोडे हाथी रत हु वर्ण रीप्य क्यादेना सं कहों इसवन में हु मेरे बिना दुसरेल देखता निहि हु ७ हु मेत कहते हैं है राम हमे रेल भोगेच्छानहि हैं सुदं पत्ते और जलपान करते हैं हमकु दान में भय से क्या पय जन है ८ जिनने विषय त्याग किया पर बहन में चित्तलगाया सो दान काय कु लेगा ९ रामः शातंमने दृष्ट रस्मरेनसमन्दितः। सुमतंच देजश्रेष्ठंपप्रच्छ सम्वासिनं। ३ ॥राम्उवास्॥ ॥ द्वेजशमहद सरेद्षंचात्रम्य ६ नागुद्धभावमने में पर्कामोक्षायगच्छिति। प्रमुक्तमंतर्थवाचा ॥ पंचक्रोशांतरेवत्सि देवते भारुज सरेत्॥। ५॥ अत्रतस्याः प्रभावे ये र्नमें सास्थितमनः ॥ ५ ॥ ॥राम्खवाच॥ ॥रहेर सुनिद्वारि दिर देर देश सिद्वा ॥दानं किन्द्र देर दूनममाचस्ट देसरात् ॥ ६। रर सगजरला देहेमुद्धपा देनाहुने। देजमन्यनपश्यामिएतास्मिन्कानन्दु ना॥ ७॥ ॥सुमतउदार ॥ ॥नभोगेच्छा स्तिचास्माकसुष्ठ प्रते छ। देनं । किंदन िमंदी कार्ययत्त वेते दिया सनाम्॥ ८॥ विस्ता विषयात्रा किः परवासकतास्पदः ॥ सुसुसुः समय ति ऋ के दिव न मर्भ पर सि ॥ ९॥ ॥ ऋ रामखवाचा ॥अयनायनपत्रयां मि द्वेजान्दान समान्द्व माद तमे मानसं तून सशोक वर्तते हुना ॥ १०॥ ॥ हुमेत्खवाच ॥ । ज्ञाने नरं वी स्ट द्विजानुसमागतान् हिमालयाचन् पति जलेच ॥ आर्यचगगेदेवरात्रिकश्यपाना देखेवा निष्ठ फलप्रदाऋ ॥ ११ ॥ तृतः सहदुमान् वीरतापी र्तरमगा ह्नता। प्रणादामभद्रस्य गृहि है बेज्हुं गवान् ॥ १२ ॥ दृष्ट्राप्रणम् तान् विपान् जगादहतु मान्वनः ॥ पृहसः प्राज लिसू ते प्रश्रेवादन तो सूर्या॥

योजनमस्माकराघर णमहात्मना ॥ निवृत्ति विषयाश क्तिर्मन मोक्षेत्रवर्तत ॥ १५॥ ॥ राम कहते है हे ऋषे पृथ्वीमे दान लेने वाले ब्राह्मण मय देखता नहि हु वास्ते मेरामन शोकमे वे होत् है तब हुमंत कहते है हेराम मयने ज्ञान दृष्टीमें देखा हिमालय तरफसे बाह्मण तापी के जलमे स्नानकरने हुं आबे आये है अनिगर चंद्राने य कश्यपआदिगोत्रक है इस फलक देनेवाले है से हुमकु मयन बतलाये ११ तब हुन मान जलदीसे तापी किनारे आयुके रामकी पेरणासे १२ व बाह्मण कुं देखते सासूग्रामस्कार करके हातर्जं डेंजेनमृतारे कहते हैं १३ हेब्राह्मण हे रामचद्रजे यहारे पाचक सकैऊपर सुमंत ऋषोळ आश्रममें हैं और वाहा आपळी पूजा करेंगे १४ ब्राह्मण कहते है हे बान्र हम्कू

१३॥ ॥हतुमात्वाच्या ॥ आगच्छत् हेन् श्रेष्ठे राघवो वो चे प्रिय ति । त्रेपता पंचक्रोशांत सुमतस्य अमे सुभै ॥ १४ ॥ ॥ विमाऊसः। ॥ कि.म

गमनम्से भ्यापयोजन है और रानभोन्देस्पर्यसे इनकु स्यापयोजन है इमदनपमज्छ के आहार कसीवाले मुक्तिमागर्की इच्छा करते है १६ हनुमान् कहते है हे बाह्य गहो यद्यपिआपकि मोस्परे इच्छाहै तथापि गमनद्रका बननमान्यकरना अवस्प है १७ औरजो आपन चलेतो मयतापीके उत्तरनट उत्तर चितातियार करके आपके सामनेश देह भरमकठ मा नहिता आपकु विपेतिनाजानकानहि १८ वयक पियोन इनुमानका अति आग्रह इटतादेग्ब के सबोद्ध बयाआयी तथ १९ तवास्तु ऐसा कहके सब बाह्यण-ह पित होपके स्मानकरनेसे भीमाहुबाहे हारीरजिनका ऐसे बनुमानके पास आयके सब रहे २० तथ हनुमान जीने रामका बचन दिलमे एसके तुरत २२ जरुदी रामच हके पास-

किदाने किच्भोगेश्वस्थानेर्वेहुविधेश्वकि॥यन्यप्नाषुष्ट्तीनामुक्तिमार्गसुपेयुपा॥१६॥॥हनुमानुबान्॥॥यनतामानसर्भप्रामोक्षेपि-यविसस्यित॥तुपापिराममद्रस्यक्वोप्यभावभायतो॥१७॥नेवचेद्भवतापाञ्चेतपत्याउन्तरंतदे॥ताबानस्रविद्यामित्युकतायीन्याम्यह॥ १८॥तस्यसत्वाधिक रष्ट्रामुन्सवानरस्य न ॥सद्वयान्वितास्तस्यु स्वामिसेयापरस्य नः १० ॥तन्तयेनिचजन्यतः सर्वेविप्रामुदान्विता ॥ता प्रीजलाईग्रात्रस्यत्स्युः प्रीक्षेंहृतूमतः॥२०॥्यत सहनुमान् बीरक्षेड बेगपराक्रमः ॥विचित्य रामः बास्यूच झाटित्यागमतत्सरः ॥ २९॥काश्चि दिपुत्पृष्ट्तीनस्कपेकाँ निवेर्यस ॥कान्वियुच्छेर्पृथ्यानुचातपात्चरपहरि ॥ १२॥ मुमाचरामपा न्येतु वन्हितुल्यानु दिजान्तमान् ॥ तता रामोपिबैतैपाळुढन्पादाबुजानिच॥ १३ ॥जगादमञ्जपपितंपान्यबाक्यविशारवः॥ ॥ज्यीरामण्याचः॥ ॥व्यवतापौ मूनावन विमुक्त दुष्ट्रभावत ॥ २४ ॥ मानस्विधतिविमाः दानमेप्रधातामतः ॥ समवान्यतदाविमादापनीयदित्तेसमाः ॥ २५ ॥ तथेतिमानुवन्स्वैमुक्तिमार्गपिटिशिनः॥ ततीरामपिशार्णनकत्वारघान्विताम्ही ॥ २६॥सरमकाररामारच्युतिसुक्तिफलपदे॥प्रकाव्यपादयुग्मानिद्दीदानान्यनेकशः॥ २७ ॥ वंतापारामभद्रेणस्यापिताव्यद्विजोत्तमा ॥अषावशसहसाणिमुक्तिस्यानंचवेगुह् ॥ ९८ ॥तेपापादोदकी वत्ससजावासुक्तिदासरित् ॥तत्र

रामीपिसवनं चकारानुजससुत ॥२९॥ । आयके अधिसरीरवे तेजसी बाह्मणोकु विअयदिये तबरामवी बाह्मणोके चरणके ऊपर लोटने लगे २३ और मुतासे कहते हैं हे बाह्मणहो इसजगमे मेरामन इक भवसे मुक्त होमयाहै २५ वास्त मुम्बान पहणकरो तबरामका वचन सुनते २५ यदापिवे बाह्मण सुक्ति मार्गी ये त' यापि रामके मनापसे तथास्तु कहने लगे।पीछे रामने पृथ्वीमे बाणमारके २६ भोग ऐश्वर्य और सुक्तिकु देने वाला रामसरोवरषनायके उसजलसे बाह्मणोके पाद महा छनकरके अने इदानदिये २७ वेतासुगमे रामचब्रने तापीके किनारे मुक्ति स्थानमे रहा छमे जिसकु मोतागाव कहते है ) बाह्य खरार बाह्मणोका स्थापन करते भवे

वेसव मातालेबाह्मणभये २८ जीनक चरणारविंद् धोनेका जलबहनेलगा वे अकिद् नामकी नदी भड् गहा नदीने रामचद्रने सकुडुव स्नान किया २९ और स कियर महादेवकी पूजाकिये जीर रामे यर नामक शिवकी स्थापना करें बढे संतोषपाये ३० पीछे रामकुंड में पिडमदान किया उसवरवत आकाशमें दशरण आयक ३१ कहते है हे अब नुमेरे मतापसे यहापरम प्रकुपाया ऐसा कह के सु तमरे बाद रामने पर्वत् विदारण करके सर वर बनाया ३२ इस स्रोवर में कार्ति की एका दशी के दिन जोरनान करेगातों निश्वेकरके युन जन्महं नेकान हि मुक्तिपावेगा ३३ अब में ता ले बाह्मणो मेज अरपाल बाह्मण बिनाम कहा जाता है उसका कारण कहते हैं शिव कहते

अच्यामासह की दां लिगंमें क्ष्मद्परं ॥ रामे श्वरं रसंस्था प्रसंतृष्टे भूक हुए मृः॥ ३०॥ चकार पेंडदानंसराम कुंडे चहु रक ॥ तते बरे क् वद्वाणिराज्ञे दुशरथस्यच्या ३१ ॥भामोहतव्हुब्रात्र परासरतर्पदं॥ विदार पर्वतंचाँबच्केरामः सरः स्ट्रतः ॥ ३२ ॥ अबस्ने नरः स्नात्वान्नभूये स्तनये भहेत् ॥ निश्वयान् किमामे तिकार्तिके विष्यु वार्रे॥ ३३॥ अर् अर्पालके द्रमाह्॥ रुद्रखवाच ॥ विकित् विसे हक्ष मकरस्ये दे वाकरे। तपत्याउत्तरेकुले द्वणामनृणं भदेत्। ३४ँ ॥सेवनाइ हित रस्य रामेश्वर निभालनात्। जन्म तरशताज्जातंतस्यनश्य तिपात कं। ३५ ॥ नर कतार्थतांया तिनागतीर्थे चहुर्यकं ॥ तदे रुप्त में नेतदेव श्रेरमें हुतं ॥ ३६ ॥ व भूवेप २ र मेण प्रक तूर स्था पति दिजाः॥ से नेकासंगरेक्तानं कतारामः षडाननः॥ ३७॥सस्मारनारदेवत्सलक्ष्मणेनसम् न्देतः॥स्मरणोत्तस्य रामस्य संभ सीनारदे स नैः॥ ३०॥ ऋताचरामवाक्यं सजगामब्ह सूंसदि॥ नारद्यवाच॥ ॥ बहन्संये पेत्त्रवाहंरामेण समहातः ।। ३९॥ सा विश्रे स हित स्ते चत्वर रेसमासदः॥ रामेण मेत्रिताः सर्देपयं तूरगप्तन्। ४०॥ तस्य हुला मन्वीकरंस मेयाय हेर्णे हृतः॥ ॥ र मखवान्। ॥ रेवागतंबम् जान

थस्यमत्र दिजे: सह। ४१॥ ॥ हे हे स्कंदमकरकं सूर्य तार्डं उत्तरबाहु अ्मित र का जो दर्शन करेगा तो पेत्राणकं ऋणसे हुक हो वेगा ३४ के रजी उ समें स्नानादिक करेगा गमेत्र्यरका दर्शन करेगाते सं जन्मके पानकसें एक हो होगा ३५ और जो मनुष्य हो हो नाग तीर्ध हो स्नाना दिक करेगाते कतार करेगा जो नागतीर्थ ही उस्कुउरुपत्तनसीत्र (उर्फे रेपाल )कहते हैं वे ओरपाल शिर्मगावरे मेलाहुवाहै उस्की कया आगे कहरे जिसवखत रामचंद्रने से नेका नदी कीर समुद्रक संगममें -स्मानकरक है है २ ७ उसबरवत नारदका स्मरण करते सामने आयके नारद खबे रहे तब रामने मनकी बातक है २० से सुनके बहासभामे आयके कहते हैं है बहादेवरामने मेरेकु मेजाहै ३९वासे सा विर्द्ध साथ हे के धेर यह समासद सद लोकों के के उरगपत्तन (उर्फ ओरपाल )मे चले ४० ऐसा नाखका बचन हुनते ब्रह्मासबक्क लेक रामन

ये वे औरपार मोताले बाह्मणनामसे विख्यातमय पीछेउसहाजका रामम्बेननाम स्थापन किया ४२ अवनामाताले ब्राह्मण और पाणे कहिने जाशि रस गावमे रहनेपाले बाह्मण रनेकि सवीकि कण्वशारमा । है और मानगांत्रहै भारहाज १ हारीत १ गुर्ग २ केहिन्य ४ कश्पम् ५ ॥ ४० ॥ कणान्य ६ माठर ७ ऐसे है जी कोइ भड़ासे अरध्यानका पाठकरगा उसका बहात्यकमे वास होवेगा ॥ ४२ ॥ अवशिरस गानमे जो मो ताल बाह्म यका मेदहैं सा कहते हैं शियन्क दक कहते हैं जि सहस्राष्ट्रादशुमानेस्थापयामसत्ताचव् ॥ रामसेत्रतनोजात्स्वयराममनिधिन ॥ ४२ ॥ सर्वेकाणा दिजास्तेवै गोत्राणिसप्तसस्यया ॥ भारदाजऋहारित् गर्गं कांडिएयकाइयुपे। ४३॥ कुछा।त्रयोमाठरभ्ययद्वऋद्यापठेत्।। ब्रह्मलोकेवसेदलापूर्वजे सहसुण्यस्कत् ॥२९ ॥ ॥अथिशर पतनमोतालाभेदमाहः॥ तत्रेवः॥ स्ट्राचनः॥ ॥प्रयोजगोपुरामस्यगन्छत् सागर सुरा।। रामङ्हानपत्याँ -न्वतीर्थमालाप्रकृषीतः ॥ ४५ ॥ द्विजवेपधरावेत्सकतस्माताकैजाजलै ॥ राधवप्रार्थयामासतवारामीवविद्वच् ॥ ४६ ॥ विप्रार्थिपसि विभवैतदात्रीवान्वसागरः॥ गनगत्वयत्वयाराम् वपत्या त्रियसगुमं ॥ ४७ ॥ वयेतिन्वाब्रवीद्रामीवत्सवान्वानियत्रितः ॥ महतानुत्रया त्पंगसुपागकनिष्कल्निहै ॥ ४८ ॥साग्रोत ईधेपश्चाद्रामस्त्रत्रीवसस्यित ॥ रामसेत्रात्ततोराम छतापिडादिस्त् किपा ॥ ४९ ॥ग त्यारामेश्वरवत्सप्रतस्येचनिज्युर ॥पचक्रोशान्रस्यवन्सप्राप्तोरधनद्म ॥५०॥ तत्रक्रस्यापदेशनराम सिद्वेश्वर्तदा ॥सानुजग्यू जयामासवनपुष्पफलादिभि ॥ ५१ ॥ नतासि देखरेवत्सराम भाहपुनमं नि ॥ किचिद्वानमदास्यामिश्विक्यदास्तिमेसुने॥ ५२॥ ॥ सुनिरुवाच ॥ ॥नाहप्रतिगृहिष्पामिस त्यक्तविषयेद्रिया ॥सतिगगातट वेपामध्यदेषीचराच्या। ५३ ॥ ॥ सबरवत रामचद्ररा मञ्डले नापीतक तीयी यात्रा करने लगे तबना हास मुद्र ४ ५ शह्मणका वेपलक वापी मेन्नानकरके रामकि पार्यना करने लगा तबराम कहते हैं ४ ६ हे ब्राह्मण तम्बया मगते हो तब समुद्र कहता है है रामआहावापी और समुद्र का सग्म है बाहा तुमने जानानहि ४० रामने तयान्तु कहके बड़ेके बचन मिट्यानहि है ऐसा

मानके ४० राम नाहाहि निनास किया संसुद्र अतर्घान होगया पिँछे रामने पिड प्रदानादिँ किया करके रामक्षेत्र स निकले ४० रामे चरकु जायके अपनिष्मयो ध्याकु जानेका विचार किया तो सुमारपाचकोस भूमिष्माये होषेगे इतनेमे ५० ऋषिके कहनेसे सिद्ध चरमहाद वकी उत्तम पूजाकरक ५१ नमस्कार करके सुन करपी

केपास आयेरामनेब्रह्माका आदर सम्मानकरकेक इतेहैं कि बाह्मण सहबतीमान यहा तुमने रहना ४९ ऐसा कहके ओरपाल गावमे अवसहआर बाह्मण स्थापन कि

कुक हते हैं है मुने यो गक बन देना ऐसी मेरी श्रद्धा है ५२ स्निक हते हैं है राम हमने तो सब विषयत्याग किये हैं हम दान छेते नहि हैं परंतु मध्य देश में गगानट के ऊ पर ५३ महालक्ष्मीने लाय है वाहा स्थापित भये है गगाऊ छ उन नहि है ५४ वंबाह्मण समर्थ है तब रामने यसन्त्रतासे हसुमान जी का सखदरव के ५५ कहा कि वे बाह्मणीकुलाव तव हतुमान आकाषामार्गरी जलदी वाह्य आयके जाहा बाह्मणवेठे हें वे गंगातट ऊपर पाममये ५६ पीछे बाह्मण के द्दीन करके नमृतासे हतु मानकहते हैं है बाह्मण है आपकु दुलाने कवास्ते रामने के जेहें ५७ तार्च के वनमें आपकी पूजा करनेवाले हैं बाह्मण कहते हैं है वानर यह गंगा छोड़ के हम वहा आ महालक्ष्मा समानीता. सिन्धायतपोमहत्॥ तयासंस्था पेता विमाः के चेद्रगार जंतिन॥ ५४॥ तसमर्थः सहन्द्वेद्र ह्मणाङ ह्मवादिनः ॥ तर्त देलं कररामो पैर्ल लयाहर मन्दुरवं ॥ ५५ ॥ उवाचानयतान् वेघान् सोप्याकाशा हरोद्भतं ॥ निमेषात्या ह वान् रागा येत्र तिखंदि हिजाः ॥५६ ॥ तते निरीस्य हर्नुमानुवाच हिनया न्वितः ॥ भवदानयनार्थे य प्रेरेते राष्ट्रेणच् ॥ ५७ ॥ तपंत्या कान्नेत्र

स्चवः पूज्यिष्यति॥ ॥ इस्राणाऊदुः ॥ ॥ नागच्छामे वयेत् व हिलागगांस रेह्र्रा॥ ५८ ॥ ॥ हुनुमहुवार ॥ ॥ तव्यवममसूर्येन सुम दिख्य भावतः ॥ मेसादाद्भवतं विमा संभविष्यतिजान्हर्वः ॥ ५९ ॥ इतुः क्ला निमान् में गृह्ण्या क्षापे नाकाश्मारेण ययी रामस् सिन् हिं॥ ६० ॥ बन् विदेश्यतरामी द्वार हुनमगात्परं ॥ भणम्य चतुरारामहतु में हुरु विक्रमः ॥ ६९ ॥ छरया मासवृत्तात् रेग नूयन पूर्वे छ॥ तत राम देजेद्राणांनमस्कृत्यां के देन जे।। ६२॥ संस्मारजान्हरी सत्वात्साचत्र समारा ॥ अष्टादशसहस्राणि गोत्राणो दाद्री व ्ह्।। ६३ ॥स्थापयाम् सरामो पे हु कि हु कि पदान् दिजान् ॥ प्रसाल्यो हि देजें द्र णां जलं दे र से वे देते ॥ ६४ ॥ यथा यद्भा वसाने ने

देवेश्वपरमामृतं॥ सिद्धेश्वरंनम् स्कॅट मॉि गृह देंजांशिषं ॥६५॥॥ तेनहिहे ५० इहमान कहते है हेबाह्मण हे वाह्या विमेश सत्यतासे रा मचद्रके मतापर इं र आपके अहमहरे जान्हरी गगाहे देगी ५९ ऐसा कृहके बडा स्वरूप धार्ण करके वे बाह्मणोड़ अपने शरीर ऊपर विवाय के एक स्पामर के बी चमें आकाश मार्गसे रामचंद्र के समीप आहे ६० रामचंद्र बाह्मणसहवर्तमान हुन मान्छ देखके परम आनंद पाछे हुन मान्न रामक नमस्कार करके कहते है ६० हेराम यह सब बाह्मण गंगांक छोड़के आते नहिंहे वासी गंगालान की मयने प्रतिज्ञा क्ये है तब रामने बाह्मणों छ नमस्कार करके ६२ जान्हर्व का स्मरण करते बरोबर जान्हर्व गं गावाहा पगरंभयीपी छैरामचंद्रने ब्राह्मणों के अर्घ्यपाद पूजा करके हे कि कि देनेवाले अवाराहजार बाह्मणों का स्थापन करते भरे उने के गे ब बारा है यह बारा गे ब्र स्यापन कि बखत हते परत हाल में जीपीछे सातगीत विसे हैं वे मसिन्ह है परत कलियुगमें उसमें से विकमिहों में प्रजीसायहा स्यासिक देवताबीक परमध्य-मृत मिळताहै वैसा सिदे चरक नमस्कार करके बाह्मणों के आदि। विदे हैं परत कलियुगमें प्रवित्त चरकी सेवास कताय को न नहिं होनेका पर्मा वार्ष्मीर पाछ।। सिरसा पहतीन गांबके बाह्मणसब मोता है कह जाते हैं विकोकित मुनिके मतक मानते हैं त्यीका नोज विषाह के प्रति विषाह के नतर भत्तीका गोजो चार करते हैं मरणहु वे वाद उन पिता के गोजमें मिलती है वैसा श्री मालि बाह्मणों में दिसावाल बाह्मणों में रायकवाल बाह्मणों में कडोल बाह्मणों में विकोकित मत

यातः क्षतार्थतारामोगोकर्णस्यमसादतः ॥ सि देन्दरसमासा सकोनयातिकतार्यता ॥ ६६ ॥ मीकिकादिहिजा सर्वेकोकिछस्य-सनेर्मतः॥ मन्यते बाह्मणा चान्यत्यादिक्पालवासिन ॥ ६७॥ ॥ इतिक्रीबा० मीकिकोरगपत्तनशिर पतनवासि बाह्मणोसिनवर्ण नेनाम प्रकरणम्॥ ३९ प्यद्रविडमध्येष्ठर्णरसप्रदाय ॥ आदितः स्त्रोक सरन्या ४०४१ ६६ कु मानते है ६० इति शास्त्रणोलसिमयमे मोवाले ओरपाठ मास्रणभेद वर्णन मकरण ३९

अय तापी तीरस्थ काषपुर वासि ब्राह्मणोत्मित्त मकरण ४० अव तापी नदीके तट ऊपर काचपुरहै गहाके शह्मणकी उसित कहते हैं शिवकहतेंहें हे एकद सुर्विमेता सुगमे रामचह सीवा सहमण हसुमान सहितकासपुर केपास आये तब गहाजाहादेखी उसिकमें शिवलिंग विचा पृथ्विताति नहि है पावसे जिसिटकाने चलनाही सकता नहि है विमानमें बैठके चलना २ तब पित्री निमित्त

अयस्कादेतापीमाहात्म्ये रुद्रुउवाच पुरात्रेतासुगेवृत्तसमाप्तोरघुनद्न ॥वैदेशासिहतोबीरोस्टस्मणेन्हनूमसाप्त१॥ततः पृश्य तिसर्वभसमिक्षिगमपीमही॥विमाने शक्यतेगतुं वरणैर्नकदाचन॥२॥पितृपिडमदानायहिनामिसालनापवे॥अद्यास्यानकवसावी सितंहतु मन्सुर्व॥३॥इ॥ताराघवचित्तस्यमभिन्नायमहाकपि ॥विध्याचस्यताशीन्नमाजहारमहाशिसा॥४॥॥ माह्य भीर्मास्मणोक्स

पादभसाळनकरनेकु स्थान नदेखेजसबरवत इनुमानकामुखदेखे ५ इनुमानने रामबङ्गकीममकी बात जानके विष्याचळकी बढि एक शिकाळाचे २ रामनेकी शिलाज

लमेररवके ऊमके ऊपर आद्रपिडदान किया बाह्मणोकि पूजा किये ५ उसवनमें काष्ट्रपुर नाम रखके वाहाबाह्मण्स्थापनिकये वी शिलाकानाम धर्मशिखा चडेपा

तककुं नामा करनेवाली है ६ हे स्कंद इसवनमे पृथ्विमे वडे बडे निधी है दिया औषध गुटिका अदृश्याजन रसायन है परंतु भाग्यहीन महाप्योर्ट दिरवतेनहि ७ अ अत्र देवेत विन्यस्यराघरणमहात्मना॥ चक्रे पेंड प्रदानं चत्यासं प्रजिता द्विजा ॥ ५ ॥ वने काष्ट्रं चे न्कास्या पेता दिजसत्तमा ।॥ से पाधम शिलावत्समहापातकना शिन् ॥ ६ ॥ अत्रवद्साने धानानि अप्रदे टक्जन ॥ रसा देक्म्नोद् च हर्षते नात्मभाग्य के :॥ ७॥ अन्धर्म शिलावतायनगं पित स्वरे ॥तनता जिलेसाना तकस्य मोसो नजायते ॥ ८ ॥देखपा णिहरी केशे सदे स्सु वि सरे ॥ स्वान

योत्रतां त्याच् त्रकालंपूजयन् हरं॥ ९॥ असंश्रम् इत्यं ते रहस्र गातं इजे त्॥ भाग्य ही नी नरे यक्त षड स्य नाहुँ पष्ट है॥ १०॥ इति ब्रह्मणीर तीका षेपुरवा रिब्रह्मणी से नेवर्णनेनाम पकरणे ४० पेच द्र विडेमध्ये महाराष्ट्र में द्वार ॥ आदित असे करेरवा ४०५१

रे यह धूर्म शिळा और जाहा श्रीकृष्ण और श्री नापी वाहारूमान दर्शन करने से किसका मोक्सन है है नेका सदोका होवेगा जो कोईयहाँ बिका खरमानकरेगाओं र दंडपा णि रीव विष्णु इनोकि त्रिकालपूजाकरेगातो ९ नि संशय वो मनुष्य शिवके गणमे मिलेगा जिलाग्यही न है वो मनुष्य बहुधा वाहा देखतान है १० इति प्रकरण ४० ६०

अर औदंबर करित्र वरमूल सांक्षण कर देर बहु हो है के सबस्वत शवने ब्रेड्सियनों कु मारे उसवस्वत उसने

हरेवंद्रे देखु परिणि देशंपायन्त च त्रिष्ट्रे ने हते देशहंगा क्रियलम्णा त्रम्य न दहते देसू दुरहरे न मा. ॥१॥ शार मिन न दग्धास्टेश हैं : शत्सह सिण : ॥तेज्ञ तिर्थस त साम्ब्रह्म रे : हरातेष : ॥२॥ जे हुमार्गेस त मेश्वेमह क्रीण से देते। आ देता कि सुरहं के राः सहस्राणां शतसमाः॥ ३॥॥

राः सहस्थाणाशतसभाः ॥ २ ॥ ॥ जै बडे बडे १ रहगरे श्रेव बाण्से दग्धन है भये साव लाख देस बदेद ज्ञा तिवध के संताप से पूरी बडातप करते। भये २ जाहाबडे बडे महिषि रहते हैं ऐसे जेंह मार्ग में गरे वाहास्त्र्य के सन्ध्रव खडे रहके हजार विषेतक ३

ब्राक्मण कापित्यब्राह्मण मृगाल वाटीयब्राह्मण मरं वे धर्मात्मा दृद्वन है उनीका १६ मी प्रमन करेंगे निरतर उनीकुँ इच्छिन गृति प्राम होवेगी ऐसा कहके ज्ञित ब्रामिलागचलेगये र चारप्रकारक ब्राह्मण भरे १७ इतिसी ब्रा॰ ओ दुवर आदि चारबाह्मणी कि उसिन कहि प्रकरण ४५ संपूर्ण ७५ छ छ पूजियप्येन्सिततंतेयास्यते प्सितांगतिं॥ इत्युत्त्कायमहादेवात्मराकं चजगामवे॥ १७॥ इतिस्रित्रा० ध्यापे ओदुंचरा देचहुनि धत्राह्मणोयन्तिवर्णनं नाममकरणं ४१ पंचत्र वेडमध्येरुजीरसंप्रदायः॥ आदितः श्केकसंख्या ४०६० ६९ ६९

अर द्वादश गेडबाह्मण चहु हिस्कारस्य नामुस ने प्रकरणम् ४२ अर्थ वागमकार्क गेडबाह्मण और पध्रा मकारकेकायस्य ज्ञातीकी उसत्ति कहते है स्त कहते है एक दिन यूपगुज ब्रह्माके पास जायके कहते है कि चोरासी साख यं नी के श्री सांकंडपर मेरे कु स्थापन किये हैं १ परंतु इसने कि सहाय विना के सांकाम करस कु ब होता कहते हैं है यम जल वीसे तेरे कु दूसरा पुछ प्रत्मिलेगा ऐसा क हंद्र यमकु विदाय किया र यमके गयेवाद बह्मा समा धेचडायक बेंचेतब उनके शरीर मेरी अजानुवाहु इयामवर्णी कमल सरीरवे नेत्र जिसके ३ हातमे द्वात कल

अयद्वादश विध्ने ड्राइयणानो न्हु निध्कायस्थान सुर निसारमाह। पादीपातालखंडी सूत्ववाच एकद इह लोकेहुच्छ भीवा चकंपति॥ चहुरशीतल्सा नांबासन् इं नेयो जितः॥ १॥ अस्हायः वयंस्था दुंशक्ती में पुरुष्ण १॥॥ इहो वाच ॥ ॥ प्राप्य ते पुरुष डीड रिदुक्ता वेससर्ज़िं। २॥ धर्मरू जे गते बह्म समा दिस्य द भू वहू।। तच्छर रान्म हाबाई: इस्स ह स्टार हम ले उन् : ॥ ३॥ लेखनी य डिकाहमी मिप भाजन सं इतः॥ सनिर्गतं मतस्य नामदेही निर्चाबर्व त्॥ ४। ॥ ब्रह्मे बार्च ॥ गच्छपूरु वक्द्रेतेन्द्र आर्रता मिति। इत इतः सहरुषो परोधी रेट देव कान्॥ ५॥ उक्त चन्याः समिते तु क्षिपायां कत्ते हुते ॥ पंचके वात्मके के तपस्त समहत्ते ॥ ६।

मपि िं हैं ऐसासुरुप एक निकलंदे कहता है कि मेरेकुनाम देव २ ब्रह्मा कहते हैं है एरुप हुजातप करतेरा अच्छा हो वेगा तब वे उरुपने अस् कहते बुड़े देश में ५ उज्जयन नगरिक समी पक्षी मानदी के तटकपरपाच कोशाक्षजा हो बाहा वड़ा तप किया ६

म्पा ४ कितनेक कपित्यजो क्वठका झाउका आञ्चय करके तपिकये वो कपिन्य गणभया ५ समाल बारिमें तपिकये वे समाल बारिभय वडके साइका आञ्चयक रकेतनार्भगाना जुन मुख्यणमपाध्नीछेउन सरीके अपर भसन्म हायक बह्ना आयक कहता है कि तुम वर मना ७ तद वे देखोंने जिवके इपसे इसरे वरकी इच्छा नहि हिसे फक्त शिषने जो पहिल सातिका महार किया है उसका बदला लेगांट तव बहा। कहत है है देल हो शिवकी धरावरी करने कु को न समर्थ है सुमेरा ध ्वायुभसान्पश्रेषस्तुवतः पद्मसम्बन्न । तेपामुदुंबरराजन्गणएकः समाश्रितः ॥ ४ ॥ वृस्तेतन्नावसन्वीरास्तं कुर्वेतामहत्तपः ॥ कपि त्यवृसमाश्रिलक्षित्रभोषिता पुरा ॥ ५ ॥ सुगालवादीक्वपरेवदमू लेत्यापर ॥ अधीय ता परवहम्बदगत्वासुरात्मजाः ॥ ६ ॥ वेपा तुसीवरदातुपासीराजन्पितामस ॥वरवरयतेतु कासीराजन्पप्रयोगिना॥७॥नेषुस्तदरदानतुद्धिपतरूयवकविश्वे॥ द्व्छताप चितगतुनातीना कुरुनदन॥ ८॥ तानुपाच्नती अस्मा विश्वेत्रीस्यश्चित्रयं ॥क शक्तोप्चितिगूर्तुनास्कवो न्रयुपासम ॥९॥ इ सुक्ताबहाणातं वपद्पुरज्यमुगद्रात्॥येपिभक्तामहावेवमसुराधमेचारिण ॥१०॥स्वयहिद्दिनितेषाददैनियुरनाभान ॥उनी च्व्युमगषानसुराम्स्सतागति ॥ ११ ॥ वेर्सुत्युज्युद्रम्चिहिसाचासुर्सत्तमाः ॥ मामेवचा त्रितास्तस्मा दर्साधुददामिवः ॥ १२॥ यदी हिता स्थम्निक् सिक्रियापरमे दिजे ॥सहते गेम्यतास्वगमीतिहेव स्वकर्मणा ॥१३॥ इहयेचेवव त्यदितापमा बहावादिन

यायु मस्ण करके बुद्धाकि उपासना किये अवजी सादलाख देख इते उसमेसे किवनक और वर कहते गुछरके झाउँका आश्रय करके तपकिया असे ओहपराण

का वचन सुनते भेंदैत्य पर पुरमे च्लेगये और उसमेसी जो कितनेक शिवके शक्त हुये धर्मेंसे चलनेवाल १०४नोंकु शिवने मत्यहर दर्शनदेके सब रहे हुने देखे कु केह ते हैं ११ है देखहों तुमने वेर दम्म इसा छोड़ के मेरा आश्रय किया वासोधसम वर देता हु १२ जो देखयहाउत्तम ऋषी करके दीसित मपे हैं वे अपने श्रद्धकर्म से उन ऋ पीके साथ स्वर्गने जाव १३ और जो कोई यहातपस्वी बह्मवादी रहे गे किपत्त वृक्षका आश्रय करके उनो कु मेरे छोककी प्राप्ति होवेगी १२ जोर पहा स्वतवाहन नाम मक मेरी जो पूजा करेगा शिरात्र बत करेगा वी मेरी गतिकु पावगा १५ जो यहा रहे हैं दिख उस मे आदुवर बृक्षके आश्रयस्थ रहे वे औदुवर ब्राह्मण वेसे बाद सूछ-

॥१५॥औरुबरान वाटमूलोन्हिजान्कापित्यकानपि॥तयास्गालवाटीयान्धमित्मानीहर प्रतान्॥१६ ॥ ॥ मन्यर्थ हे र ऐसावह्या

॥ आपस्तापत्यक्रवृक्षतपालोकाययामम् ॥१४ ॥ स्वत्वाहननामानयस्यमापूजियेष्यति ॥ वतस्त्वाभिराजयेगतिसममयास्यति

मात्राण का पित्यद्राह्मण सुगाल वादीय बाह्मण मरे दे धर्मा सा दृद्वत है उने का १६ जो पूजन करेगे निरंतर उने कुंद च्छित गति प्राप्त ह देगी ऐसा कहके प्रिव मा कैलापाचलेगरे दे चार प्रकारके ब्राह्मण भरे १७ द्रतिसी ब्रा ॰ भे दुवर आदिचार ब्राह्मणो केउस ति कहि प्रकरण ४५ संपूर्ण ६९ ६९ ६९

मूजिरेषोनेसत्तंतेय स्टंते क्तांगते॥ इद्धन्कायमहादेव स्वलाकं बज्गामरे॥१७॥ इत्यां ब्रा० ध्रारे औदुंबरा देवत्रि धन्हणेस नेवर्णनं नाम प्रकरणं ४१ पंच द्रारेडमध्येरुजर संप्रदार ॥ आदेतर श्लेकसंख्या ४०६० ध्र

अर द्वादशारीडशहरण चतु दिस्करस्य न मुक्त निप्रजरण म् ४२ अर्थ वारा मकार्क गीड ब्राह्मण और पंघरा मकारके कायस्य ज्ञातीको उसत्ति कहते है स्वत कहते है एक देन युमराज ब्रह्माके पास जारके कहते है के चीरार्स लाख योगोक शीक्षाके जपर मेरेके स्थापन कियेहें १ परंद द्सरे के सहाय बनाके साकाम करस्क बहुना कहते हैं हे यम जल दोसे तेरेकु दूसरा पुरुष मिलेगा ऐसाक हंक यमकु बिदाय किया र यमके गयेबाद बह्मा समा धेचडायें बेंवेतब उनके शरीरमें से अजानुबाह स्यामवणें कमल सरीरवे नेन जिसके ३ हातमे द्वात कल

अरह द्वा है हो डे इस्पान क्टू है हे करस्य न सुरू कि स्मारमाह। पादे पाता करंडे सूत्यव च एकद बह लोके हुरमः होब चक्रमित ॥ चहुर्व तिल्ला नंबार् के हं नेयो जितः ॥ १ ॥ अरहारः करस्यादंव को में पुरुष के मा ॥ बहु व च ॥ ॥ प्राप्य ते पुरुष शीड मेलुक्ला देससर्पता ।। धर्मर जेन ते कहा समा देस्ये द भू दहा। तच्छिर नम हाब है: इस मः कमले ले चनः ॥ ३॥ लेस्ट ने स हेकाहसीं मर्प भाजन्स दुतः॥ सनिर्गती यतसास्यी नामदे ही निचायवी ए॥ ॥ ब्रह्मो वार्षे॥ ॥ मच्छ्यू रुष्य द्वीत प्रभा में ता इत इहः सहरुषोट रे हे रेर देव कर्॥ ५॥ उन्ह रेन्याः समे हे हिषायाक तटे हुके ॥ एंक के वात्म के हे ने तपस्त हे महत्रे ॥ ६।

मप टे लिरेहे ऐसाएरुष एक निकलं कहताहै के मेर्कुनाम देव ४ ब्रह्माकहते है हे एरुष हजातप करतेरा अच्छा होवेगा तब वे एरुषने अह कहके बुद्धे देशमें ५ उज्जयन नगरिक समी पानदी के तटऊपरपाच कोशाकाज रूप है वाहा बढ़ा तप किया ६

उसकु बाह्मतिदनगये बाद मह्मा उन्सयन नगरिमे आयके ७ बहे पदाचामे हजारवर्षका यसारम करन भय अववो निवयसकु दो जनिक करण मिसी ७ चार तो पै वस्त मनुकि और आठ कन्यानामांकि ९ एमी बो बाग स्थियोस अगत् मियएसे बाग पुत्र भय भर्माने हजार वस्त परा प्रायस्क ६ विवयसकु कहत है है वि यस तुमरेकु मियहे मेरी कापासे उस्तानमहि ११ नेरा सुम अगहे जानो विवयस तेरानाम हो वेगा और मेरीकायाम पैवासया वान १२ बोकमे कायस्य नाम से वि स्थात होवेगा और यह काक पक्ष धारण करनवाने जीवाग पुत्र है । १३ वेसब माना वरमके उत्तम आचारपासन करनवास है बास्ते कायस्य वर्ण पाचवामान्य

तत किपयेकार ब्रह्माठोकिपिताम् ॥ उज्ज्ञियातत् श्रीमानाजगाममुदानित ॥ ७ ॥ यजनार्षाययद्भैस्नानासभारसयुत ॥ विक्रमापिधर्मामाकन्यभाममुहहरूणे ॥ ८ ॥ वेषस्वतमनीकन्यास्त्वार सम्महरूणा ॥ अष्टासुक्पानागीया पितृभक्तिप्रायणा ॥ १ ॥ तासामसमभवन्युवाद्वादेशेवजगद्यिया ॥ ब्रह्मावर्षसहस्रनुयद्गीरिवासुदक्षिणे ॥ १० ॥ चित्रप्रसमुवाचेदे वाक्यधर्मार्थ मेवच ॥ ॥ म स्रोवाच॥ ॥ विवयुप्तमहाबाह्रोमत्यीयोरम्त्समुद्भव ॥ ११ ॥ विक्र्युप्तसुग्रसाग तस्मान्नास्त्रविक्रतः ॥ ममक्र्युप्तमद्भूतं सर्वो गम प्यसत्वरः॥१२॥नरमात्कायस्यावरव्यातोत्वीकत्वतुं मृक्यिति॥एतैवीत्वपुत्रात्र्यकाकपसूष्रा समा ॥१३ १ सर्वेपोडशवपूरिण समा चारा सुभानना ॥ परिमाससदाचार् कायस्य पचमीमते ॥ १४ ॥ धर्मराजगृहगच्छकार्धमेकुरुसुवत ॥ सदसत्सवीजत्नाङ्केखक सर्वे दैव[इ॥१५॥एतान्दास्यामिसर्गन् वैक्रिपिमिकिप्रास्तव॥एवमुक्कानुतान् विमानुद्दीलीकिपितामहः ॥१६॥ माह्यप्रेददीस्त्रसुरूप् मृषिबेक्षमः॥ महयाचेलस्मा निध्ये मेडपे बरुस् निधी ॥१७ ॥ मेडपे बरियादेवी वर्त तेजगद्विका ॥ यक्षीता गन्वा न् इसेप्पिक पिमेडिब्यसं द्भेक ॥ १० ॥ नाम्ना्यीनेगम सोपिकापुरयोदेवनिमित्त ॥ माडव्यास्तिनश्चीमाढाग्रुरव शसितवता ॥ १९ ॥ नेगमास्तेऽपिवहच ऋषिभन किपरायणह्यजाताचेनेयमास्तश्रदात्रगांउयसङ्ख्या ॥२०॥ ॥ है १४ और तुमधर्म राजक नजीक जाव मेराकामकरा सब जीव मानका पुण्यपा

पकृमि सर्व काल तुमने खिखना १५ और यह बारा पुन तुमकु देता हु ऐसा कहक बह्मा एकेक पुन दते हैं १६ उसमे मध्य माडव्य नामक अर्थिकु दिये उनका स्यान् भडप पर्वतके पास जहा मडपश्च रिव १७ और मडपश्चरी देशी है बाहा चित्र सुप्त के प्रमुक्त के माडव्य अर्था आनं क्षय १० तव चिन्युस सुनका जीवश जायासी नेगमक यस्य झाति क्षयी और माडव्य के पश्म जो क्षये वें माडव्य की गीड बाह्मण अये कोई मालव्य की गीड कहत है व उनक उपाध्याय काये १९ और उनके सेवक नेगम का यस्पेहैं वे ऋषिकी भक्तीमं तसर रहते मये२० त् श्रीगोंडके माडव्यशिष्यएक कारवहरे २१ उसमेसे आर्धे के वित्नगरबसाय के रहे पीछे ब्रह्माने दूसराप्त्रन गोतमनामक दिया २० उनोकास्यल नहा गेंडे स्वरी है वोहा है और स्वी गेंडकायस्य यजमानर्जा गेंड ब्राह्मण उपाध्यायमये वे बड़े तपसी है २४ ब्रह्माने तीसरापुत्र स्वी हर्षनाम करके दिन्या भी श्रीहर्ष वित्रगुप्तके पुत्रकु केंक्र सरोरुह देशमें सरपुनदी के तट ऊपर जहा की हर्ष स्वरी हर्ष सरोरुह स्वी हे वाहा गया २६ पीछे स्वीहर्ष के शिष्य श्रीहर्ष गेंड गुरु मये और श्री गत्ति वाहा गया २६ पीछे स्वी हर्ष के शिष्य श्रीहर्ष गेंड गुरु मये और श्री गत्ति वाहा गया २० वित्र प्राप्त के प्रमुख के प्रमु

अ गोडासो परंडव् शिष्यासं रुखस्मृताः ॥ शिष्य णांचेवलक्षे वं प्रसंगातः सुदी रितं ॥ २१॥ तस्मादधे गतासे वे लंकि तं व सयन् एरं॥ द्वित्यंत्सुतंतस्यरेत्मंद्रत्वांस्तृतः॥२२॥रेदेश्वरीत्यादेवीवर्त्तेजगदं दिक्राँ॥श्रीगींड सी धिकायस्थे बहुधा विश्वतः सृचि ॥२३॥ गीतिमीदन व स्वांत्र धीनान्यम न् वेष्ट्र ॥ श्रीगोड से ने वेष्ट ने देर स्ते तप सिन्। ॥ २४ ॥ तृते यं तस्य इ हे दिनावां स्ततः। श्री हर्षेक्रासा निधीगतवान करिस नमे ॥२५॥सर रहे सुपे देशे अपे नसरसून है ॥सूरे रुहेकर्य व्यवतील गदे बिका ॥ १६॥ के पे दू सार्य-है दीष्या र्विध्संप्रक त्यता. ॥ भी गुस्तव्य खंकायस्थ नाना रूपाहर कशा ॥ २७ ॥ भी डानांचलक्षेदं दिखाण्यं प्रकी तितं ॥ तस्म दर्धे गृतास्ते -प्यवासयन्जान्हरी तट् ॥ चुन् हें दु हुनं तस्यहार तंदनावां क्तेः ॥ यहील गतवार् सो पिदेशे हर्य ए छे हु है ॥ २९ ॥ हारीते धर सा निध्टे ह ेरेतस्यात्रमेरुक्रे ॥हर्याणेशीयत्रदेवीवर्टनेजगृदं विका ॥ ३० ॥ऋेणीपतयः क यस्था वे वृताऋसहरू शः ॥ हर्याणाऋेव अगिडारु रुत्हेरं प्रणे दिताः॥ ३१ ॥ पंचम्ह्रे हुत्ते तस्य बाल्मी इंदत्तवां स्तृताः ॥ यहीत्वागत् वान्स<sup>े १</sup>७ हृदि रणये झे हुने ।। ३२ ॥ देधे दुन्देम हारणये बाल्मे काश्यमसं-इन्हें । वाल्म के क्रिस्मानि ध्येकाय्स्य देवनि में तं ॥ ३३ ॥ वाल्म के म्ब रकाय वित्र गदे के का व ल्म के कि का पस्या व दितास दर्दर रं ॥३४॥वात्म क क्षेट्रव सुर्न नांसंपक त्यताः॥रक्तशृंगाऋ इत्रेतेपाक्षिक मत.सुरे॥३५॥॥ उन दोनोके वंशमे जेउसन्म भरेटे श्रेणिपते

कायस्य यजमान भीर हर्याणा गेंड बाह्मण उपाध्याय भटे ३१ ब्रह्माने पाचवा इत्रवाब्मिक नामक देयासी वा त्मिक चित्रदुस इत्रकुं लेके ३२ आहु गडके पास वात्मिक ऋषीका आग्रम है वा हावाब्मिक श्वर महादेव और ३३ वाल्मी अश्वरी देवी है वा हा रहा पीछे वाहा वा त्मिक कायस्य यजमाने और वार्स्म क ब्राह्मण गीडरुरु यहिंगत अये २१ कि तनेक रक्त सम्मामक भने २५ आवकोसके अपर जिनका आत्ममहै अहिक काल के समयमे आहा यहां किया है २५ बहा तो छट्टा पुन पसिस नामक दिया तव विस्त सुनि क्रियुस प्रमृत्ते के २५ अयोध्याके नजीक सरयूनदीके तट उमरजाहा यसि सेन्यर महादेय और गासिखा देवीहे बाहा गया २० पी छे उन दोनोके नशमे पासि स्रजीह बाह्मण उपाध्याय समे और गासिख कायस्य यूजमान समे २९ अहा। ने सात वा पुन सी सारिक्रिय दिया पी छे मी समे क्रियुस पुनकु लेके अपने आज्ञम ने आया ४० सीरसदेशमं जाहा सीरसम्बर महादेव है और सीरसी देवी है बाहा आया ४१ पी छे दोनो एक शिष्यके बशमें सीरस कायस्य पजमान समें सीरस गीह जा

याजनह्रयुमानेसुदुरेतिष्ठतिचा अमा। किपत्काले चुस्भास्यज्ञुक्में समाचुरन् ॥ ३६॥ पष्ठतस्यसुत मस्मावसिष्ठदत्तवान्सुन ॥ गृहीला गतवान् सीविवसिँ छीमुनिसत्तमः ॥३७ ॥अयाध्यामंडसे देशेनसि छेन्यरसिन्धी ॥सरयू तटमासाँ य वर्तत्जनदिका ॥ ३० ॥वासिषा सी वकायस्यासुरवोऽपिर् विस्मिताः ॥वातिषाञ्जूषिशिषाञ्च्वसिष्ठस्यमहात्मुनः ॥२१ ॥सस्यतस्य स्वतस्यूसोभिरिद्तत्वान्ततः ॥यहीत्वान त्वान्सीऽपिन्हारि सामगंखमा ॥ ४० ॥सीरमेयसुमदेशसीरमन्यरसन्धि ॥सीरमीदेवँपात्म्वति जगद्विका ॥ ४० ॥सीरमाञ्ची वकायस्याः सीरपायुरव स्मृताः ॥अष्टम्वुसुततस्यवालभ्यवत्तवास्ततः ॥४२॥यद्गितागत्वान् सोद्धिस्वाम्मसुनिसस्रतः॥देशोद्धिक् कोयत्रदालक्यान्सरिद्रस् ॥ ४३ ॥ दालक्येन्बरसानिभ्येदाखुक्ये चित्रगुसन् ॥ दालक्या इतियादेवी वर्ततेजगृद्विका ॥ ४ छ ॥ तान्छि व्याक्षी बदालक्यायुरुलेतेमकीविता ॥तरुसमादिजा सूतवातशोधसहस्त्रश्च ॥४५॥एकदाहिस्यस्प्रीमाप्ता केनुकुडलिनींगता ॥याजय् तिचवासक्यान्कायस्यान् <del>विव</del>शुप्तृजान् ॥ ४६ ॥<u>नवर्गतु</u> स् तैतस्यहंसतम् विसत्तमे । यहीत्वा मय्योहस् इसदुरीस्य सन्निपी ॥ ४७॥ सुरवसे नो महादेशो विचतेग्रणवन्तरः ॥इसेन्यरस्यसान्तिध्यम्भेणामवरं सुधी ॥ ४८॥इसेन्य रीयमदेवीवर्ततेजगदंविका॥ तद्रसन्नान्यकायस्य सुरवसेनाचने कशुः ॥ ४९ ॥ ॥ स्मण अपाध्यायमये ४२ ब्रह्माने भावनासम्बन्धनामक दिया गलन्य मन्यि विनस्मके सुन कु हे के दुर्ह हे क्षेत्र मे

यलभा निष्केतर अगर ४३ जाहा वालक्येन्यरमहादेक्षीर रालक्य देशा है। वालक्य सुनीका आगम है। वाहा आये ४५ व्युक्य कर्षी के शिष्यहथे वे दाल भ्या गीड शहरणस्तर भये और रालक्यनामक कायर्यजनकेयनमान्भय वालक्य गीडके वहामे जो सहस्तान्धि उत्तर भये ४५ उसमेसी कितनेक आहर्त्य लीमे गये कि तवेक कुडलिनीमे गये और विभस्त वालक्यकायस्थी कु यहाकस्वाये ४६ बह्मानेनवमासुभई सनामक भर्षिक दिया वो इस भर्गा वित्रसुसरुभ इसनामक कुले के इसी पर्वतंत्र नजीक ४७ सुरवसेन देशमें जहा हसे स्वर महादेव और हंसे स्वरी देवी है वाहा गया ४० पीछे हंस चित्र गुप्तके वंशमें उसन भये वे सुरवसेन कायस्य य-जमान भरे और ४९ हंस कर्षी के जो शिष्य हथे वे सुरवसेन गोंड बाह्मण उपाध्याय भये ५० उत्तमदेशमें यद्ग कराते भये बह्माने दशवा ५० भट्टनामक कर भे दिया ५१ वी भट्ट करी चित्र ग्राप्त के वेशमें जो देवा भट्ट कर्टनागर काय- ५१ वी भट्ट करी चित्र ग्राप्त के वेशमें जो देवा भट्ट कर्टनागर काय-स्थ यजमान भये और भट्ट क्या वे भट्ट में हो बाह्मण उपाध्याय भये ५२ ब्रह्मान ग्यारवा ५० से राम नामक करिया ५४ सोरम अर्पीन चित्र ग्राप्त प्र

ततस्तान् पददे हसान् शिष्य श्वयाजना ने । दिमास्तु सुरवर श्रीटसुरव में एही जसः ॥ प्०।। र परं तेस्द च राः सुदेशें हु व तस्यता ।। देशमंत्रयेहे त्रंह यहारव्येम्दवे स्ति ।। ५१ ॥ यह त्वागतनान् से पिश्वे क्रिय कि ।। भर्टे करे दे वे विति के वे के का।। ५२॥ भर्टे कर महादेशीय त्राह के करा ॥ भर्टे कर महादेशीय त्राह के कर स्था स्तु हर का स्त्र के कर स्था स्तु हर का स्त्र के कर स्था स्तु हर का स्वाह के कर से पार के कि कर से पार के कर से कर से पार के कर से पार के कर से पार के के कर से पार के के कर से पार के कर से इकः ॥एकदिशंहुइने रमदेन वं स्तेतः ॥५४ ॥ सूर्यमं उस्ते देशे न्ये रेषे भरत्यी ॥ रत्ये देशे वर्तते प्रवेद देशा ॥५५ ॥सूर्यध्यांऋवहर्वे जातास रेमहरूषः॥ अरस्य सार्वे रेखे तः स्टर्धिरताः सद्य। पद्यासूर्यक्षे ऋते खिख्य एसहेरे म क व्यताः ॥ द्व दर्ह हुन्त्स्य माष्ट्रं हुन्स्नमं। ५७॥ माष्ट्रे य्वरसा निध्येम दुरा वेस्तृताहुनः ॥ माष्ट्रेय ने हादेवी वर्तत्व नदेवका ॥ ५८ ॥ माह् रियाऋँ उत्वी इति बहु इस्मृताः ॥ एवं दल्लाहु तान् हुत्रा लु के पताम हु ॥ ५९ ॥ उव च बच ने सहस्य कहा महिर्य -्रीरागाहुक्तपालुक्य ऋलेराक :सर्देविहि॥६०॥ दिरा स्कृष्ट्राह्रेटेपटट:सुहुस्क्तः। गस्तवह च । गएवसुक्त हर र दीर बंद्र एर हिल्हें ॥६१ ॥सा दियं सहित: श्रेमान् ७ एर देव गुम्क: ॥ते मधे तरे देव ग्राप्ट तर सक् रहें ॥६२ ॥ । ग कुलेके सूरी मंडल देशमे जाहां सीरकीम्बर शिव सीरकीम्बरीदेवी ही वाहां गया ५५ रेसूर्य मंडक देशमे गयेवास्ते सूर्य ध्वज कायस्य और सूरी ध्वज मीड बाह-

णनामसे विख्यात भये ५६ वहार जाहा से रभन्यर शिव सारभन्यराद्व हवाहा गया प्रपृष्ट्य मडळ दशम गयवास्त स्याध्वेज कायस्य आर स्ट ध्वजन ड बाह-णनामसे विख्यात भये ५६ वहाने वारवा अने माहरनामक कर्ण दिया ५७ माहरक्त चित्रग्रम इन्द्रुक छे छे माहर देशमें जाहा माहरेन्सर महादेव महरानगर महरेन्स विविधि वाहागया ५० पीछे माहर क्रमी के जो शिष्य देमाहर चे बे गेंड बाह्मण उपाध्याय मधे और माहरकायस्थ्य जमानमरे ५९ वहानि वेसे वारा अने देके कहा के यह विनय सके वेश कुंड अस रेखापालनकरना ६० यह सब का यस्य शिरक पर शिरवाओर यज्ञोपवीत धारण करना स्त कहते है ब्रह्माजी ऐसा कह के यज्ञ समाह करहे अपने लोकमे गये ६१ अक्ना किन्युसके प्रामे चक्र नामक प्रष्टि अन्याकारण सुनो ६१ चडा स्मणीक जिहे देशमे गगा के ज्तरनट अपर महाल स्मीन पहा किया ६२ उसम्बार मुख्या भी रेउनकी सेपा के पास्य तसर होत प्राप ६५ पी छेपे कायस्य अस्मी के अनुमह से भी वत्मल चेक कायस्य नामस विख्या तभये इनोका कर्म माम्यणादितीन वणीम है बोकरना ६५ पास करना अस्म स्मान करना आनिया सवा और आदादिधर्मसाधन कर्म करना ६० इतर जायह पचन विनय सवा और आदादिधर्मसाधन कर्म करना ६० इतर जायह पचन विनय सवा और अवस्थित करना अस्म गोडे कु और कायस्यो कु क

जीत्य सविधार आहाद्विमसायन के मकास वर्ष इतर जायक प्रमापन उत्तक पर वर्ष इनाप प्रमाप के पान पर कि स्वास्ति है। महालक्ष्याक ताय सक्ष्य के तो वृद्ध के स्वास्ति है। महालक्ष्याक ताय के स्वास्ति है। महालक्ष्याक ताय के स्वास्ति है। महालक्ष्या के स्वास्ति है। महालक्ष्या पर ॥ के मीणी हिंदी पान पर ॥ के मीणी हिंदी पान के स्वास्ति हिंदी वर्ण ता ॥ इस ॥ है । इस मिला स्वास्ति हिंदी वर्ण के स्वास के स्वा

अन्। शत्मीकाना क्यिन्धर्म स्थास्यत्ये वसुनिश्चर्ग। ७४॥॥
तिम जा शाप अयाहे सो कहते है एकदिन चारा के सहवर्त मान माडण असी
कु को रूपाने ब्ली के अपरन्य डाय के उनका मताप देखक कर्षी कु तो नी कंउतार दिय तय माडव्य अस्य ६० चित्र गुप्त केपास आयक कहा कि बाल्य अवस्थान में जो योडा मयन अपराध किया उसका दह जुजने वोहात दिया परित ६० है लेखक सुपापी हा जाव और सुधम वध्या गयह चित्र गुप्त के अपिका शाप सुनते जा सपाय के अस्पी की सेवा करने लग ७० माडव्य कहते हैं है चित्र गुप्त सुवा करता है पर सुमग शाप विकल कदा यि नहि होने का तथा यि मरे अन अहसे तेरे झाति लोको कु शाप फलगा निकु निक् ७० ऐसा कहा न्यापि चित्र गुप्त अस्पी की सवा करने लगा तब स्थीने कहा कि ती नसुगम पुष्या त्या रहिंगे और कि सुगमे सब

पाटी होवेगे १ तथा पे चित्रप्रसने सेवाकरी तव ऋर्ष कहते है किंह मेरे बारावंश है उसमें में जो सूर्यध्वनवंश है उनका धर्म नाश पाटेगा बाको सबीकि हाति वैश्यवणे स ऊची ब्राह्मणस्वियसेनीचिपालन करना ७३ ब्राह्मणके शापके छिरं क छ मेपतितप ना प्राप्त भया है वाल्मीक ब्राह्मण और कायस्य उने का कुछ धर्म रहेगा निश्चे कर के ७४ इति चित्रयुप्त कायस्थकार दपहिलासमा मुभया अवदू सरा चित्रयुर कायस्थ उस तेर द कत्यरे द र कहते है स्टिके आरंभ में बह्मा माणि से का प्रणय पापक मिलान हुन्के वासे सामान ध्यान करते बेठे इतने महामि श्रीरमें से बाहेर एक एक पनिकला ७५ दिवास स्पान कलम हातमे धरे हैं पिनित्र स्वस्त है उसक देख इत् चित्रदुरकरस्टभेदः प्रथमः ७ र कत्यभे देन दितीर चेत्रदुरकारस्य इत् इस चिम हपादे सु छिरवेडे सुख्यादें स्दर क्रुर्स इसरेग प नो विधिः॥ क्षणिधार्न्सरहस्य वररा निर्गतीव है:॥७५ देवारु इम्ह्रिम् पे उत्तेरत्ती। द्र न के करिए ऐर के ते देत ते है। ७६॥ च र्मुहद्देशिय तेर्भर जर्म पतः द्रह्णास हत्देशिक एक ले नेरे जितः॥००॥म पन्सद्र त्रिक लेखन द्राह द्वेर ए॥मे जन दे व लिसस्याभागी देप रेक होते:।। ७० ॥ इह बारे दुरे रूस्म लायस्य दूर्ग यहे ॥ दक्ष : ४ जायते क्रिये व क्षा यण्य के व हे तह ।। ७९ ॥ उपरेक तह : में विक्रवेह देश में हे में भार है द्राप्त के के देश देश देश देश है जाते हुता है देश है है है के नार रेने कर के नाम है के तारिन्द्रियं पर हे कर्न द अवस्थ के द्वालक्ष्य है किया है किए परिनाल किए में है में है में है में है के हैं के लिया है के क्टिंदर अध्या चन्द्र देश्र कंडिक त्र प्रणाः अभी मेरारक त श्री वनवरात्र कत सारा तरे पे पंचर का नी विधी ने चर र का में दिहा कि का की हित याअर्थन द्ररेनीयक यस्टीत निम इस्कोटेर्ष कर इत्स्टेष्टंहर दुनिम क्षेप दन के तान्द्र ने कल्का वस्ते हेते सह ने वस्त स्पन्द पर् केदेवताबीने चित्रग्रासनामरखाही ७६ बोल्त्रियु सक्केंब्रह्मानेंक्षणभर्ध्यान करकेदेवसहवर्तमान धर्मराजकेपासस्थापन कया ७ प्राणीके हु भाक्षक कर लिएहनेके वा स्ते दु दिमान चित्रद मुंदर्यापन दिया अर्थीजन की बखतउनकांब छ देने कास्यापन दिया ७० ब्रह्मा दिकार से पेद भया वास्ते कार स्ट जिस इंकहते है पे छे चिन्द सने दक्षप्रजापतिकीकर्या केसार देवाइ देया ७९उसमें वे चेत्र प्रानामक एक भ्याबी बडापराकर क्याय कर मत्य दी कर्या केसाय वेवाह केया उससे धरी ह मामकद्त्रभयान्वधर्मिकाएत्र दहसमयाउर को अप्सरास्त्र सेचारद्वत्र में टें द्रमाष्ट्र गेंडव सागर्व नेगम १ ऐसेचर नामसे चारद्व पारे ८३ उनो के अपरना म कमरे कायस्थ शाक की लिक महे खर १ ऐरे जाने इन सबीका काइयप गात्र है अब धर्म हुने वह नित्य

स्यकारूमगभेजपूराभया अवचरमन राजाकवहास्यकायम्थकार्भरकाते हे परस्यम सहसाजुनक मारके पीछ पृथ्वीमकेसन क्षत्रियोकु मारमुके पासी जीस्ण नाण छक स् दुनंतम् ८ अत्वप्रतुरमकमयुम् सव सत्रियराजा अनेकनरहकं वदा भारण करकं अपना अपना स्थान खड़के विखन आवे पहा चलेग्य ८८ और बदर्सन राजाकी स्थी समर्मा यीमां रालक्यकापिक आश्वममे गृह रालक्यकामीन उसका मरकाण किया पीछ परशुराम दालक्य कारिके आश्वममे आये ५१ वर्ष गुनीने पूजा किये और भाजन्क विजय तथ तदाराम्भगात्सर्वेनानावपधरा मृपाः ॥ स्वस्थानपरित्यज्ययम्भुक्षभगताः किछ ॥ ८८ ॥ सगर्भानद्रसेनस्यभार्यादाल्भाञ्यमगता ॥ तः नागमः समायानादाल्भगञ्चमम्बुन्तमः॥ ८९ ॥ एजिनो मुनिनारामाभोजनार्यसमुचनः ॥ भोजनावसरेन नगरीत्वापोषान्करः ॥ ९० ॥ रामस्कयान्य-यामास्तर्दिस्यसम्भार्यः॥तर्मेत्रादाद्विकाम्भार्यवायमहात्मनः॥ ९१ ॥ याचयामास्यमद्विकामदात्मयोमहासुनिः॥ तत्रोद्दीपरमभीतीभा जनचू ऋतुसुदा। ९२॥ भोजनातं महाभागावासनेउपविषयच॥ ताबूलानतरदाब्ध्याः पभन्छ भारीमभति ॥ ९३ ॥ यन्वयामार्थितं वेवतत्व पासि तुम्हेसि। ॥रामउवाचा। ॥तवाञ्चम्महाभाग्सगर्भास्य समागतां ॥९४ ॥ चद्रसेनस्यराजर्षेताचेहित्वमहास्ते ॥ ववोदात्स्य पत्यवाच द दामितनवाछित ॥ ९५ ॥ यन्मयामार्थितदैवनन्येदातुत्वमहसि ॥ तता स्वियसमाह्रयनुद्रसेनस्यूनेमुनेश ९६ ॥ होतासान्वयलापाणीकपमानास मागुताप रामायमददीत्रवतः श्रीतमनाञ्जूसूत्॥ ९७॥ ॥ रामुख्याच ॥ । यत्त्वयाश्रीर्षितिविप्रभोजनावसरेपुरा॥ तन्पशसमझाभागुवदामित ववाछित् ॥ ९७॥ ॥वालम्यउवाच॥ ॥भायितियेन्सयापूर्वरामदेवजगद्भरो॥स्त्रीगर्भस्यमसुवालंतन्मेदातुंस्वमर्हसि ॥ ९९ ॥ततीरामोत्रवी दा-

दोवरान मानुकरना निकाल मध्यावदनकरना अष्टमी-बीवसकु दुगावनकरना ०५ मगलवार कावन नवरामका मतकुरना तर्पण पत्यम् करना ०६, इति वित्रगुम् काय-

लगा नवराक्त्रयमुनीने रामकु कहाकि आपनो मगोगे सा देशुगा १९ ऐसा कहके रामकैपाससे वि आपन एक हस्डित मगसिया सो रामतथासा कहा पीछे वानी जने परम भी तिसे मोजन करके १२ पीछे उत्तम आसन उत्तर वेटकर ताबूरू असण करके भयम वाडक्य परनुरामकु पृछत है १३ हे राम जुमक्या मगने होसी वही रामकहरे है तुमरे आ ममें पदमेनकी स्पीमगर्भा आहाँहै उसकु देव १४ तदबार प्यक्त हो है हे राम जुमेरा वाछित मय देताहु १५ पीछे मेराइस्डित आप देने कु योग्यहो ऐसा कहके चहसेन की स्पी कु बुकायके १६ क्यायमान होरही ऐसी स्पी रामकु दिये तबराम मसमाहो पके कहते है १७ है बार पम भीजनकि बरवत सुमने की मगासी कहा मयहस्थित देवाहु १० बारूप कहते

अपोषान हातमे छिये है भीर परस्राम अपनि दिलकि बात मंगने

क्रयंयद र्थमिहचागतः॥सनियानकरचाहतत्वयाचितवानसि॥ १००॥ ॥

है है गाम आपकंपास पहिले जे मंगाहै सो यहहै कि चद्रसेनकी स्त्रीके गर्भ ने नो बालकहै सोदेनेकु योग्यहों १९ तब राम कहते है कि जिसकारण मय यहा आया सो हे ऋषे हुमने जो त त्या मोद मगा १०० ह कषि तुमने काया के अदरका गर्भ मंगावा स्ते इस वालक का नाम कायस्य हो हे गा १०१ यह बालक उसन्त होते स्त्र अर्मी हो वे गावा से हे कि पि हमने उसक् दुष्ट सत्र धर्म से निवारण करना १०२ तब दालक्य कि पहिषित हो यदे कहते हे इस बात में आपने संशय न हिकरना दुष्ट है न हि हो ने कि। ३ ऐसा सुन के गर्म कु छे उके राम आ अप के बाहार च लेग है १०४ स्कद कहते है यह गर्भ स्थवालक स्तर्व यहार विश्व कि वे दे उस नाम या सो सुरव्य सात्रिय धर्मी भया परह परवुराम के आ जा से दालक्य हुन वे बालक कु सात्रिध में से

मा र्थतं चत्या विष्कायस्त्रं गर्मम्तमं ॥ तस्मात्कायस्य इत्याख्याभ विष्यतिशिष्टोः हुभा ॥१०१॥जायमानूस्तदाबालः सात्रधम भ विष्यति ॥ दु

का धर्मिद्यार छेउसके वंशां जे भरे वेसवकायस्य भये सबो कादालभ्य गोनभ्या १०६ दालभ्यके बचन्से सबकायस्य धर्मिष्ट सत्यवा दे आचार सपन्न विष्ट शिवके पूजन त-सर्१०७ वेद बाह्मण्यतिरीके पूजनमे तसर श्रान्द्रतर्पणयज्ञदान तपबत तीर्थयात्रा कर्ने ने तसर रहते भरे १०८ इति चद्र से ने ने वा भव सम्य का भेद तीसरा पूरा भया व्यव बणसक र कायस्य जातीका ने दकहते है द्वादश मिश्रजाती मेकाचीयाजो मा हिष्य उसकी स्त्री बेदेहा मिश्रजाती में ग्यारती इन दे ने से जो देदा भया पुत्र उसकु कायस्य कहते है १०९ उनका कर्म अने कदेशालि पे लिखना येजपा दे गणित जानना ११० श्रद्रवर्ण से अधम इनोकु पाच सस्कारका अधिकार है चारवर्ण कोसेवा करना १११ व्यापारकरना कारा गेरी चातुर्यक

मक्रमा इसमेजीविका शिखा जनोव लासक्य नडसे देवसास्पर्ध इनकायस्योकु वर्जित है ११६ जातकर्म १ अन्तमायन २ वपन ६ कर्णवेश शाविवाह यह पाच सरकार है रूसरे निर्भ निर्म निर्म क्षित कापस्य करे बनोका पर्म मणानहे कोर करता है जिन है अप ऐसे बारय भेदमे विश्व निर्म निर्म निर्म करता और किस्युगर्मे उत्तम वर्णकी सब रच्छा के परके राववें है अप काम क्ष्में स्थाप करता किस्या किस्य किस्या किस्य किस्या किस्य क

एवकायस्यात् कायस्यविधवायाकायस्यतमापत्रमः ॥ अर्थेपाकिविद्धर्मनिर्णयः ॥ सकरकायस्यस्य पत्र सस्काय-अमनव्यः ११३ जातक भौताह्यानुं ववकाकर्णवे धने। विवाहसेवमसास्यनान्यः संस्कार्यव्यते १९५ विज्यात ऋषेद्रसेनीयकायस्याना केचनवो उशासस्कारान्समन्ना नुवद्तिकैचनद्शसस्यायन् श्रद्रवद्मेंत्रकान् **कुर्यादिति गदित्** तत्र पूर्विमेवास्मिन्यचेस्वस्वोत्सित्रसगे दिजाधिवत् यजनाध्ययन्दानानि चैर्यादुत्तमभारतणस्त्रियाद्धमं भूमेगावरेदिर्से वृमपिउक्त तमेव्क्रहीपावित्यमिववेपाभिष्पादिवञ्जाप्रचित्रसम्बद्धम् स्पूर्यक्रहीपातित्यमिववेपाभिष्पादिवञ्जाप्रचित्रसम्बद्धम् स्पूर्यक्रहीपातित्य दितीयं चित्र्युप्तकायस्यस्यस्यं एक्तियायम् प्रतिपादित् चौद्रसेनीयकायस्याबद्धाकायोद्रवादयः चित्रयुप्तभौदसेनास्तैपीधुमे सुमाग्र चत् ११५ हिम्हणाः ॥ एववाक्यस् मूहेतु निञ्चयोनियजायते कस्य सर्वेषि चेन्छति युत्तमत्वष् हिस्यिताः ११६ नर्चातः करणे सुद्धि स्तिष्यु पावित्यदशनात् अमञ्जूक् में द्वेषी दिविनेमतिकत्यना ११७ इतिश्री हा॰ द्वेदशा गोडोनो मचादश विधका यस्याना सुसंतिवणी ननाममकरण ॥ ४२॥ सर्पपर्यसंख्या ४१८५

अयं वाब्मीक गोमिनीयरन्यालय ब्राह्मणोत्पत्ति मक्रण ४३ अन नात्मिक अर्फनालम बाह्मणो कि उसचिसार इन्हें है इसके पूर्व मकरणमे नागमकारके जानीड उनोढ़ि असत्तिकहैं कापस्य सहनर्तमान उसमें जो पानने मेड कहैं।

अथवात्मिकादिश्राद्यणोत्तित्तरमाह्॥ प्रदेशदश्मीडानां श्राह्मणानासमुद्भव् ॥क्रायस्यस्य त योक्त स्तन्मध्येपन् माश्चये॥१॥तेतुवा तमीककाविमा कायस्य सेवकास्तया॥मामित्रीपाञ्चवश्चेवतेपायस्यस्मुद्भव्॥२ ॥पाञ्चेपातास्तरके क्रायस्यात्वति मस्ते सूत्उवान् कृत्यस्य स्मित्रशतस्त्रश्चात्रस्त स्त्रस्य प्रते सेवक भय और गीमिमीपूजा

स्मानि पहा उसनामये है जनसबीकि उसाचिक्या कहते हैं २ एत कहते हैं हो निक निक्यात कापस्य बहातके देहते उसनामा पीछे बह्माने उसकु बात समावि की ह

चित्रयसकु विवारायुत्र मर्टे ह्ये ३ उसमे पाचवायुत्रजो बाल्मीक नामक ऋषि दिया सं वाल्मीक ऋषीने चित्रयसके युत्रकु हेके आबुगडके नजीक ४ वाल्मीक ऋषीके आत्र ममे जहाँ वाल्मीके स्वरी हे वाहा गयाः अपि छे वाल्मीक नामक कायस्य और वाल्मीक नामक बाह्मण दृद्धिपाये ६ वाहासे आठको सके छपर एक आश्रम हे उस विकाने- जएकदिन वाल्मीक मुनी रामचद्रजीके पाससे धन वोहोत लायक और उनकी साहायतासे यज्ञपदार्थ सपादन करके द सरस्वतीक अग्निकोणके ऊपर उत्तम श्रूमि देख के वाहा छुड मडप बनायके गोतमादिक जो वडे ऋषि है उने का ९ वरण करणके उत्तम यज्ञ किया यज्ञ करनेसे वो आश्रम अति शो भने लगा १० व आश्रम का प्रमाणक

त्रविदे दे में हुन्यालमें कंदन यानुजः। यहित्यागतवान् से पेअ्र्वारण्य के हु में ॥ ४। देवे हुँदे महारम्येवालमें काश्रम संझके। बालमें के म्रूरे कायून वर्त तेजगदं बिका॥ ५॥ वाल्म का ऋेवकायस्थाव दितास्तदन त्रा वाल्म क ऋेवहरत ऋषे णासं मक त्यता ।। ६ ॥ रक्त शुगाऋ इते ते पार्भेप अमतः सुप्रे ॥ योजन ह्रयमाने दुदूरे तेषं तेचा अमें ॥ ७ ॥ तत्रेकदाच्वालमें क्रियमा सुब्ध धने महान् ॥ अम् द्रामसहाय्ये न सूर्व संपार सवतः॥८॥सरस्वताभिकोणेड क्रतास्थानमन्तमं॥उन्मेमंडपकत्वभीतमादीन्महाहनेन्॥९॥वात्मी क्रवेरयामास्क्रह्रकेन्सार् त्तम ॥ तद्ते हु हु भे ते ववा तम कर्षानह त्तमं ॥ १० ॥ नवयोजन वेस्त प्रायतं चत्रये दुश ॥ र झोते हु ने हु ख्य नादानार विहेत हित् हु। ११ ॥वात्म किर्द्धरैविक्टे: प्रबद्धांज क्षर्वित्। अगस्यजभरद्धाज कण्वन्यवनगेतम्॥ १२ ॥विसिष्ठगर्गत्रपम्हेगालविद्यारद्॥ ऋत्य शुंगत्र हो -म्ट हैकाष्यपमहामते ॥१३ ॥ जमद्रे दे बिल्लुज्दियामित्रमह तपु ॥ यूरं चान्टे चबहरो मुमद्रे व स्थाना ।॥१४ ॥स्थानप् तथाकरणयथामे स् फलमवेत्। एवं अत्वाह न्वरासाधेद्द स्त्पोिनिषः ॥१५ ॥सवैते व्यलं सेक्ट्नमावेद वित्रमाः॥तेषां वे हित्र रयानांगीत्र विविध्नाता नेच।। ॥१६॥त्रयंदशशतान्द्रच्ये संजातानिमहात्मना॥पंचाशक्तहस्राणिगंरसणेनियोजिताः॥१७॥ गो मेनी यासे विद्येय सर्वदा चित्र-धे तमें । अप्टेचिचला रशक्त्राह्मणानांसहस्मशः॥१८॥॥ हते है खत्तीसकोसचें बायनकोस लबाहे वोस्थानयज्ञसमातीक कर पेयो छेदानदेने छेवास्ते निश्च

तिकयाहै ११ यज्ञाहर बाद बाद ने कत्रतिष हात जोड़ के मधुरबचन से है अगि है अशि है अरहाज है कण्व है च्यवन है गें तम १२ है व सिष्ठा दिक्र ही मधुरबचन से वे जो में रे यज्ञ में आये है १४ वैसी मेरेस्थान की मतिष्ठा है वे वैसा मेरामनोर्था सिन्ह करो ऐसा बचन सुनते सबह नितयास्तु कहने छगे १५ उसबखत सब क्सी के एक छारव शिष्य हुए वेद मे प्रवी पार्ट उनो के निर्म छगोत्र संस्था १६ तेरासों १३०० हती छसाशिष्यों में पचासहजाराशिष्य वायक रहे के वास्तेरखे १७ वे गो मित्रीय ब्राह्म णामरे और अडता छीसहजार ब्राह्म णसू र्यकेसामने भेजे घेर बाउयबाह्मणभयेश्व जबतलाशिष्यमेशाकीरहै बोहजार बाह्मणवेसामने बेठेहै १९ सोयल्यमध्येश्वराच्युभये कोई होतापाये कोई प्रतिज्ञायये कोई उ हाताप्तये कोहद्वरपाठभये वेसवबाह्मणवात्मीक बाह्मणनाभसतीनलाक मेविरव्यातभये १ "यह बाल्मीक बाह्मणोका गोष्ट्रमवर निर्णय जो है सौ चक्रमें स्पष्ठ है ११।०२

क्यमेमेपिताहोते तेवेरव्यालयान्युता ॥ तमावशपिताहोत् वद्याण पुरत स्थित ॥१९ ॥ अध्यप्तीहोत्रातिक्चेवठ झाताहारपालक ॥वाल्मी कालतिविद्देषाः विख्याताभुवनमप् ॥२०॥नेपामवरगोनापि मृण्वतु मृषिसनमाः ॥भारहाजचवातिश्वकार्यप्गाम्पर्मेवच॥१९॥आनयगी तम्बलकोष्डिन्यभागवत्या।सुद्द्रज्ञमदिभ्वागीरसकुराकोत्वके॥२२॥विश्वामिभपुळस्यचागस्त्यशाहित्यमेवच॥एतानिभर्षिगात्राणि सर्वाण्यश्वश्रीविद्द्र॥१३॥यान्मीकाप्भदत्तानिभात्राभेमस्रुतात्मने॥वासिश्चचवतिश्वागंभ्वरक्षेकएविद्दे॥२४ ॥क्राप्यप्यवस्तारा कार्य पमनगर्मे।।गार्यस्येतेचिन्नेपाआनेपाणावदाम्पर्भारभ वैआनेयस्वार्चनानशशावात्वऋतिवैत्रयः ॥मार्गवस्वनौवैऋजमद्यिस्ववसक ॥ २६ ॥ फोट्यायनाना पर्वेते प्रषेताश्चनावंति 🛊 ॥ वसिष्ठ मैनावरूण की दिन्यो स्वेतित पृथक ॥ २७ ॥ की दिन्य प्रवस्त हो तेर्वमद्यनिद्याय 🥫 ॥ जमद्भि भी र्गवस्थीर्षस्वेतिमय स्मृताः॥ २८ ॥ भागवस्यवनस्विजामनास्यतसेन्च॥आष्ठियणेतुपेस्तेतिभागवपवरार्मे॥ २९ ॥ आंगिरसस्वबाह्यस्य मुद्रसञ्चतयेवच ॥ सुद्रता गिरसानाच प्रवराञ्चेतिविकाता ॥ २०॥ माधाता गिरस स्वैवकीत्म स्वेतिकय समृताः ॥ विस्वामित्रोदैवतक्वदेवस व्संप्रचा। ३१ ॥ विन्यामिभः सगोनाुणाँ प्रवर्गन्व इमस्मृताः ॥ विन्यामिनोस्म्ररयोगार्ध्व हेति पृथक् पृथक् ॥ ३२॥ व्यगस्यस्यसगोनाणा न वराञ्बर् मेरपता ॥ प्रवार्यभोत्रमवर्षिवाइनैवकारयेत्॥ ३३ ॥ छतेसमोत्रमवरेगोत्रनाशामवृतिहि ॥ एनविधादिजादिव्यावाल्माद्याविकतासूवि ॥३४॥यज्ञर्नदेवमायात्यामतेकोकिलसज्ञकाः ॥योजयामासप्रक्षमन्दि जनुभूषणायवे॥ ३५॥वाल्मी किनापुरात्येतेसर्वतेकायजाः गुसा ॥ एकादशशनसाथएकविशक्तदुत्तरा ॥ १६ ॥ लेखनेकुडकरणेयक्तमभारसाधने ॥ राजकार्यनसेवायायाव्यक्तिका कायजा स्मृता ॥ ३७ ॥

२५। २४। १५५। १६। २०। १९। १ । ३१। १३०। ऐसा गोभगवरका विचार करके विवाह करना २३ जो सगोनम विवाह कियातां प्रानाश होता है प्रत्यह पत्मीक बामण हथ्योमे विस्थात है ३४ इन बाह्मणोका सुद्ध पतुर्वेद माध्यदिनी शास्ता को कित सुनिकामत है पीछे इन बाह्मणोकि सेवाके ध्यये ३५ वास्मीक कायन्य स्था सो प्र इस संस्थादिय ३६ वे कापस्य विखनेमकुत उत्पर्न एजकाप करनेस सेवामे वहे कुश्चक है ३७

इने कापचमवर्ण धर्म ब्रह्माने निर्माण किया है पोछे वाल्मीक सुनिने सब वाल्मीक ब्राह्मणोकु वाल्मीक पुर ६ उर्फवालम ) विया १८ पूर्वि भूमि चो धन कि बखत ऋषिने कहा कि पृथ्विशु इया अशु इहोंने परतु हलसे शोधन करनेसे सुद्ध होतीहै ३९ वास्ते कितनेक लोक हल हल नामिब कहते है वे वाल्मीक ब्राह्मणक में ने स्थापक में ने स्थापक से ने स्थापक स्यापक स्थापक स्यापक स्थापक स्थापक स्थापक स्थापक स्थापक स्थापक स्थापक स्थापक स्था

पंचमीवर्णधर्मस्त्रयेषाधात्राविनिर्मितः ॥ त्रद्तं ह्रिजवर्षेषयोवालमे किनामकंदुरं ॥ ३८ ॥ सूमिशोधनक लेह्यदुक्तं मृषेणापुरा॥ सुद्ध् वाय देवानेवहलेनेव वेशोधरेत्॥ ३९ ॥ तस्मान्हलहलेतीति अपियान विदुर्जन ॥ तेतिशाः कर्मकर्तारे धर्मक मार्थसूषिता. ॥ ४० ॥ वालमे काद् ति विख्याता सर्वेसलदयापराः ॥ यद्दंश्रु या नित्यवालमे काख्यानस्त्रम् ॥ ४९ ॥ तस्यसर्वर्षं सिद्धस्य द्वेत्रस्य वेजतात्मनः ॥ ४२ ॥ दतिश्र बारु वालमीकगोमित्रीयर व्यालयबाह्मणात्मित्रवर्णनंनाम् प्रकरण ४२ आदितः स्लोकसंख्या ४२२७ ६९ ६९ ६९

### अथवार्त्म क ब्राह्म णोका रोब्र प्रवर ज्ञान चक्र

सरव्या गोन्न मवर	v वत्स <b>ा १४</b> कीशिक	
१ भारद्वाज	द कोंडिन्य वसिष्ट मैत्रावरुण को डिन्या १५ विश्वामित्र विश्वामित्र देवत देव	भवस '
२ यसिष्ट यसिष्ठा -	९ भार्गव भार्गव स्थावन्आत्मवान्आर्धिषेणाञ्चपेका १६ उरुक्य	
३ काश्यप काश्यप्रवस ध्रवा ३	१० राइस्र आगिरस बाह्य सुद्धल १० अगस्ति विश्वामित्र स्मरस्य व	<b>।</b> धूल
४ गाग्ये कास्यपचला भुवा ३	११ जमदिम जमदिमेभागीय और्व १० ज्ञाडिल्य	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
५ आत्रेयः आत्रेय अर्चना नश्वावा चा	१२ आंगिरस आगिरस बाह्य सुद्रल १९ कात्यायन भागेव च्यवन और्व ज	मद्भि वस
६ गीतम	१२ कुल माधाता आगिरत कीलः	

अथ खुक युर्वेदीय ब्राह्मणका उसत्ति में दकहते है शास्त्रिवाहन शके १२२० के सालमें एक गोदावरीके तट ऊपर मतिख्वान हुए (उपे हुनी पहुन ) बाहाका राजा बिंब नाम

क गमाने उत्तर कोक्णम आपके गम्य करनाक्षण २ पीछे गमाने अपने गुठ रपुनायक गुम सुरुषोत्तम कानके ३ उनी कु मुलायक उत्तरकाकणकी विति न वित्त काय को तन दृदिया और अप यापिकार रामसम्भानके दिया पीछे पुरुषोत्तमणीन अपने पिति छान भात मेसे स्व शारवाके इस्थानिम भाइन द सबिधियो कु बुलायक अपने पास रखे ५ वाद्यो दोन काल गये पीछे विनवान समुणावा तदछत्तर कोकण में सुद्धका राज्यक्षण तथापि यह पुरुषोत्तम बाह्मणकी यजमान इति कु और इनकी मति बाकु कुछ कानि न हि भ इ पहिलम्मीविष्यकी ६ उपवर्षोत्रावि नहि सभा उसम्बद्ध राज्यकु विवोद्दोनविष्तगर्पवाद विशेष कोकणके महनेवाक अभिन्यावन झाती के पेशवे सरकारका राज्य भणा त

अय मुकु प अर्देश्य बाह्यण भेद बाह् हरिक्षण चानुर्देशय भिष्णणा मेदनस्था मिसा अत ॥ या लिवाहन केशा के स्थानिय ने देश के स्थानिय ने प्रतिवान पुरस्योहि विवास्यान्य सत्तम ॥ एवर्ष केया विवास कार्य स्थान स्थान

१८॥॥ व वेराजाक्रोक्णस्य रित्तपास्त शहाण्य पं उनीने अपनी पक्ति मे भीजनकरनकेवासी महाराष्ट्र बाह्यणांकु आग्रह किया स्पर्तु पह उत्तरको कणकी यु तिकनेयाल पुरुषात्तमान्य सम्बद्धि शहू पतुर्वेदी शह्यणोने अपनिपक्तिमे भीजननिह करवाया उसदिनसञ्जू यसुर्वेदिक साय कराई और वित्तपादनांका १ वशा विरोध म या उस विरोध करने बोहात दिनगयबाट उत्तरकाक्ष्मे क्सापुर एक के बसाइ के ) नजी का १ पक्ति कर्यक्र कुरू कर्यमाव है बाहा एक सुक्तार अधिहानी शह्मण रह्न तह या ११ शा तिवाहन या के १६६८ कसाल मे विरामन कराई आदिकाम समझ ने १ दमाची नहें पक्रे विषेत्रकार का अधिहाने भगवेश तब सुक्तार ने अपने सक्त समझ है के १३ सानारा नगरमं छत्रपनी राजाकु सब अपनादु राक ह्या तब राजाने उने का निर्णय करके तुकं भरका अधि होत्र फिर चलवाया १४ ऐसे वो कल हयोगसे वो कोकणस्य बाह्मणोने नकपरको अनुयायिशुक्र यह वैदी बाह्मणोकु पळशी कर बाह्मणनामसे १५ बुलाने लगे वो समयसे यह बाह्मणोका पळशी नाम सया उसमे बि कितने क ईषिक बाह्मणन है वे १६ करशब्द कु छोड़ के पलघो ऐसा कहते है और उनोकि वृत्ति हरण करने के वास्ते कल ह करते हैं वे केवल संसार में छुशके भागीदार जानने १७ पर सु उत्तम महायोने यह कल ह व्यर्थ जानना इसमे सश्यनहि है यह शुक्ष यजुर्वेदी यबाह्मणजत्तर को कणमें रहते है तथापि महाराष्ट्र बाह्मणजानना इसमे सश्य नहि १८ यह माध्यदिनीय शुक्त यस्त्रवैदी न

एवं कलहये रेन दिमास्त देशवा सिनः ॥ दुक्भदगणान् सर्व हल हिन्सामतः ॥ १५ ॥ ऊदुस्त काल मारक पलश करनामकं ॥ जातं ते षां दि जोंद्राणां के चिद्दार्थालवो हिजाः ॥१६ ॥ करशब्द वेनाय्यत्रनामग्र ह्लंतुच हना ॥ कुर्व तेष्ट्र से हरणे कलहं के शभा रेनः ॥१० ॥ वृथास् कलहो झेयः स्टें: विश्वेनसश्यः ॥ सोम्यकोक ने वासे पेते देशस्थानसंशयः ॥१० ॥ एष माध्यं दिनायानां गे नोपन से निर्णयः ॥देशस्थ द स्व विशेषः कुलाचा रखतादश ॥१९ ॥ कन्याभोजनसब्धे स्वगणे महाराष्ट्रके ॥ भवतः कर्म नेपुणाः सर्वेशी क्र यज्ञगणाः ॥२०॥ दिनः खोद्र व्याद्य स्व पेष्ट स्व विशेषः स्व व

ब्राह्मणेका उपनाम गोत्रका निर्णय और कुलाचार सब देशस्य सरीरवा जानना १९ इनोका कन्या भोजन सबध अपने माहाराष्ट्रमे होताहै यह ब्राह्मण सुद्ध यह विदी कर्ममें बडे कुशल है २० इति ब्रा॰ यकु यनुर्वेदीय पळशीकर ब्राह्मण वर्णन प्रकरण ४४ छ छ छ

### उर राक ही पेबाह्मणोसनिषकरण ४५

अब शाकत हीपि मग भोजक बाह्मणोिक उसिन कहते है हुणाका पत्र जाववित्तसे उसन्तमया हुवा बढा तेजत्वी साब नामक ओ सूर्यका बढा अक्तथा उसने साब ए रमें एक देव मंदिर बनाया १ पीछे उसमें सूर्यकी उत्तम मूर्ती कि मितशा करके आनद पाये परत नित्य पूजावात्ती विनातुर भया २ इस मूर्तीका नित्य पूजन कोन बाह्मण-करेगा इस है हु के ित्रयेगीरह ख अन्योक पासजायक सूर्यकी पूजा करने के वास्ते पार्यना करना भया २ तब अधिन कहा कि मय म दिरका पूजाका मित्र इ करता न है जो लोभ से नोकरी दावेर देवपूजा करेगा पूजादान होने तो वो देवलक बाह्मण होना है बहा धर्म से फाए होना है तब सांव दूसरे बाह्मण कि माहि होने के वास्ते सूर्यका आराधन क्या प्र

तद सूर्य प्रमन्न दोषके कहते हैं है सार इसजा दीपमे मेग्यूजनका अधिकारी नहि हैं ५ जा पृजाकरते हैं वे शाक दीपमें बारवर्ण रहते हैं। मैसे इसदीपमें बाह्मण स विवेद्य यह ऐसे बारवण है वैसे मग १ मगस १ मानस १ मदग १ ऐसे चारवर्ण हैं ६ उसमें पहिलावर्णमग अन्यग बेदशारपमें पारगत अलाता कुल युक्त हैं ७ और मेग्र प्रजामें तसर परम सक्त है उनकु लायके स्थापन कर ऐसा सूर्यका बचन सुनते माब गठउके अपर बेठके जल दीसे ७ शाक दीप मेसे अवारा कुलोमें उसन्य भूप

अय गारुद्दीपिमगमीजक माध्यणोसित्सारमाह्यकच मिष्यपुराणे १३३ तमे मूप्याये एकण्युमोऽ तितन्सीसानी जायवतीस्रत ॥ सूर्य स्यचमहामकं मुसाद्मचकारह्॥१॥तस्मिन्स्र्यमितिष्टाचक्रतासावपुरस्भां॥ततिकातापरोजातीनित्यपूजनहेतव॥ २ ॥प्यत्याचैनित्यमेव वास्यां क करियति ॥साबोगीरमुखगतामार्थयामासपूजने॥३॥नेपासाद्मगृत्द्वामित्युवाचत्रत्विसत्तमः ॥सोबोबान्यणतन्यर्थसूर्यमादा-धयत्तदा ॥ ४ ॥ततः भननोष्मगरान् साषुमाइ दिवाकरः ॥ ॥ सूर्यठनाच ॥ ॥ मण्डिने स्मिन् ही पेतु हा पिकारीन को हिते ॥ ५ ॥ बा कही पेते व स्तिवर्णाञ्चत्वारएवन्य ॥मगञ्चमगेसन्धेवमानसोमदगस्तवा ॥ ६॥तना चवर्णीहरपव्यगो वेदवेदाँगपारगः ॥व्यष्टादेशकुर्छेर्युक्तः मगानामदि जोत्तमः ॥ २ ॥ममार्चेनरतोनित्पतमानाप्यनिवंशयः ॥साषोस्ययवन्युत्वाचारुत्यगरुष्ठः द्वतः॥ २ ॥बाफि दीपात्समानाय्यचाषादशकुरुोद्धवा न् ॥ कुमारान् स्थापवामासन्बद्धभागानरीतदे ॥ ९ ॥ रम्येमित्रवनेसावपुरेप्रजनकर्मणी ॥ तेतुँनित्पप्रजयतिस्र्यंप्रक्तिपुर सराः ॥ १० ॥ तन्मध्ये म् दगा्न्यारीमगाञ्चदशसरम्यकाः ॥ ततः सायोभोजकन्याः समानाय्यमपत्नतः ॥११ ॥मगारस्यदशाविमेश्योदत्तवान्विधिपूर्वक॥ ततोनाता <del>अवधिकारतेत्वभोजकसङ्गका</del> ॥१२॥बाह्मणेनसमानाश्वकापीसाध्यमधारका ॥विपर्यस्तवेदपावानुमगास्तेपरिकार्तिता ॥१३॥भोजने ुपीनिन सर्वेक्निप्वत्हूर्चभारका ॥ वर्षाचाच्यपेचत्यमाहकविभारका ॥ १४ ॥ व्याद्धतीपूर्वकसूर्यगरयत्रीजपत्यरा ॥ अभिहोत्ररता स

वैमयसस्कार पूर्वक ॥ १५ ॥ ॥ हुने छोकरोढ़ लागके नम्भागानरीके तटकपर १ मित्र ननम रमणीक साव प्रस्मे सूर्य प्रजनके पास्ते मदिरमे स्थापन कियेपीछे ने सब नित्य परम मकिसे सूर्यकी प्रजाकरतेभ्य १ ओ अगारहकुतक बालक आयं एसम आठ कुल मदग्वणीके कहते मृद्र वर्णीके थे और दश्च कुलके वालक मगवणीके क हते बाह्मण वर्णके में तब साबने धूर्य प्रमन्दे वालीपवारह कुत्तक स्थापन करके पीछे भोजकुलकी कत्यानायक ११ मणके दशकुल बालकोषु विधिसे विवाह क्रवाया कत्या

दान दिपा उनोसेजोपुनभपे भोजक बाह्मणनाममेरित्याल मये १२ बाह्मणका जो धर्म उसके ममान है क्यास का क्लायाहुवा अव्यसे पोळालपेक चुकी सरीरवा महोपवी त रास्य

भगुल १३२ का उत्तम अं १२० कामध्यमका अं १०० काक नेष्टइसके कमीनहिऐसा जिसकानाम अव्यंग उसका धारणआववे बरस कराते है और वेदका विपर्यास उखटपु लटपाठ करनेसे मगनाम मिस्समयाहे १३ भोजनिक बखत मीन रखते है अपी सरीखे सब दाडी रखते है वचीजो सूर्य उसके अर्च कहते अर्चन करनेसे वचीची कहे जाते है आउवे वरसकु अमाहक धारणकरते हैं अमाहक प उतागसार यहनाव अन्यगके है यह अन्यगसर्व त्देमय देवमय लोकमयहे यह अन्यगसर्वकाल धारण करते हैं-फक्त मेंटनके समय और स्त्तकमें अन्यग धारणका निषेध है १४ यह ब्राह्मण तीन न्याहति इर्वक सूर्य गायत्री जपमे ततर रहते हैं यज्ञयाग अ मिहीत्र करते हैं मंत्रसे अ

संवायः॥इतिसंक्षेपतः मोक्तं वाकदि प्यवृत्तकं॥१७॥ इतिश्री आ० वाकदी पिभोज्क ब्राह्मणे स ने वर्णनेनाम मकरणे ४५ स् माप्ता पंचगोडमध्ये उल्लोहे चेल दिसं भद्यः॥ अदित क्रिक्रें क्या ४२६४ ९ भिमेत्रण करके मा

पान करते हैं १५ जेरे सोत्रामणीमें ब्राह्मण यहण करते हे वेसे वे मगशाक देशिब्राह्मण मद्यान करतेहे अब आव कुछ के जो ये उने कु शको कि कन्या दिये उन ने के वंशमें सब श्रद्रवर्ण भये १६ ओ वी सब सूर्य भक्त भये परतु मदग है ऐसा सक्षेपमे शाक द्वी पे ब्राह्मणोका वृत्तान कहा १७ दिने शाक द्वीपि भीजक ब्राह्म ण सित्ती पकरण ४५

अर अन् दला भारेला ब्राह्मणोक्ति कहते हैं स्कद्रक्ति है है रुद्र जो ययागतुल्य अनादि पुरमय सनाहे उसे का माहात्स्य कहो १ रुद्र कहते एक बखत

अथअना देइ खासिबाह्मणानाहुत तेसारमाह उक्तंच स्कांदे उत्तर खंडे अना देइर माहात्म्ये स्कंदउवाच तेथराजसमं ह्वेत्रंच दना दे उरंह त ।।अतस्तरप्रभावो नेवद वस्तरत प्रभो ॥१ ॥ श्रोरुद्रउवाच ॥ ॥एकदा त्रेड्रंजेटुं शिव सर्व र्ष्ट्रसाधनः ॥ अष्टादश् सहस्ता णे ब्रह्मणान् ब्रह्मवा देनः ॥ २॥ ॥ त्रिप्ररासुरकु जितने के वास्ते शिवने अवराहजार बाह्मपादि ब्राह्मणोकु २

अनादि पुग्ने गानिकरनेके अपंतरण कर्मनय शिवनेष्काकिये तत्रवे मन् बाक्षण कहते हैं १ है शिन बम्पम निषमधर्मन स्वतंषाले हैं नाने विषमधापन कर्म तह शिनने बाक्षणों के मतोषाय सिनक्ष पारणकरक र सकतः वरनामम मिनिष्ठत भये जिनके आराधनस शिक्षक मुक्ति मासनाइ ५ और व्यवस्वतीर्थ स्थापन दिये अं विका मना स्थापन किया ६ पीछेनो बाह्मणों सेपुण्याह्वान करनायक आशिवाद ले के गयानो स्कवाण से विष्ठरासुरक दन्य किया ७ स्कद् पूछते हैं अनादि सुरमे उपादिक गणा कोनलाया साकहों ठव कहते हैं पूर्व नेतापुगमे रामचक को सं पायमं ० सकुछ पनण कु सारके पीछे पुष्पक विनानमें सीता उद्याण हनुयनादि

सिन्मिने वहे इपसिरामकी पूजा किये १ राम कहते हैं हे समिशु इके धातक एक बत करनेका सकत्य वियाधा की बाद्या मूलगया पहारमरण स्यावास्तेवो बत मरेकु करना है। सो कहा करना वेस्थान बताव अगान्ति कहत है हे राम यह इड कार प्यदेश है १९ पत्ते धातमे मेरापह आध्यम है १२ पहास अनादिश्वर एकसो वीस कोस दूर है और अना दिश्वर से आपिक अयोध्यानगरी पूर्व दिशामेदो साचाठीस कोस है १२ रा अनादिश्वरमेतुमजार पूर्व बद्धाने निर्माण किया है शिवने बाह्मणस्थापन किये है १२ परतु इस दरवत व

ब्राह्मण अनादि पुर्कु छोडके गगातट ऊपर चलेगटे है उनोकु बुलायदे पृजाकरोकालकी विषम तासे त्यान ताग कियाहे १५ ब्राह्मणोका स्थापनकरके तीथों हे स्नानकरके पायित्र होयके अयोध्याम पद्यापिक करवा ग१६ ऐसा अगन्तिका वचन सुनके रामचंद्र अनादि पुरमे आयके सकले चर महादेवकु १७ अं र सब तीर्योकु देखके आनदीत होयके इतुमानकु कहनेलगे हे हनुमान ब्राह्मणोकु जल दिलाय १८ यह गम बचन सुनते हतुमान जान्ह्यी गगाके तट ऊपर् जायके ब्रह्मनिस्न सुनिनको नमस्कारकरके हनुमान कहते है १९ हे ऋपी चरहा गमचद्र तीर्ययात्रा करनेकेवासो अनादि एरमें आयहे उनीन मेरेकु नुमेरे सन्हर्य मेजे है सामय आपके नजीक आयाहु २० वास्ते आप बाहा चलो

हुर ना दें ॥ यू जैता पूर्णि मायां सातत्र स्नान विहु त्तिद ॥ २९ ॥ क्षणमरमें मय ले चलता हु ब्राह्मण कहते हैं हम मागी गण कु छोड़ के तुमेरे साय किव आने जन हि १९ और नपकरने से देह दग्ध भये हैं दब्र कंड्र से द्र पित भयं है हनुमान कहते हैं हे महाराज गमकी आज्ञार मय भागी रथी लाहु गा २२ आप के शारी र हु रव होने के वाले उसका सदेव उपण जल कर गाइतने ऊपर व आपने शोयों मेरा प्राणत्याग कर गा २३ ऐसा हनुमानका निश्चय देखक तथा स्तु कहके बचन कहते हैं हे हन् मान तेराक्चन माने परंतु इतने दूर जा नेकी हमेरी शासि निहिं है २४ हनुमानने त्ररियों का बचन सुन के बड़ा मचंड विस्तीणीरूप धारण करके शासि के अपर बाज्यणों कु विश्वयके क्षण भर में सामे पास आर २५ राम कु नम स्कारकर के बाह्मणों कु पृथ्व उपर विश्वयके गण लाने का हत्तात कह्या २६ पी छोरामने ब्राह्मणों के मह पर्क पूजा करके २० वाण पृथ्व में मारे वाहा में उपयोद की गणा त्रकट भइ द्या

कामाप गम गण भपा भर चैत्र सुकू नतुद्शी के दिन मकर भद् और पीणिमा के दिन प्रताबिये वासे बोना दिन बहारनान करने से तका ल सुक्ति मान करती है १९ अब सपने जो सा सम्भद्ग स्यवेसद दहु कहू से दूषित हथे परमुख्यादिक गण में स्थान करने से स्थ्य असे म्ययम्य प्रवेस के पिछत्त प्रवेस के स्थान स्थान करने लगे १० पीछत्त प्रवेस स्थान स्थान करने स्थान स्थान करने स्थान स्थान करने स्थान स्थान करने स्थान स्थान स्थान स्थान करने स्थान स्थान

आहृतारमन्द्रेणद्रवृद्धवृथिता ॥उणोव म्याङ्कत्साना विषार्थे नन्तुर्नेशु ॥३०॥रामभद्रोषितान् वेसकलेश्वरस्ति ची।। अ हाद्देशसङ्क्षाणाशुन्दद्विद्द्रागोनिणां॥३९॥पगोपादोवकरम सीतारुक्ष्मणसपुतः॥उद्योवकीकुडसर्गकुड क्रत्वाविषानतः ॥३२ ॥अनुहोद्देविदिमेम्नित्ते शिष्टस्मते ॥एकाद्द्रादिनान्येवदीक्षित्तोरस्नत्त्वन ॥३६॥पद्मातेद्र्यान्त्वेमतीर्थानास्वरस्त पिणा॥ क ताक्षणोकोयद्वातेद्वितेश्योऽद्द्रनद्विणः॥३६॥भागोरप्यासमानीतस्तान्द्विनाना हरापव ॥सर्वभवतीनलिमा समुष्ठाः कामवन् जित् ॥३५॥पात्रेदानमकर्तव्यनापान्तेषुकदाचन॥पानीभूतेषुष्ठ्यास्वतस्माद्दानानिद्ध्यवृ॥३६॥अनुम्वकृतुमाविभामतियत्वतु मेद्द्रपित्॥॥विभाक्षतुः॥॥मतिमहनतेरामकरियामःकयचन॥३०॥सीताहितोईतानेकेलकापुरानवासिन ॥॥रामप्रवाचः॥।औा नतापिनजानितमहदेतत्वतुद्दतः॥३८॥॥विभाष्टतुः॥ धनासासिवित्येष्यर विक्रकानिसुष्यस्त्रमः सत्वविद्वपणानि॥वस्त्विनारामत पौसिनित्यवानाद्द्यतेविरता स्मस्वे॥३१॥॥भौरामप्रवाचः॥॥श्वतिस्वृतिगत्तपर्ममोहादुद्वप्रयतिय॥मवतःसुम्ववाद्यस्तिदेद्वीना-भविष्यथा॥४०॥अद्यमस्वतिकर्माणित्रीण्येवसवतासिद्धाः॥अधीतिर्यजनवानभविष्यतिनसञ्च ॥४०॥विषावेदव्रतिहिना केवस् वे इपवस्तयः॥विकेतस्वातानीश्वमहित्रस्तान्ता ॥४२॥॥

त्रपत्तयः ॥ निर्मेश बहुवातारी अवसुद्धिनायका ॥ ४२॥॥ के २४ वरण दिये हुने अवस्य इनार माह्मणोकु कहत है हे मत्या चरहो तुमसबनिसी भी हो और सती पी हो को बनात है १८ वर्ष का कि सामकु वान वेना अपन कुकान वान की नमान स्वाह के उपनिवाह मेरे उमर अ नुभवको और मेच वान के वासण कहत है है यम इममति यह सामकि कि सिवा के निमित्त तुमने अने करास समारे सम कहत है क्या वडा आधार है यह बाह्मणव निम्न तुमने अने करास समारे सम कहत है क्या वडा आधार है यह बाह्मणव निम्न तुमने अने करास समारे समार इन स्वाह के स्वाहण कहते है है यम दस समारे वनक करें वासण करते है जो तुम श्राम स्वाहण करते हैं है यम दस समारे वनक करें वासण करते हैं जो तुम श्राम स्वाहण करते हैं है यम दस समारे वनक करें वासण करते हैं जो तुम श्राम स्वाहण करते हैं के यम दस समारे वनक करें वासण करते हैं जो तुम श्राम स्वाहण करते हैं के यम दस समारे वनक कर है के समार समारे के समार करते हैं जो तुम श्राम स्वाहण करते हैं के समार समारे के समारे के

तिमेकहे हुवे धर्म छं छोडते ही और सुष्कवाद करते ही वेदाध्ययन हीन हुं वेरे ४० और आजरे तुमेरे तीन कर्म रहेगे अध्ययन करना दान करना इसमें संशयन हिं ४१विद्या विद्वत ब्रह्म वर्षी स्मासे हीन इवह वेदेयव्यापार वृत्ती से चलोंगे निर्देर होरे दान बहोत देवोगे और तुम ब्राह्मणोरे नायक होवेरे ४२ तुम बिवाह में स्त्रीका प्रति यह करना जो तुमेरा सन्मान करेगा ४३ उने ने मेरी पूजा किये सरी खामा चूंगा ऐसा कह के विश्वकृमी छ हु छायके अना दि सर्कु ४४ सर्वसंपत्ति हुक्त करके लाखघर बनवाय के ब्राह्म ए कु बाह्म विवाह में सह यह सह यह सह वर्ष मान स्वाप एक भाग स्त्री हीन था ४६

प्रतिग्रहऋ अत्यो भव द्विरिसं रहे पूज येषं तेरेहुण नर नीत नर चीत न्। ४३॥ नितंर न्मानद ने नते ची छेषं ते मारि-ति॥ इहुत्का वेस्कमीणमाहूय ना देपने ने॥ ५४॥ स्रोरामः कार्यामाससर्वस्प ने संह तं। त्रह्म हम्पेह तं क्रत्व वास वेतव ए वाडव न्। ४५ ॥मनसादत्तवान् वित्यदक्षय् प्रचलति ॥अष्ट दुव सहस्तेष्ठ भागद्दरम्गरे।। ४६ ॥सागरे भागरे के च दुष्ट्र रामस्त द उकरी-त्।। नागकन्यायाच् रेलारोमचंद्रः प्रतापवान्।। ४७॥ द्वादर्भे वसहस्रा विक्रह्मे प्रयः पदन्य न्।। तानागळन्य जानक्यामा ह्यले निर्द्धाः तांना ४८। अद्या एतासांत दिनहंत्णी भारतंत्र स्थितं ॥वाणामक दक्ते वर्त्ने गत्याद्ध टेल्या देन ॥४९॥ ददी नवस् हस्या णियामाणां-सघवस्तदा ॥ हादशैट्दगे न्या पो ह्यवटेको जीता निका। ५०॥विषु सहस्वरूपो रेकिनो में तमकूट्रावारः। उद्य नागालुको गस्टो गार्टः सा ख्य र न रूथा। ५१ ॥ कण्डीडयट छर: रंख्य गेत्राणां द्वादरें व है। व देने नायक: संडे टेख्याता: रू रू कर्म दि: ॥ ५२ ॥ इह ए-है विधादक हुन्ने भूद्राहवः रूप। दिजान् विवेनमरहरू व त्य उपोध्य जगाम हु ॥ ५३ ॥ ॥ रुकंदउव च ॥ ॥ र मसंस्था पेता विमाय दि म्हपराब्हुरवाः ॥ हुनः संपू जिताः कर पृष्टिच्यां मधित नक्ष ॥ ५४ ॥ । अक्रिद्रउट चा। ॥वारिताप्टेम हाह्रे हेयदारं टर्णो नृपः ॥कन्यां सहें इह ताँ ने तपन स्टम्ह त्मनः॥ ५५॥॥ पीछेरामने नागकन्या छायके ४७ बाराहजार ब्राह्मण कु दिये पीछे सीताने वे नागकन्या वे कु मनुष्य रूपियाः

४० आजतग् नागकन्याका चिन्हहें कपाल में जोवेणी है वाहा वाणा कर के चिन्ह दिख पडता है ४९ णे छे रामने वे बाह्मण कुनवसो गावदिये और बारा गोत्र अवटक सहित देये ५० बारा गे त्र के नाम के से प्रेस्य ३ गें तम ४ पराशार ५ उद्याना ६ गालव ७ अगत्त्य ८ गार्ग्य ९ सारच्यायन १० कण्व ११ वच्छर १२॥ ५१॥ ऐसे यह बारा गोत्र है ॥ और रव शि नायक यह दें ने अवटक है अपने अपने कमेरे भटे है ५२ अबरामचद्र ब्रह्मराह्य से जाहा हु का मटे वाहा के बाह्मणे हु और शिवह नमस्कार करके अयोध्यान

प्पंउसंबरवतिषाहिकसासीमे अनादिपुरके अञाराहजार माह्मणो कु बुलायके वरणिकिया ५६ उसबरवत बारागो निकसस्या भइ न अञाराहजार माह्मण -५७ उसवरवत राजवण धारणकरनेवाले मिति महरहित इचे छनोक्ष राजाने एकसो सोला १६ गामदिये ५० और सबरणे न्वर महादेवका स्थापन किया छ तदैवान्साक्षिणश्वकेआनीयानादिपत्तनात्।। ततोषरणकालेन्दराह्मासवरणेनन्द्र॥५६ ॥तत्रद्वादशगोत्राणिदिजानागणनास्ता ॥अष्टादशसङ्ख्याक्तेर्यापिताद्विजसत्त्वमाः॥५७ ॥राजवेषधरा सर्वेषतिमहविवर्जिता ॥यामाणान्वशततेषय पदत्तपोठशापिक॥ प्रवातित्रसस्यापित्रिगनास्नासंबरुणेश्वरं॥विश्वेदाात्स्वेतीयत्र्वविषद्वेदिकाकृता।। ५०॥ विषपान् सुञ्चलेदिस्यान् तपत्यासहम् पिपः ॥ दृष्टुाषुत्रसुरवृपश्चात्सलगाम् निजपद्य। ६०॥गोबहुर्यु स्थतत्त्रवारिताप्येषुरोत्तमे ॥पश्चान्तद्रशरोत्रायेगतास्तरनाद्वपत्त-ने ॥ ६१ ॥ नीयका सर्वकार्येषु विश्वानो विषयेषु च ॥ निवार ये वियेतेषा व्रिद्राण्। दरिद्रत्ते ॥ ६२ ॥ बारिणस्तुन वैमोक्तावारिताप्येस्यिता अपि॥ एवनानाक्षिधानू। स्त्रीकालेक्षिन्नेवकर्मणा ॥ ६३ ॥ वसत्य चापि विख्यातेऽनावलेडनादिपत्तने ॥ धर्मिष्टास्यवदाना स्वाताराह्यप् रियहर्।। ५४ ॥ एतत्तर्वमयास्यातग्रद्धेश्चे भूवतास्रुतं ॥ धनादिस्रसम्बातस्य द्विजानास्यापनतया ॥ ६५॥ । द्वित्रीत्रा • धनादिस्रवासिः माह्मणोसितिमकरण ४६ पचद्रविडमर्थ्यगुर्जरसम्बदायः आदित श्लोकसरन्या ४३२९ अकेप्र्रिमणमे विवाह वेदी स्थापनिकयौ ५९ तापी सहकर्तमा

फुजातेमपे ५२ स्कर्पू उतेहै ह शिव रामनेजोबाह्मणस्थापनाक्ष्पे वेमतिग्रह्से पराड्युखभये पीछे पृथ्वीमेशुन "यूजन किनोने किये और विस्थात फेसे मये सो कहो ५४ हदकहते है हे स्कर्मुरत शहेरके नजीकतीनको सके छमर बरियाय करके गाय है जिसकु संस्कृत मेगारिताप्य से भकहते है वाहा सक्रणराजाने तापी के साथ विवाह किया

नसवरणराजा सब देशका दिन्यसुरम मक्तमान करके सुत्र मयाउसकासुस्तदे रबके अपनानिजस्वरूपमे मिलगया ६०सवरणराजाने मोबारागोत्रके बाह्मण बुढायेउसमे सबायगोनक बाह्मणबरियरणावमेरहें औरदशगोमनोषेबेअनाविष्ठरमेगये६। सर्वकार्यमेजीकु शळउन्कु नायक कहते हे जो विपयमेपरिपूर्ण कुश्राठवेवशिष्ठायेउनोमेजोदरिद्रभये उनोकि दरिद्रतादूरकिये६१वेबारिणप्रयेवरियावमेरहरें है ऐसेपित्पित्रमान्ध्रमेसेनानात्रकारके नामभ्रये ६३ वेसम् अनाविष्ठरमे उर्फाञ्चावमे अध्यापिरहते हैं सब बाह्मण ध पिछक्तनवातुर्भदानश्रस्तात्रमहण्याज्ञुस्त्रमयेअवशादकारेद्रकार्यकार्यकार्यकार्यकार वाह्मणीनेनागकन्यावोक्त्यपिरक् गवदियेबायकेचमीदारकियेवेअधापिअनायकेजमीदारदेशाद्रकहे नातेहेंबेनीचकमेसेरहितईऔर जोछहजार बाह्मणीनेनागकन्याविनहिद्धयेऔरखनमविग्रहनहित्याज्यमे समने कर्मन्नरताकावेदहीनताकाशापिद्यावे भादेले अनावलाबाह्यणक हे जातं है लेकिक में कर्मन्नप्राच्छे जीकाने भादेला अपनं श्राह्य भयाहे वे लोक अधापि किपिकमें कन्या का विकय क्येते वे बाक शदे तेनिह भादे लादे वाद् अनावलाकाभाजनव्यवहार एकपंक्ति मेहोता है कन्याव्यवहार में मादेलेकिकन्याले ते हैं देतेनिह है ६४ हे स्कंद सुजने जे पूछा सो अनादि सुरका म हास्यकर्या २५ इति बाह्यणोसर्ना में अनावलाभादेला देशा द बाह्यणोसिन प्रकरणं ४६ संपूर्ण ६५ ६५ हे स्कंद सुजने जे पूछा सो अनादि सुरका म हास्यकर्या २५ इति बाह्यणोसर्ना में अनावलाभादेला देशा द बाह्यणोसिन प्रकरणं ४६ संपूर्ण ६५ ६५ हे स्कंद सुजने जे पूछा सो अनादि सुरका म

## उरमन इच्च ह णे सन्दे म्बरण ४७

अब सनाइच त्राह्मणो कि उसनि कहते है इने किउसत्ति मनाड्य महितामे है उसकु देखके यथ विस्तार भय के छेथे कि चित्तपाराद्यद्दा कहता हु ज्ञा ते का झान होने के अर्थ १ पूर्वी दादारणी तामचंद्र पिताकि आज्ञासे दडकारण्यमे जाय के चौदा वरस निवास किया २ पीछे सद्यासमे कुछ सहवर्तमान सवण कु मारके सी ता छह्मण सहवर्तमान अयोध्यामे आये ३ पीछे ब्रह्म रास से व भसे मृद्दि होने के वास्ते यज्ञकिया उसय ज्ञमे आदिगींड बाह्मणों कुनु छाये ४ और उने का वरण किया जिसय ज्ञमे समने दिसे णा वो होत देथे ऐसा यज्ञ आदिगींड बाह्मणों ने ने धरे करवा

अधिसनाड्यब्राह्मणे स् तिसारमाह हरेछणाः सनाड्यसं हितांद्द्वातत्रतं कं चिदेव है। कथान कमयस्या मे ज्ञा तिज्ञानमदायक ॥१। शामोदाश रिय अभान् पितुर्वचन रवाद् ॥ दंडकारण्यकगता निवास मकगेतु रा॥२॥ तते उजे रावणहत्वासपुत्र बळवाहनं ॥ अयं ध्यामगमच्छीमान् स् ता ळस्मणसंहतः॥३॥ ततो बह्मवशाद्धीतोरामः यज्ञचकारहा। तत्रयद्दे समझताच्या देगे दा हे जोत्तमाः ॥४॥ तेषांचवरणंचक्रेयद्दे विद्यलदिस् णो। विभाव्यकारपामास् पंज्ञे विध्यविधानतः ॥ ५॥ यज्ञांतेषश्चयंकताद स् णो दातु हु चतः सत्त्रयद्दे साद्देसस् दातं येत्रस् तिजे उभवन् ॥ ६॥ तेष्योरामोसाद्दे स् त्यामान् ददे स् द्या। तेषामनाम्माद्द चा पेश विद्यलात कार्त्यः ॥ ७॥ सनाउचः इत्य अधि स् प्साद्य कि लियाः ॥ सन् पाचेनतपोयादः तेनाड्य वेद्यले त्रमाः ॥ ०॥ त्रमाद्या ह्या पिश विद्यलातात्वा दिगे उनसं श्रवः ॥ तेषा भोजनस् वेधो जन्या सं वेधन्या स् वेधने स् विद्यले स्वात्रस्यात्रस् स् विद्यले स्वत्रस् विद्यले स् विद्यले स्वात्रस् विद्यले स् विद्यले स्वत्रस्यात्रस् विद्यले स्वात्रस्य स्वत्यस्य स्वात्रस्य स्वात्रस्य स्वात्रस्य स्वात्रस्य स्वात्रस्य स्व

प्या प्राप्ता ।।
या प्राज्ञसमाप्तिकु अवभ्य स्नान करके प्रयमवरण किये हुवे बाह्मणोकु दान देनेकु तयार भये उस यज्ञमे जिने ने द सेणा न हि हिये वे आदि गीउ रहें अंर जिनोनवरण ियावे साडे सात सो बाह्मण हथे ६ उनोकु रामने साडे सात सो गाव हर्षर देने प्रये वे बामके नामसे अधा पे अवटंकर उर्फ ) अल्ल करके पृथ्विमे हिंद रयान जिनिक कीर्ति है ७ ऐसेयह सनाड्य बाह्मण तपसे जिनका पापहर हो गयाहै सन् शब्द से तपका नाम है उसकर के जो आक्य ट उनकु सनाक्य कहना परंतु ने सब आदि गीड है उ

आदिगीदेषु भवतिस्वरीच विशेषत ॥ १०॥ इति मा ० सनाडवोलिनवर्णन प्रक्ष ४ क पूच गीड मध्ये गीड समदाय । आदित स्वो ० ४२३९

अधानेक विध्वाह्मणीत्मि प्रकरण् ४८ अब जाबाकीरहे बाबाह्मणीका निर्णयकहत् हे पहिले औछिये बाह्मण कहत् है उत्कल नामक राजाने अपने राज्यमेश्वरी मागेरिय गणातटक रहनेबाले आह्मण्डं हुलाय के १४६पोत्तम जगनाय स्त्रीये पहाकरबाणा पीछे मो महाहाही येशके मय यहासमाह ध्यायहूव ओबाह्मण उनोका अपने ह्यानस स्थापून हिया रूवे बाह्मण उक्कर मान्यण नामसे विरयात भये भीजगन्नायके प्रश्नक है वेदलास्त्रम निष्ठण है मत्य मलाण करते हैं २॥ ॥ अव मैथिल बाह्मणका निर्णय कहते हैं भी काशि संजसे देशास्य

अपानिशासना के पाचि द्वास्मणाना सुलिति गिषमा ६ हिर छुन्छ। तथारी उत्कल बाह्मण निर्णय । उत्कलेन नृपेद्रैण प्रस्पिवयय दिनान् ॥ गुणात् स्विता न्कानिदानाय्य विष्यत्वे॥ १॥ पुरुषोत्तमञ्जय विजयदी शस्य ने वन् ॥ यसाति स्थाप गुमासस्वना म्नाता न् दिजान्तमान् ॥ २ ॥ नेदिजां मात्क लाजाना जगुराशस्यसेवकुा भवेदवेदागृशास्त्रकार मत्त्यभक्षाणांत्यरा ॥ २॥ ॥व्ययमेथिलुनिर्णय ॥ ॥काशीसकाशादीशा न्यस्यवेशसमीपतः ॥ देशीजनकनामार्यतनराजानिमिः पुरा ॥ १ ॥स्वीयगुरु पति शास्यमन्यकर्मणिस्स्यितः॥ निमिध्यरु मिद्रशास्यास्याः नाच्यान्यान् दिजोत्तमान् ॥ ५ ४ यज्ञन्वकारभर्मात्मामोस्कर्मणितसरः ॥ततोग्रुरुः समायात् स्तयोन्दिमहानस्रत्॥ ६ ॥ तप्रदेहीपेतत्। स्वद्भाः वाष्ट्रान्मियः किलायियानरुण्योनीयदुर्वपयामितामहः॥ ७ ॥जातोनिमिस्तत्वेव दिजे सर्जायतः सुनः॥ तदानिमिद्दिजा

न्माइमासून्मेवेहवधन॥ ७॥ ॥ कोणमे अगदेशके समीप न्यसदेश है सहाकायजा निमि उनोने प्रविध अपने उठ पसिस इक्कु प्राक्त सक्ते यथे जानके देह राणभग्रह इसका भगेसा नहिजानके इसरेबाह्मणोक् दुस्यके जमेरताशिखानियज्ञानेयज्ञकियापीछे नशिक आयु और एक विनायस किया देखक शापदिया किहर नक ऐसा पंडियमानि है बास्ते वेसदेह पतन हा निमिकहते हैं हं एक तुमने देह पर्मनिबिचारते छो मके लिये शापित्यावास्ते छमे गर्दह वि पतन हा ध्रएसादीनोका देह पतन मणा भी छे

मसिष्ट मुनी मित्रावरुणों के बीर्यरे फर्वशिरे उसन्तभये ७ निमिराजाकु ब्राह्मणोंने देवमार्थनासे सजीवन किये तबनिमिराजाकहताहै मेरेकु देह बंधन नहिं चाहिये ० आगे मे रेवंशमें उसन्म हें नेगा वो हुमेरापालन करेगा ऐसा कहके निमिदे हत्यांग करके विष्य लोक कुंगया ९ पीछे ब्राह्मणोने योगसत्तासे निमिका देह मयन किया उसमेस दिव्य देहधारी पुरुष उसन्त मया १० जन्महुवावास्ते जनक नाम्भया विदेहरे उसन्त भया वास्ते वेदेह नाम्भया और मधनकरने सेपेदाभया वास्ते में यलनामभया जिनोने अप-ने नामसे मियला नगरी निर्माण किये १९ पीछे निर्मिक यज्ञमे जितने बाह्मण आये हुई उनीक अपने देशमें यामदान करके स्थापित किये वे सब मेथिल बाह्मण भरे १२या ममवंशोद्भ वश्चारेह कान् संपाल रेष्यति॥इसुत्कातान् निमः पृष्ट हेहंत ल हरंग्यो॥९॥ न्य देजऋ नेमेर्दिहंम हं योगम गितः ॥तस्माइ इत्पे जातः दियदेह धरः प्रभुः॥१०॥ जन्मन जूनकः संभू हे देह स्ह नेदेह जः ॥मथन ने रेख झैन् मेर लोरेन किनता॥ ११॥में रे लाबाह्मणा ऋवतेन संस्था देताह वा॥ तेसदेभें रे लजातानि मेर इसमागताः। १२॥ य इव ल्क्ये पासक ऋशे त्कवेद उपावकाः ॥इत्रेक्षे पेतः प्रेक्तींमेथिलानं द्रिणेटः ॥१३॥ ॥ अयम ध्यवन्ति सियन हा परिणीयः॥ ॥ माध्यंजनः बाह्य णाक तपतितृदसंभवाः। रामसंस्था दतास्तेवे अत्रम्मति केयापरः।।१४। दर्जराचार निरताः देशस्थाचार से केताः ॥ तापी तट-ास्थित्रग्राम्बारिनसी द्वेजातयः॥१५॥कालांतरेणतेसर्वेव्यापारसक्तमानसाः॥स्वकर्मरहेताजातः खे स्तिसंज्ञाः अवन्दा।१६॥ के दे त्त्वकर्ग ने शाक्ष्म के मेरता परे ॥ आन्वारर हिता : के चित्के दिवाचारपालकः ॥ १७॥ ॥ ७ ए गर वासी ब्राह्मण ने पीटा :॥ ॥ ग यायांस्था ऐता विमाः दिखुनारे देजे नमाः ॥तेरयावा सिने विमाः खुन्द मरधा रेणः॥१५। रोषं क्रपाद् शेने दे पेतृणांह किरीर ता ॥ तेसरे विष्यु चरणसे वा तत्परमानसाः॥ १९ ॥ गयांत्यत्क स्वण मिनेवगच्छं तिकुत्र चित्र । तेष मक्ष्य केन्य न्द्र पूर्विचे न्यथा २०॥॥ ज्ञानक्यमिनी उपासना करने वाले सबस्र क्र यहु है दि है ऐसा संदोपमें मैं चिले का नेप यकहा १३॥॥ अव माध्यंजनां कि सि या हाण का ने प्रिय कहते है माध्यंजन बाह्य प्रतानि के तट अपर देश भये है रामचंद्रने स्थापन कि है है जिस्मार कमी निष्ठ हुई १४ उसके आचार और भाषा व्यव हार उजरानि का महाराष्ट्रका मेल के है की रवहत करके इनों कि बस्ति तापी तटकेन जो क्या में है १५ देस क्या खातर से स्वक के छोड़ के आपार में नियम भये वास्ते सि कि के बाह्य पर

नामर भरवात भरे १६ उसरे कितनेक सकर्म रहते हे कितनेक नीकरी करते है कितने क आचा रक्त छहे कितनेक आचार संपन्न हे १७॥ ॥ अवगया वास्या साणीका

निणयकहते हैं पूर्विजो विष्णुनेगयासुरकुद्वायकेपा छे अपनी चरणसेवाकरने केवासोआ नाह्मण नया सेनमे स्थापन किये वेगयावा सजाह्मण भये वहें मतापी छ न्नमर्थगनेवासे विष्णुके वरदान सेन्नये १०० जिनकी छपा संपित्गण कि मुक्ति बोतो है वेस व एन दिन विष्णुपादका के सेवन में रहते हैं १९ नया सेन कु छोड़ के सण मान्न वि अन्यस्य में जाते निष्ठ उनके अन्नय वेन से गया मान्द्र पुरा होता है। अन्य साथ जिन्न विष्णुपादक ने के अन्य वेन से गया नाह्म करके गया नास्त्र कर्ण करते हैं। ॥ अवका नो नास्त्र का कहते हैं महा वेश से इशान्य को नाम्द्रीया माह्मणात्र नमदात्र वासिन ॥ अन्न वेश स्त्र विभाग नास्त्र कि तरक पर स्वते के स्वयं के स्वयं के स्वयं के स्वयं का स्वयं के स्वयं

नार्मदीयाश्वरूणाश्वन्मदात्दवासिनः ॥अस्तदेशास्र्वभागेतयाचार्यप्रियस्यिते॥२१॥काषीजदेशेषेविमास्त्रेगीढाचारत्स्ररा ॥काषी जिस्त्रास्तिविमा यमचेरावतीनदी॥२१॥मद्भूण्यमदाचास्तिक्रशोजेश्वनिशेविता॥॥सीराष्ट्रसोमपूर्यापेसोमेशस्यसमीपत् ॥२३॥ सोमेचक्रतोपद्ग स्वपापस्यविद्युन्द्ये॥तज्ञयद्गं गृतायच आह्मणोपरमीज्वला ॥२६॥तेष्योसोमपुर्यविद्यास्त्रेग्वरा विद्यापार्यद्वीसुदा॥दिसिणा स्वर्णरत्नाद्यादानानिविविधानिचा॥२५॥सोमनसोमपूर्यापेस्यापितायेदिजोत्तमा ॥वेवेस्येमपुराविमा विद्यापान्यसशय ॥२५॥॥नादिमार्गात्सुरावामार्वतिविवानाव्यसश्वर्णाद्भ ॥विद्यापार्वतिवचनाव्यत्रास्त्रेमपूर्यामद्भामपुर्विविद्यापार्वतेषात्रिमा ॥वारदस्यापिताविमा नारदाया ॥कपिलक्षेत्रज्ञाविमा कपिलक्षेत्रज्ञाविता ॥२०॥ ॥त्राटवेशिवाचामक्रोवेविद्यापान्यक्रापा ॥३०॥ ॥वारदस्यापिताविमा नारदाया वित्रवेश्वरूणा ॥३९॥ ॥वारदश्वर्णायाविमाश्वत्य प्रवित्रवेशियापात्र्यविद्यापान्यविद्यापान्यक्रापा ॥३०॥ ॥वारविद्यापिताविमाव्यापान्यविद्यापान्यव

तितरवासिनः ॥वनदेशस्थिताविमावनीपास्तेनसश्य ॥ ३१ ॥मकारपचकित्यसेवतेते दिजातय ॥तत्रमारिता सर्वेबहुधावैदिकाः कि त् ॥ ३२॥ इति । अनेकविधमाद्याणनिर्णयपतिपादनमकरण ४० सपूर्ण आदित स्त्रोकसस्या ४३०१ णमे २१ कविज देश हे ७ जिले के विद्यास्त्र स्त्रो क्षेत्र स्त्रो क्षेत्र स्त्रो स्वति विद्यास्त्र स्त्रो स्वति विद्यास्त्र स्त्रो स्वति स्त्रो स्त्रो स्त्रो स्त्रो स्त्रो स्त्रो स्त्रो स्त्रो स्त्र स्त्रो स्त्र स्त्रो स्त्रो स्त्रो स्त्रो स्त्र स्त्रो स्त्र स्त्रो स्त्र स्त्रो स्त्र स्त्र स्त्र स्त्रो स्त्रो स्त्र स्त्रो स्त्र स्त्र स्त्रो स्त्र स्त्र स्त्री स्त्र स्त्

केवास्ते यज्ञाक्रिया भीरयज्ञामे उत्तम तेजस्वी ब्राह्मणोका वरण किया २४ पीछ वे ब्राह्मणोकुसपूर्णसीमपुरी रहने केवास्ते दान दिये और रत्नसुवर्णदक्षिणा और दून सरेवि अनेक दान दिये १५ ऐसे सोमजो बद्र उनोने सोमपुरि फहते सामे खर ओति लिंग कि जीनगरि उसमे स्यापन किया वे सोम पुरे बाह्मण मये २६ ॥ औद संमुद्धीमं पार्वतीके कहन्से कम्छना डेम्से यसमार्गमं जो परमिशिवभक्त नित्यवर्शनकु आते हैथे उनोक्तं सोमेन्बरकी जगत् मसिन्द युजा करते के नार्क्त स्थापिताक्रिये ने पतित पतियाणे तप धन बाह्मणान्य पति तपना शिव निर्माट्य भस्तणकरने मया॥ ॥किपछ हो नमे जो बाह्मणरहे ने किपछ बाह्मणभन् चे न्व लावदेशमे जो बाह्मण रहे वे छे द्वासबाह्मण भये॥ ॥ नारदने जो स्थापितिक ये ने नारदीय बाह्मण मये २९॥ ॥ नादो ये बाह्मण भारती बाह्मण नद् वाणे बाह्मण गाम नदसे भरे जानना॥ २०॥ ॥मे नायणे यबाह्मण ता नित्व छ अपर्यस्ति करे हैं और बहुधा याहाई रहते है वंगदेश जो बंगा लादेश वाहा छेर हने वाछे बाह्मण बगाले बाह्मण कहे जाते है २१ यह बाह्मण पंचमकारकार वन करते है तंत्र मार्गमं बंहोत छु इत्तर हो दे २२ द्वेत अकरणे ४० ९ ९

## उर हा है इं इस केद इक्क व वर्णन प्रकरण ४९

अयद्य निषद्भामनास्मणोस तिसारमाह सत्या द्रेरवडे स्कद्ववाच् मयूरनामनेपतिईमागद्कुमारक । अहि सेत्रस्थितान् विभान् चागतान् द्वेज छंग वान्। १॥सहत्रपीत्रसहितान्संपूज्य विधेनान्य । १११ म हारान्यकारासीद्वात्रिशद्भामभेदत । १॥ तत्रतत्र द्वजबरान्स्यापया मास्पन्य है ॥ कदंब कानने त्री णे गीक विवेदसंख्यया ॥ ३॥ रुक्तिमत्यास्तटेसम्यक् द्रययाम्च कारसः ॥ ध्वजपुरं चिसंस्थाप्यरे तायाद क्षिणेत्र । । अजपूरं चितु प्रमान्यकार् विधिनान्त्रपः । अनत् शसम् टेट्दशयामान् नकारस ॥ ५ ॥ तच्छेषं नसमाहूयने नावत्युत्त्रेत्तहे ॥ याम्मे कं नकारासे संस्थाप्य विधिवन्तृपः ॥ ६ ॥ तन्मध्येगजयुर्यान् नृ सिंहअवपितिषितः ॥ प्राच्यां सिद्धोश्वरोयत्रपश्चिमे लवणांबु धि ॥ ७ ॥ उत्तरिको वे लिंगेशोयत्रसीता सिद्धिणो ॥ सरे कुंठग्राम मिटि विख्यातंजगतीतले ॥ ट ॥ तच्छेपि तिपूर्व क्तं नेत्रावर् क्तरेतरे ॥ नवयामंचुकारासीयो त्रिरेक्य पद्क्तवान् ॥ ९ ॥ इत्यं निर्माय नृप ते रयहारान् पृथक् पृथक् ॥ ब्राह्मणेकः प्र-दलाथस्यस्य चेनोपनवत्तदा॥१० ॥ऐतेषुत्रामहरखेषु स्थिलाबाह्मणादुगवा ॥संतेषमावहंन्राइटेदवेदोगपारगाः॥११॥अथकालेनमहता दे सिवमीमहीप ति ॥ किनाकांतमारु क्यजगत्सर्वे विचक्षणः ॥ १२ ॥ राज्यभारममात्येषु विन्यस्यतपरे येयो ॥ चंद्रांगदंखतनयंबालंसंप्रेष्य नारद् ॥ १३ ॥ तदाते बाह्मणाः स र्टेंद्रा त्रेशे द्वामवा रिनः ॥अराजकंखविषयद्षान्यत्रगताः केला १४ ॥अथकालेन केयताप्रीरोचंद्रांगदोड भवत्।। वेचारमञ्रोद्धिरे ब्राह्मणाक्षणताद्दाः ॥१५॥अहिछत्रेसमागत्यप्रार्थयामासतान् हिजान्॥गतामद्विषय नेपाः केमर्थे इनरागताः ॥१६॥इह न्कार् द्विमान् राजा हरचूडांचकारसः॥ तथेव दः हर्ष वा निचकारतृपनंदन. ॥ १७ ॥ कोरेउ रूपामक तुभेवान्चला रेसंख्यकान् ॥ तथाककि टिमध्येत्त्यसभेदान्चकारसः ॥ १८ ॥ तथेव मरणे यामे दित्यसं

भेदनिस्तर्। कानुचीनासुमध्येत्व भेदीद्वीद्वीत्वपार्थिकः ॥ १९ ॥ परिष्ठमा मेथेदसरधास्तद्वकोडीलनामके॥ मागवेतुमामकेतु वेदव केदमहसः ॥ १०॥ मिना माद्र्याममध्येतद्रतार्थिनद्र ॥ निर्मार्गकपाममध्येचकारमः पिसल्यक ॥ २१ ॥ सीमतुर्याममध्येनन भेदानुचकारसः ॥ जिपनल्या विशेषका निराकेद्रा नोत्तर॥२२ ॥पराद्शादेतद्व बतारिश्च मध्यमा ॥ध्याषाकास्यीचित्यानीलावरेकता ॥२३॥क्रेरेसेन्यद्भेवाव्यद्यस्कद्सरेकतं ॥पत्रिमेपीदश मामएकभेदान् किम्बन् ॥ २४ ॥ श्रीपाडिमामसुर्येतुप्रभेदान् पुकारस ॥ तमेपकीं किस्यामे होदीभेदी क्तीसुदा ॥ २५ ॥ कारस्र माममध्ये ही भेदाबाह पार्यिक ॥तर्येक्चोञ्जयेधामेभेदानाइसपोडशा। २६ ॥तद्रपेक्त्तीमार्नेतुभेदान्याइमझपति ॥चीरकोडीधामकेत्वन्यसद्सन्द्रेदमाइस ॥ २७ ॥पामीसुरुपामकेतुइस् भेरवकारसः ॥पुरचामेचयतारिवञ्चमजेनयत्तया॥२०॥हेनाहुपामकेनामपेदय प्रेदमाचरेत् ॥तर्षेवत्रचुकेमामेषहभेदावाहभूशुज् ॥२९ ॥केमिजेकोदमेकवपारिजादितयं तका । शिरिपादिमहामामपनभेदान्चकारसः ॥ २०॥कोडिपाडिमाममध्येभेदस्मन्तिसरम्बद्धः । पूर्वपाडश्रहस्योत्मामेस् भेदविस्तरः ॥ ३१ । सदेहीनाभकर्तम्य स्थि सप्तनिरितिभूनभन्येनपन्तिमेहस्तेषोद्रशैदनुस्थयः॥३२ ॥मामेषुमद्रभेदानिष्ठ्चतनदातद्र्य॥एवंत्यह्रमेदानिकतामतिमतादरः॥३३ ॥दिजान्स्यापितवा न् तत्रशातिको भक्तदा ॥ अथते ब्रह्मण्यः सर्वेवास ब्रह्मरति ।। ३४ ॥ इ.विशत्यामसुर्धात्रस्थाति ते लेभिरेयस ॥ ३९ ॥ ॥ इतिबीबार दार्विशत्यामभेद बोह्मणवर्षननाममकरण ४९ सपूर्ण आदित ऋकिसस्या ४४०५

अय सैकणदेशस्य बाह्मणीयति प्रकरण ५०

अप पातिसा बाह्मण मेदान् सक्षेपेणाइ उक्तन सत्माद्रिखंड शीनकदगन् केरलाचे हुलगचनचासीराधुवासिन गक्षेकणाकरहादाचकस्नायच्यवर्वरा ॥ १॥ इसे ते समदेशात्रकोक्षा-परिकीर्तितः ॥कवाविद्वागुवः योमान् सुक्तिमसास्तवयुपो ॥ २ ॥ तबस्यान विधापाय नित्यकर्मरसोक्षवत् ॥ एतस्मिन्यतरेरान्यनाज्ञग्यरिद्द सिवता ॥३॥ धार्वभार्तु वियोगेन सतार तिस्वितेन चिवप्रपूर्ण र्जिप्य सुसिपसेनपिडिवाः ॥ नवनार्यञ्ज अभिराद्रासम्पर्यत्योगियानमिनीवयम् ४ भगाने भद्वीवियोगेन सत्तर्यक्रितेन चर्णामकस्यास

क्रमापित्यक्तात्ववसुप्तिः॥ ५ ॥ भुष्यतेश्वेनमहतात्वद्र्श्वमध्द्रिमो ॥ रूपोकुरुद्यासिधोन पालयक्तपाकर॥ ६॥ इतितासांवच भुताद्त्तवानभयसुनि ॥ ताभिस्रस

इसमात्त कोडेशशिवसुत्तम्॥ ७ ॥ कीयतामभसवात्तसत्ततिर्वोभविष्यति ॥ गोलकाद्तिनाम्मातेस्यातिपास्यतिनिश्वयत्तव ॥ व्यवैदिकी किपासर्वाधुराणपठननच ॥न तिगसार्गनयोगोसर्वेना मत्रिगोभक ॥ ९ ॥पारशस्कार्गेलकामनचोलुकेत्या ॥कपित्वचित्रधामाणिस ऋविष्यति ॥ १ ॥पचमामजनासुस्मदीपागोसकसंज्ञसाः॥

विमतमतुगन्छंत प्रचरंतुकले युगे॥ ११॥ ॥पातित्यमाममत्त्यन्य् छुक्तिमत्याश्चदिसिणे ॥तना हे बाह्मणा श्रेषा समायातासभार्यका । १२ ॥ १६ हाणांवाहकानाता पित्तास्तेनसंशय ॥ ॥पातित्ययाममस्त्वन्यत्को वे लिंग्शस निधे ॥१३॥तत्रवेद्याह्मणा सिततम् द्रांकितात्र्यवे ॥ कूटसािसपदानेनपित्तास्तेनसंशय ॥१४॥पातित्य याममत्त्रयन्यज्ञकनचास्तरेशुभे॥तत्रविमावेदबाह्यास्तंतुमात्राहिजातयः॥१५॥गायत्रीजपमात्रेणबाह्मणाइतितहितु ॥त्यातालोकेषुसर्वत्रस्ययामाभिधयेवते॥१६॥ कुडालकवप दिक्र पिट्टिना गामियंतथा॥ रामेण ने मीता विप्रा स्थितायामचह खरे ॥१७॥ षट्कर्मरहितायेत्राजं ते भवने चर ॥ यस्या मिराजधार द्वियाममन्यं बहि स्टतं ॥ ॥१०॥ हेलंजी तितदित्याहु सीनायाच्ये नरेतरे॥ कलाम्युन हत्यांच प्रचर तेनराधमा ॥१९॥ गेराषुझाँ ह्मणाः सर्वेस्ट्रियायुक्य यववे ॥ तदामऋतित द्वामेरे छजी ते चद तिहि॥२०॥तत्रस्थितान देनान्सर्यान्पतितान्प्रवदं तिहि॥तेषांदर्शनमार्यणपा तित्यंचाह्यास्य ति॥२१॥चरतिमिदमरे पुंदु कृत्तानांच वृत्तं मिद्ध न हरजन नो सम्यु त्तनरेंद्रसफ्छ कलुरानाशंय न्यूणे तीह लोकेसकद पेजनमध्येसाधन हु कि हेतोः॥ २२॥ बेरलेमं स्थिताविमा जिल्लास्तेमकी तिना ना तीलवेतीलवार्स्य हेगाकोवास्त यीयच ॥ २३ ॥ नैंहर बाह्मणा क्रेय यवरा द्रिहि जास्तया। परस्परं यकुर् ते कत्यारां बंध में बच ॥ २४ ॥ हे गाख्या बाह्मणा क्रेट कन्यकायात्वलाम के ॥ नैहर बाह्मणानां बैन कत्यायुक्तिकेचन॥२५॥कंपांचित्केरतीभाषाकेषांचर्ने तवातया॥कर्नाटकोतयान्येषांभाषायचरतिक चेत्॥२६॥ इति बाव्यतित चामवा से बाह्मणभेदवन र्णनं मकरणं ५० आ देतः न्ह्रोक संख्या ४४३२

# <u>अधिपात्तल ब्राह्मणोस के बक्राणं ५१</u>

अव भैव पांचाल बाह्मण बह्मपांचाल बाह्मणउपपांचाल बाह्मणो के उस निकहरें है उसमें पहेले शिवपांचालका भेदकहरें है शिवपांचाल जो हैवे पंचसुरदी परमे पर

अयथे वपाचा तबाह्मण ब्रह्मणंचात ब्राह्मणंउपपांचात ब्राह्मणोस तिमाह केंगे वे वागमे॥ ब्राह्मणानांचजने व श्वक्का ब्रजायते। पंचन्क्र स्तानाः पंच भिक्मिपि हिजाः॥ १॥ मनुः संहारकतीन मय वे तिकपात कः ॥ तथा विश्व विष्य विश्व व

इं ते भरे १ उनरीव पांचालके पाच नाम कहते है मह मयत्व शाशित्यवेव इत्यहपाच के वपाचाल बाह्मण प्रयांतरने कहे है २ कीव पांचाल के पांचक ने कहते है मह वास्त्रा दिक

देवज्ञ सर्वभूपादिकर्तावैहितकाम्यपाधलोकानापचपाचाला अस्वन्शिववक्त ॥२ अपाचालागचपचानावस्येलसणमुसम् ॥तस्यिन ज्ञान मानणशिलाचार म्लुदेनन् ५ ॥ ऐचर्य मनुद्धपचमयक्षपचेणाव ॥वैहितलापुद्धपंचमाहेष्ठशिल्यिकस्यच ॥ ६ ॥ क्रपनारायणस्यैव दे वृत्तस्यमकीतिता पषद्धपाणियोवेद मुच्यतेसर्विकालया ॥ ० ॥तमोगुणोमनुद्भेवमप्तलगुण स्मृतः ॥ रजोगुणोय लखाच शिल्यिक स्पिगु पालक ॥ ० ॥देवज्ञ सुद्धस्यवस्यवस्यवेदावपायवेद्युच्यतेसर्ववधनात् ॥ ९ ॥ मनुस्कृदक्वणिक्नीलवणीमय स्मृतः ॥ त्याष्ट्रिकारकवणीकाशिक्षोपूच्यतेसर्वभावकात् ॥ १९ ॥ त्याष्ट्रिकारकवणीकाशिक्षोपूच्यतेसर्वभावकात् ॥ १९ ॥ मनो कुडिवज्ञाणवचतुकोण मयस्वच ॥ वर्तुल लाष्ट्रिकचेवषद्कोणशिल्यकस्यवै॥ १२ ॥वेवज्ञस्याष्टकोणतुपचकुंबानितानिवे ॥ एवानिचेव पानेदसर्वदेशाविक्रस्यते॥ १३ ॥ स्वतस्यविधाविक्षस्य वर्त्तानिवेव पानेदसर्वदेशाविक्षस्य वर्त्तानिवेव स्वतिवाचिक्रस्य वर्त्तानिवेव स्वतिवाचिक्रस्य वर्षाच्यते सर्वदेशाच्यते ॥ १४ ॥ सुवर्णद्वाच्यते सर्वतोष्ट्रसर्विक्षस्य वर्षाच्यामात्सके ॥ पचद्वाच्यतेसर्वतोष्ट्रसर्विक्षस्य वर्षाच्यामात्सके ॥ पचद्वाच्यावेदस्य कान्यस्य स्वतिक्षस्य चान्यस्य स्वतिक्षस्य कान्यस्य स्वतिक्षस्य चान्यस्य स्वतिक्षस्य स्वतिक्षस्य चान्यस्य स्वतिक्षस्य स्वतिक्षस्य

'मारकारीमयारम्मा' ॥ त्वाष्ट्रिक' कास्यकन्ति शिलाकन्ति शिल्पिक ॥१०॥ ॥ ताहि में सब सम्यन्ति क्षेताहे १ केंपपानालका वर्ष कहते है मृतु

स्परिक सरीरवा मयनीलका तिक का उनके शिक्षिक भूमवर्ण १० देवस सुवर्ण सरीरवा पीतवर्ण है यह पाचवर्ण नो मानताई या सब पातक से सुक्त होताई १३ वीय पाचार के पांच कुर कहते हे मनुका तिकीणकुर हे मयकानत कोण कुर लखका वर्ति कुर शिल्पिका पहुंची पहुंच के स्वतिका सुरक्ष पासुद सहोताहे १२ सेवपाचालके दहक इते है मनुकाद उत्तरे का है मयका वेशाद है सिराका तामद उन्हें शिल्पिका तो इन्दर्द १४ देवसका सुरक्ष की कि सहयांच दह जो जानता है। यो

नियाणकरके तोक महारकस्नेवाला मय केकिक्सम में आये पैसे कारके पदाय बनायके लाक्नेक पालनकरने याता लाखा लोक के हितके किये अनेक पदार्थ उसन्न करने याता जिल्यों पर किला भन देनमहिरयनने याता ३ देनमुक्तिक कितार्थ अलंका एकरनवाला । ऐसे यह पनकर्म करने वाले और पौचाल लोक हिनार्थ उसन्न होने भ ये अब पायोकेत सणकहते हैं ५ मनुशियस्वक पो हे मपविष्णुक्षी लक्षामकाक्ष्मी शिल्यिक स्वस्तानमारायणक्षी है यह पांचीकाणी सक्ष जानता है जै सब पातकसमुक्तिताहै ७ शोवपायालके गुणकहते हैं मनुतमोह भी सप सलगुणी लक्षा को ग्रिल्यक स्वस्तानमोह भि द देवज सुक्त सलगुणी है यह पाच ग्रुष्य मान ग्रुष्य का स्वस्तान मोह भी स्वस्तान मोह भी किला का स्वस्तान मोह भी स्वस्तान मोह स्वस्तान मोह स्वस्तान मोह स्वस्तान मोह स्वस्तान मोह स्वस्तान मोह स्वस्तान स्वस्

hī

देवह सणीकारस्वपंचानंकर्मपंचकं॥ येवेदपचकर्मा णिसर्वपापिः प्रमुच्यते॥१९॥ अर्ग्वेदस्य मने स्वीवयत् विदेशसम्यच ॥ सामवेदस्या छि कस्यस्य पा विश्व सितः ॥ पांचालानाचसव पांचानं तथेवच ॥ उस त्तरं प्रवस्या मिल कानां हितकाम्यया॥ २२॥ वस्यकर्म निवेशे न्ह पास्प विश्व विश्व सितः ॥ पांचालानाचसव पांचणानां चत्रेवच ॥ उस त्तरं प्रवस्या मिल कानां हितकाम्यया॥ २२॥ वस्यकर्म निवेशे न्ह पास्प विश्व स्वाप्य विश्व स्वाप्य स

वेव उन ने चीपा लेक उसन्तकरें पिछे चारम् उसन्ति के तो कहते है १३।२४ ने राज बह्मा के सुखते ब्राह्मण सृष्टिकु उसन्त करने वाला स्वारं सुवम् किया वो बा-् गहै देराज बह्मों सित्रियस्थिकु उसन्त करने वालास्ति यह प्रसारो विषम् नुभया २५ वेगज बह्मा के ऊह्म मंडलसे वेश्य सृथिकु उसन्त करने वाला वे व्यवहारे - राहे वेराज बह्मों सित्रियस्थिकु उसन्त करने वालास्ति यह प्रसारो विषम् नुभया २५ वेगज बह्मा के ऊह्म मंडलसे वेश्य सृथिकु उसन्त करने वाला वे व्यवहारे

चतम् भया वैराजब्रह्माके पादमंडलसे शह्मवर्ण कुउसन्म करने वाला शह्महरूप तामसमतु भया २६ अव प्रथमजो स्वाय स्वमनु उसकु छ दुन्न भये अयर्व वेद सामने द भ्रय्देद २७ वेदच्यान पियवत् यह छ दुन्न बाह्मण भये अव उपवाह्मण कहते है सो सुनो २ = स्वाय सुयमनु से चार उपवाह्मण भये उसमे पहिला शिल्मायन

मुस्ककाह्मणहे उनाने भूनग्रेपदाहि-नारवदकाणध्ययन्करना ३१ औरस्वायसुवक युज ७ उपबाह्मणिया यायनाहिक कहे १२ व उपविदेउपमा हाणाह उनाका बदाध्ययन आयु ेंद् धनुवन गाधव वद शित्यवद् यहचारवद्काकमसे अध्ययनकरना ३३ अव सुस्यबाह्मण उपबाह्मण इनोके साधारण पर्मकई तहे मुख्य ब्रह्मपानाल उपपानाल इ नोने शिखा पत्तापनीत धारण और गायनी अनण और सध्योपासनकर्ता २७।३५।३५ अधर्नणवेदकाउपनेद शिव्यनेद है पासीसन शिव्यावण ऐसे नामपाते हैं त्रस्वेदादिकवैदानामेषामध्ययनस्मृतं॥तमुरव्यवेदिन स्वेमुरव्यवास्मणसङ्गका ॥३१ ॥त्वायञ्चवमनो पुना मोक्ता जिल्पायनाद यः॥चलारोउपविमात्र्यकथितावेदवादिभि ॥३२॥आसुर्वेदादिवेदानामेषामध्ययनंसमृतं॥तेचोपवेदिनः सर्वेउपमास्मणसङ्गका ॥ ३३॥माह्मणाना शिरवास्त्रमं सुरयानां परिकीर्तितं ॥तयान्वेवो पविमाणा विहित्नविन्।॥ २४॥ सुर्यानां माह्मणानान् गायनी सवण रवल्लातयाचेवीप्विमाणागायभीअवर्णस्मतं॥अगसुरम्मा नाबाह्मणानाच तयाचेवापवेदिनां॥सध्याविधिरुपास्योयविहितोधविर्चिना॥ ३६० अथवर्णस्योपवेद शिल्पवेद मकीर्तित ॥ तस्मादाथर्वणा मोक्ता सवीशिल्पनएक्या २०॥ शिल्पायनस्परेषुनास्तेषुज्येश्वय लोहरूत्। स्म्पार् प्रस्तर्गरिस्मान्यकार । सुवर्णकः ॥ २८ ॥ पांचालानान्यसर्विषात्राारवावै विन्युकर्मणी ॥ तेषाविपन्योनाणापवरेपंच कस्मृते॥ ३९॥ तेषाँ येरु वर्षे वत्यभिष्टप्रखद्स्यएवच ॥ सुरयानावाह्मणानां चर्पाचालाना मर्किति ।॥ ४०॥ शिल्मवेदम्ब शिल्मानान पचानीपरिकीतित ॥अध्ययनेचतर्नेव्सिक्तापचकसमृत॥४१ ॥शिल्पायनसुतोज्येचोमनो शिष्यल्माद्रात्॥पपाठसेहितामाचा

गौरगपन कापस्यायन मागधायन् ऐसेयहचार उपमाद्मणकह जात है २९ ओर पूर्वि अयनादिक खपुन स्वायमुगके कहें वे मुख्य बाह्मण कहे जात है ३० जो जा

च मनुकं चारतुष्र उपपाचाल कहे उसमेसेज्येवपुक्रनोशित्यायन उसकी संसती कहते हैं लोहार सुठार पाधरवर तावडकर सोनार यह पांच लोकोपकारार्थ अपे ३० अ च सब पाचालोकि बारवादिक कहते हैं सबोकि विश्वकर्मशारवाजीर कीडिन्यगीत्र आत्रेषगोत्र भारद्राजगोत्र गीतमगोत्र काश्यपगोत्र यह पाचगोत्र पांचाल के हैं स योजात मनर वामदब मबर अघोर मबर तसुरुष मबर ईशानमबर पह पाच मबर ऋमसेजानना आश्वलायनसूत्र आपस्तवसूत्र भौधायनसूत्र दासायणसूत्र कात्यायन सूत्रयह पाचसूत्रकमसंजानना २९ उनोकुरुद्र वैवत्यविषु प्रस्तर दुगायभी बीग्यहै ७० और उनोने शिरमवेदकी पाचस हिताका अध्ययन करना ४० शिल्यायन का बहाउम

धातुनेदस्यलोइछत् ॥ ४२ ॥स्मधारोदिनीयोथमपशिष्यत्ममद्रात्॥ सहितास्मधारात्यामपठकोकमेक्च॥ ४३ ॥ ॥

जं लोहकार वो मन्न शिष्य हो के धार्ट देस हिताकापाठकरता भया ४२ स्त्रभारजोसुतार वे मयका शिष्य हो के स्त्रधार महिता और को कशास्त्रका पाठ करता भया ४३ तक्षाजो शिलाकार वो शिल्पका शिष्य हो के ताम्यस है ताकापाठकरता भया ४५ स्वर्णकार दे विद्युक हो के सुवर्ण संहिताका पाठकरता भया ४५ स्वर्णकार दे विद्युक हो के सुवर्ण संहिताका पाठकरता भया ४५ समस्त्रपाचाले ने शिल्पकार के पांच संहिताका अध्ययन करना ४७ और विश्वक में शिल्प वेद की पांच सहिताका अध्ययन करेगा उनी कि सुन्यों ना दिक संतान ४० मृत्युक के में अपबाद लोगा स्वर्णना स्वर्णना करेगा उनी कि सुन्यों ना दिक संतान ४० मृत्युक के में अपबाद शिल्प विश्वक पांच लिलाका ती के देवता पाच कहते हैं जो विश्वक में कि सु

उसन्नमरे ४९मतुमयत्वसा त्रित्यिक वैवज्ञायह वेवताजानने यह पाचोजने स्वर्ग मे रह देयज्ञका रक्षण कर देयाचाल ज्ञाती कं मनोरय प्रण करते है ५० अब पाचाल जाती के आचार कहते हैं यम नियम आसन्याणायाम प्रत्याहार ध्यान धारणा समाधिकर आठ अंग और षड्कमी जोर पंच महायज्ञ पाचालोक वेदमे कहा है ५१ षट् कर्मके नरे स्वी कहते हैं यजनयज्ञ करना याजन दूसरे के तरफर यज्ञ करवाना वेद पदना दूसरे कु व देपदाना दान कहते परलोकार्य द्रव्य ससात्र छुं देना य तथह कहते दूसरान परले कार्यद्रव्यदेव संलेना यह पदक में जानना ५२ और पात-काल माध्यान्ह काल सायकाल विकाल स्वानको र संध्यावंदन और अधिमे होम पांचालोने कर ना ५३ के परले कार्यद्रव्यदेव संलेना यह पदक में जानना ५२ और पात-काल माध्यान्ह काल सायकाल विकाल स्वानको र संध्यावंदन और अधिमे होम पांचालोने कर ना ५३ के

त्यकमकहत जोक्यकरन्य विशेषफर नृहि और त्यागकर ने से पतित होय उसक नित्यक्षमक हरा स्थायवना विक अवने पित्तिक कर्य कि सक् कहता सा कहते है जि सक्ष्मीकरने ने अपनिकायना पूण हो वे या निमित्तिक क्षम जानना जैना मता विक एसे नित्यने मित्तिक क्षमणाचा को नंकरना पित्यहा साहत् पण अति यिष्ठ जन भूत यहा बात्र हरण देव पूजा देव यहा ०४ जपय ज्ञाय क्या विजय देवता तर्यणा विक ब्रह्म यहा एसे यह पत्र महा पहा पर कम अरागयोग यह तीन आचार जो पालन कस्ते है वे ब्रा हमण जानना पाना तो ने प्रचानिक मक्षमा ५० द्वानिकी पाचा लागा सि मकरण ५९ से पूर्ण ६५ ६५ ६५ ६५ ६५

अयकु इगोल के ब्राह्मणांत्यांती मकरणा ५२ अब कुडगोलक अधम बाब्मणकी उसक्ति कहत है परस्थी के विवे कुडगोलक पुत्र होते हैं। पति जिवंत होते जार पुरुषसे जो पुनरांव उसकु कुछ कहना पति परवाद

आह्रसेजोपुत्रहार उसकृतोलक कहना । यथपि अपने अपने वर्ण मस्मेदोत यापि भवाना नाति होन कहे हैं ॰ सर आति ही पर स्पियो वर्ष वाह्य पानि नो उसल हो वे वे कुंड गालक कहे जाते हैं १ उनोकावर्ण धर्म नमातामे मिलमाई मिपताम मिलताई उनोक स्वधिको काने विवाह । दिक्र संवधिक संवधिक संवधिक स्वधिक संवधिक स

णामाइ येत्कर्मनामाने ॥ यांज्योदेवपुरराज्ञावणसंकर मीठणा॥ धायुंडावाणा लकाविमः संध्योपासनमातृवित् ॥ स्नान मोजनसंध्यासु वेवेपु सपठेष्वतत्॥ ७ ॥ एवम वेदिजेजितीसस्कायाकुषुणीलका ॥ अन्यत्रकेचिदाहु हिजेजितीसस्कार्याकुंडगोलको॥ ०॥ ॥ क्र सकर जाति मेहे ऐ साआदिस प्रगणमे कहा है यह कुठणालक किपिच्छानर इनकेवाला राज्ञानस्व द्वारक थाहा इनो दिया जना रखना ६ कुढ गोलक बाह्मणन स्नान सध्या भोजनके समयमे विद्य प्रगणमे कहा है यह कुठणालक किपिच्छानर इनकेवाला राज्ञानस्व द्वारक थाहा इनो दिया जना रखना ६ कुढ गोलक बाह्मणन स्नान सध्या भोजनके समयमे विद्य प्रगणने कहा है यह कुठणालक किपिच्छानर इनकेवाला राज्ञानस्व प्रवास कर्मा ०

## अर मेर्डे डिड जात्मर ने मकरणं ५३

द्रीवर्षेष्ठिनिसबैशिकः त्यवर्शयामासभातान्वरक् धैतिनावनीन् ॥१९॥तदापद् माध्यणाः मोतु स्तवभक्तिर्भवेभवे ॥यणभवेक्तयाराभो छपा कुठदपानिये २० त <u>पास्तितिशिकः माइपानतीसहितः मञ</u>्ज ॥ रहु। देशीनाष्ममान् ग्रुरुपान् तमसास्यितान् ॥ २१ ॥ उपानिसम्पाविष्य कि मिवं वस्मेममो॥ तदाशिवेन पुतांतेनोक्ते देपी छपा नितागरर गसजीवयम्हादैवनोपार्चेन्युनापुना गतदामहेन्यर साक्षात्कपारधाध्यतीकयत् ॥२३ ॥सधएवसस्ततस्यु प्रक्रवादियक्षिणा गतेसविपार्वतींशश्चमणेसः रिहलामुदा॥ २४ ॥ऊत्तुरीद्याखपासिधोरस्माककागनिर्भवेत्॥ ॥शिवजबाच ॥ ॥भवद्भिर्यस्कतकमृदुखदुखरवकाषतमा १५ ॥ तस्मादिङ्गयराजन्यवे १यद्गिन्धरित्यय ॥या ं गा सहोजनतत्वयशोक्षेरवनकोविशा॥२५॥एतेवेश्यामयोक्तसाभवत्वनसुभातके ॥पात्ममनं त्येवेशामपिदर्सनचापरि ॥२० ॥वेश्यामाहे व्यरानुर्स पचरिष्णीत भूतले ॥दुर्गलोहमयपिमे कतमेतन्तिर्गले॥ २०॥ तस्मालोहारिलनामसैने मदित भूमिउ॥ दिससिततमाभेदा जापते भूतले पिशा ॥ २६॥ तेरवापसंद्राकाः मोक्ता सीपानीदासनेकक्षा ॥पड्चीवक्षनाविमाः भवत्येपाष्ठ्ररोहिताः॥ ३ ॥इत्याक्षाप्यसनीक्षेत्रयान्रुद्धवातिक्रीत्रवत् ॥ तेपिरवर्त्यहज्यम् रेवमाहे व्यीमजा। ३९ ॥प ्द्रशीवशनानाहिनामानिममदान्यह् ॥ पणशराम्यपारीकेविमोजातोमहाममाः ॥ ३२ ॥ दधीचेदीइमो विमोजातोवेदपपुरोहितः ॥गीतमादादिगी**छा**द्यविमानातामही नसः ॥ ३३ ॥ रवडेलपालति हिजद्वारिका सम्जापत्। सारामुराञ्चविषेद्रोजातः सारस्वतस्तदा ॥ ३४ ॥ स्कुमार्गान्ततोजातः सुकुवालोहिजोत्तमः ॥ पण्णां वदागताविमाः वि श्यानागुरनोभन्न् ॥ २५॥ सामत्कुनिविदेशोधानदा पश्चिषासका ॥ तयापुष्टिकराविमा गुरुत्नेविनियोजिता ॥ २५॥ पर्छिशतिहानेकाछेउतीतेकछिपुगा त्सके ॥ शातिमहि चरानातानिवासीमरुपन्तके ॥ ५७ ॥ सामतदेशभेदेनभेद स्थासीन्यतुर्विषः ॥ मात्रवामतुषन्वास्वकन्तियापुर्जरास्तया ॥ ५८ ॥ जैनपर्मरता केचिद्रेष्णवादिरतहारे।।स्वस्वधरतेष्वेते कन्पायः किनिश्चयात् ॥ ३६ ॥ तयावेशसम्हेषुकन्छदेशीयवेष्णवाः ॥ स्वसम्हस्य वाह्यत्वाज्ञीनमागर्तेस्सह।। ४० ॥ कुर्वतिकन्पासबैधधर्मत्वपालयतिच ॥ न्यबसन्बहुकालसुयागोवैश्यगणै सह ॥ ४१ ॥ केनबित्कारणेना सी पुरत्यन्कोरवेडेलक ॥ सर्ववेश्यजनै सान्द्री ढि डेमध्यानकेवसत्॥ ४२ ॥डीड्रमाहेन्यरिख्याति गतास्तसुरवासत् ॥ इतिमाहेन्यरीज्ञासुत्मनिमेद' भकीतितः ॥ ४३ ॥ इतिमीज्ञा • माहेन्यरिज्ञास्यसन्ति मकर्णा ५३ आदिश स्मेक मरणाङ्ख्य

बेल के एथेहुये तन् समज्ञत नाम सज्ञावलीपन लिख्यते

श्री	उनवार	काहा	मा खाणी		यग्नानिया	भूग्या	नारग	नान्डा 🔭	नीगा	(मान्)	दमाणी	'देवावत''	धराणी-	ने ताणी
र्याचनगी	<b>उ</b> धार्णा	नाव्या	<i>फल</i> यी	किलल	मानागी े	-7	चावझा	मराणी <del>*</del>	द्ध∙	नापड्यारवागई		द्वाणी	धनाणी	नथाणी-
थांचरीत	布	हचान्या	कलक्या	कर्सु ग्रीमल	नी रह्या	चीपी	चतुरभु नाणी		डागा	तापड्या	-	देसवाणी	<u> भनाणी</u>	नानगाणी
म्र	कांगरी	<b>मामद</b>	माकाणी -	- कुचकुच्या	इनडा-	चोपरी	चमार	नात्वाणी	उ। ग	<sup>न</sup> तीसणीवास	देवगठाणी	दताल	धनाणी	नरसणी
प्रमण	कोटाग	काकडा	कायग		पंकी गक	বার্থা	चापमाणी	<u>जिदाणी</u>	उामडी	तद्रनाणी		दरगड	धनडः	नापाणी
आगीपाना	कौडांग	<b>कटम्</b> ग	<b>कस्</b> म	म	ग	चोधग -	चोपाणी	<i>न</i> ूड्री	डोडा	नेला	<u> दूराणीं</u>	'देवपुरी'	वण्वारु	नावधराणी
गगमुद	कोडांश	कंमावत्	कीन्या	परंड(मारंड)	गगगृषी	चांधरा	चंदक	'नेरामा	'डाड'	तंनाणी	दुरदणी	दिइराजाणी	. स	नाग
असावा	क्षीठाग-	करनाणी	<b>त्रीया</b>	'यर <b>इ</b> !सटब <b>र</b> ्ग	गीपीद्या	चोपम	चाच्या"	'नजनीया'	डाणी	तीडा	दक्क	दसवाणी	नीसरवा	नीगजा
आमोका ।	क्रीजनि	क्राक्रया	कर्मगीन	पग्ड(इच्स)	गरविया	चोधग	चेचार्णा	नुगगमा	<u> उद्ग</u> ी	तिरयाणी	दगडा	£-	नीसत्ता	नवास
प्रशंसण्या	कोडार्ग	कान्हाणी	करनाणी	परद्र'नेचाणी	गायखनाल	चोधग	छ	ऋ	<u> उपदा</u>	तौतला -	दादन्या	धूपद	नावघर	नगणेच्या
<u> अहे ग्यम</u> ्	केका	कियतस्या	कहरा	पुण्या ।	गगद-	<i>चो</i> भी	<i>न्डायग्वान</i> ः	भार	<u> दाच्या</u>	-तुन्राखाणी	टमन्द्रका	<b>प्</b> त	नरेसण्या	न्याती
भवेभिगीत	फन्स	केस	<b>क्रमसानी</b>	'दुवान्त्र'	गीऱ्या	चोधग्री	<u> </u>	र्शतझा	डागग-	त्रमङ्गा	दास	धीनेसस्या	सुगरा	'निकलं क
श्रवा <b>म्या</b>	फेल	कर्मन <i>ोन</i>	कालाणी-	चोगरा -	- गिलगितिया	<i>चिगती</i> डा	र्छींतरका	झाछरिपा	<u> जोड्या</u>	तुरक्या	दग्गा	धास्का	नरंड	नराणीवाल
मस्यार	स्याल	<b>क</b> प्रत्वदोत	कलावन	'यरमळ'	गाकन्या	च्रया-	चुया -	'जान्त्ररिया'	होड महुता	तोरण्या-	दगडा	<b>धीरण</b>	नागे री	नरवर
अरजनाणी '	<b>क्या</b> ल	कात्र्या	कला	'पायर'	गुरुचक	चोपडा	দ	र	उ वस्योङ्गा	- e.	दरावऱ्या	<u>भें ल</u>	<del>ने</del> बर	नाडागट
भरका	काला	कोझा	<b>करमा</b>	चेमाणी-	गीगन्या	चहाडका	नामू	रीपीयाला	ह	<b>चिररा</b> णी	दुजारा	धें ल	<b>-</b> हार	नेणसर
र्दे	कुदाल	कुम्झा ।	करग	चेताणी	युलचर	चिमयया	नेयल्या	रीलावत	देखा	येपझा	दुदाचत	धोख	नगवास्त्रा	<i>नरे</i> ड्या
ईनाणी-	कसेश	कुलच्या	कीकाणी-	-पटवरु	ঘ	चमङ्या	_	<u>रुवाणी</u>	होली-	द	दुसाज		नेतसीत	नागच्या
<b>ऊ</b>	मीसाका	कलाणी	करनाणी-	'पेतावत'	धीया	चेनाया	नेसाणी'	ँड	त	चागद्या -	द्वारकाणी		नाराणीं	प
उ अणी	कृपा	ाणित त	<u> </u>	पोडावाला	धरझैल्या	चित्रलगी	भुजेसस्या	<u> अक्रुगणी</u>	्त चलावहया	दागड्या	देवराजाणीं	<b>धीराणी</b>	<u>नोस्त्रपा</u>	पसारी वंग

सीतम मदसुर्गीत संग मिशिषार मारी संदरह यमाग्रिकियहचीयात् स्वेदीयातः वेद्धाः 7(11) स्यवारामा अगणी मन भगुसा मीभवन मोधी म्बारकाइकी स्थापी मानसिगीत पलकि निर्माण की की जी जी कनियमीन बहिया सरुखा राधमारकेरी भागासन भाष्य मश्र **मृ**त्या समादत्यमी रदाणी पोरी नांचासच्य भुगग क्तरी(क्यु प्रामार्गाः महरा শাস্ত मास भारता वारीका भागद्य भ 11र मीरी नास्नेदीत गमानत्काम रूपाणी सतुस्या मिज्यानि मंद्रोदस मर्गम्या मनक्या योसमा फ़तकपोस्ट ब्रमणधी भेगणी पन सपाणी मीइन मनकनदारी कपार रेणीयात साहा मागुणी विद्यर्थ मानाणी पुणदासान -तगर्माण पोरगर भूत पुर रीयाणी साप्तलाणी मोहापी मीसक सुराणी स्या भ 444 HE-ET 401 पुषाठ भगम्या मनार बनान खस्का ₹ **त्**पारी माधा भौताणीएकी। भागाणी मेएवा मीखमस्प मीमाणी न्या "प्रजलियाः परवर्गकामः वेदेवना मुजीवास मीसणी बाज्या सीग्रीरी स्ववाणी संभागी मूसणी स्पादार बखार्मा' भीसमानुबन्ध भूरिपा माण्युपग्पा मद्भागी प्रनपास्य पटवा (रुम्) केम्प्रग मरम्प माद्वा मु**ब**राणी सामाणी सिपी ग्रमाणी नापडीता भारतकेल्या मीजाणी तरा मभीष् माजू धुणा मञस्य भरका (कांबक बागरहा मकर मुसाणी सेंद्रीस ती आणी सुम रणग्रेटा मामोची मिरम्या मद्भिपा पाइन्यूप्ट भट्ट प्रमसमा परभारत , बनाया बंजारा <u>मुरक्या</u> सीचाराहेती; सीसामा मुमाणी भारतेसम्बद्धः भाना राधनणी स्र पासा पर्यसाख्या समही "बिठाणी" सुद्भारणी मासा मस्यपणी माणस्या बो (विद्याणी) सीसार पभाषी भक्षीसमी भूतका र्पोर यस्यापत महस्राणी राघाणी मासागी मातेसस्या पूँनामा राक्त्य पहाड का मोमाणा पौपाणी नीका नीमस्थलस्य सीराजी महसाराणी विसहर भवारस्ठी मासाणी राईवास वादेती भद्रारी महेसराणी मासीमान मीरुश मुधा नीसरक्रीक्र मिक्सी मामणी प्रमुख्य स्कृगयर्थी मपारमञ्ज भगवदीतः मूजी मापाणी प्रकास पीस्मा राप गुजना ता लपादन पूगह सेपणिया नसणी पनीट नेदिनास-बाबस्यणी मयाश्वरीया भक्ता मीएफी 'सह्यहाकुराणी समाभी भीमायाः सहस्रा बायेन्द्र सप प्रवत्सा पदीसा गस्पीत नामाणी कृतर्वेषर किनवाती पूपका मेडिया रीस्मा सास शिपा मीन करोत्या मर्थाणक मीमाणी सप उपामया भविभिगोन गमन्दीन रापरा मीचरा "मक्सुणी" पासद्वा 'मुलनानी नुगरास्या भारकारता, भूम्या सुनाणी मासुम्पा स्य म्बोगह स पदाधी: विस्तर्गा मभी ኊ पुरस्तपमे भीकर्णा मापाणी मीनी de The मादसणा मुक्तानी साठी सिरना सप राह्य देन <u>'पीनाणी'</u> कोकस्म चुन-चाबाबीहर्ता मन्सासी महोनी सर्धः साइपी असमा **तुक्**नाणी पुरुतानी यम्बदत सप नदर सास्त प्रापन बसरेवाची बाक्सलाहेबी) भन्नीका सुवाभीवास सपैसा मरनूना मार्थाजा नेरा रतनाणी मलाबन 54 समगणी यादताणी

इति हीलासस्या हडकुरिया हीग्पा सुवाणी साभस्या इरिदासीत सेसाणी सोमाणी समात: 'साबताणी हीगर्ड इरकट सुजाणी सकरेण्या साहा सागर सुषाणी हरचंदाणी सिंगी संफर सकराणी हरकांणी सुरजन इलया स्पहरा सांबलका साबू साकस्पा सराफ सीहाणी सिंगी सकराणी इलघा होलाणी सोन हेडा सादाणी सुंद्राणी सापूण्या सालाणी संभस्या सेठी सिगा सेमाणी -सोमाणी सागाणी सीघडा सूर्णा समाणीं उष्टलेवा जड़ट सूद्रेस ने प्रकर्ण ५४ अबगुजरात देशमें जे लेदे पाटीदार और कड़वे ज्ञाती है उने कि उस ते कहते है एक देन श्री रामचंद्रके छत्र लव और कुशा यह दोनो यात्रालेवासी र जरात देशमें सिद्धुरहें त्रमे आये १ वाहां तीर्थ विधे सब करले सिद्धु उरमें नजीक दक्षिण भागमें सुमारे कोस पांचले ऊपर ऊँझा करले गाव है वाहा उमया देवी विराज ते है उनो क्षु नम

७ यालव छुत्रास्यापित रुद्रोस त्तिमाह हरिछणाः एकदारामचंद्रस्यपुत्रे लवछत्रोपुरा ॥ यात्रार्यमागतो सिद्ध क्षेत्र रुर्जरसङ्ग्रे ॥१॥तत्रतीर्य विधि छुता के चेह्र स्थितांततः ॥उमादेवी नमस्कृत हृष्ट्व तस्य : प्रभावकं ॥२ ॥तत्रतान् कर्षकान् श्रुद्र न दिनान् पक विहे न कान् ॥ उमायाः सेवनार्य वेस्थापयामासहरुदा ॥३ ॥ लवेन स्था पता श्रुद्र से लवाः परिकी तिताः ॥ कुत्रोन स्थापतारेवी से हृद्राः बहुका कि धाः ॥ ४ ॥ हाद्रे ह्र दशेववेंदु मायाः गरदानतः ॥ यदुकानांकन्यक नं विवाहों पर ति हुं।। ५ ॥ तथाबाह्य वरस्टेटर तिरेषां वेचित्रका ॥ इन विवाहोभव ते हुर्य में ध्ये विशेषत ॥ ६ ॥ एत छिसुरवा दुतुत्व ह रेक्क धीन ने में ते ॥ ७ इति में बा० लव्छु शस्था पेत् सुद्रोत्य ने वर्णने नाम मह ५ ४ सं ० आ न्यते ने ४ ५ ४ ७

स्कार पूजादीक करके और देशेका मताप देखके २ वाहा के रहने वा छेखेती करने वा छे ऋद्र गरीब अवस्थामे रहते थे उने कु देखके उमया देव के सेवा करने के वास्ते पर महर्षरे यूब्रे कास्थापन किया ३ लवने जो यूद्र स्थापन कियेवे छेवेपार्ट दार भये के इ गाव मेदालका व्यापार करते है वास्ते दा छेये है कहते है और कुशने जो यूद्र स्थापन पन किये वे कड़ दे कुण बे भये ४ ऐसे यह दोनो समूह उमास्तेत्रमें रहते थे एक देन कड़ वेके छो क देवी की गो वा चराने कुण दे है ब्रतने में स्त्र में विवाह क उत्तम समस्य

भाषादेतक स्वीने जो बाहा हाजर हते ठनसमूह के ठोक उनोकि सादि विवाह करदिये सद गाइन्य गये के कुत्रा समूह भाग के देखतो छेचे झाती के विवाह भये और हम गये तबदेशकी मार्थना करने लगे उसबरवन दश मसन्त हो के कहा के तुमेरे खाकरीयों के शादिविवाह बाराबार सक्त हो वेगा सो अधापि कड़ वे यह झा विमे बाराबरसक कम्या के विवाह होते हैं विवयनहिं होते विवाह वरस के सा निकल ताहे सो कहते हैं वो ऊझा गावम जो उमादेश हैं उनो के किवाउ सदेव बद रहते हते नव विवाह तिथिका समय आवे तब किवाड खुळ जावे और पूजाकरने वाले के स्वभम जायक देवी कहती हती परंतु बो चमत्कार हाल मेरहा निहि अब ऐसा करते हैं कि पहिली गर तियीसे ८१९ १९ १९ १९२ इतने वरसो मे छुत्त सबतार सिहस्य गुरु न्युकादिक का अस्त नहीं ने और नौतिय मतसे उत्तम् तिथिया होने हैसी एक क उसकानाम मांद्रव राजवो वि पत्रमे लिखके भेजते हैं माठव राजका कारण यह है कि मुख्य तिपीम स् इसपांचसे पधरातक को इति एक ्र बोनो ज्ञातिमे चरु भक्षण उर्फ (कसार महाण ) कचा रवा धी शकरका करते है जिस तिथीका निश्व तकाविक मास होवे तो माड निवाइ करते है कोइ समयमें उस तिची कु कन्या कुं वस्तमिले ते वो कन्या कु फुल से नो समापरह सन्या यहुवा होवेउसनियी क नी इइ तिथिकु जो कन्या निमले तो बाय फेंच फि ने **च**िरर न वर कन्याका विवाह होता होवे उसवीकाने जाय फेरे फिरना उसकु बाय फेरा कहते हैं बाय फेरे

नभय निम राजाक मतापसी आगे गावर

भगह कृतांत शिएके सुस्तसे सुनके इरिक्रणन

कुलनाम विख्यात होताभया १ रूषाके पुत्रमधुम्न उनकापुत्र भने रुद्ध उनकापुत्र बज्जनाभ प्रभासपाटनमे छपनकोटी यादवनाश पाये उस बखत बज्जनाभ एक बान्ति रहा २ पी छी अर्दुनने व बज्जनाम कुंग्रीमधुराकिराज्यगादीऊ पर बिटाया उसकापुत्र मितबाहु उसकापुत्र हुबाहु कापुत्र शातिसिंह उसका श्रुत सेन पुत्र मन्या आगं उनका और रसप्तृत्र निर्देश के अपर ४ जे सिगराजा भयान्या आगं उनका और रसप्तृत्र निर्देश के अपर ४ जे सिगराजा भयान्या मिहुराकाराज्यकरताया सी कोई बरवत बाहा बडा दारा एड दुमें जे सिगराजा मृदु पाया ५ तब उसके तीन पुत्र ये सो भयके लिये अपना कुरुव और पांचसोन

अध्यदुवंशी भारिय सित्रियोत्पत्ति माह हरेकाः चंद्रवंशीच्रः पूर्वेयदुनामाति वेहतः॥ तदंशेचसहत्यन शिक्षणोाजगदीश्वरः॥ तत्यदुन्तक्तमदुन्नः त्य निरुद्धः तद्धनः। वज्ञनामस्तर्यदुनः में सलादवश्चितः॥ २॥ मतिबाहु स्ततः स्तरमात्मुबाहु रिति वेहतः॥ शांति हिंहस्तर्यदुनः श्रुतमे नश्चततः॥ २॥ ततोराज्यपदं मातोजयपालोच्योत्तमः॥ जयपालसमारभ्य पर् सप्ति तत्मोच्य ॥ ४॥ जे सेंगद् तेवि रत्यातोमहुरापालयन् दुर्रम् ॥ कदानि द्वारुणेदुद्देमृतं प्राप्तन्य मात्रा ॥ ज्यात्मि भीताश्च त्यक्तामदुद्धः गताः॥ जरेलीनामकं यामस्तरे पंच्याते दुन्ति राज्य दुन्ति राज्य दुन्ति राज्य दुन्ति राज्य दुन्ति राज्य दुन्ति । १॥ तदावेवी प्रसन्न महुद्वन्ति । १॥ अश्वाहित्य मिन्द्रमे मस्तकं वेद्वन्ति । १॥ तस्ति । १॥ तस्ति । १॥ तम् विराण्य प्रस्ति । १॥ अश्वाहित्य । १॥ अश्वाहित्य । १॥ सिन्द्रमे मस्तकं वेद्वन्ति । १॥ तत्र विराण्य प्रस्ति । १॥ अश्वाहित्य ॥ १॥ विद्वाहित्य । १॥ वित्वाहित्य । १॥ विद्वाहित्य । १॥ विद्वाहित्य । १॥ विद्वाहित्य । १॥

याद वो कुले केकरेली गामकु चलेगये बाब्जो केजो यादव रहे व वाहा महुराके मांतमे रहे सो अचा पिरवे तेआदिकरके नेवीह करते हैं सो म सिन्द है ६ णिखे करेली गाममे जो सिगके व डे खीकरेनेराज्यगादी लेके राज्यकर ने लग्दू सरे वो भाई राज्यकार मेट उत्तेने वे गाव के नजीक देशका में देर या वाहा जाय के देशका आराधन करने लग्दू सरे वो मसन्त भइन हैं तब अधिन के की में मस्त कहें मने कुत्व तथा राभव के तब देश में नाम भाव कि से सिन्द हो और पश्चिम में व र कछ देश में नाय के वाहा सुरवसे निवास करी र और मेरी अश्वास्त आवा पुरि देवी है उसकी से वा करी ऐसा देवी ने कहा सी हुन के सब यादव पश्चिम देश में गये पोछे कहे के देन गये बाद जस ल मेर में बडा मले छो के साथ हुन्द भया उसमे १० यादव सिन्ध की बहे त नाइ। भया ई पजी रहे दे सिन्ध धर्म शक्त

आयादेखकेरेवीने जो बाहाहाजरहते अवसमूह केलोक उनोकि जादि विवाह करारिये चाद गाद नरायके कुदा समूह आयके देखतो लेचे जाती के विवाह अये और हम रहराये तब देनीकी मार्थना करने छो। उसबरवत देनी मसन्महोके कहा के हुमेरे खाकरीयों के बादियिबाह बाराबाराबरस कु होने गा सो अधापि कड़ वे श्रूर शाविमें बारा बरसकु कन्या के बिवाह होते हैं बिचमेनहि होते बिबाह बरस के सानिकल ताहै सो कहते हैं वो ऊद्या गावमे जो उमार्देश हैं उनी के किवाड संदेव बब रहते हते. नवरिवाह तिथिकासमयआने तद किवाड सुक जाने और दूजाकरनेवालेके न्वममजायके दवी कहती हती परंतु बोचमत्कार हाल मेरहा निहेंहे अब ऐसा करते हैं कि पहिली गर तिथीते । ८१९ । १९ । १९ इतने वरली में हु से सबदार सिहस्य गुरु न्युकादिक का अस्त नहीं वे और जीतिय मतसे उत्तम् तिथिया होने हेसी एक एक बुरसमें एकेक तिथियां वे तीन तिथि निकाल के नितान तिथि उतनी चिठीया लिएक के वेबीके सामने रखें पौछे जो निर्धका कुक्त आने वो तिथि निन्ने करके देशी । देशपत्र किसते हैं और उसदिन बोहोत एउका नैदेश करते हैं यो मसाद देशों देश भेजते हैं। जिस तिथा का देविने निश्व स् कियों हैं। उस तिथी के व्याग ५१०१९ १९९१९५ ्रिस पांचसे पंधातक को इंकि एक विवाह तिथी दूसरी निकात के उसकानाम मांडव रामवों वि पंचमें लिखके भेजते हैं मांडवरात्रका कारण यह है कि सुरस्य तिथीमें सू 'वकाबिक मास होने तो माडन रामके दिनविवाह करते हैं यह दोनो जातिमें वरु भक्तणाउर्फ (कसार महाण ) कचा रवा भी शकरका करते हैं. मिस तिथीका निश्व यहुवा होबेउसनियी कुजो एकदिनकि छोकरी होवेउसकाबि बिबाइ करते है कोइ समयमे उस दियो कुं कन्या कुं वरनमिले ते वो कन्या कु फुलसे नोल मापख़ क्या कु कुवारि रखना नहिं ॥ ५ ॥ इसझातिमेबाय फेर्कि ऐतिक इते है परका नियम ऐसा है कि माताकि निकाठी हुई तिथिकु ओ कन्या नमिले तो बाय फेय फि रना पीछे नातरागधर्व पाट छगाना बायफेराकि रिति ऐसी हैकि माताकि निकाली हु इ तिथिके दिन सबध बिनाके जी बर कन्याका दिवाह होता होवे उस वीकाने जाय के बरबालेकु पान रुपयेसे पानसोतन रुपयदेके पूर्व बर्कु महप मेसे "उठायके आप बो कन्याक सामने बैठके चार फेरे फिरना उसकु बाय फेरा कहते हैं बाय फेरे किरे दिना नातरा होता नहीं है पह होनो हा तो में प्रयम पति परजादे वो यो त्यी दूसरे के परकु पार स्थाती है ६ यह बुतात हिए के सुरवसे सुनके हरिक्षणान मयने वर्णन किया ७ इति भी छेवा कर्यासातियणीन मकरण ५४ सापूर्णी

अयभाटिकात्रियो सन्ति मकरण ५५ जनभाटियासमियजातिकी उसत्ति कहते है बद्रवंशमे यदुनामक विख्यात राजा भया उसके वशम जी कथा भगवानभये जिम राजाके मतापसे आगे यादर

ृतनाम विख्यात होताभया १ कथाके पुत्रमधुन्न उनकाषुत्र अनिरुद्ध उनकाषुत्र वज्यनाभ प्रभासपाटनमे खपनकोटी यादव नाइ। पाये उस व खत वज्यनाभ एक वान्तरहा २ पी खै अर्हुन ने व वज्यनाभ कुंश्री मथुरा किराज्यगादीऊ पर विद्यापा उसका पुत्र प्रतिबाहु उसका पुत्र स्वाहु स्वाहु का पुत्र आति सह उसका सुतरोन पुत्र भन्या उनका अर्र समुत्र नहिभया २ पी खेउस गादी ऊपर जयपाठ नामक राजा भया उसके छो त्तेर पेडितग राज्य करते खोत्तरे विषे विवंश के ऊपर ४ जेसि गराजा भया न्यो मधुराकाराज्यकरताया सो कोई वरव तवाहा वडा दारुण सुद्ध स्वा सो सुन्द्द मे जे से गराजा मृद्ध पाया ५ तव उसके तीन पुत्र ये सो भयके छि ये अपना कु दुव और पांच सो न

महुराकाराज्यकरताया साकाइ वरवतवाहावाहायाहर है स्वा ता अच्चन ज तमराजा रह नामा जामकराजम ना गमकराजम जमा गुड़ र नार मा अध्यद्वंशी भाटि यहात्रीय सिमाह ह रिक्ठ खाः चंद्रवंदी न्टः यूर्ट यहुनाम्ना तिड विश्वतः ॥ तहंदोचसहत्यन्नः क्षीकृष्णीाजगदी क्षरः॥१॥ तस्यहुनक्तिमहुर्मः त्य निरुद्ध तहुनः । वज्ञनाभक्तस्यपुत्रः में सलाववद्दे वित. ॥ २ ॥ प्रतिवाहु स्ततः स्तस्म त्युवाहु रिति वृह्यतः ॥ द्यां ति क्षितः स्वात्मामहुर्म त्यात्मामहुर्म तत्र मे स्वाद्य । ४ ॥ ज सिंगद् तिवि रत्यातीमहुरापाल्यपुत्र मुणकदाचि हारुणे हुद्धे मृत्ये प्राप्त मुणक्त । ५ ॥ तत्सु ताभयभीता क्षा त्यक्तामहुर्द्ध गताः ॥ जरेलीनामकं प्रम्मानिर्देश प्रवादेश हुन्ते राज हुनके ॥ ७ ॥ तदावेवी प्रसन्नाभहु क्षा प्राप्त प्रतिवाद्य स्वाद प्राप्त प्रतिवाद स्वाद प्राप्त स्वाद स

यादवी, दे जे गामुक चलेगये बाकी केजो यादव रहे व वाहा महुराके मांतमेरहे सो अचा परवे तेआदिकरके निर्वाह करते हैं सो म सिद्द है ६ पीछे करेली गाममे जे सिगके ब ज्यगादी ले के राज्यकरने लग्दू सरे दो भाई राज्यकाष्ट मटे उने निर्वे गावके नजी कदेवी का मंदिर या वाहा जायके देवी का आराधन करने लग्द परंतु देवी मसन्त भद्द है तब अभि के भू ही मे हस्त कहें में कुतवार भटे ७ तब देवी मसन्त इंगियके समाधान कर के कहती है किंदु मने अभि कि भि मस्त कहें मने कुल लगे वास्ती कहा सी मान भाव करें से सिद्द हो और पश्चिम से वीर कछ देश में जाय के बाहा सुरवसे निवास करी ९ और मेरी अशक्त आशा पुरि देवी है उसकी से बाकरी ऐसा देवी ने कहा सी हन-सव यादव पश्चिम देश में गर्ट पीछे कहे क देन गये बाद जसल मेर में बडा म्ले छो के साथ दुन्द भया उसमें १० यादव सा त्रिय का बहा होता नाहा भया दोष जो रहे हे सित्रय धर्म शास्त

# छोडके बाहासे भागगये १९ देशदेशानरोमेजायक व्यापारकर्म करने छगे पह भाटियोंके सात गोत्रहें और बीज्यासितुर वेह १२ ऐसा माटि एपिय नातिका निर्णय मय इति

एव सिव्यजातीना भारीनाचिविर्विण्य । प्रोक्तोशिष्टमुखाच्युताहरिक्षणेन धीमता। १३॥ इतिश्रीवा भारीयसनिजात्युसिसार पर्णननाम प्रकरण ५५ आदित पद्मसत्या ४५६० ५ ५ ६ ६० स्थान शिष्टके

-मुर्क्स भवणकरके कह्या १३ इतिज्ञा भाटिया ज्ञानि उसन्ति मकरण ५५ सङ्गी ५५ अथ भाटियाङ्गातीनात्कल गोत्रचर्क

-			<del></del>										<u>—</u>	===					==					مرسون والمراجع		_	
<u>न</u>	_ 7	 स	<u>रप</u>							कोटिया								सा			15	<u> </u>	च <b>व</b>	रवीयरा	भा '	<u>प</u>	<u> </u>
1	7	राष	गाजरिया	<b>ग</b> त्	<i>र</i> यम	क्स	16	15	• उप	क्षेभा	सार	4	4	40	<u> </u>	सम	पेथिया	सा	₹	क	*	٤	यम	स्वा	भा	Y	<b>*</b>
3	٦		प्रकारि															स्म		*	54	Ģ	ग्रप	सोटिया	भा	4	<b>₽</b>
3	3	चप	पसीमा	पा	- Y	<u>फ</u> न	96	95,	्युप	सिजवसा	मा	<b>'Ψ</b>	'দ্	7.9	4	राप	सपडा	٦.	יטי	事	<b>¥</b> 3	Œ	राष्	<u> चीडा</u>	भा	T	4
¥	В	-	गगढा							जबास्त												3	प्रय	<u>मोछा</u>	भा	प	<b>₽</b>
ंध्	*	टम	संदर्भ												_	_	पनडा	भा	प	<b>5</b>	VV	•	चय	त्यार	भा	य	क
-	4	राष	सोगी														<u> इदेसी</u>				84	33	राय	धरक्य ता	भा	प	#
	U	ग्रम	साफला		4							_					सहस								भा	प	<b>*</b>
6	-	गुम	<b>नौ</b> पा	म	क्र	<u> </u>											प्रसाय-				_				भा	प	<u>*</u>
1	٤,	चप	गोगिपा														द्वरिपा								भा	थः	ক
1	٩	चप	पपा		_								_				परमसी							अवाद्यर	भा	य	<u></u>
11	11	राय	रैक	पा	प्र												मेदिपा						थप			<u>च</u>	
17	12	राम्	विष्णा							दगा														रेगचरा	<del>।</del> भा	<u> </u>	<u> </u>
==		==	<del></del>		===		==	===				<u> </u>											<del></del>	<u> </u>	<del></del>		===

===	<del>-</del> -				77			===	7777	_ <del> </del>	7	च-	<del></del>	६८	_	राग्न ५	TP (1.510)	-सः	य	वह	<u> </u>	حو	राय	क्रपुर	<del>-\$.</del>	यः	- ফ
43	95	- 114	अभिर	411*							- <u>13</u>					~		-H	यन	क	واوا	٠.	राय	दादर	<del></del>	377	705
43	9	ग्य	स्तपट	- मुधर	यः	क	<u> درع</u>	7	राय	' यद	संग	य	क	<u> </u>	<u> </u>	राय	<u> मुमा</u>		<u> </u>				राष	0101	- <del>-2</del>		
43	3	राय	<i>च्</i> छीया	F	यः	फ	ध्य	3	राय	पूरेगाधी	मन	य	75	90	90	राय	र्वाचल	मुर	य	क	৬০	৩	राय	करतरी	<u>द-</u>	सः	फ
ble	3	राय	नागडा	स्र	य	क	६३	3	राप	सुरैया	म	य	ъ	७१	99	राय	पखबर	म	यः	क	७६	€	राय	युरुयुरुष	वेः	य	क•
4६	8	राय	ववला	स	यः	क	स्थ	Å	राय	गोकुलग	म	य	क	७२	9	राय	रामीया	देवदा	यः	क	45	१	राय	कुकड	<del>दे-</del>	सः	再•
५७	य	राय	<b>ममला</b>	सु	यः	क	६५	ધ્ય	राय	नयेगाची	म	य	क	کھی	4	राय	पवार्	देः	यर	क	وع	9	राय	मुखनानी	अरपि	स्य	क
4:	٤٨	राय	पीया	<b>अ</b>	य	कुर	६६	ह्म	सम	पचारु	म	य	द्य	७४	3	सय	राजा	वै-	यः	क	ट्र	3	राध	-युमुजा	354	यः	कुर
પ્	ত	राय	पोडधगा	म	य	क्	ध्यं	S	सय	फरासगाधी	सन	च	75	७५	¥	राय	परजिया	दे	यन	क	⊆ A	8	राय	द <b>इ</b> या करणगोल	ॅञ्चर 'ॲस्	य	<del>ाफ</del> न क

अय अयां शिवेंद्यविक सि तामकरणं ५६ अव अगारवाले विनयोकि उसिकहते हैं पूर्वी आचार्याने जेसी कहिंदे वेसे कहते हैं देशकुल मे उसन्य भवाहुवा कोई पनपालनामक देश्य व मतापन्गरमें रहताथा उसकु एक् फन्या भइसी याज्ञ वत्क्यप्तनीक्षु दिइ और आठ उन भटे रिशिय नल अनिल नंद क्ष्म् च बहुभ बीखर यह आठ प्रत्र व्यम्पर्गाचा विचामें कु बाल भटे और पुर्वीका राज्य करते मये

अय अयवर् वेष्ये सित्तिमाह इरेक्षणः अयवशंप्रवस्या मैययाचार्ये प्रभाषितं॥ रेष्ट वंशोद्धरः कश्चिद्धत्यालद् तिक्षतः ॥१॥ वसन् प्रताय नगरेकत्याजातावरांगना ॥ याद्यवत्त्र्यायसादत्तार सीषुत्रास्तते ७ भवन् ॥ २॥ शिवेन ले ७ ने छे ने छे ने छे कुट्ट एवच ॥ वह भे इं रवर हे तेह्य च वैन चा विशारवा ॥ ३॥ तेष्यो वैशाल नृप ति सकत्या भद्दे हृदा॥ पद्मावती माल तिंचको तिशुक्रांच भव्यका ॥ ४॥ भवार नां हुद्रींच करेणे वो इहन् दि ॥ पताक्यासे मालकाव्यविशाल विशारवा परिकार कि तिताः ॥ ४॥ वह भस्य हुतव्यासी दयनामाप्रतापवान् ॥ विवाहम् करे त्ती विभाधव्यानागकन्यया ॥ ६॥ ॥

3 पी छे उनो हुं विशाल राजाने अप ने आवकन्या दिटे पद्मायती, मालती, काति, मुझा, भव्या, मचा, रजा, मुंदरी यह आव कन्यासे क्रम करज विवाह करते भये और यह आव स्त्रियामन अगरवाले वेश्वी के मातृगणभइ ५ वद्धमानमक जो सातवा खन्न कह्या उसका अग्रानामक सुत्र भया सी वहा मताणी भया मापरीनागकन्या केसा श्रा विवाह किया ६

स मन्ध्रमे आजतम् अग्गर बालोगे सर्पेहु मामा कहते है पीछे अधराजान यसुनानदीके तट उत्तर लक्ष्मीका आगयन दिया ७ उसवरवत लक्ष्मी प्रमान होपक कहाकि वे अ यात्रमध्या आगे तर नामने विस्त्यात होवेगा ॰ और तुमरी मय कुलदेवी याती हु वरिद्री चीन तुमेरे वहाम कोइ होने कानहि ९ ऐसा कहके अन्धान भय यात्रा अध्यक्ष्म करने लगा भी र यमुपानदीके तट उत्तर अपने नामसे नगर वृगापा जिसकु हालमे आधा कहते हैं । पीछे अपराजाने सतस यस्तियो अधारवा यस जब आवा भया हतने ने राजा के मन मे आया कि यह हिसात्मक प्रमु अपनि ह करना और हमरे वदाने विजानसे मधामास देवी के व्यवण करना नहि और आप स्थाना पीना विनिद्ध सालिक पूजा उत्यव करना ऐसा कहके वा

तो ११ सार समा यह भये वाले इतो के साई समा गोम मये सा गोन के नाम इहते हैं गर्ग १ गोइल ह गाल १ बाताल ४ कासिल प सिइल ६ मगल ७ भहल ट तिगल १ ऐरेल १० हैं गण ११ विभाग ११ तिमल १६ तिमल

अब कोइ ऐसा कहेगाकि बाह्मणोसित्ति मंथमें जैनाचार्य शकराचार्यका मादुर्भाव कहनेका क्या कारणहे तब उसका मयोजन कहते है पहिले इस मथमे मयन बार ह्मणी के उसत्ति कहिहै और वीव वीकाने उनों के जो जो सेवक विनये हैं वो विवाहा निरूपणिकये हैं १ उसमें कितनेक विनये वेश्यहें कितने क सात्रिय है कितनेक सच्छ्र है कितनेक सुद्र है र अपने अपने प्रसंग जो है वो सब मयने पहिले कहा है परंदु इसबरवत मेसबविपरीत दिख पडता है र सूद्र जो है वे वेश्य हो के फिरने हैं और वेश्यादिक जो है वे सूद्र दशा कु पार्ट है उसका क्या कारण है स मय कहता हु निश्चय कर के श्रवण करें ४ प हिले जो वर्णीश्रम धर्म ब नियोका डूबग

अथबाह्यो तार्ते ग्रंथमध्ये जैनाचार्य शंकराचार्यये झ दुर्भाव करने प्रयोजनमाह हरेक्षणः पूर्वमया स्मिन् ग्रंथेतु बाह्यपोल नि गरिता ॥ तेषांचसेवका अष्ण्रतत्रस्तूत्र ते स्कृषिता ॥ १ ॥ तेष्ठकेचनदेष्ण अस्ति प्रयोख्या पिकेचन ॥ केचित्सच्छू देकोश्र्य केवलश्रूद्र-कारपरे॥ २॥ सतिस्तरं मसंग्नतसं पूर्वमी रेतं॥ परंत्वमाधुनास् हे रिपरीतं हिद्द्रयते॥ ३॥ श्रुद्भावे प्रेट तमारे कः हे द्र्य हाः श्रुद्भ तांगताः ॥ तस्य केंकारणं में घश्यु वह्या में निश्च रात्। ४॥ रणं धमें हे नाघे तजे नाचारित कारणं ॥ पश्चा इब्राह्म पाः सहें रे हे च रण्य पंडिताः ॥ ५॥ तते धमें स्यर्शार्थ शंकरः प्रकरोड भन्त् ॥ तस्मात्तरो ऋत् ह्या में प्रादुर्भा हं समास्तः । ६॥ ७ एक लियुगव वाहणे स्थि ते निर्णयमाह ॥ धमें शास्त्रे बाह्मणाः क्षत्रियाः है इयाः श्रुद्ध के प्रदेश स्थिताः में है कल वाहोत्योः स्थिताः ॥ ७॥ दिश्व के आचार्य सिने प्रयोग प्रमुखे आदितः प्रस्तरे ह्या ४५८२ छ छ

या असक कारण अनाचार्य है विष्यु के वरदानसे क लिइ गर्छ आरमसे लेके उनका प्रताप बोहोत भया सी उने ने एक बाह्मणवर्ण विना तीनो वर्ण के लोके कु वर्ण धर्मसे खुडाय के एक जैन धर्म मिलाय दिये सो अधा पे ठेवल नाम मात्रस विख्यात है श्री माठी पारवाल में श्री डीडु सबेडेल वे अगरवाले यह पूर्व स्ति त्रियात कथे वे हाल में कितन के नमें कितन के विष्यु वो में है परेतु दोनो डीकाण वर्ण धर्म भें श्रीर वर्ण लेप करने के वास्त हाल के बर्वत में अन्य उपस्था में जन-क्ते ज्ञान नहिं केवल न्याय व्याकर्णादि पडके उसके सामर्थ्यसे कलावार तये स्टिति: ऐसाशास्त्र वचनसे कलियुनमें आदिवर्ण ब्राह्मणअतवर्ण श्रद्र इने कि स्थिति है अन्य बीवर्ण क्त्रिय बीवयका नाषा है ऐसा भ ते पादन करके आरण्य रोदन सरीरवा मतिपादन करते हैं और उनोके घरकु कर्म करानेवा से हैं जो

यरु उपाध्याय दे बेहरवरे देवया देक कहते है परंतु कर्मकराती बरवत सूद्रक बिकमें यथार कर्म कराते नहि है तब देवर सात्रिय कर्मती कहारे जाने मे

- जबसैन जानामध्या धर्म बोन्नोत सदन करने छनं तद यो शकरानार्य मन ने बेच मह मार्वा गणोकु जीत के मण्य मत स्थापन किया वालो होनी आया पकी प्राप्त मार्वा मह करते हैं उसके पथार्थ अर्थ दिखाते हैं बान्नण करिया परेंग च्यू पर पर पर्पा किया करते हैं इनमें भूद्र कु छोड़ के तीन वर्ण की दिजसना है दान्या जन्म स्काराप्या आयत सो दिज तानो सुसम्मक सस्कार है ये ठाक सभी सुगम बतिमान रहते हैं कि कु कि पुगके समय से बारो वर्ण के वह आदि और अतमे स्थित रहते हैं मध्यमें निक्ष कि कि आदि माग सिंध अवभाग सध्या है अ दिन स्था भागा स्था कि कि प्राप्त मिन प्रकरण कर समूर्ण कि प्राप्त कि प्राप्त कि प्राप्त कि प्राप्त मिन प्रकरण कर समूर्ण कि प्राप्त कि प्राप्त

अथ जैनाचा येतिनि प्रकर्ण ५८

अथ जैन दिगवरा चार्या त्विस सारमाह उक्तच शिवखराण सरात्पीव हेनैंथ मयो नामासरी महान् ॥ भिष्ठरेषु स्थि तो विभे भीत्रमाति किया पर ॥१॥ तेनम्तापितादेश महाभाशस्ययम् ॥दुरवच्चेदपाचकुत्तदोषाचिपतामहः॥२॥मत्ताहिषद्वितोर्देत्याः वपमनोनचाईति ॥तद्दरवास्तेयपुस्त्व यत्रामी वृपमध्यज्ञ ॥ ३ ॥तत्रात्वानुतद्वानिवेधसस्थितं पुर ॥ शिवोपितद्वनुश्वतायचनचेदमववीत्॥ ४ ॥अयवैभिप्रशध्यक्तं पुण्यवानु पर्दते धुना ॥ मुऋष्यमयतीतनहत्त्व्यक्ष्येतुपि ॥ ५॥ त्यापि विष्णवेदेवा निवेधकारणिति । शिवस्यवचन श्रुता देवाविष्णुन्यवेद्यंनु ॥ ६ ॥ सात्वाष्ट्रते चर्वपा वैविष्णुर्वत्रनमञ्जीत्। इदसत्यव्युष्टीषयभधर्म सन्त्रनः॥७॥ तत्रदु सन्जायतस्यैर्षेपपातमः॥ तथापिर्देवकापौर्धधर्मविभकरोग्यह॥८॥ धर्मनष्टोउ सुर पन्दोद्धापयास्य सिसान्वयः ॥ विचार्यस्य नतस्त्रेण भगवान् सुरुषोत्तमः ॥ ९ ॥ अञ्चलज्ञमहा तलाः पुरुषं स्वात्मसभाव ॥मायीमापा मयतेषाधमीय प्रार्थमन्यतः ॥ १०॥ सुईमालिनवस्य प्राफीपामसमन्ति ॥ वधान प्रतिकाहस्य नालयतं पदेपदे ॥ ११ ॥ वस्ययुक्ततथाह क्त धियमाणमुखेसदा ॥ धर्मेतिच्याहरँ ततनमर्कत्पस्यित्हरे ॥ १२ ॥ उबाच्यचनतत्र हर्ये माजिकक्तदा ॥ धर्मेतिच्याहरँ ततनमर्कत्पस्यित् हरे ॥ १२ ॥ उबाच्यचनतत्र हर्ये माजिकक्तदा ॥ धर्मेतिच्याहरँ ततनमर्कत्पस्यित् हरे ॥ दिशा। १३ ॥ इसेन भगवान शुलाव चन चेद मंत्रपीत् ॥ पद्यैनिमिवोसिल निषोध कथ्यामित ॥ १४ ॥ ममागान्वसम् सन्तो मेला ये कर्तु महिसे मंरीयस्वसक्षेत्रयोभविष्यतिनसक्षय ॥१५ भेगायिन्मापामयक्षारमं अपन्यसहस्रकं ॥ श्रोतस्मार्तविरुक्ष्व वर्णीश्रम विवर्जित ॥ १६॥ इहैव खर्गनरकी प्रत्यान्नान्ययापुनः ॥ अपध्यसमपशात्मं कर्मबाद परशु भ ॥ १७ ॥ एतः छात्मं त्यमा माह्यं विस्तारं त इविष्यति ॥ द्वामितवसामध्ये िमेषेणमिष्यति १८ मायाव विविधातत्तं म्मावश्यकरीसुभा॥रोधनारोधनं सेवभवतः संभविष्यति॥ १९ ॥इष्ठादिष्ठभद्दशंचनान्ये पिसमकत्यत् ॥विविज्ञं सेवयन् तहतंत्रसरं चेभ विष्यति॥ २०॥ तच्छुत्वावचनं तस्य हरेश्वपरमात्मनः ॥ नमस्कृत्यस्थितं तत्र कर्तव्यमा देश सुनः ॥ २० ॥ इहुत्कापाठ्यामास्यास्यं मायाम् यत्त्व॥ तच्छास्त्रहुप देश्ये वहुक्षायान्द्वतः स्वयं॥ २२ ॥ तहुवाचहुनस्त्रमा हनीया इमेत्व्या॥ एते देयास्त्रया सर्वेपावनीयाम् दाइया॥ २२॥ धर्मस्त्रत्र महश्यते श्रीतरमा ने निसंशयः ॥ ७ नया विद्ययासंवर्षके टर्न यंनसंशयः ॥ २४॥ एरत्रय वेनाशाण्याहतं कृष्ठ हरेशान्त् महिष्यान्त्रम् हिष्यान्त्रमा सर्वेपान्त्रमा तत्र श्रीत् स्वर्यात्वयाह्न ।॥ २४॥ स्थातव्यचस्वर्यम् एक ह्यावत्त्तस्य स्वर्यत्वस्त्रमा सर्वे प्रवाहते ॥ २०॥ विष्यम् ते श्रीयम् त्रित्रमा स्वर्यात्वयाह्न ॥ मराज्ञयाभवष्यमे विद्यार्थ तिहुव ॥ २०॥ सद्वज्ञापरानित्यं गतियास्य स्वराह्न ॥ ३०॥ यथास्य तथात्वार्य विद्यान्य ॥ यथास्य स्वर्यात्वयाह्न ।॥ ३०॥ वर्ष प्रवाह स्वर्यात्वयाह्न ।॥ ३०॥ वर्ष प्रवाह स्वर्यात्वयाह्न ।॥ ३०॥ वर्ष प्रवाह स्वर्यात्वयाह्न वर्षा प्रवाह मा ।॥ वर्षात्वयाह्न वर्षा प्रवाह मा श्रिता ॥ ३०॥ वर्षा प्रवाह मा वर्षा प्रवाह वर्षा स्वर्यात्वयाह्न ।॥ ३०॥ वर्षा प्रवाह मा वर्षा । वर्षा ।॥ वर्षा ।॥ वर्षा ।॥ वर्षा । वर्य । वर्षा । वर्षा

लामपरंतलंबदंतस्ते तथास्यं॥मार्जि नेधार्यमाणास्ते वस्त्रस्वड वि ने मितां॥ ३५॥तेसवैचं तदादेवं भगवतं हुदा नि ता ॥ नमस्कृत्यहुनस्तत्र हर्षि निर्मर मान साः॥ ३६॥ हरिः णाच तदाहस्ते धृलाचरुर्ये पिताः॥ यथात्वेच तरेवेदे मदीयानेवसंशयः॥ ३०॥आ दिस्तपचल्वाना मध्ययाव्यउच्य ते ॥ ऋषेर्य तस्त्रयाचार्यरणायाद् तस्वरं ॥ ३०॥ इमान्य रेतुनामानिय सिद्धानेभवं ति ॥ ममापिचमवद्गिश्वनामयाद्यश्व अष्ठन ॥ ३९॥ अरिह नितितन्नाम मध्येपापप्रणाशानं॥ भव दिश्वेचकर्तयं कार्यं लोक सुरुवा व हं॥ ४०॥तत प्रणम्यतामार्य शिष्ययुक्तस्व व द्या मायां प्रवर्तयामासमा धनाम पिमो हिनी ॥ ४१ ॥ थ्येयेगतास्तदात्रत्रतथादीस्ताहुपागताः॥ धेपशं तश्चतास्त्रत्रमायामे हेपरा प्रणा ॥ ४२ ॥ अभवन् त्तस्यादेवदश्चीनामा चिनाम पि ॥ नारदो पितदामाया नियोगान्मा चिनामभो ॥ ४३ ॥ प्रविश्व तहरं तेनमा चिनासस्त्र वात्रात्र वात्रात्र वेत्रत्य त्या । ४५ ॥ अभवन् त्तस्यात्र व्याप्त विच्यात्र वित्रात्र व स्वाप्त व स्वप्त स्वाप्त व स्वाप्त स्वाप्त व स्वाप्त स

जिय्ये मिराप्येश्वयापित नियरम्हत् ॥ ५२ ॥न्यापर्मिशास्त्रधर्मचिशास्त्रधर्मचिशास्त्रजन ॥ यत्तपागाननेकाश्वरवडपामास तनवै ॥ ५२ ॥ स्यानदानादिक तीयपवकालस ज्ञोत्तनः। नेद्धमात्र्ययेकिनतेषर्दृरतः छताः। ५४ ॥मायाच्यववयस्परिष्णात्तस्याद्धयामभा ॥ अलद्भीत्वस्यवस्यनियोगान् त्रिपुरंगता ॥ ५५ ॥ यहस्मीतपसान पांतवादरेश्यद्जात् । पदिगनापित्यज्यनियोगात् अधाण यभो ॥ ५६ ॥ त्रिमोहतथाच्यत् विष्णोमीयाविनिर्मिता ॥ तयादेताकाणादेवतपामियन्नारद॥ ५०॥ नारदोषितपारुपोर्यभागोपीतमेवम ॥एरेन्धतपाधर्मे श्रीनेस्मात्तसुक्षाभने ॥००॥पारगंदस्थापितकोनविणानामभविणाना॥ ॥भयएतस्पात्मात्मानीन जैनाचापासितिमाह॥ अचापिनारदेन रष्ट्राधर्ममनातनमिति ॥ वैनधर्मस्ययाचीनत्वपतिपादित अतएवार श्री भागवत पनमस्कर्भ नृतीयाध्यायादिषु युदुक्ततत्मारमार श्रीविष्णु दिगवराना तपस्य मूक बिरिपिशा नीन्मादक न दव भूत वेशो अमिभाष्यमाणी फिजना ना एकी न मीनवत । इस्नि परि स्यमानः नाना यो गवर्षी वालो भगवान् वाक व क्रुटक क ना रकान् देशान यहस्यो पगतः आस्यकृतार्मक्वकः उन्माद्द्वमूक्तमूर्द्जः कुटकाचलीपरनेषि चचारः॥ ५ ॥ अषद्यशानेकसद्नमालेखिहानः सहतेनदवाहे ॥ ६९ ॥ परपक्तिलानु चारेनहापाकर्णकाः क्रवक्तक्रक्तनाम् जाइन्सामीपशिष्यक्तावधर्मजन्छव्यमाणेभविनव्यनविभोहितः स्वधर्ममृद्धतामयमपद्वायक्कप्रयपारव्यमसम्जस्मिजमनीपयामदः प्रवर्ते इप्यते ६० येनहः वानकतीमन्त्रापमग्रद्यमायामोहिता स्वनिधिनियोगशीचचारिषविहिनाद्यहेलनान्यपँद्यतानिनिज्ञत्कयायुद्धानाभरमानान्यमग्रीचकशेरञ्जनादीनिकतिनाः धर्म वङ्कनोषहत्विभोनस्म मास्यणयमञ्जयकोकविरूपका भायेणभिवयंति ६३ अवानातरभेदमाङ् इतिकृष्णा पूर्वसुक्तान्ययशिष्याभ्यत्वार भर्मे सूचका ॥ कलानपितवास्याः क्वतार परिकार्तिता ॥ ५६ ॥ नदिसयस्यम्य विद्यासासमन्तितः ॥ नदौकीर्तिभूषणारमानंद्रस्थिव यतुर्यिका ॥ ५५ ॥ सिहसपोदितीयकुर सिद्दुपाउदस्यातपा ॥ अपस् चिविभाशास्त्राज्ञसभापरिकीर्तिता ॥ ६६ ॥ जुतीयोसेनस्**धयन्तुः**शास्त्रासमन्तितः ॥सेनशास्त्रासागातुगानत्विका ॥ ६० ॥ नत्वे विवसम्बन्धसस्यानपूर्व त् । दनदत्त्वनम् स्र राप्तानिस्यसमन्तिन् ॥ ६० तप्त्र योद्र शारवास्य त्यनेका पुरुषाङ्भवन् यहरेशीति मेहास्यमभाषक्षिनिर्मिताः ॥ ६९ ॥ अयुजेनाभासाः पूर्वकः थ्येते । मद्रोवितो यापेनायस्य निवन्देव स्वेतन्तेन्द्र । कार्यसपस्यपयीतेजनाभासाअकार्विताः ॥ । गाया ॥ एकसपेखनासी ११६ विक्रूमरापस्समर्खीपनस्य सारवेषतः बीपे उपन्ती मेनडासिषो। १९ ॥ बुंडियानामकमत सुकामच्छादिनिर्गत दिशासीपिसमार्यात द्वाविशासुरुवात्मकः॥ ७२ ॥ अयोदशसमूद्वेश्वदितीय परिकरित ॥ अत पर् मनक्यामिसेनकानासमुद्धन् ॥७३ ॥ 📑 इतिभी ब्रान्जेनात्रायीसन्तिनर्णननाममकरण्यः सपूर्णः आदितं प्रयासरम्। ४५ ५५ ही । केवरोगन्छ र आविष्टनेन १ पारनोप नेन ४मि विष्टनेन १ पसवावधे जैन ६ कारमधनीन अभिक्रमण्याः «मरणप्राप्तस्य १मीछपूर्वेशे । बस्तभीनगर्याः १ वस्तावधि में प

अय शावकोल तिमक ५९ अयश्रावकोलिताह दोहा नीर्थ करवारे प्रथम जैनधर्म अधि कारवरणान्यार में सकलजन पालतकरत विचार १ आगांसु तारीन ति इह भारच है अमान वर्हमान जब सुग ते गये भ्ये और गति ण्यान् २ छंदपद्व देवर्थमानेप्थारे हुक तेयानतापी छेपटसतवस्त पमापतासीसतीया सवरचनानअपराजितनामाह नेवरबाण र जे नस्ननामा एकस्नीद्रसोन्ने एक सवतस् छंदस्न्ह्माच पंचनीक रेवि हारवनिगयेरवडे हे कृत विचार अवनकी धतपस्पादिन किते कह निसंघ पंचरातरुक्त विवेकसुनिसवमिलियहकोनो विचार इइ वामे उपजिह अव विकार ६ हुनि मये ध्यान मेसावधानदिवन हो। हिरदे जिना जन पान खंडे हे राजा गिर खंडेल बोरासी खंडा मा प्रतिदलेल ६ हुरववस त सर्वनिजनिजसथान सव गुजुरघरमग्यसाचध्यानदोयगाचा ठाकुरन हिके य वयासि डाइन्स मेले सोय ७ वापरि मृह् उनद है गार दिपरी-तिउ हिर्ह तासमा हि नुपतव हु लाये विमदेव विदत नक ह्यो सबखेल भेव - योके अवकरिएको वेचार दिजक ही सांच सब समेचार देज तो ले दहवा णि विशाल नरमेधाजग्यकी जे नृपाल १ तासे इह मिटहैं-सरवदोष प्रजासुरवपार सर्वपोरव तवकरे आप वृपसरंजाम एकसङ् समदुजदातस्निताम १० अन्यमेवासामगरि अपार अतकाल कियो

जापकोरिवार दिज करत होम निशि दिवस भरवर सुनिमेषासहित मुनुजपिड ११ तब जयो प्पष्ठव आतिष्यार जिनसेनध्यानदे करिविचार चक्रैत्यरीभग उत्तरीकरम जापुजारी इब् मिटिहे सरवपाप १२ जिनक बुण्यापन करे जास मिटगयो मृत्युनय सबनासन्तर सुनिवद्न आपकीन सबकहिबात दुख दुधि मुवीन १२ वह भूयो उप्तर वकोनपापसुनिकहोसत्यविरम्त आपसुनिकहि एकशतसुनिममानकरित्यहोमवित्रन अभ्यान १४ तासै रहमोधभयोपापरह सुनोकान देनुपवि आजतब पाणि जोडि नुषमणितिकीन सुनिष्यायपञ्चो आविह्येयवीन १५ अवसुनिवरजानिधि मिटेपापकरिक्या आपसाकरो आपसुनिकही नुषि स्याधरमजैन ज्युपावेसव कि अजान्वीन १६ च्रापिसर्व्हरसर्वआय्मुनिपीछीदीनीसिर्फिरायञ्चग्रआसीमयेरजपूतजीनदोय सी नीतिनमे मिळे अन मिळिअसीचार भर प्रगटजास तादिन तेमावग्रभयेवास १७ चौहा रहचौरासीजातीके सब भावककीआनी रहविधिसवत्यकमं सुनिवरकहिवरबाणि । ध्योतीसतिवेबीस्ववदानाररातः परमानसवत्रावयकी सुनीयुधननसरव सुजान १९ साङ्जातिसब्जगकहतसोभयेवस्चोहाणूक् छदैवी-बक्नेन्बरीउसित्रवैंडेतयान १० तवरगोध्रभयेपाटणीपाटनी उसत्तिममान कुळदेवी आमणीक इत्जा नव्सक्ल जिहान ११ कहत्वराचीहाणकोजातिपाप्रिवास पाप हिकी उसिकहत चके सुर्व खचाल २२ दीसिवसग्ले हरे उसित्री पोणाव कु खदेवी चुके न्परी नौरवेड नाको नाव २५ सेवीसोरववशके उसित सेवोलाय लोसिलय सावती फूलशक्ति वित वेन प्रजानाव २५ वशनोहाणस मावसाउतपति भावसे जानि निह कुंबदेवी चक्रेन्यरी बुध्जण कुंह तबरवाण २५ चादु बाड चवेल है मातणि देवीनाम चदवाजिउसत्ति है जपत जिनेन्यरनाम २६मोळाटी मरनसके उसित मोठ्यो गान जाके कुलमरजादकी वेबी ओरवनाव २७ गोधार्की त्यागो हकुल नादणी देवी नाम उत्पत्तिजाकि कहत्त्व धिन्नगोधाणे गाव २८ अजमे सवशगोदकी नादणी कुलकी मात जेजमेनुरेजसनिक्हतसब्दगर्कहर हिस्मात १९ दर्जीम्यान्ह्र गण कुल दरबी डियनिकासजिहदेवी चक्रेन्दरी जिनसेवाक तजास २० गढी ह्यान्द्रही वाल सुग् व्स कहतनीसन् कुरुदेवी क्के क्रीगदः होगावसुषान ११पाहाँग्पावसँ बोहाण है उसित पाहादि गाव कुरुदेवी-वक्रेम्बरीभजेज भगवत नाम १९भुष्टवसँके सोरबीगावशुखडो यान् आमणाकुळदेवी कहेत्रबु धमनकहत्त्वरवाण ३३ - कुळसु नारकज आमणाउसितरबढे ले यान आमणीकु सदेवी कृहेजान तसकल जि हान ३५ हैसुनार कमाहण्याउसाँचे रखेलेगावजाकुल की यूजालहत आमणदेवीनाम ३५ सोवाच रागवकारीरे नगरसुपान कुँलदेवी ओरल कहत जानत ता हिजिहान रेथ पावी धीती यरकहत पायेथेउ लितिजाके फुलकी जगक हतदेवी पत्थावती २७ हु छाहागगवाल है कारीबाल कु छाहु उतपति गगुनाणे नगर हु-खरैंबीजमबाय १० शिवरिया बाह्राण कुछउसित सपरेगांय कुछदेबी चके न्योजगतबतावत नाब ६१ सानी सोरठ वशकेउसितसो इने गाब जाके कुछ की देवता आमणदेबीनाम ४० जैमरवशावितालकुलबडी विखाली पान औरक जाकी देवता बैदत बुधर्सु ग्यान ४१ कुरुवसी विखाल कुछ छप्ति कालीगाद जाकुल सोनी

देवता जगत बताब तनाय ४२ हुलगह लोत वनायक्या वनायको हु थान चोथिमात हुल देवता जैनमत वचन प्रमाण ४३ मो हेळवा कुलीवा लक्कल गामवा हु रुंधान जिहकुल्देवीजीपाहें मानतसंकक जिहान ४४ मोहिलकुल्हें पगदसाहकासली वाल्यान कासली नगर सुभ जेहलकरत निहाल ४५ सीरवकुलकेना पत्यागाम पापट्योथान आम पाकुल देवी कहतपूजाकरते प्रमाण ४६ सीगाणी र विवेश केसी गाण्टे सुभयान के देवी कहत जाने धरम सुग्यान ४७ चीपाइ कुछाहाझाझरिकहावे झाझरी गाव नैकास बतावे कुलदेवीजमवार दुजावे महाजन व्हेग्याजर तबताते ४० कुछाहासुभय कराऱ्या कुल देवे जमवा प इजाँचा गावनिकास कवदास्वी कहिए भेदभावया मेसवल हिरे ४९ सोरठपा मादिकह रे कुलदेव आमणा पूजवि उसितागामपावड जादुङ्ग्यावगदीजा ते पेछादु ५० देभ्यागे तपवार उपनाङ्खदेवी चावंड पूजना उत्पत्ति दीर्भगाय बतार्रे ६ मेजेने के निश्चेध्यावे ५१ वे हरा से द वेस कहारे क रुदेंग् सेतलीमनावे उतपत्ति वे हरेंगायबताइ तासे वे हराजा तक हाइ ५२ कुरुवंसी सो वाजे कालाका लवाडी रू. उतप तैचाल कुलदे वे लेह . वे वे पूजा काला स वगर्भरन्दूजा ५३ कुलचोहाण खावराकहारे चक्रेस्रो देवी कुध्यार गाव छार छेउस ते जा कि जा ते खावडा के हिताकी ५४ सारवर बाले गया बतारे लीगरे गायनि कास कहें हैं कु हरें वे आमण पूजवा है जारे परण जात हु लॉने ५५ मोरह वेस लु इ ड्याजाह उत ए ति गा पल होड़े मानु कु ल दे हैं ले सिल दूजवाने जासेल भली मब्हु ५६ भड़ साली सी नार बर्ब एं ता किदेरे आमण जार मंडसात्माले उस तिजा किजा तिभई मंडसाली ताकी ५७ सोलंग्ही सोदगडाजा हु उरेदर दे द निकार पिछा नुकुल्देव आमणसोक हरेरि इ.स. द्वितारे फलल हरें ५- तेवरहुन्चे धरीकहावेचे र सोगाप निकास बतावी कुलदेरे आमणा हजरारे सी देरी कुल वृद्धिर धारे ५९ दोहापोटिकयागृहलोत कुलगावप टले निकासकुलदेव पदावती प्रज्यापूरण आर ६० सोठावंस गदोडी र गाव गदं देशान कुल की देशीन्य थिकी प्रजा करतममाण ६१ सांखुण्या-वेदैलकुल्सांखुण्येदुरहार श्रीदेवीकुलदेवताताकीप्ररेआस६२ सोटावंसअनोपजाअनोपजेसुशानसकरा कुलदेवतापूज्या सिद्धिप्रमाण ६३गो ऊ निगोल्या कहत स्व निग्नो तेर्य नेकासमा त ण कुल देर कहत यूज्यापुन्य पकाशा ६४ पंरु लियान्वी हाणा कुल पेर लिये अस्थान कुल केनां देण देवता यूज्यारारते मन ६५ भूलणकुलचे हाणको भूल पार्रे निकासकुलँदेर चक्रेसर पूरेमनकी आर ६६ वनमाली चो हाणहेवनमा लें इरस्थान चक्रेस्वरी देरी कहत जा है बधारत मानस्क चोहाणां हुणीतस्या उतपति देतेत्योगाव चक्रेचरी प्रताप हुरि दे से दिघरमा हि ६० अरड केयाची हाण कुल ७ रई किये अस्थान कुल देवी चक्रेचरी पूजा पारे मान ६९० मरक हिए राव त्या उता तरावते गावमात दे तो चक्र अपरी से मर्वे शक्त मा हि ७० में दी वि मरवंस के ना दिन गोन्उत ती में देगाव कुल दे ती और कक है धर मेजैन कहाइ ७१ की कराजकुरुवंसकेक कराज एखासफुगेथजगरानात निदे विओरळकही प्रज्या पुरे आस ७२ ची पाई जगराज्या कुरुवंसी जा तुसी निलदेवीवस्वायु जगराजे पुर उसे नीजाकी

11 11 11

जातिभर जगराज्याताकी ७३ मूलराजाक्रवशीकहिए क्लकी वर्श सोमिलहिए मुखराजपुरउस विज्ञानुखाइडनीमात निक्षेधमजेन करिमानु ७४ अह रसीकुरु प सी कमने सोमीत देवी मातपूजावेगामछाइंडे उसनिजाकी खाइक्जातिभर्यवाकी ७५ दोहादुक्बाद्जिकव पके ताकी सा निक्रमात गामदुक्ड्योसासकी उसस्ति क दी विख्यान ७६ चौपाइगीवमनशीदुनिकजानुगौन् दिपेउतपत्तिवररानुकुलदेष्णादेमा कुमानुनि मेरीन् पर्यनिहिछानु ७ अकुलभाष्पासीदुनिककहिए कुकदे पी नि हरूमान्द्रियः सत्तिमामक झो कुलमाएयोजीन पर्मनिक्ने करिमान्या ७० चोहामोरेखिँ यार्जुजलानोरखड पुरमासहैमादैवीँहैत करी पूज्यापूरे भास ७१ सुरपत्यामी हि तकता करपती मायनिकास औल्मासपरमेशकी सिधिवरधी कुमसाल दन्तिरकृत्यो बीहाण कुस्तै रकन्ये मायनिकास मातनास वकेश्यरी धर्म ने नपरफास का सीरवषशानिक दिपानिगरेगामनिकासकु करेष्यानादणिकहिषासबपूर आसार श्रीपारे गीड बदानरपोध्याजानुनिर्पो छेपुरउसनिमानु माताना दणी देवी असु जैनी भी के साच **करिमा** नु ८३ सर्वाञ्चावश्मीतक रावेसा सरवादी विकास बतावे नादणी देवी मात छजाबे विश्लेषमिजी नक्षायां बेट ४ करवा पत्त्वसी मीढ बताया नादणी देवी मात छजाया कहता ग उँगोर्यानहै जाकोनिम्थर्गजैनमतशको ०५ कोरासाँभरियाची हाणकुलसाभरिजासनिकास कुंबद्वीचकेन्द्ररी भर्हत पूजमकारा ४६६वट्यामीहिल बेसकेउस्पत्तिह च्यकागाव देतमातन्त्रकेन्दरी रिन्द्रिसिद्ध्यरमाही ७ अववद्रासाठीकहतववाठीचनिकासकुखदेवीसकरायकुकूने मेममकाद्रा ७७ न्वोबारचानीहाल हेपुरनीबारचे बासमा तजास नके न्यरीवरवाताभइतास ८ रराजहरूपासीबाक खाउसिताजई संगाम आमणिदेवी मातकु करु धजनकरत बस्वान ९ व वगसीबाहुध जन कहे बगाविधे निकास आम िप कुंडकी देवनान्यरिधिपुरणास ११ भइकात्वाचाहाणहै अहंकारिपेसुषानकुंखदेवीसदग्रयहै पूजनकियाममाण ९२ भसान रक्कुरुवसी कहे गायभभाव र यासकहि कुबकीदेववासोनिककहिए नास ९ ३ मोलसत्यासोटाक इतमा क्सर्य उसनिकु छदेवी सक्रावंकु पूज्योच्या वेनिति ९५ ठीम रवसी मांगडीयां गाम भागड्येवास कुक कि कहिएदेवता ओरखदेवी जास ९५ बोइन्सोरदवसके गामलोइटनिकास ता कै फुलकी देवता लोसिल पूरे आस ९६ चीपाइ बुजिकवसीरवेतरपारमा खेतरपारमा गामग्जाव्याहेमादबीमातवरवाणुनिक्ने भरहेत्दैवपिछानु ९० बोहर गुन्भद्रियासारनला भद्रेराजनिकास सुरसति कुलकी देवतासुन्कीपूरे आस ९८ चीपार् कुरुवस भूबाल्या कि येगानभूबा ठियेउसिते लहिए कुळ देविज महायसुजावे धर्मजैननिक्ने करिध्यां वे १९ जलबाण्या कुँ रुवसी जासुज कवाण्येनिकास वर्षाणु कुळदेवी समग्र प् कहूरिमन्निनिद्नोकारजपायन विनादिकहेडीमरकंसीवेनावडीउमित अवतसी फुलदेबी फीर हु धावेपूजाकिया रिपि कुळपावे १ लटीबाकसोदासीनागुजाहुककी मीवेपीवरवाणु जुलक्तिनाकि खरवेकि किनेन्धर्ममानं करिसहि १ बोहासोर्ड वसी नर्पत्या असितनर पतीनाम ताकी आमणादवीता रिविसिद्धि धरमाहि भगाद गीतका लोसल्याउसिकोसिकगामजमभाइ कुलदेवतानामेसशयनाहि ४ कइत्वादत्यासारवलागावनांदरेनिकासकुलकीमातणी वेवीता रिक्रिसिक्देतास ५ सोढाविष्टा चंसका विरतेगावसयान नाकिसी निळ देवता जिनमत वचनप्रमाण्य एह चेरासी जातिके यावग की उत्तपत्य खंड खडे ले अपनी दयाज पाले नीत्य ० वाचारसेय चारमे १८५० सवत् की मरजाद यावणसुद एकादसी सूर जवारधननाद १०० पडित ईस्वर दासके भइजमन में चूपजा ने गोत्रकी भेद सब देख्यो शास्त्र अन्य १०९ छी हाचीपादक र प्रगटभाषार्सी सुगमपदतासुननासक सजनपावेह दिश्रगम ११० च्यावको सात्रे प्रकरण ५९ पद्य संख्या ४७६५ छ, छ, छ

गांप यानकी चोद्राणा गगवाणी जमवार लीयनी कस्त्रावा सद्दार्था देमादेवी चोहाण पापरी चौडाण 'मोनंखा आमर्णा नम सोलगी दगरीकी <u>देमादेवी</u> स्रामणी -योधी चीयश हैमाउँची विनाइका गढलीन विमान्त पद्मावती ल्लाडीकार साननी ानीणिदेवी पीरलाल फुरुवशी पोतस्या चोथी सरपया चीटपारी मातणी यी होती-याकनीमास माहत भीणी गदीड नकम्बी संदा मानी क ओग र्रा नारणीर सानाई। श्रामणी माना मामुण सद्धारी माक्ड मार्ग मीपुडा नरपन्य कामुनीचा-मीद्रित नीणी नादर्णा कामनी नगर गांधाणी-नादणी नाइणी फ़ुरुवशी मुखराज ११ मनमेग गाँड 'भनमेर मीगाणी कारम्यामृत मौगाणी नगोनी १२ देखीधा -शहाण गाधदो चक्रेस्म मासग कद्याहा स्मग पिगच्या चोद्वाण पिगफ कळभान ऋखभाना हमादेवी गधिद्वी चौदाण कराऱ्या फखासा कराग नकेस्री कमवाद न्याहाण पदार्ग" चक्रेम्बर्ग-आमगी पावद **पनमा**ला **मार**िस्पृव **भाग**णी नोग पापाडी दुःया पवार भारतका चौद्धाण अरडका **चक्रेम्ब**री **तकसोनी** १५ यज्ञ खरुके मोहर्णा सनाऊ सोवा बोहीरा बोदुइ भीनल र्गमुरमीम ग्वत्यी आराडी सीयगचा चे यिवेवी गवन्या मोहणि फुरुप्योत्त साहणी डीमरसी पं मीधी आरोजी सक्रम्भ वाचका सनार चीश्राभ फीकरोत्या करवंगी कीकराम भाराली सीनली '33 चीवास्पा चौरारी प्रक्रम्परी

७६ राजहत्त्वक नीया गमदम स्वतः ५५ माद्यममः सामा मान्येष स्वतः ५९ समग्रता प्रामीक समग्रत हैमदिपा ६५ तब्बीमा फछाड़ मान्यानि जिम्बार् ५४ न्हं स्वतः भाइतः भाइतः ५०० भा क्या द्यार भेगक आग्रती ६ राजभादा क्यादा स्वतः ६० वेनस्या रीपर अन्ति आग्रती ५५ क्यादा सामग्री ५८ व्यवस्था मारम्बनी खोद्द लोमग्री ६० भावतीना क्यादा नम्बार्ट ६८ क्यादाम सामा स्वत्या भागर्था अग्रार्था अभ्यादा क्यादा नम्बार्ट ६८ क्यादाम सामा स्वत्या भागर्था

अधर्मने र हिमाकूडा १ पान १९ पाइमा १ इद्रामिया ११ र्तुकर ४ दिसित १४ विधान ५ मीनीया १५ अन्तास ६ पाहूया १ -वीदेसिया १ वस्त्राजानम्ब ६ सामधिष्ठपः १९ दुरा - १ नानदामनि १४ मञ्जवादि १५ मासिक १५ इउतमियः ६ शुणियाः १५ स्वामिया ७ स्थाकदाः ९ जनमिया ५५ जागरिया ३ दगका १६ मतोद्वा ५ त्रोतळमति १५ जारूनकमि ६ उपाध्याय १६ बहुसा ७ कविया १७ नामरिया १ केदारपुष्पः ४ डागरा १४ गुणपुर्वी ६ भाटमतिया १६ वानवायक ७ छानार्य १७ माट १ कुराहा द्वित सारस्यभे १ नमा ४ माघिषा ५ ईसर्गर ५ भूदतबार १५ नगर्रापेवा ७ उरुद्वरमनी १७ भेरतिया ६ सास 🔭 जैमिनी ९ छंग 📉 अथनेयापि १० अयानका "५ दुटिया १४ वेंचा ६ वसाहिया १५ बोमवेडिया व गोगमनिया इतिन्वायिक ९ न्योसियी अधसारस्थके १० ग्रमकिया १ भरहा ११ एकसिसु 🔻 उत्तर भ पूर्व भ मूख्यानिमा इतिबीन्द्र मेदा ९ नमोधनेति अधनेमिनी १० पहित । अगन्य ११ दक्तिक २ हीवाः १२ पाहिनाहा मधीरमसः भ मुजारा ण पेरफोडा अप्रयानांकिने १० स्ताणियाः । ब्राह्मणः ११ बहुर्सुस्तकः २ विद्रशिषः १२ मकवहृद्धिवः ३ पासुपताः १३ न्यामरी स्वत्रतंगी इतिजैनभेदा १ भाड १ भागी ११ भतुर्वदिया ९ वास्तिय १२ कयक १३ स्नातकाः १२ शस्त्रिया ४ कामासिक-१८ प्रियाणा " मपूरकृति १अथवीर्भेदा १०, बिंह १ इत्मेलादेय १२ मिसु १ अधिहोगी १२ केंद्रविया ४ नात्रापणा १४ कलेसरिया ५ चंदाबा १५ मडपति

## कावमुरवाश्व अथ बांकरान्वार्थ माहु भीव मकरणे ६०

श्रीगणेशायनम अयश्कराचार्य प्रदुर्भावकयामाह कूर्मपुराणे त्रिश्चमेध्याये रुग वशाह कीर्नने कलीरु हो महादेवो लोकानामी चर पर करियत्यवतारस्व शंकरोनीललेहित ॥१॥ अत्रविशेषमाह शिवरहस्ये नवमाशे पोडशाध्यारे केम्परव्याच त्रुणुदेविभविष्याणां भक्तानाचरित कले वटामिसंग्रहेणेव ग पनीय प्रयत्नत १ पापकर्मेकिनिरतान् विरतान् स र्वेकमेसु वर्णाश्रमपरिभाषान्धमंत्रश्रवणानजनान् २ कल्यचीमज्जमानान्तान् हष्टातुकोशतो विके मद्शजातदेवे शी कलावपिनपोधन ४ केर्लेह तदावित्रजनयामिमहत्त्वरि तस्टवचरनते हवस्यामिशृणुत्रीलजे ५ कल्या दिमेमहादेवी सहस्र हतयात्यरसारस्वता तथागोडा मित्रा. कर्णाजिना हिजा ६ आममीनाश्चनादेवी आयोवर्तातु वासिन स्त्री त्तराविध्य नेलयः भविष्यं ते महीतले ७ बाच्यार्यज्ञान कुवालास्तर्के कर्जशहुद्धयः जेनावे था वुद्धिरुक्तामीमासाः निर्ता कले । वेदवोधदवाक्यानामन्ययेवप्राचकाः प्रत्य-स्वाद्कुवाला बाल्यभूता कलीशिवेश मिश्राशास्त्रमहाशस्ये अद्वेतोन्छे दिनोविके कर्मवप्रमंश्रेयोनेवेश फलदायक १० इतिस्वक्तिपरा मिश्वाक्येरु झोधयातच नेनघोरा कुलाचारा क्रमसाराभवत्तया ११ तेपासुकाटनार्थायस्जामीशमदशजं केरलेशश्लुप्रामेविमप्रत्यामदशज् १२ भविष्यतिमहादेशशकराख्यो हिजोनम् उपनानस्तदामात्रावेदा र्सांगान्य हिप्य ति १२ अधाव धितत सर्वे चिहत्य यसु तर्काणां मनमो मानो सो कत्वा शास्त्रीय निव्ययं १४ वादिमत्त दिपवरान् राकरोत्तमकेसरी भिनत्येवमहाहु - ह्यान् सिद्ध विद्यानिषद्भत् १५ में नान्विजिग्येतरसातयान्यान्कुमताँ हुगान् तदामातरमामत्र्यपरिबाट्सभिष्यिति १६ परित्राजकट्रेषेण मैत्रानात्रमदूषकान् दंडहस्तस्तया कुडीकापायवस्न ने मल १७ भरमदिव्यित्रिपुड़ांकोरुद्राक्षाभरणोज्वल. तारु द्रार्थपारीण 'शिवलिगार्चन प्रय १८ स्वशिष्येस्ता द्शेष्टु प्यन् भाष्यवाक्यानिसं विके महत्तविद्यया भिक्षु विन राज तेशशाकवत् १९ सोहेते च्छेदकान्पापान् उच्छिद्यासिप्य तर्कत स्वमताहुगता नृदेवीकरीत्येवनिरगिळ २० तथा पे प्रन्ययतेषां नेवासीत् यु तेदर्शने यूतउवाच मित्रा-ज्ञास्त्रास्त्रकुत्रारा तर्ककर्वत्राहृद्य २१ नेपामु दोधनार्याय तेष्येभाष्यकरिष्यति भाष्येषुष्यमहावाक्ये तिष्यजातान्ह नेष्यति २२ व्यासो पदिष्य सूत्राणाद्देतवाक्यात्मना शिवे अ दैतमेवस्त्रार्धित्रामाण्येन करिष्यति २२ अविमुक्तीसमासी नेष्यासंवाक्ये विजिग्यच वाकरक्ती तिहृष्टात्माद्याकरारव्यो ष्यमस्करी २४ वाकरच्याच सत्यसत्यनेहनानास्ति किनित्र्द् वागास्यंत्रमसत्यजगन्दि ब्रह्मेवेदंबह्मप्यात् एरमात् एकांरुद्रीन द्वतीयोवतस्ये २५ ईन्वरउगाच इतिशंकरगाय्येनिव्यक्षाण्यादहतदा ॥ मादुर्वसूवित्रगास्तादितंगोपिम हैस्यरी २६ त्रियुद्विरुस ज्ञारु चंद्राहिकतशास्य नागाजिनोत्तरासंगोनीलक किन्नेलांचन २० वरकाकोदरान्द्रराजदारस्वयाच्या नम्बुवंमहादेशीपणतयतिनांवरं २८ शिथे स्वाह भिश्वदुतं मस्मरुद्राह्मभूपण ईस्वरुगचमर्गाजस्वजातो सिक्तु विचादेतिसन्द्रिये २९ पापिम्या त्रितेमार्गजेन दुई दिवोधके पिन्नेवेदेकस सिद्धे अद्वेते देन वाक्यत ३०

किंगकुठ्डं समासीन सोमोधनविमळसीट्यर्वयपरककीठिंगाचार्षी भवतिहिविस्ति 'पानरा ३५' संशक्षेमां मणनाम मुस्करी मपस्कर तस्करवर्ष मायेस्सर्य ि प निमगामवेगात् भूमोसुबुन्हाहतमि भजीनान् २६ तदागभोगवरमुक्तिसुमोसपोग छिगार्चनात्मासजयत्वकामम् तान्बैपिजिग्पतरसासतवारमवादै मिमान्सका च्यामपसिद्भिगपं ३७ अपमापनकतेशंकरिजपे एकदाद बताकषाचलस्यसुपतस्यिर देवदेवसुषारासुमिनपूर्णचलस्यित ६८ मसादानुमितस्वापीसिन्द्रयाम णिपा त्युत सङ्गीकतहत्तास्यविनयेनव्यनिद्यपन् २१ विद्यानमेन भगवन् विद्यात्यवितायन वनयन् सुगतान् बुद्यपुर्धारीजनाद्दि ४० तत्यी णितागमास्त्रवै वीद्धि द्र्यानव् व्यक्तैः व्यासेवानीं प्रमोधाप्री राषि सतमसेरिन ४१ नणीयमसमन्वारान्दियनिमहानिहिया श्रुवत्याम्मायस्वसाजीविकामामसामभो ४२ नसप्यावीनिकर्माणिम्पासपानक्या चनकरोतिमनुज फमिलर्पेनात्वदतागता ४३ नद्भवादोकरसार्पयुत्ताधनितितान्त्वतान् वर्तस्याप्यतुन्यीतजगचेनसुर्वमजेत् ४४ रत्युक्तापरताम् देषानुवाच गिरिजानिय मनोरय प्रपिष्येमाध्यमबलब्यव ४५दुवाचारविनाशायपर्मसस्यापनापचे भाष्यकुर्वन् बस्स्यमनासमीमीविनर्णस्य सोहनमङ्गिद्दीतमातम्या क्भावभि चतुर्भि सहित शिपी अबहुरेईरिवद्रजै ४७ यतीद्र शकरोनामाभिषयामिम हीतले महत्तयाभवतोषिमानुपीत्नुमाश्रिताः ४० तमामनुसरिव्यतिसर्वनिदि विवासिनः तदामनोरयः पूर्णीमवृतास्यान्नसंशयः ४९अवदर्नद्रनः सक्दुममदंचद्रवारवरः ऋणुसीम्यव्यः भेषोत्मगुदुद्रार्गोयर ५० सहस्यात्मके वेदे प्रो प्यतिस्याद्विजो चुति रदानी मिषरमुदार्यमिति वृत्तिमत पुरा ५१ ममप्राइलवियो विष्णुशेमी समीपगी मध्यमकाड सुन्दत्त मनुद्राती मर्पेनती ५२ व्यती मीशाने भूमी सकर्षणपतज्ञ की सुनी मू त्वासवीयानियोगकाड कतीत्यितो ५३ अधिमङ्गानकाडत् द्विराष्ट्रामीतिदेवताः समितमिनानेसम् जानात्वेवभवानिपक्षजीमिनीयनपामी घे द्वारसविश्वास्त्र विशिष्ठके र्मकादत्वसुद्दर महाण कते ॥५५सु ब्रह्मण्यद्वित्वाविणमिष्यसिततोऽ धुना ब्रह्मापितेसद्दायार मड्नोनाम मूसुर ५६ भविष्यति महेद्देरिपसु धनानाम भूमिप तथ निमतिज्ञभाइविधेरपिविधायिनी ५७ वृधानीकपतिर्याणीसुधाधारामिवमभाष्ट्रयेत्रीनुपतिर्भूतामजाद्यमेणपालयन्॥५० सर्वहोद्रयसर्वाशास्त्रीक्तिम सह्यान्वित प्रती समाण कीचारीमेलपामा्ससीगतान् ५१ तत सनारकारातिरजनिष्ठमहीवले भद्दपाशाभिधोषस्यनाश्यामास्सीगतान् ६ •ववीमहेश किलकेरलेषुभीम द्वाबीक कृणात्सम्द्र पूर्णान्दीपुण्यतदेस्वयम् लिंगात्मनानगथगाविरासीत् ५१ तन्नोदिव कमनराज्यात्रात्मर स्वयमु दृष्टियत्रीयवे सव पारेनाव मकपरिक स्यसुम्भमावर्गयस्य सम् ईणविभो ६६२ तस्ये स्वरत्यभणतार्तिहर्ज्ञः मसादतः भासनिरीतिभावः कश्चित्रदृष्यासन्तो छहारः कालका भिरत्यो अस्ति महास्मनो हाः ६३ कश्चिद्रिपश्चिति हिनस्त भीविरे

तङ्बर्णिरिक्ञत्त्वसमानोसिमद्शनः द्राजिशत्यमाषुस्तेशीप्रवैनासमावस् शस्त्रसातिगृह्मणत्वप्वतिगञ्जप्रमप् भस्मठद्राह्मसपन्य प्वासर्परापणः ५० मानस्यानस्य निम्नारेणभमिनेनन् विन्यप्रमेमकुमुमेनिपयेणिविधेरणि २५ भिवारसावधानेनगन्धसर्पमनायनः २४ सद्यप्रतिसानस्यस्य सामग्रासमप्रच द्राभस्करिक पवसः

जेविशा धराजइ तेविकतनामधेय रूद्रोवृशाद्भितलयोडवतरीहुकामोयत्युत्रमात्यपितरसमरोचयत्त-६६पुत्रोभवत्तस्यप्ररात्तपुण्येः सुब्रह्मतेजाःशिवयुर्विभिरव्यः ज्ञानेशियोयो ज प्रमा प्राप्त प्रमासिक स्वत्योपधामिक संनिहिता प्रमेकारमात्वासदाशिवसुपास्त्र लेखनाम्पर्यः कदाशनः कतिविदेवदिनानिश्वेपस्याः स्वानिश्वेपस्यान्यः सानिश्वेषादसुगाः वन्नेगुरुस्यान्यः मामाकतल्यावे स्वेश्वेशकायम्निशशिवमर्यं वी स्वेश्वेष्यान्यस्य निवसंतम्जसभर्त्तः कालोत्यगाः देवितयोस्तपतोरनेकः ६७देवः कपाप्रवृशोदिजवेषस्वाभुग ६६ जायापितस्यविमला नियमोपतापे स्वेश्वेशकायम्निशशिवमर्यं यति स्वेश्वेष्य निवसंतम्जसभर्त्तः कालोत्यगाः देवितयोस्तपतोरनेकः ६७देवः कपाप्रवृशोदिजवेष-कार्य प्रजापात गार्या नाम क्षेत्र भेवां छसि केतपक्तेषुत्रा श्रितिवचनसजगादिष्य ६८ स्त्रोस्ह मे बहुगुणः प्रथितह भावः सर्वज्ञ तापदिमितिरितः आवभा धारीपत्यस्तां त्रीवरुरुगत्यात्त निर्द्र पंचाचभोः किम भेवां छसि केतपक्तेषुत्रा श्रितिवचनसजगादिष्य ६८ स्त्रोस्ह मे बहुगुणः प्रथिताहुभावः सर्वज्ञ तापदिमितिरितः आवभा चन्द्वाहुदारितपद्वनयत्वामार्या म् न प्रतिहर्ष्ट्कुमारश्चीपान्तीयस् स्वेन सम्मद्दे स्वत्वायासती शिवसुरो निज्हु गसस्येस्टें छु रे वस्तेच्सरोच नेंद्र रे अन्यत्र मास्त तेष्य भगपहरमान्य व पर के प्रत्याह अ १९ चहु सहस्या ३००९ संवतारे वेभवना की सुप्ते सुद्धे सिते शिवरु ग्रेष्ट्र हणीद्शाम्यां ७ २ यस १ वता शिहरू से कुरु देश मध्ये तेना कता वारदामतियात वत्याने कादशा धिक शतीन १९९ चहु सहस्या ३००९ संवतारे वेभवना की सुप्ते सुद्धे सिते शिवरु ग्रेष्ट्र हणीद्शाम्यां ७ २ यस १ यता शिहरू से कुरु शमग्ये तेना कता वारवामातयातवत्या भावता प्रकारणा । अत्र त्या प्रकारणा । अत्र त्या प्रकारणा वारवामातयातवत्या भावता प्रकारणा वार्त । विविध्य । व व्यारभाद्वासालका भाषाम्यात् ७६पवमानद्शांशतीजनिद्रवमानाच तेय ध्राह् धे धरणमिष्टताविवा देवाक्तरणीयेनसत्तेटकाव्ह्यः ७७उद्भावि शिला उलात् गलहासित १ दवाह सोकिलहस्तामलका भिधामधात् ७६पवमानदेशांशतीजनिद्रवमानाच तेय ध्राह् धे धरणमिष्टताविवा देवाक्तरणीयेनसत्तेटकाव्ह्यः ७७उद्भावि शिला उलात गलहालात १ प्राप्त मानु वितकी त्या दं के हुवते मही तले ७८ विधि संसह रे खरो गेरा निधि सानंद में रेब जायत अरुण: समभूत्सनंदन बरुण जायत चेत् स्वाद्धयः ४.९ अपरेच्यभवन् हिने कस स्वपरेच्या पर वे देव प्रभी चरणपरिसे वेहं जगच्छरण भूह रहं गवात्मजा ७० चार्बा कदर्शन विधानसरेषधा तृशादे नगी व्यात रमूह ते मं उन रच हेने दे वरः करणचे चर चीदतः समानंद गर्यिभिधयाव्यजनीतिके चेत् ०१ततः श्र शंकराचार्यः वादेर्गा देगणान् बहुन् वे जित्यशारदा गिठम् धेरुत्द व्यरे चतव १ कचमरवह ने ए ले मजायाः क िनि दहान्यपगक्त क्यां स्यात्यक् शिर सितथाह धाशना त्यस्तरुकु सान्यथहर्षतो स्यवर्षन् ३ अथसन्यास दशना मा ने मठामाये नी यीम स्वना ३ रण्यक्ष गिरि ५ पर्वत ६ सागराः ७स प्यानिक भारतोत्तर प्रमान विदेश न्ध चतु देशु मिलासु में स्थापस कियान चतु ये मठान्कता वे व्यान्सस्यापय देहुः व्यकारसंद्धामाचार्य चतुर्णानामभेदतः कृतं चदेवतां चेवंशान्य क्ष्यान्य क्ष्य क्ष्यान्य क्ष्य ऋरं सगण : भा ५ हे एक क्षा करातिन आचार्या सुरायवना सुपहुता हारकाषीव विहायदक्षिणदेशेष्टनेयी समीपेस्ट्यागळग्रामेमवपरिकत्ययामासु तन्छिष्यपर्परागत यतिवर्ष श्रीमसरमहसपरिवानका ।

द्वारमध्यिहर्सर्यस्यादेव सिन्द्रेयरः स्मृतः वाकिस्तनभद्रकाठीह्याचार्यस्यपायकः १५िक्यातमोमतीसीर्धेस्तमवेदस्यसद्भतः नीवान्मापरमाञ्चेस्ययोधायत्रभविष्य तिरधरित्यातं तन्महावाक्यवाक्यंतलमसीतिच सामनेदप्रवादीचतत्रधर्मसमाचरेत् रङह्वीन्नामोहिवीय स्तुमावर्धनमङ स्मृतः भागपारः समदायो बनारण्येपदै स्मृते ९८ तस्मिन्देकेनगन्नायः पुरुषोत्तमसङ्गक रोजविमसाव्दी इस्तामसक देशिक १९ खालमङ्गेद्धी तीर्थे महाचारिमकाशक महावास्य वत्रात्क महान्यस्य वे विकास १०० मरणस्य सन्य नेद्रात्त्र पर्ने मुमानरेत् तृतीय स्पृत्तरान्धायोज्योतिनीमामठो भवेत् १ भीमठक्येतिवातस्य नामात्रसुदीरित आन्द्रारो विद्येष समदायोस्यसिद्धि द १०५५दानितस्यगीतानीगिरिपर्वतसागरा बद्राकाञ्चमःहोनदेवोनारायणः समृत १०५ पूर्णागिरीचदेवीस्यादाचापे रघोटकरम्त नीयेचालकनवास्यस्यानचेत्रहान्या 'र्यभूत् भ्रश्न्यमालाम्बर्भविमहावाक्यसुबाहतं अयर्बबेदवक्ताचत्रमधर्मसमाचरेत् १ ५चतुर्थीविशिणाभ्याया युगेर्यावर्ततर्मेवी मसहानिकरिसगिषभाउकसुभू जित ५ पभारतेऋरमञ्जरमहर्परामामहान् बाराहोदेवतातत्ररामहोषष्ठदाहत १०७ तीर्धबृतु भद्रारध्यदाकिकामाशिकारमृता चैतन्य बहाचारातिभा चायेलि। कविकत १०५ वार्विकादि महाविधाकक्तिगोसुनिधुजित सुरे वरावार्य इतिसाक्ता क्रुह्मावतारकः १०९ सरस्वतीपुरीचेति भारत्यारण्यतीर्थकी गिर्यायमस् रणानिस्पु सर्वेनामानिसर्वेदा ११ सप्रवाया स्रियार यहाँवेद्यवाहतः अहबह्मास्मितश्रेषमहाबाक्यसमीरित १११ एथ्वीधरारस्य अन्वायी इतिवापिर पुठ्यते यञ्चव्यपाउस्यतन्यप्रमे समामप्त्रः राजामाया कियतस्पेतेयतीनाचप्टयक्ष्यक् तेसेमेचतुराचापीनियोगेनययाक्रमः १२ पपोक्तम्या स्वर्भेषु शासनीयास्ततीडन्यमा कुवैतएवसतन् मन्न धरणीतछे १९४ तिरुक्तारसमाप्ता वाचार्याणामगाञ्चयालाकान्सशीलयसे वृन्वधर्मा मतिरोधन १५ सिधुसीबीरमीराष्ट्रमहाराष्ट्राम्नवातरः वशाः पश्चिमदिगस्यायः हारका मह भागिन ११६अगवगकलिगासमामधीत्कलवर्रा गोषर्धनमहाधीना देशा मानीन्यवस्थिता ११७ क्रेक्नावमीर्कावीजपाचालादिविभागत ज्यो तिर्मठवशादेशासुदीचिदिगवस्थिता १८ भाष्मद्रविडकर्नीत्क्रकेरलादिमभेदतः शृगेयेधीनावेशास्तरपवाची दिगवस्थिता १९ मर्पावेपासुविश्रोदासतुर्मठविधापिनी तामेतासमुपाभित्य आचार्या स्थापिता कृमात् १२०स्त्रसरा सुमति हित्यैसंचार सुविधीयता महेतुनियतवास आचार्यस्यनयुज्यते २१ वर्णाममसदाचारा अस्मान भिर्यमसाधिताः रस्णीयात्रवने सेस्तुभागेपवाविधि १२२ फ्लोबिमिटिर्मह्तीधर्मस्यात्रमजायते नायसत्याज्यम्यात्रदास्यमेवसमात्रायेत् २३ परस्परविभागेत्प वैशोनकवाननपरस्परेणकर्वेष्यआवार्यणव्यवस्थिति अपरिवाडार्यमयिवामामकीनायथाविधि चतु पौडाधिगासत्तामसुज्याव्यप्थक् पृथक् १५ मुनि जितेदियो चैद्वेगगाविषिशारवः योगद्याः सर्वतत्राणामस्मदास्यानमाप्त्रयात् २६७७७ एक एक प्राम्यम्भतीरभाग्मवम् अन्यवाद्धरं पीठोपिनियहाहोमिनीपिणा १०० नजातुः ं क्रीय द्वनेसमध्ययद्वस्थामग्राः पटनेयानामानि कंडमी अर्थरः प्रथमिन इयो १ 🕒 किन्ननेति

कारिणम्यान्भृत्रोपृत्तितेत्तर्वित्मृतः ॥१३ अपुनिकार्यि तामावनदेशाया विशेष अयम पश्चिमान्नायः दारकाम् व उत्त्यते की दवार समदाय तत्र नीयियमी सुभी ९४

मठ दृ छिचा द्धिकारिण्ड पस्थिते विद्वानामित बाह्ल्यादेषधर् सनातनः १२० एक एवा भिषेच्यः स्यादतेल एए सम्मतः तत्तर विक्रमेणेवन बहुर्यज्यते किन त्रे अस्मासी वेसमास्त्र पित्रां क्रिसणः अहमेवेति विदेयोयस्यवेवइतिऋतः १३० सुधन्वनः समे सुक्यनिर्दृते पर्म हैतवे देवराजोप् चाराऋयया वद्त पान् तरंत १३१ केवस्य में हु दिश्य विभवे बात्यचेत्रसा विहतस्रोपकारायपद्मपत्र नयं बजेत १३२ हुधन्वाहिमहाराजस्तदन्य चनरे स्वरा धर्मपार परीमेतांपालयेतु नरं तरं १३३ इहासत्र कुले भूताभारतीप ववचकः परार्थाऋ वतेचाते पेशाचीयो नेमासुयात् १३४ शारदामवआचार्य आश्रामीरस्य बहून में. गोवधनस्य विद्रोयोऽ रण्य नामा विचक्षणः १३५ ज्यो तिर्मवस्य नेयतंपर्वताख्यो निगद्यते श्रेगहरम् वे त्यभारती बहुभावनः १३६ मिण्योरे ह विद्वे अपूर्ते प्वादेका रेणा नात्रव्यत्ययुआ द्य कद चिदपूरी लिना १३७ मृग श्रुतार आचार्यास्य त्यारस्य नेयामकाः संप्रदायश्र्व त्यारेष्ण धर्म व्यवस्थितः १३८ चारु वैषर्यया योग्रं वा उद्ग नः कायकर्ग किः एरे :पीठं समर्ति वैभागानु करे पर्दे १३९ धरामा लब्धराजान प्रजाभ्य करभा गैन कता धिकारा आचार्याधर्मतस्त देव है १४० धर्मी मूलं र ल्थाणां सचाचारित लंबनः तस्मादाचार्यस्मणे वासनंसर्वते धेकं १४१ आचार्यी के सदंबास्त कलापापा निमानवाः निर्मलाः स्वर्गमाया तस्ततः हुक तिनोयथा १४२ तानाचारे पदे बोदंडश्र्यपाल्यते तस्मात्राजाचार्याव निधाव निधा इत्वे महरप्याहगीतमी पे विदोषतः १४३ विदास बीकाचारी पेमूलादेव प्रसिध्य ते १४३ तस्मात्सर्वप्रयतेनशासन सर्वसमतं आचार्यस्य वेवे वेण ही दार्यभरभा नेन: १४४ धर्मपद्ध तेरेषाहिज्यत स्थितिहेनवे सर्ववर्णा अमाणा हियथा वास्त्रं विधीयते १४५ कते विस्र सर्वहारी तायांक्र पेसत्तमः द्वापरेन्यास एवस्यात्कलावन्नभ्वाम्यहं १४६ माधवीरेशं कर वेजये इति हुनर तेतु हे एक सर्वेज्ञपी हं नेजमतर रुतायेनी इनमिन हेतोः कतिचन ि नेवेबयार व्यश्चिमात्रामादीम नेरथ बदरी संप्रापके श्रित्यारि व्योः १४७ इंद्रो पेद्र प्रधाने स्त्रीद्रशपरिवृद्धे स्तूयमान प्रस्त ने दिवीर वयन्द्रीमानः सर मिरुह सु वादत्तहस्ता व्लंबः आरु हो साणमध्यं प्रकृषितस् ज्याजूटचं द्वावतंसः शृप्वनालोक राब्दंसस् देतस्य किर्धामने जंपतेस्थे १४८ पांडवेष हितारेश प्रमिते सुभवत्सरे आवणे सितार ्पंचम्यां सिहे सिन्होट्रावयं १४९ आनंद गरेकते शंकर बिजारे कम्म प्रवान परानंद दूरान मू बान्नराधमान तान दश्वानारदः दे हिमाप बहु पदां तिकं १५० में तान तन्त्नम् भूज्जगदेतद्वीक् वाक् चित्रदु किप रेकिस्म तकम्भीर् लंकालादिजास्तिगमा धेपरंपरास्यात् व्यर्धातदाय देभवन्मतम् प्रमाणं १५१ एवं नारदव चन निद्यास्य ब ह्मापे चेरध्याता साले कार इत्र मिन्नभन्त्यादिए कः शिवलोकं मा विशद् अस्ती इत्यासंतुषः शिवंउवाच १५२ ब्रह्मन्ययाहरवंगच्छ संतुषो स्मितवो कितः शंक राचार्यनामाइंसंभवा मेम हीतले १५ ३ य द्वितंतव विष्णे अतदेवस्थापयास्य हं मनमक्ताबुभी यस्मार् सत्यंनान्य दिचंतय १५४ दितसंबो धेतो ब्रह्माय पीपत्यम् हे अर् सगण : प्राप सत्यारव्यं नेजलं कमनन्यर्ध : १५५ तत सर्वात्मक देव श्रदेवर उराश्रितः आकाश लिंग् नाम्बाहु विरव्यातं स्नम्ह तले १५६ नत्र विद्नमहें द

स्यकुदे दिन गणात्रिवे जात सर्वज्ञ नाम्नातुकश्चित्रहिज्कुदेश्वर १५७ कामास्यविस्तीकाभूत्रस्यवस्य वस्तिता विद्वरश्वरभ्यात्वातात्रुभीभाषत् सुता १५८ साकुमारी सवाध्यानसक्ताः भूतृज्ञानतस्रा विशिषेतिचनास्मातु प्रसिद्धाभून्महीत्रते १५९ तामस्रोचे विप्रायामायान्यूतकर्माणे प्रवरीवित्र्यजिन्नार्नसर्घ दोहरणा पितास्वय १६ सासदापतिमद्देतध्याताकाशात्मकशिव तस्यायधनमेत्युममा नकार निवेकिश १६१ तादशीमपिस तेज्यूयपीविम्बनिद द्वत अरण्य-तपसेक्तामनोनिश्चयतागत १६१ तवामनृतिसानारी विद्वरमहेश्वरं तोषयामासपूजाभिष्यां नेरात्मगते सद्य १६२ सदेव सर्वपूर्णीपितस्याव वनपूर्वज मविषय विस्मितान् कुर्वन् जनानन्यान्समागतान् १६६ महो प्रवेजसानुसा विशिष्ण सूप्रणाविका सर्वे समूजितानिसंपिनादि मिरुपानिता १६५ अति तेपासपर्यस्य इदिएसी हिनेदिने निरवरेन्स छतापन मान्दिनीत्रमा १६६ वृतीपादिप्रमासेपुनकुक्मीणिवेदव मासेतुद्दामेमासी विशिषामभैमीलन १६७ मादुरासीन्महादेष ज्ञक राचारीनामतः भासीनदाउचपृष्टिदेवसर्पे भ्योदिवा १६०ततं भीवाकराचारी श्रीवभनादिभूतर्षेतास्मतानि अप्युचलारिशन्मतानि तूर्वा नियकरण्छलापण् मतस्यापनळत्यानु १६१अचमा कमलीगाकमजयस्थिमनामिपञ्चासकमनारक्तप्रसमाभिरनुष्टित १७० ततः परंसर्वसः भीवाकराचार्यः स्वशिष्यान् तमतन्विष येषु मेप्पितात्वयसं च्छपात्वलोकग्तुमिन्छः क्रवीनगरेसुक्तिस्यलेस्यूलश्रारस्यकेषयंत्रपीयसंत्रपीयतास्यमकारणेवितीनकतासर्वमापकचैतन्यकपुणाचापि तिषवि १७१ तन्सामास्यणाः सर्वेशिष्यमशिष्याञ्चलपनिप द्वीता मसस्माणिपवतः अस्तत्व निस्पेलंगर्तकतात्रमाधासतिकत्वतु सीमस्तादि मि सङ्ग्य त्त्वरींग्समाधिन्त्कु १७२ ततः प्रसहसीर तर्पणसीरान्ति वेदनादिमिः सर्गीपनारैविधिवदम्यन्यति तोमहायूजादिनेश्रीमच्छकर्यकस्दिस्य वृह्यतीनाम ह्मणानापरब्रह्मणां पियास्वाइन्वन्द्राभरणी पूजानकः १७३ एवं इशकाचार्ययुक्त क्षेत्रियदं सता सर्व च्यापक चेत्न युक्तपेणा द्यापि तिश्ववि १७७ व्यापनी शक त्रनार्यपरपत्तवर्णन् मनात्रायण १पयमन् वृत्तिस्य ३ शक्तिन् ४ तस्त्रत्रपत्रारंत्व ५ न्यास ५ तुकंगी हपद ७ महात गीर्विद्योगिहम पार्यशिष्य १७५ सीराकतत्त्रार्य मयास्यपद्मपादन्द्रस्तामलकचित्रियत्त्रोटकचार्तिककारमन्यानस्महुस्त्सतत्मानतीस्मि १०६ इतिबी ब्राह्मणोसानिमार्तहास्यापेदाकराचारीमाद्रभविकयने नामप्रकरणस्पूर्ण ६॰ आदितः प्रासस्या ४९४१ । अ अध्यापात कारः श्रीमहात्रसनैयगीतमकु को सन्ती तिविधावता मान्यी सुर्जर पिंडती पप्रकी दीन्य स हराध्वक ज्योवि शास्त्रविशारवोदविमितमान्यीवेकयस्योदिनसान्त्रोहरूरिकणास शक्रमन्येविदामीतये॥४९४९॥दक्षिणेसमहाराषुदेशे तिनमरहरू त् औरगाबादनामनावेरमान्वमजनिर्मम्। ४९६३ अयोतिपार्णवमध्यस्येषष्टेविभिनस्याके अध्यायशतसञ्जेरकयेन परमाद्भते॥ ४९४६॥ तस्योउशमेष्या यंत्राह्मणोसिनिनिर्णयः सपूर्णतामगान्द्राके शासिवाइनसङ्गके ४९४५ विनष्यु निवृत्रे ७०१३ चकार्तिकस्यादिवासरे॥अभावशिष्योभाग राह्यविभाविष्यापित्र

भी ४९४६ मणितापद्यसंख्यात्रम् निन्दांक न्दका सूल मात्रा हुधे द्वेपात्म् ध्यारं षंड इंकिस ४९४७ इति इंज्योति वित्कुला वर्त सबे कर रामात्मज हिर क पा विनि मिते बहु ज्यो निपाण वेष हे स्थितं है बाह्मण स निवण नं नाम षंड शोध्यायः १६ व के १००९ छ ६९ छ स्माम् अस्ट के इत्योर ने मने डिग्रं है

रिजेस स्टिम. 禹. 爾-गुर्जर भाषा मंगलाष्टक। महाराष्ट्रभाषा मंगला ० १अ ४० पचस्मृति ८ वृहज्ज्ये तिपाणीवमशास्त्रंध यंथसंख्या ३०००० ७ न्यकविकृतं मग्रा वाराणामी मगला । द्वारकामं ० १ वर्गस्ख २॥ ब्राह्मणं सिनमार्टडाध्याय-वृज्योतिमशक्तयोक्ता. मू नृसिहाचार्यकतं मंगलाः। श्री गायची मंगलाः। र्य " सन्मतोद्योत अंकः। २ मध्यमतिषयः रठसस्कृत हिंदि भाषाधीसमेत यथसंख्या १४००० गामगलाष्ट्रकं । बांकराचार्य कर्न मगलाष्ट्रक । भ 🐣 देवी महिन्य भद्रमार्तडाध्याय यू मि यत्र७६मडाजानि सचित्राणिर्यते गीरयकतं मेगा। तुलसी मेगलं । एवं विश्वतिभेदा ना हुँड मेडपपट्ट १॥ अीडाकीदाल्याध्याय' व मिन्यत्रानेक ऋडाभेदा सति(ते वृ ज्योतिपाण्यधर्मस्कथोक्त मासस्तवक खपताहै ॥ भाउलीमतज्योतिपाध्याय वृमि यत्र एकरेमाहाराष्ट्र हिं संति दी भाषाबाक्यानि १९५८ सरिः १ कुंडविंशतियम्बूडानां विशतिययाः संति ॥ बृहसारादाशहोरा उत्तर भाग मुख-न। हरसिद्धि सोप्रं त्र। मगलायकाध्याय । वृ मि यनपयममगला एका नवगह १ चैनमास माहात्य सर्दकः मगलाएक । वाणि राजोदितंमगलाएकं। कालिदामोनं ना व्यंकं द्वामाहालयं भविष्यानरोक्त अनतानंतस्य मिस्तोत्र -मगला एक। बहुवामना एक। नागेश्रवेषझकतं मंगामा नार्वा शिवस्तोत्रक दहर पूर्वभाग - अस्रोपनिषद्चासुषोपनिषदः - शिवालि खित भगुलि खिताध्यायः कविकत्मव। जैनमंगलायक । गोत्रमवरनिर्णयसहितंमव । सलनारायणकथा माहाराष्ट्र भाषीयेताः हें अस्तक अंरंगाबाद येथे ज्योति वेद हरिक्कणा देंकटराम यांचे श्री गायत्री मंदिर विद्यायकाश छापरवान्यांत मिळतील शके १००० माघ अन्य हें इस्तक वाँदे सिटी खापरवा छा:

